नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्गान

(1 से 37)

समाधियों के विवरण सहित

नक्सबन्दियाँ सिलसिले के सूफी फ़कीर (शज़रा क्रम में)
नक्सबन्दियाँ सिलसिले के सूफी फ़कीर (शज़रा क्रम में)

विषय सूची

1.	हालात हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल॰	5
2.	हालात अमीरुल मोमनीन हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि॰)	39
3.	हालात हजरत सलमान फारसी (राजि॰)	52
4.	हालात हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि॰	56
5.	हालात हजरत इमाम जाफर सादिक रजि॰	59
6.	हालात हजरत बायजीद बस्तामी रहमतुल्लाहु अलैहि	67
7.	हालात हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहमतुल्लाहु अलैहि	79
8.	हजरत ख्वाजा अबुल कासिम गुरगानी (रहम॰)	95
9.	हजरत शेख अबू अली फारमदी तूसी कुदू सिर्रहू	97
10.	हालात हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी कु॰सि॰	101
11.	हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु॰सि॰	106
12.	हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ रेवगरी (रहम॰)	119
13.	हालात हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु॰ सि॰	121
14.	हालात हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु अलैहि	125
15.	हालात हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम॰)	133
16.	हालात हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहम॰)	137
17.	हालात हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद कुद्स सिर्रहू	140
18.	हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कुद्स सिर्रहू)	157
19.	हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहमतुल्लाहु अलैहि)	166
20.	हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कुद्स सिर्रहू)	170
21.	मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु॰ सि॰)	192
22.	हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु॰ सि॰)	195
23.	हजरत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु॰ सि॰)	199
24.	हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (कु॰ सि॰)	204
25.	हजरत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शेख़ अहमद सरहिन्दी कुद्स सिर्रहू	228
26.	हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहु अलैहि	251
27.	हज़रत शेख़ सैफुद्दीन कुद्स सिर्रहू	260
28.	हज़रत सैय्यद नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम॰)	265
29.	हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जानजाना (रहम॰)	270

30.	हज़रत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०)	291
31.	हज़रत मौलाना मौलवी शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०)	294
32.	हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (कु० सि०)	296
33.	हज़रत मौलाना खलीफ़ा अहमद अली खाँ मऊ रशीदाबादी (रहम०)	304
34.	हज़रत मौलाना शाह फ़ज़्ल अहमद ख़ाँ रायपुरी	313
35.	ज़नाब हज़रत शाह अब्दुल ग़नी खाँ साहब (रहम०)	373
36-1.	हजरत जनाब मुंशी रामचन्द्र साहब (महात्मा जी महाराज) (फतेहगढ़)	396
36-2.	हजरत जनाब महात्मा रघुबर दयाल जी साहब (कानपुर)	424
36-3.	हजरत जनाब महात्मा डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब (जयपुर)	444
37.	परमसंत महात्मा श्री हरनारायण जी सक्सेना	467
	संकेताक्षरों कासंकेताक्षरों का विवरण विवरण	480
	परिशिष्ट	481

1. हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल॰

आपकी मजार मदीना मुनव्वरा में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो कृपाशील और दयावान है)

1. हालात हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल०

जन्म और पालन पोषण

आपका नूर (प्रकाश) अल्लाह तआला ने सबसे पहले पैदा किया। लेकिन इसका जहूर (प्रकटीकरण) इस दुनिया में बारह रबीउल अव्वल, सोमवार को, तदनुसार 11 नवम्बर 569 ई० को मक्का में हुआ। अर्थात् इस पुण्य तिथि को हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का शुभ जन्म हुआ। जब आप गर्भ में थे आपकी पूज्य माता जी ने स्वप्न में देखा कि एक शख्स कहता है कि तेरे गर्भ में एक ऐसा शख्स है जो दुनिया का सरदार है, जब पैदा हो नाम उसका मुहम्मद (सल्ल०) रखना। फिर आपके जन्म के समय आपकी पूज्य माताजी ने देखा कि एक नूर उनसे निकला जिसके प्रकाश में उनको शाम मुल्क के मकान दिखलाई पड़े। हजरत उस्मान बिन अबिल आस की माता जी फ़ातिमा बिन्त (पुत्री) अब्दुल्लाह ने बतलाया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म रात्रि में जिस महान शुभ घड़ी में हुआ उस समय में आपकी पूज्य माताजी हजरत आमिना के पास थीं। मैंने देखा कि आसमान से सितारे लटक आये और हरम (मक्के आस-पास) की जमीन से इतने नजदीक हो गये कि मालूम होता था कि जमीन में गिर पड़ेंगे।

सात रोज तक आपने अपनी पूज्य माता जी का दूध पिया। इसके बाद शोबिया अबूलहब की नौकरानी ने पिलाया। हजरत (सल्ल०) के वंश का नाम कुरैश था। कुरैश अरब का एक प्रमुख वंश था जो तमाम वंशों में इज्जत वाला था। इस वंश के लोगों का दस्तूर था कि अपने लड़कों को शहर के नजदीक वाले गाँवों की दूध पिलाने वाली औरतों को दे दिया करते थे और वे लड़कों को अपने घर ले जाया करती थीं। बच्चे के माता-पिता उनको नकद, अनाज व अन्य चीज़ें देकर खुश कर देते थे। लेकिन चूँकि जब आपकी उम्र दो ही माह की थी तब आपके पूज्य पिताजी हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तेलिब का शरीरान्त हो गया, इस वजह से आपको अनाथ

समझकर कोई दूध पिलाने वाली आपको ले जाने के लिए तैयार न हुई। परन्तु यह महान पवित्र सेवा हज़रत हलीमा सादिया की किस्मत में थी और वह आपको अपने वतन तायफ में दूध पिलाने को ले गई। आपके तशरीफ ले जाने के बाद हजरत हलीमा (रजि०) के घर में निहायत बढ़ोतरी हुई। आप दाहिने, स्तन का दूध पिया करते थे और बायें स्तन का दूध अपने बिरादर रज़ाई (दूध भाई) के वास्ते छोड़ देते थे और यह मानो आपका कुदरती इनसाफ़ था। आपने कभी पेशाब व पाखाना कपड़े पर नहीं किया। बल्कि उसके वक्त मुकर्रर थे। उस वक्त उठा कर आपको पेशाब व पाखाना करा लिया जाता था। आपका बदन कभी नंगा नहीं होता था और अगर इत्तफाकन कभी होता तो उसको फ़रिश्ते छिपा देते थे।

जब आप पाँव चलने लगे और दो बरस के हुए, आप हजरत हलीमा (रजि०) के लड़कों के साथ जंगल को, जहाँ उनके मवेशी चरते थे, तशरीफ ले जाते थे। एक दिन आप वहीं तशरीफ रखते थे कि दो फ़रिश्ते आये और उन्होंने आपको चट उठा कर आपके सीने मुबारक को नाभि तक चीर दिया और दिल मुबारक को निकाल कर धोया और उसको सीने से एक चीज आलिमे कुदुस की बसूरत पिसी हुई दवा के थी, भर दिया और फिर उसी जगह रखकर कटे हुए सीने को सी दिया और जरा भी तकलीफ आपको मालूम न हुई। यह हाल हजरत हलीमा (रजि०) के बेटे ने देखा और घर जा कर अपनी माँ से कहा कि 'हमारे मक्का वाले, भाई का दो आदमीयों ने आकर पेट चीर दिया।' इस बात को सुन कर हलीमा (रजि०) जल्दी वहाँ पहुंची। देखा कि आप बैठे हैं और आपका रंग मुबारक बदला हुआ था। आपसे हाल पूछा। आपने तमाम माजरा (पूरी घटना) बयान किया। हलीमा सादिया (रजि०) यह हाल आपके दिल मुबारक फटने का सुन कर डरीं और आपको मक्के में आपके घर पहुँचा दिया।

छः वर्ष की उम्र में आपकी पूज्य माताजी का शरीरान्त हो गया। आपके पूज्य दादा (पूज्य पिता जी के पिताजी) हजरत अब्दुल मुत्तेलिब ने आपकी परवरिश को। दो वर्ष के बाद आपका भी इन्तकाल हो गया। फिर आपके चाचा हजरत अबू तालिब ने आपका पालन पोषण किया। उन्होंने निहायत मुहब्बत और इज्जत से आपकी परवरिश की। जब आपकी उम्र 10-11 वर्ष की हुई तो आपने अपनी उम्र के लड़कों के साथ बकरियाँ भी चराई। अरब में अच्छे भले घरानों के लड़के बकरियाँ चराया करते

थे। हजरत अबू तालिब व्यापार करते थे। एक बार सीरिया देश की यात्रा पर जाते हुए हजरत मुहम्मद (सल्ल०) भी अपने चचा के साथ एक तिजारती सफर पर गए। उस समय आप कोई 12 वर्ष के थे।

सामूहिक कार्यों से लगाव

उस जमाने में अरब के अनेक कबीलों में नित्य लड़ाइयाँ होती रहती थीं, जिसके का कारण लोग बहुत व्याकुल थे। आखिर तंग आकर कुछ भले लोगों ने अनेक कबीलों में इस बात का एक समझौता कराया कि देश से अशांति दूर की जाये, यात्रियों की रक्षा की जाये, निर्धनों और उत्पीड़ितों की सहायता की जाये और अन्यायियों को मक्के में न रहने दिया जाये। इस समझौते में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) भी शरीक थे। एक बार मक्के में वर्षा कुछ ज्यादा हुई जिससे 'काबे' के पवित्र घर को हानि पहुँची और यह तय किया गया कि फिर से एक मजबूत इमारत बनाई जाये। तमाम वंशों ने मिलकर इमारत का थोड़ा हिस्सा बनाया परन्तु जब उस मान्य काले पत्थर को जिसे 'हजरे असवद' कहते हैं, उसके स्थान पर रखने का प्रश्न आया तो यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ कि कौन उस पत्थर को उसके स्थान पर रखे। हर वंश यही चाहना था कि यह पवित्र कार्य हम करें। झगड़ा इतना बढ़ा कि खून खराबे का डर पैदा हो गया और जब कई दिन तक इस बात का निर्णय नहीं हुआ, तो सब ने यह बात स्वीकार कर ली कि अच्छा कल सबेरे जो व्यक्ति सबसे पहले आये उस से निर्णय करा लिया जाये। ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा हुई कि दूसरे दिन सबसे पहले हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ही दिखाई पड़े। आपने इस झगड़े को निपटाने के लिए यह उपाय किया कि एक चादर बिछा कर 'हजरे असवद' को उस पर रखा और हर कबीले के सरदारों को बुलाकर कहा कि सब मिलकर चादर के कोने पकड़ लें और चादर को उपर उठायें। जब पत्थर उस स्थान तक ऊँचा हो गया, जहाँ उसे रखना था, तो हजरत ने उसे अपने हाथ से उठा कर रख दिया।

व्यापार

उस जमाने में अरबों का मुख्य काम व्यापार था, विशेष रूप से कुरैश व्यापार का

ही काम करते थे। जब आप जवान हुए तो आपने भी यही काम शुरू किया। कारोबारी मामलों में आप इतने खरे, सच्चे और ईमानदार थे कि थोड़े ही दिनों में सब लोग आप पर भरोसा करने लगे। हर व्यक्ति चाहता था कि व्यापार में अपनी पूंजी शिरकत (हिस्सेदारी) के लिए आपको दे दें। मामले के साफ, बड़े सच्चे और बहुत ईमानदार थे। इसके कारण लोग आपका बड़ा आदर किया करते थे और साधारणतः लोग आपको ' सादिक़ ' (सच्चा) और अमीन (अमानतदार) के नाम से याद करते थे।

विवाह

अभी आपकी उम्र 25 वर्ष की हुई थी कि तमाम लोगों में आप अपनी नेकी, सच्चाई और अमानतदारी के कारण प्रसिद्ध हो गए। इसी जमाने में आपकी शोहरत सुन कर कुरैश की एक मान्या और धनी महिला हजरत ख़दीजतुल कुबरा (हजरत ख़दीजः) ने भी आपको अपनी व्यापारिक सामग्री देकर यात्रा पर भेजा। जब आप वापस आये तो हजरत ख़दीजतुल कुबरा ने आपके मामले में अपने गुमान (धारणा) से अधिक सिद्क़ (सच्चाई) व सफाई पायी। इसके अलावा हजरत ख़दीजतुल कुबरा के गुलाम ने, जो आपके साथ गया था, उनके बहुत से मोजिज़े (चमत्कार) जो सफर में देखे थे ख़दीजतुल कुबरा से बयान किये। हजरत ख़दीजः पहले विवाह के बाद विधवा हो गई थीं। इसके बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया था, परन्तु कुछ समय के बाद दूसरे पति भी सिधार गए और अब वह फिर विधवा थीं। इस समय हजरत ख़दीजः की उम्र 40 वर्ष की थी। हजरत ख़दीजः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के काम, उनकी सच्चाई और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुई और आपको शादी का पैगाम दिया, आपने स्वीकार कर लिया। शादी के समय हजरत ख़दीजः के पहले दो पतियों से दो लड़के और एक लड़की मौजूद थे। विवाह के बाद हजरत ख़दीजः 26 वर्ष तक जिन्दा रही और इस जमाने में हजरत (सल्ल०) ने किसी दूसरी स्त्री से विवाह नहीं किया।

मक्के में

पहली वह्य (वही)

अपने इस व्यापारिक और पारिवारिक जीवन में भी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) दूसरे लोगों की तरह केवल व्यापारी बन कर न रह गये थे बल्कि आप अपने मन में सदा दूसरी समस्याओं पर भी विचार करते रहते थे। आप अपने देश वालों के दंगे फसाद वाले जीवन से बड़े खिन्न थे और यह देखकर उन्हें बहुत दुःख होता था कि लोगों का आचरण और व्यवहार बहुत खराब है। विशेषकर शिर्क और मूर्ति पूजा से आपको बड़ी घृणा थी और बराबर सोचा करते थे कि लोगों की इन बुराइयों को कैसे दूर किया जाये। जब भी आपको मौका मिलता आप एकान्त में बैठ कर एक अल्लाह का ध्यान करते और उसी की याद में समय बिताते। विशेषकर 'रमज़ान' के महीने में आप आबादी से दूर निकल जाते और वहाँ एकान्त में बैठ कर अल्लाह का ध्यान करते। इस काम के लिए मक्के से कोई तीन मील दूर पहाड़ी की एक गुफा में जिसका नाम 'हिरा' है जा बैठते और कई-कई दिन अल्लाह की याद में लगे रहते। एक बार रमज़ान का महीना था, वहाँ आठ रबीउल अव्वल दो शबः (इतवार) के रोज हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम आपके पास आये और 'वह्य' लाये और आपसे कहा पढ़ो। आपने कहा मैं ख्वांदः (पढ़ा हुआ) नहीं हूँ। फिर उन्होने आपसे मुआनकः करके (गले मिलकर) आपको खूब दबोचा और छोड़ कर फ़रमाया कि अब पढ़ो। आपने फिर कहा मैं ख्वांदः नहीं हूँ। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने खूब जोर से दबोचा। चुनांचे मामला तीन मरतबा हुआ। फिर 'इकरा अबिस्म रब्बे कल्लजी खलक मालम यालम' (ऐ मुहम्मद, अपने उस अल्लाह के नाम से पढ़ो जिसने पैदा किया और इन्सान को वह बात सिखाई जो वह नहीं जानता था) तक पढ़ाई। वह्य के उतरनें के कारण आपके बदन को तकलीफ हुई। आप इम घटना के तुरन्त बाद घर आ गए। उस समय आपका दिल काँप रहा था। हजरत ख़दीजः से कहा 'मुझे कम्बल उढ़ा दो।' आपको कम्बल उढ़ा दिया गया। जब आपको कुछ शान्ति हुई तो आपने हजरत ख़दीजः को सारा हाल सुनाया और कहा, 'मुझे अपनी जान का खतरा है।' हजरत ख़दीजः ने कहा, 'नहीं, कभी नहीं, अल्लाह आपको रुसवा नहीं करेगा, आप संबंधियों का हक अदा करते हैं, लोगों के बोझ आप स्वयं उठाते हैं। फ़क़ीरों और अनाथों की आप सहायता करते हैं, मुसाफ़िरों की मेहमान की तरह आवभगत करते हैं। न्याय के लिए आप लोगों की कठिनाइयों में काम आते हैं।' इसके बाद हजरत ख़दीजः आपको एक

बूढ़े ईसाई वरका बिन नौफल के पास ले गई, जिसने सारा हाल सुन कर कहा यह वही फरिश्ता है जो हजरत मूसा के पास आया और मुझे विश्वास है कि आपको अल्लाह ने अपना रसूल बनाया है।

'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ

इसके बाद आप लगातार हिरा नामक गुफा में जाते रहे, परन्तु लगभग 6 महीने तक कोई 'वह्य' नहीं आई। उसके बाद 'वह्य' का सिलसिला शुरू हुआ। दूसरी वह्य यह थी :-

'हे कमली औढ़ने वाले ! उठ और लोगों को गुमराही के नतीजे से डरा और अपने रब की महानता बखान और अपने वस्त्र को पाक कर और नापाकी से दूर रह और अधिक प्राप्त करने के इरादे से किसी के साथ उपकार मत कर और अपने 'रब' के मामले में सब्र से काम ले।' (सूरा 74, आयत 1-7)।

इस प्रकार आप 'नबूवत' (पैगम्बर, अवतार) के कार्य पर लगा दिये गए और भटकी हुई मानव जाति को कल्याण का सीधा मार्ग दिखाने का काम आपके जिम्मे कर दिया गया। अब यहाँ से हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का धर्म प्रचार काल आरम्भ होता है। इसका एक भाग तो वह है जो तेरह वर्ष तक मक्के में बीता और दूसरा वह जो 10 वर्ष तक मदीने में बीता।

मक्के का धर्म प्रचार काल

प्रचार का वह समय जो मक्के में बीता अपने परिणामों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसी जमाने में मानवता के ऐसे-ऐसे ऊँचे नमूने तैयार हुए जिन्होंने इस्लामी आन्दोलन का सारे विश्व में परिचय कराया। कुरान शरीफ का बड़ा हिस्सा इसी जमाने में उतरा। इसके आरम्भ के तीन सालों में आप अपने सगे संबंधियों, परिवार वालों और मित्रों को इस्लाम की शिक्षा गुप्त रूप से देते रहे। सबसे पहले आपकी पत्नी हजरत ख़दीजः (रजि०) 'ईमान' लाई, इसके बाद नव जवानों में हजरत अली (रजि०), ज्यादा उम्र वालों में हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) और सेवकों में हजरत जैद बिन हारिसा 'ईमान' लाये। इसके बाद हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की प्रेरणा से हजरत

उस्मान बिन अफ्फान व अब्दुल रहमान बिन आफ व साद बिन वकास व ज़ुबैर व तलहा रजिअल्लाह तआला अनहुम ने इस्लाम स्वीकार किया। जब आयते 'फासदः बेमातूमर' नाजिल हुई "फस्द बेमातूमर" (यानी जो तुम्हें हुक्म है उसको साफ-साफ खुल्लम खुल्ला बयान करो), तब आपने खुलकर लोगों को एक अल्लाह की दासता स्वीकार करने और बुतों (मूर्तियों) तथा दूसरे पूज्यों के इन्कार करने का आमन्त्रण देना आरम्भ किया। लगभग दो साल तक यह काम होता रहा। इस मुद्दत में कुफ़्फ़ार आपके दुश्मन हो गए और तरह-तरह से आपको कष्ट पहुंचाने लगे। मक्के के सरदारों ने अपने निर्णय के अनुसार इस्लामी आन्दोलन को नष्ट करने के लिए कमर बाँध ली और उस समय तक जो लोग मुसलमान हो चुके थे उनको हर तरह से सताने का निर्णय कर लिया। इस जमाने में मक्के वालों ने नव-मुसलिमों को जिस-जिस तरह सताया उसकी जो घटनाएं इतिहास में सुरक्षित रह गई हैं उनको पढ़िये तो रोंगटे खड़े हो जाते है। अरब जैसे गरम देश की तेज धूप में दोपहर के समय जलती हुई रेत पर मुसलमानों को लिटाना, उनके सीनों पर भारी पत्थर रखकर दबाना, लोहा गर्म करके दाग देना, पानी में डुबकियाँ देना, बहुत बेदर्दी से मारना पीटना, तात्पर्य यह कि इस प्रकार के बहुत से अत्याचारों का विवरण इतिहास में मौजूद है। परन्तु विशेष बात यह है कि इन तमाम अत्याचारों और कष्टों के बावजूद किसी ऐसे उदाहरण का उल्लेख नहीं मिलता कि किसी नव मुस्लिम ने इन कष्टों से परेशान होकर इस्लाम छोड़ दिया हो, हर एक की दृष्टि 'आख़िरत' (परलोक) के जीवन पर जमी हुई थी और हर एक यह समझता था कि इस जीवन की जो मुसीबत भी है अस्थाई है और अगर इसे सह लिया गया तो उस शाश्वत (सदा रहने वाले) जीवन में हमारा स्वामी हम से प्रसन्न हो जायेगा और फिर हर प्रकार की नेमतें हमारे लिए होंगी।

हबशा की पहली हिजरत

इसी जमाने में जब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने यह अन्दाज लगाया कि अब यह कुरैश के अत्याचार कम होने वाले नहीं हैं तो आपने कुछ मुसलमानों के विषय में यह निर्णय कर लिया कि वह हबशा चले जायें। हबशा में एक सदाचारी और न्यायशील बादशाह की हुकूमत थी और आपको यह आशा थी कि वहाँ पर मुसलमानों पर

अत्याचार नहीं होगा और हो सकता है कि उनके द्वारा हबशा के लोग भी इस्लामी सन्देश से परिचित हो जायें, इसी कारण ‘नबूवत’ के पाँचवें वर्ष रजब के महीने में पहली बार ग्यारह मर्द और चार औरतें हबशे की ओर चल पड़े।

मक्के के लोगों ने मुसलमानों का पीछा हबशा तक किया। वहाँ पहुंचकर हबशा के बादशाह निजाशी को इन ‘मुहाजिरों’ (हिजरत करने वालों) के विरुद्ध भड़काया, जिसका असर यह हुआ कि बादशाह ने भरे दरबार में उन्हें बुलाकर बात की और हजरत ईसा के विषय में प्रश्न किये। इस पर मुसलमानों के प्रतिनिधि हजरत जाफर ने कुरान शरीफ की सूरा मरयम (सूरा 19) पढ़कर सुनाई जो उस समय उतर चुकी थी। साथ ही इस्लाम की शिक्षा संक्षिप्त शब्दों में रखते हुए निजाशी को बताया कि जो लोग इस सन्देश को स्वीकार करते जा रहे हैं उनके जीवन किस प्रकार सुधर रहे हैं। हजरत जाफर की बातें और कुरान की आयतें सुन कर निजाशी पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वह बोला ‘अल्लाह की कसम ! यह कलाम और इन्जील (ईसाइयों की मुख्य धार्मिक पुस्तक ‘बाइबिल') दोनों एक ही दीप के प्रतिबिम्ब हैं।’ निजाशी ने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की ‘नबूवत’ की पुष्टि की और इस्लाम स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे लगभग 83 मुसलमान हबशा को हिजरत कर गए।

हजरत उमर का इस्लाम लाना

संघर्ष के इस जमाने में विरोधियों को एक धक्का हजरत उमर के ईमान लाने से भी पहुँचा। हजरत उमर इस्लाम के कट्टर विरोधियों में से थे। ‘नबूवत’ का छठा साल था कि एक दिन हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को कत्ल करने के विचार से घर से निकले। रास्ते में उनके एक मित्र मिले। पूछा, ‘किधर जा रहे हो ?’ बोले, ‘आज मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम करने का इरादा है।’ उन्होने कहा, ‘पहले अपने घर की तो खबर लो, तुम्हारी बहन और बहनोई इस्लाम ला चुके हैं। पहले उन्हें तो सीधा करो।’ ऐसा सुनते ही हजरत उमर पलटे और बहन के घर पहुँचे। वह कुरान पढ़ रही थी। हजरत उमर को आता देखकर कुरान छिपा लिया। परन्तु हजरत उमर सुन चुके थे कि कुछ पढ़ रही थी आते ही पूछा, ‘बताओ तुम क्या पढ़ रही थी ? मैंने सुना है कि

तुमने मुहम्मद (सल्ल०) का दीन अपना लिया है ?' और यह कहते हुए अपने बहनोई सईद को मारना आरम्भ कर दिया। बहन फ़ातिमा ने देखा तो वह बचाने के लिए दौड़ी । हजरत उमर ने उन्हें भी घायल कर दिया। जब दोनों घायल हो गए तो उन्होने कहा, 'देखो उमर ! हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ला चुके हैं और अब काई चीज हमें इस रास्ते से हटा नहीं सकती। तुम्हारा जो जी चाहे कर लो।' इन लोगों के इस दृढ़ संकल्प को देखकर हजरत उमर बहुत प्रभावित हुए । बोले, 'लाओ मुझे भी सुनाओ तुम क्या पढ़ रही थी ?' हजरत फ़ातिमा ने कहा कि यह कलाम अपवित्रता की दशा में नहीं सुनाया जा सकता। पहले स्नान करके आओ। हजरत उमर स्नान करके आये । हजरत फ़ातिमा ने कुरान का वह हिस्सा सामने लाकर रख दिया । यह सूरा ताहा (सूरा 20) थी । हजरत उमर ने पढ़ना आरम्भ किया। जैसे-जैसे पढ़ते जाते थे यह कलाम दिल में उतरता जाता था । बार-बार कहते, 'कैसा अनोखा कलाम है !' थोड़ी देर बाद कहने लगे 'बिलकुल सच है। अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं।' अब सीधे उठ कर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास गए और 'ईमान' ले आये।

सामाजिक बहिष्कार

हजरत उमर के ईमान लाने के बाद मुसलमानों की शक्ति में अधिक वृद्धि हो गई। मुसलमान अब तक काबे में जा कर नमाज नहीं पढ़ सकते थे । परन्तु अब स्थिति बदल गई थी। हजरत उमर ने साफ एलान कर दिया कि अब मुसलमानों को काबे में नमाज पढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। कुरैश के लिए यह घटना बड़ी जटिल थी और वे बराबर विकल हो रहे थे कि अब इस नए आन्दोलन को दबाने के लिए क्या उपाय किया जाये। अतः उन्होंने अब एक और चाल चली। तमाम कबीलों से मिलकर यह समझौता किया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके पूरे वंश का सामाजिक बहिष्कार किया जाये। न कोई इनसे मिले और न कोई इनके हाथ कुछ बेचे या खरीदे । यहाँ तक कि इन्हें खाने-पीने का सामान भी न दिया जाये और यह बहिष्कार उस समय तक जारी रहे जब तक मुहम्मद (सल्ल०) के वंश वाले खुद उन्हें कत्ल करने के लिए हवाले न करें। यह अहदनामा (समझौता) लिख कर काबे के दरवाजे पर लटका दिया गया। अब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के वंश (बनी हाशिम) के लिए दो ही रास्ते

थे या तो वे हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को कुरैश के हवाले करके उन्हें कत्ल हो जाने दें या फिर इस बहिष्कार के कारण जो भी विपत्ति आये उसे सहें। अतः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के चाचा अबू तालिब अपने तमाम परिवार दलों को लेकर, पहाड़ के एक दर्रे में जा ठहरे और तीन साल तक बड़ी विपत्तियों का सामना किया। इन लोगों को प्रायः पेड़ों के पत्ते खा-खा कर समय बिताना पड़ता था। यहाँ तक कि सूखा हुआ चमड़ा तक उबाल कर खाने की नौबत आ गई। जब बच्चे भूख से बिलखते तब कुरैश सुन-सुन कर खुश होते। हाँ, किसी दयालु को दया आ जाती तो छिपा कर कुछ खाने को भेज देता। तीन वर्ष तक बनी हाशिम विपत्तियों को सहते और झेलते रहे। आखिरकार आँ हजरत (सल्ल०) को वहबी (ईश्वरीय संकेत द्वारा) मालूम हुआ कि इस अहदनामें को कीड़ों ने खा लिया और सिवाय नाम अल्लाह के कुछ बाकी न रहा। आपने इसका जिक्र अपने चाचा अबू तालिब से किया। अबू तालिब ने बाज कुरैश से कहा कि अगर यह सच है तो इतना तो हो कि तुम इस अहदेबद (बुरे इकरार) से बाज आओ। अतः देखा गया तो वास्तव में इस अहदनामें को कीड़ों ने खा लिया था। अब कुरैश इस जुल्म से बाज आये और वह अहदनामा नष्ट कर डाला।

मक्के के बाहर प्रचार

सामाजिक बहिष्कार समाप्त होने के कुछ दिनों बाद ही नबूवत के दसवें साल आपके चाचा जी हजरत अबू तालिब (रजि०) का देहान्त हो गया और कुछ ही दिनों पीछे हजरत ख़दीजः (रजि०) भी गुजर गईं। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को इन दोनों के इन्तकाल का बहुत रंज हुआ। हजरत अबू तालिब (रजि०) के देहान्त के बाद मक्के वालों ने अति निर्दयता के साथ बिलकुल निडर होकर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके साथियों को सताना शुरू कर दिया। इस जमाने में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने मक्के से बाहर जा कर लोगों को अल्लाह का सन्देश पहुँचाना शुरू किया। आप ताइफ़ भी गये और आपने वहाँ के बड़े और प्रभावकारी लोगों के सामने 'इस्लाम' का सन्देश रखा। इन लोगों ने आपका उपहास किया और बस्ती के गुण्डों और बदमाशों को उभार दिया जिन्होंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को पत्थर मार-मार कर घायल कर दिया। इस मौक़े पर भी आपके दिल में अपने विरोधियों के विरुद्ध कोई घृणा और

क्रोध पैदा नहीं हुआ, बल्कि आप ऐसे कठिन समय में भी अल्लाह से यही कहते रहे, 'अल्लाह ! तू मेरी जाति को सीधा रास्ता दिखा, ये लोग जानते नहीं है, अभी बात समझते नहीं ।' इसी जमाने में आप आस-पास की बस्तियों में भी जाते रहे और जहाँ मेले लगते थे वहाँ आपने लोगों को इस्लाम का सन्देश सुनाया । ऐसे मौक़ों पर जब आप कुरान के कुछ हिस्से सुनाते तो इनका बहुत प्रभाव पड़ता । कुछ लोग तो कुरान को सुन कर ही 'ईमान' ले आये । इस प्रकार सारे अरब में इस्लाम की चर्चा होने लगा। आर दूर-दूर तक आपका बात पहुंचने लगी ।

इस्लाम मदीने में

हज्ज के दिनों में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को बहुत से लोगों से मिलने का मौका मिलता । हज्ज के जमाने में आप कबीलों के सरदारों के पास जाते और उन्हें इस्लाम की बातें बताते । 'नबूवत' (पैगम्बर होने) का दसवां साल था कि आपने अकबा स्थान के करीब मदीने के कुछ लोगों के सामने इस्लाम का सन्देश रखा और कुरान की कुछ आयतें सुनाई । मदीने में आपकी चर्चा पहले से हो रही थी । मदीने में कुछ यहूदी भी बसते थे । उनके धार्मिक ग्रन्थों में यह लिखा हुआ था कि अल्लाह के एक ओर 'नबी' पधारने वाले हैं । मदीने वालों ने ये बातें सुन रखी थी । जब उन्होने मुहम्मद (सल्ल०) की बातें सुनी तो उन्होंने सोचा कि हो न हो वह 'नबी' यही हैं । उन्होंने यह भी विचार किया कि जब हमारे यहाँ के यहूदी उनकी बातें सुन लेंगे तो वे जरूर मुसलमान हो जायेंगे । हमें उनसे पहले करना चाहिए । कही ऐसा न हो कि वे लोग पहले 'ईमान' ले आयें अतः इस मौक़े पर छः आदमियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया ।

इधर धीरे-धोरे लोग इस्लाम क़बूल करते जा रहे थे । उधर विरोध तेजी के साथ बढ़ता जा रहा था और बहुत कठिन समय था । किसी प्रकार समझ में न आता था कि आखिरकार इन मुट्ठी भर मुसलमानों का क्या होगा ? और इतने विरोध के होते हुए लोग अल्लाह के दीन को कैसे अपना सकेंगे । यद्यपि मक्के में हालात दिन पर दिन खराब होते जा रहे थे, परन्तु मक्के के बाहर बहुत सी बस्तियों में इस्लाम धीरे-बोरे फैल रहा था और मुसलमानों की संख्या बढ़ रही थी । अकबा के स्थान पर जिन छः आदमियों ने इस्लाम अपनाया था, जब वे लौट कर मदीना गये और सब हाल लोगों

को सुनाया तो मदीना को गली-गली व घर-घर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जिक्र से मुअत्तर हो गया। फलस्वरूप बारह आदमियों की एक मण्डली हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में आई। उन लोगों ने आपको बातें सुनी और इस्लाम क़बूल किया। आपने उन लोगों के अनुरोध पर मसजब बिन अमीर (रजि०) को इन लोगों के साथ भेज दिया ताकि वह मदीने वालों को घर-घर पहुंचकर कुरान सुनाएँ और इस्लाम की बातें बतायें। इस प्रकार मदीने में इस्लाम तेजी के साथ फैलता रहा और फल यह निकला कि अगले साल अर्थात् नबूवत के बारहवें साल हज्ज के जमाने में अकबा के स्थान पर 72 आदमी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से मिले और इस्लाम स्वीकार किया और उन्होने हजरत को यह वचन दिया कि हम हर हाल में आपका साथ देंगे और जो आपसे लड़ने आयेगा उससे लड़ने में किसी तरह की कोताही न करेंगे।

एक चमत्कारिक घटना (मेराज)'

(मेराज-परम ब्रह्म लोक का आरोहण। यह अत्यन्त उच्च कोटि की आध्यात्मिक स्थिति है जो अवतारों और पूर्ण सिद्ध सन्तों को ही कभी-कभी सुलभ होती है।)

नबूवत की बारहवीं साल आप बतारीख 27 रजब हजरत अमहानी बिन्त अबी तालिब के घर तशरीफ रखते थे कि यकायक मकान की छत फट गई और हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ लाये और आपको उठा कर मस्जिदे हराम (काबा की मस्जिद) में ले गये और वहाँ आपके सीने और पेट को चीरा और आबे ज़मज़म से दिल मुबारक को और सीना और पेट को अन्दर से धोया और सोने का तश्त (थाल) ईमान और हिकमत से भर कर लाये थे उससे आपके दिल को पुर किया (भर दिया) और इसके बाद बुराक़ (घोड़ा - जो जन्नत (स्वर्ग) से लाये थे) आपकी सवारी के वास्ते पेश किया। आप उस पर सवार होकर मस्जिद अक्सह तशरीफ ले गए। हजरत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आपके साथ थे। वहाँ अरवाह अम्बिया (अलैहिमुल रिज्वानुस्सलाम) हाजिर थीं (पैगम्बरों की महान आत्माएँ वहाँ उपस्थित थीं)। आपने इमाम होकर बमूजिब हुक्म अल्लाह तआला दो रकअत नमाज पढ़ाई। इसके बाद आसमान पर

तशरीफ ले गये। पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व छठा आसमान तय करके सातवें आसमान पर पहुँचे। वहाँ आपने बुराक छोड़ा और रफरफ तेज (अत्यन्त तीव्र गति से चलने वाले घोड़े) पर जो निहायत रोशन था, सवार होकर आठवें आसमान वगैरह तमाम तय करके ऐसे मुकाम पर पहुँचे जहाँ आपको ऐसा कुर्ब (ईश्वर-सान्निध्य) हासिल हुआ जो न किसी पैगम्बर को और न किसी मलक मुकर्रिब (समीपवर्ती देवता अथवा फरिश्ता) को हुआ था। आपसे अल्लाह तआला ने कलाम किया (बात की) और अपना दीदार दिखाया (दर्शन दिये) और ऐसे उलूम (विद्यायें) व फ़यूज़ (उपहार) अता फ़रमाये कि इसकी किसी को खबर नहीं। अतः कुरान शरीफ में आया है 'फऔहा इला अब्देही मा औहा' अल्लाह तआला ने अपने बन्दे पर जो कुछ वही (वह्य) भेजी)। परमात्मा का पूर्ण सान्निध्य, दर्शन, उनसे वार्तालाप तथा अनमोल उपहार प्राप्त करने के बाद जब आप वापस तशरीफ लाये, मशहूर है कि आपका बिस्तर मुबारक अभी तक गरम था और कमरे की ज़ंजीरें हिल रही थीं। सुबह जब आपने यह हाल फ़रमाया कुफ़्फ़ार और मजाक उड़ाने लगे। कुछ लोगों ने हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से कहा कि अब भी तुम मुहम्मद (सल्ल०) को सच्चा कहोगे। वह कहते हैं कि मैं रात मस्जिद अक्सा और तमाम आसमानों को सैर कर आया। अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने कहा, 'अगर वह यह बात कहते हैं तो बेशक ऐसा ही हुआ होगा और उसी वक्त हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुए। मेराज का हाल सुन कर उसकी तसदीक की। इसी सबब से हजरत अबूबक्र की नाम 'सिद्दीक' (रजि०) हुआ।

महत्वपूर्ण हिजरत

मक्के में स्थिति कुछ ऐसी पैदा हो गई थी कि इस बात की आशा नहीं की जा सकती थी कि कुछ और लोग 'ईमान' लायेंगे। हालात का दबाव ही कुछ ऐसा था कि अब आम लोगों का इस्लाम की ओर बढ़ना बहन कठिन था। फिर इधर मुसलमानों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था उनमें रहते हुए वे दीन के तकाजे भी पूरे नहीं कर सकते थे। इसलिए अब हजरत (सल्ल०) ने असहाब को इजाजत दो कि वे मदीना को हिजरत कर जायें। अतः असहाब ने गुप्त रूप से रवाना होना शुरू

किया। परन्तु हजरत उमर (रजि०) गले में तलवार लटका कर खाना-ए-काबा में आये और तवाफ़ किया (परिक्रमा की) और उसके बाद कुफ़्फ़ार को मुखातिब करके फ़रमाया 'खराब हों वह जो पत्थरों की पूजा करते हैं और जिन को अपनी बीबी का बेवा (विधवा) करना और अपनी औलाद का यतीम (अनाथ) करना मंजूर हो वह सामना करे।' यह कह कर मदीना रवाना हुए। कुरैश में से किसी का साहस न हुआ कि उनको रोकता। इस प्रकार हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) व हजरत अली (रजि०) को छोड़कर तमाम सहाबा हिजरत कर गये। हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से आपने फ़रमाया कि तुम मेरे साथ चलोगे, चुनानचे इस खुश खबरी से वह निहायत खुश हुये।

इस बात को मक्के वालों ने बड़ी चिन्ता के साथ देखा और अंतिम उपाय के रूप में हर कबीले के बड़े-बड़े सरदारों ने मिलकर यह तय किया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का काम तमाम कर दिया जाये और इस काम के लिये हर कबीले से एक-एक जवान चुना जाये और सब मिलकर एक साथ हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर हमला करें और उन्हें कत्ल कर दें। इस दशा में हाशिम वंश वालों के लिए यह सम्भव न रहेगा कि अपने वंश के एक आदमी के खून के बदले में तमाम कबीलों से अकेले लड़ सकें। दुश्मन की इन चालों का पता हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को भी चल गया और अल्लाह की ओर से यह हुक्म भी मिल गया कि अब आप मक्का छोड़कर मदीने चले जायें। एक रात को हजरत (सल्ल०) अपने दौलतखाने में तशरीफ रखते थे कि कुफ़्फ़ार ने आकर दरवाजा घेर लिया। आपने हजरत अली (रजि०) को अपनी जगह लिटा दिया और फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार तुम्हें ईज़ा (कष्ट) न पहुँचा सकेंगे। आपके पास जो लोगों की अमानतें थीं वह भी हजरत अली (रजि०) के सुपुर्द कर दी और उनसे फ़रमाया कि इन्हें इनके मालिकों के सुपुर्द करके मदीना में आ जाना। यह एक आश्चर्य की बात थी कि इतने विरोध के होते हुए भी विरोधी और दुश्मन यही जानते थे कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से ज्यादा सच्चा और अमानतदार कोई नहीं और इसलिए वे अपनी अमानतें आपके पास ही रखते थे। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) उन अमानतों को हजरत अली (रजि०) को सौंप कर दरवाजे से बाहर निकले और अव्वल सूरा 'फअग शैनाहुम फहुम लायुब सिरून' (हमने उन्हें ढक दिया, अब वह नहीं देख सकते हैं) तक पढ़ कर एक

मुट्ठी खाक कुफ़्फ़ार पर फेंक दी और आप साफ निकल आये। किसी को खबर न हुई और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को उनके घर से उनको साथ लेकर पैदल रवाना हुए। आपने जूता पाँव से निकाल डाला था और उंगलियों से चलते थे कि निशान मालूम न हो। आपके पैर जख्मी हो गये। तब हजरत अबूबक्र सिद्दीक (राज०) ने आपको कन्धे पर सवार करके गारे सौर (सौर की गुफा) तक पहुँचा दिया।

इधर दुश्मनों की ओर से अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खोज शुरू हुई। आपकी खोज में घोड़े दौड़ाये गये। ऊँट सवार भी रवाना हुये कुछ दुश्मन पैदल ही चल पड़े। दुश्मनों ने सोचा कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) मक्का से दूर न पहुँचे होंगे, अगर तेजी के साथ खोज को जाये तो पता लगना कठिन नहीं है। मक्का के करीब की तमाम झाड़ियाँ, आसपास के बाग़ीचे और रास्ते छान मारे, पर पता न चला, यहाँ तक कि दुश्मन सौर की गुफा के ठीक द्वार पर जा पहुँचे। सबसे पहले उनकी चहल पहल सुनाई दी, फिर उनकी बातें करने की आवाज आने लगी। हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को अत्यन्त चिन्ता हुई कि कही ये जालिम गुफा में न चले आयें। बाहर आने-जाने का यही एक मार्ग है, हम कही जा भी नहीं सकेंगे। दुश्मन बिलकुल सिर पर थे। हजरत अबूबक्र (रजि०) को अपने से कहीं अधिक चिन्ता हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की थी कि दुश्मन कहीं हुजूर को नुकसान न पहुँचायें। उसी समय अल्लाह ने वह्य (वही) भेजी और 'वह्य' के ये शब्द थे - 'ला तहज़न इन्नल्लाह मअना' (अर्थात् गम न करो, अल्लाह हम दोनों के साथ है)। अल्लाह के देस कथन को स्वयं नबी (सल्ल०) के मुख से सुन कर अबू (रजि०) के दिल को ढ़ाढ़स बंधी, चिन्ता धैर्य में बदली, गम जाता रहा और उन्हें यह विश्वास हो गया कि शत्रु हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। खुदा की सहायता और समर्थन हमारे भाग्य में लिखा जा चुका है। अतः कुरैश दुश्मन उलटे पाँव वापस चले गए। उनके मन में यह ख्याल भी न आया कि इस गुफा में जिसका मुहाना छोटी घास से ढ़का है, कोई गया भी है।

तीन दिन तक हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और हजरत अबूबक्र (रजि०) सौर की गुफा में छिपे रहे। जब रात का अन्धकार अच्छी तरह फैल जाता तो अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की बेटी अपने घर से रवाना होती और अति सावधानी और गोपनीयता के साथ सौर की गुफा में खाना पहुँचाती। यदि शत्रुओं को सूचना मिल जाती तो उनके

जान की खैर न थी। पर अल्लाह के रसूल के लिए उन्होने किसी खतरे की परवाह न की। सौर की गुफा से रवाना होने की समस्या बड़ी नाजुक थी। यहाँ से रवाना होने के लिए उपयुक्त मौक़े की तलाश के लिए कुरैश दुश्मनों की गतिविधियों की सूचना पानी भी जरूरी थी। हजरत अबूबक्र (रजि०) के बेटे अब्दुल्लाह शहर वालों की निगाह से छिप छिपाकर सौर की गुफा में आते और दुश्मनी के हालात सुना कर चले जाते। आमिर बिन फुहैरा, जो हजरत आइशा (रजि०) के भाई का गुलाम था, बकरियाँ चराया करता था। वह वहाँ गुफा के पास अपनी बकरियाँ ले आता और हजरत मुहम्मद (सल्ल०) और अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) आवश्यकतानुसार दूध ले लेते थे। फिर वह बकरियों के पैरों के निशान मिटा देता कि कही इन निशानों के आधार पर खोजते-खोजते कुरैश दुश्मन सौर की गुफा तक न आ जायें। ऐसे नाजुक समय में अति गोपनीयता और बहुत सावधानी की जरूरत थी।

पूरे दो दिन और तीन रातें इसी दशा में बीती। कुरैशी दुश्मन गाफिल न थे, उनके लोग बराबर पता लगा रहे थे। आखिर चौथी रात का हजरत अबूबक्र (रजि०) के घर से दो तन्दुरुस्त और तेज रफ्तार वाली ऊँटनियाँ आ गयी। एक ऊँटनी पर हुजूर नबी (सल्ल०) और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) सवार हुए और दूसरी पर आमिर बिना फुहेरा और अब्दुल्लाह बिन अरीकत सवार हुए। अब्दुल्लाह बिन अरीकत को रास्ता बताने के लिए नौकर रख लिया गया था। हजरत अबूबक्र (रजि०) के परिवार ने नबी (सल्ल०) के हिजरत के सिलसिले में जो सेवायें की हैं उन पर इतिहास को गर्व है। बाप-बेटा-बेटी और गुलाम सभी ने अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार अपनी जान को जोखिम में डालकर रसूल (सल्ल०) की जो ख़िदमतें की हैं उनके इस उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

मदीना में

सौर की गुफा से ऊपर वर्णित यह छोटा परन्तु महान पवित्रतम् कारवाँ मदीने के लिए रवाना हुआ। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) बतारीख 12 रबीउल अव्वल मदीना मुनव्वरा पहुँचे। शहर के किनारे मुहल्ला कवाँ में रुके और यहाँ पंज शम्बा (बृहस्पतिवार) तक निवास किया। इसके बाद शहर के अन्दर ठहरने का इरादा किया

। हर शख्स की यह हार्दिक इच्छा थी कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) हमारे मुहल्ले में रहें । जिस वक्त आप ऊँटनी पर सवार हुए हर कबीले के लोग आपके साथ हुए । आपने फ़रमाया कि यह ऊँटनी खुद अपनी तरफ से जहाँ बैठ जायेगी वहाँ रुकुंगा । यहाँ तक कि ऊँटनी, जिस जगह इस वक्त मस्जिद नबवी (पैगम्बर की) है, बैठ गई । आप उसी जगह उतरे, अबू अयूब अन्सारी (रजि०) आपका असबाब अपने घर ले गये और आप उनके घर ठहरे । यहाँ तक कि आपकी मस्जिद नबवी और आपका मकान तैयार हुआ । यह जमीन जिस जगह ऊँटनी बैठी थी दो यतीमों की थी, हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की सम्पत्ति से दस दीनार में खरीदी गई । हदीस की किताबों में लिखा है कि मस्जिद शरीफ के तामीर (निर्माण) में आपने एक पत्थर अपने दस्त मुबारक से रखकर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से फ़रमाया कि 'इसके पास एक पत्थर तुम रखो' और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के पत्थर के पास एक पत्थर हजरत उमर (रजि०) और हजरत उमर (रजि०) के पत्थर के पास एक पत्थर हजरत उस्मान से रखवाया और फ़रमाया 'हाउलाइल खुलफाए मिन बादी' (यानी यह लोग खलीफा होंगे मेरे बाद) । अतः ऐसा ही हुआ । हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने जिस वर्ष' ऊपर वर्णित हिजरत की थी और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के साथ मदीने में प्रवेश किया था वह सन् 622 ई० था । ऐतिहासिक दृष्टि से यह वर्ष इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 17 वर्षों के पश्चात् हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के दूसरे खलीफा हजरत उमर (रजि०) ने इसी वर्ष (सन् 622 ई०) को प्रथम वर्ष मान कर हिजरी सन् चलाया और उन्होंने इस हिजरी सन् का शुभारम्भ उस वर्ष के प्रथम चन्द्र मास के प्रथम दिन को माना । उस वर्ष यह दिन 17 जुलाई को पड़ा था । इस प्रकार हिजरी सन् का शुभारम्भ 17 जुलाई सन् 622 ई० से हुआ ।

भाईचारा

मक्के से जो लोग घर-बार छोड़कर मदीना आये थे वे लगभग सभी बिना किसी सामान आदि के थे । खाते-पीते लोग भी सब कुछ छोड़-छाड़ कर ऐसे हो आ गए थे । और अब यहाँ उनके लिए स्थाई स्थान की आवश्यकता थी । हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस समस्या को इस प्रकार सुलझाया कि एक दिन मदीने के सब

मुसलमानों को बुलाकर कहा कि, 'ये सब मुसलमान जो मक्के से आये है तुम्हारे भाई हैं' और फिर आपने मदीने के एक व्यक्ति को बुलाया और एक मक्के वाले को बुलाया और फ़रमाया 'आज से तुम एक-दूसरे के भाई हो, तुम अपने भाई को अपने घर ले जाओ और अपने साथ रखो।' आपने मदीने वालों को 'अन्सार' (सहायता करने वाले) का नाम दिया। और मक्के वाले को 'मुहाजिर' (अल्लाह के लिए घरबार छोड़ने वाले) का नाम दिया और इस प्रकार सब मुहाजिरों को अन्सार का भाई बना दिया और अल्लाह के ये बन्दे भाई ही क्या भाई से भी कही ज्यादा साथी वन गये। अन्सार खुशी-खुशी मुहाजिरों को अपने घर ले गए और अपनी जायदाद, सामान और व्यापार में उन्हें शरीक करके भाइयों की भाँति हिस्सा बाँट दिया। बाग़ीचों की आय, खेती की उपज, घर का सामान, मकान, जायदाद, सारांश यह है कि हर चीज इन भाइयों ने परस्पर बाँट ली और ये बे-घर के लोग बड़ी ही प्रसन्नता और सन्तोष का जीवन व्यतीत करने लगे।

क़िबले में परिवर्तन

अब तक इस्लाम का क़िबला 'बैतुल मकदिस' था (जो यरूसलम में है), अर्थात्, मुसलमान उसी की ओर मुँह करके नमाज पढ़ते थे। यही यहूदियों का भी क़िबला था। शाबान सन् 2 हिजरी की घटना है कि ठीक नमाज की हालत में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर क़िबले को बदलने का आदेश उतरा और बैतुल मकदिस के बदले काबा को मुसलमानों का क़िबला बनाया गया। अतः हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने नमाज पढ़ने की दशा ही में अपना मुँह उत्तर में बैतुल मकदिस की ओर से फेर कर दक्षिण में काबे की ओर कर लिया। इस्लामी इतिहास की यह घटना अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह मानो अल्लाह की ओर से एक ऐलान था कि अब तक यहूदियों को यह पद प्राप्त था कि वे दुनिया के सामने अल्लाह का दीन (धर्म) पेश करें, अब उन्हें इस पद से हटाया जा रहा है और अब मुसलमानों को यह जिम्मेदारी सौंप दी जा रही है कि वे अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह के दीन का सन्देश पहुंचाने का काम करेंगे।

जिहाद का सिलसिला

जिस साल उक्त घटना घटित हुई उसी साल माह रमज़ान के रोज़े फर्ज हुये (इसी वर्ष मुसलमानों के लिए रोज़े रखना अनिवार्य ठहराया गया)। इसी वर्ष खुदा की ओर से आपको कुफ़्फ़ार (काफ़िर लोगों अर्थात् नास्तिक लोगों) के विरुद्ध जिहाद छेड़ने (युद्ध करने) का आदेश हुआ। अतः जंग बद्र, जंग उहद, जंग खंदक, जंग खैबर, जंग हुनैन व जंग तबूक वगैरह बड़ी सख्त-सख्त लड़ाइयाँ हुई जिनका विस्तृत विवरण सम्बन्धित पुस्तकों में दिया गया है। अपने जीवन के अंतिम दस वर्षों में जिन लड़ाइयों में नबी (सल्ल०) स्वयं शरीक हुये, उनकी संख्या 27 है, जिन में से 9 में सख्त लड़ाई हुई। इनके अलावा छोटी बड़ी 38 लड़ाइयाँ ऐसी हैं जो आपकी हिदायतों के अन्तर्गत दूसरे सरदारों की अध्यक्षता में लड़ी गयीं। इस पूरी मुद्दत में आपने ही स्वयं हर घटना की निगरानी व हर मामले का फैसला किया और इस अवधि में आपने पूरे अरब से मूर्ति पूजा का नाम व निशान मिटा दिया। स्त्री के मान को बढ़ाया और उसे समाज में ऊँचा स्थान दिया। मद्यपान व दुराचार का अन्त कर दिया। लोगों में ईमान, शुद्ध हृदयता, सच्चाई और अमानतदारी और ऐसी ही अनेकों नैतिक विशेषताएँ पैदा कर दी जिन से अरब के लोग शताब्दियों से वंचित थे। जिन अरबों को संस्कृति, नैतिकता और ज्ञान के क्षेत्र में कोई स्थान प्राप्त न था उन्हें अत्यन्त सभ्य और ज्ञान का अनुरागी बना दिया।

हिजरत का नवाँ साल

हसरत के नवें साल मुसलमानों के लिए हज़ फर्ज हुआ (हज़ करना अनिवार्य ठहराया गया) लेकिन खुद हजरत (सल्ल०) लड़ाइयों के जरूरी कामों तथा इस्लाम की तालीम व हिदायत के कामों में अत्यधिक मशगूल (व्यस्त) रहने की वजह से तशरीफ न ले जा सके। आपने अपनी जगह हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को अमीरुल हज़ (हज़ करने वालों का नेता) बनाकर मक्का रवाना किया, जहाँ जा कर उन्होंने लोगों से हज़ कराया और खुत्बहाए मौसमें हज़ पढ़े (हज़ के अवसर पर पढ़े जाने वाले धर्मोपदेश पढ़े)।

अन्तिम हज्ज और वफ़ात (स्वर्गवास)

हिजरत के दसवें साल हजरत (सल्ल०) खुद हज़ तशरीफ ले गये और उस हज़ में आपने ऐसी-ऐसी बातें फ़रमायी जैसे कोई लोगों को रुख़सत (विदा) करता है लिहाज़ा इस हज्ज को 'हज्जतुल विदा' कहते हैं। इस मौक़े पर आपने लोगों को ठीक तरीके से हज्ज अदा करने की क्रियात्मक रूप से शिक्षा दी और इसी मौक़े पर बतारीख 9 जिल हिज्जा को अरफात के मैदान में वह ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें अत्यन्त महत्वपूर्ण आदेश दिये। इस भाषण में कही हुई बातें अभी तक 'हदीस' की किताबों में मौजूद है, जिन में से कुछ महत्वपूर्ण बातें ये हैं जौ आपने कहा:

अरब को गैर अरब पर और गैर अरब को अरब पर कोई बड़ाई नहीं, तुम सब आदम (प्रथम मूल पुरुष) की औलाद हो और आदम, मिट्टी से पैदा हुए थे।

मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं।

तुम्हारे गुलाम ! जो खुद खाओ इनको भी खिलाओ, जो खुद पहनो, इनको भी पहनाओ।

अज्ञान काल के तमाम खून अनृत ठहरा दिये गये (अर्थात् अब किसी को किसी से पुराने खून का बदला लेने का हक नहीं) और सबसे पहले मैं अपने वंश का खून अनृत ठहराता हूँ।

औरतों के मामले में अल्लाह से डरो यानी उनको बेजा तकलीफ व रंज मत दो और मर्दों के लिए औरतों पर ताकीद की वे अपने मर्दों की इताअत (आज्ञापालन) करें।

मैं तुम्हारे लिए एक चीज छोड़ जाता हूँ, अगर तुमने इसे मजबूत पकड़ लिया तो तुम गुमराह न होंगे और वह है-अल्लाह की किताब (कुरान शरीफ)।

आखिर में आपने जनसमूह को सम्बोधित करके कहा कि तुम से अल्लाह के यहाँ मेरे बारे में पूछा जाएगा तो तुम क्या कहोगे? लोगों ने उत्तर दिया: "हम यही कहेंगे कि आपने अल्लाह का सन्देश हम तक पहुँचा दिया और अपना कर्तव्य पूरा कर दिया।" आपने आकाश की ओर उँगली उठाई और फ़रमाया "हे अल्लाह! तू गवाह रहना।" इसी साल अरफ के रोज आयत "अलियौ अकमल तोलकुम दीनकुम व अतममतो अलेकुम नेमती बरजी तोलकमुल इस्लामा दीनह" नाजिल हुई (यानी आज कामिल किया मैंने तुम्हारे लिए दीन तुम्हारा और पूरी की तुम पर नेमत अपनी और पसन्द

किया तुम्हारे लिए दीन इस्लाम का)। नुक्तः शनास (मर्म अथवा रहस्य को समझने वाले) सहाबह इस आयत के नजूल से कुर्ब कयामत (महाप्रलय की निकटता) अर्थात् वफ़ात (देहान्त) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) समझ गये और इससे करीब 'सूरा अन-नस्त्र' नाजिल हुई। इससे भी सहाबह (हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के साथी) यह समझ गए कि आँ हजरत (सल्ल०) की वफ़ात नजदीक है। एक बार आँ हजरत (सल्ल०) खुतबः (धार्मिक उपदेश) में इरशाद फ़रमाया कि हर बन्दे को इख्तियार दिया गया है चाहे वह दुनिया की धन दौलत और यश को ग्रहण करे या उस चीज को ग्रहण करे जो अल्लाह तआला के पास है। इरशाद फ़रमाया कि उसने दुनिया को इख्तियार नहीं किया बल्कि 'आख़िरत' (परलोक) को इख्तियार किया। हजरत अदरक सिद्दीक (रिज०) इस रहस्य को समझ गये और जार-जार रोने लगे। लोग इनके रोने पर हैरान थे कि हजरत (सल्ल०) तो एक गैर शख्स का हाल फ़रमाते है। इनके रोने की क्या वजह है। बाद को मालूम हुआ कि इस बन्दे से मुराद (आशय) आँ हजरत (सल्ल०) खुद थे।

सफर सन् 11 हिजरी की 18 या 16 तारीख थी कि आपकी तबीयत कुछ खराब हुई और निरन्तर खराब होती चली गई। एक दिन आपने हजरत आयशा (रजि०) से फ़रमाया कि खैबर में मैंने जो लुक्मा खाया था उसकी तकलीफ हमेशा रहती है। (यहाँ लुक्मा से आशय उस भोजन से है जो एक यहूदी औरत ने बकरी के गोश्त में जहर मिलाकर दिया था)।

आपको सर का सख्त दर्द और तेज बुखार रहने लगा और यहाँ तक बढ़ा कि आप नमाज के लिए मस्जिद में न जा सके और हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को इरशाद फ़रमाया (आदेश दिया) कि इमामत करें। उनके आदेशानुसार हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने इमामत शुरू को। दो बार हजरत (सल्ल०) बीमारी की हालत में नमाज पढ़ाने के लिये मस्जिद में तशरीफ ले गये। एक वार हजरत सिद्दीक (रजि०) के पीछे पढ़ी और एक मर्तबा इनके बराबर खड़े हुए थे। आखिरकार 12 रबीउल अव्वल दो शम्बः (इतवार) को दोपहर ढ़ले आपने हजरत आयशः सिद्दीक (रजि०) के सीना पर तकिया लगाये हुये वफ़ात पाई (नश्वर शरीर त्याग दिया)।

'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी तरफ

पलट जायेंगे)।

आपकी वफ़ात से गोया कयामत बरपा हो गई (महाप्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया)। असहाब और अहले बैत (आपके परिवार वालों) का ऐसा सदमा हुआ कि जिसका बयान नहीं। हजरत उमर (रजि०) के होश जाते रहे। उनकी बदहोशी यहाँ तक बढ़ी कि वह नंगी तलवार लेकर यह कहने लगे कि जो हजरत (सल्ल०) के विषय में यह कहेगा कि उनको वफ़ात (मृत्यु) हुई तो मैं उसे कत्ल कर दूँगा। एक अजब परेशानी पैदा हो गई। इस पर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) हजरत (सल्ल०) के हुजरे (कमरे) में गए। पवित्र माथे को श्रद्धा के होठों से चूमा और मस्जिद नबवी में आकर यह महत्वपूर्ण खुतबा पढ़ा - 'जो मुहम्मद (सल्ल०) की पूजा करता हो तो मुहम्मद (सल्ल०) का देहान्त हो गया और जो अल्लाह की पूजा करता हो तो वह ऐसा जिन्दा है कि कभी नहीं मरेगा और मुहम्मद (सल्ल०) तो पैगम्बर हैं। उनके पहले भी बहुत से पैगम्बर गुजर चुके हैं। क्या अगर पैगम्बर का देहान्त हो जाये या कत्ल कर दिये जायें तो क्या तुम उलटे पाँव लौट जाओगे और कोई व्यक्ति लौट जाए तो यह अल्लाह को किसी तरह जरर (नुकसान) नहीं पहुँचा सकता और वह (अल्लाह) शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दों को नेक बदला देगा।' इस खुतबा के सुनते ही सब लोगों को विश्वास हो गया कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का स्वर्गवास हो गया और सबके होश ठिकाने हो गये। हजरत अली (रजि०) व अब्बास व फजल व कशम व असाम विनजैद ने हजरत सल्ल० को ग़ुस्ल दिया (नहलाया) और तीन जामः (कपड़ों) से कफन दिया। नमाज के वास्ते यह निश्चय किया गया कि बारी-बारी से जो लोग आते जायें नमाज पढ़ते जायें। आपको हजरत आयशा (रजि०) के हुजरा में जहाँ आपका इन्तकाल हुआ था दफन किया गया। उस समय आपकी जुदाई में आपके सहाबह व अहले बैत (घरवालों) को जो अपार दुःख व सदमा हुआ वह बयान से बाहर है। हजरत (सल्ल०) की सुपुत्री हजरत फातमा (रजि०) को इस क़दर सदमा हुआ कि जब तक वह जिन्दा रहीं कभी न हंसी और दफन के बाद कब्र शरीफ पर आई और थोड़ी सी खाक उठा कर आँखों से लगाई और सूँघी और कुछ अशआर पढ़े जिनका मतलब यह है कि 'क्या चाहिये उसको जो सूँघे खाक कब्र हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की, यह चाहिये कि न सूँघे सारी उम्र कोई खुशबू। मुझ पर ऐसी मुसीबतें आकर पड़ी कि अगर दिन पर

पड़ती तो रात बन जाती।

(अल्लाह तआला अपने सभी भक्तों को और उन सबके तुफ़ैल में इस अधम पापी अकिंचन तुच्छ लेखक को हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफाअत' नसीब करें। आमीन या रब्बुल आलमीन।

आपका हुलियः शरीफ (शरीर की बनावट)

हजरत सल्ल० मझले कद के थे और आपकी भुजाएँ लम्बी थी लेकिन मजमा (भीड़) में जब आप खड़े होते थे उसमें चाहे कितना ही लम्बा कद का आदमी होता आप सबसे अधिक बुलन्द। तेजस्वी) मालूम होते। रंग मुबारक सुर्ख (लाल) व सफेद मिला हुआ था (लगभग गेहुआँ रंग)। सर मुबारक बड़ा था। सर के बाल बिलकुल काले और घुँघराले थे। बाल कभी आपके कंधों तक होते, कभी कानों की लौ तक। आप माँग निकाला करते थे। आप का माथा चौड़ा ओर चमकदार था। आपकी भौहें बारीक थी। कमान की तरह मिली हुई मालूम होती थी। लेकिन वास्तव में मिली हुई न थी। दोनों के बीच कुछ फर्क था। दोनों भौहों के बीच एक रग (नस) थी जो गुस्सा के वक्त फूल जाती थी। आँख बड़ी थीं और सफेदी-ललाई लिए हुए थी। पुतलियाँ निहायत काली कि बिना सुरमा के भी ऐसी मालूम होता थी कि मानो सुरमा लगा हुआ है। पलकें बड़ी-बड़ी थी। आपके गाल पुरगोश्त व नरम, न फूले हुए, न दबे हुए। नाक बुलन्द और नूरानी, कान न छोटे न बड़े बल्कि बीच के आकार के थे और सुन्दर थे। दाँत मुबारक सफेद चमकदार और मुस्कराहट के समय बिजली की तरह चमक मालूम होती थी। आगे के दांतों में खिड़की मालूम होती। चेहरा मुबारक न लम्बा, न गोल बल्कि किसी क़दर गोल था। चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता था। डाढ़ी मुबारक भरी हुई थी। गरदन मुबारक साफ चमकदार और बहुत सुन्दर थी मानो साँचे में ढ़ली हुई थी। पेट सफेद, साफ और चमकदार था। सीना और पेट बराबर था यानी पेट सीना से निकला हुआ न था। हाथ लम्बे-लम्बे थे, हथेलियाँ कुशादह (चौड़ी) पुरगोश्त और नरम थी। बगले सफेद, खुशबूदार और इनमें बाल न थे। हाथ की अँगुलियाँ लम्बी और खुशनुमा थी।

आपके शरीर में यह विशेषता थी कि आपको पीठ पीछे भी वैसा ही दिखाई देता

था जैसा कि सामने से। इसकी वजह यह थी कि आपका बदन मुबारक नूर (प्रकाश) का था और इसी कारण से आपकी परछांही न थी। हजरत अबू हरेरः (रजि०) फ़रमाते हैं कि "मैंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से ज्यादा तेज चलने वाला इन्सान नहीं देखा। आप बिला तकल्लुफ चला करते थे और हम निहायत मेहनत से आपके साथ निभते थे। आपके बदन से ऐसी खुशबू आती थी कि जो कोई आप से मिलते वक्त हाथ मिलाता, तमाम दिन हाथ में खुशबू आती थी। जिस गली से आप निकल जाते थे वह खुशबू से महक जाती थी और लोग पहिचान लेते थे कि आप इधर से तशरीफ ले गये हैं। पसीने में ऐसी खुशबू थी कि वह दुलहिनों के लगाया जाता था। आप जहाँ पाख़ाने के लिये बैठते वहाँ से खुशबू आता थी और जमीन आपके पाख़ाने को छिपा लेती थी। आपके मुँह के पानी से खारे कुएँ मीठे हो जाते थे। मक्खी आपके बदन पर नहीं बैठती थी। आपको पाकीज़गी (सफाई) बहुत पसन्द थी और मैला-कुचैला परेशान सूरत रहने को बहुत नापसन्द फ़रमाते। बालों को धोने और तेल लगाने का आप ने हुक्म दिया है। लेकिन इस क़दर नहीं कि अकसर उसी में मशगूल (व्यस्त) रहें।

आपका अख़्लाक़ करीमा (सदाचरण, शिष्टाचार)

आपके अख़्लाक़ का अन्दाजा इसी से करना चाहिए कि अल्लाह तआला इसको कुरान शरीफ में अजीम (महान) फ़रमाता है: "इन्नकाल अला खुलोकिन अजीम" (तुम बहुत बड़े अख़्लाक़ वाले हो) आप ऐसे सम्मानित और प्रतिष्ठित महान व्यक्ति थे कि जो अचानक आपको देखता उसे पहिले आप से मिलने में डर लगता लेकिन जब आपकी खिदमत में हाजिर होता और आपसे मिलकर बातचीत करता तो आपकी मुहब्बत उसके दिल में आ जाती। आपकी आदत यह थी कि जिससे मिलते, आप पहले सलाम करते और जो शख़्स आपका हाथ पकड़ लेता तो उससे हाथ न छुड़ाते यहाँ तक कि वह खुद आपको न छोड़ देता। खड़े होते और बैठते तो जिक्र अल्लाह किया करते और अगर आपके पास नमाज पढ़ते वक्त कोई आ बैठता तो अपनी नमाज मुख्तसर (संक्षेप) कर देते और उससे पूछते कि तुम को कोई काम है और जब उसके काम से फारिग होते तो फिर नमाज पढ़ने लगते।

आपको जहाँ बैठने की जगह मिलती वही बैठ जाते। विनम्रता का यह हाल कि

आप अगर किसी के यहाँ तशरीफ ले जाते तो किसी ऊंची जगह और विशिष्ट स्थान पर न बैठते बल्कि साधारण लोगों की तरह उन्हीं के बराबर में बैठ जाया करते। जो आपके पास आता था उसका बड़ा आदर सत्कार करते, यहाँ तक कि उसके लिए अपनी चादर बिछा कर उसको बिठा लेते और तकिया जो आपके पास नीचे रहता था आने वाले के लिए उसको निकाल कर देते और अगर वह लेने से इकार करता तो आप कसम देते कि इसी पर तकिया लगाकर बैठिए। जिस किसी ने आपसे मुहब्बत की, उसको यही ख्याल होता कि आप सबसे ज्यादा मुझ पर करम फ़रमाते (कृपा करते हैं) और मुझ से ज्यादा मुहब्बत करते हैं।

जलसों में हर एक की तरफ व्यक्तिगत रूप से तवज्जोह फ़रमाते (ध्यान देते) और अपने असहाब को उनकी हौसला अफ्जाई (उत्साह-वर्धन) के लिये उनकी कुन्नियतों (घर के नामों) से पुकारते और जिसकी कुन्नियत न होती उसकी कुन्नियत आप खुद मुकर्रर फ़रमाते (निर्धारित करते)। सब लोगों से ज्यादा, देर में आपको गुस्सा आता और सबसे जल्दी राजी (प्रसन्न) हो जाते। लोगों पर निहायत दरजे की मेहरबानी फ़रमाते और उनकी भलाई के लिये हमेशा प्रयत्नशील रहते। आपकी मजलिस में आवाज़ें बुलन्द न होती थी। आप अत्यन्त सुन्दर और सरल भाषा बोलने वाले थे। आप कम बोलते और जब बोलते तो बड़ी नर्मी से बात करते और ज्यादा कलाम न फ़रमाते। आपका कलाम (कथन) मानो मोतियों के दानों की लड़ी की तरह एक दूसरे के पीछे चला आया करता था। कलाम फ़रमाते समय बीच-बीच में थोड़ा रुक जाते थे जिससे कि सुनने वाले उसको याद कर लें। आपकी आवाज बुलन्द और बोलने का लहजा सबसे अच्छा था। खामोश अधिक रहते थे। अनुचित शब्द ज़बान पर न लाते। यदि कोई बुरा शब्द बोलता, उसकी तरफ से मुँह फेर लेते और जो शब्द आपको बुरा मालूम होता और बमजबूरी कहना पड़ता तो उसको इशारतन (संकेत रूप में) इरशाद फ़रमाते (कह देते)। जब आप खामोश हो जाते तब उनके पास उपस्थित लोग अपनी बात कहते। आपके पास कोई एक दूसरे की बात न काटता। अपने असहाब के सामने सबसे अधिक मुस्कराते और हँसते। आप हमेशा प्रसन्नचित्त रहते, बशर्ते कि आप पर कुरान मजीद नाज़िल न होता (न उतरता) या कयामत का जिक्र या खुला (धार्मिक उपदेश) और बाज (धार्मिक शिक्षाएँ) न फ़रमाते। अगर आप गुस्सा होते (और गुस्सा

बजुज़ खुदा के वास्ते न हुआ करते थे) तो किसी चीज को आपके ग़ुस्से के सामने ठहरने की ताब न थी।

आप भोजन में जौ कुछ बना होता, खा लेते और जिस भोजन को कई लोग एक साथ बैठ कर खाते उसे अधिक पसन्द करते और जब दस्तरख्वान बिछाया जाता तो "बिस्मिल्लाह" फ़रमाते। आप पानी तीन दफे पीते और इनमें 'बिस्मिल्लाह' और तीन बार 'अल्हम्दोलिल्लाह' कहते। पानी को चूस-चूस कर पीते, बड़े घूँट से न पीते और कभी एक ही साँस में पानी पीने से फरागत पाते। पानी पीते वक्त पानी के बरतन में साँस न लेते बल्कि इससे अलग होकर साँस लेते। आप खाना घर वालों से न माँगते और इनसे किसी विशेष प्रकार के भोजन की इच्छा न प्रकट करते। उन्होंने जो खिला दिया तो खा लिया और जो सामने रखा क़बूल फ़रमाया। कभी-कभी अपने खाने व पीने को चीज़ें खुद खड़े होकर लेते। कपड़े में जो आपको मिलता तहमद या चादर या कुर्त्ता या जुब्बः (लम्बा अँगरखा) या और कुछ पहिन लेते। आपको हरे कपड़े अच्छे मालूम होते थे और आपकी अकसर पोशाक सफेद होती और फ़रमाते कि इसको अपने जिन्दा लोगों को पहिना और मरे हुए लोगों को उसी में दफ़नाओ। लड़ाई के वक्त रूई भरा हुआ चोंगा पहिनते और कभी बिला रूई भरा हुआ भी पहिनते। आपके सब कपड़े टखनों के ऊपर चढ़े रहते और तहमद उनसे भी ऊपर पिंडलियों की आधी दूरी तक होता। आपके कमीज के बन्द बंधे रहते। कभी आप सिर्फ चादर पहिनते और कोई कपड़ा बदन पर न होता। आपके पास एक चादर पैबन्द लगी हुई थी, उसको पहिनते और फ़रमाते कि मैं बन्दा हूँ, पहिनता हूँ जैसे बन्दा पहिनता है। जुमा (शुक्रवार) का जोड़ा खास था, सिवाय और दिनों के कपड़ों के, आप टोपी पग़डी के नीचे या बिना पग़डी के पहिनते। आप अँगूठी पहिनते और जब बाहर तशरीफ लाते तो आपकी अँगूठी में किसी चीज की याददाश्त के लिये धागा बंधा होता। जब आप कपड़े पहिनते तो दाहिनी तरफ से शुरू करते और जब उतारते तो बायें तरफ से इब्तदा (आरम्भ) करते। जब नया कपड़ा पहिनते तो पुराना कपड़ा किसी मिस्कीन (गरीब) को इनायत फ़रमाते। आपके पास एक चमड़े का गद्दा था जिसमें ख़ुरमा (सूखा खजूर) की छाल भरी हुई थी और एक कम्बल था कि उसको हर जगह उठा कर अपने नीचे दो तह करके बिछाते। आप बोरिया पर सोते थे, इसके सिवा और बिस्तर न होता।

आप सबसे अधिक सहनशील थे और पूर्ण रूप से क्षमतावान होते हुए भी मुजरिमों (अपराधियों) का कसूर मुआफ़ फ़रमा दिया करते थे। एक यहूदी ने आप पर जादू किया था। हजरत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आपको इस हाल की इत्तला दी थी। यहाँ तक कि आप ने उस जादू को निकलवा कर गिरह (गाँठ) खोली थी, तो इससे इफाकः (आरोग्य लाभ) हो गया था। लेकिन उस यहूदी से कभी इसका जिक्र न किया और न उससे इस बात को जाहिर किया। आप इरशाद फ़रमाते (उपदेश के रूप में यह कहते) कि तुम में से कोई मेरे असहाब (साथियों) की तरफ से कोई बात (बुराई) मुझ से न कहा करो ताकि मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पास सीना साफ होकर आऊं। किसी के सामने वह बात न फ़रमाते जो उसको बुरी मालूम हो। एक शख्स आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और तेज खुशबू लगाये हुये था। आपको बुरी मालूम हुई, मगर उससे कुछ न फ़रमाया। जब वह चला गया तो लोगों से इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम उससे कह दो कि इस्तेमाल न करे तो अच्छा हो।

आँ हजरत सल्ल० सबसे ज्यादा फैयाज और दानशील थे ओर माह रमज़ान मुबारक में आँधी की तरह होते थे कि कोई चीज बिना दिये न छोड़ते और कभी किसी चीज का सवाल आपसे न हुआ कि (कोई चीज आपसे माँगी गई और) आपने उसको नहीं दिया। एक जरूरतमन्द ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर कुछ मांगा। हुजूर ने फ़रमाया कि इस समय मेरे पास देने के लिये कुछ भी नहीं है, तुम मेरे नाम पर किसी से उधार ले लो, मैं तुम्हारा ऋण चुका दूँगा। हजरत उमर (रजि०) वहाँ बैठे हुए थे। बोले -"या रसूल सल्ल० ! अल्लाह ने आपको अपनी सामर्थ्य और शक्ति से बढ़कर काम करने का कष्ट नहीं दिया।" इस पर हुजूर चुप हो गये और उन्हें यह बात बुरी मालूम हुई। एक श्रद्धालु अन्सारी वहाँ बैठा था। बोला, "ऐ अल्लाह के रसूल ! खूब दीजिये। अल्लाह मालिक है फिर तंगी का क्या डर ?" अन्सारी के उत्तर पर हुजूर मुस्कुरा दिये और उनके पवित्र चेहरे पर प्रसन्नता बिखर गई। फ़रमाया, 'हाँ मुझे यही हुक्म मिला है।'

हजरत उमर (रजि०) फ़रमाते थे कि "एक बार मैं हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ। हुजूर तहमद बाँधे चटाई पर विश्राम कर रहे थे। चटाई के निशान आपके पवित्र शरीर पर उभरे हुए स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। घर में एक कोने में

सेर दो सेर जौ का अनाज पड़ा था और दीवार पर चमड़ा लटका था। आपकी इस गरीबी को देख कर मेरी आँखों में सहज ही आँसू भर आये।" हुजूर ने मेरी आँखों में आँसुओं को देखकर फ़रमाया, "ऐ खत्ताब के बेटे! तुझे किस चीज ने रुलाया ? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल। मैं रोऊँ नहीं तो क्या करूँ ? कैसर और किसरा तो सोने के तख्त और सुन्दर रेशमी नम फ़र्श पर मजे उड़ायें और आप खुदा के पैगम्बर इस हाल पर जीवन बिताएँ।' हजरत सल्ल० ने फ़रमाया, "खत्ताब के बेटे ! क्या तू इस पर तैयार नहीं है कि उनके लिये दुनिया हो और मेरे लिये आख़िरत (परलोक)।"

शूर वीरता की यह दशा कि घमासान खूनी लड़ाइयों में जब अच्छे अच्छों के पैर उखड़ जाते तो आप इस प्रकार अडिग खड़े रहते मानो कुछ हुआ ही नहीं। हजरत अली (रजि०) का कथन है कि जब घमासान युद्ध छिड़ता तो हम हुजूर की शरण खोजते थे और जब दुश्मन बिलकुल हमारे नजदीक होते, हम हजरत (सल्ल०) की आड़ में हो जाते थे। उस वक्त आपके अलावा दुश्मन से अधिक नजदीक कोई न होता था। लड़ाई के वक्त टोली से जब कोई आगे बढ़ता तो सबसे पहले आप ही आगे होते थे।

आँ हजरत (सल्ल०) स्वयं प्रभावशाली सम्मानित एवं रुत्बे वाले होते हुए भी सबके साथ बड़ी विनम्रता व इन्किसारी से पेश आते थे। आपके असहाब एक शख्स को आँ हजरत सल्ल० का खिदमत में लाये तो वह आपकी हैबत (रोब) से काँपने लगा। आपने फ़रमाया कि "खौफ मत करें, मैं बादशाह नहीं हूँ, मैं कुरैश की एक औरत का फरजन्द (लड़का) हूँ।" आप अपने असहाब में ऐसे मिलजुल कर बैठते थे कि गोया उन्हीं में से आप भी हैं। अजनबी शख्स आता तो बिना बतलाये न मालूम कर सकता कि आप कौन से हैं। एक दफा हजरत आयशा (रजि०) ने आपकी खिदमत में अर्ज किया कि आप तकिया लगाकर भोजन किया कीजिये। हजरत (सल्ल०) ने अपना सर मुबारक इतना झुकाया कि करीब था कि आपका माथा जमीन पर लग जाये और फ़रमाया कि ऐसे खाऊँगा जैसे बन्दा खाता है और ऐसे बैठुँगा जैसे बन्दा बैठता है। आप जब लोगों के पास बैठते तो अगर वह आख़िरत (परलोक) के विषय में बात करते तो वही तक़रीरें फ़रमाते और अगर वह खाने पीने की बात करते तो वैसा ही जिक्र फ़रमाते और अगर वह लोग दुनिया के विषय में कलाम करते तो आप भी वही करते।

आपके लेटने और सोने का यह हाल था कि अगर किसी ने बिछौना बिछा दिया तो लेट रहे और अगर बिस्तर न हुआ तो जमीन पर लेट रहे। आप खुद अपना जूता गाँठते और कपड़े में पैबन्द लगाते और अपने घर का काम करते। उदारता की यह शान कि अपने परिवार वालों पर सदका (दान पुण्य) हराम कर दिया। आपने सार्वजनिक घोषणा कर दी कि जो कोई मुसलमान मर जाये उसका ऋण मैं चुकाउँगा और उसके धन-सम्पत्ति के वारिस उसके नातेदार होंगे। आपकी लाड़ली बेटी फ़ातिमा के सिर पर साबुत ओढ़नी भी न थी और उधर सर्वसाधारण में आप मान और दौलत जरूरतमन्दों में बाँटते रहते थे। बहुत बार ऐसा हुआ कि मांगने वालों ने मांगा और हुजूर ने बकरी का दूध या आटा माँगने वाले को दे दिया और आपके घर में वह दिन उपवास का दिन बन गया। आपके पास लौंडियाँ (नौकरानियाँ) व गुलाम थे। खाने और पहनने में आप उनसे न तो बेहतर खाना खाते और न बेहतर कपड़ा पहिनते। आप किसी गरीब को उसकी गरीबी की वजह से छोटा न जानते और न किसी बादशाह से उसकी बादशाहत की वजह से डरते, बल्कि दोनों को बराबर अल्लाह तआला की तरफ बुलाते। एक बार आपसे लड़ाई के अवसर पर अर्ज किया गया कि आप दुश्मनों पर लानत करें (धिक्कारें) तो मुनासिब है। आपने फ़रमाया कि मैं रहमत के लिये उतारा गया हूँ, न लानत के लिये। जब आपसे अनुरोध किया जाता कि आप किसी काफ़िर (नास्तिक, मूर्ति पूजक) आम या खास के लिये बददुआ फ़रमायें (शाप दें), तो आप बददुआ से एराज करके (मुँह फेर कर) उनके हक में दुआएँ खैर (कल्याण के लिये प्रार्थना) फ़रमाते। कोई वक्त आप पर ऐसा न गुजरता जिसमें आप अल्लाह तआला के लिये काम या अपने नफ़्स की बेहतरी के लिये अमर जरूरी (आवश्यक कर्म) न करते होते।

इबादत आँ हजरत (सल्ल०)

इस सृष्टि रचना का उद्देश्य उस अल्लाह तआला की इबादत करना ही है "जैसा कि हक तआला फ़रमाता है" "वमा खलकतुल जिन्न वल इन्सो इल्ला ले याबदून" (मैंने जिन्ना और इनसानों को सिर्फ इस लिये पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करें)। अतः किसी इन्सान को इबादत के सिवा उसकी नजात (मुक्ति) का कोई दूसरा उपाय

नहीं है। इस जिन्दगी का सीधा रास्ता और कुर्ब इलाही (ईश्वर की समीपता) हासिल करने का साधन इबादत ही है और जिस शख्स को जिस क़दर कुर्ब इलाही ज्यादा होता है उसी क़दर उस पर अल्लाह तआला की माबूदियत और अपनी अबदियत को ज्यादा हकीकत खुलती है (अर्थात् ईश्वर ही हमारा एकमात्र आराध्य है और हम उसी की आराधना के लिये पैदा किये गये है, यह हकीकत अनुभव में आती है)। जाहिर है कि आँ हजरत (सल्ल०) से ज्यादा किसी को कुर्ब इलाही न था। इस वजह से आपसे ज्यादा कोई अपने लिये इबादत करने का हक नहीं समझता था। अल्लाह की इबादत और उसके जिक्र के महत्व के विषय में नीचे अनुच्छेद में हजरत (सल्ल०) के इर्शादात (उपदेशों) में सर्वप्रथम इसी विषय का वर्णन किया गया है।

आपके इर्शादात अमृत वाणी

आप लोगों से उपदेश के रूप में जो बात फ़रमाते थे उसको 'हदीस'' कहते हैं। इस प्रकार की हदीसों को बड़े ही प्रामाणिक रूप से विभिन्न ग्रंथों में संकलित किया गया है। यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण हदीसें अंकित की जा रही हैं :-

जिक्र अल्लाह :- (ईश्वर का नाम जप)

इरशाद फ़रमाया कि जिस किसी को यह पसन्द हो कि जन्नत (स्वर्ग) के गुलजारों (बाग़ीचों) में चरे उसको चाहिए कि खुदा तआला का जिक्र बहुत करे। किसी ने आप से पूछा कि आमाल में कौन सा अफजल (श्रेष्ठ) है, इरशाद फ़रमाया कि अफजल यह है कि ऐसे हाल में रहे कि जिक्र अल्लाह से तर जबान हो ताकि सुबह और शाम को ऐसे हो जाओ कि तुम्हारे ऊपर कोई खता न हो। इरशाद फ़रमाया कि सुबह शाम को खुदा तआला का जिक्र करना राहे खुदा में धर्म-युद्ध करना और पानी बहाने की तरह माल (दान) देने से बेहतर है। इरशाद 'फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब बन्दा मुझे अपने जी (दिल) में याद करता है तो मैं उसको अपने जी में याद करता हूँ यानी मेरे सिवा किसी को इसकी खबर नहीं होती। फ़रमाया जो लोग किसी मजलिस में बैठ कर जिक्र इलाही करते हैं तो उनको फ़रिश्ते घेर लेते हैं। उनको रहमत ढांप लेती है और अल्लाह तआला इनका जिक्र अपने पास के लोगों यानी

अपने फ़रिश्तों के गिरोह में करता है। इरशाद फ़रमाया जो लोग इकट्ठा होकर अल्लाह तआला का जिक्र करते हैं और इस जिक्र से बजुज उसकी रिज़ा और कुछ मकसूद (उद्देश्य) नहीं होता तो उनको एक मुनादी (पुकारने वाला) आसमान से पुकारता है कि "उठो तुम्हारी मगफरत (मुक्ति) हा गयी और तुम्हारी बुराइयाँ नेकी से बदल गयीं। इरशाद फ़रमाया कि जो लोग किसी जगह पर बैठ कर खुदा तआला का जिक्र न करेंगे और नबी (सल्ल०) पर दरूद न भेजेंगे तो कयामत को उनके लिये हसरत होगी (पश्चाताप होगा)।

हजरत ईसा मसीह अलै० के नजूल (अवतरण) का बयान '

हजरत अबू हरीरह रजि० फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया, 'कसम उसकी जिसके हाथ मेरी जान है, अनकरीब तुम में इब्न मरियम (मरियम के बेटे हजरत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम) नाज़िल होंगे (अवतरित होंगे)। वह बाइन्साफ हुक्म करने वाले होंगे, सलीब (सूली) को तोड़ डालेंगे, खर्रीर (खर्राटा लेने बालों, खतरीर (खतरा पैदा करने वालों) को कत्ल कर देंगे और जग को मौकूफ (स्थगित) कर देंगे और माल बहा-बहा फिरेगा यहाँ तक कि कोई उसे कबूल न करेगा यहाँ तक कि एक सिजदा (ईश्वर के लिये सिर झुकाना) तमाम दुनिया व माफीहा (संसार तथा संसार के भीतर जो कुछ है सब) से बेहतर होगा।"

आपके मोजिजात (चमत्कार)

आँ हजरत सल्ल० पढ़े-लिखे नहीं थे। आपने कोई इल्म नहीं हासिल किया और निरक्षर होने के कारण किसी किताब का मुताला (अध्ययन) नहीं किया और न इल्म की तलब में कभी सफर किया और हमेशा जाहिल (असभ्य) अरब वालों के बीच रहे। फिर भी जो शख्स आपके अख़्लाक़ (श्रेष्ठ कर्म व व्यवहार) हालतें तथा अनोखी बातें व जवाबात जो आपने दकीक मसायल (गूढ़ विषयों) में इरशाद फ़रमाये हैं उनका मुशाहिदा करें (देखें), उसको किसी तरह का सदेह नहीं रह सकता कि ऐसी बातें मनुष्य के सामर्थ्य के परे हैं और बिना दैवी प्रेरणा और दैवी शक्ति के संभव नहीं हैं और

ऐसी सूरत में न किसी चमत्कार के वर्णन की जरूरत है और न किमी निशानी की। फिर भी अल्लाह तआला ने आपके हाथों से इतने अधिक चमत्कार प्रकट कराये हैं जो बेशुमार और असीम है। यहाँ संक्षेप में कुछ चमत्कार तबर्रुकन (प्रसाद रूप में) अंकित किये जा रहे हैं।

एक बार जब मक्का में आपसे कुरैश ने कोई चमत्कार दिखलाने के लिये अनुरोध किया, उसी वक्त लोगों ने देखा कि चाँद फट गया। एक बार हजरत अनस (रजि०) जौ की कुछ रोटियाँ अपने हाथ में ले गये। हजरत (सल्ल०) ने उनको अस्सी आदमियों से ज्यादा लोगों को खिलाया और एक बार थोड़े से खजूर बश्र के बेटे से अपने हाथों में लाये, उनसे आपने सब लश्कर वालों (फौज वालों) का पेट भर दिया और फिर भी बच रहे। एक छोटा सा प्याला था कि जिसमें आँ हजरत सल्ल० का हाथ फैल न सकता था, उसमें आपने हाथ डाला तो आपकी अँगुलियों में पानी फूट निकला जिससे तमाम फौज ने वुज़ू किया और पानी पिया क्योंकि सभी प्यासे थे। आपने एक बार वुज़ू का पानी तबूक (एक जगह) के चश्मों (झरनों) में डाल दिया। यद्यपि उनमें पानी न था तो इतना पानी उनमें चढ़ आया कि फौज वालों ने, जो हज़ारों थे, पानी पिया और छक गये। एक बार आपने एक मुट्ठी मिट्टी की कफ्फार के फौज की तरफ फेंकी और वह सब की खो में पड़ी और बेकार बेचैन कर दिया। जब आपके लिये मिंबर तैयार हुआ तो जिस सुतून (खम्भा) के सहारे आप खुला (धर्मोपदेश पढ़ा करते थे उसने नाला किया (आर्तनाद किया), यहाँ तक कि उसकी आवाज ऊँट की आवाज की तरह असहाब ने सुनी। आपने उसको सीना से लगाया। वह खामोश हो गया। किसी सहाबह रजि० की आँख निकल कर गिर पड़ी थी। आपने उसको अपने दस्त मुबारक से उसी जगह रख दिया और वह ज्यादा खूबसूरत हो गई और खैबर में हजरत अली (रजि०) की आँखें दुखती थी, आपने अपना लब मुबारक (होठ) लगा दिया, उसी वक्त अच्छी हो गई, आपने उनको झंडा देकर युद्ध के लिये रवाना किया। एक सहाबी (रजि०) की टाँग में चोट आ गई थी, आपने उस पर दस्त मुबारक फेर दिया, वह फौरन अच्छी हो गई। एक बार हकम बिन अलआम खवास ने आपके रफ्तार (चाल) को नकल मजाक के तौर पर की। आपने फ़रमाया कि तू ऐसा ही रहे, बस वह हमेशा लड़खड़ाता चलता, यहाँ तक कि वह मर गया। हजरत उस्मान रजि० को आपने खबर

दो कि तुम को बलवा पहुँचेगा जिसके बाद जन्नत है, अतः आप बलवा ही में शहीद हुये। हजरत इमाम हसन (अलै०) के विषय में इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला उनके सबब से मुसलमानों की दो भारी जमातों में सुलह करेगा, चुनाँचे आपने हजरत मुआविया (रजि०) से सुलह की और एक शख्स को जिसने अल्लाह तआला की राह में जिहाद किया था, आपने फ़रमाया कि यह दोज़खी होगा तो ऐसा ही हुआ यानी उस शख्स ने खुद अपने आपको हलाक (नष्ट किया)। आपने खबर दी थी कि सफेद महल के सराय में जो खजाना है मुसलमानों पर तकसीम होगा, आपके कथनानुसार हजरत उमर (रजि०) के शासन काल में यह घटना घटित हुई। आपने खबर दी थी कि हमारी धर्म पत्नियों में आपसे पहले उनका इंतकाल (शरीरान्त) होगा जो सबसे ज्यादा सखी (दानशील) है, अतः हजरत जैनब (रजि०) का सबसे पहले इंतकाल हुआ और वह आपकी सभी धर्म पत्नियों में सबसे ज्यादा सखी थी (दानशील थी)।

2. अमीरुल मोमनीन हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०)

आपकी मजार मदीना मुनव्वरा में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

2. हालात अमीरुल मोमनीन हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०)

हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) का शुभ जन्म सालफील से दो साल और कुछ कम चार महीने के बाद हुआ। ऊपर से सातवीं पीढ़ी में आपका नसब (खानदान) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के नसब से मिलता है। आपकी अठारह साल की उम्र थी कि जनाव पैगम्बरे खुदा सल्ल० की सोहबत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हजरत अब्बास (रजि०) फ़रमाते है कि कुरान शरीफ का यह आयत (15) भूरा अल-अहकाफ की "हत्ताएजा वलगा असुदृहु व बलग़ना अरबईना" (यहाँ तक कि जब इन्सान अपनी कुव्वत की यानी युवावस्था की उम्र तक पहुँचा और चालीस साल का हुआ), हजरत अबू वक्र सिद्दीक (रजि०) की शान में नाज़िल हुई और किस्सा इसका यह है कि जब हजरत अबू वक्र सिद्दीक रजि० की उम्र बीस साल की हुई तो आप हजरत मुहम्मद सल्ल० के साथ व्यापार के लिए शाम मुल्क की तरफ गये और रास्ते में एक स्थान पर बेरी के पेड़ के नीचे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने नजूल फ़रमाया (रुके)। उस पेड़ के नजदीक एक दर्वेश ख़िताबी रहता था। हजरत अबूबक्र (रजि०) उसके पास गये। उसने पूछा कि बेरी के पेड़ के नीचे कौन है ? अबू वक्र (रजि०) ने कहा मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन मुत्तलब। उस राहिब (ईसाई सन्यासी) ने कहा वल्लाह ! यह नबी हैं। हजरत ईसा मसीह अलै० के बाद इस पेड़ की छाया में कोई नहीं बैठा, सिवा मुहम्मद नबी अल्लाह (सल्ल०) के। सो राहिब की यह बात हजरत सिद्दीक (रजि०) के दिल में जम गई और पत्थर की लकीर की तरह नक्श हो गई और उसी दिन से अबूबक्र (रजि०) ने हजरत (सल्ल०) को सुहबत बमुहब्बत इख्तियार की, यहाँ तक कि चालीस बरस के हुए और अबूबक्र (रजि०) इस्लाम लाने के वक्त अड़तीस साल के थे। आपने फ़रमाया कि हजरत (सल्ल०) के पैगम्बर होने के पूर्व एक दिन मैंने ख्वाब में देखा कि एक नूर अज़ीम आसमान में काबा की छत पर उतरा है, और फिर तमाम मक्का के घरों में फैला है। इसके बाद वह नूर एक जगह जमा हो गया और मेरे घर में आ गया। चन्द साल बाद एक यात्रा पर जाने का सँयोग हुआ और एक जगह ईसाई सन्यासी से

इस ख्वाब की ताबीर (स्वप्न फल) पूछी। उसने कहा कि तुम कौन हो ? मैंने कहा कि मैं एक कुरैश हूँ। उसने कहा कि अल्लाह तआला तुम में से एक पैगम्बर पैदा करेगा। उसके जीवन काल में तुम उसके वजीर होंगे और उसके बाद उसके एक खलीफा। जब हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पैगम्बर हुये और आपने हजरत अबू वक्र सिद्दीक (रजि०) पर इस्लाम पेश किया तो आपने बिना तर्क-वितर्क के तथा बिना एक क्षण के रुके हुए इस्लाम क़बूल फ़रमाया (स्वीकार कर लिया)।

जनाब पैगम्बर खुदा (सल्ल०) आपकी प्रशंसा में औरों से फ़रमाया करते थे कि तुम में और अबूबक्र (रजि०) में फर्क यह है कि अबूबक्र ने इस्लाम बिना हुज्जत क़बूल किया। तुमने बहुज्जत (बहस व दलील के साथ)। जिस वक्त से आपने इस्लाम क़बूल फ़रमाया सफर या हजर (घर में रहने पर) सिवा हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की आज्ञा के उनसे अलहदा नहीं हुए। आपकी जात से इस्लाम और मुसलमानों को बहुत फायदा पहुँचा। इस्लाम के शुरू में जब कफ्फार अपने काबू में गुलाम बनाये हुए मुसलमानों को बहुत कष्ट पहुंचाया करते थे तो आप रुपया देकर उनको ज़ालिमों के पल्ले से छुड़ा लिया करते थे। इस प्रकार आपने। हजरत बिलाल (रजि०) और हजरत आमिर बिन फहीरह (रजि०) को खरीद कर आजाद कर दिया। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) आपके माल (धन सम्पत्ति) में उसी तरह तसर्रुफ (प्रयोग, खर्च) करते जैसे कोई अपने माल में करता है। जिस रोज हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ईमान लाये उस रोज उनके पास चालीस हजार दीनार (सोने के सिक्के, अशरफी) और चालीस हजार दिरहम चाँदी के सिक्के थे। वह सब रसूल अल्लाह सल्ल० पर खर्च कर दिये। जब मदीने की तरफ हिजरत की तो आपके पास पाँच हजार दीनार थे वह इस्लाम और मुसलमानों में खर्च कर दिये।

एक बार हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास सिर्फ एक अबा (चोंगा) पहने हुए जिसमें बजाए तक्मा (बटन की जगह लगायी जाने वाली घुण्डी) के एक काँटा लगा हुआ था, हाजिर हुए। आँ हजरत (सल्ल०) ने दरियाफ्त किया कि "ऐ अबूबक्र यह क्या वजह है ?" उन्होने अभी कुछ जवाब न दिया था कि इतने में हजरत जिब्रील भी उसी हैअत (आकृति) में तशरीफ़ लाये। इससे आपको और भी ज्यादा ताज्जुब हुआ। उनसे इसकी वजह दरियाफ्त की। हजरत जिब्रील ने

फ़रमाया कि आज अल्लाह तआला ने हमको हुक्म दिया है कि जिस तरह अबूबक्र (रजि०) ने जमीन पर अपनी वजअ (वेश भूषा) बनाई है तुम आसमान पर बनाओ और मुझको अल्लाह तआला ने आपके पास भेजा है कि अबूबक्र (रजि०) से मेरा सलाम कहो और दरियाफ्त करो कि इस हाल में तुम मुझ से राजी हो ? यह सुन कर अबूकफ सिद्दीक (रजि०) ने तीन मरतबा जोर से नारा मारा कि "मैं अपने रब से राजी हूँ, मैं अपने रब से राजी हूँ, मैं अपने रब से राजी हूँ।"

जनाव रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दरियाफ्त फ़रमाया कि "ऐ अबूबक्र (रजि०) आज तुम से क्या काम ऐसा हुआ है कि जिससे खुदा तआला ने अपना सलाम और पैगाम रिज़ा (अपनी प्रसन्नता का सन्देश) भेजा है। हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने कुछ जवाब न दिया। इस पर हजरत जिब्रील ने फ़रमाया कि आपको खबर नहीं है ? उन्होने अपना तमाम माल व असहाब अल्लाह तआला की राह में खर्च कर दिया। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मुझको किसी के माल से इतना नफा नहीं हुआ जितना कि अबूबक्र रजि० के माल से।

जाबिर बिन अब्दुल्ला (रजि०) से सुना गया है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैं एक दिन हजरत रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दौलत खाना पर अन्सार और मुहाजिरीन की जमाअत (टोली) के साथ हाजिर था और वे लोग आपस में कुछ लोगों की बुजुर्गी व फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) का जिक्र कर रहे थे कि इसी बीच आँ हजरत (सल्ल०) तशरीफ लाये और फ़रमाया कि क्या कर रहे हो ? मैंने अर्ज किया कि लोगों के फजायेल (विशेषताएँ) बयान करते हैं। फ़रमाया कि खबरदार अबूबक्र पर किसी को फ़ज़ीलत मत दीजिये (उनसे श्रेष्ठतर किसी को मत कहना), क्योंकि वह तुम सबसे अफजल (श्रेष्ठतम) है दुनिया और आख़िरत में (लोक परलोक में)।

जाबिर (रजि०) से यह सुना गया है कि वे फ़रमाते थे कि एक रोज मैं अबूबक्र (रजि०) के आगे-आगे चला जा रहा था, यकायक हजरत (सल्ल०) मिल गये। उन्होने फ़रमाया "तुम इस शख्स के आगे चलते हो जो तुम से दुनिया व आख़िरत (परलोक) में बेहतर हुए। अल्लाह अभी तक मुरसलीन (पैगम्बरों) के बाद काई भी ऐसा नहीं हुआ जो अबूबक्र (रजि०) से बेहतर हो। और आँ हजरत (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि तुम पर अबूबक्र रजि० को कसरत (अधिकता) नमाज रोजा से फ़ज़ीलत नहीं देता

बल्कि उस चीज के सबब से फ़ज़ीलत देता हूँ जो उसके सीने में है (अर्थात् प्रेम)। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया "ऐ अबूबक्र रजि० यकीनन तू मेरी उम्मत (मेरे मानने वाले समुदाय) में से पहले ज़कात (स्वर्ग) में जायेगा। हजरत (सल्ल०) ने फ़रमाया "बेशक सब आदमियों से ज्यादा मुझ 'पर अहसान करने वाला अबूबक्र (रजि०) है, और अगर किसी को मैंने सिवाय खुदा के ख़लील (दोस्त) बनाता तो अबूबक्र (रजि०) को बनाता लेकिन भाईचारा इस्लाम का मौजूद है।

आँ हजरत (सल्ल०) ने फ़रमाया मेरी उम्मत (मेरे अनुयायीयों के समुदाय) का सबसे मेहरबान मेरी उम्मत पर अबूबक्र (रजि०) है और फ़रमाया जब मुझको आसमान पर मेराज बाके हुई, जिस आसमान पर गुजरता था उस पर अपना नाम लिखा पाता था कि "मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और उसके बाद अबूबक्र (रजि०) का।" आँ हजरत (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिस शख्स ने मेरे साथ कुछ सलूक (अच्छा व्यवहार) किया उसका बदला मैंने उससे ज्यादा कर दिया, मगर अबूबक्र रजि० का मेरे ऊपर एहसान है, खुदा तआला उसका बदला दे। जब जनाब रसूल अल्लाह ने हिजरत के लिए इरादा किया तो आपने हजरत जिब्रील (अलै०) से फ़रमाया कि मेरे साथ कौन हिजरत करेगा ? हजरत जिब्रील ने फ़रमाया अबूबक्र सिद्दीक (रजि०)।

आँ हजरत (सल्ल०) ने फ़रमाया कि खैर (भलाई-नेकी) के तीन सौ ख़साइल (अच्छे स्वभाव के गुण) हैं। जब खुदावंद तआला किसी बन्दे के साथ नेकी का इरादा करता है तो कोई खसलत (विशेषता) ही के सबब से जन्नत में दाखिल करेगा। हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि० ने अर्ज की "या रसूल अल्लाह (सल्ल०) उनमें से कोई खसलत मुझ में भी है या नहीं ?" आप ने फ़रमाया तुम में सब हैं। और हजरत सब, ने 'फ़रमाया कि दोस्ती अबूबक्र की और शुक्र उसका तमाम मेरी उम्मत पर वाजिब (उचित) है। जाबिर (राज०) से सुना गया है कि मैं एक दिन आँ हजरत (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर था कि आपने फ़रमाया कि इस वक्त एक शख्स आता है कि हकतआला ने मेरे बाद उससे बेहतर किसी को पैदा नहीं किया और उसकी शफ़ाअत (सिफारिश) कयामत के दिन पैगम्बरों की तरह होगी। जाबिर (रजि०) कहते हैं कि देर न गुजरी थी कि हजरत अबूबक्र (रजि०) तशरीफ लाये कि आँ हज़रत (सल्ल०) उठे और उनसे बगलगीर हुये (बगल में बैठाया) और उनकी पेशानी माथे पर बोशा दिया

(चूमा) । इसके अलावा कुरानशरीफ़ में जगह-जगह पर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के, फ़जायेल में (गुणों की प्रशंसा में) आयतें नाज़िल हुई हैं। इसलिए जब आप ने हजरत बलाल (रजि०) को उमईया बिन खल्फ से खरीद कर आजाद किया, अल्लाह तआला ने आपकी शान में कुरानशरीफ़ में "सूराबल्लैल" की आयतें नाज़िल की हैं (इस सूरा का मूल विषय है अल्लाह के मार्ग में खर्च' करना और उसके द्वारा शुद्धता और पवित्रता प्राप्त करना)।

तबूक की लड़ाई में बेवजह सख्त गर्मी और लम्बा सफर होने के लोगों ने जाने में सुस्ती की तो अल्लाह तआला ने तमाम मुसलमानों पर इताब (प्रकोप) फ़रमाया और हजरत सिद्दीक (रजि०) को मुस्तसना कर दिया (लड़ाई में शरीक होने की पाबन्दी से मुक्त कर दिया) क्यों कि आखिरकार इस लड़ाई में सत्तर हजार आदमी सम्मिलित हुये थे, लेकिन लड़ाई का सामान कुछ न था। आँ हजरत सल्ल० ने फ़रमाया जो इस फौज का प्रबंध करेगा उसको बहिश्त (स्वर्ग) है। बड़े-बड़े असहाब (साथियों) ने बहुत कुछ सामान दिया, मगर हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) ने अपना सभी माल आप की सेवा में उपस्थित कर दिया। इसलिए हजरत रसूल अल्लाह सब ने हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) का नाम "जैशुल उस्र" दुर्लभ फौज) रखा। जिस तरह हजरत अबूबक्र (रजि०) ने जनाब रसूल अल्लाह के सामने अपने माल की कोई हकीकत नहीं समझी, उसी तरह उनकी सेवा में अपनी जान को भी कोई महत्व नहीं दिया। चुनाँचे जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० मय हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) के हिजरत को रवाना हुए और गार (गुफा) में आकर रुके, तो गार में सूराख थे जो हजरत सिद्दीक (रजि०) ने अपनी चादर फाड़ कर बन्द कर दिये थे लेकिन एक सूराख को बन्द करने लिए कुछ न मौजूद था। आप ने उसमें अपने पाँव की एड़ी लगा दी। उस सूराख में साँप था। उसने आप के पाँव मैं काट लिया, मगर चूँकि जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) आपके घुटने पर सर मुबारक रखे हुए सो रहे थे, अतः आप जरा भी हिले–डुले नहीं।

हदीस में आया है कि आँ हजरत सल्ल० ने कई दिन वफ़ात से पहले खुत्बा (धर्मोपदेश) पढ़ा और उसमें हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) की बहुत तारीफ फ़रमायी यह भी फ़रमाया कि "किसी के माल का एहसान और सुलूक, बदन व जान की हककुल खिदमत (सेवा का पारिश्रमिक) मुझ पर इस क़दर नहीं है जिस क़दर

अबूबक्र रजि० का है। अपनी बेटी हजरत फ़ातिमा रजि० निकाह में दी और मुझ से महर (वह रकम जो निकाह (विवाह) में दुलहिन के लिए लड़के वाले की ओर से दी जाती है) न लिया और बिलाल रजि० को अपने खालिस माल से मोल लेकर आजाद किया और मक्का से मदीना की हिजरत के सफर में सब सफर का सामान व सफर के लिए ऊँट की सवारी साय करके मुझको पहुंचाया और अपनी जान माल से हमेशा मेरी गमख्वारी (हमदर्दी) को, इसलिए अब सबके दरवाजे मस्जिद की तरफ से बन्द कर दो सिवा अबूबक्र (रजि०) के कि उसको खुला रहने दो।" इसके वाद जब आँ हजरत सल्ल०, मर्ज मौत में मुब्तला हुये और मर्ज की ज्यादती हुई तो आपने हुक्म फ़रमाया कि अबूबक्र रजि० से कहो कि लोगों को नमाज पढ़ाये। इधर आपकी धर्म पत्नी आयशा रजि० ने आपत्ति की कि मेरे पिता जी अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) बड़े कोमल हृदय के हैं, आपकी जगह खड़े होने का साहस न करेंगे परन्तु आपने बमुबालगा (बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहते हुए) हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) को इमामत के वास्ते फ़रमाया। अतः आप के आदेशानुसार हजरत अबूबक्र (रजि०) ने पाँच दिन लोगों को नमाज पढ़ाई। यद्यपि उस समय हजरत अली (रजि०) व दूसरे कुरैश मौजूद थे, परन्तु उस समय हजरत अबूबक्र (रजि०) को इमामत के लिए मुकर्रर करना मानो हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० द्वारा अपने जीवन काल में उन्हें खलीफा (उत्तराधिकारी) बनाने की तरफ संकेत है।

जब जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) का शरीरान्त हुआ, उस समय यह सूचना मिली कि अन्सार लोगों ने शकीफा बनी साअदा (एक स्थान) में जमा होकर यह तय किया है कि साद बिन आबदा को अमीर बना लें। यह सूचना पा कर हजरत अबूबक्र रजि० और हज़रत अबू अबीदा बिन अल्जरहि (रजि०) उस जगह (शकीफा बनी साअदा) को गये। वहाँ पहुंचकर हजरत अबूबक्र (रजि०) ने एक निहायत समयानुकूल भाषण 'दिया कि जिसमें अन्सार लोगों की अच्छाइयां और उनके सद्गुणों का जिक्र किया और उनके हकूक (अधिकार) को तस्लीम (स्वीकार) किया मगर खिलाफत (उत्तराधिकारी होने के विषय में) जनाव रसूल अल्लाह सल्ल० की हदीस पढ़ी कि 'अल्इम्मत् मिनल कुरैश' (यानी सरदार और बादशाह कुरैश में से हो) और फ़रमाया कि दो आदमियों हजरत उमर रजि० व हजरत अबू उबैदा (रजि०) में से किसी एक के

हाथ पर बेअंत कर लो (उनके मुरीद हो जाओ)। हजरत उमर रजि० कहते हैं कि पूरे भाषण में मुझको हजरत अबूबक्र रजि० की यही बात नागवार गुजरी और मुझको अपनी गरदन मारी जानी मंजूर थी बनिस्बत इसके कि उनका इमाम हूँ जिन में अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) मौजूद हों। हजरत उमर रजि० ने फ़रमाया कि आप के रहते हुए कौन इमाम हो सकता है हाथ बढ़ायें। उन्होंने हाथ बढ़ाया और हजरत उमर (रजि०) ने बैअत की (दीक्षा ली) और उनके साथ हजरत अबू अबीदा रजि० और सभी उपस्थित लोग बैअत हुए। उसके दूसरे दिन हजरत अबूबक्र मिम्बर (मंच) पर चढ़े मगर उन्होंने अभी कुछ फ़रमाया नहीं था कि हजरत उमर रजि० ने अल्लाह तआला की हमदोसना (स्तुति) के बाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हमारे कामा का मर्जअ (पनाहगाह, रक्षा का स्थान) ऐसे शख्स को बनाया जो हम सब में बेहतर है, साहबे (साथी) रसूल अल्लाह सल्ल० है, ओर उनका सानी अस्नैन फिलगार है (गुफा का दूसरा साथी है)। उठो ! और उसको बैअत करो। चुनाँचे सब उठे और सार्वजनिक रूप से सभी लोगों ने बैअत की। फिर हजरत अबू वक्र सिद्दीक (रजि०) ने बाद हम्दोसना फ़रमाया कि "ऐ लोगों! मैं तुम्हारा वाली (हाकिम) हुआ हूँ और हालाँकि मैं तुम से बेहतर नहीं हूँ, अगर मैं तुम्हारे साथ भलाई करुँ तो तुम मेरी मदद करना और अगर बुराई करुँ' तो मेरी इस्लाह (सुधार) करो। सिद्दीक (सच्चाई) अमानत है और किब्ज (झूठ) खयानत (अपहरण)।

ऊपर उल्लिखित बैअत में हजरत अली रजि० व हजरत जुबैर रजि० सम्मिलित नहीं थे। एक रोज हजरत अबूबक्र रजि० मिम्बर (मंच) पर चढ़े और हजरत जुबैर रजि० और अली रजि० को न पा कर बुलवाया और फ़रमाया क्या चाहते हो कि गिरोह मुसलमान टूट जाये। उन्होने फ़रमाया कि 'ऐ खलीफा रसूल अल्लाह सल्ल० ! हमारे न आने पर कुछ ख्याल न फ़रमायें' और बैअत की। हजरत अबूबक्र रजि० अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं कभी भी अमीर (खलीफा) बनने का इच्छुक नहीं था और न मेरे मन में कभी इसकी लालसा ही रही और न मैंने कभी गुप्त रूप से अथवा प्रकट रूप में अल्लाह तआला से इसकी इच्छा प्रकट की। परन्तु मैं फितना (लड़ाई-झगड़ा) से डरा और मुझको खलीफा बनने में आराम ही क्या है? मैंने अपनी गर्दन पर एक बोझ डाल लिया कि जिसके उठाने की मुझ में ताकत नहीं सिवा ईश्वरीय प्रेरणा के। हजरत अली

रजि० व हजरत जुबैर रजि० ने फ़रमाया कि हमको आपका खलीफा होना नागवार नहीं बल्कि इस बात की शिकायत है कि आपने हमको मशविरे (3 परामर्श) में शरीक क्यों नहीं किया और हमको मालूम है कि आप सब में अहक (सबके अधिक हकदार) हैं, कि आप साहबेगार (हजरत मुहम्मद सब के गार अथवा गुफा के साथी) है और आपकी शराफत और अजमत को हम पहचानते हैं और आपको रसूल अल्लाह सल्ल० ने अपने जीवन- काल में ही इमाम नमाज बना दिया था। इस प्रकार आपकी खिलाफत (खलीफा) होने पर सब का इत्फाक रहा (सहमति रही)।

जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० के शरीरान्त के पश्चात अरब के लोगों ने कहा कि हम नमाज पढ़ेंगे और ज़कात न देंगे (ज़कात उस निश्चित धन को कहते हैं जिसका अपनी कमाई और अपने माल में से निकालना और उसे अल्लाह के बताये हुए शुभ कार्यों में खर्च करना आवश्यक होता है)। हजरत अबूबक्र रजि० ने इनको कत्ल करने का इरादा किया लेकिन हजरत उमर रजि० ने कहा कि 'ऐ खलीफा रसूल अल्लाह सल्ल० ! आप उलफ़त (प्रेम) और नरमी अख्तियार कीजिये ।' यह लोग बहशी (जंगली) जानवरों की तरह हैं। आपने जवाब दिया, 'ऐ उमर रजि० ! मुझे उम्मीद न थी कि मेरे खलीफा बनने के मामले में तुम मेरी मदद करोगे, वहाँ तुमने मेरी मदद की। मगर अब तुम अपने इस मशविरे (परामर्श) से मुझको रुसवा (निन्दित) करना चाहते हो। तुम तो अज्ञानता के उस जमाने में जब तुमने इस्लाम कबूल नहीं किया था बड़े जब्बार (सख्ती करने वाले) थे और अब इस्लाम में क्यों सुस्त हो गये और फ़रमाया कि मैं जरूर उस शरअ को कत्ल करूंगा जिसने ज़कात और नमाज में तफ्रीक (पृथकता) की। हजरत उमर रजि० ने फ़रमाया कि मुझे यकीन हो गया कि अल्लाह ताला ने आपको इस मामले में दृढ़प्रतिज्ञ कर दिया (यानी ऐसा करके ही चैन लेंगे)। इधर अरब के लोग इस सरकशी पर थे कि ज़कात न देंगे और हजरत अबूबक्र रजि० का इरादा था कि जो ज़कात न दे उसे कत्ल करें। उधर हजरत अबूबक्र राजि० ने उसामा बिन जैद रजि० को फौज के साथ रवाना किया कि वे अपने पिताजी और दूसरे वहीदों का बदला लें जो कुफ़्फ़ार से लड़ते समय शहीद हुए थे। ये फौज हजरत मुहम्मद सल्ल० के जीवन-काल के अन्तिम समय में रवाना हुई थी और आपने अपने हाथ से उसका झण्डा बांधा था। मगर चूँकि हजरत मुहम्मद सल्ल० उसी समय सख्त

बीमार पड़ गये, अतः उस फौज का जाना स्थगित हो गया। मगर उनके शरीरान्त के बहुत जल्द बाद हजरत सिद्दीक रजि० ने खलीफा होते ही उस फौज को रवाना किया। यद्यपि उस समय हजरत अबूबक्र रजि० से निवेदन किया गया कि अरब के लोग विधर्मी हो गये है, पहले इन्हीं से मुकाबला किया जाये इस फौज में जवान मर्द और अच्छे मर्द हैं। इस समय इनकी रवानगी स्थगित की जाये। हजरत सिद्दीक रजि० ने फ़रमाया कि मुझको अपना मरना बनिस्बत इसके ज्यादा पसन्द है कि जनाब रसूल अल्लाह सल्ल० के शुरू किये हुए काम को खत्म न करूँ और यह कह कर फौज रवाना किया। अलबत्ता हजरत उमर रजि० को हजरत उसामा रजि० से माँग लिया कि इन्हें छोड़ते जायँ क्योंकि इनके परामर्श की मुझको जरूरत है।

एक बार का जिक्र हुए कि हजरत उमर रजि० हजरत अबूबक्र रजि० की सेवा में उपस्थित हुए तो देखते हैं कि हजरत अबूबक्र रजि० अपनी जबान को पकड़ कर खींच रहे हैं। यह देखकर हजरत उमर रजि० ने कहा, 'हैं-हैं, अल्लाह आपको मुआफ़ करे यह क्या ?' आपने फ़रमाया कि जिस खराबी से मैं अपनी जिन्दगी में जब कभी नादिम हुआ (लज्जित हुआ) इसी की वजह से हुआ हूँ। एक बार हजरत अबूबक्र रजि० ने फ़रमाया कि यह जानने के बावजूद कि हमारा दुनिया का यह घर आरजी (अस्थायी) है और यहां के तमाम अहवाल (परिस्थितियाँ) व असबाब (सामान) हमारे पास आरयतन (अस्थायी रूप से थोड़े समय के लिये हैं, यहाँ तक कि हमारी सांसें भी गिनती की हैं, फिर भी हम गफलत में पड़े हैं। आप अपनी ईश प्रार्थना में अल्लाह तआला से दुआ किया करते थे कि "खुदा या! दुनिया को मेरे लिए फरार (विस्तृत) फरमा, लेकिन इसके चक्कर में फँसने और इसमें तल्लीन होने से मुझे बचा (यानी दुनिया की धन दौलत तो मुझे ई कि खूब दिल खोलकर तेरे काम और तेरी राहु पर खर्च करूँ और तेरे शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बन्दों में शामिल हूँ लेकिन उसकी उस तमा (लोभ) व हिर्स (लालच) और उसकी ऐसी मुहब्बत से बचा कि इसके चक्कर में फँस कर तुझ से दूर न हो जाऊं। यह भी कि तेरी शुक्रगुजारी के साथ अहले फक्र में। फ़क़ीरों में) भी शामिल रहूँ और मेरा यह फ़क्र (फकीरी) ब्इख्तियार (इच्छा के विरुद्ध) और मजबूरी का फ़क्र न हो बल्कि इख़्तियारी (स्वेच्छा से। और खालिस तेरी रिज़ा (प्रसन्नता) के लिए हो।

कहा जाता है कि हजरत सिद्दीक रजि० को किसी ने गाली दी। आपने फ़रमाया कि जो हाल मेरा तुझ पर पोशीदा (गुप्त) है वह इससे बहुत ज्यादा है। एक बार आपने अपने एक गुलाम की कमाई का दूध पिया, फिर जो उससे दरियाफ्त किया तो उसने कहा "मैंने एक कौम की कहानत की थी (शकुन विचारा था), उन लोगों ने मुझको यह दूध दिया था। आपने अपने मुँह में उँगली डालकर कै कर डाली। हजरत उमर रजि० फ़रमाते हैं कि मैं मदीने में बुढ़ियों और अन्धों के पास पानी वगैरह लाने के ख्याल से जाता था, तो सब काम उनके तैयार पाता था। मुझको जिज्ञासा हुई देखूँ तो कौन है जो इनका काम कर जाता है। तलाश की तो मालूम हुआ कि हजरत अबूबक्र रजि० कर जाया करते थे। एक बार हजरत अबूबक्र रजि० ने एक पक्षी को पेड़ की छाया में बैठा देखकर ठण्डी साँस ली और फ़रमाया, "ऐ परिन्दे ! तेरी जिन्दगी और ऐश बहुत अच्छा है, तू दरख़्त के फल खाता है और इसके नीचे साये में बैठता है और इसका हिसाब नहीं देगा। काश, मैं भी तेरी तरह होता। जिस वक्त आपकी कोई तारीफ करता आप फ़रमाते "या खुदा, मेरी निस्बत (अपेक्षा) मेरे नफ़्स का तू ज्यादा आलिम है" (जानने वाला है) और में इन लोगों की निस्बत अपने नफ़्स का खुद ज्यादा आलिम हूँ। खुदाबन्द इनके गुमान (धारणा) से ज्यादा मुझको बेहतर कर और बख्शीश कर उसका (उस गुनाह को क्षमा कर) जिसका इनको इल्म नहीं और मुझ से मुआखझा (गलती की पकड़) न कर जो कुछ ये कहते हैं। फ़रमाया कि काश, मैं मोमिन के बदन का बाल होता। फ़रमाया काश मैं दरख़्त होता खाया जाता और काटा जाता। फ़रमाया काश मैं घास होता कि जानवर खाते। हजरत अबूबक्र रजि० का दिल इस मायावी दुनिया से मुक्त था और उन्होने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी थी और जब सब कुछ देकर और ऊनी चोगा पहन कर पैगम्बर सल्ल० के पास गये तो उन्होने पूछा कि तुमने अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है ? अबूबक्र रजि० ने जवाब दिया "सिर्फ परमात्मा और उसके पैगम्बर को।" एक बार आपने फ़रमाया कि जौ शख्स खालिस मुहब्बत इलाही से मजा चखता है वह जायेका तलब दुनिया (दुनिया की चाह) से रोक देता है और तमाम आदमियों से उसको वहशत दिलाता है (यानी ऐसा शख्स सबसे अलग रहना पसन्द करता है)।

आपने दो साल और सात महीने खिलाफत की (खलीफा के पद पर आसीन रहे)

। जब से रसूल अल्लाह सल्ल० का शरीरान्त हुआ था, उस सदमे से आप दिन पर दिन कमजोर होते जाते थे। सात जमादिउल आखिर सन् तेरह हिजरी को आप ठंडक में नहाये और उसकी वजह से आपको बुखार आ गया और गम्भीर रूप से बीमार पड़ गये। जब आपका शरीरान्त का समय निकट आया तो आप ने अपनी बेटी (हजरत मुहम्मद सल्ल० की धर्मपत्नी) हजरत आयशा रजि० से वसीयत की कि मुझको जो कपड़े पहने हूँ उनको धो कर उन्हीं में कफ़नाना। लोगों ने आप के पास आकर कहा हम किसी हकीम को बुलायें जो आप का हाल देखे। आपने फ़रमाया कि मेरे हकीम ने मुझको देखकर यह कह दिया है कि "इन्नीफआलो लिमा युरीद" (यानी में जो चाहुंगा सो करुंगा।) जब आप बीमारी की गम्भीरता के कारण बाहर न निकल सके तो आप से लोगों ने अर्ज किया कि आप अपना कोई नायब (प्रतिनिधि) मुकर्रर करें। आप ने फ़रमाया मैंने हजरत उमर रजि० को अपना नायब मुकर्रर किया है। लोगों ने अर्ज किया कि आप ऐसे तेज मिजाज और सख्त दिल को नायब मुकर्रर करते हैं, आप अल्लाह तआला को क्या जवाब देंगे? आप ने फ़रमाया कि यह जवाब दूँगा 'या अल्लाह ! जो तेरी मख़लूक़ (सृष्टि) में सबसे बेहतर था उसको नायब किया। ' फिर हजरत उमर रजि० को बुलवाया और फ़रमाया कि मैं तुम को एक वसीयत करता हूं कि अल्लाह तआला के कुछ दिन के हुकूक (यथोचित कर्तव्य) है उनको रात में क़बूल (स्वीकार) नहीं करता और कुछ रात के हैं कि उन को दिन में क़बूल नहीं करता और नफ्ल को (वह नमाज जो अनिवार्य न हो परन्तु सवाब के लिए पड़ी जाये) क़बूल नहीं करता जब तक फर्ज (वह नमाज जिसका पढ़ना अनिवार्य है) अदा न करो। और कयामत के दिन भारी पल्ले वालों के (अच्छे कर्म करने वालों के) पल्ले भारी होंगे तो यही वजह होगी कि उन्होने दुनिया में हक (सच्चाई) का अनुकरण किया होगा और अपने ऊपर उसी को भारी (महत्वपूर्ण) समझा होगा और इस तराजू के लिए सिवा हक के कुछ न रखा जायेगा। अत मुनासिब यही है कि वजन ज्यादा हो और हल्के पल्ले वालों के (पापीयों के) जो कयामत में हल्के पल्ले होंगे तो उसकी वजह यह होगी कि दुनिया में उन्होने बातिल (झूठ) की पैरवी की होगी और उसको अपने ऊपर हल्का मालूम किया होगा और जिस तराजू में कि बातिल के सिवा और कुछ न रखा जाये उसको हल्का होना ही जेबा है (शोभा देता है) और खुदा तआला ने अहलेजन्नत

(स्वर्ग में प्रवेश पाने वालों) का जिक्र उनके आमाल (कर्मों) में से बेहतर आमाल के साथ कहा है और उनकी बुराई से दर गुजर फ़रमाया (उनकी बुराई की ओर कोई ध्यान नहीं दिया), तो कहने वाला यों कहता है (कदाचित अपनी और इशारा है) कि मैं उन लोगों से कम हूँ और उनके दर्जे को नहीं पहुँचता और दोज़ख़ वालों का' जिक्र बदतरीन (बुरे) आमाल से किया है और अमल नेक उन्होंने जो किया है उसको उन पर वापस कर दिया, तो कहने वाला यों कहता है कि मैं उन लोगों से अफजल (श्रेष्ठ) हूँ। और अल्लाह तआला ने अपनी रहमत और अजाब (प्रकोप) का जिक्र फ़रमाया है (कुरान शरीफ में) इसलिए कि मोमिन (मुसलमान, ईश्वर भक्त) को रगबत और खौफ दोनों रहें और अपना हाथ हलाकत (बरबादी) में न डाले और अल्लाह तआला से सिवा हक के और किसी की तमन्ना न करे। पस ऐ उमर रजि० ! तुम मेरी नसीहत याद रखोगे तो मौत से ज्यादा गायब चीज तुम्हारे नजदीक महबूब (प्यारी) न होगी और उसका आना तुम पर जरूरी है और अगर मेरी वसीयत तलफ (नष्ट) कर दोगे तो मौत से ज्यादा कोई गायब चीज तुम को बुरी मालूम न होगी और उससे तुम भाग न सकोगे और न उसको थका सकोगे।

22 जमादिउल आखिर तेरह हिजरी को तिरसठ बरस की उम्र में आपने इन्तकाल फ़रमाया (आप का शरीरान्त हुआ)। आप की वसीयत के अनुसार आप की धर्मपत्नी असमा बिन्त अमीस रजि० ने आप को नहलाया और अब्दुल रहमान बिन अबूबक्र रजि० ने पानी डाला और आपकी वसीयत के अनुसार जो कपड़े आप पहने नए थे आपको कफ़नाया और हजरत उमर रजि० ने नमाज जनाजा पढ़ी। हजरत आयसा रजि० को आप ने वसीयत को थी कि रसूल अल्लाह सल्ल० के पास दफन कर दें, अतः वहीं आप की कब्र खोदी गयी और रसूल अल्लाह सल्ल०, के कन्धा मुबारक के पास आप का सर मुबारक रखा गया। हजरत उमर रजि०, हजरत उस्मान रजि० और हजरत अकुल रहमान बिन अबूबक्र रजि० ने आपको कब्र में उतारा। "इन्नालिल्लाहे व इला इलैहे राजेऊन" (सब कुछ अल्लाह के लिए है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे।)

3. हजरत सलमान फारसी (राजि॰)

आपकी मजार मुबारक शहर मदायन (ईराक) में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

3. हालात हजरत सलमान फारसी (राजि०)

आप हजरत मुहम्मद सल्ल० के जलीलुलकद्र (बड़े सम्माननीय) सहाबी (साथी) हैं। युवावस्था में आप अपने वतन मुल्क फारस से अपना मजूसी दीन (अग्नि पूजकों का धर्म) छोड़कर हक एक ईश्वर को मानने वाले धर्म की तलाश में रवाना हुये और ईसाइयों की सुहबत में रहकर नसरानी (ईसाई) मजहब के अनुयायी बने। एक बार डाकुओं ने आपको गिरफ्तार कर लिया और गुलाम बनाकर बेच दिया। आपने बड़ी ही मुसीबतों और कठिनाइयों का धैर्य व दृढ़ता पूर्वक सामना किया। दस बार इसी प्रकार आपको गुलाम बनाकर बेचा गया। आखिर में हजरत मुहम्मद सल्ल० ने कुछ सोना दिलवाकर आपको एक यहूदी से आजाद कराया और जब आपने इस्लाम कबूल किया, आप पर हजरत मुहम्मद सल्ल० ने इतनी असीम कृपा बरसाई कि आपको अपने अहले बैत (घर वालों) में शामिल कर लिया और तब से आप बराबर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र सेवा में रहने लगे। आपके बाद हजरत सलमान फारसी (रजि०) ने फ़ैज बातिनी हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि० से भी हासिल किया और उनकी खास तवज्जोह से तकमील (पूर्णता) को पहुँचे।

हजरत उमर फारुक (रजि०) ने आपको अपने अईयामे खिलाफत में (जब आप खलीफा थे उस जमाने में) मदायन शहर का हाकिम नियुक्त किया था और आपके लिए बेतुलमाल से (वह कोष जो सार्वजनिक कार्यों में खर्च किया जाये उससे) पाँच हजार दिरम निर्धारित कर दिये थे। परन्तु आप यह तमाम रुपये फकीरों में वितरित कर देते थे और खुद थैले बुनकर अपनी जीविका अर्जित करते और उसी से अपनी-गुजर बसर करते। आपके पास एक कमली ऊंट के बालों की थी। दिन को उसे अपने ऊपर लपेट लिया करते और रात को ओढ़ लिया करते थे। बकरी के बालों की आप रस्सियाँ और झोला बनाया करते थे और लड़ाई के लिए झोला और किसी को रस्सी दे देते थे।

कहा जाता है कि एक मरतबा अपने हुकूमत के जमाने में आप शहर मदायन के बाजार में जा रहे थे और किसी शख्स को असबाब ले जाने के वास्ते एक मजदूर की तलाश थी। आपको कम्बल पहने हुये देखा और आप पर असबाब उठवा कर चल

दिया। आपने यह न फ़रमाया कि में कौन हूँ ? रास्ते में एक शख्स मिला और कहा 'ऐ अमीर आपने यह बोझ क्यों उठाया? उस शख्स ने तब मालूम किया कि आप अमीर शहर हैं। उसने अपना सर उनके क़दमों पर रक्खा और बहुत ही गिड़गिड़ाया और मुआफ़ी माँगने लगा। आपने फ़रमाया कि तूनें अपने मकान तक ले जाने का इरादा कर लिया था, अब वहाँ पहुँचाकर ही वापस होऊंगा।

आप बहुत आबिद (इबादत करने वाले), जाहिद (तपस्या करने वाले) और साहबे करामात (चमत्कारों वाले) महापुरुष हैं। एक मरतबा आपने जंगल में दौड़ते हुए हिरन को बुलाया तो वह फौरन आपके पास हाजिर हो गया। इसी तरह एक मरतबा उड़ती हुई चिड़िया को आपने आवाज दी तो वह आवाज सुन कर आपके पास उतर पड़ी।

एक बार खंदक की लड़ाई में आँ हजरत सल्ल०, ने एक खाई को खोदने के वास्ते उसे महाजिरीन और अनसार में बाँट दिया, तो हजरत सलमान रजि० को लेकर इन दोनों गिरोहों में विवाद उत्पन्न हो गया। महाजिरीन कहते थे कि सलमान रजि० हमारे साथ है और अनसार कहते थे कि हमारे साथ हैं। हजरत सल्ल० ने यह हाल देखकर फ़रमाया कि सलमान रजि० असहाब सफः से हैं (सदा प्रथम पंक्ति में नमाज पढ़ने वाले सहाबी) और उनमें से हैं कि बहिश्त (स्वर्ग) उनका मुश्ताक (इच्छुक) है। कहा जाता है कि हजरत सलमान रजि० को एक शख्स ने गालियां दी। उन्होने कहा कि कयामत के दिन मेरे गुनाहों का पल्ला भारी होगा तो जो कुछ तू कहता है उससे भी मैं बदतर हूँ और अगर गुनाहों का पल्ला हल्का होगा तो तेरी बात से मुझे डर है। हजरत सलमान फारसी (रजि०) ने हजरत अबूदाऊद (रजि०) को एक खत लिखा कि 'ऐ बिरादर! इतनी दुनिया मत जमा करना जिसका शुक्र तुम से अदा न हो सके। उस खत में यह भी लिखा कि 'मैंने आँ हज़रत (सल्ल०) से सुना है कि फ़रमाते थे कि मालदार ने अपने माल को खुदा तआला के फ़रमाने के अनुसार खर्च किया होगा, वह कयामत को हाजिर किया जायेगा और उसका माल सामने होगा। जब पुल सिरात पर इधर उधर झुकने लगेगा तो उसका माल कहेगा कि चला क्यों नहीं जाता, तू मुझ से अल्लाह तआला का हक दे चुका है (ईश्वर के इच्छानुसार माल खर्च किया है)। फिर ऐसा मालदार आयेगा जिसने अपने माल को हुक्म खुदा के मुआफिक खर्च न किया होगा। उसका माल उसके कंधों पर रखा जायेगा। जब पुल सिरात में झुकने लगेगा तो

उसका माल कहेगा कि खराब हो तुझको, तूनें मुझ में खुदा का हुक्म क्यों न दिया। इसी तौर पर उसका हाल रहेगा यहाँ तक कि दुहाई- दुहाई मचायेगा, फकत।

हजरत सलमान फारसी का कोई मकान नहीं था बल्कि वे पेड़ के नीचे ही रहते थे। वे पूजा के मामले में बहुत सख्त थे। वे सारी रात पूजा किया करते थे। जब थक जाते थे तो जिक्र ज़ली किया करते थे। जब जुबान थक जाती थी तब ध्यान में मग्न हो जाते थे और अपने आप से कहते थे, "ओ मेरे मन, तूने बहुत आराम किया अब ईश वंदन में लग जा।" फिर जिक्र शुरू कर देते थे। फिर ध्यान। इसी तरह पूरी रात बीत जाती थी।

अल तबरी कहते हैं, 16वी हिजरी में (638 AD) हजरत साहब की फौज ईरान की सीमा पर पहुंची। साथ जो सेनापति था उसने सलेमान फारसी से पूछा कि बिना पुल, फिर नदी भरी, से सेना कैसे दूसरी तरफ पहुंचेगी ? हजरत सलेमान ने दुआ करी कि "या अल्लाह सब सेना घोड़ों सहित नदी पार कर जाए वहां एक भी आदमी या घोड़े का नुकसान न हो।" ऐसा ही हुआ। दूसरी तरफ ईरान की सेना ने ये चमत्कार देखा तो उन्होंने हथियार रख दिए व इस्लाम स्वीकार कर लिया।

आपकी उम्र डेढ़ सौ बरस की थी। सन् 333 हिज़री में आपका इन्तकाल हुआ। उस समय हजरत अली (रजि०) रात में बकरामात (चमत्कार द्वारा) मदीना से मदायन तशरीफ ले जा कर हजरत सलमान फारसी (रजि०) को ग़ुस्ल दिया और उसी रातमदीना वापस आ गये। आपका मजार मुबारक शहर मदायन (ईराक) में है।

4. हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि०

आपकी मजार मदीना मुनव्वरा में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

4. हालात हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि०

इल्म बातिन (अध्यात्म विद्या) में आपको हजरत सलमान फारसी (रजि०) से निस्बत हासिल है और अपने बाप दादा की नेमत उनके ज़रिये रो हासिल थी। आपके पिता जी मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि० शहीद कर दिये गये तो आपकी फूफी हजरत आयशा (रजि०) ने आप की परवरिश की और हजरत इमाम कासिम (रजि०) ने उनसे फ़ैज बातिनी हासिल किया। आपने इमाम जैनुल आबदीन (रजि०) की सुहबत से हजरत अली (रजि०) की निस्बत भी हासिल की थी। आप उन महापुरुषों में थे, जिन्होंने हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के कुछ असहाब (साथियों) से मुलाकात की थी। आप मुस्लिम धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वानों में से थे और उस जमाने के इमामों में आप बेनजीर (अद्वितीय) थे।

आप सात बड़े न्यायाधीश में से थे व इमाम थे। अबू जनद कहते थे कि मैने आप जैसा ज्ञानी इस युग में नहीं देखा। अबू नूयम के अनुसार आप व्यवहार व यम नियम पालन में श्रेष्ठतम थे।

उमर बिन अब्दुल अजीज जो पांचवें खलीफा बने, कहते थे कि अगर मेरे बस में होता तो मैं हजरत कासिम को खलीफा बनवाता। यहया बिन सइद ने लिखा है कि पूरे मदीना में उनके टक्कर का कोई नहीं था। उन्होंने मरने के बाद एक लाख दीनार गरीबों के लिए छोड़े जो कि हलाल की कमाई के थे।

हजरत सूफियान ने लिखा है कि कुछ लोग उनके पास सदके में बहुत पैसा लेकर आये। हजरत कासिम ने वह तत्काल दान कर दिया। कुछ लोगों को यह पसंद नहीं आया। उनकी नापसंदगी को भी हजरत कासिम ने विनम्रता से स्वीकार किया। पर दान देने की आदत नहीं छोड़ी।

यहिया बिन सआद (रजि०) फ़रमाते हैं कि मैंने कोई आदमी ऐसा नहीं देखा कि जिसको कासिम बिन मुहम्मद (रजि०) पर फ़ज़ीलत दूँ (श्रेष्ठ समझूँ)। हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज रहम० फ़रमाया करते थे कि अगर मामला खिलाफत मेरे

अधिकार में होता तो मैं इमाम कासिम (रजि०) के सुपुर्द करता। आप हजरत जैनुल आबदीन (रजि०) के मौसेरे भाई थे। आप की उम्र सत्तर साल की हुई और सन एक सौ छै हिजरी या एक सौ सात हिजरी में आपने इन्तकाल फ़रमाया।

5. हजरत इमाम जाफर सादिक रजि०

आपकी मजार मदीना मुनव्वरा में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

5. हालात हजरत इमाम जाफर सादिक रजि०

हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० को इल्मबातिन (अध्यात्म विद्या) में अपने नाना इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र (रजि०) से तया साथ ही अपने वालिद हजरत इमाम मुहम्मद बाकर बिन जैनुल आबदीन से निस्बत हासिल हुई है। आपका कहना है कि हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मैं दो मरतबे पैदा हुआ। मेरा एक जन्म तो उनसे दुनियावी हुआ कि मेरी माता जी के पिता हजरत इमाम कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रजि० थे और दूसरा जन्म बातिनी (आत्मिक) कि इल्म बातिन भी उन्हीं से मैंने पाया। हजरत इमाम जाफर (रजि०) को लोग आपके सिद्क मुकाल (सच्ची बातचीत) की वजह से 'सादिक' (सत्यवादी) कहा करते थे। आप हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के परिवार के सादात (श्रेष्ठ लोगों में) से थे। आप हजरत इमाम हुसैन (रजि०) के परपोते थे अर्थात् उन तक आपकी वंशावली इस प्रकार है - "इमाम जाफर सादिक बिन इमाम मुहम्मद बाकर बिन जैनुल आबदीन बिन सईयदुल शुहदा इमाम हुसैन बिन अली मुर्तजा (रजि०)"। इमाम अबूहनीफा (रहम०), अहिया बिन सईद अनसारी (रहम०) व इब्न जर्राह (रहम०) व इमाम मालिक (रहम०) व मुहम्मद बिन इशहाक व बमूशा बिन जाफर रहम० व सुफियान यमीनिया (रहम०) आपके शिष्य थे। सब ने आपकी इमामत व सआदत (प्रताप, तेज) को स्वीकार किया है। उमर बिनुल मकदूम का कहना है कि जिस वक्त इमाम जाफर सादिक (रजि०) को देखता हूँ, मालूम हो जाता है कि आप खानदान नबूवत से हैं (हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० के खानदान से हैं)। आप अत्यंत श्रेष्ठ आचरण वाले तथा कुरान मजीद के विद्वान व्याख्याकार तथा दुनिया की विद्या में पूर्णरूप से पारंगत तथा उनके प्रकांड विद्वान हैं। आप साहबे जुहद व वरअ (उच्च कोटि के तपस्वी तथा संयमी)। शहबात व लज्जात (सांसारिक वासनाओं और सुखों) से अत्यंत विरक्त रहने वाले थे। आपके असीम ज्ञान एवं फ़ैज बातिनी से लोगों को बहुत ही फायदा पहुँचता था। कुछ समय बाद आप ईराक तशरीफ ले गये। उस जगह काफी समय तक कयाम फ़रमाया (रुके) मगर कभी उनके दिल में यह ख्वाहिश न पैदा हुई कि वह इमाम बन कर लोगों को नमाज पढ़ायें और धर्मोपदेश दें।

एक बार हजरत दाऊदताई रहम० आपकी सेवा मैं उपस्थित हुये और निवेदन किया कि "आप रसूल अल्लाह (सल्ल०) की संतान हैं मुझे कुछ उपदेश दीजिये, मेरा दिल स्याह हो गया है ।" आपने फ़रमाया कि तुम्हें मेरे उपदेश की क्या जरूरत है, तुम तो स्वयं पवित्र आत्मा और तपस्वी हो । हजरत दाऊद रहम० ने कहा कि आप रसूल अल्लाह (सल्ल०) की औलाद में से हैं, अल्लाह ने रसूल की औलाद को फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) बख्शी है, इसलिये आपको यह उचित है कि आप सब को उपदेश दें । उन्होने फ़रमाया "ऐ दाऊद रहम० ! मुझे खुद अंदेशा है कि कयामत के दिन कहीं मेरे बुजुर्ग मेरा हाथ पकड़ कर यह सवाल न कर बैठे कि तूनें हमारा अनुकरण क्यों नहीं किया, क्यों हमारे उपदेशों के अनुसार अपना आचरण नहीं बनाया? निश्चय ही वहाँ यह न पूछा जायेगा कि तुम किसकी संतान हो, बल्कि यह कि तुम्हारे कर्म कैसे हैं । नस्ब नहीं कस्ब, जन्म नहीं कर्म, पूछा जायेगा ।" दाऊद रहम० बोले, "या अल्लाह! जब ऐसे बुजुर्ग को इतनी दहशत है तब, भला मेरा क्या हाल होगा ?

एक रोज आप अपने शिष्यों के बीच बैठे थे । आपने उन लोगों से, फ़रमाया कि आओ आपस में इकरार (वादा) करें कि हम में से जिसको नजात (मुक्ति) हो, वह सब को शफाअत करे (मोक्ष के लिये ईश्वर से सिफारिश करे) । सबने अर्ज किया ऐ रसूल अल्लाह (सल्ल०) की संतान ! आपको हमारी शफाअत की, क्या जरूरत है क्योंकि आपके बापदादा शफीअ खलायक (दुनिया के लोगों की, मोक्ष की सिफारिश करने वाले) हैं । आपने फ़रमाया कि मुझे अपने, अफजाल (कर्मों) से शर्म आती है कि उनको लेकर उनके रूबरू होऊं (उनके सामने उपस्थित हूँ) । एक मरतबा सफियान सूरी (रहम०) ने कहा कि कुछ वसीयत फ़रमाइये (उपदेश दीजिये) । आपने फ़रमाया, ऐ सफियान ! दरोगगो (झूठ बोलने वाले) को मुरब्बत (शील संकोच) नहीं होती और हासिद (ईर्ष्यालु) का राहत नहीं होती, बदखुल्क (दुराचारी) को सरदारी (बड़प्पन) नहीं हातो और मुलूक (बादशाह) को उखुब्बत (भाई चारा) नहीं होती । अर्ज किया कुछ और फ़रमाइये । आपने फ़रमाया 'सफियान, अपने को अल्लाह तआला के महारिम (जो अल्लाह के नजदीक हराम हों) से बचना ताकि आबिद (ईश्वर की आराधना करने वाला) हो और जो कुछ किस्मत में हो गया, उस पर राजी होना ताकि मुसलिम (ईश्वरभक्त) हो । गुनाह करने वाले। से मुहब्बत मत रख कि तुझ पर गुनाह

गालिब हो जायेगा। अपने मामले में ऐसे आदमी से मश्विरत (परामर्श) कर जो खुदा की ताअत (उपासना, बंदगी) खूब करते हो। अर्ज किया कुछ और फ़रमाइये। आपने फ़रमाया 'ऐ सफियान ! जो शख्स चाहे कि उसकी इज्जत बिला जात व किब्ला (रुतबा) के हो और हैबत (भय) बिला हुकूमत के हो उससे कहो कि गुनाह छोड़ दे और ताअत (ईश्वर की उपासना) इख्तियार करे। अर्ज किया कुछ और फ़रमाइये। आपने फ़रमाया, 'ऐ सफियान (रजि०), जो शख्स हर आदमी के साथ सुहबत रखता है वह सलामत नहीं रहता और जो कोई बुरे रास्ते जाता है उसको इलहाम (लांछन) लगता है और जो शख्स अपनी जवान को काबू में नहीं रखता वह पशेमाँ (पश्चातापी, शर्मिन्दा) होता है। जो कोई अल्लाह तआला से उन्स (प्रेम) रखता है उसे खल्क (दुनिया) के लोगों से वहशत हो जाती है (उनसे दूर रहता है)।" फ़रमाया बहुत से गुनाह ऐसे हैं जिनकी वजह से बंदा अल्लाह तआला के नजदीक हो जाता है और बहुत सी ऐसी इबादत (उपासना) है जिसकी वजह से बंदा अल्लाह तआला से दूर हो जाता है, क्योंकि मुतीअ मगरूर (अहंकारी उपासक (गुनहगार हाता है और नादिम गुनहगार (जो अपने गुनाह पर शरमिंदा हो) मुतीअ (ईश्वर का उपासक) होता है।

कहा जाता है कि एक दिन हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० ने इमाम हनीफा (रजि०) से दरियाफ्त किया कि अक्लमंद किसे कहते हैं ? हजरत इमाम अबू हनीफा रजि० ने कहा कि जो खेर (नेकी) और शर (बदी, बुराई) में तमीज करे। उन्होने फ़रमाया कि यह तमीज तो जानवरों में भी होती है कि मारने वाला और चारा देने वालों में तमीज रखते हैं। अबू हनीफा रजि० ने अर्ज किया कि आपके नजदीक अक्लमन्द कौन है ? फ़रमाया अक्लमन्द वह है जो दो खैर व दो शर में तमीज करे यानी दो खैर (अच्छी बातों) में से ज्यादा अच्छी बात को जान सके और उसे ग्रहण करे और दो शर (बुरी बातों) में से ज्यादा बुरी बात कौन सी है, उसे पहचाने और यदि बेवजह मजबूर उन दो बुरी बातों में से एक के ग्रहण किये बिना कोई चारा ही न हो, तो जो बुरी बात कम नुकसान पहुंचाने वाली है उसका सहारा लेकर बड़ी बुराई से बचे।

किसी ने आपसे कहा कि फज़लो कमाल जाहिरी और बातिनी (आत्मिक) आप में मौजूद है, मगर आप में तकब्बुर (अहंकार) है। आपने जवाब दिया "मैं मुतकब्बिर (अहंकारी) नहीं हूँ, लेकिन मेरा ख़ालिक़ (अल्लाह तआला) ऐसा किब्रिया (ऐसा महान)

और दयालु है कि जब मैंने गुरूर और किब्र को छोड़ा तो उसकी किब्रियाई मेरे किब्र की जगह दाखिल हुई । अपने किब्र पर तकब्बुर करना अच्छा नहीं है, मगर उसकी किब्रियाई पर किब्र करना दुरुस्त है ।" आपका फ़रमाना है कि 'अल्लाह अपने बंदे में अंधेरी रात में स्याह पत्थर पर चींटी चलने से ज्यादा पोशीदा है ।" आपने फ़रमाया जिस गुनाह से पहले इन्सान को खौफ हो और बाद में तौबा करे वह कुर्बे इलाही (ईश्वर का सान्निध्य) हासिल करता है और जिस इबादत के शुरू में 'मैं' और आखिर में खुद बीनी (अहंकार) हो वह खुदा से दूर करता है। लोगों ने आपसे पूछा कि दर्वेश साबिर (संतोषी, साधु) और तवंगर शाकिर (कृतज्ञ धनी) में किस को ज्यादा फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) प्राप्त है। इस पर आपने फ़रमाया कि इन दोनों में दरवेश साबिर अफजल है (श्रेष्ठ) है क्योंकि तवंगर शाकिर (कृतज्ञ धनी) ईश्वर को कृपा के लिये कृतज्ञ भले ही हो, पर उसे हमेशा अपने धन का ख्याल बना रहता है और सब करने बाले दरवेश का दिल अल्लाह के ख्याल में तल्लीन रहता है। वह फ़रमाने कि 'मोमिन (मुसलमान) वह है जो नफ़्श अम्मारा (वासनाएँ जो बुराई की ओर प्रेरित करती हैं) से मुकाबला करे । आरिफ़ (ब्रह्म ज्ञानी) वह है जो अपने मालिका की इताअत (उपासना) में सरगर्म रहे । साहबे करामत अपनी तपस्या से प्राप्त चमत्कार अथवा ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ दिखलाने वाला इंसान) वह है जो अपनी जात (स्वयं) के लिये नफ़्स अम्मारा से जंग करे और जो खुदा के लिये नफ़्स अम्मारा से जग करता है वह खुदा को पाता है।

आपने फ़रमाया कि 'मक़बूलों (ईश्वर के प्यारों) के औसाफ (विशेषताओं) में से इलहाम (दैवी प्रेरणा) है और इलहाम का बेअसल होना दलीलों से साबित करना अलामत बेदीनों (अधर्मीयों) की है। (इसका भाव यह है कि जो ईश्वर के कृपा पात्र होते हैं उनकी एक विशेषता यह होती है कि उन पर ईश्वरीय प्रेरणा उतरती है और जो लोग तर्क और बुद्धि के आधार पर इस दैवी प्रेरणा को निराधार सिद्ध करने का प्रयास करते हैं वे वस्तुतः अपने को अधर्मी होने की घोषणा करते हैं) । आपका फ़रमाना था 'अल्लाह ने तुम्हारे लिये जन्नत और दोज़ख़ मुहैया (उपलब्ध) कर दिया है। जन्नत उसके लिये है जो अपना काम अल्लाह के सुपुर्द का दे। दोज़ख़ उसके लिये है जो अपना काम नफ़्स अम्मारा (निम्न वासनाओं) को सौंपे । आपको किसी सन्त ने अच्छी सी पोशाक पहने देखा, तो आपकी आलोचना करते हुये कहा "फकीरों को ऐसी

पोशाक नहीं पहननी चाहिये" । आपने उस सन्त का हाथ अपनी आस्तीन के अन्दर खींचा । अन्दर इतना सख्त टाट का वस्त्र था कि उसका हाथ छिल सा गया । तब आपने प्रेमयुक्त शान्त स्वर में कहा 'ऊपर का लिबास दुनिया के लिये और अन्दर का फकीरी लिबास खुदा के लिये है ।

एक बार एक शख्स आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और आप से अर्ज किया कि मुझे ईश्वर के दर्शन करा दीजिये । आपने उससे फ़रमाया, "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मूसा को कहा गया था 'लनतरानी', तू मुझे नहीं देख सकता । वह शख्स बोला जानता हूं मगर यह मिल्लते (मजहब) मुहम्मदी है, जहाँ एक शख्स कहता है कि मेरे दिल ने मेरे परवरदिगार को देखा और दूसरा कहता है कि मैं तो ऐसे रब (ईश्वर) की इबादत करुंगा जिसके न देखूँ । उसकी यह बात सुन कर हजरत जाफर सादिक (रजि॰) ने लोगों से कहा कि इसके हाथ बाँध कर दजला नदी में डाल दो । जब वह डाला गया तो पानी ने उसको ऊपर उछाल दिया । वह फरियाद करने लगा । उन्होंने कुछ ध्यान न दिया बल्कि पानी से कहा कि इसको अन्दर छिपा लो । कई बार वह उछला और डूबा । जब जीवन से निराश हो गया तो कहने लगा "या अल्लाह फरियाद है ।" आखिर आपने लोगों से कह कर उसे बाहर निकलवाया । जब उसके होश दुरुस्त हुये तब उससे पूछा कि क्या तूनें अल्लाह को देखा? वह बोला कि जब तक मैं दूसरों को पुकारता रहा तब तक मैं परदे में रहा, पर जब सब ओर से निराश होकर मैंने अल्लाह से फरियाद की तो मेरे दिल में एक सूराख सा खुला । हजरत जाफर सादिक रजि॰ ने कहा, "जब तक तूनें दूसरों को पुकारा तू झूठा था, अब उस सूराख की हिफाजत कर जिससे कि तुझे प्रभु दर्शन हो ।" लिखा है कि एक शख्स की थैली गुम हो गयी उसने हजरत जाफर सादिक (रजि॰) को पकड़ कर कहा कि तूनें मेरी थैली ली है । आपने पूछा कि उसमें कितने दीनार थे ? उसने कहा "एक हजार" । सन्त ने उसे एक हजार दीनार दे दिये । फिर जब उसे अपनी खोई हुई थैली मिल गई तो वह दीनार वापस देने आम और क्षमा याचना करने लगा । आपने फ़रमाया कि हम दी हुई चीज वापस नहीं लेते । जब उसने उनका नाम सुना तो बहुत लज्जित हुआ और बड़ी विनम्रता से उनसे क्षमा याचना की । वह फ़रमाते थे कि तौबा करने वाले ही इबादत करने वाले हैं और कहते थे कि अल्लाह तआला ने तौबा को मुक़द्दम (बेहतर) किया है इबादते इलाही पर

(तौबा को इबादत से श्रेष्ठ बतलाया है)।

आपके कथनानुसार यादें इलाही इसका नाम है कि अल्लाह के जिक्र में दुनिया की सब चीज़ें विस्मृत हो जायँ, क्योंकि दुनिया की सब चीजों के एवज में बन्दे को खुद अल्लाह ही मिल जाता है। जब हजरत जाफर सादिक रजि० ने गोशा नशीनी (एकान्तवास) इख्तियार की तो सन्त सफियान सूरी ने उनकी सेवा में उपस्थित होकर कहा कि आपके एकान्तवास से लोग आपके सुहबत से वंचित हो गये है। आप ने फ़रमाया कि मुझे यही मुनासिब मालूम हुआ और दो शेर कहे जिनका तात्पर्य यह है कि आजकल लोगों में वफादारी की तो बू भी नहीं हैं और अपने ही विचारों में डूबे हुये हैं। जाहिरा तो लोग एक दूसरे के साथ मुहब्बत का इजहार करते हैं मगर उनके दिलों में बिच्छू भरे हुये हैं।

कहा जाता है कि एक बार खलीफा मंसूर ने अपने वजीर को हुक्म दिया कि हजरत जाफर सादिक रजि० को लाओ, उन्हें मैं कत्ल करूंगा। वजीर ने कहा कि उन्होंने तो गोशा नशीनी इख्तियार कर ली है, अब उनके कत्ल से क्या फायदा। खलीफा ने कहा कि नहीं, उनको जरूर लाओ। वजीर ने हरचन्द टाला मगर खलीफा न माना। आखिरकार वजीर उनको बुलाने गया। उसके जाने के बाद खलीफा ने गुलामों से कह दिया कि जिस वक्त हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० आयें और मैं सर से अपना ताज उतारूँ तो तुम उनका कत्ल कर देना। इसी अवसर पर हजरत जाफर सादिक रजि० भी तशरीफ लाये। उनको देखते ही मंजूर आपके सम्मान के लिये उठ खड़ा हुआ और मसनद पर उनको बैठा दिया। स्वयं उनके सामने अदब के साथ बैठा और अर्ज़ किया कि आपकी क्या खिदमत करूँ। आपने फ़रमाया कि मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है, मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तू कभी मुझे अपने पास न बुलाये। यह कह कर आप तशरीफ ले गये। फौरन ही खलीफा बेहोश होकर गिर पड़ा और बड़ी देर तक बेहोश पड़ा रहा। जब उसे होश आया तो वजीर ने दरियाफ्त किया कि यह क्या मामला है ? खलीफा ने बतलाया कि जिस वक्त हजरत इमाम जाफर सादिक रजि० अन्दर तशरीफ़ लाये, एक अजदहा (साँप) उनके साथ मुँह फैलाये हुये था और यह मालूम होता था कि अगर मैंने उन्हें कुछ भी तकलीफ दी तो वह मुझको खा जायेगा इस खौफ से मैं उनसे बड़े अदब से पेश आया और बेहोश होकर गिर पड़ा।

कहा जाता है कि एक बार हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) कहीं जा रहे थे। क्या देखा कि एक बुढ़िया के आगे एक गाय मरी पड़ी हुई है और वह औरत मय अपने बच्चों के रो रही है। हजरत ने रोने का कारण दरियाफ्त किया। उसने कहा कि इस गाय के दूध से हमारी गुजर बसर होती थी। यह मर गयी है, अब हम हैरान हैं कि हमारी गुजर किस तरह होगी। आपने फ़रमाया कि क्या तुझ को मंजूर है कि अल्लाह तआला इसको जिन्दा कर दे। इस पर वह औरत बोली कि हम पर तो यह मुसीबत पड़ी है ओर तुम हँसी करते हो। आप ने फ़रमाया कि मैं हँसी नहीं करता। फिर आपने गाय को ठोकर मारी और वह उठ खड़ी हुई और आप सामान्य लोगों में जा मिले कि कोई आपको पहचान न ले। आप मदीना मुनव्वरा में अस्सी हिजरी में पैदा हुये और एक सौ अड़तालीस हिजरी में वफ़ात पायी। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी के तरफ लौट जायेंगे)।

❺

6. हजरत बायजीद बस्तामी रहमतुल्लाहु अलैहि

आपकी मजार बस्ताम में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

6. हालात हजरत बायजीद बस्तामी रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) एक सौ छत्तीस हिजरी को पैदा हुये। आप को हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) से रूहानी निस्बत हासिल हुई थी। आपकी आध्यात्मिक शिक्षा हजरत इमाम जाफर सादिक (रजि०) की वफ़ात के बाद उनसे प्राप्त हुई। आपके पितामह मुल्क बस्ताम के रईसों में से थे, जो पहले अग्नि पूजक थे, बाद को इस्लाम स्वीकार कर लिया था। आपके पूज्य माता जी का कथन है कि जब आप गर्भ में थे तब मैं जब कभी शुबहा का लुकमा (भोजन जो हलाल की कमाई का न हो) रवा लेती तो अन्दर बेचैनी शुरू हो जाती और जब तक कै न कर देती, आराम न मिलता। जब आपने मकतब में पढ़ना शुरू किया और कुरान मजीद की सूरा लुक़मान की इस आयत पर पहुँचे। 'अनिस्कुरली वले वालेदैक' (मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ-बाप का)। आप अपने वालदैन (माता-पिता) के पास गये और उनसे कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा शुक्र कर और अपने वालदैन का शुक्र अदा करो। मुझ से दो का शुक्र अदा नहीं हो सकता। या तो अल्लाह तआला से शुक्र मुआफ़ करा दा या अपना शुक्र बख्श दो। इनकी माता जी ने फ़रमाया कि हमने अपना हक बख्शा और तूझको बिल्कुल अल्लाह तआला का कर दिया। हजरत बायजीद (रहम०) बस्ताम से रवाना हुये और तीस साल तक वे शाम के जंगलों में जप, तप और ईश आराधना में तल्लीन रहे। जिस वक्त आप नमाज पढ़ते आपके सीने की हड्डियों से ईश्वर के खौफ तथा ताज़ीम शरीयत (धर्म शास्त्र के सम्मान) में ऐसे जोर से आवाज निकलती कि लोगों को सुनाई देती। उस साधना काल में वहाँ बहुत से सन्तों के दर्शन हुये और आपने दिन रात तपस्या में तल्लीन रहकर तीन साल में ही बहुत कुछ पा लिया। जानकार लोगों का कथन है कि तौहीद (अद्वैत) में आपकी बहुत गहरी पैठ थी। जुन्नैद बगदादी रहम० जो उस समय के उच्च कोटि के सन्तों में से थे आपके तौहीद के क़ायल थे। बायजीद रहम० खुद फ़रमाते थे कि दो सौ साल तक रूहानी इल्म हासिल करने में लगाये तब कहीं शायद उन्हें कोई ऐसा फूल मिले जैसे कि मुझे

साधना के आरम्भ काल में ही बहुत से मिले।

कहा जाता है कि एक मरतबा उनसे किसी ने कहा कि फलां जगह एक बड़े बुजुर्ग हैं। आप उनकी मुलाकात को गये। जब उनके पास पहुँचे, उन्होने क़िबला (काबा शरीफ) को तरफ थूका। हजरत बायजीद रहम० यह देखकर वापस आ गये और फ़रमाया कि अगर उस शख्स को तरीकत (अध्यात्म) में कुछ दखल होता तो खिलाफ अदब उससे सादिर न होता। कहा जाता है कि आपके घर और मस्जिद में चालीस कदम का फासला था, मगर बेवजह ताज़ीम मस्जिद कभी राह में नहीं थूका। एक बार आप हज करने चले और हर कदम पर दो रकअत नमाज पढ़ते, इस तरह रुक-रुक कर नमाज पढ़ते हुये बारह साल में मक्का पहुँचे। इस विषय में आप फ़रमाते कि खुदा का दरबार कुछ दुनिया के बादशाहों का दरबार तो है नहीं कि उठे और दरबार में पहुँच गये। उस तक पहुंचने की राह तो विनम्रता और प्रेम भरी प्रार्थना के साथ तै करनी चाहिये। लोग जब मक्का जाते हैं तो मदीना के दर्शनों को भी जरूर जाते हैं क्योंकि वहाँ हजरत मुहम्मद सल्ल० की कब्र है। परन्तु हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने कहा कि में मक्का के तुफ़ैल (हेतु) में मदीना न जाऊँगा। मैं खुद मदीना के दर्शनों के लिये कभी चलकर आऊँगा। दूसरे साल जब मदीना की यात्रा के लिये निकले तो बहुत से लोग साथ हो लिये। उन्होने प्रार्थना की कि या खुदा! मुझे इन दुनिया वालों के साथ से दूर रख। फिर एक दिन सबेरे की नमाज के बाद लोगों की ओर देखकर कुरान शरीफ़ की यह आयत पढ़ी 'इन्ननी अनल्लाहो ला इलाहा इल्ला अना फाबुदनी' (निःसंदेह मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, अतः तू मेरी इबादत कर)। लोगों ने कहा कि यह शख्स दीवाना है और उनको छोड़कर चले गये।

आपके पास एक ऊँट था कि उस पर अपना व अपने मुरीदों का सामान लाद कर चला करते थे। किसी ने कहा कि इस बेचारे पर किस क़दर बोझ लाद दिया है। आपने फ़रमाया कि गौर से देखो, इस पर कुछ बोझ है ? देखा कि सामान उसकी पीठ से एक हाथ ऊँचा था। फ़रमाया सुबहान अल्लाह ! अजब मामला है कि अगर अपना अहवाल तुम से पोशीदा (गुप्त) रखूँ तो मलामत (निन्दा) करो और जाहिर करूँ तो उसकी तुम में ताकत नहीं। फ़रमाया कि तुम में से कुछ लोगों को मेरी जियारत (दर्शनों) से लानत (धिक्कार) होती है और कुछ पर रहमत होती है। फ़रमाया लानत

इस वजह से कि वह आया उस वक्त कि मुझ पर हालत गालिब हुई। मुझको आप में न पाया (अपने होश में न पाया, यानी दीवानगी को हालत में पाया)। नाचार (मजबूरन) मेरी गीबत (आलोचना) करेगा। दूसरा आया, हक (ईश्वर) को मुझ पर गालिब पाया, और मुझको माजूर (असमर्थ) रखा, उस पर रहमत हुई। फ़रमाया कि दिल चाहता है कि कयामत के दिन दोज़ख़ की तरफ अपना खेमा लगा लूँ कि वह देखकर मुझको पुश्त हो जाये (मेरी ओर पीठ फेर ले, वापस चला जाये) और खल्क खुदा को राहत मिले।

फ़रमाया कि एक बार अल्लाह तआला को ख्वाब में देखा, मैंने कहा, 'या अल्लाह तेरा रास्ता किस तरह है ? 'फ़रमाया 'दनफ़्स कतआल' (यानी अपने नफ़्स को छोड़ और आ)। फ़रमाया नमाज के सिवाय खड़े होने के और रोजा के सिवा भूख के कुछ न पाया। मुझको तो जो कुछ मिला है अल्लाह तआला के फजल (कृपा) से मिला है, न अमल से क्योंकि बहुत (तपस्या) व कोशिश से कुछ हासिल नहीं हो सकता। नकल है कि एक बार आपको कब्ज हो गया (रूहानियत में 'कब्ज' उस हालत को कहते हैं कि जब इबादत में मन नहीं लगता और दिल उचाट सा रहता है)। अतः इबादत से नाउम्मीद होकर इरादा किया कि बाजार से जनेऊ खरीद कर कमर में बाँधे (यानी ऐसा करके इस्लाम धर्म को छोड़ दें)। बाजार पहुँचे। एक जुन्नार (जनेऊ) की कीमत दरियाफ्त को और दिल में ख्याल किया कि एक दिरहम (एक चाँदी का छोटा सिक्का) होगी, मगर दुकानदार ने कहा 'हजार दिरहम।' यह कीमत सुन कर आप खामोश हो गए। हातिफ ग़ैबी (परोक्ष लोक के फ़रिश्ते ने आवाज दी कि 'जो जुन्नार तू बाँधे उसकी कीमत हजार दिरहम ही होनी चाहिये।' फ़रमाया 'मेरा दिल खुश हो गया कि अल्लाह तआला की मेरे हाल पर इनायत है।' फ़रमाया कि एक बार मुझको इलहाम हुआ कि "ऐ बायजीद जो तू, इबादत करता है उससे बेहतर ला और ऐसी चीज ला जो कि मेरी दरगाह में न हो। मैंने अर्ज किया "या अल्लाह ! तेरे पास क्या नहीं है ?" इलहाम हुआ "बेचारगी, इज्ज (नम्रता), व नियाज (प्रार्थना, आरजू) व शिकस्तगी (जीर्ण शीर्ण अवस्था) नहीं है, वह ला।"

एक मरतबा खिल्वत (एकान्त) में उनकी जबान से यह कलमा निकला "सुभानी मा आजम शानी" (यानी मैं पाक हूं, मेरी शान कितनी बुजुर्ग है) जब ख़ुदी (होश) में

आये मुरीदों ने बयान किया कि आप की जबान से यह कलमा निकला। फ़रमाया कि तुम पर खुदा की मार, अगर फिर मुझ से ऐसा सुनो तो मुझको टुकड़ा-टुकड़ा कर दो और एक-एक छुरी सब को दे दी। फिर उनसे कलमा सरजद हुआ। मुरीदों ने इरादा इनके कत्ल का किया। लेकिन तमाम घर उनकी शक्ल से भरा हुआ पाया। मुरीद छुरी मारते थे और मालूम होता कि गोया पानी में मारते हैं। आखिरकार आप एक पक्षी की तरह मेहराब में बैठे नजर आये। मुरीदों ने फिर तमाम किस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया "ऐ लोगों ! बायजीद तो यह है जिसको तुम देखते हो, वह बायजीद न था। एक मरतबा शफीक बलखी रहम० अबूतराब रहम० मौर हजरत बायजीद बस्तामी रहम० के साथ खाना खा रहे थे कि एक मुरीद वहाँ बैठा हुआ था। वह खाने में शरीक न था। अबू लगाव रहम० ने फ़रमाया कि आओ खाना खाओ। उसने कहा मेरा रोजा है। फ़रमाया कि खाना खाओ, एक महीने के रोज़े का पुण्य लो। उसने मन्जूर न किया। फिर शफीक बलखी रहम० ने कहा कि खाओ, एक वर्ष के रोज़े का सवाब लो। उसके मन्जूर न किया। बायजीद बस्तामी रहम० ने फ़रमाया जाने दो, रान्दह दरगाह (दरबार से बहिष्कृत) हो गया। थोड़े दिन नहीं गुजरे थे कि वह चोरों में पकड़ा गया। उसके दोनों हाथ काट लिये गये।

आपसे किसी ने दरियाफ्त किया कि तुम्हारा पीर कौन है ? फ़रमाया कि एक बूढ़ी औरत। पूछा 'कैसे' आपने फ़रमाया कि 'मैं एक मरतबा गलबए शौक में (प्रभु के सान्निध्य की उत्कट अभिलाषा की हालत में) जंगल की ओर चला गया था। वहाँ एक बुढ़िया को देखा कि लकड़ियों का बोझ ला रही है। मुझ से कहा कि बोझ उठा ले, मुझ से नहीं उठता। फ़रमाया कि उस वक्त मेरी हालत ऐसी थी कि मुझको अपने वुजूद (बदन) का बोझ नहीं उठ सकता था, बुढ़िया का क्या उठाता। एक शेर की तरफ इशारा किया। वह आया, मैंने उसकी पीठ पर वह बोझ रख दिया और बुढ़िया से कहा कि जब तू शहर में जायेगी तो क्या बयान करेगी कि मैंने किस को देखा है। उसने कहा कि यह कहूँगी कि आज मैंने एक खुद नुमा (अहंकारी) और जालिम (निर्दयी) को देखा है। मैंने पूछा 'यह कैसे ?' उसने फ़रमाया कि जिसको खुदा तकलीफ न दे उसको तू तकलीफ देता है, इसीलिये तू जालिम है और इस पर तू चाहता है कि शहर के लोग ये जानें कि शेर तेरे ताबे (वश) में है और तू साहबे करामत (चमत्कार) दिखाने वाला है,

इसीलिये तू खुदनुमा है और खुदनुमायी (अहंकार) सबसे बड़ा ऐब है। बुढ़िया की यह बात हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) के मन को लगी और उन्होंने अपने मन में उसे अपना गुरु मान लिया) उसके बाद अब कोई चमत्कारी घटना उनके जीवन में घटित होती तो उसकी सात्विकता का प्रमाण (अर्थात् उस चमत्कार में उनका अहंकार तो नहीं शामिल है, इसका प्रमाण) वह ईश्वर से चाहते। ऐसे समय पीला प्रकाश प्रकट होता और उस रंग में पाँच पैगम्बरों के नाम हरे रंग में लिखे नजर आते। तब वह समझते कि वह चमत्कार उचित है क्योंकि अकसर शैतान सन्तों को गुमराह करने के लिये तमाशा दिखा कर उनके दिल में अहंकार पैदा करता है। कहा जाता है कि एक बार आप कब्रिस्तान से आ रहे थे। बस्ताम के रईसों में से एक जवान बाजा लिये हुये गाता बजाता चला आ रहा था। हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने उसे देख 'कर फ़रमाया "लाहौल बिल कूवत इल्ला बिल्ला इल अलीइल अज़ीम" (नहीं बचना गुनाह से और न कूवत नेक काम की मगर साथ मदद अल्लाह के जो बरतर बुजुर्ग है)। जवान ने अपना बाजा आप के सर पर जोर से मारा कि बाजा भी टूट गया और शेख का सर भी फूट गया। दूसरे दिन सुबह के वक्त हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने बाजा को कीमत और कुछ हलुआ अपने मुरीद के हाथ उस जवान के पास भेजा और कहा कि उससे कहना कि बायजीद बस्तामी रहम० ने मुआफ़ी माँगी है। यह बाजा की कीमत भेजी है। इससे और बाजा खरीद लो और यह हलुआ भेजा है कि उसको खाओ ताकि रात का गम व गुस्सा दूर हो। उस जवान ने यह व्यवहार देखा। आकर हजरत बायजीद बस्तामी रहम० के क़दमों पर गिरा, तौबा की व बहुत रोया और आपका मुरीद हुआ। उसके साथी भी उसकी मुआफिकत (दोस्ती) में आपके मुरीद हुये और यह सब आपकी खुशखुल्की (सद्व्यवहार) का नतीजा था।

एक रोज हजरत बायजीद बस्तामी रहम० ने अपने में जौक (आनन्द) इबादत न पाया। ख्याल जो किया तो घर में एक खोश (गुच्छा) अंगूर का रखा था। फ़रमाया कि उसे किसी का दे दो। मेरा घर मेवा फरोश (बेचने वाले) की दुकान नहीं है। अतः वह अंगूर का गुच्छा किसी को दे दिया गया और फौरन हजरत बायजीद रहम० को इबादत में लज्जत पैदा हो गयी। कहा जाता है कि हजरत के पड़ोस में एक आतिश परस्त (अग्नि पूजक) रहा करता था। एक बार वह सफर को गया। उसका बच्चा अन्धेरी

रात की वजह से रोता था। हजरत बायजीद रहम० अपना चिराग उसके घर ले जाते तब वह खुश होता। जब वह आतिश परस्त सफर से वापस आया उसकी बीबी ने उससे हाल बयान किया। उसने कहा कि जब हजरत की रोशनी हमारे घर में आ गयी तो क्या अब हम अन्धेरे में रहें। उसी वक्त मुसलमान हो गया।

हजरत ने एक मरतबा किसी इमाम के पीछे नमाज पढ़ी। बाद नमाज इमाम ने आपसे पूछा कि आपका खाना-पीना कहाँ से चलता है। आपने जवाब दिया कि 'जरा सब्र करो, पहले मैं नमाज का एआदा कर लूँ (दुबारा नमाज पढ़ लूँ) तब तुम्हारी बात का जवाब दूँ, क्योंकि जो शख्स रोजी देने वाले को न जाने उसके पीछे नमाज पढ़ना रवा (उचित) नहीं।' एक बार आपने फ़रमाया कि अगर किसी रोज बला (मुसीबत की सहन शक्ति) नहीं आती तो कहता हूँ 'या इलाही रोटी भेजी और सालन न भेजी। किसी शख्स ने आपसे अर्ज किया कि मुझ से कुछ अपने मुजाहिदे (तप, इन्द्रिय निग्रह) का हाल बयान फ़रमाइये। फ़रमाया कि और बड़ी बात बयान करूँ तो उसको तुम को ताकत नहीं, लेकिन एक छोटी सी बात सुनाता हूँ। एक मरतबा मैंने अपने नफ़्स से कुछ काम लेना चाहा। उसने कहना न माना। एक साल उसको पानी न दिया, कहा-"ऐ नफ़्स ! या इबादत कर या प्यासा मर।"

आपके पास एक मुरीद तीस बरस से था। हर रोज उससे पूछा करते कि तेरा नाम क्या है। वह रोज बता देता। आखिर एक रोज उससे कहा कि 'ऐ शेख ! मैं तीस साल से आपके पास रहता हूं। आप हर रोज मेरा नाम दरियाफ्त करते हैं और रोज भूल जाते है।' आपने फ़रमाया कि 'मैं तुझ से हँसी नहीं करता। जब से उसका (खुदा का) नाम दिल में आ गया कुछ याद नहीं रहता। हर रोज तेरा नाम पूछ लेता हूँ और हर रोज भूल जाता हूँ।' एक शख्स आपके पास आया कि मुझे कोई ऐसी तालीम कीजिये कि जिससे नजात (मुक्ति) हो। फ़रमाया 'दो बातें याद कर ले, काफी हैं। अव्वल यह है कि अल्लाह तआला तेरे हर हाल से आगाह है और जो तू करता है वह देखता है और तेरे अमल से बेनियाज़ (बेपरवाह, निस्पृह) है। एक रोज किसी ने आपसे अर्ज़ किया आप अपने पोस्तीन (किसी जानवर के चमड़े से बना हुआ कोट) का एक टुकड़ा मुझको दीजिये कि आप की बरकत हासिल हो। आपने फ़रमाया कि अगर मेरा पोस्त (मेरे बदन का चमड़ा) भी पहिन ले तो क्या होता है, जब तक कि मेरे अमल न करे।

फ़रमाया कि सच्चा आबिद (आराधक) और सच्चा आमिल (कर्मयोगी) वह है कि तेगे जुहद (तप रूपी तलवार) से तमाम मुरादात (इच्छाओं) का सर काट ले। उसकी तमाम शहबात व तमन्ना (वासनायें और अभिलाषा) मुहब्बते हक (ईश्वर के प्रेम) में फन हो जायँ और जो अल्लाह तआला को दोस्त (प्रिय) हो, वही उसको भी हो और जो अल्लाह तआला की आरजू हो वही उसकी भी हो। फ़रमाया कि अल्लाह तआला के पहचानने की यही निशानी है कि खल्क (दुनिया) से भागे। अदना छोटी सी) बात जो आरफ ब्रह्म ज्ञानी) को जरूरी है, वह यह है कि मुल्क (दुनिया) और माल (धन, दौलत) से परहेज करे।

फ़रमाया नेकों (सज्जन लोगों) की सुहबत कारे नेक (अच्छे कर्म) से बेहतर है और बदों (बुरे लोगों की सुहबत) कारे बद (बुरे कर्म) से बदतर है। फ़रमाया जिसने अपनी ख्वाहिश तर्क को (त्याग दी) अल्लाह तआला को पहुँच गया। फ़रमाया तू अपने तई (अपने को) ऐसा जाहिर कर जैसा कि तू हो। फ़रमाया जिक्र (ईश्वर का नाम जप) कसरते अदद (अधिक संख्या में करने) से नहीं है कि जिक्र हुजूर बेगफलत (बिना असावधानी के ईश्वर की ओर ध्यान लगाने) का नाम है। फ़रमाया अल्लाह तआला की मुहब्बत यह है कि दुनिया, और आखरत (लोक परलोक) को दोस्त न रखे (अर्थात् दोनों ही की इच्छा न रखे)। फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नजदीक सबसे ज्यादा वह है जो बारे खल्क खींचे (प्राणी मात्र की सेवा करे) उनकी मुसीबत में उनका साथ दे और खूब खुश रहे (प्रसन्न-चित्त रहे)। किसी ने आपसे दरियाफ्त किया कि किस तरह हक को पहिचानना चाहिये। फ़रमाया कि अन्धा और बहरा और लंगड़ा बन कर। किसी ने दरियाफ्त किया कि आप भूख की इस क़दर क्यों तारीफ करते हैं ? आपने फ़रमाया कि अगर फिरऔन (मिश्र का एक बादशाह जो बड़ा अत्याचारी था और हजरत मूसा अलै० की शाप से मरा था) भूखा होता तो 'अनारब्ब कुमुल आला' (मैं तुम्हारा सबसे बड़ा खुदा हू) न कहता। किसी ने दरियाफ़्त किया कि मुतकब्बिर (अहंकारी) किस को कहते हैं ? अपने फ़रमाया कि जो शख्स तमाम आलम (दुनिया) में अपने से ज्यादा कोई खबोस (बुरी) चीज देखे। फ़रमाया मर्दों का काम यह है कि अल्लाह तआला के सिवा किसी से दिल न लगाये।

आपने बारह साल तक अपने मन को तपस्या की भक्ति में जला कर मुजाहिदा

(हठयोग) की आग से तपाया और मलामत (भर्त्सना) के हथौड़े से कूटा। उसके वाद उसका नफ़्स (अन्तःकरण) आईने की तरह हो गया। फिर पाँच साल तक उसमें उन्होने अपने आप को देखा और भाँति-भाँति की आराधनाओं की कलई उस पर की। फिर एक बार उन्होंने उस पर एतबार (विश्वास) की नजर डाली तो खुद पसन्दी (आत्म प्रशंसा) के जन्नार (जनेऊ) उसके गले में पड़े देखे। फिर पाँच साल बड़ी मेहनत करके उन दोषों को दूर किया और फिर से मन को ईश्वरार्पित किया। आप फ़रमाते थे कि इस तरह सच्चा मुसलमान बन कर जब मैंने दुनिया पर नजर डाली तो सब को मुर्दा पाया। उन सब पर नमाजे जनाजा (अर्थी पर पढ़ी जाने वाली नमाज) पढ़ कर मैं दुनिया से इस तरह दूर हो गया जैसे नमाज के नमाज़ी, नमाजे जनाजा पढ़ कर कयामत (प्रलय) तक के लिये उससे दूर हो जाते हैं। तिस पर भी उन्हें एक बार गुमान हुआ कि में अपने जमाने का बहुत बड़ा शेख हूं। खुरासान जाते वक्त तीन दिन तक वह एक मस्जिद पर ही ठहरे रहे और इबादत की कि 'ऐ अल्लाह! जब तक तूँ मुझे मेरी असली हालत से आगाह नहीं कर देता तव तक मैं आगे न जाऊँगा। चौथे दिन आप ने देखा कि एक काना आदमी ऊँट पर सवार उबर आया। ऊँट की तरफ देखकर उन्होने ठहरने का इशारा किया, तो ऊँट के पैर जमीन में धंस गये। वह शख्स जो ऊंट पर सवार था बोला कि 'क्या तू चाहता है कि मैं खुली आँख बन्द करके अपनी बन्द आँख खोलूँ और शहर बस्ताम को बायजीद सहित डूबा दूँ। यह सुन कर हजरत बायजीद रहम० घबड़ा कर बोले, "आप कहाँ से तशरीफ लाये है" वह शख्स बोला जब तूनें अल्लाह से आगे न जाने का अहद (वचन) किया था तब मैं यहाँ से तीन हजार फरसंग (एक फरसंग लगभग सवा दो मील बराबर होता है) की दूरी पर था। वहाँ से आ रहा हूं और फिर यह कह कर "तू अपने दिल को निगहबानी कर और खबरदार हो जा ?" वह शख्स गायब हो गया। इस घटना से यह उपदेश मिलता है कि कोई कितनी ही इबादत व साधना व तप क्यों न करे, हज़ारों वर्ष का तपस्या के पश्चात् भी मन के प्रति असावधान होना खतरे से खाली नहीं। अतः ऊंची से ऊंची आध्यात्मिक स्थिति वाले साधक को भी हमेशा आजिजी और इन्कसारी के साथ ईश्वर से इस अहंकार रूपी शैतान से बचाने के लिये आर्द्र आराधना करते रहना चाहिये। एक बार आपने फ़रमाया, "मुझे ख्याल था कि मैं अल्लाह को दोस्त रखता हूँ मगर मालूम हुआ कि में

नहीं, वह मुझे दोस्त रखता है।" लोक रियाजत (जप तप आदि के अभ्यास) पर नजर करते है, पर मैं अल्लाह पर नजर करता हूँ। लोगों ने मुरदों से इल्म सीखा मैंने ऐसे जिन्दे से सीखा जिसे मौत नहीं। "तूनें यह काम क्यों किया ?" कयामत में यह पूछे जाने में बेहतर होगा कि यह पूछा जाये "यह काम तूनें क्यों नहीं किया ?" आपने एक दिन अल्लाह से अर्ज किया "मैं तेरी राह में कैसे आ सकता हूँ ?" हुक्म हुआ, "ख़ुदी छोड़कर आ सकता है" । एक बार लोगों ने आप से कहा, "आप हवा और पानी पर चलते हैं।" आपने फ़रमाया "यह सब कुछ नहीं, मर्द वह है जो सिवा खुदा के किसी से दिल न लगाये।"

एक बार उनके एक शिष्य ने कहा कि मुझे उस पर हैरत (आश्चर्य) होता है जो अल्लाह को जानता है और उसकी इबादत नहीं करता। आपने फ़रमाया "मुझे उस इन्सान पर हैरत है जो अल्लाह को पहचानने के बार उसकी इबादत करता है यानी अल्लाह को जान कर होश में कैसे रहना है ?"

एक बार आप कही जा रहे थे। रास्ते में एक कुत्ता मिला। उसको देखकर आपने अपना दामन समेट लिया। कुत्ते ने कहा "आपने दामन क्यों समेटा ?" अगर मुझ से दामन छू भी जाता तो आप उसे धो सकते थे, पर यह जो नखवत (घृणा) आपने की उसे तो सात दरियाओं का पानी भी दूर नहीं कर सकता" । हजरत बायजीद रहम० ने फ़रमाया "तू सच कहता है, तुझ में अगर बाहरी तो मुझ में अन्दरूनी नापाकी है, सो हम तुम साथ रहें ताकि मुझ में भी कुछ पाकीजगी (पवित्रता) आ जाये। कुत्ते ने कहा "मेरा साथ रहना नामुमकिन है क्योंकि मैं नफरत जदा (घृणा योग्य) हूँ और आप पाक समझे जाते हैं।" फिर एक चुटकी सी लेकर उसने कहा कि मैं दूसरे दिन के लिये नहीं रखता, आप अनाज लाकर जमा करते है। हजरत बायजीद रहम० ने फ़रमाया "जब मैं कुत्ते के ही लायक नहीं तब खुदा की खुदाई (ईश्वर सानिध्य) कैसे मिलेगी ?" एक बार आपने फ़रमाया कि अल्लाह पहले जमीन के शिकस्ता दिलों (निराश एव हताश व्यक्तियों के दिलों) में रहता हूं। इसीलिये अहले आसमान (फ़रिश्ते) पहले जमीन से शिकस्ता दिलों को ढूंढा करते हैं। तमाम खल्क को बख्श देने की इबादत करने पर मालूम हुआ कि हर किसी के साथ एक शफीअ (ईश्वर से गुनाह माफ कराने के लिये सिफारिश करने वाला) है। और खुदा उन पर मुझ से ज्यादा मेहरबान है। शैतान पर

रहमत करने को कहा तो सुना 'वह आग का बना है, आग को आग ही बेहतर है।' एक दिन आपने अल्लाह से दुआ की "ऐ अल्लाह मेरी ओर नजर (कृपा दृष्टि कर)" उत्तर मिला 'बायजीद, तेरे ऐमाल (कर्म) ?" बोले, नजर तेरी कृपा दृष्टि से ऐमाल कर्म खुद हो अच्छे हो जायेंगे।

एक बार जब आप मदीना मुनव्वरा के दर्शन के बाद वापस हुये तो आपके दिल में ख्याल आया कि अब अपनी पूज्य माता जो के दर्शन करने चाहिये और वहाँ से वह बस्ताम की और रवाना हो गये। फजिर की नमाज (सुबह की नमाज) के वक्त मकान पर पहुँचे। कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि माताजी वुज़ू कर रहीं हैं और यह दुआ माँग रही हैं "ऐ अल्लाह ! तू मेरे मुसाफिर (यात्री, यानी मेरे बेटे) को आराम में रखना और बुज़ुर्गों को उससे राजी रखना और नेक बदला उसे देना। " यह सुन कर आपका दिल भर आया। बहुत देर बैठे रहे और फिर दरवाजा खटखटाया। माता जी ने पूछा 'कौन है?' बोले, तुम्हारा मुसाफिर।" माँ ने दरवाजा खोला ' जैसे गाय अपने बछड़े के लिये हुमकती है वैसे ही आपकी माँ आपसे बड़े प्रेम से मिली और बोली "तुमने सफर में बहुत दिन लगा दिये। तुम्हारी मुहब्बत में रोते-रोते मेरी आँखों की रोशनी जाती रही और मेरी पीठ गम की वजह से झुक गयी।" हजरत बायजीद रहम० फ़रमाते कि जिस काम को मैं सबसे पीछे का जानता था वह सबसे अव्वल (प्रथम) निकला और वह थी मेरी माँ की खुशनूदी (प्रसन्नता)। वह यह भी फ़रमाते कि खुदा ने जो कुछ मैहर (दया) मुझ पर की, इल्म और मारिफत (ब्रह्मज्ञान) मुझे हासिल हुई, वह सब माँ की मुहब्बत भरी दिली दुआ से। भगवान किसी का हक नहीं छीनते। आप को पूज्य माता जो ने अपना हक छोड़कर आपको जा बचपन में ही खुदा के हवाले कर दिया था, उसका नेक बदला उन्होने चुकाया। सर्दी की रात को आपकी माताजी ने सोते से जाग कर पीने को पानी माँगा, मगर उस वक्त घर में पानी बिल्कुल न था। वह सुराही लेकर नहर पर पानी भरने गये। जब तक वह पानी लेकर लौटे तब तक माँ फिर गहरी नींद में सो गयीं। वह पानी की सुराही लिये बड़ी देर तक माँ के सिरहाने खड़े रहे और उनके हाथ ठंडक से ठिठुर गये। जब माँ की नींद खुली तो उन्होंने पानी पिलाया। माँ ने कहा "बेटा तुम इतनी देर तक खड़े क्यों रहे ?" आपने कहा "मैंने सोचा आप जागें और पानी तैयार न मिले तो आपको तकलीफ होगी।" एक बार की

ऐसी ही एक घटना और है जिसका जिक्र हजरत बायजीद रहम० ने लोगों से किया। एक रात्रि को माँ ने आप को जगा कर कहा " एक किवाड़ खोल दो।" यह कह कर वह सो गयीं। दाहिना किवाड़ खोलने को कहा है कि बायां, इसी फिक्र में रात भर खड़े रहे। जब माँ ने सुना तो बड़ी दुआएँ दी।

आप जब नमाज पढ़ने मस्जिद को जाते तो अकसर दरवाजे पर खड़े होकर रोया करते। लोगों ने कारण पूछा, तो आपने कहा कि मैं अपने आप को देखता हूं तो अजहद नापाक (अत्यन्त अपवित्र) पाता हूँ और डरता हूं कि कहीं मेरे अन्दर जाने से मस्जिद नापाक न हो जाये।" संत अबूमूसा ने आपने पूछा "खुदा की राह में आपको कौन सी वात सबसे मुश्किल मालूम हुई !' आपने फ़रमाया, "खुदा को मदद के बिना उसकी ओर दिल को ले जाना मुझे सबसे मुश्किल मालूम हुआ और उसको रहमत हुई तो दिल बिना मेरी किसी कोशिश के उसकी ओर रुजू हुक्म और मुझे उसकी ओर खींचने लगा। फिर बोले "चालीस साल तक मैंने वह चीज न खाई जो अकसर लोग खाते हैं। मुझे ताकत कहीं और से मिलती रही। चालीस साल तक दिल की निगहबानी (देखभाल) की। तीस साल तक अल्लाह की तलाश की। तव देखा कि तालिब (इच्छुक) वह है और मैं मतलूब (इच्छित)।"

आपको सात बार बस्ताम से निकाल दिया गया पर हर बार शहर पर कोई मुसीबत आ गई तो उन्हें सादर वापस बुला लिया।

आपकी वफ़ात (मृत्यु) चौदह साबान तीन सौ इकसठ हिजरी को हुई। बस्ताम मैं आप दफन हुये। किसी ने आपको स्वप्न में देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मुआमला किया ? (कैसा व्यवहार किया)। फ़रमाया 'खुदा ने मुझ से दरियाफ्त किया कि तू क्या लाया हैं ?' मैंने अर्ज किया कि कोई दर्वेश अगर दरगाहे शाही में आता है तो उससे यह नहीं कहते कि तू क्या लाया हैं, बल्कि यह कहते हैं कि क्या चाहिये। कहा जाता है कि आपको किसी ने ख्वाब में देखा। उसने आपसे पूछा कि "तसव्वुफ़ किस को कहते हैं ?" आपने फ़रमाया "आराइश (सजावट, ऊपरी बनावट) तर्क करना और मेहनत इख्तियार करना।

7. हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी

आपकी मजार खिरकान में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

7. हालात हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहमतुल्लाहु अलैहि

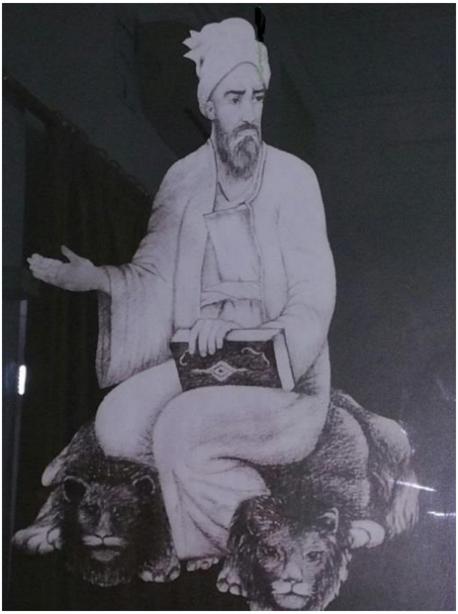

हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० को तसव्वुफ़ (अध्यात्म) में बतरीक उवैसियत हज़रत बायजीद बस्तामी रहम० से निस्बत हासिल हुई है क्योंकि आपका जन्म हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की बफात (शरीरान्त) के बाद हुआ (आध्यात्मिक क्षेत्र में उवैसी उस शख्स को कहते हैं जो किसी सन्त के शरीरान्त के पश्चात उससे रूहानी निस्बत (आध्यात्मिक संबंध, हासिल करे और उससे रूहानियत की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) ग्रहण करे)।

कहा जाता है कि हज़रत बायजीद बस्तामी रहम० हर साल दहिस्तान कुसूर शोहदा (शहीदों की क़ब्रों) की जियारत (दर्शनों) को जाया करते थे। जब रास्ते में खिरकान पहुँचे, उस जगह खड़े हुये और इस तरफ साँस लेने लगे जैसे कोई कुछ

सूँघता है। आपके मुरीद ने आपसे अर्ज करने हुये पूछा कि 'हजरत, हमको तो कुछ खुशबू नहीं आती, आप क्या सूँघते हैं ? आपने जवाब दिया 'इन चोरों के गाँव में एक मर्द की खुशबू आती है। इसमें तीन बातें मुझ से ज्यादा होंगी। इस पर बारे अयाल होगा (बाल बच्चों की जिम्मेदारी होगी), खेती करेगा और दरख़्त लगायेगा।' कहा जाता है कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० अपने आध्यात्मिक जीवन के आरम्भ में बारह साल तक इशा की नमाज (सायंकाल की मग़रिब की नमाज के लगभग डेढ़ घण्टे बाद रात में पढ़ी जाने वाली नमाज) बजमाअत (लोगों के साथ) पढ़ कर हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की मजार शरीफ पर जाते और वहाँ आपकी, महान आत्मा की ओर मुतवज्जह होकर (ध्यान लगाकर) उनकी दया, कृपा, सानिध्य और नेमतों के लिये मुन्तजिर रहते (प्रतीक्षा करते) और ईश्वर से यह प्रार्थना करते "या अल्लाह, तूनें हजरत बायजीद रहम० को जो खिलत (उपहार) अदा किया है उसमें से अबुल हसन को भी अता फ़रमा।" फिर वहाँ से वापस आते। इशा ही के वुजू से सुबह की नमाज बजमाअत पढ़ते (यानी इशा की नमाज के बाद बराबर रात भर इबादत में लगे रहते, यहाँ तक कि उसी हालत में सुबह की नमाज लोगों के साथ पढ़ते।'

कहा जाता है कि चालीस साल तक आपने सर तकिया पर नहीं रखा और सुबह की नमाज इशा की वुज़ू से पढ़ी। एक बार खानकाह (आश्रम) में आपको तमाम मुरीदों तथा दरवेशों के साथ रहते हुए सात दिन व्यतीत हो गये, लेकिन कुछ भोजन को न मिला। एक दिन एक शख्स कुछ भोजन सामग्री लेकर आया और आवाज दी कि सूफियों के वास्ते लाया हू। आप ने फ़रमाया कि तुम में जो सूफी होवे इस भोजन सामग्री को ले, लेकिन मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि जा सूफी होने का दावा करूँ। अतः किसी ने भी उसे न लिया। वह शख्स अपनी भोजन सामग्री वापस ले गया। एक बार एक शख्स आप के पास आया और अर्ज की कि आप मुझको अपना ख़िर्क़ा (शरीर से उतरा हुआ वस्त्र पहिनायें)। आपने फ़रमाया कि पहले एक बात का जवाब दें कि अगर औरत मर्द के कपड़े पहने तो क्या वह मर्द हो जाती है ? उसने कहा 'नहीं'। आपने फ़रमाया कि फिर ख़िर्क़ा से क्या फायदा। अगर तू मर्द नहीं है तो ख़िर्क़ा से मर्द नहीं हो सकता। कहा जाता है कि एक शख्स ने आपसे अर्ज किया कि आप इजाजत दें कि मैं खल्के खुदा (दुनिया के लोगों) को अल्लाह तआला की दावत करूँ (ईश्वर की ओर

उनका ध्यान आकर्षित करूँ, ईश्वर भक्ति के लिये प्रेरित करूँ) । आपने फ़रमाया, “अल्लाह तआला की तरफ दावत करना । खबरदार, अपनी तरफ न करना ।” उसने अर्ज किया कि ‘अपनी तरफ दावत कैसी होती है ?’ फ़रमाया कि अपनी तरफ के यह माने है कि अगर कोई और शख्स लोगों की अल्लाह तआला की दावत करे और तुझ को बुरा लगे तो यह अलामत इसकी है कि तू अपनी तरफ दावत करता है।

आपकी धर्मपत्नी बहुत तेज मिजाज की थी। एक बार एक सन्त आप के दर्शनों के किये आपके घर आये और आपकी बीवी से पूछा कि हजरत शेख अबुल हसन रहम० कहाँ हैं? इस पर उन्होने बहुत झुँझलाकर जवाब दिया कि तू ऐसे जिन्दीक (नास्तिक) और बुरे आदमी के शेख कहता है ? मैं शेख को नहीं जानती । हाँ, मेरा शौहर (पति) लकड़ियाँ लेने जंगल गया है । वह सन्त जंगल को गये, तो देखा कि हजरत अबुल हसन रहम० शेर पर लकड़ियों का बोझ रखे चले आ रहे है । वह सन्त आपसे बोले “यह क्या माजरा है? बीबी तो आपके लिये यह कहती है और आप ऐसे है । आपने फ़रमाया कि अगर मैं अपनी बीवी की तुनुक मिजाजी का बोझ न खींचूँ (उसे बरदाश्त न करूँ) तो यह खूंखार शेर मेरा बोझ क्यों ढोने लगा ।" फिर आपने उन सन्त को अपने घर लाकर उनसे बड़ी देर तक सत्संग किया। इसके वाद बोले, ‘अब मुझे आज्ञा दीजिये, क्योंकि दीवार बनानी है और मिट्टी भिगो चुका हूँ ।" वह दीवार पर जा कर बैठे ही थे कि बसूली हाथ से छूट कर गिर गयी। उन सन्त ने चाहा कि उठा कर दें, मगर वह उठे इससे पहले ही बसूली खुद बख़ुद उठ कर आपके हाथ में जा पहुँची।

एक बार बादशाह महमूद गज़नवी खिरकान आप के दर्शनों के लिये गया। उसने दूत भेज कर आप से कहला भेजा कि बादशाह सलामत गज़नी से सिर्फ आपके दर्शनों के लिये आये हैं । बड़ी कृपा होगी कि आप उनके ख़ेमे पर चलकर उन्हें दर्शन दें । उसने अपने दूत में यह भी कहा कि अगर वह आने पर राजी न हों तो कुरान शरीफ की यह आयत सुना देना, ‘अति उल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अमरे मिनकुम’ यानी अल्लाह की फ़रमा बरदारी (आज्ञापालन) करो व रसूल की फ़रमा बरदारी करो-और तुम में से जो हाकिम है उसकी फ़रमा बरदारी करो। बादशाह महमूद गज़नवी का दूत आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और बादशाह का सन्देश आपको सुनाया । आपने फ़रमाया ‘मुझको मुआफ़ करो’ । उसने कुरान शरीफ की वह आयत आपको सुनायी ।

आपने फ़रमाया कि 'में अल्लाह की इताअत (सेवा) में इतना तल्लीन हूँ कि रसूल की इताअत के लिये भी कोई वक्त नहीं। फिर दुनिया के (सांसारिक) हाकिमों का तो जिक्र ही क्या।' उनका यह उत्तर सुन कर बादशाह प्रसन्न हुआ और कहा 'मैं उनको जितना ऊँचा सूफी मानता था उससे भी वह ऊँचे हैं।' फिर भी उसने आपकी परीक्षा लेनी चाही। उसने अपनी सारी पोशाक अपने अयाज नामक एक गुलाम को पहनाई और खुद गुलाम की पोशाक पहन ली। साथ ही उसने 10 दासियों को मर्दाना लिबास पहना कर उनके साथ हो गया। और उन सबके साथ आपके इबादतख़ाना (आराधना गृह) पर पहुँचा और सलाम किया। आपने सलाम का जवाब तो दिया लेकिन ताज़ीम न दी आदर न किया और उस अयाज गुलाम की तरफ कोई ध्यान न दिया, जो बादशाह की पोशाक में था और बादशाह महमूद की तरफ देखा और फ़रमाया कि यह सब फरेब है और बादशाह को हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा लिया और फ़रमाया कि इन दासियों को बाहर भेज दो। बादशाह ने इशारा किया। वह फौरन वहाँ से चली गयीं। बादशाह ने आपसे अर्ज किया 'हजरत बायजीद रहम० की कुछ बातें सुनाइये।' आपने कहा कि हजरत बायजीद रहम० ने फ़रमाया है 'जिसने मुझको देखा बदबख़्ती (दुर्भाग्य) से बरी हो गया।' इस पर बादशाह महमूद बोला कि 'क्या इनका दर्जा रसूल सल्ल० से भी ज्यादा है कि अबूजहल और अबूलहब ने रसूल अल्लाह सल्ल० को देखा और वह शकी (अभागे) ही रहे। आपने फ़रमाया कि 'ऐ महमूद! अदब का लिहाज रख और अपनी सल्तनत को खतरे में न डाल। अबू जहल ने अपने भतीजे मुहम्मद को देखा था न कि हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० को और सच्ची बात तो यह है कि सिवा चार खलीफाओं और असहाब (उनके साथियों) के किसी ने उन्हें नहीं देखा और इसका सबूत यह आयत है, "ऐ मुहम्मद, तू उनको देखता है जो तेरी तरफ नजर करते हैं; हालाँकि वह तुझे नहीं देख सकते।" बादशाह महमूद इस आयत को सुन कर बहुत खुश हुआ। आर उनसे कुछ उपदेश देने के लिये निवेदन किया।

आपने फ़रमाया, जो चीज़ें हराम है उनसे दूर रहो, जमाअत (समूह। के साथ नमाज अदा करो और खल्के खुदा (दुनिया वालों) पर सखावत (दानशीलता) व शफ़कत (दया) करना और प्रेम करना। बादशाह महमूद ने अर्ज किया 'मेरे लिये दुआएँ खैर (कल्याण के लिये प्रार्थना) कीजिये'। आपने फ़रमाया कि मैं हर वक्त यह दुआ

करता हूं 'अल्ला हुम्मग फिर्लित मोमीनीना वल मोमीनात' (ऐ खुदा पालने वाले ! मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बख्श दे) । बादशाह ने अर्ज किया 'कोई खास दुआ मेरे लिये कीजिए ।" आपने फ़रमाया 'ऐ महमूद, तेरी आक़बित (अन्त) महमूद (श्रेष्ठ) हो ।" इस सत्संग के बाद बादशाह ने अशर्फियों की थैली आपको भेंट की । आपने एक सुखी जौ की रोटी बादशाह को दी और कहा, 'इसे खाओ ।' बादशाह ने एक टुकड़ा तोड़ कर मुँह में रखा और देर तक चबाया । आपने फ़रमाया कि शायद यह निवाला (ग्रास) तेरे गले में अटकता है ।" बोला 'जी हाँ' । आपने फ़रमाया कि तेरी अशर्फियों की थैली भी मेरे गले में इसी तरह अटकती है । तू इसे वापस ले जा । उसने अर्ज किया कि इसमें से कुछ तो कृपा करके स्वीकार कर लें ।' आपने फ़रमाया "बिना जरूरत कोई चीज लेना ठीक नहीं है ।" इस पर बादशाह बोला अच्छा तो बतौर तोहफा के कोई चीज देकर मशकूर कीजिए (कृतार्थ कीजिए) । आपने अपने पहनने का एक वस्त्र दे दिया । बादशाह चलने के लिये खड़ा हुआ तो हजरत अबुल हसन रहम० उसकी ताज़ीम (आदर) के लिये उठ खड़े हुये । बादशाह ने कहा कि जब मैं आया था तब आपने मेरा आदर नहीं किया और अब आप चलते वक्त मेरी ताज़ीम के लिये उठ खड़े हुये, इसके क्या मानी ? आपने फ़रमाया, उस समय तू शाही रोब और अहंकार में मेरी परीक्षा लेने के लिये आया था और अब फुक्र (फकीरी) के इन्कसार (विनम्रता) में जाता है ।

बादशाह महमूद गज़नवी ने जब सोमनाथ के मन्दिर पर चढाई की और घमासान युद्ध के बीच जब दुश्मनों की जीत की संभावना बढ़ने लगी, उस समय बादशाह महमूद घोड़े पर से कूद कर हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० द्वारा दिये हुये उस वस्त्र को हाथ में लेकर दुआ माँगी कि या 'इलाही' इस पैरहन (वस्त्र) के तुफ़ैल में मुझे इस युद्ध में विजय प्रदान कर । तत्काल कुछ ऐसा हुआ कि बादशाह महमूद को दुश्मनों पर विजय प्राप्त हो गई । उसी रात को बादशाह ने ख्वाब में देखा कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन रहम० फ़रमाते हैं कि ऐ महमूद ! तूनें हमारे ख़िरके (वस्त्र) की कुछ इज्जत न की । अगर तू अल्लाह तआला से चाहता कि तमाम काफ़िर (मूर्ति पूजक) मुसलमान हो जायें, तो सब मुसलमान हो जाते ।

एक रोज आपने अपने मुरीदों से पूछा, "क्या चीज बेहतर होती है ?" मुरीदों ने

कहा 'आप ही फ़रमायें ।' आपने फ़रमाया कि 'दिल में अल्लाह तआला की याद ।' किसी ने आपसे दरियाफ्त किया कि 'सूफी किसे कहते हैं ?' आपने फ़रमाया कि सूफी मुरक़्का (फकीरों की गुदड़ी) और सज्जादा (नमाज पढ़ने का बिछौना) से नहीं होता, बल्कि सूफी वह है जो न हो (अर्थात् अपनी ख़ुदी में नहीं बल्कि फ़नाफ़िल्लाह हो) । आपने फ़रमाया कि सूफी वह है कि दिन में उसको सूरज की जरूरत न हो और रात को चाँद और सितारों की । किसी ने दरियाफ्त किया कि सिद्क किस को कहते है? आपने फ़रमाया कि सिद्क यह है कि दिल बातें करे यानी वह बात कहे कि जो दिल में हो । किसी ने कहा इखलास (सच्चा और निष्कपट प्रेम) किस को कहते हैं ? फ़रमाया जो कुछ अल्लाह तआला के वास्ते तू करे वह इखलास है और जो खल्क (दुनिया) के वास्ते करे वह रिया (मक्कारी) है । फ़रमाया कि ऐसे आदमी के पास मत बैठो कि तुम अल्लाह तआला कहो और वह कुछ और कहे । फ़रमाया कि अंदोह (रंज) पैदा करो कि तेरी आंख से पानी निकले कि अल्लाह तआला बंदा गिरियाँ और बिरियाँ को दोस्त रखता है (ऐसे भक्त जो अपने पापों के लिये ईश्वर से क्षमा माँगते हुये आँसू बहाते रहते हैं और शिकस्ता दिल अर्थात् टूटे हुये दिल से बड़ी विनीत भावना से फरियाद करते रहते हैं, ऐसे लोगों को ईश्वर प्यार करता है) । फ़रमाया कि जो सरवर बजाये (संगीत या राग रागिनी बजाये) और उसके ज़रिये से खुदा को चाहे, इससे बेहतर है कि कुरान पढ़े और खुदा को चाहे ।

फ़रमाया रसूल अल्लाह सल्ल० का वारिस उत्तराधिकारी वह शख्स हैं कि रसूल अल्लाह सल्ल० के फैल (आचरण) की पैरवी अनुकरण) करे, न कि वह कागज स्याह करे । फ़रमाया कि हजरत शिबली रहम० ने फ़रमाया है कि मैं चाहता हूँ कि न चाह (मेरी कोई इच्छा न रहे) । फ़रमाया यह भी एक ख्वाहिश है । फ़रमाया चालीस साल गूजरे कि मेरा नफ़्स ठंडा पानी और तुर्श छाछ (खट्टा दही) चाहता है, अभी तक नहीं दिया । फ़रमाया कि दुनिया में आलिम (विद्वान) और आबिद (इबादत करने वाले) बहुत है, तुम को उनसे गुजरना चाहिये (मिलना चाहिये) कि रात इस तरह बसर करो कि अल्लाह तआला पसन्द करे । दिन इस तरह बसर करना चाहिये कि अल्लाह तआला पसन्द करे । फ़रमाया नमाज रोजा सब कहते हैं लेकिन मर्द वह है जो साठ साल उस पर गुजर जाये और बायें जानिब का फरिश्ता (जो बुरे कर्मों का लेखा जोखा

रखता है) कुछ न लीखे कि उसको अल्लाह तआला के सामने शरमिंदा होना पड़ेगा। फ़रमाया कि जो शख्स दुनिया से नेक मर्दों का नाम ले जाये वह ऐसा होना चाहिये कि दोज़ख़ के किनारे पर खड़ा हो जाये और जिस को अल्लाह तआला दोज़ख़ में भेजे उसको वह हाथ पकड़ कर बहिश्त में ले जाये। फ़रमाया मलायका को (फ़रिश्तों को) तीन जगह औलियाओं (संतों) का खौफ आता है। एक मलकुल मौत (यमराज) को उनकी जान निकालने के समय, दूसरे किरामिन कातबीन (अच्छे बुरे कर्मों को लिखने वाले फ़रिश्तों) को लिखते वक्त (औलियाओं के अच्छे बुरे कर्मों को लिखते समय), तीसरे मुन्कर नकीर को उनमें सवाल करते वक्त (वह फ़रिश्ते जो मरने वालों से उसकी कब्र में उसके अच्छे-बुरे कर्मों के विषय मैं सवाल करते हैं उन्हें मुन्कर नकीर कहते हैं)।

आपने फ़रमाया 'अगर तू तालिबे दुनिया होगा, दुनिया तुझ पर गालिब होगी और अगर इससे मुँह फेरेगा तो तू उस पर गालिब होगा।' फ़रमाया दर्वेश वह है कि जो दुनिया और आक़बत (लोक-परलोक) की रग़बत न करे (लगाव न रखे)। ये चीज़ें ऐसी नहीं हैं कि इनका दिल से ताल्लुक हो। फ़रमाया मर्दों का कार्य तहारत (पवित्रता) से बुलन्द होता है न कि कसरत काम से (काम की अधिकता से)। फ़रमाया उल्मा (विद्वान लोग) कहते हैं कि हम वारिस रसूल अल्लाह सल्ल० हैं और हम कहते हैं कि बाज मामलात (विशेषताएँ, गुण) रसूल अल्लाह सल्ल० के हम में पाये जाते हैं, क्योंकि हजरत सल्ल० ने दर्वेशी इख्तियार की थी, हमने भी दर्वेशी इख्तियार की है। जिस दिल में अल्लाह तआला के सिवा कुछ और भी है वह दिल मुर्दा है, चाहे उसमें बिलकुल इताअत (आज्ञापालन) हो। दीन को शैतान से अन्देशा नहीं है बल्कि आलिम हरोस दुनिया से (उस ज्ञानी से जिसके दिल में दुनिया की तृष्णा मौजूद हो) और जाहिद बेइल्म से। उस तपस्वी से जो अज्ञानी हो)। फ़रमाया कि चालीस साल से मैंने रोटी वगैरह कुछ नहीं पकाई, अलबत्ता मेहमानों के वास्ते और इसमें तुफ़ैली रहा हूँ उन्हीं मेहमानों की बदौलत मुझे भी भोजन मिलता रहा)। फ़रमाया कि अगर जहान (दुनिया भर) का- लुकमा (भोजन) बनाकर मेहमान के मुँह में रखा जाये, फिर भी उसका हक अदा नहीं हुआ।

फ़रमाया सबसे रोशन वह दिल है कि उसमें खुल्क (सुशीलता, सदाचार) हो और

सबसे बेहतर वह काम है जिन में अदेशा मख़लूक़ (दुनिया वालों का भय) न हो और सबसे हलाल वह लुकमा है कि जो अपनी कोशिश से हो और सबसे बेहतर वह रफीक (दोस्त) है कि उसकी जिन्दगानी अल्लाह तआला के वास्ते हो। फ़रमाया तीन चीजों की इन्तिहा (पराकाष्ठा) मुझे मालूम नहीं हुई। इन्तिहा दरजान (आध्यात्मिक दशाएँ) हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० मालूम नहीं हुई। इन्तिहा कैद सास (मन का छल, कपट, फरेब) मालूम नहीं हुई और इन्तिहाए मारिफत (अध्यात्म, ब्रह्मज्ञान) मालूम नहीं हुई। फ़रमाया आफियत (सुख, चैन) तनहाई में है और सलामती खामोशी में। फ़रमाया जिसने मुझको पहचाना और दोस्त रखा, हक ने उसको दोस्त रखा। फ़रमाया जवाँ मर्दों का खाना अल्लाह तआला की दोस्ती है। फ़रमाया जिस वक्त अल्लाह तआला ने खलाइक (लोगों) का रिज़्क किस्मत किया (जीविका वितरित को), अंदोह (गम, कष्ट) जवाँ मर्दों को दिया और उन्होंने उसका शुक्रिया अदा किया। नमाज रोजा अच्छी चीज हुए, लेकिन गुरूर (घमंड) व हसद (तृष्णा) दिल से दूर करना ज्यादा अच्छा है।

फ़रमाया बहुत रोओ और मत हंसों और बहुत खामोश रहो और बात न करो और बहुत दो और मत खाओ और बहुत जागो और मत सोओ। फ़रमाया जिस शख्स ने अल्लाह तआला के कलाम की हलावत (मिठास) व लज्जत न चखी और दुनिया से चला गया, वह गोया आराम से महरूम (वंचित) गया। फ़रमाया खलायक (दुनिया वालों) के साथ सुहबत खातिरदारी (आदर सत्कार) से रखना चाहिये, हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० के साथ मुताबेअत (उनके अनुकरण) के साथ और अल्लाह तआला के साथ पाकी (पवित्रता) से, क्योंकि वह पाक है और पाक को पसन्द रखता है। फ़रमाया अगर कोई एक आरजू (इच्छा) नफ़स की पूरी करे, उसको सैकड़ों खरखशा (लड़ाई झगड़े, कठिनाइयाँ) अल्लाह तआला के रास्ते में पैदा हो जाते हैं। फ़रमाया एक लमहा (क्षण) के वास्ते अल्लाह तआला का हो रहना खलायक जमीन व आसमान के (इस लोक और परलोक के सभी लोगों के) आमाल से बेहतर है। फ़रमाया अल्लाह तआला की दोस्ती उस शख्स के दिल में नहीं होती जिसका खल्क (दुनिया) पर शफकत (मेहरबानी, दया) नहीं होती। फ़रमाया अगर तमाम उम्र में एक मरतबा भी तूनें अल्लाह तआला को आजुर्दा (अप्रसन्न) किया हो और उसने मुआफ़

भी कर दिया हो, फिर भी तमाम बाकी उम्र इसकी हसरत (पश्चाताप) न जाये कि मालिक को मैंने क्या आजुर्दा किया।

फ़रमाया बहुत से आदमी ऐसे हैं जो जमीन पर चलते हैं और मुर्दा हैं और बहुत से आदमी ऐसे है जो जमीन के अन्दर सोते है और जिंदा हैं। फ़रमाया सत्तर साल गुजरे मैं अल्लाह तआला का हो रहा हूं, इस मुद्दत में एक मरतबा भी नफ़्स की मुराद पूरी नहीं की। फ़रमाया मुझको एक' रोज इलहाम हुआ कि जो तेरी मस्जिद में आये उसका गोश्त व पोश्त दोज़ख़ पर हराम हो (वह दोज़ख़ में नहीं जायेगा) और जो तेरी मस्जिद में दो रकअत नमाज तेरी जिंदगी में या तेरे बाद अदा करे, कयामत (प्रलय) के रोज आबिदो (इबादत करने वालों) में उठे। फ़रमाया यह मुझको गवारा है कि दुनिया से कर्जदार जाऊं और कयामत के रोज कर्ज़ ख़्वाह (कर्ज देने वाले) वहाँ मेरे दामन गीर हों (अपना कर्ज माँगे), मगर यह गवारा नहीं कि कोई सायल (माँगने वाला) मुझ से सवाल करे (माँगे) और मैं उसकी हाजत रद्द कर दूँ (उसकी जरूरत पूरी न करूँ)।

एक वार की घटना है कि हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० की पूज्य माता जी बीमार पड़ी। आप दो भाई थे। अपनी माँ की बीमारी की हालत में आप दोनों ने माँ की सेवा के लिये अपना काम इस तरह बांट लिया कि बारी-बारी से एक भाई रात को इबादत करता और दूसरा बीमार माँ की खिदमत। एक रात को आपके भाई की बारी माँ की खिदमत करने की थी मगर उसने आपसे कहा कि आज आप माँ की खिदमत करें और मैं इबादत करूंगा। आप राजी हो गए और माँ की खिदमत में लग गए और भाई इबादत खाने (पूजा गृह) में चला गया। इबादत शुरू करते ही आपके भाई को एक ग़ैबी आवाज सुनाई दी 'हमने तेरे भाई को बख्शा मोक्ष दिया) और उसके तुफ़ैल में (उसके द्वारा) तुझे भी बख्शा।" भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह तो खिदमत से इबादत को अच्छा समझना था। तभी तो उसने काम की बदली की थी। बोला, 'या अल्लाह में तेरी इबादत में हू, चाहिये तो यह था कि मेरा भाई मेरे तुफ़ैल में बख्शा जाता। आवाज आई, "तू हमारी इबादत करता है, जिसकी हमें जरूरत नहीं। तेरा भाई माँ की खिदमत में है जिसकी वह मोहताज (जरूरतमंद) है।

आपको रियाज़त (तपस्या, उपासना) के बारे में कहा जाता है कि आपने चालीस साल तक तकिये पर सर न रखा, अर्थात् सोये नहीं और इशा (रात) की वुज़ू से फज्र

(सुबह) की नमाज अदा करते रहे (अर्थात रात भर इबादत करते रहे) इतनी मुद्दत के बाद एक दिन उन्होंने तकिया मांगा तो उनके मुरीदों को ताज्जुब हुआ । आपने फ़रमाया 'आज मुझे अल्लाह की बेनियाज़ी (निस्पृहता) और रहमत का दीदार (दर्शन) हुआ है। तीस साल से सिवा अल्लाह के कोई खतरा मेरे दिल में नहीं गुजरा (काई भा ऐसा विचार जो हमें ईश्वर की याद से गाफिल करे 'खतरा' कहलाता है)। एक रात को आप नमाज पढ़ रहे थे कि एक ग़ैबी आवाज सुनी, "ऐ अबुल हसन, क्या तू चाहता है कि जो कुछ हम तेरे बारे में जानते हैं दुनिया पर जाहिर कर दें ताकि तुझ को संगसार करें (पत्थरों से मार डाले)। आपने जवाब दिया, 'ऐ अल्लाह, क्या तू चाहता है कि जो कुछ तेरी रहमत (दयालुता) के बारे में जानता हूं और तेरी कृपा से देखता हूं, दुनिया पर जाहिर कर दूँ ताकि वह तेरी परस्तिश (पूजा) तर्क कर दें (त्याग दें)। 'तब आवाज आई' ऐ अबुल हसन, न हम कहें न तू कह।'

आप प्रार्थना में कहा करते थे कि 'ऐ अल्लाह! मुझे अपनी इबादत और जुहद (इंद्रिय संयम) और इल्म और तसव्वुफ़ आध्यात्मिकता पर भरोसा नहीं है। इसलिये न मैं अपने को आबिद (इबादत करने वाला) समझता हूं, न जाहिद (इंद्रिय संयमी) और न आलिम (ज्ञानी) ख्याल करता हूं, न सूफी जानता हूं। ऐ अल्लाह, तू यकता (अद्वितीय) है और में तुझ जैसे यकता की मख़लूक़ (ऋष्टि) में से एक नाचीज शै (महत्वहीन वस्तु) हूं।" आप फ़रमाते, 'जो अल्लाह के सामने पहाड़ की तरह बेहिस (चेतनाशून्य) खड़ा नहीं हा सकता वह मर्द नहीं, बल्कि मर्द वह है जो अपने को नेस्त करके (मिटा कर) उसकी हस्ती (सत्ता) को याद करता है।

आपने फ़रमाया है कि जब तक मैं सिवा अल्लाह के दूसरों को भी देखता रहा, हरगिज़ मैंने अपने अमल में इख्लास (ईश्वर के प्रति सच्चा और निष्कपट प्रेम) नहीं पाया। लेकिन जब मैंने खल्क को तर्क (त्याग) करके सिर्फ अल्लाह की ओर देखना शुरू किया तो मेरे अमल में इखलास बगैर मेरी कोशिश के पैदा हो गया । आपने फ़रमाया 'हर सुबह आलिम (ज्ञानी) इल्म की, ज़ाहिद (इंद्रिय संयमी) जुहद (संयम) की ज्यादती अल्लाह से माँगता है लेकिन मैं हर सुबह ऐसी बात तलब करता हूं जिससे किसी मुसलमान भाई (ईश्वर भत्ता) को खुशी और मसर्रत सुख, चैन) हासिल हो। एक दिन आपने यह ग़ैबी आवाज सुनी, 'ऐ अबुल हसन, मेरे हुक्म को मानेगा तो तुझे वह

हयात (जीवन) दूँगा जिस को कभी मौत नहीं (अर्थात् तुझे शाश्वत जीवन प्रदान करुंगा) ।

आपने फ़रमाया, 'अल्लाह की तरफ जाने के रास्ते बहुत हैं। जितनी मख़लूक़ (प्राणी मात्र) अल्लाह ने पैदा की है बस समझो उतने हो रास्ते हैं। हर मख़लूक़ (प्राणी) अपनी कुव्वत (सामर्थ्य) और क़ुदरत (स्वभाव) की हद तक उसकी तरफ जाता है और मैं हर रास्ते से गया लेकिन किसी रास्ते का मैंने खाली न पाया बल्कि हर रास्ते में एक मख़लूक़ (प्राणी) को चलते देखा। मैंने दुआ की कि मुझे वह रास्ता बता जिसमें सिवा तेरे और मेरे दूसरे की गुजर न हो।' आवाज आई 'गम और अंदोह (कष्ट और शोक) का रास्ता ऐसा है जिसमें कोई जा नहीं पाता।' गम और अंदोह में शुक्र करने वाला अल्लाह का कुर्ब (समीपता) बनिस्बत (अपेक्षाकृत) औरों के जल्द हासिल कर सकता हैं। आपने फ़रमाया "अल्लाह के नजदीक मर्द वह है जिसे खल्क नामर्द ख्याल करता है और जो शख्स खल्क के नजदीक मर्द है, अल्लाह के नजदीक नामर्द है। जन्नत और दोज़ख़ न हो तो पता चले कि अल्लाह के प्यारे कितने हैं ?" आपने फ़रमाया जिस कौम में खुदा किसी को सरफराज (प्रतिष्ठित) करता है उसके तुफ़ैल में अल्लाह तमाम कौम को बख्श देता है (मोक्ष प्रदान करता है)।

आपने फ़रमाया, बंदे (भक्त) से अल्लाह तक हजार मंज़िलें हैं। इन मंज़िलों में पहली मंज़िल करामत (चमत्कार) है। जो बंदे कम हिम्मत- होते हैं वह वहाँ रह जाते है, आगे बढ़ नहीं पाते और आगे के मुकामात से वंचित रह जाते हैं। फ़रमाया, आलमे गैब (अदृश्य लोक) से जर्रे के, बराबर इश्क (प्रेम) आया और तमाम प्रेमीयों के सीने को सूँघा, किसी शख्स को प्रेमी नहीं पाया और वापस चला गया।

सा बार यात्रियों का एक दल हज को जा रहा था। रास्ता खतरनाक था। सब ने आकर आपसे अर्ज किया कि कोई ऐसी दुआ बता दीजिए कि जिसकी वजह से हमारे ऊपर सफर में काई मुसीबत न आये। उन्होने इसके जवाब में इतना हो फ़रमाया कि 'जब कोई मुसीबत आये तो तुम मुझको याद करना।' उस जमाने में भी सभी लोग विश्वासी रहे हों ऐसी बात तो न थी। लोग आपकी यह बात सुन कर मन ही मन मुस्कराए और यात्रा पर चल पड़े। राह में डाकुओं ने घेर लिया। एक शख्स को जो अधिक धनवान था और जिसे लूटने के लिये डाकू भी विशेष आतुर थे, हजरत ख्वाजा

अबुल हसन खिरकानी रहम० की वह बात स्मरण हो आई। उसने सच्चे दिल से उन्हें याद किया। तत्काल वह डाकुओं की नजर से ओझल हो गया। डाकू बड़े चकित थे। औरों को लूट कर जब डाकू चले गये, वह शख्स नजर आया, अपने माल असबाब के साथ सही सलामत जहाँ पर था वही खड़ा दिखलाई दिया लोगों ने आश्चर्य चकित होकर पूछा 'तुम कहाँ गायब हा गये थे ?' उसने जवाब दिया 'मैंने हजरत शेख अबुल हसन रहम० का याद किया और खुदा की क़ुदरत से में सब की नज़रों से गायब हो गया।' जब ये यात्री सफर से वापस हुये तो लौटते समय हजरत ख्वाजा अबुल हसन रहम० से पूछा, 'शेख यह क्या माजरा है कि हम खुदा को याद करते रहे और लूटे गये और इस शख्स ने आपको याद किया और बच गया। ' आपने फ़रमाया 'तुम लोग अल्लाह को जबान से याद करते हो और अबुल हसन दिल से। बस तुम अबुल हसन को यानी ईश्वर को सच्चे दिल से याद करने वाले उसके किसी भी बन्दे को याद करो ताकि वह तुम्हारे लिये खुदा को याद करे और तुम महफूज हो और सिर्फ जबान से हजार वार भी याद करोगे तो कुछ फायदा न होगा। आपके एक शिष्य ने लेबनान पर्वत पर जा कर कुत्बे आलम (ऐसे मुसलमान ऋषि जिनके सुपुर्द कोई बड़ा इलाका होता है) की जियारत (दर्शन करने) की आपसे इजाजत चाही तो उसे मिल गई। जब वह वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि कुत्बे आलम नमाज के लिये आने वाले हैं। शिष्य ने देखा कि इस नमाज के इमाम कुत्बे आलम और कोई नहीं खुद हजरत अबुल हसन रहम० हैं। उस पर कुछ ऐसी दहशत (आतंक) तारी हुई कि वह बेहोश हो गया। जब होश में आया तो लोगों से पूछा सच कहो कि इमाम कौन है ? लोगों ने बताया कि वह हजरत अबुल हसन रहम० ही हैं और पांचों वक्त नमाज के लिये यहाँ आते हैं। वह शिष्य यह जानता ही था कि आप खिरकान में रहते हैं, लेकिन उसे यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ है कि आप पाँचों वक्त नमाज के लिये रोज लेबनान पर्वत आते हैं। इस बात की तस्दीक (पुष्टि) के लिये वह दूसरी नमाज तक वहाँ ठहरा रहा। आप आये, नमाज के इमाम बने और जब आप जाने लगे ती शिष्य ने आपका दामन पकड़ लिया। आप चुपचाप अपने शिष्य को एक ओर ले गये और उससे कहा कि किसी पर इस बात को जाहिर न करे।

एक बार आप के घर कुछ मेहमान आये मगर आपकी बीवी ने कहा कि सिवाय

चन्द रोटियों के घर में कुछ नहीं है। बोले 'रोटियों पर एक कपड़ा डाल दो और फिर जितनी जरूरत हो उसमें से मेहमानों के सामने निकाल-निकाल कर रखती जाओ।' मेहमानों ने खूब तृप्त होकर भोजन किया। तब नौकर ने कपड़ा उठा कर देखा कुछ न था। आपने फ़रमाया 'गलती की, वरना कभी कमी न पड़ती।' चालीस साल से बैंगन खाने और एक घूँट ठंडा पानी की आपकी इच्छा थी। मगर आपने अपने नफ़्स (मन) की यह मुराद (इच्छा) पूरी न की। एक बार अपनी माँ के जोर देने पर बैगन खा लिया और यह वही दिन था कि जिस रात को उनके लड़के का सिर काटकर कोई उनके दरवाजे पर रख गया था। जब आपने यह सुना तो बुलन्द आवाज से कहा "बेशक वह हाँडी कि हमने चढाई उसमें इससे कमतर चीज न चढ़नी चाहिये।" (उनके इस कथन का यह आशय है कि खुदा की अवज्ञा करके जो हाँडी चढ़ा कर बैंगन खाया, उसके बदले लड़के का सिर कटने से कम दंड क्या हो सकता था)। आपने माँ से कहा, 'देखा, मैंने पहले ही कहा था कि मेरा मामला खुदा के साथ ऐसा आसान नहीं, मगर तुमने जिद करके बैगन खिला ही दिया।' लगता है कि यह बैगन की नाफ़रमानी (अवज्ञा) ही उनके लिये हिजाब (पर्दा) बन गई, क्योंकि आपकी बीबी ने जब कहा, 'दूर की बात तो जाने और घर का जिसे पता न हो उस शख्स को में वली (सन्त) नहीं मानती तो आपने उन्हें समझाया कि जंगल की घटना के वक्त अल्लाह ने मेरा हिजाब (पर्दा) उठा लिया था और बेटे की हत्या के वक्त में हिजाब में था। (उसी रात को आपने लोगों से कहा था कि उस अमुक जंगल में डाकू एक काफिले को लूट रहे हैं और बहुतों को जख्मी किया है और यह बात दरियाफ्त करने पर सच निकला, मगर हैरत यह कि उसी रात को एक शख्स आपके प्यारे बेटे का सर काटकर उनके दरवाजे पर रख गया, उसका आपको कुछ पता न चला। इसी जंगल वाली घटना की ओर संकेत करते हुये आपने अपनी बीबी को समझाया था कि जंगल वाली घटना के वक खुदा ने मेरा हिजाब उठा लिया था और बेटे को हत्या के वक्त मैं हिजाब में था)।

एक शख्स ने आकर आपसे कहा कि मैं हदीस पढ़ने ईराक जा रहा हूँ। आपने उससे फ़रमाया, 'क्या यहाँ हदीस पढ़ाने वाला कोई नहीं, जो ईराक जाते हो ? वह बोला, 'यहाँ हदीस जानने वाला नहीं है और वहाँ कई मशहूर हदीस जानने वाले है।' आपने फ़रमाया, 'एक तो मैं ही हूँ, यद्यपि मैं बेपढ़ा हूं, मगर अल्लाह ने सब इल्म मुझ

पर जाहिर कर दिये हैं और हदीस तो मैंने खुद हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० से पढ़ी है।' उस शख्स को आपकी बात का विश्वास न हुआ। रात को उसने स्वप्न में देखा कि हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० उससे कह रहे हैं कि जवाँ मर्द सच्ची ही बात कहते हैं। सुबह का वह आपके पास आया और हदीस पढ़ना शुरू किया। पढ़ाते समय आप कभी-कभी बीच में यह कह बैठते थे कि यह हदीस हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० ने नहीं फ़रमाई है। उस शख्स ने आपसे पूछा कि 'आपको यह कैसे मालूम हुआ ?' आपने फ़रमाया जब कि तुम हदीस पढ़ते हो मैं हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० को देखता हूँ। सही हदीस पर वह खुश होते हैं और जो हदीस सही नहीं होती उस पर उनके चेहरे पर शिकन (सिलवट) पड़ जाती है।

आपने अपने जीवन काल में अपने एक मित्र सन्त हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० से यह वादा किया था कि ईश्वर इच्छा से वे अपने उन मित्र सन्त के मौत के वक्त उनके पास आयेंगे। आपकी वफ़ात के बाद जब हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० का प्राणान्त का समय निकट आया तो उसी मरणासन्न अवस्था में वह उठ खड़े हुये और अदब से कहा 'सलामालेकुम'। उनके लड़के ने उनसे पूछा, 'आप किस को देखते हैं ?' हजरत मुहम्मद बिन हुसैन रहम० बोले, 'मैं हजरत, अबुल हसन रहम० को देखता हू। उनके साथ बहुत से बुजुर्ग हैं और मुझ से फ़रमा रहे हैं, 'मौत से न डरो।' मौत के वक्त आने का जो वादा उन्होने अपनी जिन्दगी में किया था, वह पूरा किया।'

आपने फ़रमाया, 'बाज लोग ऐसे हैं कि सत्तर साल में हकीकत से वाक़िफ़ होते हैं और बाज ऐसे हैं जो उसके फजल से दम भर में तमाम इस्रार (भेद, रहस्य) से वाकिफ होकर दुनिया से बेखबर हो जाते है। कुछ लोग काबा शरीफ का तवाफ (परिक्रमा) करते हैं मगर जवाँ मर्द वह है कि जो अल्लाह की ईकातगी (पूरे विश्वास के साथ जानने) में तवाफ करें। फ़रमाया, मुसलमान नमाज पढ़ते हैं और रोज़े रखते हैं मगर मर्द वह है जो साठ साल तक इस तरह रहे कि फ़रिश्ते कुछ न लिखें और इस मरतबे तक पहुंचने पर भी अल्लाह से शर्माए और उसके सामने आजिजी करे। फ़रमाया, ऐसे भी बन्दे हैं जो अंधेरी रात में लिहाफ़ ओढ़ कर लेटते हैं तो आसमान के चाँद और सितारे की रफ्तार उन्हें दिखाई देती है। दुनिया, की नेकी और बदी, रोजी का उतरना और फ़रिश्तों का आना-जाना वगैरह सब उन्हें मालूम रहता है।" फ़रमाया थोड़ी

ताज़ीम (शिष्टता)' बहुत इल्म, बहुत इबादत और बहुत जुहद से अफजल (श्रेष्ठ) है। राहे तलब में कदम रखने वाला बिना अल्लाह की मदद के कामयाब नहीं हो सकता। फ़रमाया 'मोमिन के लिये हर मख़लूक़ (प्राणी) एक हिजाब और दाम (फन्दा) है। मालूम नहीं मोमिन किस हिजाब और दाम में रह जाये।' फ़रमाया 'अल्लाह को जान कर नफ़्स को आफत और शैतान के फरेब से बेखबर न हो। और जब तक शैतान के फरेब में है, अल्लाह चुप है, और जब शैतान हार जाता है, अल्लाह करामत (चमत्कार) और उन्स (स्नेह) में डालता है, मगर जवाँ मर्द वह है जो किसी पर नहीं रीझता।'

किसी ने आपसे पूछा 'बन्दगी किसे कहते हैं ?' अपनी उम्र को नामुरादी (कोई भी अपनी इच्छा न रहने) में बसर करने का नाम बन्दगी है। पूछा, 'बेदारी कैसे हासिल हो ?' फ़रमाया, तमाम उम्र को एक साँस से ज्यादा तसव्वुर (ख्याल, कल्पना) न करे। पूछा, फुक्र (साधुता) का क्या निशान है ?" बोले, दिल का ऐसा रंग जाना कि उस पर कोई रंग अपना असर न जमा सके और फ़रमाया तवक्कुल (ईश्वर इच्छा पर भरोसा) इसका नाम है कि शेर, साँप नदी और आग सब तेरे लिये एक से हो जायें क्योंकि आलिमे तौहीद (ईश्वर को एक मानना) में सब एक ही हैं।' और फ़रमाया कि में पूरे दिन अल्लाह से इशारा करता हूं और उसके सिवा और कोई ख्याल दिल में नहीं आने देता। किसी ने आपकी वफ़ात के बाद आपको स्वप्न में देखा तो उसने आपसे पूछा 'आप के साथ खुदा ने क्या सलूक (व्यवहार) किया ?' आपने जवाब दिया, अल्लाह ने मेरा ऐमालनामा (कर्मों का लेखा-जोखा) मेरे हाथ में दिया तो मैंने कहा कि तू मुझे इसमें मशगूल करना चाहता है, यद्यपि मुझ से जो काम हुये उससे पहले ही तू जानता था कि मुझ से क्या काम सरजद (घटित) होंगे। यह फ़रिश्तों को दे कि वह पढ़ा करें और मुझे छुट्टी दे कि हमेशा तुझ से ही बातें करूँ।

कहा जाता है कि जब आपकी वफ़ात नजदीक हुई आपने वसीयत की कि मेरी कब्र तीस गज गहरी खोदना कि हजरत बायजीद बस्तामी रहम० की कब्र से ऊंची न हो। अतः ऐसा ही हुआ और आपका शरीरान्त बमुक़ाम खिरकान चार सौ चौबीस हिजरी में हुआ।

Abul Qasim Gurgani

8. हजरत ख्वाजा अबुल कासिम गुरगानी (रहम०)

आपकी मजार तोरबत हैदरिया में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

8. हजरत ख्वाजा अबुल कासिम गुरगानी (रहम०)

आपको दो तरफ से रूहानी फ़ैज हासिल हुआ है। एक हजरत जुन्नैद बगदादी रहम० के सिलसिले से, जिसका शिजरह तरीकत इस प्रकार है कि आप मुरीद हजरत शेख अबू उस्मान मखगजबी के और वह मुरीद हजरत जुन्नैद बगदादी रहम० के और दूसरा फ़ैज आपको हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० से हासिल हुआ। आप अपने समय के पूर्ण समर्थ सन्तों में से थे और इल्म बातिन व जाहिर दोनों में आपको कमाल हासिल था। एक बार हजरत दातागंज बख्श लाहौरी रहम० आपसे एक मसला पूछने के लिये गये तो आप पहले से हो एक सुतून (खम्भा) को मुखातिब करके उस मसला का जवाब दे रहे थे। हजरत दातागंज बख्श लाहौरी आपकी इस करामत (चमत्कार) पर हैरान रह गये। आपका जीवन बहुत ही सीधासादा था। साधारण रहन-सहन ही आपको पसन्द था। आप बहुत ही शान्त स्वभाव के थे। अधिक शिष्य बनाना और दुनिया का दिखावा आपको पसन्द नहीं था।

आपने एक किताब लिखी जिसका नाम था "फसूल अल तरीका वजन फसूल अल हकीका"।

आप सैयद अली हुजवैरी (हजरत दातागंज बक्श) लाहौर के भी गुरुदेव थे। ऐसा आपने अपनी पुस्तक कश्फ अल महजूब में लिखा है। हजरत दातागंज बक्श ने उन्हें कुतुब का खिताब दिया था। उनकी गणना उस वक्त के सबसे महान बुज़ुर्गों में होती थी। वे पहली बैठक में शिष्य को कहीं का कहीं पहुंचा देते थे।

एक बार दातागंज बक्श के मन में ये ख्याल आया कि हजरत अबुल कासिम गुरगानी को मेरी आन्तरिक हालत की जानकारी है कि नहीं। तत्काल हजरत अबुल कासिम गुरगानी ने फरमाया "दोस्त एक अकेले तुम ही नहीं यहां सभी बैठे हैं मुझे सभी की हालतों पर गौर करना है।" मैं सुनकर दंग रह गया।

सन् 450 हिजरी में आपकी वफ़ात हुई। कस्बा तोरबत हैदरिया में आपकी समाधि मौजूद है।

9. हजरत शेख अबू अली फारमदी तूसी कुदू सिर्रहू

आपकी मज़ार फ़ारमद में है

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

9. हजरत शेख अबू अली फारमदी तूसी कुद्स सिर्रहू

आपको तसव्वुफ़ (अध्यात्म विद्या) में हजरत ख्वाजा अबुल हसन खिरकानी रहम० से निस्बत हासिल है। परन्तु इस निस्बत को पूर्णता हजरत शेख अबुल कासिम गिरगानी रहम० ने कराई तथा अपना खलीफा (ब्रह्म विद्या का उत्तराधिकारी) आपको घोषित किया।

आपने फ़रमाया है कि युवावस्था के आरम्भ में मैं नीशापुर इल्म जाहिरी (सांसारिक विद्यायें) पढ़ने गया था। वहाँ मैंने सुना कि हज़रत शेख अबू सईद अबुल खैर रहम० एक महीना से आये हुये हैं और बाज फ़रमाते हैं (उपदेश देते हैं)। मैं उनकी जियारत (दर्शनों) को गया और उनकी सूरत देखकर मुझको उनसे एक इश्क। प्रेम) सा हो गया। और इस सिलसिले की मुहब्बत मेरे दिल में समा गई। एक रोज घर में बैठा था कि एकाएक मेरे दिल में हजरत शेख अबूसईद रहम० के दर्शनों का शौक बड़ी बेचैनी के साथ पैदा हुआ। यद्यपि वह समय शेख रहम० के बाहर निकलने का न था। इरादा किया कि अभी न जाऊं, मगर सब्र न हो सका।' अतः बेबसी की हालत में उठ कर बाहर गया। जब चौराहे पर पहुँचा, क्या देखता हूँ कि शेख रहम० अपने मुरदों के साथ चले आ रहे हैं। मैं उनके पीछे हो लिया। जब वह एक जगह पर पहुँचे मैं भी उनके साथ चला गया और एक कोने में जा कर इस तरह बैठ गया कि शेख रहम० की नजर मुझ पर न पड़े। वहाँ समा शुरू हो गया और शेख रहम० को वज़्द अजीम पैदा हुआ (रूहानी आनन्द की अधिकता से आत्म विस्मृति की स्थिति पैदा हो गई)। अतः उन्होंने कपड़े फाड़ डाले। जब समा से निवृत्त हो लिये, कपड़े उतारे और उनको टुकड़े-टुकड़े किया। एक आस्तीन (कुरते या अँगरखे की बाँह) अलग रखी और आवाज दी, 'अबूअली तूसी कहाँ है ?' मैंने अपने दिल में कहा 'वह तो मुझको जानते भी नहीं और देखते भी नहीं' कोई अबू अली इनका मुरीद होगा, जिसको पुकारते हैं। यह सोच कर खामोश हो गया और कुछ जवाब न दिया। शेख ने फिर पुकारा मगर मैंने जवाब न दिया। तीसरी मर्तबा जब पुकारा, किसी ने कहा तुम्हें ही शेख पुकारते हैं।

जब मैं उठ कर उनके पास गया, शेख रहम० ने वह फटा हुआ कपड़ा और आस्तीन मुझको दिया और फ़रमाया कि जाओ इसको अच्छी तरह से सुरक्षित रखना

कि तू मुझको इस आस्तीन और फटे हुये कपड़े की तरह है, यानी जो ताल्लुक (संबन्ध) इस आस्तीन और कपड़े मैं है वही मुझ में और तुझ में है। मैं वह कपड़ा लेकर बड़े अदब के साथ उनसे विदा हुआ और उस कपड़े को बहुत ही हिफाजत से रखा और मुझको उनकी खिदमत में बहुत फायदा हुआ और उनकी दया-कृपा से अनेक आध्यात्मिक अनुभूतियाँ और स्थितियाँ पैदा हुई।

जब शेख रहम० नेशाबुर से चले गये मैं हजरत इमाम अबुल कासिम कुशेरी रहम० के पास गया और जो कुछ मेरे ऊपर आध्यात्मिक अनुभव व स्थितियाँ पैदा हुई थी वह उनसे बयान की। उन्होने फ़रमाया 'ऐ लड़के अभी इल्म (सांसारिक विद्या) पढ़ो। चुनांचे मैं इल्म पढ़ना रहा, लेकिन प्रतिदिन रोशनाई (स्याही) बढ़ती जाती थी। तीन साल तक में तहसील इल्म (सांसारिक विद्या के अध्ययन में लगा रहा। एक दिन कलम दवात से निकाला तो सफेद निकला। मैंने यह घटना हजरत इमाम अबू कासिम रहम० से बतलाई। उन्होंने फ़रमाया कि अब इल्म ने तुझ से मुँह फेर लिया, अब तू भी उससे मुँह फेर ले। अतः मैं मदरसे से खानकाह में गया और हजरत इमाम अबू कासिम के उस्ताद (सतगुरु देव) की खिदमत में संलग्न हुआ। एक रोज उस्ताद अकेले गुस्लख़ाने में गये। मैंने चन्द डोल पानी के गुस्लख़ाने में डाल दिये। जब उस्ताद बाहर आये, नमाज पढ़ी फ़रमाया यह किसने गुस्लख़ाने में पानी डाला। मैंने मारे खौफ के कुछ न कहा कि शायद उनकी मर्जी के खिलाफ हो। उन्होंने फिर दरियाफ्त किया, फिर भी मैंने जवाब न दिया। तीसरी मरतबा फिर दरियाफ्त किया, तब मैंने अर्ज किया कि मैं था। उन्होंने फ़रमाया, 'ऐ अबू अली, जो कुछ कि अबू कासिम को सत्तर साल में मिला तुझको एक डोल पानी में मिल गया।' इसके बाद मुद्दतों तक उनकी खिदमत में मुजाहिदा (तपस्या) किया।

एक रोज मैं बैठा था कि कुछ ऐसी हालत पैदा हुई कि मैं उसमें गुम हो गया। यह हाल मैंने अपने उस्ताद से बयान किया। उन्होंने फ़रमाया कि 'ऐ अबू अली इससे ज्यादा मेरा सुलूक नहीं है। (साधना के मार्ग में इससे अधिक मेरी पैठ नहीं है)। मैंने दिल में ख्याल किया कि मुझको अभी और किसी दूसरे पीर (सतगुरु) की जरूरत है, जो मुझको इस स्थिति से निकाल कर आगे ले जाये। मैंने हजरत शेख अबुल कासिम गुरगानी का नाम सुना था। जब मैं उनकी खिदमत में पहुँचा, वह उस वक्त अपने

मुरीदों में बैठे हुये थे। मैंने दो रकअत तहियतुल मस्जिद (एक प्रकार की नमाज) गुज़ारी और उनके सामने आया। वह मराकबा में बैठे थे। सर उठाया और फ़रमाया 'आओ क्या बात हैं ?' मैंने सलाम किया और बैठ गया और तमाम वाकया बयान किया। शेख रहम ने फ़रमाया 'हाल इब्तदा (प्रारम्भिक स्थिति तुम्हारी अच्छी है। अगर तुम्हारी तर्बियत (शिक्षा-दीक्षा) हो तो मरतबा बुलन्द (ऊंची स्थिति) पर पहुँच जाओ। मैंने अपने दिल में जान लिया कि मेरे पीर यही हैं और वही कयाम किया (रुक गया)। उन्होंने बहुत दिनों तक मुझ से तरह-तरह के मुजाहिदा (तपस्या) और रियाजतें (अभ्यास) कराई। इसके बाद अपनी लड़की का विवाह मुझ से कर दिया। अभी शेख रहम० ने मुझ से बाज फ़रमाने (धार्मिक उपदेश देने) को नहीं कहा था। फिर एक रोज मैं शेख अबू सईद रहम० के पास गया। उन्होने फ़रमाया 'ऐ अबू अली बहुत जल्द तुझ से अहले तूस (तूस के लोगों) से बात करायेंगे।

हजरत अबू फ़ारमदी रहम का कहना है कि इस बात को बहुत दिन नहीं गुजरे थे कि शेख अबुल कासिम रहम० ने मुझ से वाज करने को फ़रमाया। आपकी वफ़ात मुकाम तूस में सर 477 हिजरी में हुई। आप मज़ार फ़रमाद में है।

10. हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी कु० सि०

आपकी मज़ार मरू (तुर्कमेनिस्तान) में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

10. हालात हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी कु॰सि॰

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ का जन्म सब 440 हिजरी में हुआ। आपको हजरत ख्वाजा अबू अली फारमदी तूसी रहम॰ से निस्बत (आत्मिक संबन्ध) हासिल है, लेकिन एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'शरा व साया ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम॰ में लिखा है कि हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ बेवास्ता हजरत शेख अबुल हसन खिरकानी रहम॰ के मुरीद हैं (अर्थात् हजरत अबुल हसन खिरकानी रहम॰ की बफात के बाद उनसे रूहानी निस्बत हासिल की ओर उनके मुरीद हुये और इस तरह की परोक्ष रूहानी निस्बत हासिल करने वाले शख्स को ही तसव्वुफ में उवैसी, कहते हैं)। और आपने खिरकः हजरत शेख अब्दुल्ला चोपनी कु॰ सि॰ से पहिना है (अर्थात् उनसे गुरु पदवी की इजाजत हासिल की है)। सूफियों में पीर अपने मुरीद को गुरु पदवी की इजाजत देते समय पहिनने का कोई वस्त्र अपने मुरीद को पहनाता है। महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में लिखा है कि आपने हजरतशेख जोऐनी के दस्त मुबारक (सौभाग्यशाली हाथों) से भी खिरकः पहिना (उनसे भी गुरु पदवी की इजाजत मिली)। आप हजरत शेख अब्दुल्ला जोऐनी और हजरत शेख हसन समनानी की सुहबत (सत्संग) में भी हाजिर रहे। आपकी कुन्नियत (उपाधि, लकब) 'अबू याकूब' है।

आपकी उम्र अट्ठारह साल की थी कि बगदाद, इस्फहान, ईराक, खुरासान समरकन्द, बुख़ारा वगैरह में आपने इल्म (सांसारिक विद्याओं का ज्ञान) हासिल किया। हदीस शरीफ का गहन अध्ययन किया और बाज कहा (धार्मिक उपदेश दिये)। बहुत से लोगों को इनसे नफा पहुँचा (लाभान्वित हुये)। इमाम याफई कु॰ सि॰ की तारीख (इतिहास की किताब) में यह लिखा है कि हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ साहबे अहवाल और साहबे करामात थे (पूर्ण सिद्ध सन्त तथा ऋद्धियों, सिद्धियों के भण्डार थे)। आपके खानकाह (आश्रम) में हमेशा विद्वानों और फकीरों की भीड़ लगी रहती थी। आपने आजुरबेजान, ईशाक और खुरासान के लोगों की तर्बियत फ़रमायी (अध्यात्म की शिक्षा दी)।

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ उन मशायख (सतगुरुओं) में से है जिनकी

सुहबत में हजरत मुहीउद्दीन शेख अबुल कादिर जीलानी रहम० हाजिर रहे हैं। एक रोज आपने हजरत ख्वाजा शेख अबुल कादिर जीलानी रहम० से, जो अभी जवान थे, फ़रमाया 'तुम वाज कहो (धार्मिक उपदेश दो)'। उन्होंने फ़रमाया कि मैं अजमी हूं (अरब का निवासी नहीं हूं), बगदाद के विद्वानों के सामने किस तरह बात करूँ। हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० ने फ़रमाया कि तुझको फिकह (इस्लामी धर्मशास्त्र) और उसके उसूल (सिद्धान्त) इख्तिलाफ मजाहिब (विभिन्न धर्मों के मतभेद) व लुगत (शब्दकोश) व तफ़सीर कुरान (कुरान की व्याख्या याद है। तुम सब तरह से वाज कहने (धार्मिक उपदेश देने) की सलाहीयत (क्षमता, योग्यता) रखते हो, तुम मेज (मंच) पर आओ और बाज कहो कि मैं तुम में वह चीज पाता हूं कि जिसकी जड़ें व शाखाएँ जमीन व आसमान में पहुंची हुई हैं। आपने गौसे आजम को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे पैर दुनिया के हर वली की गर्दन पर होंगे।

हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० का मजहब (धर्म) हनफी था। (आप हजरत इमाम अबु हनीफा के धर्म के अनुयायी थे)। आप साठ साल से अधिक मसनदे इर्शाद (गुरु पदवी) पर कायम रहे और बहुत बड़ी संख्या में लोग आपके मुरीद होकर आपसे आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। आप एक लम्बे अर्से तक मरूँ (तुर्कमेनिस्तान) में मुकीम रहे (निवास किया)। सालहा और कोहआजर में भी मुकीम रहे और आदत थी कि सिवाय जुमा (शुक्रवार) के बाहर तशरीफ न लाते।

एक रोज एक दर्वेश (साधु) हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० के पास आया और कहा कि अभी मैं हजरत शेख अहमद गज्जाली के पास था। वह दरवेशों के साथ खाना खाते थे कि उसी समय उनको गैबत (आत्म विस्मृति) हुई। इसके बाद उन्होने फ़रमाया कि मैंने रसूल अल्लाह सल्ल० को देखा कि तशरीफ लाये हैं और मेरे मुँह में लुक्मा (भोजन का कौर) रखा है। यह सुन कर हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० ने फ़रमाया, ये ख्याल हैं कि जिन से तरीकत (अध्यात्म) के अत्फाल (बच्चे) परवरिश किये जाते हैं।

कहा जाता है कि एक बार एक औरत रोती-पीटती आपके पास आई और अर्ज किया कि फिरंगी मेरे लड़के को पकड़ कर ले गये हैं। दुआ फ़रमाइये कि वह आ जाये। आपने फ़रमाया कि तू सब्र कर (धैर्य रख) और मकान को जा। लड़का तुझको घर

पर मिलेगा। वह औरत घर वापस आई तो देखा कि सचमुच वह लड़का मौजूद था। उससे हाल दरियाफ्त किया। उसने कहा अभी मैं कुस्तुन्तुनियाँ में कैद था। मेरी देख-रेख करने वाले मेरे चारों ओर थे। एकाएक एक शख्स आया जिन को मैंने कभी नहीं देखा था, और वह एक क्षण में इस जगह मुझको ले आया। वह औरत हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ के पास गयी और लड़के का किस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया कि तुझको हुक्म खुदा से ताज्जुब आता है?

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम॰ बाज फ़रमा रहे थे। दो फकीह (मुस्लिम धर्मशास्त्र के विद्वान) मौजूद थे। उन्होंने आपसे कहा कि चुप रहो तुम बिदअती हो (इस्लाम धर्म में नयी बान पैदा करने वाले हो)। हजरत ख्वाजा रहम॰ ने फ़रमाया कि तुम खामोश रहो, तुम को मौत आयी, चुनाँचे उसी जगह उसी वक्त दोनों फकीह मर गये।

एक बार मदरसा निजामियाँ बगदाद में आप वाज फ़रमा रहे थे कि इब्न सिक्का नाम के एक फकीर ने आपसे कोई मसला पूछा। आपने फ़रमाया, तू बैठ जा कि तेरे कलाम (बात) से बूए कुफ्र आती है और तेरी मौत इस्लाम धर्म पर न होगी। इस घटना के काफी दिनों बाद एक ईसाई खलीफा रोम से आया। इब्न सिक्का उसके पास गया और उसके पास उठना-बैठना शुरू किया और आखिरकार उसने ईसाई खलीफा से कहा कि में दीन इस्लाम तर्क करना (त्यागना) चाहता हूँ, और तुम्हारा धर्म स्वीकार करुंगा। चुनाँचे वह खलीफा उसको अपने साथ ले गया और रोम के बादशाह से उसकी मुलाकात कराई और वह ईसाई हो गया और इसी धर्म में रहते हुये उसकी मौत हुई।

एक बार आप मरू से हेरात गये और कुछ दिनों वहाँ रहे और मरू वापस आये। फिर फुरसत के बाद दूसरी बार हेरात गये। थोड़े दिनों वहाँ रहे। उसके बाद मरू के सफर का इरादा किया। जब हेरात से बाहर आये रास्ते में आपका शरीरान्त हो गया। जिस गाँव में आपका शरीरान्त हुआ वहाँ आपको दफन किया गया। कहते हैं कि कुछ दिनों बाद उनका एक मुरीद इब्नुल नज्जार आपकी लाश को मरू (तुर्कमेनिस्तान) में ले गया और कब्र मुबारक आपकी वहीं है, जिसकी जियारत होती है और उससे बरकत ली जाती है। जब आपके शरीरान्त का समय निकट आया, अपने मुरीदों में से

चार को दावते खल्क और इर्शाद के मर्तबा में पाया (चार को गुरु पदवी के योग्य पाया) और उन चारों को अपनी खिलाफत व नियाबत पर मुकर्रर किया। पहिले खलीफा हजरत अबदुल्ला वर्की रहम॰ दूसरे हजरत ख्वाजा हसन अन्दाकी रहम॰, तीसरे हजरत ख्वाजा अहमद यसवी रहम॰ और चौथे खलीफा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज़्दवानी रहम॰ थे।

❶⓿

11. हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु०सि०

आपकी मज़ार बुख़ारा गुज्दवान में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

11. हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु०सि०

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० के चौथे खलीफा और तबका ख्वाजगान की सबसे बुजुर्ग हस्तियों में थे और आप ही से सिलसिला अजीजान नक्शबन्द शुरू हुआ (अल्लाह तआला इस सिलसिले की रूहों को और उनके दोस्तों की रूहों को पवित्रतम् बनाये)। गाँव गुज्दवान, जो शहर बुख़ारा से 18 मील पर है, आपका जन्म स्थान और मदफन है (जहाँ आप दफन हुए)। आपके पूज्य पिताजी हजरत जमील इमाम रहम० जो हजरत इमाम मालिक रहम० की औलाद से हैं, सांसारिक और आध्यात्मिक विद्याओं में पूर्ण पारंगत थे। आपकी पूज्य माताजी रोम के बादशाहों में से एक बादशाह की औलाद से थी।

आप के पूज्य पिताजी हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम के सुहबतदार थे और हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने उनको बुशारत (शुभ सूचना) दी थी कि तेरे घर में लड़का पैदा होगा। उसका नाम अब्दुल खालिक रखना। उसको हम अपनी फर्जन्दी में लेंगे (आध्यात्मिक पुत्र के रूप में अपनी शरण में लेंगे) और अपनी रूहानी निस्बत से बहरामन्द करेंगे (सौभाग्यशाली बनायेंगे)। इसके बाद कुछ ऐसा संयोग हुआ, कि समय के फेर से हजरत अब्दुल जमील रहम० को परिवार सहित रोम से मावराउल नहर आना पड़ा और एक कस्बा गुज्दवान में, जो शहर बुख़ारा के नजदीक है, बस गये और वही हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० का शुभ जन्म हुआ और वही आपका पालन-पोषण हुआ और बड़े हुये। आप पहले शहर बुख़ारा में सांसारिक विद्याओं के अध्ययन में लगे रहे। एक रोज अपने उस्ताद हजरत इमाम सदरुद्दीन से जो उस समय के उच्च कोटि के विद्वानों में से थे, कुरान शरीफ की तफ़सीर (व्याख्या) पढ़ते थे। जब इस आयत पर पहुँचे "अदऊ रब्बकुम तजर्रअन व खीफतन इन्नहू ला यहब्बुल मोतदीन" (अपने अल्लाह से दुआ करो गिड़गिड़ाते हुए और खुफिया तौर से, बेशक वह हद से आगे बढ़ने वालों से मुहब्बत नहीं करता) अपने उस्ताद से दरियाफ्त

किया कि “यह खुफिया तरीक (गुप्त रूप से जप करना अथवा दुआ करने का ढंग) क्या है? अगर ज़ाकिर (आराधक) आवाज से जिक्र करे और जिक्र के वक्त आजा से जुम्बिश करे (शरीर के किसी अंग को हिलाये) तो दूसरा उसको जान लेता है और वह खुफिया नहीं रहता और अगर दिल में कहे तो शैतान इस हदीश के मुताबिक ‘अश्शैतानो यजरी फी उरुकै इब्न आदम मजरद्द में (शैतान आदमी की रगों में खून की तरह दौड़ता है) वाकिफ हो जाता है।’ उस्ताद ने फ़रमाया कि यह इल्मे लदुन्नी (ईश्वर दत्त ज्ञान) है। अगर ‘अल्लाह तआला को मंजूर है तो तुझे कोई अहले अल्लाह (सन्त) मिलेगा और तुझको तालीम करेगा। चुनाँचे हजरत ख्वाजा रहम० ऐसे सन्त की प्रतीक्षा में रहते। संयोग से एक जुमा (शुक्रवार) के रोज अपने बाग के दरवाजा पर बैठे थे कि एक बूढ़े बुजुर्ग आपके पास आये। आपने उनका बड़ा आदर सत्कार किया। इन बुजुर्ग ने आप से फ़रमाया ‘जवान, मैं तुझ में आसार बुजुर्गी देखता हूँ। कही तू बैअत (दीक्षित) हुआ या नहीं ?’ आप ने कहा बहुत दिन हुए ‘इसी बात की तलाश में हूँ।’ उन बुजुर्ग ने फ़रमाया ‘ऐ जवान, में खिज्र (अलैहिस्सलाम) हूँ, तुझको मैंने अपनी फरजन्दी में क़बूल किया। एक सबक तुझको बताता हूं। इसका जरूर अभ्यास करना। तुझे इस में कामयाबी हासिल होगी। फिर फ़रमाया कि हौज में गोता मार और दिल से ‘लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह’ कह।’ हजरत ख्वाजा ने इसी तरह किया और यह सबक लेकर इसके अभ्यास में मशगूल हुये और कुशाइश (सफलता और बढ़ोतरी) पायी। आप अव्वल जमाना से आखिर तक तमाम खल्क (दुनिया) के मकबूल और महबूब रहे है (सर्वप्रिय रहे हैं) और सबने आपको पूर्ण समर्थ सन्त के रूप में स्वीकार किया है।

इसके बाद जब हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० बुख़ारा में आये, हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० उनकी सुहबत में हाजिर होते रहे। यद्यपि हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० का तरीका जिक्र जहर (वाणी द्वारा आवाज करते हुए जप) करने का था लेकिन हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० को हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने जिक्र खुफिया (मौन जप) की तालीम फ़रमाया था। हज़रत ख्वाजा युसूफ हम्दानी रहम० ने इनको जिक्र जहर का हुक्म न दिया और फ़रमाया कि जिस तरह हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया है उसी तरह किये

जाओ । हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० के पीर सबक हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम थे और पीर सुहबत व खिरका हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० थे । जब हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० हजरत ख्वाजा यूसुफ हम्दानी रहम० की खिदमत से अलग हुए बहुत दिनों तक ईश आराधना, साधना और अभ्यास में गुप्त रूप से मशगूल रहे और किसी को इसकी इत्तला न थी कि आप क्या किया करते हैं।

एक रोज आप इबादतख़ाना में रो रहे थे, तो मुरीदों ने अर्ज किया आपके ऐसे श्रेष्ठ आचरण हैं और आपकी इतनी इज्जत है फिर खौफ और रोने की क्या वजह है । फ़रमाया कि जिस वक्त अल्लाह 'तआला की बेनियाजी (निस्पृहता) को ख्याल करता हूँ, नजदीक हो जाता हूँ जान कल्ब से बाहर हो जाये और इससे खौफ आता है कि शायद बिना इरादा और बिना जाने मुझ से ऐसा काम सरजद हो गया हो कि अल्लाह तआला को नापसन्द हो । जिस जगह आप बैठते ब वजह खौफ खुदा ऐसा मालूम होता था जैसे आपको कत्ल करने के वास्ते बिठलाया गया है।

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० के कलमात कुद्सिया (पवित्र उपदेशों) से कुछ कलमें नीचे दिये जा रहे हैं, जो नक्शबन्दिया सिलसिले की बुनियाद समझे जाते हैं।

1. होश दर दम - यह है कि जो दम (साँस) अन्दर से निकले, चाहिये कि हुज़ूर व आगाही से पुर हो (हर साँस में ईश्वर की ओर हमारा ध्यान एकाग्र रहे और हम इस बात से सावधान रहें कि हर साँस ईश्वर की याद में निकले) और गफलत उसमें राह न पाये । हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने फ़रमाया है कि बिनाए कार (काम का आधार) इस राह में नफ़्स (साँस) पर करना चाहिये, अर्थात् ईश्वर नाम का जप अपने बुजुर्गों (सतगुरुओं) का जिक्र, सत्संग 'मुस्तक्बिल (भविष्य) की फिक्र में भी हर नफ़्स में हुज़ूरी होनी चाहिए। (हर साँस में ध्यान ईश्वर की ओर लगा रहना चाहिए) और नफ़्स (साँस) को जाया (नष्ट) न होने देना चाहिए (अर्थात् किसी साँस में ईश्वर की याद से गाफिल न हो) और आमद रफ्त-नफ्स में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि कोई साँस गफलत से न उतरे और न निकले।

2. नजर बर कदम - चलने-फिरने में अपनी नजर नीची करके पैरों पर निगाह रखे

। इधर उधर न देखे, क्योंकि आस पास जो चीज़ें दिखलाई देती हैं उनकी तरफ ध्यान जाने से ईश्वर के ध्यान में खलल पड़ता है और विचार विचलित होते है। इसका एक अर्थ यह भी होता है कि अपनी बुराई और नेकी के कदम को देखे कि किस में कदम आगे है। अगर बुराई में कदम आगे है तो उसको पीछे हटाए और नेकी के कदम को आगे बढाये। कुछ सूफी यह भी अर्थ लगाते हैं कि सालिक (साधक) को अपने मुरशिद (सतगुरु) द्वारा निर्देशित साधना भय पर चलते हुए यह भी देखते रहना चाहिये कि वह किस मञ्जिल व मुकाम पर पहुँचा है और उससे आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में इस रशहा (उपदेश) के मानी में यह लिखा है कि "नजर वर कदम से इशारा सालिक की सुर्अत (शीघ्रता) के साथ सैर की तरफ है और वह सैर मसाफात हस्ती की (वह दूरियाँ और रुकावटें जो हमारी हस्ती को अल्लाह तआला की कुर्बत और फनाइयत नहीं हासिल करने देती उनकी) कित्अ (पृथक करना) और खुदपरस्ती (आत्म- प्रशंसा, अपने को सबसे अच्छा और बड़ा समझने का भाव) की दुश्वार (कठिन, दुरूह) घाटियाँ तै करने में हो यानी जहाँ उसकी नजर मुन्तही हो (जिस स्थिति और मुकाम तक उसके पीर ने उसको पहुंचाया हो) फिलहाल उस पर कदम रखे।

3. सफर दर वतन - मानवीय दुर्गुणों से हटते हुए दैवी गुणों की ओर बढ़ना सालिक (साधक) का सफर दरवतन है। प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में इस उपदेश की व्याख्या इस प्रकार की गयी है'- मशायख तरीकत रहम० (सूफी सन्तों) का हाल सफर और इकामत (किसी स्थान पर ठहरने) के विषय में मुख्तलिफ है। (अलग-अलग है) इनमें से कुछ लोग सफर इब्तदा (आरम्भ) में करते है और इन्तिहा (अन्त में) में मुकीम होते हैं (ठहरते है) और बाजे इब्तदा में मुकीम और इन्तिहा में मुसाफिर होते हैं और बाजे न इब्तदा में सफर करते हैं न इन्तिहा में और बाजे इब्तदा और इन्तिहा दोनों में सफर करते हैं बोर मुकीम नहीं होते और हर एक फिरका। दल, मंडली) की इन चार फिरकों से सफर और इकामत में नियत सादिक (सच्ची। और गरज (उद्देश्य) सही है और ख्वाजगान कुरुल अल्लाह अरवाहहुम (नक्शबन्दिया सिलसिले के सूफी सन्तों) का तरीका सफर और इकामत में यह है कि हिदायत हाल (रूहानियत की शिक्षा-दीक्षा लेने की स्थिति) में इस क़दर सफर करें कि आपको

किसी अजीज (सतगुरु) की खिदमत में पहुंचा दें और उसकी खिदमत में मुकीम हों (ठहर जायें) और अगर अपने मुल्क ही में किसी को इस गिरोह से पायें, सफर छोड़कर उसकी मुलाजमत (सेवा) में शताबी (शीघ्रता) करते है और सतगुरु के बतलाये हुए जप तप और साधना के अभ्यास में बहुत कोशिश करते हैं और जब इन सबके अभ्यास में महारत (निपुणता) हासिल हो जाती है तो फिर ऐसे सालिक (साधक) के लिए सफर और इकामत बराबर है। हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम॰ इस विषय में फ़रमाया करते थे कि मुक्तकी (अनुयायी) को सफर में परेशानी के सिवा कुछ हासिल नहीं। जब तालिब (जिज्ञासु) किसी अजीज की सुहबत में पहुँचे उसको उनकी सेवा में बैठना चाहिये और सिफ़त तस्कीन (स्थिरता, पायदारी) हासिल करना चाहिये और मल्कः (निपुणता) निस्बत ख्वाजगान कुद्स अल्लाह अखाहहुम का हाथ में जाना चाहिये। इसके बाद जहाँ जाये कोई रुकावट नहीं।

4. खिलवत दर अन्जुमन - हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु॰ सि॰ से पूछा गया कि तुम्हारे तरीकत की बिना (बुनियाद) किस चीज पर है। फ़रमाया 'खिलवत दर अन्जुमन' जाहिर में खल्क के साथ और बातिन में अल्लाह तआला के साथ।

5. याद कर्द - इसका अर्थ जिक्र जवानी या दिली है। हर क्षण शेख (सतगुरु द्वारा बतलाये हुये ईश्वर नाम के रूप में हृदय को लगाये रखना "यादकर्द" कहलाता है। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द रहम॰ फ़रमाते हैं कि मकसूद (उद्देश्य) जिक्र (जप) से यह है कि दिल हमेशा हजरते हक (ईश्वर) के साथ हाजिर रहे बवस्फ मुहब्बत व ताज़ीम (अर्थात् हृदय हमेशा प्रेम व आदर सहित ईश्वर के सानिध्य में रहे) मुसलमान सूफी सन्तों में जिक्र (ईश्वर नाम के जप) के कई तरीके प्रचलित है। हजरत मौलाना सादुद्दीन काशगरों कु॰ सि॰ ने फ़रमाया है कि "तरीक (ढंग) तालीम जिक्र का यह है कि अव्वल शेख दिल में कहे 'लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'। मुरीद अपने दिल को हाजिर करें और शेख के दिल को मुक़ाबिला (सामने) रखे और आँख बन्द और मुँह इस्तबा (सीधा) और जबान तालू में चस्पा और दाँत तले ऊपर रखे और साँस रोके। शेख के मुआफिक (अनुकूल) और दिल से कहे और न ज़ुबान से और साँस रोकने में ठहरे। एक दम (साँस) में तीन बार (ऊपर लिखा हुआ कलमा शरीफ) कहे इस प्रकार कि दिल को हलावत (मिठास) जिक्र का असर पहुँचे और उन्होंने

अपने वाज कलमात कुदसिया (अपने कुछ पवित्र उपदेशों) में लिखा है कि जिक्र से मकसूद यह है कि दिल हमेशा आगाह रहे हक सुबहाना से मुहब्बत और ताज़ीम के साथ।

6. बाज गश्त - इसका शाब्दिक अर्थ होता है 'लौटना या वापसी'। भावार्थ इसका यह है कि साधक जब अपने गुरु के द्वारा बतलाई हुई साधना में लगा रहता है तो उसे बीच-बीच में ऐसे आध्यात्मिक अनुभव होते हैं और ऐसी हालतें पैदा होती हैं कि जिनके कारण साधक के हृदय में अहंकार उत्पन्न होने का भय रहता है और उस अहंकार के आते ही उसको अपने साधना पथ से विचलित होने तथा उसका अधोपतन होने में देर नहीं लगती। अतः इस सिलसिले के महापुरुषों का यह फरमाना है कि किसी भी प्रकार की साधना (जप, ध्यान या किसी अभ्यास) में लगे हुये साधक को साधना करते हुये बीच-बीच में रुककर ईश्वर से दीनता पूर्वक गिड़गिड़ाते हुये यह प्रार्थना करते रहना चाहिये कि 'हे ईश्वर तू ही मेरा लक्ष्य है, तेरी रिज़ा (प्रसन्नता) में ही मैं राजी रहना चाहना हूँ'।

7. निगाहदाश्त - इसका आशय यह है कि साधक को हमेशा अपने मन की निगरानी और चौकसी रखनी चाहिये कि उसमें सिवा ईश्वर की याद के और कोई भी खतरा (कोई भी ऐसा विचार जो हमें ईश्वर की याद से गाफिल करे) वे न उत्पन्न होने पाये। हजरत ख्वाजा नक्शबन्द रहम॰ फ़रमाते हैं कि सालिक को मन में कोई भी खतरा उत्पन्न होते ही उसे रोक देना चाहिये, क्योंकि जब वह मन में ठहर कर उस पर असर कर जायेगा तो उसका दूर करना बहुत मुश्किल होगा। इस सिलसिले के महापुरुषों का फरमाना है कि 'निगाहदाश्त' का अभ्यास धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिये। पहले कुछ मिनट, फिर कुछ घण्टे यह निगरानी रखनी चाहिये कि हमारे मन में सिवा ईश्वर के और कोई सांसारिक विचार उत्पन्न ही न होने पाये।

8. याददाश्त - जब साधक ईश्वर के नाम-जप में इस प्रकार से अभ्यस्त हो जाये कि बिना प्रयत्न व इरादा के अपने आप हृदय में ईश्वर का नाम जप होता रहे और बगैर अलफाज (शब्दों) व ख्याल के बराबर ध्यान ईश्वर की ओर लगा रहे तो ऐसी हालत को 'याद दाश्त' कहते हैं। हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम॰ ने चार कलमा (याद कर्द, बाजगश्त, निगाहदाश्त ओर याददश्त) की व्याख्या इस प्रकार की है - याद कर्द

का अर्थ यह है कि जिक्र अल्लाह में मुबालगा किया जाये (अत्यधिक अभ्यास किया जाये) और 'बाजगश्त' का आशय रुजूअ बहक सुबहाना से। मन को ईश्वर की ओर आकृष्ट करने से इस तौर पर कि हर बार कलमा तईयबः कहे ('लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' कलमा तईयबः कहा जाता है) और उसके पीछे दिन में सोचे कि 'अल्लाह मकसूद मेरा तू है' और निगाहदाश्त' इस रुजूअ (मन को इस प्रकार ईश्वर की और आकृष्ट करने की प्रवृत्ति) की मुहाफजत (निगरानी) से बेगुफतन जवान है (बगैर जवान हिलाये हुये है) और याददाश्त' का मतलब 'निगाहदाश्त' के रुसूख (महारत, पूर्ण निपुणता से है)'।

9. बकूफ जमानी - हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सें० ने फ़रमाया है कि सालिक की 'बकूफे जमानी' यह है कि बन्दा अपने हाल का वाकिफ कार (जानने वाला) हर वक्त हो कि उसकी सिफ़त और हाल क्या है, मोज़िबे शुक्र है या मोज़िबे उज्र (ईश्वर को धन्यवाद देने योग्य है या तौबा करने के लायक है)। और हजरत मौलाना याकूब चर्खी कु० सि० ने फ़रमाया है कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने मुझे कब्ज में (कभी-कभी साधना पथ में जब मन आराधना, जप व सतगुरु द्वारा बतलाये हुये किसी साधना में एकाग्र नहीं हो पता और एक अजीब उलझन गफलत सुस्ती और तबियत उचाट सी रहती है इस रूहानी हालत को कब्ज कहते हैं और ऐसी दशा में) हुक्म इस्तगफार (तौबा) और बस्त में (ऐसी रूहानी हालत में जब मन में ईश्वर और गुरु के प्रति प्रेम भक्ति का भावावेश उमड़ता रहता है और जप, साधना आदि के अभ्यास में खूब मन लगता है। हुक्म शुक्र फ़रमाया कि रिआयत (ख्याल, ध्यान) उस हाल की बकूफे जमानी है। (बकूफे जमाना से ही अर्थात् हर वक्त अपनी आन्तरिक स्थिति की निगरानी करते रहने से ही कब्ज बस्त की हालतें पैदा होने पर साधक फौरन उन हालतों के मुताबिक कब्ज में तौबा और बस्त में अल्लाह का शुक्र करता है)।

10. बफूफे अददी - इसका मतलब यह है कि साधक जप करते समय इस बात का ध्यान रखे कि जब ईश्वर का जप करे तो ताक संख्या में करे (अर्थात् वह संख्या जो दो से पूरी न कटे जैसे तान, पाँच, सात, नौ, इक्कीस आदि) इस सिलसिले के सन्तों का फरमाना है कि ऐसा करने में ईश्वर के साथ मुनासवत (लगाव। है, क्योंकि हजरत पैगम्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया है-'खुदा एक है और इकाई को पसन्द करता है।' हजरत

ख्वाजा बहाउद्दीन कु० सि० ने फ़रमाया है कि रिआयत अदद (संख्या का ध्यान रखना) जिक्र दिल में खतरात मुतफर्रका के (विभिन्न प्रकार के वे सांसारिक विचार जो साधक को ईश्वर की याद से विचलित करते हैं उनके) दूर करने के लिये है। हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार कु० सि० ने फ़रमाया है कि जिक्र में बहुत दफा (कई बार) कहना शर्त नहीं है, चाहिये कि जो कुछ कहे बकूफ और हुजूर से हो (ईश्वर की ओर ध्यान लगा रहे और अपनी आन्तरिक हालत से वाकिफ अर्थात् अवगत रहे।)

11. बकूफ क़ल्बी - इसके दो अर्थ होते हैं। एक यह है कि ज़ाकिर का (जप करने वाले का) दिल हक सुबहाना से आगाह रहे और यह कलमा 'याददाश्त' की तरह है। हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहम० ने अपने कुछ उपदेशों में लिखा है कि बकूफ क़ल्बी इबारत है आगाही और दिल की हाजिरी बजनाब हक सुबहाना से इस तरह कि दिल को कोई चाहत (इच्छा) हक सुबहाना के सिवा न हो और इसी मानी (अर्थ) में दूसरी जगह फ़रमाया है कि जिक्र करते वक्त इर्तिबात (सानिध्य) और आग ही मजकूर (अल्लाह) के साथ शर्त है और इस आगाही को शुहूद (साक्षात्कार) वसूल (मिलन), वुज़ूद (उपस्थिति) और बकूफ क़ल्बी कहते हैं। इस कलमा के दूसरे अर्थ यह होते हैं ज़ाकिर दिल से वाकिफ हो यानी जिक्र (जप) के समय शरीर के उस स्थूल अंग को जिसे हृदय बहते हैं उसे जिक्र के साथ मशगूल (तल्लीन) और गोया करे (हृदय को ईश्वर-नाम के जप में तल्लीन करते हुये उसी से जाप कराये) और उसे मोहलत न दे कि जिक्र और उसके मानी से गाफिल हो।

किसी दर्वेश ने हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० से दरियाफ्त किया कि आलिम (ज्ञानी) की अकूबत (यातना) क्या है ?' फ़रमाया, 'जिस वक्त मर्द आलिम । ज्ञानी पुरुष) तलब आख़िरत (परलोक की इच्छा) से रहकर (उसको छोड़कर) दुनिया में मशगूल (तल्लीन) होता है, अल्लाह तआला उसको दुनिया में यह अकूबत (यातना) देता है कि हलावत (मिठास) व लज्जत व इताअत (खुदा का हुक्म मानना) इससे ले लेता है और वह परेशान होकर नेकियों से महरूम (वंचित) रह जाता है, उस वक्त उसको अकूबत आख़िरत में मुब्तला करता है।

किसी ने आपसे दरियाफ्त किया कि 'नमाज में खुशूअ (विनम्रता) किस को कहते है " फ़रमाया कि नमाज़ी को इस क़दर खौफ व खशोयतुल्लाह (अल्लाह से खौफ) हो

कि अगर उसको तीर भी मारे तो उसको खबर न हो। फ़रमाया तीन काम हैं जो इनमें से एक भी दोस्त रखेगा दोज़ख़ (नरक) उसके रगे गर्दन से भी नजदीक हो जायेगा। अव्वल उम्दा खाना, दोयम अमीरों की सुहबत में बैठना, तीसरे उम्दा पोशाक पहिनना क्योंकि गालिब यह है कि ये तीनों काम हवाए नफ़्स (मन की इच्छा) से होते है और जो शख्स ताबे (अधीन) हवाए नफ़्स हुआ, उसकी जगह दोज़ख़ हैं।

आपने फ़रमाया कि एक रोज मैं अपने कोठे पर मशगूल इबादत (ईश आराधना में तल्लीन) था। मेरे पड़ोस में एक औरत रहा करती थी। वह अपने खाविन्द (पति) से झगड़ रही थी और कह रही थी कि ‘इस क़दर मुद्दत गुजरी कि मैं तेरे घर में आई। भूख और प्यास में सब्र किया। गर्मी-सर्दी की तकलीफ बरदाश्त की। जो तूनें दिया उस पर कनाअत की (संतोष) किया, ज्यादा का नाम न लिया, तेरी इज्जत आबरू की हिफाजत की। ये सब बातें सिर्फ इस वास्ते सही कि तू मेरा रहे और मैं तेरी रहूँ। लेकिन अगर तेरा दूसरी तरफ ख्याल होगा तो मेरा हाथ और हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० का दामन (अंचल) होगा। जब तक मैं अपना इनसाफ़ न करा लुंगी, उनका दामन न छोडुंगी।'

हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० फ़रमाते हैं कि मेरे दिल पर उस औरत की बात का बहुत असर हुआ और ख्याल आया कि औरत मख़लूक़ (दुनिया) को मुहब्बत में इस क़दर साबित कदम है, उस के वास्ते तमाम तकलीफ़ें बरदाश्त की, यह बात सालिके राह (अध्यात्म पथ के साधक) को एक सबक होना चाहिये। चुनाँचे मैंने ख्याल किया तो कुरान शरीफ में भी इसकी शहादत (प्रमाण) मिली:-

'इन्नल्लाहा लायगतेरो अईयुस्त्रेका बेही व यग तेरो मादुना जालिक'

(यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तमाम गुनाह तू लादे और शिर्क (अल्लाह के सिवा दूसरे की आराधना) न हो तो सब बख्श दूँगा और अगर सिर्फ मासिबा (अल्लाह के अलावा किसी) को बातिन में राह देगा तो हमारी रहमत से महरूम (वंचित) होगा।

एक रोज हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक की मौजूदगी में किसी दर्वेश के मुंह में निकला कि अगर मुझको बहिश्त व दोज़ख़ में मुखय्यिर करें (दान के रूप में प्रदान किये जायें), तो मैं, दोज़ख़ इख्तियार करूँ क्योंकि मैंने कभी नफ़्स की मुराद पूरी नहीं

की है और बहिश्त मुराद (आशय) नफ़्स से है और दोज़ख़ मुराद महबूब है, पस मुराद महबूब इख्तियार करूँ। यह बात सुन कर आपने फ़रमाया कि बन्दा (भक्त) को इख्तियार से क्या मतलब, जिस जगह भेजे वहाँ जाये, जिस जगह रखे वहाँ रहे। बन्दगी का तरीका तो यही है।

कहा जाता है कि एक रोज आप मय मजमए कसीर (बहुत से लोगों के साथ) बैठ हुये थे कि अचानक एक जवान जाहिदाना लिबास (तपस्वी के वस्त्र) पहने हुये, जानमाज (नमाज पढ़ने की छोटी दरी) कन्धे पर डाले हुये आया और एक गोशे (कोने) में बैठ गया। आपने उसे देखा और पहिचाना। थोड़ी देर बाद वह जवान उठा और कहा 'हदीस शरीफ' में आया है-'इत्तक फिरासतल मोमिन फ इन्नहूयन जुरे व नूरिल्लाह 'मोमिन' (ईश्वरभक्त की फिरासत (चतुराई, प्रवीणता) से डरो इसलिये कि वह अल्लाह के नूर से देखता है) इसका क्या मतलब है। आपने फ़रमाया कि इसका यह मतलब है कि अपना जुन्नार (जनेऊ) तोड़ डाल और ईमान क़बूल कर (इस्लाम धर्म स्वीकार कर)। जवान ने कहा 'खुदा न करे, मेरे क्यों जुन्नार होता है ?' आपने ख़ादिम को इशारा किया। ख़ादिम के उसके कपड़े उतार कर देखा तो जुन्नार मौजूद था। जवान ने तत्काल तौबा की और ईमान क़बूल किया।

कहा जाता है कि एक औरत मज्जूवा (फकीर स्त्री जो दुनिया वालों की निगाह में बावली हो, परन्तु ब्रह्मलीन हो) बरहना (नंगी) तमाम गली कूचे में फिरा करती थी। लोगों ने इससे कहा 'तू कपड़े क्यों नहीं पहनती ?' उसने जवाब दिया 'शहर में मर्द कौन है जिससे पर्दा करूँ। एक रोज सुबह नानबाई की दूकान पर गयी। तन्दूर गर्म था। उसमें बैठी और कहा कि इसका मुँह बन्द करो कि अभी एक मर्द इस शहर में आया है इससे अपने तई छिपाती हूँ। थोड़ी देर में तन्दूर का मुँह खोल दिया। दरियाफ्त किया कि क्या हाल है ? उसने कहा कपड़े लाओ कि पहनूँ।' चुनाँचे कपड़े लाये गये। वह तन्दूर से निकली। तन्दूर की आग से उसके एक बाल में भी नुकसान नहीं आया था। सब हैरान रह गये। तब लोगों को मालूम हुआ कि वह वलिय (स्त्री महात्मा है) उसने कपड़े पहने। सब ने कसम देकर पूछा 'सच बता वह मर्द कौन है जिससे तू पर्दा करती है ?' कहा 'मेरे साथ आओ, मैं उनकी जियारत (दर्शनों) को जाती हूँ और हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक रहम० के पास गयी। वह उसी वक्त गुज्दवान से

दाखिल बुख़ारा हुये थे। हजरत ख्वाजा रहम० उसे देखकर उसकी ताज़ीम (आदर) को उठे और आपस में कुछ बातें हुई कि वे ही समझी या हजरत ख्वाजा रहम० समझे

एक मरतबा हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० मय मुरीदों के हज बैतुल्लाह (काबा शरीफ) को जा रहे थे। रास्ते में सब को जोर की प्यास लगी। यकायक एक कुएँ पर पहुँचे, मगर वहाँ रस्सी व डोल न थी। निहायत मायूसी हुई। हजरत ख्वाजा रहम० ने फ़रमाया कि मैं तो नमाज पढ़ता हूँ, तुम पानी पिओ और वुज़ू करो। मुरीदो ने जो यह सुना, समझ गये कि इसमें कुछ भेद है और कुछ पानी की उम्मीद पड़ी फिर कुएँ पर गये, देखा तो हजरत ख्वाजा रहम० की बरकत से कुआँ मुँह तक भर गया था। सबने पानी पिया और वुज़ू किया। एक शख्स ने एक बरतन पानी से भर लिया, फौरन पानी कुएँ की तह पर पहुँच गया। यह बात किसी ने हजरत ख्वाजा रहम० से अर्ज की। आपने फ़रमाया कि यारों ने अल्लाह तआला पर भरोसा न किया, वरना कयामत तक पानी तह पर न पहुँचता।

कहा जाता है कि जब हजरत ख्वाजा रहम० का अन्त समय निकट हुआ, मुरीद व फरजन्द वहाँ मौजूद थे। हजरत ने आँखें खोलकर फ़रमाया कि 'ऐ अजीजों! खुशखबरी है कि अल्लाह तआला मुझ से राजी है और बुशारत (शुभ सूचना) रिज़ा (प्रसन्नता को) दी है, तमाम असहाब रोने लगे और अर्ज किया कि हमारे वास्ते भी दुआ फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि तुम को भी बुशारत हो कि अल्लाह तआला ने इलहाम फ़रमाया है (ईश्वर की ओर से यह प्रेरणा हुई है) कि जो शख्स इस तरीके पर (नक्शबन्दिया सिलसिले को तालीम पर) इस्तिकामत रखेगा (अटल रहेगा) मैं उस पर रहमत करुंगा और उसको बख्शूँगा। कोशिश करो कि इस तरीके से अलहदा न हो और कायम रहीं। थोड़ी देर के बाद एक आवाज आई 'ऐ इतमीनान रखने वाले नफ़्स अपने खुदा की तरफ पलट जा वह तुझ से राजी है और तेरे लिये सवाब पसन्द किया है।'

असहाब ने जो ख्याल किया तो हजरत ख्वाजा रहम० का शरीरान्त हो गया। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजऊम' (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपकी वफ़ात बारह रबीउल अव्वल पाँच सौ पचहत्तर हिजरी में हुई। बाद वफ़ात

आपको किसी ने ख्वाब में देखा कि आप जेरअर्श (सब आसमानों के ऊपर के स्थान में) एक तख्त नूरानी पर बैठे हैं और मलाइक (फ़रिश्ते, देवता गण) आपके गिर्द जमा हैं और अल्लाह तआला का सलाम पहुँचाते हैं।

12. हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ रेवगरी (रहम०)

आपकी मज़ार बुख़ारा रेवगर में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

12. हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ रेवगरी (रहम॰)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ रेवगरी कु॰ सि॰ आजम (महान्) खुला हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी से थे। आप हजरत ख्वाजा रहम॰ के जीवन काल में बराबर उनकी खिदमत में हाजिर रहे और फायदा बातिनी हासिल किया और हजरत को वफ़ात के बाद मसनदे इरशाद (सतगुरु की पदवी) पर बैठ कर हिदायत खल्क (लोगों को अध्यात्म की शिक्षा देने) में लगे रहे। इल्म (सांसारिक विद्या) व इल्म जुहद व तक्वा (इन्द्रिय निग्रह, व आत्मसंयम की शिक्षा) व मताबअत (अनुकरण) सुन्नत में शान आली रखते थे।

वे सत्य के शोधक थे। वे ज्ञान के सूर्य थे जिन्होंने उस समय के आसमान को रोशन किया। उनका नाम उस समय में अपने कमाल पर पहुंचा।

आप रेवगर में पैदा हुए जो गुज्दवान से एक किलोमीटर दूर है। आप अपने गुरु हजरत अब्दुल खालिक गुज्दवानी के दरवाजे पर पहुंचे और अत्यधिक सेवा के उपरांत गुरु पदवी प्राप्त की। फिर पूर्णता को प्राप्त किया। उस स्थान के व अन्य लोगों को भी तकमीली के दर्जे पर पहुंचाया।

उनके शिष्यों ने उनकी कुछ बातें व उपदेश इस तरह लिखे हैं:

- दिल तीन तरह के होते हैं पहाड़ की तरह जो हिलते ही नहीं, पेड़ की तरह जो थोड़े हिल पाते हैं, व कुछ पंख की तरह जो कि जल्दी मोडें जा सकते हैं।
- अपने ईमान की रक्षा के लिए दुनिया का साथ छोड़ना चाहिये।
- हे ईश्वर मुझे दंड दे पर अपने से दूर न कर।

आपकी लिखी पुस्तक "आरिफनामा" के कुछ पन्ने पाकिस्तान में कहीं मिले जो आध्यात्म ज्ञान की अवस्थाओं से भरपूर थे। पूरी पुस्तक जो सम्भवतः हजार पृष्ठों की थी, प्राप्त न हो सकी।

आपकी वफ़ात गुरः सब्बाल छै सौ सोलह हिजरी में हुई। आपका मदफन रेवगर है, जो शहर बुख़ारा से अठारह मील दूर है।

❶❷

13. हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु॰ सि॰

आपकी मज़ार बुख़ारा अन्जीर फगनी में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

13. हालात हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु॰ सि॰

हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी (रहम॰) हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ रेवगरी रहम॰ के काजल (श्रेष्ठ) व अक्मल (पूर्ण समर्थ) खलीफा. में से थे। जब हजरत ख्वाजा आरिफ़ रहम॰ का आखिर वक्त आया तो आपने इनको अपना खलीफा बनाया और दावते खल्क (लोगों को रूहानियत की तालीम देने) की इजाजत दी। आपकी जन्मभूमि एक मौजा अन्जीर फगनी है जो बुख़ारा के नजदीक स्थित हे। आप ताशकन्द में मुकीम रहे (निवास किया) और वहाँ तरवियत व हिदायत खल्क फ़रमाया करते थे। आपने एक मस्लहत (भेद, राज) की वजह से तालिबान (जिज्ञासुओं) को जिक्र जहर तालीम किया। अव्वल शख्स कि जिन्होंने जिक्र जहर (जिक्र जहर-ईश्वर के उस नाम जप को कहते हैं जो वाणी द्वारा आवाज के साथ किया जाता है), शुरू किया हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगवी रहम॰ थे, वरना ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम॰ व ख्वाजा रेवगरी रहम॰ जिक्र जहर नहीं करते थे। हजरत ख्वाजा कबीर कु॰ सि॰ ने जो हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम॰ के फरजन्द व खलीफा थे हजरत ख्वाजा महमूद रहम॰ पर एतराज किया (आपत्ति की) कि अपने सिलसिले के पीराने कबार (पुराने सतगुरुजनों) के तरीका के खिलाफ जिक्र जहर क्यों इख्तियार किया। उन्होने जवाब दिया कि मुझको हजरत पीर ने आखिर समय में अन्तिम साँस (अथवा शरीरान्त के समय) फ़रमाया था कि जिक्र जहर करो। इस विषय पर नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'हालात हजरत मशायख नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया' के लेखक महोदय ने इस ग्रन्थ में अपने विचार प्रकट करते हुये यह फ़रमाया कि 'मेरे ख्याल में यह बात आती है कि आखिर नफ़्स में हजरत ख्वाजा आरिफ़ रहम॰ का जिक्र जहर फरमाना ऐसा था जैसा दम-आखिर पर मरीज के पास बुलन्द आवाज के साथ जिक्र कलमा याद दिलाने के वास्ते कहा करते हैं। इससे हजरत ख्वाजा महमूद रहम॰ इजाजत जिक्र जहर समझे। (पर इस मसले की असल हकीकत क्या है, इसे अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।)

एक बार मौलाना हाफिजुद्दीन ने जो उस समय बड़े विद्वानों में से थे और हजरत मुहम्मद पारसा रहम॰ के जद्दे आला (पितामह) से थे, इमामों और विद्वानों की बड़ी जमात (सभा) के बीच उस्तादुलउल्मा शमसुल अइम्मः हलवाई रहम॰ के इशारा (संकेत) पर हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी कु॰ सि॰ से सवाल किया कि आप जिक्र जहर किस सबब (कारण) से कहते हैं। हजरत ख्वाजा ने फ़रमाया कि सोता हुआ जागे और गफलत से होशियार हो और रास्ते की तरफ (अध्यात्म मार्ग की ओर) रूख करे और शरीअत (धर्मशास्त्र) और तरीकत (अध्यात्म) के इस्तिकामत (दृढ़ता) पर आये और हकीकत तौबा और इनाबत (बुरे कर्मों को त्याग कर ईश्वर की ओर उन्मुख होने) की तरफ रबत (इच्छा) करे जो असल (सार तत्व) हमाम खैरात (कुशलताओं) और सआदत (कल्याण) की है। मौलाना हाफिजुद्दीन ने कहा नियत आपकी सही है और आपको यह शगल (जप का अभ्यास) हलाल (उचित) है। फिर मौलाना ने हजरत ख्वाजा महमूद रहम॰ से निवेदन किया कि जिक्र जहर की कुछ हद (सीमा) फ़रमाइये, जिससे हकीकत (सत्य) व मजाज (असत्य) में तथा आशनाँ (ईश्वर भक्त व बेगाना (दुनियादार जो ईश्वर से गाफिल हो) में पहिचान की जा सके। हजरत ख्वाजा रहम॰ ने फ़रमाया कि जिक्र ज़हर उस शख्स को मुसल्लम (सर्वमान्य) है जिसकी जबान दरोग (झूठ) व गीबत (चुगली से पाक हो, हलक (कंठ) लुक्कमए सुबहा व हराम (अनुचित कमाई से प्राप्त भोजन) से साफ हो। उसका दिल रिया से (पाखण्ड) से सृजना (पवित्र) हो और उसका सर तवज्जेह मासिबा (ईश्वर के अलावा सभी के ध्यान) से खाली हो। हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम॰ जो हजरत ख्वाजा महमूद अंजीर फगनवी कु॰ सि॰ के खलीफा थे, ने फ़रमाया है कि हजरत ख्वाजा महमूद रहम॰ के जमाने में एक दर्वेश ने एक बार हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखा। उनसे पूछा कि इस जमाने में मशायख (पीरों) में से कौन है, जिनकी इक्तिदा की जाये (पैरवी अथवा अनुकरण किया जाये)। उन्होने फ़रमाया कि 'ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम॰।' हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम॰ के कुछ असहाब ने फ़रमाया है कि जिस दर्वेश ने हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखा वह खुद हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम॰ थे, मगर जाहिर नहीं करते थे कि मैंने हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम को देखा है।

कहते हैं एक रोज हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहम० हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहम० के असहाय के साथ जिक्र (जप) में मशगूल थे। यकायक एक सफेद रंग का मुर्ग हवा में उड़ता हुआ उनके ऊपर से गुजरा ओर बेजबान फसीह (बहुत मँजी हुई सरल और सुन्दर भाषा में) कहा 'ऐ अली। मरदाना हो और अपने काम मैं मशगूल रह' असहाब को इस मुर्ग के देखने और उस बात को सुनने में ऐसी कैफियत पैदा हुई कि सभी बेहोश हो गये। जब होश आया पूछा कि यह क्या था जो हमने देखा और सुना। हजरत ख्वाजा रहम० ने फ़रमाया कि यह मुर्ग रूह (आत्मा) हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम० की है। अल्लाह तआला ने इनको कूवत दी है कि जिस मख़लूक़ (प्राणी मात्र) में चाहे मुतशक्किल हो जाये (उसकी शक्ल इख्तियार कर लें)। इस वक हजरत ख्वाजा दहकान क़ल्बी रहम० का, जो हजरत ख्वाजा औलिया कबीर के अव्वल खलीफा हैं, वक्त आखिर था (अन्त समय निकट था)। उन्होने दुआ की थी कि या अल्लाह मेरे आखिर वक्त में मेरी मदद को कोई अपना दोस्त भेजना कि उसकी बरकत से ईमान सलामत ले जाऊं। चुनाँचे बइशारा रब्बानी (ईश्वर की ओर से सकेत मिलने पर) हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहम० की रूह मुबारक हजरत दहकान क़ल्बी रहम० के वक्त, आखिर पर पहुँची थी। चूँकि इनका खातिमा बखैर हो गया, अब वापस जा रहे है। चूँकि मेरे हाल पर उनकी बड़ी मुहब्बत व इनायत थी, इस राह से गुजरते हुये तशरीफ ले गये।

हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहम० का इन्तकाल सात सौ पन्द्रह हिजरा में हुआ। आपका मदफन मौजा अन्जीर फगनी में है।

❶❸

14. हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु अलैहि

आपकी मज़ार बुख़ारा रामतैन में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

14. हालात हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत ख्वाजा अली रामतैनी रहमतुल्लाहु हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु के खलीफा हैं। जिस वक्त हजरत ख्वाजा अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु का वक्त आखिर नजदीक पहुँचा आपने हजरत ख्वाजा अली रामतैनी को अपनी खिलाफत सुपुर्द की (उत्तराधिकारी बनाया) और अपने सभी असहाब को उनकी पैरवी के लिए हुक्म फ़रमाया। आप खिज्र अलैहिस्सलाम के सुहबतदार थे और उन्हीं के इशारे से हजरत ख्वाजा महमूद अन्जीर फगनवी रहमतुल्लाहु के मुरीद हुए थे। आपका मस्कन (रहने का स्थान) कस्बा रामतीन में था लेकिन कुछ समय के फेर से शहर बाबरू में आ गये और वहां मुद्दत तक इर्शाद खल्क (लोगों को अध्यात्म की शिक्षा देने) में मशगूल रहे। मगर वहाँ भी चैन न मिला, अतः शहर ख्वारजम आ गये और वहां भी रियाजत व मुजाहिदा (साधना के अभ्यास व तपस्या) में मशगूल रहे। इस जगह भी आपके बहुत से मुरीद व मुहिब्ब (प्रेमी) जमा हो गये। अहले तरीकत (अध्यात्म पथ के पथिक) आपको हजरत 'अजीजाँ' कहते थे क्योंकि आप अपने लिए फ़रमाया करते 'अजीजाँ' इस तरह कहते हैं।

हजरत उल्माउद्दौला समनानी रहमतुल्लाहु आपके हम अस (समकालीन) थे। उन्होंने किसी दर्वेश की जवानी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु को कहला कर भेजा कि 'आप और मैं दोनों मेहमानों की खिदमत करते हैं। आप खाने में तकल्लुफ नहीं करते (तकलीफ नहीं उठाते) और मैं तकल्लुफ करता हूँ (यानी अच्छा-अच्छा भोजन मेहमानों को खिलाता हूँ)। मगर आपको सब तारीफ करते हैं और मेरी शिकायत करते हैं, इसका क्या सबब है? हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने जवाब दिया कि खिदमत करने वाले और (खिदमत करके) एहसान जताने वाले बहुत हैं और खिदमत करने वाले व (खिदमत करने का सुअवसर मिलने के लिए) एहसानमन्द होने वाले बहुत कम हैं। पस कोशिश करो कि ख़िदमती एहसान मानने वाले बनो ताकि तुम से कोई गिला न करे (उलाहना न दे)। दूसरा मसला यह है कि 'मैंने सुना है कि आपकी तरबियत

हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने की है। यह क्या बात है? आपने जवाब दिया कि जो अल्लाह तआला के आशिक होते हैं खिज्र अलैहिस्सलाम उनके आशिक होते है। तीसरी बात यह है कि हमने सुना है कि आप जिक्र जहर करते हैं इसकी क्या वजह है? आपने जवाब दिया कि मैंने सुना है कि 'आप जिक्र खुफिया करते हैं, आपका भी जिक्र जहर हो गया।

हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु नस्साजी (कपड़े बुनने का काम) किया करते थे। आपसे किसी ने दरियाफ्त किया 'ईमान किसे कहते हैं ?' आपने अपने पेशे के मुनासिब फ़रमाया 'कुन्दन व पैबस्तन' यानी तोड़ना और जोड़ना यानी खल्क (दुनिया) से तोड़ना और खालिक (अल्लाह तआला) से जोड़ना। आपने फ़रमाया अगर कोई हजरत अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहमतुल्लाहु के फरजिन्दों में से एक भी होता, मन्सूर हरगिज सूली पर न चढ़ाया जाता यानी अगर हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहमतुल्लाहु के फरजिन्दों के मानवी (शिष्यों) में से एक भी जिन्दा होता मन्सूर को तरबियत (आध्यात्मिक तालीम) के साथ उस मुकाम से जबकि उसने कहा था, 'अनल हक' (अहम् ब्रह्मास्मि) आगे बढ़ा देता।

फ़रमाया कि जो एक जगह बैठे और खल्क को खुदा की तरफ बुलाये, चाहिये कि वह जानवर पालने वाले की तरह हो कि हर एक जानवर का पोटा और हर जानवर की खुराक उसके मुआफिक दे। मुरशिद (सतगुरु) भी चाहिये कि तालिबान व सादिकान की तरबियत उनके इस्तेदाद (क्षमता) के मुआफिक करे। फ़रमाया ऐसी जबान से दुआ करो जिसने गुनाह न किया हो (गुनाह न हुआ हो) यानी अल्लाह तआला के दोस्तों के सामने आजजी करो, ताकि वह तुम्हारे वास्ते दुआ करे। फ़रमाया कि अमल (अभ्यास) करना चाहिए अरि नाकर्दः उसे जानना (न किया हुआ उसे जानना) और अपने आपको तक्सीर (त्रुटि, भूल) करने वाला देखना और फिर अमल शुरू करना। फ़रमाया दो वक्त अपने पर खूब निगाह रखो। एक बात करते वक्त और दूसरे कोई चीज खाने के वक्त।

फ़रमाया कि अगर किसी आदमी के पास बैठे और अल्लाह तआला को भूले उसको शैतान समझ, यद्यपि आदमी की सूरत हो, बल्कि इबलीस आदमी बदतर है इबलीस जिन्न से कि वह पोशीदा वसवसा (बुरा ख्याल) डालता है और इबलीस

आदमी जाहिर तौर से।

आपने फ़रमाया यार नेक (अच्छा दोस्त) कार नेक (अच्छा काम) से बेहतर है क्योंकि मुमकिन है कि कार नेक से तुझको उजुब व पिन्दार हो (तुझ में अहंकार व अभिमान पैदा हो), लेकिन यार नेक राह नेक की सलाह देगा। फ़रमाया कि मुझ से बाज दूर वाले नजदीक और नजदीक वाले दूर है। दूर वाले नजदीक वह हैं जो बसूरत जाहिर दूर हैं और दिलोजान से हाजिर हैं और नजदीक वाले वह दूर है जो बसूरत जाहिर मेरे पास हैं लेकिन दिलोजान से मेरे साथ नहीं है यानी दिलोजान, से कारोबार दुनिया, हवा व हबस (लिप्सा, लोभ व तृष्णा) में मशगूल है। फ़रमाया मुझ के दूर इन नजदीक से बेहतर है । नजदीकान दूर से जानो दिल की नजदीकी का एतबार (विश्वास) है, न आबोगिल की निकटता का विश्वास नहीं है।

अगर दर यमनी कि बामनी पेशे मनी,
दर पेशमनी कि बेमनी दर यमनी।

(अगर तुम यमन देश में भी हो, लेकिन तुम मेरे साथ हो तो गोया तुम मेरे पास बैठे हो और अगर मेरे पास बैठे हो लेकिन दिल तुम्हारा मेरे पास नहीं है तो ऐसा है जैसे यमन में बैठे हो।)

किसी दर्वेश ने हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु से दरियाफ्त किया कि 'बालिग शरीअत' किस को कहते हैं और 'बालिग तरीकत' कौन है? आपने फ़रमाया कि 'बालिग शरीअत' वह है कि जिससे मनी (अहंकार) निकले और 'बालिग तरीकत' वह है जो मनी से बाहर आये यानी उसकी ख़ुदी जाती रहे। उस दर्वेश ने यह सुन कर सर जमीन पर रख दिया। हज़रत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने फ़रमाया 'सर के जमीन पर रखने की हाजत (इच्छा) नहीं बल्कि जो कुछ सर में है यानी नखवत, गुरूर व पिन्दार (अहंकार व घमंड) वह जमीन पर रखो।' फ़रमाया कि अगर बन्दा को खिताब पहुँचे (यदि ईश्वर की ओर से यह वरदान दिया जाये। कि 'ऐ बन्दा ! हमसे कोई हाजत चाह (अपनी कोई अभिलाषा पूर्ण होने के लिए इच्छा कर) शर्त बन्दगी यह है कि बन्दा खुदा के सिवाय खुदा से कुछ न चाहे। फ़रमाया अगर किसी के पास कुछ न हो मगर उसके दिल में ख्वाहिश हो उसको तज्रीद मानवी (आन्तरिक निस्पृहता) नहीं है और किसी शख्स के पास सब कुछ हो मगर उसके दिल में उस सबसे मुहब्बत न हो उसको

तज्रीद मानव हासिल है। हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम का कैसा वसीय (वृहद) मुल्क था, मगर आपने थैलियाँ सी सीकर बसर औकात की (जीविका चलाई)। हजरत शेख अबू सईद अबुल खैर रहमतुल्लाहु संत थे पर बहुत ही बड़े मालदार थे और बड़ी शान शौकत जाहिरी से रहते थे। इसी प्रकार बहुत से अम्बिया और औलिया गुजरे हैं, जिनके पास धन-दौलत बहुत थी, मगर उनके दिल में उस धन-दौलत से तनिक भी लगाव व लिप्सा न थी, अतः उन्हें तज्रीद मानवी (आन्तरिक निस्पृहता) हासिल थी।

कहा जाता है कि किसी शख्स ने अजरुए इन्कार कहा (मान्यता न देते हुए आलोचना की) कि हजरत अजीज रहमतुल्लाहु बाज़ारी हैं, (यानी सूत की खरीद फरोख्त के वास्ते आप बाजार जाया करते थे।) हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने सुन कर फ़रमाया कि यार अजीजाँ रहमतुल्लाहु जारी (विलाप) चाहता है तो क्यों न बाज़ारी हूँ, यानी अल्लाह तआला की दरगाह में जारी व तजर्रो (गिड़गिड़ाहट, मिन्नत) व सोज (जलन) व नियाज (प्रार्थना) व मस्कनत (नम्रता) चाहिए। फ़रमाया कि सालिकों (साधकों) को बड़ी रियाजत और मुजाहिदा करना चाहिए ताकि मरतबा और मुकाम को पहुँचे और वह यह है कि सालिक इसमें साई हो (प्रयत्नशील हो) कि अपने खुल्क (अच्छे आचरण) और खिदमत से किसी साहिबे दल (मुरशिद, सतगुरु) के दिल में जगह करे। हरगाह (हर समय) कि इस गिरोह का दिल नजरे हक (ईश्वर की कृपा दृष्टि) का नजूलगाह (उतरनें की जगह) है उसको भी उस नजर से हिस्सा पहुँचेगा।

कहा जाता है कि एक बार एक मेहमान हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के घर आया उस वक्त आपके घर में कोई चीज मौजूद न थी। एकाएक एक गुलाम जो आपका खास मुरीद था और रोटियाँ बेचा करता था, एक टोकरी रोटियों की भरी लाया और आपके सामने पेश की। उस वक्त आप बहुत खुश हुये और उससे कहा कि तूने इस वक्त बहुत पसन्दीदा (मनोवांछित) खिदमत की, जो तेरी मुराद (इच्छा) हो माँग। उसने कहा कि मैं चाहता हूँ कि मैं आप-सा हो जाऊं। आपने फ़रमाया कि यह निहायत सख्त बात है और तू उसका मुतहम्मिल नहीं हो सकता (उसको बर्दाश्त नहीं कर सकता)। उसने कहा कि मेरा तो यही मकसूद (लक्ष्य) है, इसके सिवा कुछ नहीं। आपने फ़रमाया 'इसी तरफ सही' और उसका हाथ पकड़ कर एक गोशा (घर के कोने या एकान्त स्थान) में ले गये और उसको तवज्जोह दी। जब आप बाहर तशरीफ लाये तो वह

बावर्ची जाहिर व बातिन में बिल्कुल आपके मुसाबेह (सदृश्य) था। मगर उसके बाद चालीस रोज जिंदा रहा। उस बोझ को ज्यादा न उठा सका और मर गया। ऐसा बाद में हजरत बाकी बिल्ला रहम० ने भी किया।

कहा जाता है कि एक बार बइशारा ग़ैबी (ईश्वरीय प्रेरणा से) हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु बुख़ारा से ख्वारजम आये और शहर के दरवाजे के बाहर रुक करके अपने एक दरवेश को वहाँ के बादशाह के पास भेजा कि फकीर तुम्हारे शहर के दरवाजे पर आया है। अगर तुम्हारी मसलहत (भलाई) के खिलाफ न हो तो शहर में आ जाये, वरना इस जगह से वापस हो जाये और दरवेश से कह दिया कि अगर बादशाह इजाजत दे दें तो इजाजतनामा मुहरी-दस्तखती बादशाह लेते आना। जब वह दरवेश बादशाह के पास गया और हजरत का मंशा (उद्देश्य) बयान किया, तो बादशाह मय दरबारियों के हँसने लगा और कहने लगा कि यह भी कैसे नादान और सादा तबियत के आदमी होते हैं और मजाक के तौर पर एक इजाजतनामा मुहरी व दस्तखती बादशाह ने उस दरवेश को दे दिया। वह दरवेश उसे लेकर हजरत के पास आया अरि तब हजरत अजीजाँ रहम० शहर के अन्दर दाखिल हुये और एकान्त जगह में बैठ कर बतरीका हजरत ख्वाजगान (नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजनों के तरीका तालीम के अनुसार) लोगों को रूहानी तालीम देने में मशगूल हुये। आप सुबह के व मजदूरखाना (वह जगह जहाँ मजदूर इकट्ठा होते हैं) जाते और एक दो मजदूर ले आते और उनसे फ़रमाते कि वुज़ू करो और नमाज पढ़ो और अस्र के वक्त तक (सूर्यास्त से पहले के समय तक) हमारे पास बैठो और जिक्र (जप) करो। इसके बाद उनको मजदूरी देकर बिदा करते। वह लोग बहुत खुशी से यह काम करते और चूँकि एक दिन इस तरह इनकी सुहबत रहती, अगले दिन इस सुहबत के असर से और हजरत के तसर्रुफ से आये बगैर चैन न पड़ती। आखिरकार धीरे-धीरे इस क़दर लोगों की भीड़ वहाँ बड़ी कि इस शहर के बादशाह को खबर हुई कि कोई शख्स इस शहर में आया हुआ है, तमाम लोग उसके मुरीद होते जा रहे हैं। अंदेशा होता है कि कही राह लोग बढ़ न जाये और मुल्क में कुछ अशान्ति व झगड़ा न पैदा हो जाये। अतः बादशाह को इस बात का सदेह हो गया और उसने आपको शहर से निकलने का हुक्म दे दिया। हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने अपने उस दरवेश को बादशाह के पास भेजा र कह

लाया कि हम तो तुम्हारी इजाजत से ठहरे हुए है। अगर वादा खिलाफी हो तो हम चले जाये। बादशाह यह सुन कर बहुत शर्मिंदा हुआ और आपकी दूरबीनी (दूरदर्शिता) का बहुत मोतकिद (श्रद्धा और विश्वास रखने वाला) हुआ और मय अपने साथियों के आकर आपका मुरीद हुआ।

कहा जाता है कि हजरत सैय्यद अता रहमतुल्लाहु जो इसी नक्शबन्दिया सिलसिले के एक बुजुर्ग हुये है और जो हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के हमउम्र थे (समकालीन थे) कभी-कभी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के सत्संग में जाया करते थे। उन्हें इब्तदा (आरम्भ) में हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु से कुछ द्वेष व मतभेद रहता था। एक बार उनसे हजरत अजीजाँ रहम० के निस्वन एक बेअदबी (अशिष्टता) ऐसी हुई कि एकाएक उसी समय चाक के जंगल से तुर्कों का एक गिरोह चढ़ आया और हजरत सैय्यद अता के एक बेटे को कैद कर ले गया। हजरत सैय्यद अता बहुत ही परेशान हुये और यह समझ गये कि यह हादसा (दुर्घटना) उस बेअदबी की वजह से पेश आया। बहुत ही मजबूर हुये और दावत का खाना तैयार किया और हजरत अजीजाँ रहम० से उस दावत में सम्मिलित होने के लिये बड़ी इंकसारी और आजजी के साथ निवेदन किया। हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु ने उनके निवेदन को स्वीकार किया और उनके घर तशरीफ ले गये। दावत में बहुत अकाबिर (प्रतिष्ठित लोग) और मुशाहिद वक्त (उस समय के बड़े अनुभवी लोग) मौजूद थे और हजरत अजीजाँ उस समय बड़े ही प्रसन्न चित व भावावेश ये थे। ख़ादिम नमक लाया और दस्तरख्वान बिछाया। आपने अपने लिये फ़रमाया कि अली (हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु) नमक को नहीं छुएगा और न हाथ खाने की तरफ बढ़ायेगा जब तक कि सैय्यदअता का लड़का इस दस्तरख्वान पर मौजूद न होगा। यह फ़रमा कर आप थोड़ी देर खामोश रहे। वहाँ उपस्थित सभी लोग आपको इस बात की सत्यता प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगे। एकाएक इसी बीच सैय्यदअता का लड़का घर के दरवाजे से अन्दर आया। एक शोरगुल मजलिस में उठा। लोग हैरान और अचम्भित हो गये। फिर उस लड़के से पूरी कैफियत उसके आने की पूछी। उसने कहा कि मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानना कि इस वक्त तुर्कों की कैद में था और मुझे कैदी बनाकर अपने मुल्क लिये जा रहे थे। अब मैं देखता हूँ कि आप लोगों के सामने हाजिर हूँ। उस मजलिस में

उपस्थित सभी लोगों को यकीन हुआ कि यह तसरुफ हजरत अजीज रहमतुल्लाहु का है। सबने आपके क़दमों पर सर रखा और बैअत की (उनसे दीक्षा ली)।

आपके दो फ़रज़ंद (पुत्र) थे। एक ख्वाजा मुहम्मद, दूसरे ख्वाजा इब्राहीम। जब हजरत की वफ़ात (शरीरांत) करीब हुई तो छोटे सरजद ख्वाजा इब्राहीम को अपना जानशीन (उत्तराधिकारी) मुकर्रर किया। लोगों के दिलों में ख्याल आया कि बड़े फ़रज़ंद के होते हुये छोटे को आपने जानशीन क्यों बनाया? आपने फ़रमाया कि बड़े की उम्र मेरे बाद जल्द खत्म हो जायेगी। चुनांचे आपके शारीरांत के उन्नीस रोज बाद ही आपके बड़े फ़रज़ंद का शरीरांत हो गया।

हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु का इंतकाल रोज दो शम्बह अट्ठाईस (28) जोकाद 721 हिजरी को एक सौ तेईस बरस की उस में हुआ। आपकी मजार शरीफ बुख़ारा में है।

❶❹

15. हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०)

आपकी मज़ार बुख़ारा समास में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

15. हालात हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु के अकमल (पूर्ण समर्थ एवं पारंगत) खलीफाओं में थे। कहा जाता है कि जब हजरत अजीजाँ रहमतुल्लाहु का अंत समय निकट आया, आपने अपने मुरीदों में से हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु को अपना खलीफा मुकर्रर किया और अपने सभी मुरीदों को इनकी मुलाज़मत (सेवा) और मुताबअत (आज्ञा पालन) का हुक्म दिया। इस्तिग्राक (तन्मयता) और बेखुदी (आत्म विस्मृति) इनमें बहुत अधिक थी। समासी गाँव में आपका एक बगीचा था। कभी-कभी वहाँ अंगूर के पेड़ों की डालियाँ आरी से काटा करते थे। डाल काटते-काटते आपको बेखुदी (आत्म विस्मृति) हो जाती और आरी हाथ से छूट जाती।

कहा जाता है कि जब आप सफर में कौशक हिन्दुवान से गुजरते, फ़रमाते कि इस खाक (मिट्टी) से एक मर्द (महापुरुष) की बू (सुगंध) आती है और वह वक्त नजदीक है जब कौशक हिन्दुवान कस्त्र आरिफान हो (सन्तों के रहने का स्थान हो), यहाँ तक कि एक मरतबा जब इसी जगह आप फिर तशरीफ ले गये, फ़रमाया मालूम होता है कि वह मर्द पैदा हो गया। उस वक्त हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) को पैदा हुए तीन दिन गुजरे थे, अतः हजरत ख्वाजा के जद्दे अम्जद (पूज्य पितामह) आपको लेकर हजरत बाबा समासी (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुए। हजरत बाबा समासी रहम० ने देखकर फ़रमाया कि यह हमारा फ़रज़ंद (आध्यात्मिक पुत्र) है और इसको मैंने अपनी फ़रजंदी में कबूल किया। अपने मुरीदों की तरफ मुखातिब होकर फ़रमाया, यह वही मर्द है जिसकी खुशबू मुझे आया करती थी।' आपने अपने खलीफा हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) से, जो उस समय वहाँ मौजूद थे, फ़रमाया कि मेरे इस फ़रज़ंद की तरबियत (आध्यात्मिक शिक्षा) में दिरेग (संकोच, ढिलाई) न करना, वरना मैं तुझे क्षमा नहीं करुंगा। हजरत अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु ने फ़रमाया कि अगर मैं इसमें ढिलाई करूँ तो मर्द नहीं हूँ।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहमतुल्लाहु) ने एक जगह अपने हालात में लिखा है कि 'एक बार हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु ने खाना खा कर एक कुर्सनान (रोटी) मुझको दी और फ़रमाया कि इसको अपने पास रख ले। में उसे लेकर आपके साथ सफर के लिए रवाना हुआ। रास्ते में अगर कुछ फुतूर व खतूर (आत्मिक विकार व बुरे ख्याल) दिल में आते, फ़रमाते बातिन की निगाह रखो। धीरे-धीरे चलकर आप एक अपने खास मुरीद के मकान पर रुके। वह मुरीद आपके पधारने पर बहुत ही खुश हुआ, लेकिन कुछ परेशान नजर आया। कभी घर में आता और कभी बाहर जाता। हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने दरियाफ्त किया कि 'सच बता, तुझको क्या परेशानी है ?' उसने अर्ज किया कि दूध मौजूद है, मगर रोटी नहीं है। बहुत कोशिश की लेकिन रोटी नहीं मिल सकी। हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने मुझ से मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि वह रोटी लाओ कि उसका दिल तस्कीन (संतोष) पाये और मुझ से फ़रमाया कि 'फ़रज़ंद ! देखा, आखिर वह रोटी काम आई।'

एक बार मैं अपने गुरुदेव रमतैनी र. से मिलने गया मुझे देखते ही वे बोले " तुम्हारे दिल में मेराज़ (ईश्वर दर्शन) की इच्छा है "।

ऐसा कहते ही उन्होंने मुझे एक दिव्य दर्शन दिया। मुझे ऐसा लगा कि मैं दिन रात चलता जा रहा हूँ व बहुत दूर मस्जिद अल-अका में पहुंचा। वहां मुझे हरे कपड़े पहने एक व्यक्ति मिला। मैंने उससे पूछा आज क्या तारीख है ? उसने कहा 27 रजब। मैने गिना तो पाया मुझे तीन महीने लगे यहां आने में। 27 रजब को ही हजरत मोहम्मद र. को भी मेराज़ के दर्शन हुए थे।

हरे कपड़े पहने व्यक्ति ने कहा " सैयद अली रमतैनी तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।" नमाज़ के बाद मेरे गुरु ने कहा " मुझे हजरत मुहम्मद र. का आदेश मिला है कि तुम्हें भी मेराज़ कराया जाए।" ऐसा कहकर मुझे सिदरातुल मुंतहा (एक स्थान) पर ले गये। वहां हरे कपड़े पहने हुए आदमी ने दो घोड़े जैसे जानवर दिए। हम उन पर बैठे। और हम उठने लगे। फिर हमें कई लोकों के दर्शन हुए। उन लोगों की जानकारी देना संभव नहीं है।

हम ऊपर उठते गये जब तक कि हम अल-अकीकत-अल मुहम्मदी (सत्यलोक) पहुंचे, वहां मैं व मेरे गुरुदेव गायब हो गए। वहां महसूस हुआ कि वहां अल्लाह के

अलावा कुछ नहीं है। फिर मुझे हजरत मुहम्मद साहब की आवाज सुनाई दी "बाबा समासी तुम बहुत भाग्यशाली हो जो इस दर्शन के लिए चुने गए।" तभी मेरी आँखें खुल गयीं देखा कि मैं अपने गुरुदेव रमतैनी र. के पास खड़ा हुआ हूं व वे मुस्कुरा रहे हैं।

हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी का शरीरान्त 755 हिजरी में हुआ।

❶❺

16. हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहम०)

आपकी मज़ार बुख़ारा सोखार में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

16. हालात हजरत सैय्यद अमीर कुलाल (रहम०)

हजरत सैय्यद अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु अजल (श्रेष्ठतम) खुलफा हजरत मुहम्मद बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) से हैं। आप सैय्यद सहीहुल नस्ब थे (आप बिलकुल सही तौर पर सैय्यद खानदान के थे। पेशा कुलाली (मिट्टी के बरतन बनाने का काम) किया करते थे। आपकी पूज्य माता जी फ़रमाया करती थी कि जिस वक्त अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) मेरे पेट में थे उस वक्त अगर मैं शुबहा का लुक्मा (ऐसा भोजन जो हलाल की कमाई का न हो और खुदा की याद में बनाया गया हो) खा लेती थी तो मुझको पेट का दर्द शुरू हो जाता, और जब तक कि मैं कै न करती थी, आराम नहीं मिलता था। जब चन्द मरतबे ऐसी घटना घटित हुई, मैं समझ गई कि इसकी वजह यह बच्चा है जो मेरे पेट में है। इसके बाद फिर मैंने खाने में एहतियात (सावधानी) रखी।

जवानी की उम्र में हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को कुश्ती लड़ने का बहुत शौक था। और अखाड़े में आप के गिर्द पहलवानों और कुश्ती देखने वालों की भीड़ जमा रहती थी। एक दिन उस अखाड़े में एक शख्स की खातिर (दिल) में गुजरा कि यह क्या बात है, सैय्यदजादा शरीफ (सैय्यद खानदान की श्रेष्ठ औलाद) कुश्ती लड़ें और जोर आज़माई और बदअती (बुरे) लोगों का तरीका इख्तियार करें। इसी दरमियान में उसे नींद आ गई और ख्वाब में देखा कि कयामत कायम है (प्रलय आ गई है) और वह शख्स एक जगह सीना तलक मिट्टी और धूल में उतर गया है और उसका कुछ बस नहीं चलता। अचानक देखा कि हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) जाहिर हुए और दोनों उसकी बाँहें पकड़ी और आसानी के साथ उसे बाहर खींच लिया। जब उस शख्स की नींद खुली, हजरत अमीर कुलाल रहमतुल्लाहु ने उसे अखाड़े में उस शख्स की तरफ रुख करके कहा कि हम जोर आज़माई ऐसे रोज के लिए करते हैं।

एक बार हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) उस अखाड़े के किनारे से गुजरे। थोड़ी देर वहाँ कुश्ती देखने के लिए खड़े हो गये। आपके साथ जो मुरीद वहाँ मौजूद ये उनमें से कुछ लोगों के दिल में यह ख्याल आया कि क्या वजह है कि हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) इन बदअती (बुरे) लोगों की तरफ मुतवज्जह

हुए। हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) ने इस खतरा (बुरे विचार) से वाकिफ होकर फ़रमाया कि 'इस अखाड़े में एक मर्द है। उसकी सुहबत में लोग दर्जा कमाल को पहुँचेंगे। उस पर हमारी नजर है। हम चाहते हैं कि उसको शिकार करे (उसको अपने प्रभाव में लें)। इस मौक़े पर हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) की नजर आप पर पड़ी और आप की कशिश (आकर्षण) ने उनको बेकरार (बेचैन) कर दिया। जब हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु वहाँ से आगे बेढ़ हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) फौरन अखाड़े को छोड़कर आपके पीछे हो लिए। जब हजरत बाबा समासी रहमतुल्लाहु अपने घर पहुँचे आप हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को धर लाये और तरीका बतलाया। अपनी फ़रजंदी में कबूल किया (अपना शिष्य बनाया)। इसके बाद फिर किसी ने हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को अखाड़े और बाजार में नहीं देखा। बीस बरस आप अनिवार्य रूप से हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) की खिदमत में जाते रहे और हफ्ता में दो बार दोशम्बः (सोमवार) और जुमेरात (बृहस्पतिवार) को सोखारी से (जो आपकी जन्मभूमि और निवास स्थान था) समासी को हजरत बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) की खिदमत में हाजिर होते और उनकी सुहबत के बाद फिर चले आते। उस मुद्दत में बतरीक ख्वाजगान इश्तगाल करते रहे (तरीकए ख्वाज ख्वाजगान के अभ्यास में लगे रहे। हजरत ख्वाजा नक़्शबंद (रहमतुल्लाहु) के पहले यह नक्शबंदिया सिलसिला 'सिलसिला ख्वाजगान' कहलाता था। आपके अभ्यास में इतनी पोशीदगी थी कि आपके हाल से किसी को इत्तला न होती कि आप कोई शगल या तरीका इख्तियार किये हैं। हजरत बाबा समासी की तरबियत में आप तकमील और इर्शाद को पहुँचे (पूर्ण समर्थ सतगुरु की पदवी प्राप्त की)। आपके चार फ़रज़ंद (लड़के) और चार खलीफा थे। यह प्रसिद्ध है कि आपके मुरीदों की संख्या 114 थी, जिन में कुछ के नाम एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'मुकामाते अमीर' में दिये हुए हैं।

आपका शरीरांत सुबह की नमाज के वक्त बरोज पंजशम्बा (वृहस्पति वार) बतारीख आठवीं जमादिउल अव्वल 712 हिजरी में हुआ। आपका मजार शरीफ कस्बा सोखार में है।

❶❻

17. हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद कुद्स सिर्रहू

आपकी मज़ार बुख़ारा कस्र आरिफान में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

17. हालात हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद कुद्स सिर्रहू

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद (कु० सि०) को बहस्ब जाहिर (प्रकट रूप में) हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) से निस्बत हासिल है और वास्तव में आप हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहमतुल्लाहु) के उवैसी हैं और उनकी महान पवित्र आत्मा से तर्बियत पाई (रूहानियत की तालीम हासिल की)। आपका शुभ जन्म माह मुहर्रम सात सौ आठ हिजरी को हुआ। बचपन से ही आपकी पेशानी मुबारक (ललाट) से अनवारे करामात (चमत्कारी के प्रकाश पुंज) जाहिर थे। आपकी पूज्य माता जी से यह सुना गया है कि एक बार उन्होने फ़रमाया कि 'मेरा बेटा चार साल का था तब कहा कि यह मेरी लम्बे सींग वाली गाय फराख पेशानी का (चौड़े ललाट का) बछड़ा देगी। कुछ महीने वाद वैसा ही बछड़ा दिया। हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी रहमतुल्लाहु) ने आपके जन्म से पहले हरी आपकी उलूशान (उच्चतम श्रेष्ठता एवं महानता) की बुशारत दी थी (शुभ सूचना दी थी) और आप जब

कस्त्र हिन्दुवान से गुजरते, फ़रमाया करते कि वह वक्त नजदीक है जब कस्त्र हिन्दुवान कस्त्र आरिफान (संतों का निवास स्थान) हो। इस जगह से एक मर्द (महापुरुष) की बू (सुगंध) आती है। चुनाँचे आपके जन्म के तीन दिन बाद आपके पूज्य दादा जी (पितामह) आपको हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (कु॰ सि॰) के पास ले गये। आपने इनको अपनी फ़रजंदी में कबूल फ़रमाया (अध्यात्मिक पुत्र के रूप में स्वीकार किया) और हजरत अमीर कुलाल (रहमतुल्लाहु) को, जो आपके खलीफा थे, सुपुर्द करके फ़रमाया कि मैं तुम को मुआफ़ नहीं करुंगा अगर तुमने इस फ़रज़ंद की तरबियत में दरेग (ढिलाई) किया। चुनाँचे इसका जिक्र हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहमतुल्लाहु) के हालात में भी आ चुका है।

कहा जाता है कि इस रूहानियत के रास्ते में आपके रुजू (आकर्षित) होने का यह सबब (कारण) हुआ कि शुरू में आपको किसी से रगबत (आकर्षण, मुहब्बत) थी। एक दिन एकांत में बैठे हुये आप उससे बड़ा तल्लीनता के साथ उसकी ओर एकाग्रचित्त होकर बातें कर रहे थे। यकायक आपके कान में आवाज आई कि ऐ बहाउद्दीन! क्या अभी वह वक्त नहीं आया कि तू सब की तरफ से मुँह फेर कर हमारी दरगाह (दरबार) में नुतवज्जह हो।' यह सुन कर हजरत ख्वाजा (रहमतुल्लाहु) मुतगय्यिर और बेकरार हो गये (एकदम हालत बदल गई और बेचैन हो गये) और वहाँ से निकल आये। उसी वक्त अँधेरी रात में एक नहर पर गये, कपड़े धोये, ग़ुस्ल इनाबत किया (अपने पापों के लिये प्रायश्चित करने हेतु स्नान किया) और बकमाल शिकस्तगी (अत्यन्त व्यथित हृदय से) दो रकअत नमाज पड़ी। आप फ़रमाया करते थे कि मुद्दत गुजर गई इस आरजू (हार्दिक उत्कंठा) में हूँ कि फिर वही नमाज पढ़ूँ मगर मुयस्सर (सुलभ) नहीं होती। फ़रमाया कि इब्तदाए जज्बा में (आत्मिक भावावेश के आरम्भ काल में) इलहाम हुआ (दैवी प्रेरणा के रूप में आपसे ईश्वर की ओर से यह प्रश्न हुआ) कि तूनें जो इस रास्ते में कदम रखा है किस तरह रखा है ? मैंने कहा कि जो कुछ मैं चाहूँ वह हो। खताब आया (परोक्ष से उत्तर मिला) कि 'नहीं जो कुछ हम कहें वह करना चाहिये। मैंने कहा कि 'मुझ में इतनी ताकत नहीं है। जो कुछ मैं कहुं अगर वह हो तो इस रास्ते में कदम रखता हूँ, वरना नहीं।' दो मरतबा इसी तरह सवाल जवाब हुये। इसके बाद मुझ से (अल्लाह तआला ने) लापरवाही की (यानी मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया कि

जैसा मैं चाहें वैसा रहूँ)। पन्द्रह रोज तक मेरा हाल निहायत खराब रहा और मैं खुश्क रहा और जब नाउम्मीदी हो गई, खताब पहुँचा (ईश्वर की ओर से संदेश पहुँचा) 'अच्छा जिस तरह तुम चाहते हो रहो।'

फ़रमाया कि एक मरतबा मुझको सख्त कब्ज हुआ (रूहानी कब्ज यानी पूजा व आराधना में मन न लगना और दिल उचाट सा रहना) और छः महीने तक रहा। मुझको यकीन हो गया कि दौलत बातिनी (आध्यात्मिक सम्पदा) मेरी किस्मत में नहीं है। लाचार होकर उठ खड़ा हुआ कि दुनिया का कोई काम इख्तियार करूँ। रास्ते में एक मस्जिद के दरवाजे पर यह शेर लिखा हुआ नजर पड़ा :-

ऐ दोस्त बेया कि मा सुराएम,
बेगाना मशौ कि आशनाएम।

तर्जुमा-

ऐ दोस्त मेरे पास आजा कि हम तेरे दोस्त है,
हमसे ग़ैरियत न बरतो कि हम तुम्हारे आशनाँ हैं।

इम शेर को पढ़ते ही मेरी तमाम पुरानी हालत वापस आ गई और मैं मस्जिद के एक कोने में आकर बैठ गया। फ़रमाया कि जिस जमाने में मुझे जज़्बात, गलबात व बेकरारी बहुत ज्यादा रहती थी, रातों को बुख़ारा के शहर के गिर्द मजारों पर घूमा करता था। एक रात को कुछ मजारों के पास पहुँचा। जिस मजार पर जाता वहाँ देखता कि चिराग तेल से भरा हुआ है और टिमटिमा रहा है। अगरबत्ति को जरा भी हिला दिया जाये तो खूब रोशन हो जाय। पहली रात को हजरत ख्वाजा मुहम्मद बासे (रहमतुल्लाहु) के मजार पर पहुँचा। वहाँ से इशारा हुआ कि ख्वाजा मुहम्मद अज़फरनुई (कु० सि०) की मजार पर जाना चाहिए। जब वहाँ पहुँचा, दो तलवारें मेरे कमर में बांधी और मुझको घोड़े पर सवार कर दिया और घोड़े की बाग खवाना मज्द आखन (रहमतुल्लाहु) के मजार की तरफ फेर दी। रात के आखिर में उनके मजार पर पहुँचा। वहाँ भी चिराग व बत्ती को उसी अंदाज में पाया। मैंने बत्ती को सरका दिया और मुतवज्जह किब्ला (काबा शरीफ़) हो बैठा। मुझको गैबत (बेहोशी) हो गई। इस गैबत में क्या देखता हूँ कि क़िबला की जानिब (दिशा) में दीवाल शक हो गई (फट गई) । एक तख्त पर एक बुजुर्ग आदमी को बैठा देखा। उनके आगे सब्ज (हरा) परदा पड़ा

हुआ था। इस तख्त के चारों ओर एक जमाअत (मंडली) हाजिर हुई, जिसमें से मैं हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी (रहम०) को पहचानता था। मुझको मालूम हुआ कि यह गुजरे हुये लोगों में से हैं। दिन में ख्याल आया कि यह मालूम करना चाहिये कि यह बुजुर्ग कौन हैं और यह जमाअत किन की है? इसी समय में एक शख्स उनमें से उठा और बतलाया कि यह बुजुर्ग ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहमतुल्लाहु) हैं और यह जमाअत (मंडली) उनके खलीफाओं की है और सबके नाम बनाये और इशारे से कहा कि यह अहमद सिद्दीक (रहमतुल्लाहु) हैं और यह ख्वाजा औलिया कबीर (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा रेवगरी (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा अंजीर फगनवी (रहमतुल्लाहु) और यह ख्वाजा रामतैनी (कु० सि०) और हजरत ख्वाजा बाबा समासी (कु० सि०) को बताया तो यह भी कहा कि इन बुजुर्ग को तुमने जिंदगी की हालत में भी देखा है और यह तुम्हारे पीर है और तुम को कुलाह (टोपी) अता फ़रमायी है। मैंने कहा-"हाँ, उनको तो मैं पहचानता हूँ लेकिन कुलाह का किस्सा बहुत दिनों का है, वह मुझको याद नहीं कि किस जगह रक्खी है।" फ़रमाया 'कुलाह तुम्हारे घर में है और तुम को करामत (चमत्कारिक शक्ति) दी है कि जो बला (मुसीबत) हो वह तुम्हारी बरकत से दफा हो (दूर हो)। फिर इस जमाअत ने कहा कि हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) तुम से कुछ फ़रमायेंगे कि तरीके सुलूक के लिये ये बातें बहुत जरूरी हैं। ध्यान करके सुनना।' मैंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी रहम० को सलाम करूँ। चुनाँचे वह सब्ज परदा उठाया और मैंने हजरत ख्वाजा (रहम०) को सलाम किया। आपने चंद कलमा फ़रमाये (कुछ उपदेश दिये), जो सुलूक (साधना के 'पथ) के आरम्भ, बीच और अंत में बहुत ही कारामद (लाभदायक) है। उन उपदेशों में से एक यह फ़रमाया कि 'तूनें चिराग तेल से भरे हुए देखे थे, वह बुझारत (शुभ सूचना) तुम्हारी इस्तेदाद और काबलियत (पात्रता और योग्यता) की थी, लेकिन फतीला (बत्ती) इस्तेदाद को हरकत देना चाहिए कि असरार पोशीदा जाहिर हो (साधना से उत्पन्न गुप्त प्रभाव प्रकट हो) और अपनी पात्रता और सामर्थ्य के अनुसार अमल (अभ्यास करना चाहिए, कि मकसूद हासिल हो (लक्ष्य प्राप्त हो) फिर .अपने इस हुक्म की पैरवी के लिए अत्यधिक जोर देते हुए फ़रमाया कि इस अमल को बअजीमत (पूरे संकल्प के साथ) और

बसुन्नत करना चाहिये (अपने सतगुरु द्वारा बतलाये हुए तरीका के मुताबिक अभ्यास करना चाहिए)। रुखसत (विश्राम, आराम) व बिदअत (धर्म में कोई नई बात पैदा करने) से परहेज करना चाहिए व हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसों की तलाश व उन पर अमन करना चाहिए तथा अपने सिलसिले के बुजुर्गों की अलामतें (लक्षण) अपनी जिन्दगी में उतारना चाहिए।

उपदेश समाप्त होने पर हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) के खलीफाओं ने फ़रमाया कि इस वाक़ै (घटना) की सच्चाई व हकीकत का शाहिद (गवाह) यह है कि तुम मौलाना शमशुद्दीन इकनवी (रहम०) के पास जाओ और उनसे कहो कि फलां तुर्क ने जो सक्का (भिश्ती) पर दावा किया है वह सच है और तुम भिश्ती की तरफदारी करते हो (जो उचित नहीं है)। इस भिश्ती ने एक औरत से जिना किया है (सम्भोग किया है) और उसके हमल रह गया है। बच्चा को साकित किया (गर्भपात किया) और वह बच्चा फलां जगह दफन कर दिया है। बाद इसके तीन अदद मवीज (मुनक्के) लेकर नसफ को जाना। जब जंगल में एक बड़े आदमी से मुलाकात हो, तुझको गरम' रोटी देगा, वह ले लेना और उससे कुछ बात न करना, आगे चलना एक कारवाँ (यात्री दल) मिलेगा। फिर इस जंगल में एक सवार मिलेगा। उसको नसीहत करना, वह तेरे हाथ पर तौबा करेगा और कुलाह अजीजाँ (रहम०) जो तुम्हारे पास है उसको हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के पास ले जाना और फिर इस जमाअत ने मुझको होशियार कर दिया। सुबह को मैं जल्दी से अपने घर को गया और वहाँ अपने घरवालों से कुलाह (टोपी) का किस्सा दरियाफ्त किया। उन लोगों के कहा कि वह तो बहुत दिनों से फलां जगह रक्खी है। उसको देखकर मेरी और ही कैफियत हो गई और मैं बहुत रोया।

सुबह की नमाज मौलाना शमशुद्दीन इकनवी (रहम०) की मस्जिद में पढ़ी। उनसे तमाम किस्सा बयान किया और भिश्ती की एक औरत से जिना की घटना बतलाई। इस पर वह भिश्ती बहुत नादिम (लज्जित) हुआ। मौलाना ने मेरे हाल पर बहुत इल्ताफ़ फ़रमाया (बड़ी कृपा की) और कहा कि 'तुम को दर्द तलब है। अगर इस जगह कयाम करो, मैं तुम्हारी तरबियत करूँ (आध्यात्मिक शिक्षा दूँ)। मैंने अर्ज किया कि मैं औरों का फ़रज़ंद हूँ (शिष्य) हूँ, ऐसा न हो कि आप मेरे मुँह में पिस्तान (स्तन) दें और

मैं उसको न चूसूँ (आप मुझे रूहानियत की तालीम दें और मैं उसे ग्रहण न करुँ)। मौलाना थोड़ी देर चुप रहे और मुझको जाने की इजाजत दी। पहले ही रोज दो आदमियों से कमर मजबूत बँधवा कर रवाना हुआ। जंगल में जब पहुँचा तो एक बूढ़े आदमी से मुलाकात हुई। उसने मुझको एक रोटी दी। वह रोटी मैंने ले ली और उससे कोई बात न की। जब आगे बढ़ा एक कारवां मिला। उन्होने, मुझ से पूछा कि 'तुम कहाँ से आते हो ?' मैंने कहा कि 'इकना से।' उन्होंने दरियाफ्त किया कि किस वक चले थे ? मैंने कहा कि तुलूअ आफ़ताब के वक्त (सूर्योदय के समय) और वह वक्त चाश्त का था सूर्योदय से एक पहर का समय)। उनको सख्त ताज्जुब हुआ कि हम अव्वल शब (रात) वहाँ से चले थे। जब आगे बढ़ा तो एक सवार मिला। उसने कहा 'तुम कौन हो ? तुम्हारी सूरत देखकर डर मालूम होता है।' मैंने कहा कि में वह हूं कि जिसके हाथ पर तू तौबा करेगा।' चुनाँचे वह सवार तत्काल घोड़े से उतर पड़ा और तौबा की ओर अपने साथ बहुत शराब लिये था, उसको फेंक दिया। उस जगह से मैं हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ और कुलह अजीजाँ (रहम०) पेश की। हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने तवज्जोह के बाद फ़रमाया कि 'इस मामले में ऐसा इशारा है कि इसको दो परदों में रखो।' मैंने कबूल किया। इसके वाद हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने मुझको बतरीक 'नफीइस्बात खुफिया' मशगूल किया और मुद्दत तक मैंने वरजिश की (अभ्यास किया) लेकिन बमूजिब इशारा हजरत ख्वाजा अकुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) जिक्र जहर न किया। बल्कि जिस वक्त हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के असहाब जिक्र जहर शुरू करते मैं हल्के से उठ आता और यह बात मेरे पीर भाइयों को बुरी मालूम होती। उन्होंने चन्द मरतबा शिकायत की कि 'हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) आपकी इताअत (आज्ञा पालन) और इंकियाद (अधीनता स्वीकार) नहीं करते। इस पर भी हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की तवज्जोह व इल्तफात (दया कृपा) मेरे हाल पर दिन प्रति दिन अत्यधिक होती जाती थी और मैं भी हर प्रकार से उनके अदब का बहुत ही ध्यान रखता था और सरे तस्लीम (पूर्ण समर्पित भावनाओं से) उनकी आज्ञा और निर्देश के अनुसार चलता था। यहाँ तक कि एक दफा हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के सब छोटे और बड़े असहाब जो लगभग पाँच सौ की संख्या में थे मुकाम सोखारी में मस्जिद

की इमारत और कुछ दीगर मकानात बनाने के लिए जमा हुये थे और हर शख्स एक काम में लगा हुआ था। जब मिट्टी का काम खत्म हुआ, सब असहाब हजरत अमीर कुलाल (रहम०) के सामने हाजिर हुए। उस मजमे में हजरत अमीर कुलाल (रहम०) ने चुगुलखोरों की तरफ रुख किया और फ़रमाया कि "तुम मेरे फरजन्द बहाउद्दीन की शिकायत करते हो और गलती पर हो कि उसके कुछ अहवाल को गैर मुनासिब (अनुचित) समझते हो तुम लोगों ने उसे पहचाना नहीं। हमेशा नजरें खास हक सुबहाना (ईश्वर की विशेष कृपा दृष्टि) उस पर है और बन्दगाने सुबहाना (ईश्वर भक्तों) की नजर हक सुबहाना की नजर के ताबे (अधीन) है। उसकी तरफ मजीद इल्तफात (विशेष दया, कृपा) करने का मुझे इख्तियार (अधिकार) है। उसी समय हजरत ख्वाजा को जो ईटे उठाने में मशगूल थे, बुलाया और उस मजलिस में उनकी तरफ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, 'फरजन्द बहाउद्दीन। तुम्हारे हक में हजरत ख्वाजा मुहम्मद बाबा समासी रहम० ने मुझे जो हुक्म दिया था उसे बजा लाया (उस आज्ञा का पालन किया) उन्होंने कहा था कि, जिस तरह तेरे हक में हम तरबियत बजा लाये (रूहानियत की तालीम दी) उसी तरह तू फरजन्द बहाउद्दीन के हक में बजा लाना और कोताही न करना।' ऐसा ही मैंने किया और अपने सीने की तरफ इशारा करते हुए फ़रमाया कि तुम्हारे लिए पिस्तान (छाती) खुश्क की और तुम्हारे रूहानियत का परिन्द (पक्षी) बझरीयत (इनसानियत) के अण्डे से बाहर निकल आया, मगर मुर्ग हिम्मत (साहसी पक्षी) तुम्हारा बुलन्द परवाज़ वाक़ै हुआ (ऊँचा उड़ने वाला हुआ है)। अब इजाजत है जहाँ बू (सुगन्ध अर्थात रूहानियत की सुगन्ध) तुम्हारे दिमाग में पहुँचे तुर्क या ताजोक (तुर्किस्तान या अरब के अलावा किसी दूसरे मुल्क के सन्तों) से तलब करो (रूहानियत की तालीम हासिल करो)।' हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने फ़रमाया है कि हजरत अमीर कुलाल (रहम०) की ज़ुबान से यह कलमा निकला (बात निकली) वही हमारे रूहानियत की राह में मुब्तला (तल्लीन) होने का सबब हुआ, इस वास्ते कि अगर हम उसी तरह हजरत ख्वाजा अमीर कुलाल (रहम०) की मुताबअत में लगे रहते बला से दूर और सलामत से करीब होते (सुरक्षित रहते)।

इसी समय मैंने एक रोज ख्वाब में देखा कि हजरत हकीम अनाँ (कु० सि०) ने जो

बड़े प्रतिष्ठित मशायख तुर्क से थे मेरी किसी दर्वेश से सिफारिश की है। सुबह को जब मैं जगा तो उस दर्वेश की' शक्ल मुझे खूब याद भी। यह ख्वाब मैंने अपनी पूज्य दादी जी से जो बहुत बड़ी, साधक थी बयान किया। उन्होने फ़रमाया कि तुम को मशायख (तुर्क। (तुर्किस्तान के सन्तों) से हिस्सा पहुँचेगा (रूहानियत की तालीम हासिल होगी) । मैं हमेशा उस दर्वेश की तलाश में रहा करता था। एक रोज बुख़ारा के बाजार में मुलाकात हुई। मैंने उसको पहिचान लिया। उसका नाम खलील था, लेकिन उस वक्त उससे सुहबत न हुई (सत्संग न हुआ)। जब मैं अपने मुकाम पर वापस आया तो एक कासिद (सन्देश-वाहक) ने मुझ से कहा कि 'ख़लील' दर्वेश तुझको बुलाते हैं। यह सुन कर मैं फौरन कुछ हदिया (भेंट) लेकर बशौक तमाम उनकी खिदमत में हाजिर हुआ और चाहता था कि अपना रबाब उनसे बयान करूँ। उन्होने फ़रमाया कि 'जो कुछ तुम्हारे दिल में है, वह मुझ पर अयाँ (प्रकट) है। कुछ कहने की जरूरत नहीं।' इससे मेरे दिल में एक और मेल मुहब्बत पैदा हो गयी ओर उनकी सुहबत में अजीब-अजीब अहवाल मुशाहिदा हुए (विचित्र आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हुई।)

संयोग से थोड़े दिनों के बाद वह दर्वेश चले गये और बहुत दिनों के बाद मुझको खबर हुई कि वह मावराउल नहर के बादशाह हो गये हैं। कुछ दिनों के बाद मुझे एक मुक़दमे के सिलसिले में उनकी मदद की जरूरत हुई। वह मुक़द्दमा खत्म होने के बाद उन्होंने मुझको मुलाज़मत (नौकरी) और खिदमत के वास्ते फ़रमाया। मैं सहर्ष उनकी सेवा में रहने लगा। उन दर्वेशा की बादशाह की हालत में भी मैंने बड़े-बड़े रूहानी हालात देखे। मेरे ऊपर निहायत मेहरबानी फ़रमाते थे। आदाबे खिदमत (सेवा के शिष्टाचार) की तालीम देते, चुनाँचे वह तालीम मुझको इस रास्ते में बहुत काम आई। मैं छः साल उनकी खिदमत में रहा। मजलिसे आम (सामान्य लोगों को मजलिस) में इनके आदाबे सल्तनत (राजकीय कार्यों से सम्बन्धित बादशाही हुक्म) बजा लाता और तनहाई में महरम खास (खास दोस्त) था और अपने दरबार के खास लोगों के सामने अक्सर फ़रमाते थे कि जो शख्स महज (केवल) रजाए अल्लाह (ईश्वर की खुशी) के वास्ते खिदमत करता है वह खल्क (दुनिया) में बुजुर्ग (श्रेष्ठ) होता है। मुझको मालूम होता था कि इस फ़रमाने से क्या मतलब है और किस को कहते है। इसके बाद मैं सात साल तक हजरत ख्वाजा मुहम्मद आरिफ़ (रहम॰) की खिदमत में रहा, जो

हजरत सैय्यद अमीर बुलाल (रहम०) के खलीफा थे और मुझ से कई साल पहले उनसे तरबियत पा चुके थे और साहबे तसर्रुफ व करामत थे (ऋद्धियों-सिद्धियों से युक्त पूर्ण समर्थ सन्त थे।)

आपने फ़रमाया कि 'जब मैं हज से वापस तूस पहुँचा तो शाह मुअजुद्दीन हुसैनी बादशाह हेरात का कासिद (पत्रवाहक) खत लेकर मेरे पास आया जिसमें बादशाह ने लिखा था कि मैं चाहता हूँ कि आपके दर्शन करूँ लेकिन हाजिर होना निहायत मुश्किल है। इस पर मैं इस कथन के अनुसार 'व अमस्साइला फ्लातनहर व इजारएताली तालबन फकुन लहू खादमाँ' (लेकिन फकीर को न झिड़को व जब किसी को मेरा तालिब देखो तो उसके ख़ादिम बन जाओ) हेरात की तरफ खाना हुआ। जब बादशाह के पास पहुँचा और फकीरों का सत्संग शुरू हुआ, बादशाह ने मुझ से दरियाफ्त किया कि 'क्या आपको मशीखत (गुरु पदवी) आ जज़्बा बा और अजदाद (बाप-दादा) से बतरीक अरस (विरासत में पहुँचा है? मैंने कहा कि 'नहीं, जज्बए इनायत इलाही मुझ पर पहुँचा (ईश्वर कृपा मुझ पर हुई) और बिला किसी रियाजत (साधना व अभ्यास के कुबूल फ़रमाया (स्वीकार किया) और बाइशारा हक्कानी। ईश्वरीय सकेत से) हजरत ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज्दवानी (रहम०) की रूहपाक (पवित्र आत्मा) से तरबियत पायी। उनके यहाँ इन चीजों में से कुछ न था (साधना ओर ईश्वर आराधना का ऐसा तरीका नहीं था जैसा आपके यहां है।)" बादशाह ने दरियाफ्त किया कि 'उनके यहाँ क्या है " मैंने कहा कि 'जाहिर बाखल्क व बातिन बाहक'। बादशाह ने कहा कि 'क्या ऐसा हो जाता है " मैंने कहा कि 'हाँ हा जाता है। अल्लाह फ़रमाता है' 'ऐसे लोग जिन को तिजारत सौदागरी और बेचना अल्लाह की याद से गाफिल नहीं करता।' मैंने कहा कि हमारे ख्वाजगान का वसूल है (सिद्धान्त है) 'खिलवत दर अन्जुमन, व सफर दरवतन, व होश दरदम व नजर बरकदम। इसके अलावा जो हुजूर जौक जिक्र जहर व समाअ (संगीत) में होता है उसको कयाम नहीं (उसमें स्थिरता नहीं) और अगर वकूफेकल्बी पर मुदावमत हो (हमेशा इसका अभ्यास किया जाये) तो जज़्बा पैदा होता है और जज़्बा से काम तमाम हो जाता है (लक्ष्य पूरा हो जाता है)। हकीकत जिक्र खुफिया 'बकूफ क़ल्बी' से हासिल होती है और फिर ऐसा होता हे कि दिल को खबर नहीं होती कि जिक्र में मशगूल है क्योंकि बुजुर्गों का फरमाना है कि 'इन्न अलेमल

कल्बो इन्नहू जाकुरन फालम इन्नहू गाफिल' (यानी अगर मालूम हो कल्ब को कि वह ज़ाकिर है, पर जान कि तहकीक कि वह गाफिल है) व इस आयत के बारे में कि 'दिल में अपने खुदा की याद गिड़गिड़ा के और डर के करो' हसन रहमतुल्लाहु अलैहि ने कहा है कि अपनी याद इलाही को अपने नफ़्स पर जाहिर न करो कि तुम बदले के खास्तगार बनो। बाज बुजुर्गों का कौलहे (कथन है) कि 'जबान से यादे खुदा करना बेहूदा गोई है और दिल से अल्लाह की याद करना बस्बसा (भ्रम) है। आपने यह बेत पढ़ी :-

दिल रा गुफ्तम बयादे ऊशाद कुनम गुफ्त,
चूँमन हमा ऊ शुदम केरा याद कुनम।

(मैंने दिल से, कहा कि अल्लाह की याद से दिल को खुश करूँ। दिल ने जवाब दिया कि जब मैं खुद खुदा हो गया तब किस को याद करूँ।)

कहा जाता है जब हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम॰) बादशाह की इस्तदुआ (निवेदन) से हेरात में बादशाही मकान में दाखिल हुए, खादिमों, अमीर व वजीर जिस पर नजर डालते सब बेताब (व्याकुल) हो जाते। दूसरी मरतबा जब हजरत हज जाने लगे तो सिर्फ मौलाना जैनुद्दीन (कु॰सि॰) से मुलाकात के लिये हेरात गये और तीन रोज तक उनसे सत्संग हुआ। एक रोज बाद नमाज सुबह मौलाना ने हजरत ख्वाजा (रहम॰) से कहा 'ऐ ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम॰)। कृपा कर तवज्जोह फ़रमायें।' हजरत ख्वाजा रहम॰ ने विनम्रता पूर्वक बड़ी आज़ीज़ी व इन्कसारी के साथ फ़रमाया 'आमदेम तानक्श बरेम' शायद उसी रोज से हजरत ख्वाजा का लकब (उपाधि) नक्शबन्द हुआ। इस हज से वापस आकर बाकी उम्र आप बुख़ारा में ही रहे और कही नहीं गये।

आपने फ़रमाया कि 'एक रोज मैं हजरत अमीर कुलाल (रहम॰) की खिदमत में जा रहा था। रास्ते में हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम एक सवार के जामे में (वेशभूषा में) नजर आये। हाथ में एक बड़ी लकड़ी भेड़ चराने वालों की तरह लिये हुए और कुलाह (टोपी) पहने हुए मेरे पास आये ओर तुर्की जबान में कहा 'तुमने घोड़े को देखा है ?' और उस लड़की से मुझको मारा। मैंने उनसे कुछ न कहा और उन्होंने चन्द मरतबा मेरा रास्ता घेर कर मुझको मुशब्बश (परेशान) किया। मैंने कहा' कि मैं तुम को जानता

हूँ कि तुम खिज्र अलैहिस्सलाम हो।' अव्वल मुसाफिर खाना तक वह मेरे पीछे आये और कहा "ठहर जाओ, कुछ देर पास-पास बैठें।" मैंने कुछ ध्यान न दिया। जब हजरत सैय्यद अमीर (रहम०) के पास पहुँचा, देखते ही फ़रमाया कि 'राह में हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई, तुमने कुछ ध्यान न दिया।' मैंने कहा कि 'जी हाँ, चूँकि आपकी तरफ मुतवज्जह था, उनकी तरफ इल्तफात न किया (ध्यान न दिया)।' आपने फ़रमाया कि हमारे ख्वाजगान की निस्बत चार वजह से है, एक हजरत ख्वाजा खिज्र अलैहिस्सलाम, दूसरे जुन्नैद बगदादी (रहम०), तीसरे हजरत बायजीद बस्तामी (रहम०) से कि जो इनको हजरत अली (रजि०) के ज़रिये से पहुंची है और चौथे जो उनको हजरत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मिली है। और इसी वजह से इनकी निस्बत को नमक (लावण्य, रौनक) मशायख कहते हैं। फ़रमाया हमारा रोजा नफी मासिबा अल्लाह से (ईश्वर के अलावा और किसी को न मानना) और नमाज 'कअन्नका तराअहु (जैसे कि तुम अल्लाह को देख रहे हो) है। यह शेर भी आपकी ही है --,

ता खैतो दीदअम ऐ शमाँ तराज
ने कार कुनम न रोजा दारम न नमाज
चूँ बा तू बुअम मजाजे मन जुम्ला नमाज
चूँ बे तू बुअम नमाजे मन जुम्ला नमाज

(ऐ महबूब हकीकी (खुदा) जब से मैंने तेरे चेहरे को देखा है, न मैं कोई काम करता हूँ, न रोजा रखता हूँ, न नमाज पढ़ना हूँ। जब मैं तेरे साथ होता हूँ तो मेरी नमाज यही है और जब तेरे साथ नहीं होता हूँ, तब भी मेरी वही नमाज है।)

फ़रमाया कि 'वकूफकल्बी और वकूफ अद्दी' में बाइख्तियार (जानबूझकर) आँखें बन्द न करना चाहिये कि यह सब इत्तला खल्क है। हजरत उमर (रजि०) ने एक शख्स को गरदन झुकाये बैठे देखा, फ़रमाया "ऐ गरदन वाले, अपनी गरदन ऊंची करो।" जिक्र इस तरह करना चाहिये कि मजलिस में किसी को मालूम न हो कि तुम क्या कर रहे हो, क्योंकि हकीकत इखलास (निश्छल प्रेम) वादफनाँ हासिल होती है। जब तक बशरीयत गालिब है मुयस्सर नहीं।

साकी कदमे कि नीम मस्तेम, मखमूर सबाहे अलस्तेम।

मारा तू बमा ममाँ कि तामा, बाखवीश्तनेम बुत परस्तेम।

(ऐ साक़ी एक प्याला हमको दे कि हम आधे मस्त (नशे में) हैं। अलस्त के दिन (श्रष्टि की उत्पत्ति का दिन) की शराब के नशे में चूर हुँ। तू हमारी तरह अपने को न दिखा कि जब तक हम अपने साथ हैं (अपने होश में हैं), गोया बुतपरस्ती कर रहे है (मूर्ति पूजा कर रहे है)।

फ़रमाया जिक्र 'रफा गफलत' (उसकी याद की असावधानी दूर करने) का नाम है। जिस वक गफलत रफा हो गयी तो ज़ाकिर है और यद्यपि साकित (मान) हो कि रिआयत (ध्यान) 'बकूफ कल्ब हर हाल में चाहिये यानी खाने में, बात करने में, सुनने में, खरीदने में, बेचने में, इबादत में, नमाज में, कुरान शरीफ़ पढ़ने में, लिखने में, पढ़ने में और बाज फ़रमाने में एक लमहा (क्षण) गाफिल न हो जिससे मकसूद (लक्ष्य) हासिल हो।

यक चश्म जदन गाफिल अजाँ माह न बाशी,
शायद कि निगाहें कुनी आगाह न बाशी।

(एक पलक झपकने के बराबर भी उस चाँद (महबूब) से गाफिल न हो। हो सकता है कि तुम किसी और तरफ निगाह करो और उसकी तरफ आगाह न हो।)

बुजुर्गों का फरमाना है कि बकदर पलक झपकने के अल्लाह तआला से गाफिल होगा तो बाकी सारी उम्र इस नुकसान का तदारुक (सुधार) न कर सकेगा। बातिन का निगाह रखना निहायत मुश्किल है, लेकिन बइनायत हक सुबहाना तआला (ईश्वर कृपा से) व तरबियत खासाने हक (पूर्ण समर्थ सतगुरु की रूहानियत की तालीम से) जल्द मुयस्सर हो जाता है।

बेइनायत हक व खासाने हक, गर पलक बाशद स्याह हस्तश वरक (खुदा की मेहरबानी के बगैर अगर आसमान की तरफ नजर करोगे तो एक काला वरक दिखायी देगा)।

और यह आगाही की हालत दोस्ताने खुदा (ईश्वर भक्तों) की सुहबत में, जो हम सबक (पीर भाई) हों और एक दूसरे के मुन्किर (आलोचक) न हों और शराए सुहबत बजा लाये (सत्संग के शिष्टाचार का अनुकरण करते हो), जल्द हासिल हो जाती है और कामिल और संक्रमित (पूर्ण समर्थ सतगुरु) के एक इल्तफात (कृपा दृष्टि) से इस

क़दर तस्किया बातिन होता है (आत्मिक पवित्रता आती है) कि रियाजत कसीरा (अत्यधिक अभ्यास) से भी नहीं हो सकता।

फ़रमाया अरबाब इर्शाद (सतगुरु) तीन किस्म के होते हैं। कामिल, कामिले मुकम्मल, व मुकल्लिद। कामिले मुकम्मल नूरानी (स्वयं प्रकाशवान) व नूर बख्श (दूसरों को प्रकाश देनेवाला) है। कामिल नूरानी है मगर नूरबख्श नहीं। मुकल्लिद (अनुयायी) वह जो बहुक्म शेख काम करे। फ़रमाया मुरशिद (सतगुरु) क़ुतुब होना चाहिए या क़ुतुब का खलीफा होना चाहिए (क़ुतुब ऐसे संत को कहते हैं जो ईश्वर के हुक्म और प्रेरणा से किसी निश्चित स्थान अथवा क्षेत्र में लोगों को रूहानियत का तालीम देते हो)। हर हाल में अपने को जिक्र में मशरूफ रखे। साकिनान तरीकत (अध्यात्म के मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलने वाले) दो किस्म के होते हैं। एक वह जो रियाजत, मेहनत व मुजाहिदा, करते हैं और इनके समरात (फल) पाते हैं और मकसूद (लक्ष्य) को पहुँचते है और एक फज्ली (कृपाकांक्षी) हैं कि सिवा फज्ल खुदा कुछ नहीं जानते। तौफीक (सामर्थ्य), ताअत (आराधना) व रियाजत भी उसके फज्ल से जानते हैं। यह तायफा (इस श्रेणी के लोग) जल्द मकसूद को पहुँचता है। 'अल हकीकतः तर्क मुलाहजलुक अमल ला तर्कुल अमल' (हकीकत अमल छोड़ देने का नाम नहीं है, बल्कि अमल पर इतराने का तर्क करना हकीकत है अर्थात् वह परम सत्य (ईश्वर) कर्म त्याग में नहीं प्राप्त होता, वरन कर्म करने में कर्तापन के अहंकार का त्याग करने से ही उसको प्राप्ति सम्भव है।) फ़रमाया कि जो शेख सुबह व शाम जिक्र में मशगूल रहे वह गाफिल से नहीं है बल्कि जाकिरों से होता है बहुक्म आयत शरीफ 'अपने खुदा को याद गिड़गिड़ा कर और पोशीदा तौर से अपने दिलों में करो और आवाज तुम्हारी बुलन्द न हो। सुबह शाम दोनों वक्त याद करो और अल्लाह की याद से गाफिल होने वालों में न बनो'।

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम० फ़रमाया करते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शा (रहम०) की बरकत से तालिब अव्वल कदम पर सआदत मराकबा से मुशर्रफ होता है (पहली तवज्जोह में ही 'मराकबा' की हालत पैदा हो जाती है) और जिस वक्त ज्यादा तवज्जोह फ़रमाते अदम पर पहुँच जाता (अपने होश में नहीं रहता) और अगर ज्यादा तवज्जोह फ़रमाते मुक़ामे 'फना' पर पहुँच जाता। उस वक्त हजरत

ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) फ़रमाते कि मैं सिर्फ वास्ता (जरिया) था। अब मुझ से मुन्कता करके (अलग होकर) मकसूद हकीकी से पैबस्त होना चाहिये। यानी फ़नाफ़िश्शेख के (अपने 'पीर में लीन होने के) मुकाम से बढ़कर फ़नाफ़िल्लाह (ब्रह्मलीन होने) के मुकाम पर पहुँचना चाहिये) फ़रमाया इबादत तलब वुजूद है (जब तक हमें यह ख्याल बना है कि हम ईश्वर की आराधना कर रहे हैं तब तक हम अपनी ही हस्ती (अस्तित्व) की तलब (ख्वाहिश) में हैं व अबूदीयत (ईश्वर का सच्चा सेवक होना) तलब वुजूद है (अपनी हस्ती को अर्थात् ख़ुदी को मिटा देना है)। फ़रमाया अगर तू मुकाम इब्दाल (अपनी मौजूदा हालत से बदली हुई हालत में) पहुँचना चाहना है तो मुखालिफ नफ़्स कर (अपने मन अर्थात निम्न वासनाओं से विद्रोह कर) फ़रमाया कि अहले हक (महात्मा, संत) बारे खल्क (दुनिया का बोझ अर्थात् दुनिया वालों को ईश्वर भक्ति की ओर आकर्षित करने का दायित्व) इस सबब से खींचते हैं कि तहजीब इख्लाक हो (लोग शिष्टाचार व सदाचरण ग्रहण करें) या किसी वली (संत) से मुलाकात हो क्योंकि कोई ऐसा वली नहीं है जिस पर अल्लाह तआला की नजर (कृपा दृष्टि) न हो। जब उस वली से मुलाकात होती है इस नजरे इलाही (ईश्वर की कृपा दृष्टि) से फैजयाब होता है।

फ़रमाया कि इस राह में साहिबे पिन्दार (अहंकारी) का काम बहुत मुश्किल है -

गरचे हिजाबे तू वरूँ अज हदस्त,
हेच हिजाबत चूँ पिन्दार नेस्त।

यद्यपि तेरे परदे शुमार से बाहर है, लेकिन कोई तेरा पर्दा अहंकार करने से बढ़कर नहीं हैं)। फ़रमाया कि दर्वेश को चाहिये कि जो कुछ कहे हाल से कहे। जो शख्स बिला हाल कहता है वह उस हाल को नहीं पहुँचता। फ़रमाया यह जरूरी नहीं कि जो दौड़े उसको गेंद मिल जाये, मगर मिलती उसको है जो दौड़ता है। इससे इशारा दवाम (नित्यता) कोशिश व सई (प्रयत्न) का हैं। (अर्थात् मनुष्य को हमेशा अपने सतगुरु द्वारा बतलाये हुये साधना के अभ्यास में प्रयत्न के साथ लगे रहना चाहिये फ़रमाया कि औलिया (परम सन्तों) को इस्त्रार पर इत्तला देते है (ईश्वर की ओर से गुप्त बातें प्रकट होती हैं) मगर बिला इजाजत इजहार (प्रकट) नहीं करते। फ़रमाया, 'जो रखता है वह छिपाता है और जो नहीं रखता वह चिल्लाता है'। फ़रमाया कि मुझ से जो कुछ

इजहार खातिर व आमाल व अहवाल खल्क सादिर होता है (मेरे द्वारा जो विचार, कर्म व रूहानी हालतें प्रकट होती हैं), मेरा इसमें कुछ दरमियान (दखल, मध्यस्थता) नहीं। इलहाम से मुझको मुइत्तला कर देते हैं ' ईश्वरीय प्रेरणा से मुझे मालूम हो जाता है)। फ़रमाया तस्हीह नियत (भावना को शुद्ध रखना) हर अम्र (कर्म) में निहायत जरूरी है क्योंकि नियत (भावना) वही चीज़ है (जिस भावना से कर्म किया जाता है वही यथार्थ कर्म है)। कस्ब उद्यम, पुरुषार्थ) का उस अम्र से ताल्लुक नहीं (कर्म पा मूल्यांकन उसकी भावना से होता है, न कि उस कम के लिये किये गये पुरुषार्थ या उद्यम से)।

कहा जाता है कि एक मरतबा किसी ने आपसे करामत (चमत्कार) तलब की। आपने फ़रमाया कि करामात जाहिर है कि बावजूद इस क़दर गुनाहों के जमीन पर चलता हूँ और धँस नहीं जाता। कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (रहम०) कस्र आरफा में थे कि हजरत अमीर बुरहानुद्दीन पिसर (पुत्र) अमीर सैय्यद कुलाल (रहम०) रोटियाँ लाये और तन्दूर में पकाने लगे। यकायक बादल छा गये और पानी बरसने लगा। सब हैरान रह गये। इसी समय में हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) से फ़रमाया कि बारिश से कहो कि जब तक हम इस जगह हैं यहाँ न आये। अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) ने उज्र किया कि मेरी क्या मजाल कि मैं इस किस्म का बात कहुं। हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (कु०सि०) ने फ़रमाया कि हम तो कहते है कि कह दो अमीर बुरहानुद्दीन (रहम०) के इम्तसाल अम्र (आज्ञापालन) में इसी तरह कह दिया। अल्लाह तआला की क़ुदरत से उस जगह पानी एक बूँद न बरसा और सब जगह बरसता रहा।

फ़रमाया करते थे कि जब मेरा वक्त आखिर आयेगा तो सबक मरना सिखाऊँगा। चुनाँचे जब आपका वक्त आखिर आया, नफ़्स आखिर में (अन्तिम साँस में) दोनों हाथ दुआ के वास्ते उठायें और देर तक दुआ माँगते रहे। जब बाद दुआ दोनों हाथ मुँह पर फेरे, जान बचाना तस्लीम को (पार्थिव शरीर त्याग दिया)। आपको उम्र 73 बरस की थी बतारीख तीन रबीउलअव्वल बरोज दोशम्बा 751 हिजरी को इन्तकाल फ़रमाया।

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजऊन, (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ पलट जायेंगे।')

आपने वसीयत फ़रमायी थी कि मेरे जनाज़े के आगे कल्म ए शहादत' व कुरान

शरीफ न पढ़े कि बेअदबी है बल्कि यह रुबाई पढ़े :

मुफलिसाने आमदा दर कुए तो,
शयन लिल्लाह अज जमाले रुए तो,
दस्त बकुशा जानिबे जम्बील मा,
आखिरी बर दस्तो बर बाजुए तो।

(तर्जुमा-हम मुफ़लिस लोग (निर्धन, कंगाल) तेरी गली में आये हैं। अपने चेहरे के जमाल से कुछ हमको भी अता कर। हमारे जम्बील (थैला, झोला जो भिखारी लिये रहते है) की तरफ हाथ बढ़ा। तेरे बाजू (भुजायें) और तेरे हाथ को धन्यवाद।

❶❼

18. हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कुद्स सिर्रहू)

आपकी मजार देनऊ में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

18. हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कुद्स सिर्रहू)

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) हजरत ख्वाजा वहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के प्रथम खलीफा तथा उनके दामाद थे। बचपन से ही अध्यात्म में आपकी विशेष रुचि थी। अपने पूज्य पिता जी के शरीरान्त के पश्चात आपने अपनी पैतृक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनना स्वीकार नहीं किया और अनासक्ति भाव से एक पवित्र एव संयमित जीवन व्यतीत करते हुए बुख़ारा के एक मदरसे में विद्याध्ययन में लगे रहे। अभी आप बालक ही थे कि एक रोज हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने आपकी पूज्य माता जी से फ़रमाया कि जब अलाउद्दीन बालिग हो (युवावस्था को प्राप्त हो) तो मुझको खबर करना। अतः जब हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) बालिग हुए, तब एक रोज हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) कस्र आरिफान से बुख़ारा तशरीफ लाये और उस मदरसे में जहाँ हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) विद्याध्ययन करते थे गये। वहाँ आपने देखा कि हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) एक कोने में फटे हुए बोरिया पर ईट सिरहाने रखे हुए कोई पुस्तक पढ़ रहे है। आप हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) को देखकर उनके स्वागत के लिये तुरन्त उठ खड़े हुए और उनको सम्मान सहित अपने स्थान पर बैठाया। बातचीत के सिलसिले में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने फ़रमाया कि मेरी लड़की आज बालिग हुई है, अगर तुम स्वीकार करो तो उसका तुम से विवाह कर दूँ। आपने अर्ज किया कि यह मेरा परम सौभाग्य होगा, परन्तु मेरे पास कुछ सामान नहीं है। हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने फ़रमाया कि मेरी लड़की के भाग्य में उसकी रोजी (जीविका) निर्धारित है अतः वह खजाना गैब (परोक्ष) से पहुँचाता रहेगा, तुम इसकी चिन्ता मत करो। इस प्रकार हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की सुपुत्री का शुभ विवाह हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से हो गया।

हजरत बहाउद्दीन अत्तार (रहम०) विवाहित होने के पश्चात् ही हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से रूहानियत (ब्रह्म विद्या) की तालीम हासिल करने के लिये उनकी सेवा और सत्संग में जाने लगे। हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की आप पर विशेष कृपा दृष्टि रहती थी। अपने पास आपको बैठाया करते थे और जल्द-

जल्द आपकी ओर अपना ध्यान आकृष्ट करते थे। अतः थोड़े ही समय में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (कु० सि०) ने हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) को आध्यात्मिक साधना में हर प्रकार से पारंगत एवं पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति तक पहुँचा कर अपने सभी तालिबों (अध्यात्मविद्या के जिज्ञासुओं) को उनके सुपुर्द कर दिया। आप फ़रमाया करते थे कि अलाउद्दीन ने मुझे तालिबों को अध्यात्म की शिक्षा दीक्षा देने के भार से मुक्त कर दिया है।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के शरीरान्त के पश्चात् उनके सभी असहाब ने हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) से बैअत की (दीक्षा ली)। यहाँ तक कि हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) ने भी, जिनके विषय में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने फ़रमाया था कि जो मुझको देखना चाहे वह मुहम्मद पारसा (रहम०) को देखे, हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से बैअत की।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) को मजलिसों (सम्मेलनों) में अपने पास बिठलाते और हर क्षण उनकी आन्तरिक स्थिति की निगरानी करते। आपके कुछ खास मुरीदों ने आपसे ऐसा करने का कारण पूछा। आपने फ़रमाया कि मैं उसको अपने पास बिठलाता हूँ ताकि नफ़्स (मन) का भेड़िया उसको न खाये। उसके नफ़्स का भेड़िया उसके घात में है। इसीलिये हर क्षण उसकी आन्तरिक स्थिति की देखभाल करता हूँ। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि वह खुदा के नूर का मज़हर हो जाये (अर्थात् उसके स्वरूप में ईश्वर की ज्योति प्रकट हो)।

हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) ने फ़रमाया कि एक बार जब मैं हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा और सत्संग में जाने लगा, तब कुछ ही दिनों बाद शेख़ मुहम्मद दरआहनीन ने मुझ से सवाल किया कि दिल तेरे नजदीक किस कैफियत से है (तुम्हारे हृदय की क्या दशा है)। मैंने कहा उसकी कैफियत मुझे नहीं मालूम। उसने कहा कि दिल मेरे नजदीक माह सिह रोजा के मिस्ल है (तृतीया के चन्द्रमा की तरह है)। इसके बाद मैंने हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से उस शेख़ के दिल की कैफियत अर्ज की। आपने फ़रमाया कि वह शेख़ अपने दिल की कैफियत बयान करता है। आपने जब यह बात मुझ से कही उस समय आप एक जगह खड़े हुए

थे और मैं भी उनके नजदीक खड़ा था। आपने अपने एक पैर को मेरे पैर पर रखा। तत्काल मेरी एक विचित्र स्थिति हो गई। मुझे अपने हृदय में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दिखलाई देने लगा। जब वह स्थिति समाप्त हुई हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने मुझ से फ़रमाया कि दिल की कैफियत यह है न कि वह। तू दिल के हाल (दशा) का इद्राक (बोध, ज्ञान) कब कर सकता है। दिल की बुज़ुर्गी (महानता) वर्णन के परे है। इस हदीस का भेद कि 'जो कुछ जमीन और आसमान में नहीं समा सकता, वह दिल में समा सकता है' कुछ और सूक्ष्म और गूढ़ बातों से सम्बन्ध रखता है। जो शख्स दिल को पहिचाने सो पहिचाने। कहा जाता है कि बुख़ारा में एक बार धर्मशास्त्र के विद्वानों में 'रूयत हक' और 'अदम रूयत हक' में बहस छिड़ गई। (रूयत का अर्थ है 'देखना, साक्षात्कार करना' तथा हक का अर्थ है 'ईश्वर'। विद्वानों का वह समुदाय जो 'रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास करता है उसके मतानुसार ईश्वर का दर्शन अथवा साक्षात्कार किया जा सकता है और 'अदम रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास करने वाले विद्वानों का यह मत है कि ईश्वर का दर्शन नहीं किया जा सकता और मनुष्य जो कुछ करता है स्वयं करता है। ईश्वर कुछ नहीं करता। इस सिद्धान्त के मानने वाले 'मोतज़ला' सम्प्रदाय के अनुयायी कहे जाते हैं।) इन दोनों सिद्धान्तों के मानने वाले विद्वानों ने बिना आपसी मतभेद के यह तय किया कि बहस का निर्णय हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से कराया जाये और वह जो निर्णय करेंगे हम सभी को मान्य होगा। दोनों समुदाय के विद्वान एक साथ मिलकर हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में उपस्थित हुए और उनके सामने अपनी समस्या को रखा और निवेदन किया कि आप ही इस समस्या के निर्णायक है, आप जो कुछ निर्णय करेंगे हम सभी को मान्य होगा। हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) ने उस समुदाय के लोगों से जो 'रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते थे फ़रमाया कि तुम लोग तीन दिन बराबर हमारे सामने आओ और हमारे सत्संग में पूर्ण पवित्रता के साथ बैठो और बिलकुल चुप रहो, ताकि उसके बाद हम निर्णय करें। वह लोग तीन रोज बराबर हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में आते रहे और चुपचाप बैठते रहे। अन्तिम तीसरे दिन उन सब लोगों की ऐसी कैफियत (दशा) हुई कि बेख़ुद (बेहोश) हो गये और जमीन पर लौटने लगे। थोड़ी देर बाद जब होश में आये,

उठे और बड़ी ही विनम्रता और दीनता के साथ निवेदन किया कि हमें अब पूर्ण विश्वास हो गया कि 'रूयत हक' है (अर्थात ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है)। इसके बाद वह सभी लोग हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में उपस्थित होने लगे और उनसे बैअत (दीक्षित) हुए। उस मजलिस में आपके कुछ असहाब ने यह बैत पढ़ी थी :-

कोरे आँ कि गोएदत बन्दा बहक कुजा रसद,
बरकफे हर यके बेनह शमए सफा कि हम चुनी ।

(अर्थ-वह अन्धा है जो कि तुझ से कहता है कि बन्दा खुदा तक कैसे पहुँचे? उसके हाथ पर शमा रख दे जलती हुई और उसको बता कि इस तरह।)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) के एक पत्र में यह लिखा हुआ देखा गया है कि ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) ने अपनी अन्तिम बीमारी के समय एक बार यह फ़रमाया था कि ईश्वर की दया कृपा से अपने पीर मुरशिद हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के ध्यान में अगर हम चाहें तो सारा संसार मकसूद हकीकी को पहुँच जाये (जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त हो जाये)।

शेर-

गर न टूटे दिल और जबाने राज,
कुफ्ल दुनिया तमाम देता खोल ।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) फ़रमाते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के खलीफा हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) को तवज्जोह और मराकबा (ध्यान) में गैबत (बेख़ुदी, बेहोशी) बहुत होती थी और हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) को गुजर (होश विवेक) और वुकूफ़ (सचेतन अवस्था) अधिक होता। और इस शुऊर और सह्व (सजगता) की विशेषता को गैबत (बेहोशी) से श्रेष्ठतर माना गया है।

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) सत्संग के समय जो उपदेश देते थे उनको हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) ने संकलित किया था। उसी संकलन में से प्रसाद रूप में सात उपदेश नीचे दिये जा रहे हैं -

(1) फ़रमाते थे कि रियाज़त (सत गुरुदेव द्वारा बतलाई हुई किसी साधना के

अभ्यास) का लक्ष्य तअल्लुकात जिस्मानी नफीकुल्ली और दूर करना (स्थूल शरीर की दसों इन्द्रियों द्वारा होने वाली समस्त क्रियाओं में कर्तापन की भावना एवं आसक्ति से अपने को मुक्त करना) और परमात्मा तथा सतगुरुजनों की महान पवित्र आत्माओं की ओर अपने चित्त को पूर्ण एकाग्रता के साथ उन्मुख करना है। सुलूक (ईश्वर प्राप्ति के लिये किये जाने वाले समस्त व्यवहार एवं साधनाओं) का उद्देश्य यह है कि बन्दा (ईश्वर भक्त) स्वेच्छा से पूर्ण संकल्प के साथ अपने सभी कर्मों और क्रिया कलापों को तटस्थ दृष्टा की तरह देखता रहे और इन सभी क्रिया कलापों में कर्तापन की भावना एव आसक्ति का भी सावधानीपूर्वक निरीक्षण करता रहे, क्योंकि हमारे सभी कर्मों में यही आसक्ति एवँ कर्तापन की भावना ही, भक्ति मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। परन्तु किसी कर्म या व्यवहार में इन दोनों ही वृत्तियों का क्षणिक ठहराव भक्ति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न नहीं करता। हाँ, जब साधक अपने किसी कर्म में इन वृत्तियों का ठहराव और प्रभाव देखे तो तुरन्त परमात्मा से दिली तौबा करते हुए इन वृत्तियों से मुक्ति पाने के लिये आर्द्र आराधना करनी चाहिये। हमारे हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) अपने जीवन के समस्त व्यवहार एवं कर्मों में कर्तापन तथा आसक्ति की भावना से इस सीमा तक मुक्त थे कि वह जब नया कपड़ा पहिनते अव्वल कहते थे कि यह फलाने का है और उसे मिस्ल मुस्तआर (किसी से माँगी हुई चीज की तरह) पहिनते।

(2) फ़रमाते थे कि हमारे महान सतगुरुजनों ने कहा है कि 'तौफीक सई के साथ है' (ईश्वर कृपा अथवा वांछित सफलता प्रयत्न करने से प्राप्त होती है)। इसी तरह साधक के लिये सतगुरु की आध्यात्मिक शिक्षा साधक के प्रयत्न के अनुसार फल देती है और यह प्रयत्न भी सतगुरु द्वारा निर्देशित रीति के अनुसार होना चाहिये। यह बात (तौफीक) बगैर सई (प्रयत्न) के बका नहीं पाती (उसमें स्थिरता अथवा स्थायित्व नहीं आता), क्योंकि सतगुरु की तवज्जोह का प्रभाव साधक के साथ कुछ दिनों से अधिक नहीं रहता। स्पष्ट है कि सतगुरु गैर के साथ (उस मुरीद अथवा साधक के साथ जिसका चित्त ईश्वर की ओर उन्मुख होने की बजाये तमाम सांसारिक विचारों और बातों में ही फंसा रहता है) कब तक मुतवज्जह (आकृष्ट) रह सकता है। आप फ़रमाते थे कि ईश्वर की मेरे ऊपर अहेतुकी कृपा ही थी कि मुझे आरम्भ से ही सई

(कोशिश) का हुक्म दिया गया। यहाँ तक कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की सोहबत (सत्संग) में मेरा पूरा दिन सई के साथ व्यतीत होता था (मैं दिन भर हर क्षण परमात्मा के ध्यान में ही व्यतीत करने का प्रयत्न करता था) और मेरी जानकारी में असहाब (सत्संगी भाइयों) में से शायद ही कोई ऐसा रहा हो जो पूरा एक दिन सई के साथ व्यतीत करता हो।

(3) फ़रमाते थे कि जब तालिब (साधक) मुरशिद (सतगुरु) के हुक्म और उसकी मदद से अपने स्वयं को उस हर एक चीज से खाली कर लेता है जो सतगुरु के प्रेम में रुकावट डालती है, तब सतगुरु अपने शिष्य के हृदय में स्थिर हो जाता है। बस ऐसे साधक (शिष्य) के हृदय पर ईश्वर की अहेतुकी दया कृपा और अनेकों अनुपम अनुभूतियों का नजूल (अवतरण) होने लगता है। वास्तव में ईश्वर कृपा में कोई कमी नहीं है। जब तालिब ने मवाने (रुकावटों, अवरोधों) को दूर कर दिया, सतगुरु देव की रूहानियत (आध्यात्मिक साधना) के प्रभाव से साधक को ऐसे-ऐसे अनुभव होते हैं और ऐसी आश्चर्यजनक हालतें गुज़रती हैं, जिनका किसी भी प्रकार से वर्णन किया जाना सम्भव नहीं है।

(4) साधक की आन्तरिक आध्यात्मिक स्थितियों में श्रेष्ठ स्थिति यह है कि हर दशा में 'पूर्ण समर्पण' की भावना बनी रहे। सभी अवतार और संत महात्मा अन्तिम समय तक इसी स्थिति में कायम रहे हैं। ईश्वर भक्त को चाहिये कि वह अपने सभी बाह्य एवं आत्मिक क्रिया कलापों में हर क्षण 'समर्पण' की स्थिति में रहने का प्रयत्न करे। ऐसे साधक के प्रयत्न व साधना के अभ्यास से जो भी हालतें उस पर प्रकट हों उन सब को ईश्वरार्पण करता हुआ वह अपने को ईश्वर इच्छा का निमित्त मात्र समझता रहे। साधक को यह भी चाहिये कि अपने सतगुरु की कृपा से उनके सामने अथवा उनकी अनुपस्थिति में उस पर जो भी हालतें गूजरें उन सभी को ईश्वर कृपा और गुरु कृपा का प्रसाद समझते हुए पूर्ण समर्पण की भावना को ही हर दशा में परिपक्व बनाने का प्रयत्न करता रहे (साधक यही अनुभव करता रहे कि जो भी हालतें मुझ पर गुजर रही हैं वह मेरे प्रयत्न अथवा अभ्यास के कारण नहीं हैं, वरन उन सभी में ईश्वर कृपा और गुरु कृपा को ही देखता रहे। अपने प्रयत्न और अभ्यास के विषय में भी इसी समर्पण की भावना को पुष्ट करता रहे अर्थात यह समझता रहे कि यह उसका प्रयत्न

और अभ्यास भी ईश्वर कृपा और गुरु कृपा से ही हो रहा है। इसी पूर्ण समर्पण की भावना को ही सूफीमत की साधना में 'तफवीज' कहते हैं)।

(5) फ़रमाते थे कि खामोश रहना चाहिये जिससे कि इन विशेषताओं से खाली न हो :- ख़तरों की निगाह दाश्त (उन विचारों की देखभाल करना और रोकना जो हमें ईश्वर की याद से गाफिल अर्थात असावधान करें), हृदय द्वारा जो नाम जप हो रहा है उसके विषय में भी यह देखते रहना कि वह जप निरन्तर हृदय द्वारा होता रहे, तथा अपने ऊपर जो भी हालतें प्रकट होती हैं (जो आत्मिक अनुभूतियाँ होती हैं) उनका मुशाहिदा (निरीक्षण) करता रहे।

(6) फ़रमाते थे कि अगर जीवन शेष है, ईश्वर इच्छा से बड़ी दीनता और विनम्रता के साथ हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की आध्यात्मिक शिक्षा का पहिला तरीका पुनः नये सिरे से ग्रहण करना चाहिये क्योंकि तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) के लिये ख़तरात पर मवाखजः करना अच्छा होता है। (उन विचारों को जो हमें ईश्वर की याद से विरत करते हैं सावधानी से अन्तर निरीक्षण द्वारा पकड़ना और तौबा करके उन्हें दिल से हटाना अच्छा होता है।) हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) अपने जीवन के अन्तिम समय में इस बात पर दुःख प्रकट करते थे कि लोगों को पीर मुरशिद की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) से जो कुछ प्राप्त होता हुए उसकी हिफ़ाज़त ध्यानपूर्वक तन्मयता और लगन के साथ नहीं करते।

(7) फ़रमाते थे कि मैं इस बात का जिम्मेदार होता हूँ कि जो तालिब इस सिलसिले की तरीक (साधना-पद्धति) की तक्लीद (अनुकरण) करेगा निसन्देह परम लक्ष्य को पहुँचेगा और फ़रमाया कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (रहम०) ने मुझे अपनी तक्लीद (अपना अनुकरण) करने का आदेश दिया और जिस चीज में मैंने उनकी पैरवी की (अनुकरण किया), हर बार मैंने असर और नतीजा उसका प्रत्यक्ष देखा।

जब हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन (रहम०) को मर्ज मौत हुआ (मृत्यु लाने वाली अन्तिम बीमारी हुई), उस समय फ़रमाने लगे कि मुझको कोई आरजू (अभिलाषा) दिल में शेष नहीं है सिवा इसके कि दोस्त आयें और मुझको न पाये और दुखी होकर वापस हो जायें। अपनी इसी अन्तिम बीमारी के समय आपने अपने असहाब को उपदेश देते हुए फ़रमाया कि रस्म व आदत को छोड़ दो। (उन आदतों और रूढ़ियों

को त्याग दो जो जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधक हो)। जो कुछ कि रस्म व आदत खल्क (दुनिया) की है उसके खिलाफ करो, क्योंकि हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) का अवतरण इस पृथ्वी पर मनुष्य की इन्हीं रूढियों और आदतों को तोड़ने के वास्ते हुआ था। पीर मुरशिद द्वारा बतलाये हुए सभी कामों को पूरे संकल्प के साथ करो और सुन्नत पर मदावमत करो (उन सभी कार्यों और व्यवहारों का अनुकरण करो जो हजरत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा किये गये हो)। इन उपदेशों को देते हुए आपने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।

आपका शरीरान्त बीस रजब आठ सौ दो हिजरी को हुआ। आपकी मृत्यु के बाद आपके एक मुरीद ने ख्वाब में देखा कि हज़रत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझ पर तरह-तरह की मेहरबानियाँ फ़रमायी जिन में से एक यह है कि जो कोई मेरी कब्र से चालीस फरसंग की दूरी तक दफन होगा वह बख्शा जायेगा (इसके पाप क्षमा किये जायेंगे और उसको मुक्ति प्रदान की जायेगी)।

❶❽

19. हजरत मौलाना याकूब चर्खी (कुद्स सिर्रहू)

आपकी मजार दुशान्बे में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

19. हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहमतुल्लाहु अलैहि)

यद्यपि हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) को गुरु-पदवी का अधिकार हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से प्राप्त हुआ था परन्तु आपको अध्यात्म शिक्षा की पूर्णता हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की सेवा में प्राप्त हुई। यही कारण है कि आप हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) के खलीफाओं में गिने जाते है। आरम्भ में आपने हिरात के जामिअः (विश्व विद्यालय) में तथा कुछ समय मिश्र में विद्याध्ययन किया। इसके पश्चात् आपके हृदय में ईश्वर प्रेम का कुछ ऐसा जज्बा पैदा हुआ कि हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से अध्यात्म शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से उनकी सेवा में उपस्थित होने के लिये रवाना हुये। मार्ग में एक मज्जूब (अवधूत) मिला। उसने कहा कि 'ऐ याकूब, जल्द-जल्द कदम उठा। वह वक्त आ गया कि तू मक़बूलों (ईश्वर के प्यारी) में से हुआ और कुछ खत (रेखाएँ) जमीन पर खींची। मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) ने दिल में ख्याल किया कि यह खत ताक में होंगे (ऐसी संख्या में होंगे जो दो से पूरी-पूरी न कटे) तो मैं यह समझुंगा कि मेरा उद्देश्य पूरा हो जायेगा। अतः उन रेखाओं को गिना तो वह ताक संख्या में ही थी। इसके बाद बुख़ारा में आये। कुरान शरीफ में फाल देखी (शकुन विचारा) तो पहली पंक्ति में आयत निकली 'उलाएक़ल्लजीना हदाहुमुल्लाहो फ़बे हुदहुम इकतदेह' (ये वह लोग हैं जिनकी अल्लाह ने हिदायत की है अर्थात् जिन को अल्लाह ने सन्मार्ग दिखाया है और उनकी रहनुमाई की है। तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करो अर्थात् तुम भी उनके बतलाए हुये मार्ग का अनुसरण करो)। इस इशारा ग़ैबी (ईश्वरीय संकेत) से बहुत खुश हुये और हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुये।

फ़रमाया कि जिस समय मैंने ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से अपना इरादा जाहिर किया, इन्होंने फ़रमाया कि हम तो मामूर हैं (आदेश का पालन करने वाले हैं)। स्वयं कोई काम नहीं करते। आज रात को मालूम करेंगे। जो कुछ इशारा होगा वैसा ही किया जायेगा। हजरत याकूब चर्खी (रहम०) फ़रमाते थे कि जितनी कठिनाई से वह

रात मुझे व्यतीत करनी पड़ी है वैसी कोई रात नहीं व्यतीत हुई। मुझे यह भय था कि देखें वह मुझे अपनी शरण में लेते हैं या नहीं। आखिरकार सुबह की नमाज मैंने हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) के साथ पढ़ी। बाद नमाज उन्होने फ़रमाया कि 'मुबारक' हो, जिससे मैं समझ गया कि उन्होंने मुझे अपनी शरण में लेने के लिये अनुमति प्रदान कर दी है। उन्होने मुझे 'वकूफ अददी' की तालीम फ़रमाया (इस साधना-पद्धति में साधक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि जब ईश्वर-नाम का जप करे तो ताक संख्या में करे अर्थात् वह' संख्या जो दो से पूरी कटे। नक्शबन्दिया सिलसिले के सन्तों का यह फरमाना है कि ऐसा करने में ईश्वर के साथ मुनासबत अथवा लगाव है क्योंकि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया है 'खुदा एक है और इकाई को पसन्द करता है') और फ़रमाया कि जहाँ तक सम्भव हो ताक संख्या का हमेशा ध्यान रखना। जब मुझे हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा में अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करते हुये कुछ समय व्यतीत हुआ, तब हज़रत ने मुझे यात्रा करने का आदेश दिया और यह भी फ़रमाया कि जो कुछ हमसे मिला है बन्दा ने खुदा (ईश्वर-भक्तों) को पहुंचाना और तीन बार फ़रमाया 'तुझको खुदा के सुपुर्द किया, तुझको खुदा के सुपुर्द किया, तुझको खुदा के सुपुर्द किया' और उस वक्त हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की मुताबअत (आज्ञा पालन, अनुकरण) के लिये मुझ से इशारा किया (संकेत रूप में कहा)। मैं उनसे विदा होकर कैश में पहुँचा। वहाँ मुझे सूचना मिली कि हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) का शरीरान्त हो गया। मुझे बहुत ही दुःख हुआ और मैं निराश हो गया। मुझे यह अन्देशा हुआ कि ऐसा न हो कि मेरा दिल इस ब्रह्म विद्या की ओर से हट कर दुनियावी कामों में लग जाये और मुझ में ईश्वर- भक्ति की चाह और लगन ही न रहे। अतः इसी चिंता में कैश से बदख्शाँ आया और वहाँ से चर्ख जाने का इरादा किया, जिससे कि वहाँ लोगों को अध्यात्म की शिक्षा प्रदान करने में अपने को लगाऊँ। इसी बीच हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) का पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने मुझे हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के संकेत रूप में दिये गये उस हुक्म की ओर स्मरण दिलाया जिसमें उन्होने मुझे हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन (रहम०) की मुताबअत (अनुकरण) के लिये कहा था। मैं तुरन्त उस पत्र के मिलते ही उसी समय हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की सेवा उपस्थित हुआ।

उन्होने मेरे ऊपर विशेष दया- कृपा की और मैं बहुत दिनों तक उनके सत्संग से फैजयाब होता रहा, यहाँ तक कि उनका शरीरान्त हो गया। फ़रमाया उस वक्त मेरे दिल में ख्याल आया कि हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की आज्ञा का पालन करने के लिये कोशिश की जाये (उन्होने यह हुक्म दिया था कि जो कुछ हमसे मिला है ईश्वर भक्तों को पहुँचाना) यद्यपि मैं अपने को इस योग्य नहीं पाता, मैंने विचार किया कि हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) का फरमाना हिकमत (बुद्धिमत्ता, विवेक) से खाली न होगा। अतः उन्हीं की प्रेरणा से जिज्ञासुओं और साधकों को ब्रह्म विद्या की तालीम देने में लग गया।

हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) एक विद्वान् लेखक तथा कुरान शरीफ के प्रसिद्ध भाष्यकार थे। सन् 851 हिजरी में आपका शरीरान्त हुआ और दुशान्बे में आपको दफन किया गया।

❶❾

20. हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कुद्स सिर्रहू)

आपकी मजार समरकन्द में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

20. हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कुद्स सिर्रहू)

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कु० सि०) का शुभ जन्म माह रमज़ान 806 हिजरी को ताशकन्द मुल्क के मौजा बागिस्तान में हुआ था। जन्म के चालीस रोज बाद तक निफास की अवधि में (वह अवधि जब प्रसूतिका के शरीर से बच्चा जनने के कारण रक्त-स्राव होता रहता है) आपने अपनी पूज्य माता जी का दूध नहीं पिया। जब वह चालीस रोज बाद स्नान आदि करके पवित्र हो गई तब उनका दूध पिया। आपके पूज्य दादा जी (बाबा) हजरत ख्वाजा शहाबुद्दीन (रहम०) ने, जो क़ुतुब वक्त थे (उस समय के उच्च कोटि के महात्मा थे), अपने प्राणान्त के समय अपने पोतों को अन्तिम बार देखने के लिये बुलाया। उस वक्त जब हजरत उबैदुल्लाह (रहम०) जो बहुत छोटी उम्र के थे उनके पास गये, वह इनको देखकर ताज़ीम (आदर तथा सम्मान) के लिये उठ खड़े हुये और गोद में ले लिया और फ़रमाया कि इस बच्चे के विषय में मुझको बशारत नबवी है (हजरत मुहम्मद सल्ल० ने मुझे शुभ सूचना दी है) कि यह पीर आलमगीर होगा (ऐसा महात्मा जिसका सारे विश्व में नाम होगा) और इससे तरीकत

(ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म) और शरीअत (धर्मशास्त्र) को प्रकाश मिलेगा।

हज़रत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फ़रमाया कि मैं एक व्यापारी से हज़रत ख्वाजा याकूब चर्खी (रहम०) की प्रशंसा सुन कर उनकी सेवा में उपस्थित होने के लिए बलग़नौर स्थान के लिये रवाना हुआ और रास्ते में बीमार पड़ गया और बीस रोज तक जाड़ा बुखार से पीड़ित रहा। इस बीमारी के समय में कुछ लोगों ने मुझ से मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) की चुगली और बुराई की। मैंने चाहा कि वहाँ से वापस हो जाऊं। फिर यह ख्याल आया कि इतनी दूर तक का सफर तय कर लिया है, तो अब बिना मिले हुये वापस जाना उचित नहीं। अतः वहाँ से रवाना हुआ और मौलाना की खिदमत में हाजिर हुआ। वह बड़े ही आक्रोश और गुस्से से पेश आये। उस वक्त मेरे दिल में ख्याल गुजरा कि उनका यह गुस्सा उनकी चुगली और बुराई सुनने की वजह से है जो मैंने बीमारी की हालत में लोगों से सुनी थी। मगर उन्होंने अपने गुस्से का कोई कारण मुझ से नहीं बतलाया और अपने आप ही थोड़ी देर बाद बड़े प्रेम और प्रसन्नता के साथ मुझ से बातें करने लगे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से अपनी मुलाकात का हाल बयान किया। इसके बाद अपना हाथ मेरी तरफ बैअत करने के लिये (दीक्षा देने के लिये) बढ़ाया। लेकिन चूँकि उनके माथे पर एक सफेद दाग था, उनसे मुझको घृणा पैदा हो गई। उन्होने अपने आत्मिक-ज्ञान से मेरी इस भावना को समझ लिया और अपना हाथ तुरन्त खींच लिया और उसी समय अपनी आत्मिक-शक्ति से वह ऐसी आकर्षक और मोहनी सूरत में प्रकट हुये कि मेरे दिल में उनके प्रति एक अजीब आकर्षण पैदा हुआ। उन्होंने फिर अपना हाथ बढ़ाया और फ़रमाया कि हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया था कि तेरा हाथ मेरा हाथ है, जिसने यह हाथ पकड़ा उसने गोया ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) का हाथ पकड़ा। मैंने उसी वक्त बिना किसी झिझक के तत्काल मौलाना याकूब चर्खी (रस०) का हाथ पकड़ लिया। उन्होने मुझको 'बकूफ अददी' के अभ्यास में लगाया और फ़रमाया कि हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से जो कुछ मुझे पहुँचा है वह यही है। अगर तुम बतरीक जज्बा जिज्ञासुओं और साधकों की तरबियत करो (अध्यात्म की शिक्षा दो) तो इसका तुम्हें अधिकार है। इस बात से मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) के कुछ मुरीदों को बुरा लगा

कि इतनी जल्दी उन्होने ख्वाजा अहरार (रहम०) को बैअत करके उनको अध्यात्म की शिक्षा देने के लिये अधिकार प्रदान कर दिया। हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) ने फ़रमाया कि ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार में कुव्वत (सामर्थ्य) व तसर्रुफ सब मौजूद है (वह आध्यात्मिक शक्ति जिसके द्वारा पीर मुरशिद कोई भी वांछित स्थिति अथवा परिवर्तन स्थूल अथवा सूक्ष्म जगत में उत्पन्न कर सकता है 'तसर्रुफ' कहलाती है और योग शास्त्र में इसे 'ऋद्धि-सिद्धि' कहते हैं) । फ़रमाया कि तालिब (साधक, जिज्ञासु) को इस तरह पीर (सतगुरु) के पास आना चाहिये जैसे कि उबैदुल्लाह आया है कि तेल-बत्ती दुरुस्त है, सिर्फ आग लगाने की देर है।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) ने फ़रमाया कि जब मैंने हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) से इजाजत चाही तो हजरत ख्वाजगान के तमाम तरीक (साधना के सभी ढंग) बयान किये और जब 'तरीक राबता' पर पहुँचे, फ़रमाया कि इसकी तालीम देने में तुम दहशत न करना (डरना नहीं) । (राबता का शाब्दिक अर्थ होता है 'लगाव अथवा सम्बन्ध ।' सूफीमत में पीर मुरशिद से रूहानी निस्बत बनाये रखने के लिये जो साधना या अभ्यास किया जाता है उसको 'तरीक राबता' कहते हैं। इस प्रकार से रूहानी निस्बत को दृढ़ बनाने के कई ढंग हैं, उनमें से एक तसव्वुरे-शेख़ अर्थात् सतगुरु का ध्यान है । और फ़रमाया कि साहबे इस्तेदाद (सुपात्रों) को यह तरीक बतला देना। फ़रमाया कि अगर तुम को ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की सोहबत से रूहानी निस्बत हासिल हो और फिर तुम किसी और बुजुर्ग के पास जाओ और वहां भी वही निस्बत हासिल हो तो तुम क्या ख्याल करोगे? फिर स्वयं ही आपने फ़रमाया कि जिस जगह से निस्बत हासिल हो उसको यही ख्याल करना कि वह ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से ही मिल रही है और इनके विषय में एक घटना सुनाई -

"शेख़ कुतुबुद्दीन हैदर (कु० सि०) का एक मुरीद शेख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (रहम०) की खानकाह (आश्रम) में गया। बहुत जोर की भूख लगी थी। उसने पीर की तरफ मुँह करके अर्ज़ किया 'या कुतुबुद्दीन, मैं भूखा हूँ। शेख़ शहाबुद्दीन (रहम०) ने उसका हाल मालूम करके कहा कि इसको खाना खिलाओ । खाना खाने के बाद उस मुरीद ने अपने पीर के गाँव की तरफ मुँह करके फ़रमाया 'शक्र अल्लाह। या कुतुबुद्दीन हैदर

(रहम०), आप मुझको किसी जगह नहीं भूलते।' यह घटना उस सेवक ने, जिसने उस मुरीद को खाना खिलाया था, अपने मालिक हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (रहम०) को सुनाई और कहा कि यह दर्वेश अजीब आदमी है कि खाना तो आपका खाया और शुक्र कुतुबुद्दीन हैदर का किया। हजरत ने फ़रमाया कि मुरीदी इस दर्वेश से सीखना चाहिये कि जाहिर (सांसारिक) या बातिन (आत्मिक) जिस तरह का तथा जहाँ कहीं से फ़ायदा हो अपने पीर ही से ख्याल करता है (यही समझता है कि मुझे यह फ़ायदा मेरे पीर से ही मिल रहा है।

नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल हयात' में लिखा हुआ है कि हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) को चार साल की उम्र से ही निस्बत आगाही बजनाब हक सुबहाना हासिल थी (हर समय ईश्वर की याद और ध्यान में रहते थे)। हजरत फ़रमाते थे कि लड़कपन में मैं मकतब (पाठशाला) आता जाता था। मैं हर समय अल्लाह तआला से हाजिर और अगाह रहता (मैं हर समय ईश्वर की याद में रहता था और यह अनुभव करता था कि मैं उस परम पिता परमात्मा के सामने हाजिर हूँ)। उस जमाने में मेरा विश्वास था कि दुनिया के सब आदमी छोटे बड़े इसी तरह हर समय ईश्वर की याद में रहते हैं। एक बार उस जमाने में जाड़े का मौसम था। एक जंगल में मेरे पैर दलदल में फँस गये और जूते मेरे पैर से निकल गये और दलदल में रह गये। उस समय तेज ठंडी हवा चल रही थी। ज्योंही मैं अपने जूते दलदल से निकालने लगा कुछ क्षणों के लिये ईश्वर की याद से गाफिल हो गया। मुझे अपनी इस गलती पर बड़ा दुःख हुआ और बड़ी देर तक व्याकुलता के साथ रोता रहा। मेरी यह धारणा थी कि ईश्वर ने संसार के सभी लोगों को इस प्रकार पैदा किया है कि वे अल्लाह तआला से गाफिल (असावधान) न रहें। बहुत समय बाद मुझे यह ज्ञात हुआ ईश्वर का अनवरत हर समय का स्मरण और उसका ध्यान यह स्थिति ईश्वर की असीम दया कृपा से कुछ ही लोगों को सुलभ होती है और कुछ लोग बड़ी तपस्या साधना और अभ्यास के बाद इस स्थिति को पहुँचते हैं और कुछ लोग तो ऐसे हैं कि तपस्या साधना और अभ्यास के बावजूद भी उन्हें यह स्थिति सुलभ नहीं होती।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) फ़रमाते थे कि आरम्भ में मेरे दिल में विनम्रता और दीनता की भावना इस हद तक व्याप्त थी कि जो व्यक्ति चाहे वह छोटा

हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर मेरे पास आता मैं अपना सर उसके पैरों पर रखता और उससे बड़ी इन्कसारी और विनम्रता के साथ निवेदन करता कि वह मेरे कल्याण के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

हजरत फ़रमाते थे मैं मीरजा शाहरुख के जमाने में हेरात में रहता था और उन दिनों धन-दौलत के नाम पर मेरे पास एक पैसा भी नहीं था। एक पुरानी पगड़ी मेरे पास थी, उसमें चांदी के कुछ चंदोए सिले हुये थे। एक रोज बाजार में जा रहा था। रास्ते में एक फकीर मिला। उसने मुझ से भिक्षा माँगी। मेरे पास कुछ न था जो उसको देता। मैंने अपनी पगड़ी सर से उतारी और एक नानबाई (रोटी बेचने वाले) के पास ले गया और कहा कि यह मेरी पगड़ी पाक (पवित्र) है। अपनी देग धोने के बाद देग को इससे पोंछ सकते हो। इसे रख छोड़ो और इसके बदले में इस फकीर को कुछ दे दो। उस नानबाई ने भिक्षा देकर उस फकीर को प्रसन्न कर दिया और मेरी पगड़ी मुझे बड़े अदब के साथ वापस की। लेकिन मैंने उस पगड़ी को स्वीकार नहीं किया और उसी के पास छोड़ दी। मैंने अपनी गरीबी की हालत में भी बहुत से लोगों की इसी प्रकार की सेवाएँ की हैं। मेरे पास यात्रा के लिये न घोड़ा था और न दूसरी कोई सवारी। मैं एक साल तक एक मिरजाई पहिनता था, जब तक कि उसकी रूई बाहर निकल आती थी और तीन साल तक एक पोस्तीन पहिनता था (रुवेंदार जानवर की खाल से बनाया हुआ कोट जो शीत प्रधान देशों में पहना जाता है 'पोस्तीन' कहलाता है) और तीन साल तक ताबिस्तान का बना हुआ मोजा पहनता था।

फ़रमाते थे कि एक बार यात्रा करते समय जाड़े का मौसम था कि मौलाना मुसाफिर के साथ मैं साहरखिया में आया। वह एक घर हमारे पास था जिसका दरवाजा सड़क की तरफ था और मकान की जमीन सड़क से बहुत नीची थी और वर्षा के समय मिट्टी और कीचड़ मकान के अन्दर आ जाता था। मैं सुबह के वक्त मस्जिद में जाता और वहाँ नमाज पढ़ता। उस जाड़े के मौसम में मेरे कपड़े बहुत बारीक थे। मेरे नीचे का आधा शरीर ठंडा रहता था और ठंडक की वजह से जरा भी गर्म न होता था। उन कष्ट-दायक विपरीत परिस्थितियों में भी मैं पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहता था। इस प्रकार मैंने अपने जीवन में सन्तोष रूपी सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में अर्जित की है। परन्तु यदि मनुष्य सन्तोष को निष्क्रियता तथा बेकारी के जीवन का कारण बनाता है, तो इस

प्रकार का सन्तोष उसे पतन की ओर ही उन्मुख करेगा। इसलिये मनुष्य को विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी निराश होने की बजाये पूर्ण सन्तोष के साथ सदैव पुरुषार्थ ओर परिश्रम करते रहना चाहिये और इसी स्थिति को 'उसकी रजा में राजी रहना' कहते हैं।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) ने अपने जीवन के आरम्भ से लेकर अन्त तक कभी भी किसी से भेंट स्वरूप कोई चीज स्वीकार नहीं की। एक बार मौलाना अहमद कारेजी (रहम०) ने जो उस जमाने के बहुत बड़े साधक थे, हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के लिये अपने हाथ से सफेद पशमीना के ऊन का एक जोड़ा मोजा बनाया और उसको बनाते समय इस बात का ध्यान रक्खा था कि वह उस समय ईश्वर की याद से गाफिल नहीं रहते थे। उन मोजों को भेंट स्वरूप हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के पास एक शख्स के ज़रिये भेजा। जब हजरत (रहम०) की नजर उन मोजों पर पड़ी तो उस शख्स ने अर्ज किया कि आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने की कृपा करें क्योंकि इसमें से बूए सिद्क आती है (सत्यता की सुगन्ध निकलती है अर्थात् यह भेंट हलाल की कमाई की है तथा ईश्वर के ध्यान में बनाई गई है)। हज़रत ने फ़रमाया कि हमने अपनी तमाम उम्र कोई चीज किसी से क़बूल (स्वीकार) नहीं की, अतः हमारी ओर से मौलाना अहमद कारेजी (रहम०) से क्षमा मांग लेना। आपने उस भेंट को अपनी ओर से बन्द काग़ज़ों में कोई चीज भेंट स्वरूप रखकर वापस कर दी।

हजरत फ़रमाते थे कि जब हम हेरात में थे हज़रत सैयद कासिम तबरेजी की सेवा में बहुत जाते थे और आप मुझे फलों के रस का जूठन, जो वह पिया करते थे, देते थे और फ़रमाते थे कि 'ऐ तुर्किस्तान के शेख़ज़ादा (शेख़ अथवा सतगुरु की सन्तान)। जिस तरह मेरे आस पास यह फलों का ढेर इकट्ठा है, इसी तरह तेरे पास धन- दौलत इकट्ठा होगी। हजरत फ़रमाते थे कि उस वक्त मैं गरीबी की जिन्दगी व्यतीत कर रहा था और त्याग तथा निस्पृहता का जीवन व्यतीत करने का अभ्यास करने में तल्लीन रहता था। जब आपकी उम्र बाईस साल की हुई कि आपके मामू ख्वाजा इब्राहीम (रहम०) आपको ताशकन्द से, जो आपकी जन्मभूमि थी, समरकन्द सांसारिक विद्याओं का अध्ययन करने के लिये ले गये परन्तु आप पर ब्रह्म विद्या की साधना का

इतना प्रभाव रहता था कि वह सांसारिक विद्या के अध्ययन में बाधक बना रहता था। अतः समरकन्द छोड़कर दो वर्ष मावराउल नहर शहर में वहाँ के सन्तों-महात्माओं के सत्संग में व्यतीत किया और अपनी उम्र के चौबीसवे साल में हिरात में आये। वहाँ पाँच साल तक उस समय के प्रसिद्ध सन्तों-महात्माओं के निकट समर्पक में रहे। २९ वर्ष की उम्र में वह अपनी जन्म भूमि ताशकन्द वापस आये। वहाँ खेती शुरू की और किसी काश्तकार के साझीदार होकर एक जोड़ी बैल से खेती शुरू की। उन पर कुछ ऐसी ईश्वर की कृपा हुई कि थोड़े ही समय में उनकी खेती में बड़ी बरकत (वृद्धि, बढ़ोतरी) हुई। 'रशहानुल हयात' ग्रन्थ के लेखक ने अपने इस ग्रन्थ में लिखा है कि जब मैं दूसरी बार हज़रत अहरार (रहम०) के दर्शनों के लिये गया तो वहाँ उनके अहलकारों (कर्मचारियों) से सुनता था कि हजरत के खेतों की संख्या 1300 से भी अधिक बढ़ गई है। और उन्हीं दिनों यह सुना गया कि हज़रत ने और भी बहुत से खेत खरीद लिये हैं। एक बार वह हज़रत के एक कारिन्दा के घर पर रात को ठहरे। उन्होने उस कारिन्दा से पूछा कि कितने जोड़ी बैल की खेती होती है। उसने कहा कि हर साल अनाज बोने के लिये हर जोड़ी पर एक आदमी बाहर जाता है। इस प्रकार इस काम के लिये तीन हजार आदमी अनाज बोने के लिये बाहर जाते हैं। एक रोज हजरत ने स्वयं सत्संग के समय बातचीत के सिलसिले में फ़रमाया कि मैं हर साल समरकन्द के खास मज़रो में से अस्सी हजार मन गल्ला (समरकन्द की तौल से) अपनी मालगुज़ारी के रूप में सुल्तान अहमद मीरज़ा को देता हुँ। और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मेरे माल में ऐसी बरकत दी है कि गल्ला का वजन जो अच्छे जानकार लोग अन्दाज से एक हजार मन आँकते हैं, वह तौल के समय चौदह पन्द्रह सौ मन होता है। आपका एक कर्मचारी जो गल्ले की तौल आदि का काम देखता था कहता था कि कभी-कभी गल्ले का खर्च पैदावार से अधिक होता था लेकिन यह आश्चर्य की बात थी कि अनाज के भण्डार खाने में साल के आखिर में अनाज का ढेर लगा रहता था। एक बार इसी कर्मचारी ने हज़रत से इस रहस्य का कारण पूछा। उन्होंने फ़रमाया कि हमारा माल फ़क़ीरों के वास्ते है। ऐसे माल की यही विशेषता होती है।

इतनी अपार धन सम्पदा होते हुये भी हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) एक उच्च कोटि के सन्त तथा पूर्ण समर्थ सतगुरु थे। एक दिन उन्होने अपनी इसी

सांसारिक धन दौलत की ओर परोक्ष रूप से संकेत करते हुये कुरान शरीफ़ की इस आयत करीमा 'इन्ना आतैना कल कौसर' के अर्थ समझाते हुये फ़रमाया कि कुछ भाष्यकारों ने इस आयत की व्याख्या करते हुये कहा है कि दिया हमने तुझे कौसर (स्वर्ग का एक कुंड) अर्थात अनेकता में एकता के दर्शन रूपी स्वर्ग का कुण्ड। अतः जो शख्स इस आध्यात्मिक स्थिति को पहुँच चुका है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में उस परम ब्रह्म का ही तेज और प्रताप उसे दिखलाई पड़ता है तो ऐसी स्थिति को पहुँचे हुये व्यक्ति के लिये यह सांसारिक धन-दौलत किस प्रकार उसकी साधना, भक्ति और ईश्वर के प्रेम में हिजाब (पर्दा, रुकावट) पैदा कर सकती है ? हज़रत अब्दुर्रहमान जामी (कु० सि०) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'तोहफतुल अहरार' में हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) की प्रशंसा में उनके इस महान आध्यात्मिकता से परिपूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत किया है :-

बैत-(फारसी में)

ज़द बजहाँ नौबते शहन्शही, कौ कबए फुक्र उबैदुल्लाही।
आँ कि ज़हुर्रियत फुक्र आगह अस्त, ख्वाजा अहरार उबैदुल्लाह अस्त!

रुए जमीन कश न सरो न बुन अस्त,
दर नजरश चूँ रुए एक नाखुनस्त।
एक रुए नाख़ुन चूँ बदस्त आयदश,
कै बरहे फुक्र शिकस्त आयदश।
लज्जए बहरे अहदियत दिलश,
सूरते कसरत सदफ साहिलश।
हस्त दराँ लज्जए ता कारबाब,
कुब्बए नुह तवी फलक यक हुबाब।

अनुवाद :-

(फकीर उबैदुल्लाह रहम० के लश्कर (फौज) ने आलम (संसार) में शाहन्शाही की नौबत (दुन्दुभी) बजाई है। हज़रत फुक्र (साधुता) की आजादी से खबरदार हैं अर्थात् यह सांसारिक यश उनके आध्यात्मिक जीवन में किसी प्रकार की रुकावट नहीं

(डालता)। उन ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) की नजर में यह सारी दुनिया एक नाखून के रुख (कोने) के बराबर है अतः ऐसे महान व्यक्ति को अगर नाखून का एक कोना मिल जाए, तो यह अकिंचन तुच्छ वस्तु उसके आध्यात्मिक साधना के जीवन में किस तरह कमी आने दे सकती है। उनके हृदय रूपी समुद्र की गहराई, जिसमें अहदियत (परम ब्रह्म) का नाद हो रहा है, अथाह है। उस अथाह समुद्र की तुलना में आसमान की नौपरतों का गुम्बद एक बुलबुले के समान है।)

हजरत अहरार (रहम०) अपने आरम्भिक जीवन से लेकर जीवन के अन्तिम समय में भी, जब कि आपको सांसारिक तथा आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में अपार यश और सम्मान प्राप्त हो चुका था, पर-सेवा व परोपकार में कभी किसी से पीछे नहीं रहे। फ़रमाते थे कि मैं जिस वक्त मदरसा मौलाना कुतुबुद्दीन सदर में था दो तीन मरीजों की सेवा सुश्रूषा करता, जिन्हें मर्ज खुशयः था (ऐसी बीमारी जिसमें बहुत तेज बुखार आता है)। वह मरीज बीमारी की तीव्रता के कारण बेहोश हो जाते थे और उनके बिछौने धोने के लायक होते थे, मैं उनको धोता था, गन्दगी उनसे दूर करता इस प्रकार की घटना जल्द-जल्द होती। इन मरीजों की सेवा-सुश्रूषा के कारण मुझे भी वह बीमारी हो गई और जिस रात को मुझे तेज बुखार था, उस रात को भी मैं तीन चार पानी के घड़े लाया और मरीजों के कपड़े और बिस्तर धोये। फ़रमाते थे कि जब हेरात में था सुबह रोज पीर हरीमीर के हम्माम (स्नानागार जहाँ किसी मस्जिद अथवा संत महात्मा के किसी आश्रम की ओर से यात्रियों तथा फकीरों के स्नान के लिये प्रबन्ध रहता है) जाता था और वहाँ लोगों की सेवा करता था। इस सेवा में मैं भले-बुरे, छोटे-बड़े, गुलाम-आजाद, अमीर-गरीब किसी में भेद नहीं करता था (सब की एक समान सेवा करता था)। वहाँ लोगों की सेवा करने के पश्चात् मैं तुरन्त वहाँ से भाग जाता था जिससे कि लोग मुझे मेरी सेवा का पारिश्रमिक न देने लगें। फ़रमाते थे कि नक्शबन्दिया सिलसिले की पद्धति में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि तन और मन दोनों ही हर समय ऐसे कर्म तथा व्यवहार में लगाये रखना चाहिये, जो उस समय की माँग हो (उस समय जो कर्तव्य करना आवश्यक हो उसे करना चाहिये)। जिक्र (ईश्वर का नाम-जप) तथा मराकबा (ध्यान) उस समय न करना चाहिये जब कि किसी को हमारी सेवा से राहत (आराम) मिल रही हो। ऐसी सेवा जो किसी जरूरतमन्द के

दिल को राहत पहुंचाने वाली है जिक्र और मराकबा से हर दशा में श्रेष्ठ है। फ़रमाते थे कि हजरत ख्वाजा वहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) और उनके अनुयायी आसानी से किसी की खिदमत क़बूल (स्वीकार) नहीं करते थे। ऐसा करने का यह कारण है कि किसी की सेवा और आदर-सत्कार दोनों ही एहसानात (कृतज्ञताएँ) हैं और जो सेवा करता है उसके प्रति हृदय में आसक्ति और लगाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है और चूँकि यह हजरात (ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के अनुयायी) पूरे संकल्प और दृढ़ता के साथ हमेशा आसक्ति तथा सांसारिक लगाव से विरत रहने की पूरी कोशिश करते हैं, अतः जहाँ तक सम्भव होता है वे किसी की सेवा स्वीकार नहीं करते। हाँ, उस व्यक्ति की सेवा स्वीकार करते हैं जिसमें यह क्षमता देखते हैं कि वह उनकी रूहानियत तथा रहनी-सहनी से दिन पर दिन लाभान्वित हो रहा हो और उसकी आसक्ति व सांसारिक लगाव इन सतगुरुजनों की सोहबत और तवज्जोह से कम होता जा रहा हो और अन्ततोगत्वा ऐसे शख्स के इस निस्पृह और आसक्ति रहित जीवन से दूसरे लोग भी प्रभावित एवं लाभान्वित हो रहे हों। केवल ऐसे ही व्यक्ति की सेवा ये सन्तजन स्वीकार करते हैं। फ़रमाते थे कि मैंने रूहानियत का यह तरीका सूफी सन्त मत की किसी पुस्तक से नहीं सीखा है, बल्कि खिदमत से मुझे यह प्राप्त हुआ है। और न मुझे किसी ने यह तरीका सिखलाया है, बल्कि खिदमत (सेवा) की यह विशेषता है कि यह तरीका स्वयं सेवक को अपने आप मालूम हो जाता है। ईश्वर अपने प्रत्येक भक्त को किसी न किसी द्वार (मार्ग) से अपने निकट बुलाता है। मुझे परमात्मा का सानिध्य सेवा के मार्ग से प्राप्त हुआ है, इसीलिये मुझे सेवा अत्यन्त प्रिय है। इसी सन्दर्भ में आपने एक बैत पढ़ी :-

हिम्मत तुरा बकन्गुरहे क़िब्रिया कशद,
आँ सक्फ़ गाह रा बेह अज़ी निर्दबाँ मख्वाह।

(हिम्मत किब्रियाई (ईश्वरत्व) के कँगूरे तक तुझे ले जाती है, उस छत तक पहुंचने के लिये जीना (सीढ़ी) इससे (हिम्मत से) बेहतर मत चाह)। फिर फ़रमाया कि मैं इस बैत को इस तरह पढ़ता हुँ - 'ख़िदमत तुरा बकन्गुरहे किब्रिया कशद' (अर्थात खिदमत तुझे क़िब्रियाई (ईश्वरत्व) के कँगूरे तक ले जाती है)। हज़रत अहरार (रहम०) के दिल में अपार करुणा और दया भरी हुई थी। हमेशा अपने सेवकों, कर्मचारियों तथा

सत्संगी भाइयों के आराम और सुख-सुविधा का व्यक्तिगत रूप से विशेष ध्यान रखते थे। आपके मुरीद हज़रत मीर अब्दुल अव्वल (रहम०) ने अपनी रचनाओं में एक जगह लिखा है कि एक बार हजरत अहरार (रहम०) अपने सेवकों और कर्मचारियों के गिरोह के साथ बसन्त ऋतु में कश नगर के लिये जा रहे थे। रास्ते में शाम हो गई, अतः उस रात को एक पहाड़ के नीचे रुक गये। सेवकों ने खेमा खड़ा किया। मग़रिब की नमाज के बाद पानी बरसने लगा। हज़रत ने फ़रमाया कि यह खेमा मुझे अपवित्र मालूम होता है अतः इसमें रुकने में मुझे उलझन व परेशानी महसूस हो रही है। मैं इसमें न रुकुंगा। मेरे साथी और कर्मचारी इसमें रहें। उस ख़ेमे के अलावा कोई दूसरा खेमा न था, अतः मजबूरन हज़रत के सभी साथी और कर्मचारी आपकी आज्ञानुसार उस ख़ेमे में रुके। उस रात को बराबर तेज पानी बरसता रहा। जब सुबह हुई आपने नमाज फ़ज्र की पढ़ी, और उसके बाद अपने कुछ साथियों से फ़रमाया कि हमको शर्म आती थी कि हम ख़ेमे में रहें और लोग पानी में भीगे और जो कुछ उन्होने उस ख़ेमे के बारे में कहा था (कि वह अपवित्र है इसलिये मुझे इसमें ठहरने में उलझन हो रही है) एक बहाना मात्र था, जिससे कि उनके साथी और कर्मचारी उनके आदेशानुसार उसमें निश्चित होकर ठहर सकें। उनके कुछ असहाब ने अपनी रचनाओं में लिखा है कि एक बार गर्मी के मौसम में तेज गर्म हवा चल रही थी, उसी मौक़े पर हज़रत अहरार (रहम०) को किसी जरूरी काम से एक मजरा बजाउर्द को जाना पड़ा। साथ में उनके सत्संगी भाई लोग थे। उस मजरा के किसानों के पास एक छोटा सा खेमा था। उन लोगों ने हजरत के लिये उसे एक जगह गाड़ दिया। वहीं आस-पास उस ख़ेमे के अलावा कोई छांयादार जगह न थी। उनके सत्संगी भाइयों को बड़ा संकोच हो रहा था कि इस छोटे से ख़ेमे में हम हजरत के साथ रुके और उनके पास बैठें। जब हवा तेज और ज्यादा गर्म होने लगी हजरत ने अपना घोड़ा मँगवाया और अपने असहाब से कहा कि मैं चाहता हूँ कि इस वक्त कुछ और जरूरी काम देख लूँ। अतः आप उसी समय घोड़े पर सवार होकर चल दिये। आप उसी कड़ी धूप में उस वीरान भूमि में घूमते रहे। वहाँ दूर तक चारों और कोई दरख़्त नहीं था। जब गर्म हवा बहुत तेज होती तो फटी हुई जमीन और पानी के बनाये हुये गड्ढों की छाया में अपना सर मुबारक रखते और आपके बदन का अधिकांश हिस्सा खुली तेज धूप में रहता। इसी हालत में वहाँ आराम करते

। जब हवा की गर्मी और तेजी कम होती उस समय आप उस ख़ेमे में आते। जितने दिनों आप वहाँ ठहरे आप ऐसा ही बहाना बनाकर दोपहर को तेज धूप में घूमते रहते थे। आखिरकार उनके असहाब जान गये कि हज़रत ने उन सभी लोगों के आराम और सुविधा के लिये स्वयं उस तेज धूप और अत्यधिक गर्मी में अकेले उस वीरान जगह में घूमना पसन्द किया।

हज़रत ख्वाजा अहरार (रहम०) के इर्शादात (उपदेश)

फ़रमाया जीवन उस व्यक्ति का सार्थक है जिसका दिल दुनिया से सर्द हुआ हो और अल्लाह तआला के जिक्र से गर्म। फ़रमाया कि मुरीद वह है कि वतासीर इरादत (सतगुरु के प्रति आस्था के प्रभाव से) उसकी तमाम इच्छाएँ जल गई हों और उसकी कोई इच्छा न रही हो ओर अपना ध्यान सब तरफ से हटा कर केवल सतगुरु की तरफ रखे :-

बैत-

आँरा कि दर समय निगारस्त फारिग अस्त
अज बोस्ताँ व तमाशाए लालाजार ।

(वह आदमी जो महबूब के सराय में है, उसे चमन (बगीचा) और लालाजार के फूलों के देखने की जरूरत नहीं है)।

फ़रमाया कि जो शख्स फकीरों की सुहबत में आये, चाहिये कि अपने नई निहायत मुफलिस (अत्यन्त दीन) जाहिर करे ताकि उस पर उनको रहम आये। फ़रमाया कि अगर दर्वेश (साधु, महात्मा) की शक्ल दीवार पर खींची हो तो उसके नीचे भी अदब के साथ गुजरना चाहिये। फ़रमाया कि व्यवहार और आचरण का प्रभाव जमादात (जड़ पदार्थों) पर भी पड़ता है। यही वजह है कि अगर कोई व्यक्ति ऐसी जगह नमाज पढ़े जहाँ अनुचित व्यवहार और आचरण होते हों, तो उस जगह की नमाज में, चित्त की वह एकाग्रता और शान्ति नहीं मिलेगी जो कि ऐसी जगह पढ़ी गई नमाज में सुलभ होगी, जहां सन्त महात्मा और ईश्वर-भक्त एकत्रित होकर नमाज पढ़ते हों। और यही कारण है कि पवित्र काबा की दो रकअत नमाज और जगह की सत्तर रकअत नमाज

के बराबर है।

फ़रमाया कि अबू तालिब मक्की (कु० सि०) का कथन है कि कोशिश करे कि आरज़ू (इच्छा) अल्लाह तआला के सिवा दिल में न रहे और अगर यह बात हासिल हो गई तो तेरा काम पूरा हो गया और चाहे अहवाल (हालतें, आध्यात्मिक स्थितियाँ) मवाजिद (किसी साधना से उत्पन्न भावावेश की स्थितियाँ) व कश्फ (आत्मिक शक्ति द्वारा गुप्त बातों के जानने की क्षमता) व करामात (चमत्कार) जाहिर हों या न हों कुछ अफसोस नहीं। फ़रमाया कि हजरत सैयद अताएफा (कु० सि०) का कथन है कि सादिक (सच्चा) मुरीद वह है कि बीस साल तक कातिब शिमाल (बायें हाथ का वह फरिश्ता (देवता) जो हमारे गुनाहों को लिखता है) कोई चीज (गुनाह) न पाये कि इस पर लिखें और इसके यह मानो नहीं है कि किसी मुरीद से कोई गुनाह ही न हो बल्कि इसके यह मानी है कि मुरीद कातिब शिमाल के लिखने से पहले उसका प्रायश्चित और तदारुक कर ले (ऐसा उपाय करे कि भविष्य में वह गुनाह फिर से न हो)।

फ़रमाया कि हजरत मौलाना निजामुद्दीन खामोश (रहम०) शरीअत, तरीकत व हकीकत की इस तरह मिसाल देकर (उदाहरण प्रस्तुत कर) समझाते थे कि झूठ मना है। पर अगर कोई शख्स इस तरह कोशिश करे कि उसकी जबान से झूठ न निकले लेकिन दिल में झूठ बोलने की ख्वाहिश (इच्छा) बनी रहे तो यह शरीअत है और दिल से भी झूठ बोलने की ख्वाहिश जाती रहे तो यह तरीकत है और अगर बेइख्तियार और बेइख्तियार (इच्छा व अनिच्छा पूर्वक दोनों ही प्रकार से) जबान व दिल से यह बात निकल जाती है तो वह हकीकत है।

फ़रमाया फनाँ मुतलक (बिलकुल फनाँ होना अर्थात परमात्मा में पूर्णरूप से लीन होना) के यह मानी है कि अपने जीवन की सभी उपलब्धियों, गुणों, व कर्मों का कर्त्ता अपने को न समझकर पूर्ण विश्वास, श्रद्धा और प्रेम के साथ परमात्मा को ही उन सभी अपने सद्गुणों तथा कर्मों का कर्त्ता समझे। फिर उदाहरण देकर समझाया कि यह वस्त्र जो मैं पहने हूँ आरियती (माँगा हुआ) है, लेकिन मुझको इसके आरियती होने का ज्ञान नहीं है और मैं यह भी जानता हूँ कि यह मेरा ही है, इसीलिये मुझको इसके साथ तअल्लुक (लगाव) है। अगर मुझको यह ज्ञान हो गया कि यह वस्त्र आरियती (माँगा हुआ दूसरे का) है, तो फिलहाल मेरा लगाव इस वस्त्र से मुन्कता (समाप्त) हो जायेगा,

यद्यपि मैं इसको उसी तरह पहने हुये हूँ जिस तरह पहिले पहने हुये था। इसी प्रकार अपने जीवन के सभी कर्म-व्यवहार, उपलब्धियों तथा सद्गुणों को यही समझना चाहिये कि ये सब परम पिता परमात्मा के ही दिये हुये हैं और वही इन सब का कर्त्ता और प्रेरक है ' यही दरवेशी (सन्यास अथवा साधुता) है, जिसको लोग बहुत लम्बी चौड़ी बनाये हुये हैं।

फ़रमाया कि हिम्मत इसे कहते हैं कि किसी काम के वास्ते इस तरह दिल को जमा करे (एकाग्र करे) कि उसके विरुद्ध कोई विचार दिल में न आये, यहां तक कि अगर कोई काफ़िर (नास्तिक) भी उसी काम के वास्ते हमेशा दिल को एकाग्र किये रहे तो वह काम हो जाता है। इसमें नमाज व अमल सालेह (नेक कर्म) की शर्त नहीं है। फ़रमाया जब किसी शख्स को अल्लाह तआला तौबा की तौफीक अता करे (अपने पापों के लिये प्रायश्चित करने की भावना और क्षमता प्रदान करे) तो उसे इस राह में (इस अध्यात्म मार्ग में) इस तरह कदम रखना चाहिये कि पूरी हिम्मत के साथ इस प्रयत्न में तल्लीन रहना चाहिये कि कोई क्षण ईश्वर की याद से गाफिल (असावधान) न हो, और सुहबत नाजिन्स (दुनियादार) से परहेज करे।

बेत-

नहस्त मोएजन पीर सुहबत ई हर्फ अस्त,
कि अज मुसाहिद नाजिन्स एतराज कुनेद ।

(सबसे पहले पीर सुहबत की तुम को यह नसीहत है कि नाजिन्स (दुनियादार) साथी की सुहबत से बचो)। नाजिन्स से आशय दुनियादार और अध्यात्म मार्ग से विपरीत मार्ग पर चलने वाले से है। इस मानी (अर्थ) में कि अजनबी (अपरिचित, दुनियादार) की सुहबत सालिक की निस्बत में फुतूर (विकार) पैदा करती है आपने फ़रमाया कि एक दिन शेख़ अबू यजीद (कु० सि०) को सत्संग के अवसर पर उन्हें अपनी रूहानी निस्बत में फुतूर (विकार) का अनुभव हुआ। उन्होंने अपने मुरीदों से कहा कि तलाश करो हमारे सत्संग में कोई बेगाना (दुनियादार जो ईश्वर की याद से गाफिल हो) पैदा हुआ है कि यह फुतूर (विकार) उसी के कारण है। मुरीदों ने बड़ी तलाश की और शेख़ से अर्ज किया कि यहाँ तो कोई बेगाना नहीं दिखलाई पड़ता। आपने कहा 'असाखाना (छड़ियों के रखने की जगह) में तलाश करो।' वहां देखा तो

एक बेगाना की छड़ी रक्खी हुई थी। तत्काल उसे दूर फेंका। उसके फेंकते ही शेख़ की रूहानी निस्बत में जो फुतूर पैदा हो गया था दूर हो गया।

फ़रमाया कि दरवेशी (साधुता) वह है जो कि पीर हेरात (कु० सि०) ने फ़रमाई है-

ख़ाके बेख्तः व आबी बराँ रेख्तः, न पुश्त पाए रा अजाँ गरदी व न कफे पाएरा वरदी। (मिट्टी छानी जाये और उसमें पानी डाला जाये तो उसमें पैर डालने पर पैर की तलहटी तथा पैर का ऊपरी हिस्सा दोनों में मिट्टी का असर न हो)। खुलासा दरवेशी (साधुता का निचोड़ अथवा सार) यह है कि सब किसी का वार (बोझ) उठायें (लोगों की मुसीबतों में काम आए तथा दूसरों के कष्ट दूर करने के लिये सदैव तत्पर रहे) और किसी पर अपना बार न रखे, न सूरत में (प्रकट रूप में) और न मानी में (आन्तरिक रूप में)।

फ़रमाते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (कु० सि०) ने एक रोज फ़रमाया कि मैंने दो आदमी मक्का मुबारक में देखे। एक बड़ा हिम्मत वाला और दूसरा बहुत कम हिम्मत वाला। कम हिम्मत वाला वह था कि मैंने उसे परिक्रमा करते समय देखा कि वह दोनों हाथ बाँधे हुये (एक दूसरे पर रक्खे हुये) था और ऐसे महान पवित्र स्थान पर और ऐसे सुअवसर पर अल्लाह तआला से गैर हक सुबहाना (ईश्वर के अलावा दुनियाँ की) कोई चीज माँग रहा था और बड़ा हिम्मत वाला शख्स वह था कि जिसने मेना की बजार में पचास हजार दीनार के करीब सौदा खरीद फरोख्त किया (खरीदा और बेचा) और उस वक्त एक लमहा (क्षण) को उसका दिल अल्लाह तआला से गाफिल न हुआ। उस शख्स की इस हालत को देखकर मुझे अपने ऊपर बहुत ही लज्जा आई।

फ़रमाया कि जब मैं ख्वाजा अलाउद्दीन गुज्दवानी (रहम०) की खिदमत से अलग होता था और अपने वतन को जाने लगता था तो वह मुझ से फ़रमाते थे कि अपने दिल में यह संकल्प कर कि फलाने (अमुक) मौजा तक अपनी निस्बत (ईश्वर अथवा सतगुरु के सानिध्य की आत्मिक अनुभूति) से गाफिल न हूँगा और जब तूँ उस मौजा में पहुँचे तो अगले मौजा का नाम ले और वहाँ तक अपने को निस्बत पर कायम रख। इसी तरह मौजा बमौजा और मंजिल बमंजिल इस निस्बत की वर्जिश (अभ्यास) कर जब तक कि मलका (पूर्ण निपुणता, दक्षता) हासिल न हो।

फ़रमाते थे कि एक रोज मैं हजरत मौलाना निजामुद्दीन (कु० सि०) की सेवा में

उपस्थित हुआ। आप कुछ मौलवियों से मुबाहिसा (धर्मशास्त्र के किसी विषय पर बहस) कर रहे थे और मैं खामोश था। जब उस बहस से निवृत्त हुये मेरी तरफ मुखातिब (आकृष्ट) होकर मुझ से कहा सकूत (मौन, ख़ामोशी) और आराम बेहतर है या हदीस और कलाम (हजरत मुहम्मद सल्ल० के उपदेश तथा अन्य धार्मिक उपदेश कहना) ? फिर खुद ही फ़रमाया कि मैं देखता हूँ कि अगर इन्सान कैद हस्ती (अपने अस्तित्व अथवा कर्तापन के अहंकार के बन्धन) से मुक्त हो गया है तो जो कुछ करे माने नहीं है (उसकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक नहीं है) और अगर गिरफ्तार ख़ुदी है (कर्तापन के अहंकार के बन्धन में) है तो उसके कर्म या व्यवहार दण्डनीय हैं। हजरत अहरार (रहम०) ने फ़रमाया कि हमने मौलाना निजामुद्दीन (रहम०) से कोई बात इससे बेहतर (श्रेष्ठ) नहीं सुनी।

फ़रमाते थे कि कुछ सन्तों ने कहा है कि शेख़ (सतगुरु) ऐसा चाहिये कि मुरीदों (शिष्यों) को खास के। जो शेख़ ऐसा न हो उसे शेखी नहीं पहुँचती (वह सतगुरु की पदवी के योग्य नहीं है)। और मुरीद को खानी के मानी (अर्थ) यह हैं कि शेख़ ऐसा हो कि बातिन मुरीद में तसर्रुफ कर सके (शिष्य की आध्यात्मिक प्रगति के लिये उसके अन्तःकरण अथवा हृदय की दशा को वांछित रूप में परिवर्तित कर सके) और उसके बुरे एख़लाक (आचरण) को दफा करे (समाप्त करे) और उनके स्थान पर एख़लाक हमीदा (श्रेष्ठ आचरण) कायम (स्थापित) करे और उसको हुजूर और आगाही के दर्जे तक पहुँचा सके।

फ़रमाते थे कि जिक्र (नाम-जप) एक बसूले की तरह है कि उससे ख़तरों के काँटे राह से दूर करते हैं (वह सांसारिक विचार जो साधक को ईश्वर की याद से गाफिल करते हैं उन्हें 'खतरा' कहते हैं।)

फ़रमाते थे कि शरीअत है, तरीकत है और हकीकत है। शरीअत एहकाम का (धर्मशास्त्र द्वारा आदेशित कर्म तथा आचरण का) सम्पादन जाहिर पर (बाह्य रूप में) करना है और तरीकत उन कर्मों को हृदय की एकाग्रता एवं निष्ठा तथा पूरे प्रयत्न के साथ सम्पादित करना है और हकीकत उन कर्मों के सम्पादन में एकाग्रता, निष्ठा और प्रयत्न में निपुणता प्राप्त करना है।

कहा जाता है कि जब हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) के हृदय में ऐसी

ईश्वरीय प्रेरणा उत्पन्न हुई कि वह सलातीन (बादशाहों) से मेलजोल पैदा करें, जिससे कि उनमें धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावना का संचार हो, तब हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) समरकन्द गये। उस वक्त मिर्जा अब्दुल्ला बिन मिरजा इब्राहीम बिन मिरजा शाहरुख समरकन्द का बादशाह था। बादशाह का एक अमीर (सरदार) हजरत अहरार (रहम०) से मिलने गया। हजरत ने उससे फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बादशाह से मिलने के लिये आया हूँ। अगर तुम्हारी कोशिश से मुलाकात हो जाये तो तुम को इसका सबाब (पुण्य) मिलेगा। उस सरदार ने अशिष्टता पूर्वक जवाब दिया कि मिरजा बादशाह एक बेपरवाह (निश्चिंत) जवान है। उससे मुलाकात होनी मुश्किल है। इसके अलावा दरवेशों (सन्तों) को ऐसी बातों की क्या जरूरत है। हजरत को उस सरदार की यह बात बहुत बुरी लगी और फ़रमाया कि मुझको बादशाहों से मिलने का हुक्म हुआ है। मैं खुद नहीं आया हूँ। तुम्हारा मिरजा परवाह (चिन्ता) न करेगा, कोई और आयेगा जो परवाह करेगा। जब वह अमीर बाहर चला गया हजरत अहरार (रहम०) ने उस अमीर का नाम दीवाल पर लिखा और थूक से उसको मिटा दिया और फ़रमाया कि हमारा काम इस बादशाह और अमीर से निकलता मालूम नहीं होता और उसी दिन ताशकन्द की ओर चल दिये। एक हफ़्ते बाद वह अमीर मर गया और एक महीने के बाद समरकन्द के बादशाह मिरजा अब्दुल्लाह पर तुर्किस्तान के बादशाह मिरजा अबूसईद ने हमला किया और उसको कत्ल कर दिया।

कहा जाता है कि उक्त घटना के पूर्व तुर्किस्तान के बादशाह मिरजा अबू सईद ने हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) को ख्वाब मैं देखा था और आपका नाम भी स्वप्न में मालूम किया था। जब जागा तो लोगों से दरियाफ्त किया कि क्या कोई दरवेश (संत) जिसका नाम ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) है इस शक्ल और हुलिया का इस दरबार में है ? लोगों ने कहा कि ताशकन्द में है। फौरन वह सवार होकर ताशकन्द को गया, लेकिन हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) मिरजा के आने की खबर सुन कर अलग एकान्त में चले गये। मिरजा वहाँ एकान्त में ही उनसे मिलने गया। जिस वक्त उसने हजरत अहरार (रहम०) के दर्शन किये वह आश्चर्य चकित होकर कहने लगा 'कसम अल्लाह की कि जिस शख्स को मैंने ख्वाब में देखा था वह यही है और आपके चरणों पर गिर पड़ा। हजरत ने भी उस पर विशेष कृपा की और उसे

अपनी रूहानी निस्बत की ओर आकर्षित किया। उसके बाद उस मिरजा के पास बहुत बड़ी फौज एकत्रित हो गई। उसने हजरत अहरार (रहम०) से निवेदन किया कि आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं समरकन्द पर विजय प्राप्त करूँ। हजरत ने फ़रमाया कि तुम किस उद्देश्य से समरकन्द पर विजय प्राप्त करना चाहते हो ? अगर शरीअत की तक्वियत (पृष्ठ पोषण) तथा धर्म के प्रचार का उद्देश्य है तो जाओ तुम्हारी विजय होगी। उसने निवेदन किया कि मैं तन, मन, धन से शरीअत का पृष्ठ पोषण करूंगा। हजरत अहरार (रहम०) ने फ़रमाया कि अब तुम शरीअत के संरक्षण में आ गये और तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। (हजरत की आज्ञा से मिरजा अबू सईद ने समरकन्द के बादशाह पर आक्रमण किया और उसको कत्ल किया, जैसा ऊपर के अनुच्छेद में इस घटना का वर्णन हुआ है)। कहा जाता है मिरजा बाबर एक लाख फौज लेकर समरकन्द पर हमला करने के लिये रवाना हुआ। समरकन्द का बादशाह मिरजा अबूसईद हजरत ख्वाजा अहरार कु० सि० की खिदमत में हाजिर हुआ और उनसे निवेदन किया कि मुझ में बाबर से मुकाबला करने की सामर्थ्य नहीं है ? क्या उपाय करूँ? हजरत ने फ़रमाया तुम्हारी लड़ाई मैंने अपने ऊपर ले ली और मैं उसका जिम्मेदार हूँ। अतः ख्वाजा अहरार (रहम०) की कृपा से बाबर की फौज पर ऐसी बला नाज़िल हुई (विपत्ति आई) कि वह स्वयं मिरजा अबू सईद से सुलह करने के लिये इच्छुक हुआ और जान बचाकर वापस गया। फ़रमाया कि अगर मैं पीरी करूँ तो इस जमाने में किसी पीर को मुरीद न मिले लेकिन ईश्वर ने मेरे सुपुर्द और ही काम कर रक्खा है। मुसलमानों की अत्याचारियों के अत्याचार से रक्षा करूँ और शरीअत का प्रचलन करूँ, इसी उद्देश्य से बादशाहों की तस्खीर करता हूँ (बादशाहों को वशीभूत करता हूँ)। फ़रमाया ईश्वर ने मुझे इतनी सामर्थ्य प्रदान की है कि अगर गल्ती करने वाले किसी बादशाह को पत्र लिख कर भेज दूँ तो वह बादशाहत छोड़ कर नंगे पैर मेरे चौखट पर हाजिर हो। लेकिन मैं बिना फ़रमाने इलाही (बिना ईश्वरीय प्रेरणा के) खुद कुछ नहीं करता हूँ और अदब (शिष्टाचार) भी यही है कि अपने इरादे (संकल्प, इच्छा) को अल्लाह तआला के इरादे के ताबे (अधीन) करे, न कि अल्लाह तआला के इरादे को अपने इरादे के ताबे करे।

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) अपनी मित्र मण्डली के

साथ कहीं यात्रा पर जा रहे थे। रास्ते में शाम हो गई। जिस स्थान को पहुँचना था वह बहुत दूर था और रास्ता खतरनाक था। आपके सभी मित्र बहुत ही चिंतित हुए। हजरत कुछ क्षणों के लिये मौन हो गए और अपनी आत्मिक प्रेरणा से अवगत होकर फ़रमाया कि चिंता न करो, ईश्वर-इच्छा से हम लोग सूर्यास्त से पहिले पहुँच जायेंगे। अतः ऐसा ही हुआ कि जब तक शहर के करीब न पहुँचे सूर्य अपने उसी स्थान पर रुका रहा, जैसे किसी ने उसे अपनी आत्मिक शक्ति से एक जगह रोक दिया हो। और जैसे ही शहर की दीवार के नीचे पहुँचे, तत्काल सूर्य अस्त हो गया और इस क़दर देरी हो गई थी कि रात का अंधेरा चारों ओर छाया हुआ था। हजरत के सभी मित्र गण अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये और हजरत से इस घटना का रहस्य ज्ञात किया। आपने फ़रमाया कि यह भी तरीकत (अध्यात्म) के चमत्कारों में से एक है।

कहा जाता है कि एक बार दो दर्वेश (साधु) बड़ी दूर से हजरत ख्वाजा (रहम०) के दर्शनों के लिये आये। जब खानकाह (आश्रम) में पहुँचे तो मालूम हुआ कि हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) बादशाह के पास गये हैं। वे यह बात सुन कर बहुत हैरान हुये कि यह कैसे शेख़ (पीर, सतगुरु) हैं कि बादशाह के पास जाते हैं और 'बेशल फकीरो अला बाबिल अमीरे' फ़क़ीर का अमीर के दरवाजे पर आना बहुत बुरा है) यह कथन इन पर चरितार्थ होता है। संयोग से उसी समय दो चोर बादशाह के दरबार से भाग आये थे, उनकी खोज हो रही थी। यह दोनों दर्वेश मिल गये। सिपाही इन्हें चोर समझकर इनको पकड़ कर बादशाह के पास ले गये। बादशाह ने फ़रमाया कि शरीअत (धर्मशास्त्र के नियम) के अनुसार इनके हाथ काट दो। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने जो बादशाह के पास बैठे हुये थे फ़रमाया कि ये दर्वेश मुझ से मिलने के लिए आये थे। अतः हजरत अहरार (रहम०) इन दरवेशों को अपने साथ लेकर चले आये। जब मकान पर पहुँचे उनसे कहा कि मैं इसीलिये बादशाह के पास गया कि तुम्हारे हाथ कटने से बचाऊँ। उक्त कथन (कि फकीर का अमीर के दरवाजे पर आना बहुत बुरा हे) मेरे ऊपर उस समय चरितार्थ होता, जब कि मैं बादशाह के पास अपने किसी निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिये जाता।

कहा जाता है कि एक आलिम (ज्ञानी) हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) की प्रशंसा सुन कर उनके दर्शनों के लिये रवाना हुआ। जब वह शहर के प्रवेश द्वार पर पहुँचा,

देखा कि बहुत बड़ी मात्रा में अनाज शहर के अन्दर जा रहा है। उस आलिम ने लोगों से पूछा यह किस का अनाज है। मालूम हुआ कि हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) का है। यह जान कर वह आलिम बहुत ही अचम्भित हुआ और मन में सोचने लगा कि कहाँ यह फकीरी और कहाँ यह अनाज का ढेर। उसके दिल में ख्याल आया कि लौट चलें, लेकिन फिर ख्याल किया कि जब इतनी लम्बी यात्रा तय कर ली तो मिलकर ही वापस जाना चाहिये। जब खानकाह (आश्रम) में दाखिल हुआ तो उस समय हजरत अहरार (रहम०) घर में थे। यह आलिम वहीं बैठ गया। अचानक उसे झपकी लग गई। क्या देखता है कि कयामत बरपा है (महाप्रलय का दृश्य उपस्थित है) एक शख्स जिसका यह आलिम कर्जदार था आकर उससे अपना कर्ज वापस माँगने लगा और वह चाहता था कि उस आलिम को अपने साथ दोज़ख़ (नर्क) में ले जाये। उसी समय हजरत अहरार (रहम०) तशरीफ लाये और उस शख्स से पूछा कि तेरा कितना कर्ज इस आलिम पर है। उसने जितना कर्ज बतलाया उतना कर्ज हजरत ने अपने पास से देकर उस आलिम की मुक्ति कराई। उसी समय उस आलिम की आँख खुल गई। देखा कि हजरत अहरार (रहम०) घर में से तशरीफ ला रहे हैं। हजरत ने मुस्कुरा कर उससे फ़रमाया कि मैं इसीलिये माल (धन-दौलत) रखता हूँ कि तुझ जैसे आदमी को कर्ज से नजात (मुक्ति) दिला दूँ।

कहा जाता है कि सुल्तान अबू सईद मिरजा को हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के सामने तौबा करने के बाद (अपने गुनाहों और बुरी आदतों के लिये प्रायश्चित के पश्चात्) कई बार शराब पीने की तीव्र इच्छा मन में पैदा हुई। उसने नौकर से कहा कि दीवार के नीचे ले आना, मैं उसे कोठे पर ले लूँगा। जब वह शराब लाया मिरजा ने पगड़ी बाँध कर शराब का कूजा (भँडिया, छोटा घड़ा) ऊपर खींचा। कूजा दीवार से टक्कर खा कर टूट गया। इस बात से मिरजा को बहुत दुःख हुआ। प्रातःकाल जब मिरजा हजरत की खिदमत में हाजिर हुआ, आपने उससे पहली बात यह कही कि रात मैंने तुम्हारे शराब के कूजे की टूटने की आवाज सुनी। अगर वह कूजा न टूटता तो मेरा दिल तुम से टूट जाता और फिर हमारी तुम्हारी मुलाकात न होती।

आपका शरीरान्त 29 रबीउल अव्वल 895 हिजरी में हुआ। कहा जाता है कि जब हजरत अहरार (रहम०) का शरीरान्त का समय निकट आया, उस समय बहुत से

दीपक जल रहे थे, कि यकायक आपके दोनों भौहों के मध्य से एक नूर (प्रकाश) जाहिर हुआ और सभी दीपकों की रोशनी पर गालिब आ गया (सबसे अधिक तीव्र हो गया)।

❷⓿

21. मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु० सि०)

आपकी मजार वकश में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

21. मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु० सि०)

हजरत मौलाना मुहम्मद-जाहिद (कु० सि०) ने हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) से रूहानी निस्बत हासिल की थी। आप हजरत मौलाना याकूब चर्खी (कु० सि०) के रिश्तेदार, बल्कि कहते हैं कि उनके नवासे थे और उनके किसी खलीफा से जिक्र व तालीम हासिल करके एकान्तवास ग्रहण कर लिया था और आध्यात्मिक साधना के अभ्यास और तपस्या में लगे रहते थे और इसके बाद हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये, जिसका विवरण इस प्रकार है कि उन्होंने एक बार हजरत अहरार (रहम०) के विषय में जब यह सुना कि वह एक उच्च कोटि के सन्त तथा पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति में हैं, वह उनके दर्शनों के लिये समरकन्द में पहुँचे। मुहल्ला वानसर में रुके अरि इरादा किया कि कपड़े बदल कर उसी मुहल्ले में जहाँ हजरत अहरार (रहम०) का मकान था वहाँ जायें। उसी समय हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) को आत्मिक-ज्ञान से यह मालूम हो गया कि मौलाना मुहम्मद जाहिद जो उच्च कोटि के सन्त तथा ऋद्धियों- सिद्धियों के भण्डार हैं इस शहर में मुझ से मिलने आये हैं। अतः उसी समय, जब कि दोपहर की तेज धूप और गर्मी थी, आप एक ऊँट पर सवार हुये और उसकी बाग छोड़ दी कि जिस तरफ चाहे चला जाये। संयोग से उसी मुहल्ला वानसर में ऊँट एक मकान के आगे रुक गया। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फ़रमाया 'यहाँ कौन ठहरा हुआ है ?' किसी ने कहा मौलाना मुहम्मद जाहिद ठहरे हुए हैं। यह सुन कर हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ऊँट से उतर पड़े। मौलाना को जब आपके शुभागमन की सूचना मिली, आप बेचैन होकर तत्काल उनके स्वागत के लिये दौड़ पड़े और उनके चरण स्पर्श किये और उसी मकान में एकान्त में सत्संग किया। मौलाना ने अपनी साधना तथा आध्यात्मिक स्थितियों का सम्पूर्ण विवरण हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) से बतलाया और उनसे बैअत (दीक्षा) के लिये विनम्र निवेदन किया। अतः हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने उस पहली बैठक में ही मौलाना को बैअत करके अपनी तवज्जोह व तसर्रुफ से पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति पर पहुँचाकर उन्हें अपना खलीफा बनाया और वहाँ से उन्हें विदा कर दिया। इस पर हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के पुराने शिष्यों ने आपसे

शिकायत की कि आपने मौलाना मुहम्मद जाहिद (रहम०) को पहली बैठक में ही अपना खलीफा बना दिया और हम वर्षों से सत्संग में आ रहे हैं हमारी दशा पर ध्यान नहीं देते। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फ़रमाया कि मौलाना मुहम्मद जाहिद चिराग बत्ती दुरुस्त करके लाये थे, मैंने सिर्फ उसको रोशन (प्रज्वलित) कर दिया और उन्हें विदा कर दिया। इस घटना से हजरत ख्वाजा अहरार कु० सि० का उच्च कोटि का तसर्रुफ और हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (कु० सि०) की महान सुपात्रता और आध्यात्मिक योग्यता का प्रमाण मिलता है।

हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (कु० सि०) का शरीरान्त गुर्रा रबीउल अव्वल 936 हिजरी को हुआ। आपका मदफन (कबर्) मौजा वकश में है।

वकश में आपकी मज़ार का सिर्फ स्थान ही है। आप अपनी मृत्यु के पहले एक गुफा में चले गए व दरवाजा बंद कर दिया, बाहर शिष्य लोग बैठे ही रहे। वे जब कई दिनों तक नहीं आए तब दरवाजा खोला गया। अंदर आपका शरीर भी नहीं मिला। कबीर साहब की तरह आप सशरीर गायब हो गए।

❷❶

22. हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु॰ सि॰)

आपकी मजार सिवाज में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

22. हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०)

हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) को अपने मामा मौलाना मुहम्मद जाहिद (कु० सि०) से रूहानी निस्बत हासिल थी। कहा जाता है कि बैअत (दीक्षा) से 15 वर्ष पूर्व से साधना के अभ्यास व तपस्या में लगे रहते थे। जंगलों में इन्द्रिय निग्रह तथा एकान्तवास का जीवन व्यतीत करते हुये बिना खाये और बिना सोए हुये रहा करते थे। एक रोज भूख से अत्यन्त विवश हो गये और आसमान की तरफ मुँह उठाया । तत्काल हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम प्रकट हुए और फ़रमाया कि अगर तेरा उद्देश्य सब्र (धैर्य) व कनाअत (सन्तोष) प्राप्त करना है तो ख्वाजा मुहम्मद जाहिद (रहम०) की खिदमत में हाजिर हो, क्योंकि वह तुझे सब्र व तवक्कुल (भरोसा) सिखलायेंगे। हजरत दरवेश मुहम्मद (रहम०) हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद की सेवा में उपस्थित हुए और पूर्ण समर्थ सन्त तथा-अध्यात्म विद्या में पूर्ण रूप-से पारंगत सत गुरु की स्थिति तक पहुँचे । हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (रहम०) के शरीरान्त के पश्चात उनके नायब हुए । संयम, इन्द्रिय निग्रह, सहिष्णुता का पालन पूर्ण दृढ़ता और संकल्प के साथ करते थे तथा अपनी रूहानी निस्बत की रक्षा करने में बेजोड़ व अद्वितीय थे। अपनी आध्यात्मिक दशाओं तथा स्थितियों को गुप्त रखना अपने लिये विशेष रूप से अनिवार्य समझते थे और इसीलिये लोगों को कुरान शरीफ पढ़ाया करते थे, जिससे कि लोगों को उनकी आध्यात्मिक स्थिति की जानकारी न हो। कहा जाता है कि एक बार वहाँ किसी तुर्की शेख़ (सतगुरु) का आगमन हुआ। उस शेख़ ने लोगों से कहा कि यहाँ किसी मर्द (संत, सतगुरु) की बू (सुगन्ध) आती है। और मौलाना दरवेश मुहम्मद (रहम०) की तरफ इशारा किया । आपके सुपुत्र हजरत ख्वाजा इमकिनकी (रहम०) फ़रमाया करते थे कि मेरे पूज्य पिताजी का आध्यात्मिक क्षेत्र में यश फैलने का विशेष कारण यह हुआ कि एक दरवेश ने मेरे पिताजी के सामने शेख़ नूरुद्दीन रब्बानी (रहम०) के हालात (आध्यात्मिक दशाओं) का वर्णन करते हुये फ़रमाया कि वह बहुत बड़े बुज़ुर्ग हैं। अगर इस तरफ उनके आने का इत्तफाक (संयोग) हो तो उनसे जरूर मिलियेगा। इस बात को कहे हुये अभी थोड़ा हा समय व्यतीत हुआ था कि शेख़ नूरुद्दीन रब्बानी (कु० सि०) का उस स्थान पर आगमन हुआ । मेरे पिताजी ने जब उनके आने की

खबर सुनी, तो जैसे मैले कुचैले कपड़े पहने हुये थे वही पहने हुये कुछ हदिया (भेंट स्वरूप कोई वस्तु) लेकर शेख़ की खिदमत में रवाना हुये। जब उन शेख़ के पास पहुँचे तो मेरे पिता जी से वे बड़े ही प्रेम से गले मिले और बड़ी देर तक दोनों मराकबा (ध्यान) में बैठे रहे। जब मेरे पिता जी उनसे बिदा होकर चलने लगे तो उन शेख़ ने कुछ कदम उनके साथ चलकर उनको आदर के साथ विदा किया। मेरे पिताजी के चले आने के बाद उन शेख़ ने वहाँ उपस्थित लोगों से दरियाफ्त किया कि उस स्थान के ईश्वर भक्त और जिज्ञासु उनकी (हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद कु० सि० की) खिदमत में हाजिर होते होंगे। लोगों ने कहा कि यह शेख़ नहीं हैं बल्कि कुरान शरीफ पढ़ाया करते हैं। शेख़ नूरुद्दीन (रहम०) ने फ़रमाया कि 'सुबहान अल्लाह ! यहाँ के लोग भी अजीब अन्धे और मुर्दा है कि ऐसे कामिल शेख़ (पूर्ण समर्थ सतगुरु) से लाभान्वित नहीं होते और न उनसे रूहानी फ़ैज़ हासिल करते हैं।' अतः शेख़ नूरुद्दीन (कु० सि०) की यह बात तमाम लोगों में फैल गई और लोगों ने इनके पास आना जाना शुरू कर दिया और उनसे रूहानियत की तालीम हासिल करके खूब ही फैजयाब (लाभान्वित) होने लगे। लेकिन मेरे पूज्य पिताजी को एकान्तवास तथा गुप्त रहना बहुत पसन्द था, अतः लोगों को उनकी ओर आकर्षित होने से उनका दिल तंग (परेशान) रहता था।

कहा जाता है कि शेख़ ख्वारजी करुई (कु० सि०) की यह आदत थी कि जिस जगह जाया करते थे वहाँ जिन सन्तों और सतगुरुजनों से मुलाकात हुआ करती थी उनकी रूहानी निस्बत सल्ब कर लिया करते थे (छीन लेते थे, जज़्ब कर लेते थे)। जब मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) की दियार (जगह, स्थान) में पहुँचे तो वहाँ से सब मशायख (सतगुरु जन) उनकी मुलाकात को आये। हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (रहम०) ने फ़रमाया कि हमको भी उनकी मुलाकात के वास्ते जाना चाहिये और बातिन (हृदय) से उनकी रूहानी निस्बत सल्ब कर ली। शेख़ ख्वारजी ने अपने को खाली पाया। बहुत ही परेशान और दुखी हुये। जब हजरत मौलाना उनकी मुलाकात को सवार हुये तो शेख़ को अपनी निस्बत की बू (सुगन्ध) आई और आप ऊंट पर सवार होकर उस खुशबू के पते से आगे बढ़ते चल जाते थे और जैसे-जैसे आगे जाते थे और मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से नजदीक होते जाते थे वह

खुशबू ज्यादा होती जाती थी, यहाँ तक कि जब मौलाना से मुलाकात हुई और वह खुशबू मुन्कता (खण्डित) हो गई, शेख़ समझ गये कि मौलाना ने निस्बत सल्ब कर ली है। अत्यन्त दीनता और विनम्रता के साथ उन्होंने मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से निवेदन किया कि मुझे नहीं मालूम था कि यह विलायत (क्षेत्र) आपसे सम्बन्धित है। मैं अभी लौटा जाता हूँ। हजरत मौलाना (कु० सि०) को शेख़ की विनम्रता और दीनता पर बहुत दया आई और उनकी निस्बत उनको वापस कर दी। शेख़ अपनी निस्बत पुनः वापस पा कर उसी समय उस जगह से उसी सवारी पर अपने घर के लिये चल दिये।

हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) का शरीरान्त नौ मुहर्रमुलहराम 970 हिजरी को हुआ। आपकी कब्र मुबारक शहर सब्ज़ मावराउल नहर के निकट मौज़ा सिवाज में है।

❷❷

23. हजरत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु॰ सि॰)

आपकी मजार इमकोना में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

23. हजरत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु० सि०)

हजरत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु० सि०) को अपने पूज्य पिताजी हजरत दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से रूहानी निस्बत प्राप्त हुई और उन्हीं की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) से पूर्ण समर्थ सन्त व सतगुरु की पदवी पर पहुँचे। तीस साल तक अपने पूज्य पिताजी की गुरु-पदवी पर सुशोभित रहे और अपने पास आने वाले जिज्ञासुओं और साधकों को बराबर आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते रहे। यद्यपि आप बहुत ही वृद्ध हो गये थे और आपके हाथ काँपते थे लेकिन मेहमानों के लिये स्वयं खाना लाते थे और प्रायः मेहमानों के नौकरों और सवारियों की स्वयं देखभाल किया करते थे और नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति का विशेष ध्यान रखते थे। इस सिलसिले की साधना में नाम जप तथा आन्तरिक अभ्यास के जो नये ढंग प्रचलित हो गये थे उनसे परहेज करते थे। आपके अध्यात्मिक चमत्कार व हृदय का प्रकाश सूर्य के प्रकाश से अधिक रोशन (प्रकाशित) और प्रसिद्ध थे और आप अपने समय में जिज्ञासुओं और साधकों के आकर्षण केन्द्र थे। आपके सत्संग में बड़े-बड़े विद्वान, साधक व सन्त महात्मा आपकी आध्यात्मिक शिक्षा से लाभान्वित होने के लिये उपस्थित हुआ करते थे। यहाँ तक कि बादशाह भी आपके चौखट की मिट्टी को सुरमा बनाते थे (अपनी आँखों में लगाते थे)।

कहा जाता है कि तूरान के बादशाह ने स्वप्न में देखा कि एक बहुत ही विशाल दरबार सुशोभित है और वहाँ रसूल अल्लाह हजरत मुहम्मद (सल्ल०) विराजमान हैं। वहाँ प्रवेश द्वार पर एक बुजुर्ग हाथ में डंडा लिये हुए खड़े हैं और वहाँ द्वार पर एकत्रित लोगों की मनोकामनाएँ, तथा समस्याएँ हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से अर्ज करते हैं और उनसे हर एक का जवाब लाते हैं। जनाब पैगम्बर (सल्ल०) ने एक तलवार इन बुजुर्ग के हाथ अकुला खाँ को भेजी और उन्होने आकर उसकी कमर में बाँध दी। जब अकुला जगे तो उन बुजुर्ग का हुलिया (शक्ल सूरत) लोगों से बतला कर उनका पता पूछा। किसी ने उनसे निवेदन किया इस शक्ल सूरत के हज़रत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी कु० सि० हैं। अतः वह बड़े ही उत्साह के साथ भेंट स्वरूप कुछ वस्तुएँ लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, और आपका हुलिया जैसा ख्वाब में देखा था पा

कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और बड़ी विनम्रता के साथ उनसे उस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने के लिये निवेदन किया, मगर आपने उसे स्वीकार न किया और फ़रमाया कि फकीरी (साधुता) की मिठास नामुरादी (अपनी कोई इच्छा न रहना) और कनाअत में (जो कुछ ईश्वर का दिया हुआ अपने पास है उसी में सन्तोष करने में) है। बादशाह ने बड़ी विनम्रता के साथ कुरान शरीफ की इस आयत की तरफ इशारा किया 'अतीउल्लाहा व अतीउर्रसूल व उलिल अमरे मिनकुम (अल्लाह की फरमाबरदारी (आज्ञापालन) करो और रसूल की फरमाबरदारी करो और जो तुम में हाकिम है उनकी फरमाबरदारी करो)। तव विवश होकर आपने वह भेंट स्वीकार की। उसके बाद बादशाह प्रतिदिन प्रातःकाल उनकी सेवा में उपस्थित हुआ करता था।

कहा जाता है कि किसी जगह का बादशाह मीर मुहम्मद खाँ ने समरकन्द पर विजय प्राप्त करने के लिये वहाँ के बादशाह बाकी मुहम्मद खाँ पर पचास हजार सवार लेकर आक्रमण कर दिया। बादशाह बाकी मुहम्मद खाँ अपने में उस आक्रमण का सामना करने की सामर्थ्य न पा कर हज़रत ख्वाजगी इमकिनकी (कु॰ सि॰) की खिदमत में हाजिर हुआ और उनसे उस युद्ध में सफलता के लिये दुआ करने एवं उसे साहस प्रदान करने के लिये विनम्र निवेदन किया। हज़रत ख्वाजगी स्वयं मीर मुहम्मद खाँ के पास तशरीफ ले गये और उसको समझाया कि तुम वापस हो जाओ। मुसलमानों को आपस में लड़ना अच्छा नहीं। मगर वह उनकी बात को नहीं माना और हजरत ख्वाजगी (रहम॰) उससे अत्यन्त रुष्ट होकर वहाँ से वापस आये। आपने बाकी मुहम्मद खाँ से कहा कि तुम अपने फौज की कमी की चिंता न करो और दुश्मन से मुकाबला करो। इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) तुम्हारी विजय होगी। अतः बाकी मुहम्मद खाँ हज़रत ख्वाजगी (कु॰ सि॰) के आदेशानुसार युद्ध के लिये रवाना हुआ और मौलाना ख्वाजगी (कु॰ सि॰) अपने मुरीदों के साथ उसके पीछे रवाना हुए और एक पुरानी मस्जिद में काबा शरीफ की तरफ उन्मुख होकर मराकबा (ध्यान) में बैठ गये और बार-बार सर उठा कर दरियाफ्त करते कि क्या खबर है? यहाँ तक कि किसी ने आकर बतलाया कि बाकी मुहम्मद खाँ की विजय हो गई। तब आप वहाँ से उठ कर घर तशरीफ लाये। कहा जाता है कि एक दरवेश ने बतलाया कि एक रात मैं हज़रत ख्वाजगी (रहम॰) के साथ नंगे पैर जा रहा था। यकायक मेरे पैर में काँटा लग गया।

आपने फ़रमाया कि जब तक काँटा नहीं लगता फूल हाथ में नहीं आता।

कहा जाता है कि एक बार तीन विद्यार्थी आपके दर्शनों के लिये रवाना हुये और हर एक ने अपने-अपने दिल में अलग-अलग नियत की (विचार किया) कि अगर हजरत ख्वाजगी ने मुझे फलाँ (अमुक) भोजन कराया तब मैं उनको ऋद्धि-सिद्धि से परिपूर्ण महात्मा समझुंगा। दूसरे ने कहा कि अगर मुझको वह फलाँ मेवा खाने को देंगे तो मैं इन्हें वली (महात्मा) समझुंगा। तीसरे ने कहा कि अगर फलाँ खूबसूरत लड़का मेरे पास आ जाये तब मैं उन्हें आध्यात्मिक चमत्कार से युक्त महात्मा समझुंगा। जब वह तीनों विद्यार्थी आपकी सेवा में उपस्थित हुये, आपने पहिले दो विद्यार्थियों की मनोकामना पूर्ण कर दी और तीसरे से कहा कि दरवेशों से जो हालत व करामात (चमत्कार) प्रकट होते हैं वह शरीअत (धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों) के अनुसार होते हैं। उनसे कोई व्यवहार व आचरण शरीअत के विरुद्ध नहीं प्रकट होता। फिर तीनों की ओर मुखातिब होकर फ़रमाया कि दरवेशों के पास दुनियावी उचित कार्यों के लिये भी न जाना चाहिये क्योंकि इनके अन्तःकरण की दशा ऐसी होती है कि प्रायः वह इस प्रकार के दुनियावी कार्यों की ओर ध्यान नहीं देते। ऐसी हालत में उनके पास आने वालों का नुकसान ही होता है। और ऐसे लोग उनके रूहानी फ़ैज से वंचित रह जाते हैं। दरवेशों के पास खालिस अल्लाह के वास्ते (मात्र ईश्वर के लिये) आना चाहिये जिससे कि उनके बातिन से हिस्सा मिले।

आपने शरीरान्त के थोड़े समय पहिले अपने खलीफा हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (कु० सि०) को एक खत लिखा था। उसके अन्त में ये दो शेर लिखे थे-

ज़माँ ता ज़माँ मर्ग याद आयदम,
नदानम कनूँ ताचे पेश आयदम ।
जुदाई मुबादा मरा अज़ खुदाए,
दिगर हर्चे पेश आयदम शायदम ।

(हर वक्त मुझे मौत याद आती है। अब तक मुझे यह विश्वास नहीं कि क्या मेरे सामने आने वाला है। खुदा से मेरी रीदू न हो जाये और जो कुछ मेरे सामने आये उसका मैं मुस्तहक़ हूँ (उसी के लायक मैं हूँ)।

उक्त पत्र लिखने के कुछ ही दिनों पश्चात आपका शरीरान्त हो गया।

'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपका शुभ जन्म नौ सौ अठारह हिजरी में हुआ था और आपका शरीरान्त एक हजार आठ हिजरी में हुआ।

❷❸

24. हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (कु० सि०)

आपकी मजार दिल्ली में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

24. हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (कु० सि०)

हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (कु० सि०) को हजरत ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) से रूहानी निस्बत हासिल हुई थी। आपका शुभ जन्म काबुल में ९७१ हिजरी में हुआ था। बचपन में ही आपके चेहरे से एक तपस्वी एवं इन्द्रिय निग्रही महात्मा के लक्षण प्रकट होते थे। आप अधिकतर एकान्त स्थान में बैठे रहा करते थे। आपने उस समय के उत्कट विद्वान मौलाना मुहम्मद सादिक हवाई (रहम०) से सांसारिक विद्या ग्रहण की और थोड़े ही समय में आप अपनी तीव्र बुद्धि के फलस्वरूप अपने दूसरे सहपाठियों से बहुत आगे बढ़ गये। अभी आपने सांसारिक विद्या पूर्ण रूप से समाप्त नहीं की थी कि इसी बीच आपने ईश्वर-भक्ति के मार्ग में कदम रक्खा और मावराउल नहर के बहुत से सतगुरुजनों की सेवा में उपस्थित हुये, परन्तु कही भी उनको साधना में स्थिरता नहीं प्राप्त हुई। एक रोज सूफी सन्तमत की एक पुस्तक पढ़ रहे थे कि उसी समय एक तजल्ली का ज़हूर हुआ (उनमें एक प्रकार का आत्मिक प्रकाश प्रकट हुआ) और वह बेचैन हो गये और उस समय हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की पवित्र आत्मा ने उनके अन्तःकरण में नाम-जप का अभ्यास करने की तौफीक (सामर्थ्य, क्षमता) उत्पन्न की और ईश्वर-प्रेम के जज़्बात से उनके हृदय को भर दिया। इसी दशा में हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) किसी कामिल शेख़ (पूर्ण समर्थ सतगुरु) की तलाश में इतने परेशान रहते थे और इस तलाश में इतना परिश्रम व प्रयत्न करते थे जो मनुष्य की शक्ति के बाहर है। अतः उनकी यह दशा देखकर उनकी पूज्य माता जी का हृदय करुणा से भर गया और उन्होंने ईश्वर से यह आर्द्र आराधना की कि 'या अल्लाह ! तू मेरे बेटे का उद्देश्य पूरा कर या मुझको मौत दे क्योंकि मुझ में इसकी बेचैनी की दशा देखने की शक्ति नहीं।'

हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) फ़रमाया करते थे कि मुझे ईश्वर-भक्ति के मार्ग में जो सफलता प्राप्त हुई वह मेरी पूज्य माता जी की दिली दुआ से हुई। आपने सतगुरु की तलाश में तमाम मावराउल नहर, बल्ख़, बदख्शाँ, लाहौर, काश्मीर वगैरह छान डाला और बड़े-बड़े मशायख (सतगुरुजनों) की सोहबत से फैज़याब हुए।

कहा जाता है कि जिस जमाने में आप लाहौर में थे वहाँ एक मज्जूब (अवधूत)

रहता था। आप उसके पास जाया करते थे। वह कभी आपको गालियां देता और कभी पत्थर मारता और कभी आपसे भागता था। मगर आपने उसका पीछा न छोड़ा। आखिरकार एक दिन उसको इनकी दशा पर दया आ गई और अपने पास बुलाकर उनके उद्देश्य की प्राप्ति के लिये ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना की। हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) फ़रमाया करते थे कि यद्यपि मैंने पुराने जिज्ञासुओं और साधकों की तरह इन्द्रिय निग्रह और तपस्या नहीं की लेकिन सतगुरु की खोज एव उनके मिलन की प्रतीक्षा में बड़ी व्याकुलता और बेचैनी का समय व्यतीत किया है। अन्ततोगत्वा हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) सतगुरु की तलाश में मौलाना शेरगानी के पास पहुँचे और वहाँ से समरकन्द को आये। रास्ते में आपने हिन्दुस्तान के अपने कुछ मित्रों को एक खत लिखा, जिसमें यह शेर अंकित था-

मन अज मुहीत मुहब्बत निशाँ हमी दीदम,
कि उस्तख्वाने अज़ीज़ाँ बसाहिल उफ्ता दास्त ।

(मैं मुहब्बत की दरिया (नदी) से यह निशानियाँ देख रहा था कि अज़ीज़ों अर्थात् मुहब्बत करने वालों की हड्डियाँ उसके किनारे पड़ी हुई हैं।

इसी यात्रा में आपको आत्मिक प्रेरणा से यह ज्ञात हुआ कि हज़रत ख्वाजा अहरार (रहम०) फ़रमाते हैं कि मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी के पास जाओ और हजरत मौलाना इमकिनकी (रहम०) को स्वप्न में देखा कि फ़रमाते हैं कि 'ऐ फरजन्द ! मेरी आँखें तेरी तरफ लगी हुई हैं। यह देखकर हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) बहुत खुश हुये और यह शेर जबान से निकल पड़ा :-

मी गुज़श्तम जे ग़म आलूदा कि नाला ज़मगीं,
आलमे आशोब निगाहे सरेराहम बगिरफ्त ।

(मैं दुःख से निश्चित होकर जा रहा था कि दुनियाँ में हलचल (क्रान्ति) पैदा करने वाली एक दृष्टि ने मार्ग में मुझे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया)।

हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) की खिदमत में पहुँचे और वहाँ तीन दिन रात एकान्त में उनसे सत्संग किया और अपने तमाम बातिनी हालात उनको सुनाए। हजरत मौलाना इमकिनकी (कु० सि०) ने हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से फ़रमाया कि ईश्वर की असीम कृपा से

आध्यात्मिक शिक्षा तथा इस सिलसिले के सतगुरुजनों की साधना पद्धति का अभ्यास तुम को पूर्ण रूप से प्राप्त हो गया। अब तुम हिन्दुस्तान जाओ। तुम से वहाँ यह आध्यात्मिक साधना पद्धति प्रचलित होगी। पहले तो हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने अत्यन्त विनम्रता एवं दीनता के साथ अपनी विवशता प्रकट की, परन्तु बाद को हजरत मौलाना इमकिनकी (रहम०) के आदेशानुसार हिन्दुस्तान को रवाना हुए।

जब आप लाहौर पहुँचे तब एक साल तक वहाँ रुके। वहाँ के सभी विद्वान व सन्त महात्मा आपसे प्रेम करने लगे। इसके बाद देहली के लिये प्रस्थान किया। वहाँ किला फिरोज़ी में रहने लगे और फिर अपने जीवन के अन्तिम समय तक यहां से अलग नहीं हुए। आप अपने बातिनी हालात को (आत्मिक स्थितियों तथा दशाओं को) गुप्त रखते थे और चुपचाप एकान्त में अपनी साधना में लीन रहते थे। अपने दुर्गुणों को ही देखने की प्रवृत्ति तथा विनीत भावना दोनों ही आपके व्यक्तित्व में पूर्ण रूप से समाहित एवं व्याप्त थी। अगर कोई व्यक्ति आपकी सेवा में अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिये उपस्थित होता, तो आप उसे अपनी विवशता प्रकट करते हुए वापस कर देते। हाँ, जब उसकी उत्कंठा और जिज्ञासा में लगन ओर तीव्रता देखते तो उसे स्वीकार कर लेते।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति खुरासानी हजरत ख्वाजा बख्तियार काकी (रहम०) की मजार (कब्र) पर रहा करता था और ख्वाजा बख्तियार (कु० सि०) की रूह (आत्मा) से किसी पूर्ण समर्थ सतगुरु से मिलाने के लिये दुआ किया करता था। जब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) उस शहर में पहुँचे तो हजरत बख्तियार काकी (रहम०) की ओर से उस शख्स को यह आत्मिक प्रेरणा हुई कि एक बुजुर्ग नक्शबन्दिया सिलसिले के इस शहर में आये हुये हैं और तुम को उनकी सेवा में जाना चाहिए। इस आत्मिक प्रेरणा के अनुसार वह शख्स हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की सेवा में हाजिर हुआ ओर उनसे अपना उद्देश्य निवेदन किया। उन्होंने फ़रमाया कि मैं इस लायक नहीं हूँ और उससे इतनी विवशता, दीनता और विनम्रता प्रकट की कि वह शख्स उनकी बात को मान गया और वापस चला गया। रात में उसने फिर स्वप्न में देखा कि हजरत बख्तियार काकी (कु० सि०) ने फ़रमाया कि

जिसका मैंने तुझ से इशारा किया था वही बुजुर्ग हैं जिनके पास तू गया था। अतः अगले रोज वह फिर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और अपना रात का वाक़या सुनाया। आपने फ़रमाया कि नहीं वह कोई और होंगे, मैं बिलकुल ऐसा नहीं हूँ। तुम जा कर दूसरी जगह तलाश करो और कहीं किसी का पता लगे तो मुझको भी आकर बतलाना, मैं भी उनकी ख़िदमत में हाजिर हूँगा। वह फिर वापस चला गया। रात को हजरत बख्तियार काकी (कु० सि०) ने स्वप्न में पुनः उससे यही फ़रमाया कि तुम उन्हीं के पास जाओ। तीसरे दिन वह शख्स हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ और बड़ी ही व्याकुलता और विनम्रता के साथ उनसे अर्ज किया कि मैं अब आपकी चौखट को छोड़कर कही दूसरी जगह नहीं जाऊँगा। तब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने उसे अपनी सेवा में स्वीकार किया और उसको विशेष आग्रह के साथ आदेश दिया कि वह किसी से भी यह प्रकट नहीं करेगा कि वह कहाँ जाता है।

इसी प्रकार की एक घटना आपके खलीफा ख्वाजा हिसामुद्दीन अहमद (रहम०) की है। जब आप शुरू में हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुए, उन्होने फ़रमाया कि मैं इस योग्य नहीं हूँ, किसी और जगह जा कर पीर की तलाश करो और अगर पता लगे तो मुझे भी खबर करना, मैं भी उनकी खिदमत में हाजिर हूँगा। यह बात हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने ऐसी विनम्रता के साथ कही कि ख्वाजा हिसामुद्दीन अहमद (रहम०) ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और वह पीर की तलाश में आगरा चले गये। वहाँ जा कर बहुत ही हैरान और परेशान थे कि क्या करें। अकस्मात एक गली में से गाने की आवाज आई। कोई यह शेर शेख़ सादी (रहम०) का पढ़ रहा था-

तू ख्वाही आस्तीं अफ़शाँ व ख्वाही दामन अन्दर कुश
मगस हरगिज न ख्वाहद रफ्त अज़ दुकाने हलवाई

(चाहे तुम अपनी आस्तीन झाड़ों, चाहे दामन को अन्दर खींचो, हलवाई की दूकान से मक्खी हरगिज नहीं जायेगी)

यह सुन कर आप तत्काल वापस आ गये और हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाजिर होकर कुल घटना सुनाई। तब आपने इनको अपनी

सेवा में स्वीकार किया। आप जिस किसी को अपनी शरण में लेते, अगर उसमें प्रेम का ज़ज्बा (भावावेश) ज्यादा देखते तो उसको तरीका राबिता की तालीम फ़रमाते (किसी साधक के हृदय में सतगुरु के प्रेम, सानिध्य तथा उसकी रूहानी निस्बत को दृढ़ करने के लिये जो साधनाएँ सतगुरु द्वारा शिष्य को बताई जाती है उन्हें 'तरीका राबिता' कहते हैं। 'राबिता' का शाब्दिक अर्थ है 'लगाव, संपर्क, सम्बन्ध' ।) और किसी को ज़िक्र क़ल्बी (हृदय द्वारा जाप) और किसी को 'लाइलाह इल्लिल्लाह' और किसी को 'इस्म जात' (ईश्वर का नाम जप) फ़रमाते थे। आपकी निस्बत में जज़्ब (भावावेश) अत्यधिक था। जिस पर आपकी नजर पड़ती वह बेइख्तियार बेबस और बेताब (बेचैन) हो जाता था।

कहा जाता है कि एक लश्करी (फौजी) हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से मिलने आया और अपना घोड़ा साईस को दे आया। हजरत ख्वाजा (रहम०) पवित्र होने के लिये (हाथ, पैर तथा मुंह आदि धोने के लिये) मस्जिद से बाहर तशरीफ ले गये और संयोग से उनकी दृष्टि उस साईस पर पड़ गई। इधर हजरत ख्वाजा (रहम०) मस्जिद में तशरीफ लाये, उधर साईस पर जज़्ब (भावावेश) व बेखुदी (अचेतनता) का तेज असर हुआ, यहाँ तक कि वह उन्माद व पागलपन की दशा में बाजार की तरफ गया और वहाँ से जंगल को चला गया। फिर यह नहीं मालूम हो सका कि वह कहाँ गया। हजरत ख्वाजा (कु० सि०) की आध्यात्मिक जीवन की ऐसी अनेकों घटनाएं हैं। आप तालीम हिम्मत व तवज्जोह फ़रमाते थे, यहाँ तक कि साधक का क़ल्ब (हृदय) मुतजौहर (विशेषताओं से परिपूर्ण) हो जाता था और किसी को आलमे मिसाल (वह जगत जो परलोक के अन्तर्गत है और जिसमें संसार की हर वस्तु ज्यों की त्यों मौजूद है) और किसी को आलमे अर्वाह (आत्माओं के रहने का लोक) मुन्कशिफ (प्रकट, व्यक्त) हो जाता और कुछ लोग आपकी केवल सूरत देखकर मज्जूब (अवधूत) व मग़लूब (प्रभावित) हो जाते थे। कहा जाता है कि एक बार ख़तीब (धर्मोपदेश करने वाला) मिंबर पर चढ़ा (मस्जिद का वह ऊँचा स्थान जहाँ खड़े होकर धर्मोपदेश दिया जाता है उसे मिंबर कहते हैं)। संयोग से हजरत ख्वाजा (रहम०) की दृष्टि उस ख़तीब पर पड़ गई। तत्काल वह तड़प कर मिंबर पर से गिर पड़ा।

कहा जाता है कि एक बार आपके खलीफा हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०)

ने रमज़ान के महीने में रात के वक्त एक सेवक के द्वारा हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के पास फ़ालूदा भेजा। वह सादा तबियत तथा भोले भाले स्वभाव का था। वह सीधे मुख्य द्वार तक चला गया। उस समय हजरत ख्वाजा (रहम०) ने अपनी दयालुता के कारण और किसी को न उठाया और स्वयं ही फ़ालूदा लेने चले गये और उस सेवक से फ़ालूदा लेकर पूछा तेरा क्या नाम है ?'। उसने निवेदन किया 'बाबा'। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने फ़रमाया 'हमारे मियाँ मुजद्दिद अल्फ़सानी का सेवक है तो हमारा ही है। जैसे ही वह वापस हुआ जज़्ब (भावावेश) व सुक्र (नशा) उस पर गालिब होना शुरू हुआ और वह चिल्लाता हुआ गिरते पड़ते हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुआ। हजरत ने घटना पूछी। उसने पूरी घटना बतलाई और कहा कि जमीन, आसमान, दरख़्त, पत्थर सब जगह नूर (प्रकाश) बेरंग ऐसा नजर आता है, जिसका बयान नहीं कर सकता। आपने फ़रमाया कि हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) इस बेचारे के सामने पड़ गये और परतों आफ़ताब (सूर्य का प्रकाश) इस ज़र्रे (कण) पर पड़ गया। कहा जाता है कि सभी लोगों पर आपकी दया कृपा इस क़दर थी कि एक बार आपके सामने लाहौर में भीषण दुर्भिक्ष (सूखा) पड़ा। जब आपके सामने खाना आता तो आप फ़रमाते कि यह क्या इनसाफ़ (न्याय) है कि गली में तो आदमी भूखे मरें और मैं भोजन करूँ और उस भोजन को गरीब जरूरतमन्द लोगों में वितरित करा देते। सफर में अगर किसी को थका हुआ व बूढ़ा देखते, उसको अपनी सवारी पर सवार कर लेते और खुद पैदल हो जाते और जब शहर करीब आता, आप फिर सवार हो लेते, जिससे कि उनका वह पुण्य का कार्य लोगों से गुप्त रहे।

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) तहज्जुद (आधी रात के बाद) की नमाज के लिये उठे। आपके बिछौने के लिहाफ़ में बिल्ली बैठ गई। आप सुबह तक सर्दी का कष्ट उठाते रहे, परन्तु बिल्ली को लिहाफ़ से न उठाया। अगर किसी को धर्म विरुद्ध कोई अनुचित व्यवहार करते हुये देखते तो औरों की तरह विस्तार के साथ तथा सख्ती से उससे उसके अनुचित व्यवहार के लिये न कहते बल्कि इशारतन (संकेत रूप में) उसको समझा देते।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति हजरत ख्वाजा (रहम०) के पड़ोस में रहता था। तरह-तरह की शरारतें वह करता रहता था मगर आप सब सहन करते रहते थे। एक

बार आपके किसी मुरीद ने यह हाल देखकर उसको कोतवाली में पकड़वा दिया। आप यह सुन कर अपने मुरीद से नाराज हुए। उसने अर्ज किया कि 'हुजूर, वह शख्स बड़ा शैतान व शरारती है।' हजरत ख्वाजा ने यह सुन कर दिल से एक ठंडी साँस खींची और फ़रमाया कि 'हाँ तुम अपने को नेक व सदाचारी समझते हो, तुम को दूसरे लोग शैतान व शरारती नजर आते हैं। हम क्या करें क्योंकि हमको वह किसी तरह हमसे बुरा नहीं मालूम होता। यह सुन कर उनके मुरीद ने उस शख्स को कैद से रिहा करा दिया।

कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत ख्वाजा (रहम०) हजरत ख्वाजा बख्तियार काकी (कु० सि०) के पवित्र मजार (कब्र) के दर्शनों के लिये गये। खादिमों (सेवकों) ने आपके शुभागमन की सूचना पा कर मजार के निकट एक चादर आपके बैठने के वास्ते बिछा दी। संयोग से वहाँ एक क्रोधी स्वभाव का फकीर मौजूद था। उसने वह चादर देखकर दरियाफ्त किया कि यह किस के वास्ते है। खादिमों ने हजरत ख्वाजा (रहम०) का नाम लिया। वह आपका नाम सुन कर आग बबूला हो गया आपकी शान में बहुत सख्त अलफाज़ (शब्द) कहना शुरू किये कि इतने में हजरत ख्वाजा (रहम०) भी तशरीफ लाये। आपकी ओर मुतवज्जह (आकृष्ट) होकर उसने और भी ज्यादा अनुचित शब्द कहना शुरू किये। आपने उससे क्षमा माँगते हुये कहा कि जो कुछ हुआ मेरी गैर जानकारी में और बिला मेरी इजाजत हुआ। तुम नाराज मत हो, तुम जैसा मेरे लिये कहते हो ठीक मैं ऐसा ही हूँ। हजरत के साथियों ने चाहा कि उस फकीर को चेतावनी दें, मगर आपने उन लोगों को मना कर दिया और उसके करीब जा कर आपने उसका पसीना अपनी बाँह से पोंछा और अत्यन्त विनम्रता से उसको कुछ रुपये दिये और फ़रमाया मेरी कमबख्ती (दुर्भाग्य) की वजह से तुम अपना दिमाग क्यों खाली करते हो, जाने दो! हजरत ख्वाजा (रहम०) के साथ जो लोग गये थे वे बतलाते थे कि उस फकीर ने इस क़दर बुरा भला हजरत को कहा, लेकिन आपके चेहरे में शिकन तक न पैदा हुई। अगर हजरत ख्वाजा (रहम०) के मुरीद से भूल वश कोई अपराध हो जाता तो आप फ़रमाया करते कि यह मेरी बदसिफ्ती (दुर्गुणों) का सबब (कारण) है। न यह बातें मुझ में होती, न इनमें मुनअकिस (प्रतिबिम्बित) होती। अगर कोई शख्स आपके सत्संग में किसी मुसलमान की बुराई बयान करता, आप उसकी

तारीफ शुरू कर देते। हमेशा अपने असहाब को नेस्ती (अपने जीवन तथा इस संसार को क्षणभंगुर समझने) तथा दीद कसूर (अपने ही दुर्गुणों को देखने) पर विशेष बल देते।

कहा जाता है कि शेख़ ताज सम्हली जो हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के खलीफा थे शुरू में शेख़ अली बख्श खलीफा मीर सैयद अली कौम जौनपुरी (कु० सि०) से मुरीद हुये थे। एक शख्स दीवाना अबूबक्र भी शेख़ अलाबख्श (कु० सि०) का मुरीद था। यह अबूबक्र भी सम्हल का रहने वाला था। जब हजरत शेख़ ताज हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से खिलाफत (खलीफा होने का अधिकार) प्राप्त करके अपने निवास स्थान सम्हल में आये, वहाँ आपका लोगों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और आप साधकों ओर जिज्ञासुओं को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के पवित्र कार्य में लग गये। आपका प्रभाव देखकर सम्हल के कुछ लोगों को आपसे ईर्ष्या पैदा हुई और इन लोगों ने आपसे दीवाना अबूबक्र को भिड़वा दिया। आपने दीवाना अबूबक्र को सचेत किया और समझाया तथा यह सम्पूर्ण घटना हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) को लिख कर भेज दी। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने इसके जवाब में निम्नांकित खत लिखा :-

'तुमने जो खत शेख़ अबूबक्र के विषय में लिखा हमने उसको पढ़ा। इस तरह की बातें लिखना तजुर्बेकारी (अनुभव) और शफकत (मेहरबानी) के अनुकूल नहीं है। उच्च कोटि के सन्त महात्मा भी बड़े गुनाहों (पापों) से महफूज (सुरक्षित) नहीं रह पाते, तो यह बेचारा (अबूबक्र), जो थोड़े दिनों इस सिलसिले की तालीम पर चला, कैसे गुनाह से महफूज रह सकता हे और कैसे उससे विरोध न करने की आशा की जाये। विशेष रूप से यदि वह वास्तव में दीवाना हो तो उससे अच्छे गुणों की आशा न रखनी चाहिये, चाहे वह विलायत (वली, महात्मा) के तुर (प्रकाश) तक पहुंच जाये। खुदा ही समझ सकता है कि उस अवसर पर अनुचित बातें उसकी बुद्धि में आ गई हो और उचित बात उसकी नजर से पोशीदा (गुप्त) रह गई हो। धर्म शास्त्र के विरूद्ध कोई आपत्तिजनक व्यवहार भी अक्ल (बुद्धि) होने पर ही दण्डनीय समझा जाता है। सारांश यह कि हर एक शख्स को उसके मरतबे को देखकर काबिले मुआफ़ी (क्षमा योग्य) समझना चाहिये और अल्लाह पर नजर रखनी चाहिये।

लोगों के मन की स्थिति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं। कुछ लोगों का मन बुराई की तरफ ले जाने वाला और कुछ अल्लाह पर भरोसा रखने वाले और कुछ इन दोनों के बीच की स्थिति के होते हैं, जिनका मन बुराई करने पर उनकी मलामत (भर्त्सना) कर देता है। वह लोग भी अगर साहबे अक्ल (बुद्धिमान) हों तो औलिया (महात्मा) की श्रेणी तक पहुंच सकते हैं। बुरे नफ़्स (मन) वालों को भी क्षमा योग्य समझना चाहिये बल्कि मेहरबानी की नजर से देखना चाहिये। उनके हर काम में अच्छाई देखने की आदत डालना चाहिये। सम्हल वालों की तान व्यंग व तस्नीफ (मन गढ़ंत बातों) का भी इन्कार नहीं करना चाहिये (आपत्ति नहीं करनी चाहिये), बल्कि रहमत की नजर से उनको देखना चाहिये, क्योंकि यह लोग अक्ल की राहों (बुद्धि के मार्ग) पर चल रहे हैं और नफ़्स (मन) की बुरी आदतों को छोड़ चुके हैं। अगर विवशता से कोई गुनाह उनसे हो जाता है और कोई बुरा व्यवहार वह करते हैं, तो उनके तमाम नेक कामों को नजर अन्दाज (दृष्टि से ओझल) क्यों करते हैं। खुदा का शुक्र है कि औलिया (सन्तों) के हिस्से में भी मलामत (भर्त्सना) पड़ी है। हम खुद भी मलामत के जाहिर होने पर दूसरा तरीका अख्तियार करते हैं। जब कभी हमारी कोई बुराई की जाती है तो अपने मन को हम देखते है और कोई एक दुर्गुण अपने में पाते हैं और इन आलोचनाओं को ग़ैबी (परोक्ष) नसीहत समझते हैं, क्योंकि अपने इन दुर्गुणों के कारण ही इस दुनिया में हमारी मलामतें (भर्त्सनाएँ, आलोचनाएँ) होती हैं और खुदा से हम दुआ करते हैं कि यह बुराइयाँ हम से दूर हो जायें। कृपा कर यह बतायें कि सम्हलियों की मलामत से क्या नतीजा निकलेगा। क्या इबादत को क़बूल न करेंगे या उनकी तरफ खालिस तवज्जोह करना मौकूफ कर देंगे (रोक देंगे)। उनका मामला खुदा के सामने पेश होगा।

शेर-

'ऐ माशूक़ा, तुरा बर सरे आलम खाक वस्सलाम'

(ऐ माशूक़ा (प्रेमिका)! तुझ पर और तमाम दुनिया पर ख़ाक पड़े)।"

सांसारिक धन-दौलत से आपको इतनी निस्पृहता (अनिच्छा) थी कि कभी मस्जिद में सांसारिक बातें नहीं होती थी और न अपने वास्ते, न अपने दरवेशों (साधकों) के वास्ते दुनिया की चीजें एकत्रित करने का प्रयत्न करते। अपने तथा

अपने मुरीदों के लिये सिवा फुक्र (निर्धनता) व फाका (निराहार रहना) व क़नाअत (सन्तोष) व जुहद (इन्द्रियनिग्रह) व मस्कनत (विनम्रता) के कुछ न चाहते थे। अगर कोई धनवान उनके दरगाह के फुकरा (साधुओं) के लिये दान स्वरूप कुछ धनराशि देना चाहता तो आप अपने और अपने फुकरा तथा खादिमों के वास्ते उसे स्वीकार न करते और फ़रमाते कि इनकी जिन्दगी मेरी तरह इन्द्रिय निग्रह, साधना के अभ्यास, ईश्वर पर भरोसा, व सन्तोष के साथ व्यतीत हो। फ़रमाते थे कि यदि किसी को मुझ से माली (धन-दौलत की) मदद पहुँचे, यह निश्चय समझ लें कि उससे मेरे दीनी मुहब्बत (धार्मिक अथवा आध्यात्मिक प्रेम) में कमी हो जायेगी। हाँ, वह गैर लोगों को माली मदद फ़रमाया करते थे।

कहा जाता है कि एक बार हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) का इरादा हज की यात्रा पर जाने का हुआ। खानखाँ ने एक लाख रुपया बतौर राह खर्च व सवारी के लिये आपकी सेवा में भेजे। आपने वापस कर दिये और फ़रमाया कि इस बात को हृदय स्वीकार नहीं करता कि इतना धन किसी का अपने खर्च में प्रयोग करूँ। खाने व कपड़े का कुछ इल्तज़ाम (अनिवार्यता) आपके स्वभाव में न था। अगर कितने ही दिनों तक इच्छा विरुद्ध भोजन मिलता, आप कभी न कहते कि इसको बदल दो या अमुक भोजन पकाओ। अगर कपड़े मैले हो जाते तो यह न फ़रमाते कि और हाजिर करो। आपका मकान बहुत ही संकीर्ण और जीर्ण-शीर्ण था लेकिन उसकी सफाई और मरम्मत की ओर कुछ ध्यान न दिया। यद्यपि आप अत्यन्त कमजोर और वृद्ध हो गये थे मगर नाम जप और ईश अराधना में अत्यन्त रुचि के साथ सदैव तल्लीन रहते थे। इशा (रात की) नमाज़ के बाद हुजरा (कोठरी) में तशरीफ ले जाते और मराक़बा (ध्यान) करते। जब कमजोरी मालूम होती उठ कर वुज़ू करते (नमाज के लिये हाथ, पैर व मुँह आदि धोते) और दो रकअत नमाज पढ़ कर फिर मराक़िब हो जाते और इसी तरह पूरी रात व्यतीत कर देते। लुक़मे (भोजन) में इतनी अधिक सावधानी बरतते थे कि अपनी धर्मपत्नी से कर्ज लेकर अपने और अपने दरवेशों के लिये भोजन पकवाते और फ़तूह में से कर्ज अदा करते। (ईश्वर की ओर से भक्तों को जो लौकिक एवं पारलौकिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं उन्हें फ़तूह कहते हैं)। आपका इस बात के लिये विशेष निर्देश था कि भोजन करते समय मनुष्य को पवित्र रहना चाहिये और

भोजन पकाते समय एकाग्रता के साथ ईश्वर की याद में रहना चाहिये। फ़रमाते थे कि जो खाना बिला एहतियात अर्थात् बिना ईश्वर के ध्यान में पकता है उसके खाने से एक धुवाँ उठता है जो मजारी फ़ैज़ (ईश्वर कृपा के उतरने का मार्ग) बन्द कर देता है और अर्वाह तईयबा (पवित्र आत्माएँ) जो ईश्वर-कृपा के उतरने के साधन हैं ऐसे भोजन करने वाले के क़ल्ब (हृदय) के समक्ष नहीं आती। हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की पूज्य माताजी जो कानितात व आरिफात से थीं (नमाज में दुआ माँगने वालों तथा ब्रह्म ज्ञानियों में से थी) इन्हीं सावधानियों के कारण घर में नौकरानियाँ होते हुये भी स्वयं तन्दूर में रोटियाँ लगाया करती थी और मुरीदों को भी इस प्रकार की सावधानी बरतने के लिये विशेष आग्रह था। अगर कोई इस विषय में असावधानी बरतता, तो इसका प्रतिकूल-प्रभाव उसे तुरन्त मालूम हो जाता। अतः कहा जाता है कि एक दरवेश ने अपनी साधना में पस्तगी (कमी) पाई। उसने हजरत ख्वाजा (रहम०) की खिदमत में हाजिर होकर अपनी हालत बयान की। आपने फ़रमाया कि भोजन में कुछ असावधानी हुई है। उसने अर्ज किया कि भोजन तो वही है। फ़रमाया कि खूब सोचो। आखिरकार मालूम हुआ कि ईधन में कुछ असावधानी हो गई थी।

आप पूरी एकाग्रता एवं दृढ़ संकल्प के साथ साधना एवं ईश-आराधना में लगे रहते थे। आप संगीत व जिक्र जहर (वाणी से आवाज के साथ जप करना) अपने सत्संग में पसन्द नहीं करते थे। एक बार आपकी मजलिस में एक दरवेश ने आवाज के साथ 'अल्लाह' कहा। आपने फ़रमाया कि इससे कह दो कि अगर हमारी मजलिस में आये तो मजलिस के अदब (शिष्टाचार) का ध्यान रक्खे। एक बार हदीस की किताबों में देखकर फ़ातिहा (कुरान शरीफ की पहली सूरा) खल्फ इमाम शाफई (रहम०) के मजहब के अनुसार पढ़ना शुरू कर दिया। हजरत इमाम शाफई (रहम०) को ख्वाब में देखा कि अपनी तारीफ में क़सीदा पढ़ते हैं और इससे यह समझ में आया कि आपका यह मतलब है कि मेरे मजहब पर हजारों औलिया (सन्त महात्मा) गुजरे हैं। इसके बाद आपने उक्त फ़ातिहा पढ़ना बन्द कर दिया। यद्यपि आप ऐसे उच्च कोटि के पूर्ण समर्थ सन्त थे, फिर भी आप अपनी नायफ्त ही की शिकायत करते थे। अपने बारे में यही कहते थे कि मैंने ब्रह्मज्ञान के क्षेत्र में कुछ भी नहीं प्राप्त किया। अतः यह रुबाई (फारसी में) आप की है :-

दर राहे खुदा जुमला अदब बायद बूद
जाजाँ बाक़ीस्त दर तलद दायद बूद
दर दरिया अगर बकामत रेज़न्द
गुम बायद कर्द व खुश्क लब बायद

अनुवाद-'खुदा के रास्ते में पूर्ण रूप से अदब (शिष्टाचार) के साथ रहना चाहिये। जब तक जीवन शेष है ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की खोज में लगे रहना चाहिये। नदी में अगर तुम्हारे हलक (तालू) में पानी डालें, तो ऐसा अनुभव करना चाहिये कि पानी नहीं पिया गया, और प्यासा बना रहना चाहिये। इस पंक्ति का भावार्थ यह है कि ब्रह्मज्ञान रूपी नदी में साधक को चाहे जितना ही आत्मज्ञान रूपी जल पीने को मिल, उसे सदैव प्यासा ही बना रहना चाहिये अर्थात् उसे यही अनुभव करते रहना चाहिये कि मुझे अभी कुछ भी ब्रह्मज्ञान नहीं प्राप्त हुआ और उसे प्राप्त करने की पिपासा बनी रहनी चाहिये)।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने आपके मुरीद को खत लिखा था। उस खत की पीठ पर यह इबारत आपने अपने कलम से लिखी:- 'अफसोस कि इस आज़िज़ (असहाय) को काम करने की ताकत नहीं रही वरना खुदा की तौफीक़ (सामर्थ्य) से इस दो दिन की जिन्दगी में दीवानों की तरह अपनी आज़ज़ी का मातम (शोक गीत) पढ़ता और कीमियाए मारफत (अध्यात्म रूपी रसायन) की तलाश में दौड़ धूप करता और अपनी जिन्दगी को इस काम पर निछावर कर देता। खुदा इस आज़ज़ी में ताकत ओर कुव्वत (सामर्थ्य) प्रदान करें, जिससे कि अपने दोनों जहान (लोक और परलोक) के काम उसके अख्तियार (अधिकार) में देकर तमाम परेशानियों से नजात (मुक्ति) पा जाऊँ।

फ़रमाया कि हजरत ख्वाजगी (रहम०) जो आपके पीर मुरशिद (सतगुरु देव) थे, इनका निम्नलिखित शेर ध्यान देने योग्य है :-

मदहो ज़मत गर तफ़ाउत मी कुनद
बनगरी वाशी कि अदबत मी कुनद।

(अगर तुम को अपनी प्रशंसा और निन्दा में अन्तर मालूम हो अर्थात अपनी प्रशंसा सुनने में प्रसन्नता हो और निन्दा सुन कर बुरा मालूम हो और दोनों दशाओं में

मनःस्थिति एक सी न रहे तो तुम प्रतीक्षा करो कि तुम को कोई अदब (शिष्टाचार) सिखायेगा।)

फ़रमाया कि 'याद कर्द' के माने जबान से याद करना। 'बाज़गश्त' के माने यह कहना कि 'इलाही। मकसूद (उद्देश्य) मेरा तू है। 'याददाश्त' इस्तेला हुजूर बग़लबा जाती फ़रमाया (साधक के हृदय में उस परमात्मा की सर्व व्यापकता एवं उपस्थिति की अनुभूति में बाहुल्यता एवं प्रचुरता उत्पन्न होना 'याद दाश्त' कहलाता है)। तौबा के माने गुनाह से निकलने के है और जो हिजाब (अज्ञानता का पर्दा अथवा आवरण) है वह गुनाह है। पस कमाल तौबा मुराद (आशय) कन्दन (खोदने) से है और इसके लिये पैवस्तन (अन्दर घुसना) लाज़िम (आवश्यक) है। फ़रमाया जुहद के माने रग़बत (इच्छा, चाह) से निकलना है। चूँकि 'रग़बत' मुक़य्यद बमताअ दुनियावी है (सांसारिक धन दौलत की इच्छा में कैद होना है), पस कमाल जुहद नामुरादी है (सांसारिक इच्छाओं से विरक्त हो जाना है)।

मिश्रा –

'चू पैबन्द हा वग़सली वासली'

(जब दुनिया से सम्बन्ध (आसक्ति) तोड़ दोगे तो ईश्वर से मिलन हो जायेगा)।

फ़रमाया तवक्कुल 'रिआयत असबाब से बाहर आने को कहते हें' (सांसारिक साधनों का भरोसा हटा कर सारे काम ईश्वर की मर्जी पर छोड़ देने को कहते हैं)। और कमाल तवक्कुल यह है कि वुज़ूद असबाब (सभी साधनों का भोक्ता इस शरीर) से जो फरअ शुहूद हक़ मुतलक़ है (जो उस परम ब्रह्म के प्रकटीकरण का एक अंश है) उससे बाहर आये (उस पर भी भरोसा न करे)। फ़रमाया क़नाअत (भाग्यानुसार जो कुछ मिल जाये उस पर सन्तोष करना) तर्क फिजूल व इक्तफा (फिजूल खर्ची को त्याग कर केवल अपनी आवश्यकताओं के अनुसार खर्च करना) और उम्दा खाने, उम्दा लिबास (वेश भूषा) और उम्दा मसकन (निवास स्थान) से परहेज करने को कहते हैं। कमाल कनाअत यह है कि केवल हस्ती और मुहब्बत हक़ तआला पर इक्तफा व आराम करे (उस परमात्मा के प्रेम एवं अस्तित्व को ही अपने लिये पर्याप्त समझे और उसी में आनन्द एवं विश्राम का अनुभव करे)। फ़रमाया उज्लत (एकान्त वास) मुखालतत खल्क (संसार की घनिष्ठता) से बाहर आने को कहते हैं और कमाल उज्लत यह है कि

रूय्यत ख़ल्क (सांसारिक चिंताओ तथा विचारों) से बाहर आये। फ़रमाया 'ज़िक्र' मासिबा अल्लाह तआला के ज़िक्र (ईश्वर के अतिरिक्त और किसी के जिक्र) से बाहर आने को कहते हैं और कमाल जिक्र यह है कि खुद (स्वयं) जिक्र से बाहर आ जाये व ज़हूर सिर्र हो (उस परमात्मा के परम रहस्य को प्रकट करने वाला हो)। 'वज्जाकिर वल मज़कूर' (जो जिक्र करने वाला है वह वही है जिसका जिक्र किया जा रहा है)। फ़रमाया तवज्जोह जमीअ (एकाग्र ध्यान) वदाई (विचारों के इधर उधर विचलित होने) से बाहर आना व बताम मुतवज्जह हक सुबहाना की तरफ (पूर्ण रूप से ईश्वर की ओर ध्यान आकृष्ट) होने को कहते हैं। फ़रमाया 'सब्र' (धैर्य) हज्ज (मजा, आनन्द), नफ़्स (मन) व मालूफात व महबूबात से (जो लोग अथवा चीजें हमें प्यारी हों उनसे) बाहर आने का नाम है। फ़रमाया मराक़बा (ध्यान) अपने अफआल व तवानाई (अपने सत्कर्मों व सामर्थ्य के अहंकार) से बाहर आने व मवाहिब इलाही (ईश्वर की दया कृपाओं) के मुन्तजिर (आकांक्षी) रहने को कहते हैं। रज़ाए नफ़्स (मन की प्रसन्नता) से बाहर आना और रज़ाए इलाही (ईश्वर की प्रसन्नता) में दाखिल होना और तस्लीम एहकाम अज़लिया (ईश्वर के आदेशों के पालन करने) को 'तफ़वीज़ इल्लल्लाह' (ईश्वर के प्रति समर्पण) कहते हैं।

फ़रमाया जो शख्स मुकाम मासियत (गुनाह की स्थिति) में है या उसके दिल में दुनिया की रगबत (इच्छा) है वा सबब में है (वह संसार की माया अर्थात धन दौलत एकत्रित करने का हेतु या कारण बना हुआ है), मास जरूरी (आवश्यक जीविका) पर इत्तिफा (सन्तोष) नहीं करता, ख़ल्क से मुख़ालिफ़त रखता है (लोगों से विरोध रखता है), या उसकी औकात (उसका समय) जिक्र-फिक्र से मामूर नहीं है (ईश्वर के नाम जप तथा ईश्वर के चिंतन मनन में नहीं लगा है) या खुदा से सिवा खुदा के कुछ और चाहता है या मुजाहिदा नफ़्स (इन्द्रिय निग्रह) नहीं करता या अपने अफआल (सत्कर्मों) पर या अपने हाल (आध्यात्मिक दशा अथवा प्रगति) पर व कूवत (सामर्थ्य) पर नजर रखता है (अपनी इन स्थितियों पर दृष्टि अर्थात् अहंकार रखता है) या तस्लीम अहकाम अज़लिये नहीं करता (ईश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करता) वह निश्चित रूप से सुलूक (साधना पथ) में नाक़िस (खराब, खोटा) है। फ़रमाया मगर ज्ञात रहे कि बाज़ अहले निहायत ने (कुछ पूर्ण समर्थ सन्तों ने) जो अपने से (अपनी ख़ुदी से) और

अपनी ख्वाहिसात (अभिलाषाओं) से बाहर आ गये हें) कुछ कारणों से इक्तिफ़ा (मितव्ययिता बरतना) व अदम इख्तिलात (लोगों से मेल-मिलाप न करना अर्थात् एकान्तवास रखना) तथा मुजाहदा (तपस्या) का अनुकरण नहीं किया है। फ़रमाया कि नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजनों का कथन है कि जिस शख्स के दिल में इस राह (साधना-पथ) का दर्द बना रहा हो उसको चाहिये कि बाद तौबा नसूह (अपने पापों के लिये निर्मल तथा शुद्ध पश्चाताप के पश्चात) बक़द्र ताअत (ईश आराधना करने की सामर्थ्य के अनुसार) रिआयत जुहद, तवक्कुल, व कनाअत, व उज्लत व सब्र व तवज्जेह वगैरह जमीअ मुकामात करके औक़ात जिक्र इलाही में मशरूफ़ रक्खे और इस रिआयत को 'सफर दरवतन' कहते हैं (इन्द्रिय निग्रह, ईश्वर पर भरोसा, भाग्यानुसार जो मिले उस पर सन्तोष, एकान्तवास, धैर्य, व ईश्वर की ओर चित्त की एकाग्रता, इन सभी सिद्धान्तों के अनुकरण का ध्यान रखते हुये अपना सम्पूर्ण समय ईश्वर के चिंतन में व्यतीत करना चाहिये और इन सिद्धान्तों के अनुकरण का ध्यान रखने को ही 'सफर दरवतन' कहते हैं।

फ़रमाया हमारे तरीक़ में (साधना पद्धति में) जिक्र (जप) से जज़्ब (ब्रह्मलीनता की भावानुभूति) पैदा होती है और जज़्ब की मदद से जमीअ मुक़ामात (सभी आध्यात्मिक स्थितियाँ) सरलता तथा दृढ़ता के साथ हासिल (प्राप्त) हो जाते हैं। फ़रमाया कि अगर किसी को इस सिलसिले के सतगुरु से, जिसमे यह विशेषताएँ मौजूद हों जो इस तरीक के अकाबिर (इस साधना पद्धति के श्रेष्ठ संत जनों) द्वारा मान्य हों, ऐसी मुहब्बत हो जाये कि उसकी गैबत (अनुपस्थिति) में उसकी सूरत हाजिर रहती हो तो तरीका राबिता अख्तियार करना (अपनाना) चाहिये (इस तरीका में सतगुरु की अनुपस्थिति में उसकी सूरत सामने लाकर उसका ध्यान किया जाता है जिसे 'तसव्वुरे शेख़' कहते हैं) लेकिन इसका ख्याल रखना चाहिये कि कोई ऐसी बात तुम से न हो कि उनके (सतगुरु के) दिल में तुम्हारी ओर से कराहियत (घृणा) पैदा हो जाये। चाहिये कि अपनी मुराद (इच्छा) दिल से निकाल डाले और उन्हीं की मुराद पर कायम रहे। सब मिलाकर इस तरीके का मदार (निर्भरता) इर्तिबात जाने बैन है (दोनों तरफ से है अर्थात गुरु तथा शिष्य दोनों पर यह साधना निर्भर करती है)। जिस तरह कि रूई आतिशी शीशे के सामने होने पर सूरज की गर्मी हासिल (प्राप्त) करती हे, उसी तरह

बातिन बवजह इर्त्तिबात हरारत आगाही हक सुबहाना तआला कस्ब करता है। (उसी प्रकार साधक (शिष्य) का हृदय सतगुरु की तवज्जोह से परमात्मा के साक्षात्कार रूपी गर्मी को प्राप्त करता है)। यहाँ साधक (शिष्य) और सतगुरु की तुलना रूई और सूरज की गर्मी एकत्रित करने वाले आतिशी शीशे से की गई है। यह साधना पद्धति यथार्थ में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से शुरू हुई है क्योंकि उनको हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सहल०) से निस्बत हुब्बी (प्रेम का लगाव) बदर्ज़े कमाल हासिल था और इसी राह से उन्होने फ़ैज़ हासिल किया है। फ़रमाया कि नक्शबन्दिया सिलसिले का तरीका इसी निस्बत हुब्बी की वजह से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मन्सूब है (सम्बन्धित) है।

फ़रमाया दवाम मराक़बा (ध्यान की नित्यता, हमेशगी) बड़ी दौलत है कि इससे दिलों में कुबूलियत पैदा होती है (हृदय में सर्वप्रियता पैदा होती है अर्थात मराक़बा करने वाले साधक से लोग प्रेम करते हैं और वह लोगों से प्रेम करता है) और दिलों में कुबूलियत (सर्वप्रियता) पैदा होना अल्लाह तआला की कुबूलियत की निशानी है (अर्थात इस बात की पहिचान है कि ईश्वर उससे प्रेम करता है)।

फ़रमाया कि इन्जज़ाब (आकर्षण) व मुहब्बत यक़ीनी मूसिल है (निश्चित रूप से जीवन के चरम लक्ष्य अर्थात परमात्मा तक पहुंचाने वाला है) और इसका रुख सिवा ईश्वर के और तरफ नहीं है। इस तरीक (ढ़ंग) के विपरीत अन्य प्रकार की साधनाओं का रुख चमत्कार तथा ऋद्धियों सिद्धियों की तरफ है। इसी वजह से कुछ अभ्यासी और साधक इन्हीं चमत्कारों में फंसे रह जाते हैं। फ़रमाया इन्जज़ाब (आकर्षण) ब मुहब्बत हर इन्सान में है लेकिन पोशीदा (गुप्त) है। नक्शबन्दिया सिलसिले के सन्त जन इसी इन्जज़ाब की तर्बियत करते हैं (इसी आकर्षण तथा प्रेम को अपनी रूहानी तालीम से उभारते तथा दृढ़ करते हैं)।

फ़रमाया सत गुरुजन तीन कारणों से लोगों को रूहानी तालीम देते हैं या उनको उपदेश देते हैं। या तो ईश्वरीय प्रेरणा से वह ऐसा करते हैं, या अपने सत गुरुदेव के आदेशानुसार अथवा लोगों की पतित एवं गिरी हुई दशा पर करुणा की भावना से द्रवीभूत होकर लोगों को रूहानी तालीम अथवा नसीहत देते हैं। शफकत (करुणा, दया) का तक़ाज़ा (माँग, आवश्यकता) यह है कि तर्वीज़ शरीअत अख्तियार करे

(अपने धर्म शास्त्र द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड को लोगों में प्रचलित तथा प्रसारित करे) और लोगों को धार्मिक उपदेश दे तथा हिफाजत शरीअत करे और फिक़ह (धर्मशास्त्र) वगैरह की शिक्षा देता रहे तथा उसको अपने व्यावहारिक जीवन में उतारता रहे और जो सन्तजन लोगों को वासिल करते हैं (ईश्वर साक्षात्कार कराते हैं) उसमें शफकत (दया, करुणा) शर्त नहीं है। वह शफकत से भी बड़ी बात है। इस तरीके का हासिल तर्बियत इन्जज़ाब ईमानी है (इस साधना पद्धति से लोगों को उस एक परम ब्रह्म की ओर उन्मुख होने की रूहानी तालीम मिलती है)। और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही इस पृथ्वी पर सभी अवतारों का जन्म होता है।

फ़रमाया तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) के यह मानी नहीं है कि तर्क असबाब करके बैठ जाये (जीविकोपार्जन के आवश्यक कर्म त्याग दे)। यह खुद बेअदबी (अशिष्टता) है। बल्कि किताबत (लेखन कार्य) वगैरह कोई सबब यानी पेशा मुकर्रर (निर्धारित) कर ले। फ़रमाया सबब (जीविका, पेशा) पर नज़र रखना चाहिये। (अर्थात जीविकोपार्जन के लिये कोई कर्म करते रहना चाहिये)। सबब को दरवाजे की तरह समझना चाहिये। अगर कोई दरवाजा बन्द करके दीवार पर से गुजरना चाहे तो यह बेअदबी है। फ़रमाया क़तए अलाइक (अनासक्ति) के यह मानी हैं कि लौकिक और पारलौकिक सभी सम्पदाओं से दिल फिर जाये और सभी आध्यात्मिक स्थितियों तथा अनुभूतियों से बेपरवाही हो जाये और हर क्षण उस परमात्मा की ओर बेचैनी और व्याकुलता के साथ उन्मुख रहे।

फ़रमाया मुरीद को मुरशिद (सतगुरु) के हाथ में अपने को इस तरह दे देना चाहिये जिस तरह गुसाल (शरीर धोने वाले) के हाथों में मुर्दे को दे दिया जाता है कि वह जिस किस्म का सुलूक (व्यवहार) चाहे उसके साथ करे। मुरीद को यह हक़ (अधिकार) हासिल नहीं है कि अपने मुरशिद से इस किस्म की ख्वाहिश (इच्छा) ज़ाहिर करे कि मुझको फलाँ शग्ल (अमुक अभ्यास) या फलाँ तरीक की तालीम मरहमत फ़रमाइये (अमुक ढंग की अध्यात्म-शिक्षा देने की कृपा कीजिये।) खुदराई का मुजाहिरा (अपनी इच्छा को प्रकट करना) बेशक मुरशिद के प्रति बेअदबी (अशिष्टता) है।

फ़रमाया तलबे तरीकत में (अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करने में लुक्मए हलाल (ईमानदारी से अर्जित शुद्ध कमाई के भोजन को ग्रहण करने) की पूरी कोशिश करे।

इसमें सुस्ती और फरोगुजाश्त (भूल) को राह न दे, क्योंकि जज़्ब का तरीका (ईश्वर की ओर आकृष्ट व उन्मुख होने का मार्ग) अक्ल हलाल (शुद्ध कमाई से अर्जित भोजन द्वारा पवित्र की गई बुद्धि) की रोशनी से हासिल होता है और हराम ग़िज़ा (भोजन) से रास्ता (अध्यात्म का मार्ग) नजर नहीं आता। अगर ऐसा शख्स इस सिलसिले में शामिल हो जाये जो हराम और हलाल की परवाह न करता हो, तो अव्वल उसको समझाएँ और लुक्मए हराम की खराबियाँ बतायें और यह हिदायत करें कि अल्लाह तआला हाजिर व नाजिर है, इन्सान के हर फेल (कर्म) को देखता है। सम्भव है कि इन उपायों से वह एहतियात (सावधानी) करने लगे। इस पर भी वह एहतियात न करे तो फिर एख़लाक से काम लें और लुक्मए हराम से उसको बचाने की दुआ वगैरह से कोशिश करें और उसकी मौजूदगी में लुक्मए हराम की बेबरकती (दुष्परिणाम) व बेअसरी (प्रभावहीनता) के वाकयात (घटनाएं) बयान करें। अगर इस पर भी वह एहतियात न करे और जैसा कुछ मिल जाये खाता पीता रहे तो फिर तरीका (अध्यात्म-साधना) का दबाव उस पर डालें यानी जो रूहानी निस्बत उसके अन्दर पैदा हो चुकी है उसको सल्ब कर ले (छीन ले, जज़्ब कर ले)।

फ़रमाया कि सुल्तान अबू सईद अबुलखैर (रजि०) का कथन है कि तसव्वुफ (सन्तमत) व सुलूक यह है कि उस इन्सान के दिमाग में जो कुछ हो खुदसरी (अवज्ञा) व गुरूर (अहंकार) उसको दिमाग से निकाल दे, हाथ में जो कुछ हो यानी माल और दौलत वगैरह उसको दूसरे के सुपुर्द कर दे और जो कुछ जिस्म व जान पर गुजरे उसको बरदाश्त करे और घबराए नहीं। यथार्थ यह है कि मुसलमान (ईश्वर-भक्त) वही है जिसकी दृष्टि का केन्द्र बिन्दु दोनों जहान (लोक-परलोक) में सिर्फ खुदा की हस्ती हो और अपने आपको उसने खुदा के अहकाम (आदेशों) के सामने झुका दिया हो।

फ़रमाया कि तलब हकीकी (ईश्वर की ओर उन्मुख होने की चाह) खुदा की तरफ से पैदा होती है। यथार्थ यह है कि ऐसी चाह व इसके लिये बेचैनी का भावावेश और उमंग अपने में पैदा करना किसी तदबीर (उपाय) से सम्भव नहीं है और न इन्सान के बस की बात है। यह केवल ईश्वर की अहेतुकी दया-कृपा ही है कि वह इन्सान में इन बातों को पैदा करता है और इनकी बदौलत वह क्षण मात्र में कुछ से कुछ हो जाता है। हजरत पीरजाम (रहम०) ने क्या खूब फ़रमाया है कि 'दोनों जहान (लोक-परलोक) की

इज्जत व सम्मान उन लोगों के हाथ में है जो सारी उम्र मौज, भौतिक सुख व आराम से व्यतीत करते हैं जिसे सन्तमत की भाषा में गफलत (असावधानी) की जिन्दगी कहते हैं लेकिन आखीर उम्र में खुदा इन लोगों को चौंकाता है (सचेत करता है) और तौबा की तौफीक (सामर्थ्य) पैदा करके अपनी ओर उन्मुख होने की चाह व हक़ के रास्ते पर (सत्य के मार्ग पर) डाल देता है। यथार्थ यह है कि हज़रत पीरजाम (रहम०) ने बिलकुल सच फ़रमाया है कि 'अगर आखीर वक्त में तलब हकीकी (ईश्वर भक्ति की चाह) इन लोगों की (सांसारिक सुख-वैभव में ग्रसित लोगों की) रहनुमा (पथ-प्रदर्शक) न बन जाती तो दोनों जहान की रुसवाई (निंदा, अपयश) इनको नसीब (प्राप्त) होती।' परन्तु जीवन के अन्तिम समय में भी सांसारिक माया-मोह में फंसे लोगों के दिलों में ईश्वर की ओर उन्मुख होने की यह तौफीक (सामर्थ्य, प्रेरणा) ईश्वर की ही ओर से प्राप्त होती है।

हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की करामातें (चमत्कार), ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ बेशुमार हैं। उनमें कुछ करामातें प्रसाद रूप में बयान की जाती हैं-

आपके एक पड़ोसी को शहर का एक अफसर पकड़ कर ले गया और उस पर बहुत जुल्म (अत्याचार) किया। जब वह बेचारा हर प्रकार से मजबूर हो गया तो उसने ख्याल से (वैचारिक रूप से) हजरत ख्वाजा (रहम०) को याद किया और उनसे अर्ज करने लगा 'हुजूर, मेरी मदद कीजिए, मैं मुसीबत में हूँ। यह अफसर मुझ पर जुल्म कर रहा है।' ठीक उसी वक्त हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) पर यह पूरी घटना मुन्कशिफ हो गई (उनकी आत्मिक शक्ति से उनके अन्त करण में प्रकट हो गई)। आपने अपने खलीफा से फ़रमाया कि उस अफसर के पास जाओ और कहो कि तुम हमारे पड़ोसी पर बेजा जुल्म कर रहे हो। उसे छोड़ दो। अगर न छोड़ोगे तो याद रक्खो हमारे ख्वाजगान (नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजन) बहुत ग़यूर (स्वाभिमानी) हैं। इस जुल्म व इन्कार के बदले सिर्फ तुम्हारी ही नहीं, तुम्हारे घरवालों की जानें जायेगी। अफसर ने कहा कि मैं बिलकुल न छोड़ूंगा। देखूँ तो तुम्हारे पीर मेरा क्या बिगाड़ते हैं। हजरत ख्वाजा (रहम०) के खलीफा यह जवाब सुन कर वापस चले आये। अभी शाम न हुई थी कि बादशाह की तरफ से अफसर पर कई आरोप लगाये गये और निहायत बेइज्जती और अपमान के साथ वह अपने घर के कई जवानों के

साथ कत्ल कर दिया गया और इस प्रकार हजरत ख्वाजा (रहम०) के पड़ोसी को उस अफसर के जुल्म से नजात (मुक्ति) मिली।

एक शख्स यह परीक्षा लेने के लिये कि देखूँ हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के दिल में धन-दौलत की मुहब्बत है या नहीं कई हजार रुपये लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि मैं यह रुपया आपको और आपके सेवकों को देना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया 'मियाँ! इस रुपये की हमको जरूरत नहीं, फकीरों को माल-दौलत से क्या मतलब। कहीं और जगह जा कर इसे खर्च करना। वह ज्यादा इसरार (ज़िद्द) करने लगा। आपने फ़रमाया 'क्या तुम चाहते कि तुम मर जाओ तो मैं कहूं कि 'ऐ आसमान पर रहने वाले राज़िक़ (रोजी देने वाले अर्थात ईश्वर), जमीन पर रहने वाला रज़्ज़ाक़ (अन्नदाता) मर गया। अब तो उसके स्थान की पूर्ति के लिये और कोई दूसरा रज़्ज़ाक़ भेज। जो खुदा तुम को देता है वही हमको भी देता है।' जितना हजरत ख्वाजा (रहम०) उस शख्स से उन रुपयों के लेने से इन्कार करते, उतना ही वह रुपये लेने के लिये हठ करता। अन्त में हुज़ूर ने अपनी चटाई का कोना उठा कर फ़रमाया 'देख, इसके नीचे क्या है ?' उसने देखा कि सोने चाँदी की नदियाँ बह रही हैं। वह शख्स यह देखकर अचम्भित हो गया और उनके चरणों में गिरकर अपनी उस बेअदबी के लिये क्षमा याचना की और भविष्य में फकीरों की परीक्षा लेने का विचार बिलकुल त्याग दिया। आगे चलकर वह शख्स 'ईश्वर के परम भक्तों में हुआ।

जब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के शरीरान्त का समय निकट आया तो एक मौलवी साहब आपकी सेवा में उपस्थित हुये और आपसे 'बाकी बिल्लाह' के अर्थ पूछे। आपने मौलाना से फ़रमाया कि इसके अर्थ शरीरान्त के बाद बताये जायेंगे। मौलाना को प्रतीक्षा करते हुये कुछ ही दिन व्यतीत हुये थे कि हजरत ख्वाजा (रहम०) बीमार पड़े। मौलाना उन्हीं दिनों उनको देखने के लिये आये और पुनः उनसे 'बाकी बिल्लाह' के मानी दरियाफ्त किया। हजरत ने फ़रमाया कि जो शख्स मेरे जनाज़ा की नमाज पढ़ायेगा वही इसका मानी बतायेगा।

हजरत ख्वाजा (रहम०) का शरीरान्त हो चुका था, उनके पवित्र शव को स्नान करा कर कफन दिया जा चुका था और वसीयत के मुताबिक नमाज के लिये इमाम का

इन्तजार था। इसी बीच आपके मुरीदों और सेवकों ने देखा कि एक इन्सान चादर में लिपटा हुआ दूर से चला आ रहा है। उसने जनाजा की नमाज पढ़ाई। नमाज के बाद वह जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापस जाने लगा तो मौलाना उसके पीछे लपके और 'बाकी बिल्लाह' के मानी दरियाफ्त किया। उस चादर से ढ़के हुये इन्सान ने पलट कर मुंह पर से चादर हटाई तो देखा कि वह खुद हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) थे। मौलाना के होश उड़ गये। हजरत ख्वाजा (रहम०) जिस तरफ से आये थे उधर रवाना होकर पेड़ों के झुंड में गायब हो गये। ('बाकी बिल्लाह' के अर्थ होते हैं कि 'जिसकी अल्लाह के साथ बका हो' अर्थात जो परमात्मा में निरन्तर एकीभाव से स्थित हो। उक्त घटना द्वारा हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने उन मौलाना को अपने नाम का अर्थ इस प्रकार समझाया कि उन्होने अपना पार्थिव शरीर तो त्याग दिया है, परन्तु उनकी आत्मा उस परमात्मा में निरन्तर लीन है और उसका नाश नहीं हुआ और अपनी इस अनश्वरता का प्रमाण उन्होंने इस रूप में दिया कि अपना स्थूल पार्थिव शरीर त्यागने के पश्चात उन्होने स्वयं अपनी आत्मिक शक्ति से स्थूल शरीर धारण कर अपने शव को दफनाने के पूर्व जनाजा की नमाज पढ़ाई।)

एक औरत का तीन चार साल का बच्चा ऊंची दीवार से नीचे गिर पड़ा। जमीन का फ़र्श पक्का था। गिरते ही उसकी हालत गम्भीर हो गई। कानों से खून बहने लगा और प्राण निकलने की स्थिति आ गई। औरत बेचारी ममता की मारी व्याकुल हो गई। किसी हकीम ने हाथ नहीं रक्खा। सब तरफ से निराश होकर हजरत ख्वाजा (रहम०) की सेवा में आई और बच्चे को आपके चरणों में डाल दिया और रो-रो कर कहने लगी 'हुजूर, आप दया कृपा के भंडार हैं और हर प्रकार से पूर्ण समर्थ हैं। मेरे बच्चे के प्राणों की रक्षा कीजिये और उसको जीवन-दान दीजिये, अन्यथा मैं मर जाऊँगी'। हजरत ख्वाजा (रहम०) अपनी आत्मिक शक्तियों तथा ऋद्धियों सिद्धियों को लोगों पर प्रकट नहीं होने देते थे। अतः अपने एक सेवक से फ़रमाया कि तिब (चिकित्सा शास्त्र) की अमुक किताब उठा देना। वह किताब देखकर फ़रमाया कि मैंने बच्चे के हालात को इस किताब से देख लिया है। बच्चा तुम्हारा मरेगा नहीं। इन्शा अल्लाह (अगर ईश्वर को मंजूर है) वह बहुत जल्द अच्छा हो जायेगा। उनका यह फरमाना था कि इधर वह बच्चा स्वस्थ होने लगा। थोड़ी देर में वह बिल्कुल चंगा हो गया और उसकी माँ खुश-

खुश बच्चे को लेकर चली गई।

हजरत ख्वाजा (रहम०) की सैकड़ों करामातें (चमत्कार) हैं जिनका वर्णन कठिन है और इससे अधिक क्या चमत्कार हो सकता है कि आपने केवल तीन चार साल सतगुरु की पदवी पर रहते हुये लोगों को अध्यात्म की शिक्षा दी और इतने कम समय में आपका यश तमाम लोगों में फैल गया। उस समय के बहुत से सतगुरुजन पीरी व मुरीदी त्याग करके आपकी सेवा में उपस्थित हुये और आपकी रूहानी निस्बत से फैज़याब हुये। देहली में जब आपकी कीर्ति चारों ओर फैलना शुरू हुई तो कुछ मशायख (गुरु जनों) को बहुत ईर्ष्या हुई और आपको नुकसान पहुंचाने के लिये कुछ साधनाएँ की तथा मंत्र आदि पढ़े लेकिन हज़रत ख्वाजा (रहम०) पर कोई असर न हुआ बल्कि उन लोगों का खुद ही नुकसान हुआ और अन्त में हजरत ख्वाजा (रहम०) की सेवा में उपस्थित होकर उनके मुरीद हुये।

कहा जाता है कि जब आपकी उम्र चालीस वर्ष की हुई तो उस समय जिसकी मृत्यु का समाचार सुनते, एक ठंडी साँस लेकर फ़रमाते कि खूब छूटा। उन्हीं दिनों आपने अपनी एक बीबी साहिबा से फ़रमाया कि जब मेरी उम्र चालीस साल की होगी तो मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटित होगी। फिर एक दिन फ़रमाया कि स्वप्न में देखा है कि मुझ से कोई कह रहा है कि जिस उद्देश्य के लिये तुम को लाये थे वह पूरा हो गया। एक दिन फ़रमाया कि थोड़े दिनों में सिलसिला नक्शबन्दिया में किसी का शरीरान्त होगा। एक रोज फ़रमाया कि कोई कहता है कि 'कुत्बे-वक्त' (उस समय के सन्त शिरोमणि) का शरीरान्त हो गया और मैं उस वक्त क़सीदा गुर्रः (उत्तम काव्य में प्रशंसा) अपने मरसिया में पढ़ता हूँ (मृत्यु के बाद मृत व्यक्ति की जो प्रशंसा की जाती है उसे मरसिया कहते हैं)। और इसमें मेरी प्रशंसा लिखी हुई है। सारांश यह है कि महीना जमादिउल सानी के मध्य में आपको मर्ज मौत शुरू हुआ। इन दिनों में एक दिन आपने फ़रमाया कि हज़रत ख्वाजा अहरार (कु० सि०) को स्वप्न में देखा कि वह फ़रमा रहे हैं कि पैराहन (वस्त्र) पहनो। इसके बाद आपने मुस्करा कर फ़रमाया कि अगर जिन्दा रहेंगे तो पहनेंगे, वरना मेरा पैराहन कफन ही होगा। बीमारी के समय में एक रोज आपकी तन्मयता और बेहोशी इस सीमा तक बढ़ी कि आपके पास उपस्थित लोग यह समझे कि आपकी निज़ा की हालत है (अन्त समय में प्राणान्त होने की

हालत है)। जब आप होश में आये तो आपने फ़रमाया कि अगर मौत ऐसी ही होती है तो मौत बड़ी नेमत (देन, उपहार) है और ऐसी हालत से निकलने का दिल नहीं चाहता। रोज दो शम्बा 25 जमादिउल सानी सन 1012 हिजरी को आपने 'अल्लाह, अल्लाह' कहते हुये पार्थिव शरीर त्याग दिया। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपकी समाधि मुहल्ला 'रामनगर' में नई दिल्ली स्टेशन से थोड़ी दूर अजमेरी दरवाजा की तरफ स्थित है। कहा जाता है कि एक बार आप अपने कुछ शिष्यों के साथ इस जगह पधारे थे। इस जगह को पसन्द कर यहीं आपने वुज़ू करके दो रकअत नमाज पढ़ी थी। उस समय यहाँ की मिट्टी आपके दामन में लग गई थी। आपने उस समय यह फ़रमाया था कि यहाँ की मिट्टी दामनगीर होती है (दामन पकड़ कर रोकती है)।

❷❹

25. हजरत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शेख़ अहमद सरहिन्दी कुद्स सिर्रहू

आपकी मजार सरहिन्द में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

25. हजरत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शेख़ अहमद सरहिन्दी कुद्स सिर्रहू

हजरत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शेख़ अहमद सरहिन्दी (कु० सि०) को हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से रूहानी निस्बत मिली है। हज़रत की पैदाइश चौदह शव्वाल जुमा के दिन आधी रात 971 हिजरी को बमुकाम सरहिन्द हुई। आपका नसब (वंश, गोत्र) हज़रत उमर फारुक़ (रजि०) से मिलता है। 'रौज़तुल्कय्यूमिया' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि आपके पूज्य पिताजी हजरत मखदूम (रहम०) ने फ़रमाया कि आपके जन्म के पूर्व हमने स्वप्न में देखा कि सारे संसार में अन्धकार फैल गया है। सूअर, बन्दर व रीछ लोगों को मारे डाल रहे हैं और उसी समय मेरे सीने से एक गुर (प्रकाश) निकला और उसमें एक सिंहासन प्रकट हुआ और उस सिंहासन पर एक शख्स तकिया लगाये बैठा है। उसके सामने तमाम अत्याचारियों और नास्तिकों का बकरी की तरह वध किया जा रहा है और कोई शख्स ऊंची आवाज में कह रहा है 'कह दो कि हक़ आ गया (सत्यता आ गई) और बातिल (झूठ) मिट गया और बातिल हमेशा मिट जाने वाली चीज है।' हज़रत मखदूम (रहम०) ने इस ख्वाब की ताबीर (स्वप्न-फल) हज़रत शाह कमाल खतैली (रहम०) से दरियाफ्त की। उन्होंने कुछ विचार करने के पश्चात फ़रमाया कि तुम्हारे लड़का पैदा होगा। इससे अज्ञानता रूपी अन्धकार, नास्तिकता और बिदअत (धर्म में नई बात) दूर होगी।

कहा जाता है कि एक बार बचपन में (दूध पीने की अवस्था में) इतने गम्भीर रूप में बीमार पड़ गये कि जीने की आशा न रही। संयोग से हजरत शाह कमाल खतैली (रहम०) वहाँ पधारे। हजरत के पूज्य पिता जी ने शाह साहब के पास दम कराने को (झाड़ फूँक के लिये) ले गये। हजरत शाह साहब (रहम०) ने अपनी जबान हज़रत के मुँह में दे दी और आप उसको देर तक चूसते रहे। हजरत शाह साहब (रहम०) ने आपके पूज्य पिताजी को विश्वास दिलाया कि 'निश्चिंत रहो, यह लड़का दीर्घायु (बड़ी उम्र वाला) होगा। वह बड़ा विद्वान और ब्रह्म-ज्ञानी होगा। यद्यपि यह घटना बचपन की

है, परन्तु हज़रत फ़रमाया करते थे कि मुझको अभी तक याद है। जब आपने विद्यार्थी जीवन में प्रवेश किया तो आपको मक़तब में दाखिल किया गया। थोड़े ही समय में आपको कुरान मजीद कंठाग्र हो गई। इसके बाद आपने अपने पूज्य पिताजी से शिक्षा ग्रहण की। अधिकांश शिक्षा आपने अपने पूज्य पिताजी से प्राप्त की और कुछ विद्या दूसरे बड़े विद्वानों से ग्रहण की। स्यालकोट में जा कर मौलाना कमाल कश्मीरी, जो उस समय के उच्च कोटि के विद्वानों में थे, उनसे शिक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात् हदीसों के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ तथा कुरान मजीद की व्याख्याएँ अन्य विद्वानों से पढ़ी। सत्रह वर्ष की आयु में संसारी विद्या का अध्ययन समाप्त करके आप अध्ययन-अध्यापन के कार्य में संलग्न हुये। आप अपने विद्यार्थियों को बड़े ही परिश्रम व लगन से पढ़ाया करते थे।

इसी अवधि में आपका आगरा (जो उस समय देश की राजधानी थी) जाने का संयोग हुआ। इस यात्रा में आपका अबुल फ़ज़ल से भी मिलने का इत्तफाक हुआ। मगर आप उनसे अपने धर्म में अविश्वास होने के कारण नाराज हो गये और फिर उनसे मिलना छोड़कर अपने वतन को वापस आये और अपने पूज्य पिता जी से सिलसिला चिश्तिया की रूहानियत की तालीम और इजाज़त हासिल की, लेकिन संगीत व वज्द (संगीत की रसानुभूति से उत्पन्न आत्म विस्मृति) से, जो चिश्तिया सिलसिले की रस्म है, परहेज़ किया।

इसी जमाने में आप सख्त बीमार पड़ गये। आपकी बीबी साहिबा (धर्मपत्नी) ने दो रक़अत नमाज पढ़ कर आपके स्वास्थ्य-लाभ के लिये दुआ माँगनी शुरू की और रो-रोकर आर्द्र आराधना करने लगी। इसी हालत में नींद आ गई। मालूम हुआ कि जैसे कोई कह रहा है कि तुम निश्चिंत रहो। हमको इस शख्स से बहुत काम लेने हैं। अभी हज़ारों में से एक भी पूरा नहीं हुआ। इसके बाद आप शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

हज़रत को सदैव तवाफ (परिक्रमा) बैतुल्लाह (काबा शरीफ) और हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के मज़ार शरीफ के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा बनी रहती थी लेकिन अपने पूज्य पिताजी की वृद्धावस्था में उनकी सेवा से अलग होना पसन्द नहीं करते थे। सन् 1007 हिज़री में हजरत के पूज्य पिताजी का शरीरान्त हो गया और सन् 1008 हिज़री में हज करने के इरादे से सफर पर रवाना हुये। जब देहली

पहुँचे तो मौलाना हसन कश्मीरी (रहम०) ने, जो हज़रत के दोस्तों में थे, उनसे हज़रत बाकी बिल्लाह (रहम०) की तारीफ की और इनसे मिलने की चाह हज़रत के दिल में पैदा की। चूँकि हजरत को भी नक्शबन्दिया सिलसिले की रूहानी निस्बत का बहुत शौक था, अतः वह हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये। हजरत ख्वाजा (रहम०) बड़ी ही प्रसन्नता से मिले और उनसे मिलने का उद्देश्य तथा इरादा दरियाफ्त किया। हजरत ने अपना इरादा जाहिर किया। यद्यपि हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) अपने को बहुत ही गुप्त रखते थे और लोगों को बड़ी ही मुश्किल से बहुत देर में अपनी शरण में लेते थे परन्तु हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के निवेदन करने पर इन्होंने अपनी इस आदत को त्याग करके फ़रमाया कि 'तुम्हारा इरादा मुबारक है लेकिन अगर कुछ दिन कम से कम एक महीना या एक हफ्ता इस फकीर के पास रुको तो क्या हर्ज है ?' हजरत उनके आदेशानुसार एक हफ्ता उनकी सेवा में रहे। अभी केवल दो ही दिन व्यतीत हुये थे कि आप में इनाबत (ईश्वर की ओर उन्मुख होने तथा तौबा करने) और अख्ज तरीका (नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति को ग्रहण करने) का शौक ग़ालिब हो गया। आपने हजरत ख्वाजा (रहम०) से अपना हाल अर्ज किया। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने तत्काल उनको दाखिल तरीका किया और एकान्त में ले जा कर तवज्जोह शुरू की। अतः उसी वक्त हजरत का दिल ज़ाकिर हो गया (हृदय चक्र जागृत हो गया) और हलावत (माधुर्य, मिठास) व इल्तज़ाद (आनन्द) पैदा हुआ। फिर वह हालतें पैदा हुई जो कभी देखने व सुनने में नहीं आई। दो महीने और कुछ दिनों की अल्प अवधि में तमाम निस्बत नक्शबन्दिया पूर्ण विस्तार के साथ हजरत को हासिल हुई। इन्हीं दिनों का जिक्र है कि एक रोज हजरत ख्वाजा (रहम०) ने हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) की उलूअ इस्दाद (श्रेष्ठ सामर्थ्य) को देखकर उनको एकान्त में बुलाया और अपनी घटनाएं सुनाई और फ़रमाया कि जब मुझको मेरे पीर मुरशिद हजरत ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) ने आदेश दिया कि तुम हिन्दुस्तान जाओ। वहाँ तुम से यह तरीका प्रचलित होगा। मैंने अपने में इसकी पात्रता और योग्यता न पा कर अत्यन्त संकोच किया और इस्तिख़ारा किया (परोक्ष ज्ञान से यह जानना चाहा कि मेरा हिन्दुस्तान जाना शुभ है या नहीं)। इस्तिख़ारा में मुझे मालूम हुआ कि मानो एक तूती

(तोता या मैना) पेड़ की डाल पर बैठी है। मेरे दिल में ख्याल आया कि अगर यह तूती मेरे हाथ पर आकर बैठ जाये तो मुझको हिन्दुस्तान की यात्रा में सफलता मिलेगी और मेरा उद्देश्य पूरा होगा। तूती मेरे हाथ पर आ गई। मैंने अपने मुँह का लुआब उसके मुँह में डाला और उस तूती ने मेरे मुहँ में शकर डाली। सुबह उठ कर मैंने यह ख्वाब हजरत ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) से अर्ज किया। उन्होने सुन कर फ़रमाया कि तूती हिन्दुस्तानी पक्षियों में होती है। हिन्दुस्तान में तुम से एक ऐसे शख्स का जुहूर (आविर्भाव) होगा जिससे संसार रोशन (प्रकाशित) होगा और तुम भी उससे बहरयाब (भाग्यवान) होंगे।

फ़रमाया जब सरहिन्द पहुँचा तो आत्मा में ऐसा अनुभव हुआ कि कोई शख्स कहता है कि तुम कुत्ब (महान सन्त) के पड़ोस में आकर ठहरे हो और इस कुत्ब का हुलिया (आकृति) भी दिखाया। सुबह उठ कर मैं उस जगह के सन्तों-महात्माओं से मिलने गया लेकिन किसी में वह क्षमता न पाई। मैंने सोचा कि शायद यहाँ के निवासियों में यह क्षमता होगी जो बाद को प्रकट होगी। अतः जब तुम को देखा तो वही हुलिया पाया और तुम में पूर्ण समर्थ सन्त होने की क्षमता पाई।

और भी एक रोज देखा कि मैंने एक बड़ा चिराग (दीपक) जलाया है और प्रतिक्षण उस चिराग की रोशनी बढ़ती चली जा रही है और लोग इस चिराग से बहुत से चिराग रोशन कर रहे हैं और जब सरहिन्द के समीप पहुंचा तो वहाँ के जंगलों को मशालों से भरा पाया और इस बात को भी तुम्हारे ही विषय में संकेत समझा।

इस प्रकार हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) ने हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) को उक्त घटनायें सुनाई और उन्हें रूहानियत की मुकम्मिल तालीम देकर सरहिन्द भेज दिया। थोड़े समय वहाँ रहकर आप फिर हजरत ख्वाजा (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये। इस बार हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने आपको सतगुरु की पदवी प्रदान कर जिज्ञासुओं और साधकों को तालीम देने की आज्ञा प्रदान की और अपने खास-खास शिष्यों को रूहानी तालीम के लिये आपके सुपुर्द किया और ख़िलअत व खिलाफत आता फ़रमा कर (अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बनाकर तथा रस्म के मुताबिक इस अवसर पर अपने कुछ वस्त्र आदि भेंट स्वरूप देकर) आपको विदा किया। हजरत सरहिन्द में पहुँच कर लोगों को रूहानियत की तालीम

देने में संलग्न हुये और आपका लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि साधना के क्षेत्र में साधकों और जिज्ञासुओं का वर्षों का काम घड़ी व घंटों में पूरा हो जाता था और लोग उनके पास च्यूँटियों व टिड्डियों की तरह झुंड के झुंड एकत्रित होने लगे। इसी समय हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने आपको पत्र लिख कर अपने पास बुलाया। हजरत वह पत्र पढ़ते ही देहली को रवाना हो गये। आपके शुभागमन की खबर जब हजरत ख्वाजा (रहम०) को पहुंची तो काबुली दरवाजा तक पैदल अपने सेवकों के साथ आपके स्वागत के लिये तशरीफ ले गये और हजरत को बड़े आदर-सम्मान के साथ अपने घर पर ले गये। वहाँ अपने सभी असहाब व मुरीदों को अपने पास एकत्रित करके उनको ताक़ीद की (निर्देश दिया) कि इनके रूबरू (सामने) न कोई मेरी तरफ मुतवज्जेह हुआ करे और न कोई मेरी ताज़ीम (आदर) करे, बल्कि सब इन्हीं की तरफ मुतवज्जेह रहा करें (अपना ध्यान आकृष्ट किया करें)। इस आदेश के पालन में जिन कुछ लोगों को संकोच करते हुये देखा, तो आपने उन लोगों से फ़रमाया, 'मियाँ ! हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) आफ़ताब (सूर्य) हैं कि हम जैसे सितारे इनकी रोशनी में गुम हैं और स्वयं भी दूसरे शिष्यों की तरह हजरत के सत्संग में दाखिल हुआ करते थे और जब सत्संग से उठ कर बाहर तशरीफ ले जाते तो हजरत की तरफ पीठ न करते बल्कि कुछ कदम उलटे पाँव तशरीफ ले जाते और इसी तरह हजरत को पत्र लिखने में भी बहुत नियाज़मन्दी (आज्ञाकारिता) जाहिर करते।

लेकिन हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के बावजूद इस क़दर अत्यधिक कृपा के हजरत के भी अदब व एतक़ात (विश्वास) की कुछ सीमा न थी। हजरत ख्वाजा हिसामुद्दीन (रहम०) एक जगह लिखते हैं कि जिस ज़माने में हज़रत ख्वाजा (रहम०) की हजरत पर अत्यधिक कृपा थी और आपके सम्मान और प्रशंसा में अत्यधिक मुबालग़ा (अत्युक्ति) फ़रमाया करते थे, एक दिन किसी जरूरत से मुझको आपको बुलाने के लिये भेजा। जैसे ही मैंने जा कर कहा कि हज़रत ख्वाजा (रहम०) आपको बुला रहे हैं, यह सुन कर मारे खौफ के चेहरे का रंग बदल गया और तमाम बदन में कंपकंपी पैदा हो गई। मैंने अपने दिल में कहा कि सुना करते थे कि 'नज़दीकान रबेश बुअद' (जो पास बैठने वाले हैं उन्हें हैरत ज्यादा होती है) आज देख भी लिया।

हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) ने खुद रिसाला 'मुद्दाए उलमाद' में लिखा है हज़रत ख्वाजा (रहम०) के सभी शिष्यों में हम चार आदमी विशेष रूप से हजरत ख्वाजा (रहम०) की खिदमत में रहा करते थे। हर शख्स का हजरत ख्वाजा (रहम०) से अलाकः (लगाव) व एतक़ाद (विश्वास) अलग-अलग था। मेरा तो यह विश्वास था ऐसी सुहबत, तर्बियत व इर्शाद बाद जमाना हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के हरगिज पैदा नहीं हुई और खुदा का शुक्र किया करता था कि यद्यपि हजरत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की इस्लाम की सुहबत से मैं मुशर्रफ (सम्मानित) नहीं हुआ, पर खुदा का हजार बार शुक्र है कि इस सौभाग्य से मैं वंचित नहीं रहा (अर्थात् वैसी ही सुहबत अर्थात् सत्संग मुझे अपने सत गुरुदेव हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से प्राप्त हो रहा है)।

जब हजरत देहली से सरहिन्द तशरीफ ले गये तो हजरत ख्वाजा (रहम०) प्रायः अपने असहाब का हाल ब मुकाम (आध्यात्मिक स्थिति) आपसे दरियाफ्त किया करते थे और उनके वास्ते दुआ तवज्जेह की ख्वास्तगारी (आकांक्षा) करते थे और उसमें (पत्र में) 'अजीज मुतवक्किफ' (तुम्हारा देर लगाने वाला प्यारा) के इशारा से किसी का हाल दरियाफ्त फ़रमाते और उसके वास्ते भी तवज्जेह बहिम्मत तलब फ़रमाते (साहस के साथ उसकी तरफ भी ध्यान देने के लिये इच्छा प्रकट करते)। सर्वप्रथम तो हजरत से इस विचार से कि कहीं हजरत ख्वाजा (रहम०) उनकी परीक्षा न ले रहे हों बड़ी विनम्रता के साथ उनसे क्षमा याचना की, परन्तु जब हजरत ख्वाजा (रहम०) का इलहाह (विनती) सीमा से अधिक हो गया, इस भय से कि कहीं अपने सत गुरुदेव की आज्ञा का उलंघन तथा अदब का तर्क (छोड़ना) न हो, उनके आदेशों का पूर्ण रूप से पालन किया (अर्थात् हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) अपने जिन-जिन शिष्यों की आध्यात्मिक स्थितियों के विषय में जानकारी करना चाहते थे, हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) अपनी आत्मिक शक्ति से उनका पता लगाकर हजरत ख्वाजा को अवगत कराते थे)। इस विषय में हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के कुछ खलीफाओं ने अपनी पुस्तकों में इस बात को स्पष्ट किया है कि 'अजीज मुतवक्किफ' से आशय स्वयं हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) हैं और हजरत ख्वाजा (रहम०) ने अपने लिये हजरत से दुआएँ तरक्की मुकाम चाही थी (अपनी

आध्यात्मिक प्रगति के लिये हजरत की दुआ के आकांक्षी थे)। और यह भी लिखा है कि अन्तिम समय में हजरत ख्वाजा (रहम०) फ़रमाया करते थे कि हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के सत्संग के प्रभाव से यह मालूम हुआ कि तौहीद (अद्वैतवाद) की गली सँकरी थी और इससे आगे शाह राह (राजपथ) चौड़ा है। लिखने का तात्पर्य यह कि जो मामला इन पीर व इन मुरीदों में गुजरा वह देखते तो कहाँ सुना भी नहीं बल्कि किताबों में भी नहीं पढ़ा।

हजरत ख्वाजा (रहम०) ने एक रोज फ़रमाया कि मियां अहमद (हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) मुकम्मिल मुरादों व मुहिब्बों (प्रेमीयों) से हैं। ('मुराद' उस साधक या शिष्य को कहते हैं, जिसको ईश्वर और सतगुरु का प्रेम और उनकी कृपा उसके बिना किसी साधना, अभ्यास व प्रयत्न के उसको हर क्षण प्राप्त होती रहती है। ऐसे कामिल व मुकम्मिल मुराद की स्थिति का वर्णन कबीर दास जी ने इस प्रकार किया है 'मोरा राम मोको भजे, तब पाऊँ विश्राम ।) हजरत ख्वाजा (रहम०) ने एक रोज फ़रमाया कि मैंने इन तीन चार वर्षों में पीरी नहीं की, बल्कि खेल खेला है मगर ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि मेरा खेल और दूकानदारी निष्फल नहीं गई और ऐसा शख्स जाहिर (प्रकट) हुआ।

हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) फ़रमाया करते थे कि हजरत ख्वाजा (रहम०) की रूहानियत की तालीम की सरगर्मी (तेजी) उसी वक्त तक रही जब तक मेरी रूहानियत की तालीम पूर्णता को नहीं प्राप्त हुई। जब मेरे काम (अध्यात्म की शिक्षा-दीक्षा) से निवृत्त हुये, तो ऐसा ज्ञात होता था कि उन्होंने अपने को पीरी के उत्तरदायित्व से पृथक कर लिया है और सभी जिज्ञासुओं और शिष्यों को मेरे सुपुर्द कर दिया और फ़रमाया कि यह बीज बुख़ारा और समरकन्द से लाकर हिन्द में बोया। जब हजरत (रहम०) तीसरी बार सरहिन्द से देहली हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की मुलाकात के लिये हाजिर हुये, हजरत ख्वाजा (रहम०) ने फ़रमाया कि बदन में कमजोरी बहुत मालूम होती है। जीने की आशा कम है और अपने दोनों सुपुत्रों को (ख्वाजा उबैदुल्लाह और ख्वाजा अब्दुल्लाह को) जो उस वक्त दूध पीने वाले बच्चे थे बुलवा कर अपने सामने हजरत (रहम०) से तवज्जोह कराई और उनकी पूज्य माताओं को भी ग़ायबाना (परोक्ष रूप से) तवज्जोह कराई। इसके बाद जब हजरत

सरहिन्द वापस तशरीफ ले गये, फिर हजरत ख्वाजा (रहम॰) से मुलाकात नहीं हुई। सरहिन्द पहुँच कर थोड़े दिन हजरत वहाँ रुके। इसके बाद लाहौर तशरीफ ले गये। वहाँ के तमाम छोटे, बड़े, बूढ़े व बड़े-बड़े विद्वान व ज्ञानी नक्शबन्दिया सिलसिले में दाखिल हुये और हजरत (रहम॰) का सत्संग व आध्यात्मिक प्रभाव बहुत तेजी से फैलने लगा। उसी समय में हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम॰) के शरीरान्त का दुखद समाचार मिला। आप अत्यन्त व्याकुलता के साथ देहली को रवाना हुये और वहाँ पहुँच कर हजरत ख्वाजा (रहम॰) के परिवारवालों तथा गुरु भाइयों को सान्त्वना प्रदान की। हजरत ख्वाजा (रहम॰) के असहाब ने आपका वहाँ तशरीफ ले जाना अपना परम सौभाग्य समझा और आपके सत्संग में हाजिर होने लगे। हजरत (रहम॰) अपने पीर की वसीयत के मुताबिक सभी असहाब को रूहानियत की तालीम देने लगे और थोड़े ही दिनों में हजरत ख्वाजा (रहम॰) के वक्त में जो ताजगी व सरगर्मी थी हजरत की तवज्जोह की बरक़त से पुनः पैदा हो गई। मगर इस ताजगी और सरगर्मी के बावजूद कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियों ने कुछ असहाब (सत्संगी भाइयों) को उनके विरुद्ध भड़काना शुरू किया। सबसे पहिले हजरत (रहम॰) ने अपने विरोधियों को समझाया और उपदेश दिया। मगर जब इससे काम न चला, कुछ लोगों की रूहानी निस्बत सल्ब कर ली। इधर हजरत ख्वाजा (रहम॰) के कुछ मुरीदों ने भी हजरत (रहम॰) की हत्या के लिये हजरत ख्वाजा (रहम॰) की मजार पर खुत्में पढ़े और दुआएँ की मगर 'चिरागे रा कि ईज़द बर फरोज़द, कसे को पफ रेशश बसोज़द' (जिस चिराग को खुदा रोशन करता है, जो उस पर फूंक मारेगा उसकी खुद दाढ़ी जल जायेगी)। किसी से कुछ न हुआ और हजरत (रहम॰) सरहिन्द वापस तशरीफ ले गये। उक्त घटना के कुछ दिनों के बाद ईश्वरीय प्रेरणा के फलस्वरूप उनके सभी विरोधियों ने अपने गुनाह के लिये क्षमा याचना की। हजरत (रहम॰) ने कृपा कर उन सभी को क्षमा कर दिया और इसके बाद हर साल माह जमादिउल आख़री में, जो हजरत ख्वाजा (रहम॰) के शरीरान्त का महीना था और उसी अवसर पर हजरत ख्वाजा (रहम॰) का उर्स (भण्डारा) होता था, हजरत (रहम॰) देहली तशरीफ लाते और कुछ दिनों वहाँ रुककर सरहिन्द वापस जाते। दो तीन बार आगरा तक भी जाने का संयोग हुआ, अन्यथा आप हमेशा सरहिन्द में ही रहे। या आखिरी उम्र में बादशाह द्वारा दी गई तकलीफों के

कारण फौज के साथ रहने और घूमने का संयोग हुआ। (इस घटना का विस्तृत विवरण ईश्वर-इच्छा से आगे अंकित किया जायेगा)।

हजरत की अच्छाइयां और विशेषताएँ इतनी अधिक हैं कि उनका सविस्तार वर्णन करना असम्भव है। फिर भी कुछ नीचे प्रसाद रूप में अंकित की जा रही हैं :-

(१) आपको खमीर तीनत (आपकी प्रकृति व स्वभाव का सार तत्व) उस मिट्टी से बना कि जो हजरत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की तहकीक (अनुसंधान) व तकमील (पूर्णता) से शेष रही थी। अतः इसका इशारा हजरत ने अपने पत्रों के संकलन की तीसरी जिल्द के सौवें पत्र में किया है। ऐसा होना असम्भव भी नहीं प्रतीत होता क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है 'व इन मिन शैइन इल्ला इन्दना ख़जाइनहू' (कोई चीज भी नहीं है दुनिया की, मगर उसका ख़ज़ाना हमारे पास है)। इसके अलावा जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि मैं और अबूबक्र (रजि०) व उमर (रजि०) एक ही तीनत (प्रकृति) से पैदा हुये हैं और उबैदुल्लाह बिन जफर (रजि०) को भी फ़रमाया कि तू मेरी तीनत से पैदा हुआ है और तेरा बाप फ़रिश्तों (देवताओं) के साथ आसमान में उड़ता था। अतः यह उचित है कि जिस खाक (मिट्टी) को अल्लाह तआला ने अपने हबीब (प्रेमपात्र) के लिये तैयार की हो और उसको अनवार (प्रकाशपुंजों) और बरक़ात (ईश्वरीय उपहारों) से परवरिश (पोषित) किया हो उसके कुछ शेष अंश से अपने किसी औलिया (संत) का खमीर-तीनत बना दिया हो।

(२) अल्लाह तआला ने आपको 'क़य्यूमत' की महान पदवी प्रदान की थी। क़य्यूम ईश्वर का एक नाम भी है जिसका अर्थ होता है जिससे तमाम चीजें कायम (अस्तित्व में) हैं। हजरत ने फ़रमाया कि एक रोज मैं जुहर की नमाज (दोपहर की नमाज) के बाद मराक़िब (ध्यान में) बैठा था और हाफ़िज़ कुरान पढ़ रहा था कि यकायक मैंने अपने ऊपर एक ख़िलअत (वस्त्र जो किसी के सम्मान में दिया जाता है) अत्यन्त प्रकाशवान पाया। ऐसा मालूम हुआ कि यह ख़िलअत क़य्यूमियत तमाम मुम्किनात है (जिन बातों का होना अथवा अस्तित्व सम्भव हो, उन सभी का क़य्यूम होने का उपहार रूपी यह वस्त्र मुझे प्रदान किया गया है), जो हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के विरासत (उत्तराधिकार) व ताबेअत (आज्ञाकारिता, अनुकरण) के रूप में मुझे प्राप्त हुआ है। इतने ही में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) तशरीफ लाये और

अपने शुभ हाथों से मेरे सर पर पगड़ी बांधी और क़य्यूमत की महान पदवी प्राप्त होने के लिये मुझे मुबारकबाद दिया। हजरत के मकतूब (पत्र) 79-80 (तीसरी जिल्द) में 'क़य्यूम' की व्याख्या सविस्तार की गई है परन्तु स्थानाभाव के कारण उसका यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है, बल्कि हजरत के सुपुत्र तथा खलीफा हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) की पुस्तक 'मकतूबात मासूमिया, के मकतूब (पहली जिल्द) से निम्न लिखित अंश दिया जा रहा है जो संक्षेप में है ओर जिसे समझा भी जा सकता है-

'इस दुनिया का क़य्यूम अल्लाह ही है (ईश्वर से ही इस संसार का अस्तित्व है)। और उसके कायम मुकाम (स्थानापन्न) औलिया लोग (ऋषि गण) उसके साये के घेरे में और अब्दाल लोग (पूर्ण समर्थ सन्त) उसके दरियाए कमाल में तैरते हैं। दुनिया के तमाम लोग उसी की तरफ तवज्जोह रखते हैं (आकृष्ट रहते हैं) और तमाम लोगों की तवज्जोह (ध्यान, आकर्षण) का किबला (केन्द्र बिन्दु) वही हैं। चाहे लोग उसको समझे या न समझे बल्कि तमाम आलमों (लोकों) का वजूद (अस्तित्व) उसी की जात (हस्ती) से है तो अफादे-आलम (मनुष्य-लोक) का क्या जिक्र किया जाये। चूँकि यह लोग अस्मा व सिफाते इलाही (ईश्वर के नामों व गुणों) के जाहिर होने की जगह हैं और उनके दरमियान (मध्य) में कोई और मौजूद नहीं है तो सारे के सारे उसी के (ईश्वर के) औसाफ (गुण) हैं और औसाफ (गुण) मौसूफ (गुणी) से अलग नहीं हो सकते। जब तक कि इनका क़याम (अस्तित्व) उस खुदा की जात से होगा तब तक खुदा का यह हुक्म जारी रहेगा कि बहुत सी सदियों के बाद किसी आरिफ़ (ब्रह्मज्ञानी, परम सन्त) को अपनी जात से कोई हिस्सा इनायत फरमायेगा (प्रदान करने की कृपा करेगा) और अपनी नूरानी जात का अक्स (प्रतिबिम्ब) देगा ताकि उसकी नयाबत (सहायक) और खिलाफत (खलीफा अर्थात उत्तराधिकारी होने) की वजह से वह तमाम चीजों का दुरुस्त करने वाला बने और तमाम चीजें उसी की वजह से कायम हो।"

(३) हजरत (रहम०) को 'मुजद्दिद अल्फ़सानी' क्यों कहा जाता है इस तथ्य की व्याख्या हजरत (रहम०) ने स्वयं अपने पत्रों के संकलन की दूसरी जिल्द के चौथे पत्र में की है जिस में 'इल्मुल यकीन' का वर्णन करते हुये फ़रमाते हैं :-

"ऐनुल यकीन (किसी चीज का पूर्ण विश्वास के साथ जानना) हक्कुल यकीन

(अटल विश्वास) क्या बतायेंगे (अर्थात ईश्वर पर अटल विश्वास रखने वाले और ईश्वर को पूर्ण विश्वास के साथ जानने वाले उस परमात्मा की हस्ती का वर्णन नहीं कर सकते) और अगर वह बता भी दें तो कौन समझेगा और कौन इसकी हकीकत को समझेगा। यह 'मारिफत' (अध्यात्म) की बातें विलायत (ऋषि या वली) की हद से बाहर हैं। साहबाने विलायत (ऋषि तथा महात्मा) और उल्मा (ज्ञानी लोग) दोनों उसके समझने से आजिज़ (विवश) हैं। यह उलूम (अर्थात अध्यात्म विद्याएँ) अनवार नबूवत (अवतार के प्रकाश पुंजों) के मिश्कात (वह बड़ा ताक जिसमे चिराग रखे जाते हैं) से हासिल किये जाते हैं। दूसरी हजारवीं की तश्दीद (पुनरावृत्ति) के बाद उनकी विरासत (उत्तराधिकार) की तौर से यह मारफते (अध्यात्म विद्याएँ) ताज़ी हुई हैं और सामने आई हैं। (इस कथन में इस बात को बतलाया गया है कि हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० के एक हजार वर्षों के बाद दूसरा हजार वर्षों का काल आरम्भ होने पर हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहम० द्वारा उन सभी अध्यात्म विद्याओं का नवीनता और विशेषता लिये हुये आविर्भाव हुआ है। 'मुजद्दिद' का शाब्दिक अर्थ होता है 'पुरानी चीज की नये सिरे से बनाने वाला, पुरानी चीज का सुधार करने वाला' और 'अल्फ़सानी' का अर्थ है 'दूसरा हजार'। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के एक हजार वर्षों के बाद दूसरा हजार वर्षों का काल आरम्भ होने पर हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी का आध्यात्मिक क्षेत्र में आविर्भाव हुआ और आपने मारिफत (ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म) की उन सभी पुरानी बातों को एक नवीनता और विशिष्टता प्रदान की, जो हजरत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा आविर्भूत हुई थी। इसीलिये आपको 'मुजद्दिद अल्फ़सानी' रहम० के नाम से पुकारा जाता है।

इन उलूम और मआरिफ (अध्यात्म-विद्याओं) का मालिक इस हजारवीं साल का मुजद्दिद यह है (अपनी ओर संकेत किया है), जैसा कि इसके उलूम व मआरिफ के मुतआलः (समीक्षा, गम्भीर अध्ययन) करने वालों पर पोशीदा (गुप्त) नहीं है। जिन मआरिफ को इसने (हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहम०) ने खुदा की जात (हस्ती) व सिफात (गुण, विशेषताएं) और अफआल (कृतियों) के बारे में बयान किये हैं और अहवाल (रूहानी हालतें) और जुहूर (अध्यात्म की गुप्त बातों का प्रकटीकरण) और तजल्लियात (अध्यात्म-ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज) जो उसने जाहिर की हैं, उनका

मुतआलः करने वाले यह यकीन करेंगे कि यह मआरिफ और उलूम उलमा (ज्ञानियों) के उलूम से और औलिया के मआरिफ के हद से बाहर हैं, बल्कि इन लोगों का इल्म इन उलूम के मुकाबिल (तुलना) में छिलके की हैसियत रखता है और यह मआरिफ इस छिलके का मग्ज (गूदा) है। और यह भी समझ लें कि हर सौ साल के बाद एक मुजद्दिद पैदा हुआ है लेकिन सौ साल के बाद वाला मुजद्दिद और है और हजार साल के बाद वाला मुजद्दिद और है जितना कि खुद सौ और हजार में फर्क है, उतना ही इन मुजद्दिदों में भी फर्क है, बल्कि उससे भी ज्यादा फर्क है। मुजद्दिद वह है कि उस जमाने में जो कुछ भी फ़ैज़ उसके ज़रिये से उम्मत (किसी अवतार या पैगम्बर को मानने वाले समुदाय) को पहुँचे, चाहे वह लोग (औलिया, सन्त महात्मा) उस जमाने के आफ़ताब (सूर्य) और औताद (खूँटे) हों उस फ़ैज़ को उम्मत वालों तक पहुँचा दें।"

(४) एक रोज हजरत को हल्का व मराकबा में दीद कुसूर गालिब हुई (अपना कोई अपराध या गलती दिखाई दी)। उसी समय इलहाम हुआ (ईश्वर की ओर से हृदय में यह बात पैदा हुई) "बख्शा (क्षमा किया) तुझे और जिस शख्स ने तेरा वसीला (साधन, ज़रिया) बवास्ता या बिला वास्ता (बिना माध्यम के) क़यामत तक पकड़ा।"

(५) हज़रत ने फ़रमाया कि जो कोई मेरे तरीके में बवास्ता या बेवास्ता मर्द-औरत कयामत (प्रलय) तक दाखिल होंगे सब को मेरे पेश नजर (सामने) किया गया और इसका नाम, वंश, जन्म स्थान तथा घर बतलाया गया है। अगर चाहूँ तमाम बयान कर दूँ।

(६) हजरत को ग़ायत इन्किसार से (अत्यन्त विनम्रता की भावना सहित) यह ख्याल आया कि जो कुछ मैं लिखता हूँ मालूम नहीं कि अल्लाह तआला की मर्जी व मकबूल (पसन्द) है या नहीं। इसी समय ग़ैबी (परोक्ष से) आवाज आई कि यह उलूम कि जो कुछ तुमने लिखे है तमाम मकबूल हैं। फिर उसी वक्त इलहाम हुआ कि जो कुछ लिखा बल्कि जो कुछ तुम्हारी बातचीत में आया वह भी मर्जी व मकबूल है (वह भी ईश्वर की इच्छानुसार लिखा गया है और वह ईश्वर को पसन्द है), बल्कि वह तमाम हमने (ईश्वर ने) कहा है और हमारा बयान है।

(७) हजरत ने फ़रमाया कि हजरत इमाम मेंहदी (अलैउल रिज़वान) इस तरीके (नक्शबन्दिया सिलसिले) की निस्बत हासिल करेंगे।

हजरत (रहम०) के कश्फ व ख़वारिक

(१) कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत को जियारत बैतुल्लाह (काबा शरीफ के दर्शनों) का शौक अज़हद (अत्यधिक) गालिब हुआ । एक रोज इसी बेकरारी (व्याकुलता) में आपने देखा कि सारा संसार, जिन्न व इन्सान नमाज पढ़ते हैं और सिज्दा हजरत की तरफ करते हैं (हजरत की तरफ झुककर माथा टेकते हैं)। हजरत यह देखकर अत्यन्त अचम्भित हुये और कश्फ के ज़रिये इस घटना का रहस्य जानना चाहा। मालूम हुआ कि काबा शरीफ आपकी मुलाकात के वास्ते आया है और आपका अहाता किया है (आपको घेर लिया है)। इस वजह से जो काबा को सिजदा करता है वह आपकी तरफ मालूम होता है। इसी समय इलहाम हुआ कि तू हमेशा जियारत काबा का मुश्ताक (आकांक्षी) रहता है, इस वास्ते हमने काबा को तेरी जियारत (दर्शनों) के वास्ते भेजा है।

कहा जाता है कि एक रोज हजरत (रहम०) अपने मुरीदों के साथ मराकबा में बैठे थे कि हजरत शाह सिकन्दर (रहम०) व शाह खितैली (कु० सि०) तशरीफ लाये और एक ख़िर्क़ा आपके कंधों पर डाल दिया। हजरत ने जो आँख खोली तो देखा शाह सिकन्दर (रहम०) हैं। जल्दी से उठे और सम्मान सहित उनसे गले मिले। हजरत शाह सिकन्दर (रहम०) ने फ़रमाया कि मेरे जद्दे अमजद (दादा, बाबा) अपने शरीरान्त के निकट यह जुब्बा (लम्बा अँगरखा) जो कि हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) (कादरिया सिलसिले के प्रवर्तक) से पुश्त दर पुश्त हमारे यहाँ चला आता है मेरे सुपुर्द किया था और फ़रमाया था कि इसको धरोहर के रूप में अपने पास रख लो। जिसको मैं कहूँगा उसके हवाले करना। अब कुछ मर्तबा मुझ से मेरे जद्दे अहमद (रहम०) ने तुम्हारे हवाले करने के वास्ते ख्वाब में कहा, लेकिन मेरे लिये इस तबर्रुक (प्रसाद, उपहार) का अलहदा करना बहुत मुश्किल काम था। मगर इस बार उन्होने सख्ती के साथ ताड़ना देकर मुझे हुक्म दिया है, अतः विवश होकर यह ख़िर्क़ा लाया हूँ। हजरत (रहम०) ख़िर्क़ा पहिन कर खिलवत (एकान्त) में तशरीफ ले गये। वहाँ आपके दिल में खतरा (दुर्विचार) गुजरा कि मशायख (सतगुरुजनों) के भी अजीब मामूल (दस्तूर, नियम) हैं कि जिसको जामा (वस्त्र) पहिना दिया वही खलीफा बन गया। वरना यह

चाहिये कि पहिले ख़िलअत मानवी (अभ्यान्तरिक वस्त्र) पहिनायें, फिर अपना खलीफा बनायें (पहिले अपने सिलसिले की रूहानी निस्बत की तालीम देकर उसमें पारंगत बनायें, फिर अपना खलीफा बनायें)। इस दुर्विचार के आते ही तत्काल हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) अपने सभी खलीफाओं के साथ तशरीफ लाये और अपने सिलसिले की खास रूहानी निस्बत के अनवार (प्रकाश पुंज) से मालामाल कर दिया। उस वक्त आपके दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि मेरी रूहानी परवरिश (पालन-पोषण) नक्शबन्दिया सिलसिले में हुई है। यह ख्याल आते ही उसी समय हजरत अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु० सि० से लेकर हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) तक के सभी सतगुरुजन तशरीफ लाये और हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) के बराबर बैठे। नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजनों ने फ़रमाया कि शेख़ अहमद (हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) हमारी तरबियत रूहानी (तालीम) से कमाल व तकमील को पहुँचे। आपको इनसे क्या सम्बन्ध है ? कादरिया सिलसिले के सतगुरुजनों ने फ़रमाया कि इन्होंने सबसे पहिले चाशनी हमारे सिलसिले से खाई है (यह उस बात की तरफ इशारा है कि हजरत शाह कमाल खिलैती कु० सि० हजरत की दूध पीने की उम्र में तशरीफ लाये थे और हजरत उस जमाने में बीमार थे और शाह साहब ने अपनी ज़ुबान उनके मुँह में दे दी थी और आपने उसको खूब चूसा था) और अब ख़िर्क़ा भी हमारा पहिना है। इस बहस में हजरात चिश्तिया व सुहरवर्दिया भी तशरीफ लाये और कहा कि इनके हम भी दावेदार हैं क्योंकि हमारे खानदान की हजरत को अपने पूज्य पिताजी से, हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) से गुरु दीक्षा प्राप्त होने के पहिले, खिलाफत मिली थी (खलीफा बनाये गये थे)। हजरत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के खलीफा मौलाना बदरुद्दीन सरहिन्दी (रहम०) ने अपन ग्रन्थ 'हजरातुल कुद्स' में लिखा है कि हजरत (रहम०) की जबानी सुना गया है उस वक्त इतनी अधिक संख्या में सन्तों महात्मा की महान आत्माएँ जमा हुई कि तमाम मकान व गली कूचा भर गया और इस बहस को होते हुये सुबह से दोपहर का वक्त आ गया। इसी मौक़े पर हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) तशरीफ लाये और अपनी महान दया-कृपा से सब को तसल्ली व दिलासा फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि चूँकि शेख़ अहमद (रहम०) की तक़मील (तालीम की पूर्णता) तरीका नक्शबन्दिया में हुई है

इस वास्ते यह इसी सिलसिले की तालीम की तर्वीज़ करें (प्रचार करें, फैलायें) और बाकी दूसरे सिलसिलों की रूहानी निस्बत भी इल्क़ा करें (दिल में रखें) कि इनका हक भी साबित है और इसी पर फ़ातिहा खैर पढ़ा गया और सब विदा हो गये।

कहा जाता है कि एक रोज हाफ़िज़ हल्का (सत्संग) में कुरान मजीद पढ़ रहा था यकायक कुरान शरीफ के बारे में कुछ वसाविस (बुरे विचार) मेरे दिल में आने लगे। ख्याल आया कि नफ़्स मुतमईय्यना हो गया (मन विभिन्न वासनाओं के प्रभाव से मुक्त होकर सन्तुष्ट हो गया है) तथा विलायत मुतहक्किक (यक़ीनी, निश्चित) फना व बका हासिल हो गई, फिर यह ख़तरात (बुरे विचार) कहां से पैदा हुये। इसीलिये इस राज के कश्फ (इस रहस्य को आत्म-शक्ति द्वारा जानने) के लिये मुतवज्जेह हुआ। विशेष तवज्जेह व बेहद बेचैनी के बाद क्या देखता हूँ कि एक मुर्ग (पक्षी) अजीबुल खिल्कत (जिसकी आकृति और बनावट विचित्र है) मेरे सीने से निकल कर बाहर हो गया है। गौर किया तो मालूम हुआ कि सीने में भी खन्नास (पिशाच) था जो वसवसा बुरे विचार) डालता था और हजरत पैगम्बर (सल्ल०) को इसी खन्नास के शर (उपद्रव) से बचने के वास्ते यह हुक्म हुआ था-'ऐ पैगम्बर तुम कहो कि मैं उस शैतान के वसवसों से, जो वह लोगों के दिलों में पैदा करता है ख़्वाह जो जिन्नात में हो या आदमियों में, पनाह माँगता हूँ तमाम लोगों के पालने वाले से और तमाम लोगों के मालिक से और तमाम लोगों के खुदा से।' और इलहाम हुआ कि असल दीन में जो खतरा (बुरा विचार) गुजरता है उसी का मंशा (आशय) यही खन्नास है जो सीने में आशयाना (घोसला) रखता है और हर वक्त नेशजनी करता रहता है (डंक मारता रहता है)। फिर इलहाम हुआ इसके घोसले को तेरे सीने से दूर कर दिया। हजरत ने फ़रमाया कि उस खन्नास के निकल जाने के बाद अजब शर्हा सद्र (रूहानी फ़ैज़ में महान विस्तार व बढ़ोतरी) हासिल हुई)।

नकल है कि हजरत (रहम०) ने फ़रमाया कि मैंने ख्वाब में देखा कि हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के हुजूर में (समक्ष) हाजिर हुआ कि हजरत खातमियत (यमराज) ने एक इजाजतनामा (अधिकार-पत्र), जैसा कि मशायख (सतगुरुजन) अपने खलीफाओं को लिख कर दिया करते हैं, मुझको प्रदान करने की कृपा की है। लेकिन बाद को मालूम हुआ कि इस इज़ाज़तनामा में अभी कुछ कमी है कि इतने में एक शख्स आकर

मुझ से वह इज़ाज़तनामा हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के पास ले गया और उस पर कुछ लिखवा कर और हजरत महबूब रब्बुल आलमीन (हजरत मुहम्मद सल्ल०) की मुहर से मुजय्यिन करा कर (सजा कर) मुझको लाकर दे दिया। उसकी पीठ पर अल्लाफ अजीमा (महान दयायें, कृपाएँ, मेहरबानियाँ) दुनिया के मुतआल्लिक़ (संसार के विषय में) लिखे हैं और उसकी पुश्त (पीठ) पर लिखा है कि तुम को इजाजत नामा आख़िरत अता हुआ व मुकाम शफाअत मरहमत फ़रमाया (वह उच्च कोटि की आध्यात्मिक स्थिति प्रदान की गई कि जिसके द्वारा उन्हें यह अपूर्व सामर्थ्य प्राप्त हुआ कि वह कयामत अर्थात प्रलय के समय जिस किसी की नजात (मुक्ति) के लिये ईश्वर से सिफारिश करेंगे उसको मुक्ति प्रदान की जायेगी।) उस इजाजतनामा के काग़ज़ात बहुत तूलानी हैं (विस्तार से हैं) और इस पर बहुत सी सतरें (पंक्तियाँ) लिखी हुई हैं। फ़रमाया कि मैं जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) के पास इस तरह बैठा हूँ जैसे कि बेटा बाप के पास बैठा हो। इस समय मैं वह इजाजतनामा लपेटा हुआ हाथ में लिये हुए हरम शरीफ (जनान खाना) में हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के साथ दाखिल हुआ। हजरत खदीजा रजि० (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल० की धर्मपत्नी) मुझ से हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के सामने फ़रमाने लगी कि मैं तेरे इन्तजार में थी और तू यह काम कर (उस इजाजतनामा में उन्हें जो काम सौंपा गया था अर्थात कयामत के दिन लोगों की नजात (मुक्ति) के लिये ईश्वर से सिफारिश करने का उसे पूरा करना)। फ़रमाया कि मुझको आँ हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० व हजरत खदीजा रजि० की यह उपस्थिति गैर नहीं मालूम होती थी (अर्थात मैं यह अनुभव कर रहा था कि मैं अपने ही परिवार वालों के बीच बैठा हूँ)।

हजरत ने फ़रमाया कि एक रोज मैं बैठा हुआ था कि दायरा गजब इलाही जाहिर हुआ (ईश्वर का महान भयावह अचम्भित करने वाला विराट रूप जाहिर हुआ।) जिस वक्त उसमें सैर की, तरह-तरह के गजब जाती व सिफाती व इंतकामानः व सुबहाना मुताला किये (ईश्वर के विभिन्न गुणों से युक्त अनेकों रूप अर्थात् रौद्र रूप व अत्यन्त मनमोहक सुन्दर रूपों के दर्शन किये। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपने इसी महा विराट रूप का दर्शन कराया था)। इसके बाद उस दायरे से ऊपर की सैर हुई। यह दायरा इस्तिग़नाई (निस्पृहता) का था। इस जगह रंग-रंग की इस्तिग़नाई जाती व

सिफाती अल्लाह तआला की नजर से गुजरी। इसके बाद इससे ऊपर के मुकाम की सैर हुई। मालूम हुआ कि यह रहमत (दया) का मुकाम है। इस पर सिर्फ जमाल ही जमाल (सौन्दर्य ही सौन्दर्य) का ज़हूर (प्रकटीकरण) है, जलाल (प्रताप, तेज) व इस्तिग़नाई का नहीं। सबसे ऊँचे मुकाम की सैर हुई जिसके लिये खुदा का लाख-लाख शुक्र है और जो वर्णन से परे है।

हजरत ने फ़रमाया कि एक रोज मैं अपने सत्संगी भाइयों की तरफ मुतवज्जेह था, उसी समय यह मालूम हुआ कि शेख़ ताहिर लाहौरी (रहम०) का नाम दफ्तर सादान (नेक लोगों की सूची) से खारिज करके दफ्तर अश्किया (निर्दय, कठोर हृदय वाले लोगों की सूची) में दाखिल कर दिया गया है। अतः उसी वक्त मैं शेख़ ताहिर (रहम०) को इस दुर्भाग्य से मुक्त करने के लिये बड़ी बेचैनी और दीनता के साथ अल्लाह तआला से दुआ करने में तल्लीन हो गया। इसी हालत में मुझे मालूम हुआ कि लौह महफूज में (भाग्य की तख्ती में) क़ज़ा (किसी अपराध के दंड का न्याय) अटल और अकाट्य है और वह किसी शर्त पर आधारित नहीं है। उस वक्त मैं पूर्णरूप से निराश हो गया। तत्काल उसी क्षण हजरत मुहीउद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) का कथन याद आया कि उन्होंने एक मर्तबा फ़रमाया था कि "क़ज़ा मुब्रम (अवश्यंभावी न्याय) में तब्दीली करने का साहस एवं सामर्थ्य किसी में नहीं है, लेकिन मुझ में यह सामर्थ्य है। अगर मैं चाहूँ तो वहाँ भी तसर्रुफ कर सकता हूँ (अपनी आत्म-शक्ति से परिवर्तन कर सकता हूँ)।" इस कथन का स्मरण आते ही मैं पुनः अत्यन्त विनम्रता एवं व्यग्रता के साथ दुआ करने लगा और इस दुआ में मैंने अर्ज किया कि 'या खुदा, तूनें अपने एक बन्दे को अपनी विशेष दया कृपा से फैज़याब किया है, अगर इस आजिज़ को भी इसी प्रकार मुमताज़ फ़रमाये (इसी प्रकार की विशेष सामर्थ्य प्रदान करे) तो तेरी असीम कृपा इस अकिंचन सेवन पर होगी।' अतः उसी वक्त ईश्वर की अहेतुकी दया से शेख़ ताहिर (रहम०) को उस बला से नजात (मुक्ति) हो गई। मगर उस वक्त मालूम हुआ कि एक किस्म की कजा (किसी अपराध के दंड का न्याय) है जो लौह महफूज में मुब्रम होती है (भाग्य की तख्ती में अटल ओर अकाट्य होती है अर्थात उस अपराध का दंड अपराधी को अवश्य ही भोगना पड़ता है) लेकिन ईश्वर के निकट वह स्वच्छन्द होती है और इसमें कुछ विशेष सन्तों और महात्माओं को दस्ते तसर्रुफ

होता है (आत्मिक शक्ति द्वारा उस भाग्य रेखा में परिवर्तन करने की सामर्थ्य होती है)। और उक्त घटना इसी प्रकार की थी-

औलिया राहस्त कुदरते इज़ाला
तीर जुस्ता बाज़ गरदानद जेराह

(सन्तों को उस तीर के हटाने की ताकत है जो कमान से निकल चुका है। वे उस तीर का रास्ता मोड़ सकते हैं)।

कहा जाता है कि एक शख्स हजरत (रहम०) से तरीका कादरिया से मुरीद हुआ उसी समय हजरत (रहम०) के पास कोई मेहमान आया। उसने उस शख्स की सिफारिश करते हुये आपसे अर्ज किया कि 'इसके पिता से मेरा प्रेम था। आपने इसको तरीका क़ादरिया में दाखिल किया है। आप कृपा कर हज़रत गौसुल सकलैन (हज़रत मुहीउद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी रहम०) से भी इसको मिला दीजिये। उसके थोड़ी देर बाद हज़रत मकान से बाहर तशरीफ़ लाये और उस शख्स को, जिसे उन्होंने क़ादरिया सिलसिले में बैअत किया था (दीक्षित किया था), बुलाकर फ़रमाया कि कुतुबतारा (ध्रुवतारा) की तरफ देख। उसने जो देखा तो उस तारे में से एक शख्स काला कम्बल पहने हुये तीर की तरह उस जगह आ गये। हज़रत ने फ़रमाया यही गौसुल सकलैन (रहम०) है। अतः उस शख्स ने हज़रत गौसुल सकलैन (रहम०) के चरणों में गिरकर उनको दंडवत प्रणाम किया। उसके बाद हज़रत गौसुल आजम (रहम०) वहाँ से विदा हुये और उसी ध्रुव तारे में जा कर विलीन हो गये।

कहा जाता है कि एक शख्स हज़रत की खिदमत में अभी हाजिर नहीं हुआ था। उसने आपकी सेवा में एक निवेदन पत्र लिख कर भेजा और उसमें यह निवेदन किया कि हज़रत पैगम्बर (सल्ल०) के असहाब उनकी एक ही सोहबत औलिया (संतों) से अफज़ल (श्रेष्ठतर) हो जाते थे, उसकी क्या वजह थी ? क्या एक ही सोहबत में ऐसी हालत हो जाती थी कि औलिया के जमीअ हालात (सभी रूहानी हालतों) पर मुशर्रफ ले जाते थे (उनसे अधिक श्रेष्ठता व सम्मान प्राप्त करते थे)। हज़रत (रहम०) ने जवाब में लिखा कि इस सवाल का जवाब सोहबत पर निर्भर करता है। अतः वह शख्स हज़रत (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ और पहली सुहबत में वह हालत पैदा हो गई कि बयान नहीं हो सकती। उसी रोज हज़रत (रहम०) ने उसको बुलाकर फ़रमाया

कि आज मैंने तेरे सवाल का जवाब दे दिया है। तेरी समझ में आ गया होगा। उसने हज़रत (रहम०) के क़दमों पर सर रख दिया।

कहा जाता है कि एक शख्स ने वसीयत की थी कि जब मेरा शरीरान्त हो जाये तो मेरी लाश को हज़रत (रहम०) की खिदमत में ले जाना और अर्ज करना कि दाखिल तरीका फ़रमायें क्योंकि हज़रत (रहम०) का तरीका था कि अमवात (मृतक लोगों) को भी अपनी रूहानी निस्बत से फ़ैजयाब कर देते थे। जब उसका शरीरान्त हो गया, उसका लड़का उसके जनाज़े को हज़रत (रहम०) की खिदमत में लाया। आपने फ़रमाया कि कल्ह इच्छा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) मालूम हो जायेगा। दूसरे रोज उसके लड़के ने हल्के में (सत्संग) में देखा कि उसका बाप हज़रत (रहम०) से एक आदमी के फासले पर बैठा हुआ सरगर्म जिक्र है (जप करने में तल्लीन है)।

एक शख्स वर्षों से बीमार चला आ रहा था। न कोई दवा फायदा करती थी, न दुआ। हज़रत (रहम०) की शोहरत सुन कर उसने एक निवेदन-पत्र आपकी सेवा में भेजते हुये उनसे अपने स्वास्थ्य-लाभ के लिये दुआ करने तथा प्रसाद रूप में अपना कोई वस्त्र भेजने के लिये विनम्र निवेदन किया। हज़रत ने उसके उत्तर में यह पत्र प्रसाद रूप में वस्त्र भेजते हुये लिखा :-

'ऐ मखदूम। कब तक मुहब्बत वाली माँ की तरह अपने ऊपर डर से काँपते रहोगे और कब तक गुस्सा और रंज से परेशान होते रहोगे। अपने को और सब को मरा हुआ समझना चाहिये और बेहरकत (गति हीन) पत्थर की तरह समझना चाहिये। 'इन्नका मईयतुन व इन्नहू मईयतुन' (तुम भी मर जाओगे और वह लोग भी मर जायेंगे।) यह खुली हुई दलील (हुक्म) है दिल की बीमारी के दूर करने की। इस थोड़ी सी उम्र में अल्लाह की याद करना सबसे अहम् (महत्वपूर्ण) चीज है और बातिनी (आन्तरिक) बीमारियों का इलाज अल्लाह की याद कर लेने से बेहतरीन कोई दूसरा नहीं है। वह शख्स जो गैर के काबू में है वह अपने से कम की तरफ झुक रहा है। नफ़्से अम्मारा (मन की वह शक्ति जो बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्त करती है) उससे बेहतर है। इसलिये तमाम लोग अपने दिल की सलामती चाहे और रूह (आत्मा) की आजादी तलाश करें। लेकिन कोताह हिम्मत (कम हिम्मत वाले) लोग रूह की गिरफ्तारी के असबाब (आत्मा के बन्धन के कारण और साधन) के हासिल (प्राप्त) करने की फिक्र में रहते हैं

और उनका दिल अल्लाह से दूर हो गया है। अफसोस ! क्या किया जा सकता है। 'वमा जुल्म हुमुल्लाहो वलाकिन कानूँ अन फुसहुम यजलेमून' (अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन उन लोगों ने अपने नफ़्स पर खुद जुल्म किया है)। दूसरी यह बात कि कमजोरी के आ जाने से परेशान न हों। अल्लाह ने चाहा तो आपको सेहत हो जायेगी (आप स्वस्थ हो जायेंगे।) मेरा दिल इस दुनिया से मुतमइन (निश्चिंत) है। जो आपने पैरहन (वस्त्र) मांगा था भेजा जा रहा है, उसको पहने और उसके नतीजों और फ़ायदों के मुन्तजिर रहें (प्रतीक्षा करें)।

शेर-

हरकस अफसाना बख्वानद अफसाना अस्त
व आँकि दीदश नक्द खुद मरदाना अस्त

(जिसने ईश्वर ज्ञान की किताबें कहानी की तरह पढ़ी और उनको कार्यान्वित नहीं किया तो उसने बस एक कहानी पढ़ी और जिसने उन पुस्तकों की शिक्षानुसार अपने हृदय और आत्मा की सुरक्षा की और अल्लाह के नूर अर्थात प्रकाश से हृदय को प्रकाशित किया वही महात्मा है।)

जिस वक्त हज़रत (रहम०) का खत और कपड़ा उस शख्स के पास पहुंचा और उसने उस कपड़े को पहिना, वह तत्काल स्वस्थ हो गया।

Some Portion deleted

शाही फौज के साथ हज़रत (रहम०) अजमेर शरीफ़ में तशरीफ़ रखते थे कि उन्हें अपने शरीरान्त का समय निकट मालूम हुआ। अपने सुपुत्रों को खत लिख कर बुलवाया और इर्शाद फ़रमाया कि मेरा इस दुनियां से कोई ताल्लुक नहीं रहा। अपने सुपुत्र हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) से फ़रमाया कि मनसब क़य्यूमत (क़य्यूमत की पदवी, जिसका वर्णन पहिले किया जा चुका है। तुम को अता हो (प्रदान की जाये) और अशिया (दुनिया की चीजें व लोग) तुम्हारी क़य्यूमत पर बनिस्बत मेरे ज्यादा राजी है। हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) इस महान सम्मान जनक एवं प्रतिष्ठित पदवी के प्राप्त होने पर भी जार-जार रोने लगे। हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) की इस क़दर बेकरारी (व्याकुलता) देखकर हज़रत (रहम०) ने फ़रमाया कि अभी थोड़ी मुद्दत (अवधि) के लिये मुझको छोड़ दिया गया है। इस अवधि में अशिया

का क़याम (निर्भरता) तुम पर है और तुम्हारा कयाम मुझ पर है। अब हज़रत की इच्छा हुई कि बाकी उम्र बिल्कुल गोशा तनहाई (एकान्तवास) में गुज़ारे। अतः आपको शाही फौज से मुक्त कर दिया गया। आपने मकान पर आकर एकान्तवास ग्रहण किया। वहाँ सिवा आपके सुपुत्रों तथा एक दो सेवकों के कोई नहीं पहुँच सकता था। हज़रत सिवा जुमा (शुक्रवार) व जमात के बाहर तशरीफ़ न लाते थे। और कारबार इर्शाद (उपदेश देने का कार्य) हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के सुपुर्द कर दिया। जो शख्स बैअत होने (दीक्षा लेने के लिये) आता उसको उन्हीं के पास भेज देते।

बारहवीं मुहर्रम को हज़रत ने अपने मुरीदों के बीच फ़रमाया कि मुझको आगाह किया है कि चालीस पचास दिनों के बीच इस दुनिया से तुम को जाना होगा और कब्र की जगह भी दिखलाई है। इसलिये इसके बाद हर रोज दिन गिने जाया करते थे, यहाँ तक कि बाइस सफर (इस्लामी दूसरा महीना) को फ़रमाया कि इस मियाद (अवधि) के चालीस दिन गुजर गये (व्यतीत हो गये)। अब देखें इस पांच सात दिनों में क्या होता है और यह भी फ़रमाया कि इन अईयाम (इन दिनों) में जो कमाल कि नौअ बशर (मानव जाति, इन्सान) को सिवा नबूवत (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सिवा) हासिल होने मुमकिन थे वह मुझको अल्लाह तआला ने बतुफैल अपने हबीब (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के अता फ़रमाये (प्रदान किये)। और अब हज़रत पर मर्ज का गलबा शुरू हुआ और कमजोरी बढ़ती गई। इस मर्ज व कमजोरी की हालत में नमाज तहज्जुद, फ़रायज़ बजमात, जिक्र व मराकबा वगैरह बदस्तूर जारी था और किसी बात में फर्क न आया।

कहा जाता है कि जिस रात की सुबह को आपका शरीरान्त हुआ उस रात को तहज्जुद की नमाज के वास्ते उठे और वुज़ू करके नमाज पढ़ी और फ़रमाया कि यह आखिरी तहज्जुद है। सुबह को इश्राक (सूर्योदय के पश्चात् के समय) के बाद बोल (पेशाब करने) के वास्ते तसला मँगवाया लेकिन उसमें रेत न थी। आपने फ़रमाया कि रेत लाओ कि बिला रेत छींटे उड़ने का अन्देशा है और उसी तरह बिला पेशाब किये आपने फ़रमाया कि लिटा दो। शायद हज़रत को मालूम हो गया होगा कि अब वुज़ू की मुहलत नहीं है। अतः दाहिना हाथ दाहिने गाल के नीचे रखकर दाहिने करवट से आप लेट गये और जिक्र (जप) में तल्लीन हो गये। सूए तनफ्फुस शुरू हो गया (साँस उखड़

गई)। आपके सुपुत्रों ने दरियाफ्त किया कि अब क्या हाल है। आपने फ़रमाया कि जो दो रकअत नमाज पढ़ी हैं वही काफी हैं। इसके बाद कोई कलाम न फ़रमाया और इस्मजात (नाम जप) में मशगूल रहे और एक लमहा (क्षण) के बाद पार्थिव शरीर त्याग दिया।

आपका शरीरान्त बतारीख 27 सफर उल मुजफ्फर 1034 हिजरी बमुकाम सरहिन्द हुआ। नमाज जनाजा आपके दूसरे सुपुत्र ख्वाजा मुहम्मद सईद (रहम०) ने पढ़ाई और हज़रत (रहम०) के बड़े सुपुत्र हज़रत ख्वाजा मुहम्मद सादिक (रहम०) के महाज में (उनकी कब्र के सामने), जिनका शरीरान्त हज़रत के जीवन काल में हो चुका था दफन किया गया। एक दफा हज़रत ने इस जगह पर दफन होने के लिये इशारा फ़रमाया था।

❷❺

26. हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहु अलैहि

आपकी मजार सरहिन्द में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

26. हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहु अलैहि

हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के खलीफ़ा व तीसरे पुत्र थे। आपका शुभ जन्म सन 1007 हिजरी में मुकाम बस्सी में जो सरहिन्द के निकट है हुआ। हज़रत मुजद्दिद (रहम०) फ़रमाया करते थे कि 'मुहम्मद मासूम का जन्म मेरे लिये निहायत मुबारक (कल्याणकारी) साबित हुआ। इनके जन्म के थोड़े ही समय के बाद मैं हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में मुशर्रफ हुआ (सम्मानित हुआ, उनका शिष्य बना)'। जब हज़रत मुहम्मद मासूम (रहम०) विद्याध्ययन की उम्र को पहुँचे, आपको मकतब में दाखिल किया गया। वहाँ थोड़े ही समय में आपने कुरान शरीफ़ कंठाग्र करके दूसरे विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की ओर ध्यान दिया। बचपन से ही हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) की उन पर निगाह थी। फ़रमाया करते थे कि 'बेटे ! जल्द इस दुनियावी इल्म को हासिल करने से निवृत्त हो, क्योंकि मुझको तुम से बड़े-बड़े काम लेने हैं। फ़रमाते कि चूँकि इल्म (विद्या) मुब्देहाल है (रूहानी हालतों को आरम्भ करने वाला है), इसका हासिल करना जरूरी है और इसी वजह से हज़रत ने इनको सभी महत्वपूर्ण व उपयुक्त ग्रन्थों का अध्ययन पूरे प्रयत्न के साथ कराया। प्रायः अधिकांश विद्याएँ उन्होने अपने पूज्य पिताजी से और कुछ अपने बड़े भाई हज़रत ख्वाजा सादिक (रहम०) और शेख मुहम्मद ताहिर लाहौरी (कु० सि०) से, जो हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के बड़े खलीफ़ाओं में से थे, सीखीं। हज़रत मुजद्दिद (रहम०) उनकी उलू बातिनी इस्तेदाद (रूहानी क्षमता की महानता) की अत्यन्त प्रशंसा किया करते थे। अतः एक पत्र में फ़रमाया हैं - 'मुहम्मद मासूम की फरजन्दी के बारे में क्या लिखूँ। वह स्वयं इस दौलत के काबिल हैं यानी खास विलायत मुहम्मदिया हासिल किये हुये हैं'। और फ़रमाया कि मुहम्मद मासूम 'महबूब खुदा' (ईश्वर के प्यारे) है और इसी वजह से उनको बड़े सम्मान व इज्जत की नजर से देखते थे। अतः कहा जाता है कि एक मरतबा हज़रत ख्वाजा

मुहम्मद मासूम (रहम०) बचपन में हज़रत के साथ देहली गये। गर्मी का मौसम था। दोपहर को अपने पूज्य पिताजी के पलंग पर सो रहे। उसी समय हज़रत मुजद्दिद (रहम०) भी तशरीफ़ लाये। नौकर ने चाहा हज़रत मासूम (रहम०) को जगाये। मगर हज़रत ने रोक दिया और स्वयं बाहर आकर बैठ गये और फ़रमाया कि अल्लाह का दोस्त आराम करता है। खौफ लगता है कि कहीं उसको तकलीफ पहुँचे और मलाल हो, यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद मासूम स्वयं जग गए।

ग्यारहवें साल आपने अपने पूज्य पिताजी से अख्ज तरीका फ़रमाया (नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति की शिक्षा ग्रहण की) और चौदहवें साल हज़रत से बयान किया कि मैंने ख्वाब देखा है कि एक नूर (प्रकाश) मेरे बदन से निकलता है और सारा संसार उससे प्रकाशित हो रहा है और हर कण-कण में वह प्रकाश व्याप्त है। अगर सूर्य की तरह वह प्रकाश अस्त हो जाये तो सारे संसार में अंधेरा हो जाये। हज़रत ने यह ख्वाब सुन कर फ़रमाया कि 'तुम कुत्बे-वक्त (अपने समय के कुत्ब अर्थात सन्त शिरोमणि) होंगे और इस बशारत (शुभ सूचना, भविष्य वाणी) को याद रखना। सचमुच यह भविष्य वाणी सार्थक हुई और संसार उनके अनवार व बरक़ात (उनके अध्यात्म रूपी प्रकाश पुंजों तथा उपहारों) से परिपूर्ण हो गया। सोलह साल की उम्र में आप सांसारिक विद्याओं का ज्ञान अर्जित करने के बाद रूहानियत की तालीम हासिल करने की ओर उन्मुख हुये और अपने पूज्य पिता जो से रूहानियत के सभी गूढ़ विषयों तथा रहस्यों की तालीम हासिल की।

कहा जाता है कि एक रोज आपको इलहाम हुआ कि बारह रोज के बाद दोपहर को तेरा शरीरान्त होगा। दूसरे रोज इलहाम हुआ कि ग्यारह रोज के बाद शरीरान्त होगा। यहाँ तक कि हर रोज एक दिन घटता जाता था। जब एक दिन बाकी रह गया, तब आपने अपने पूज्य पिताजी से इसका जिक्र किया और खात्मा बिल खैर की दरख्वास्त की (निवेदन किया कि उनका प्राणान्त शान्ति एवं कुशल से हो)। हज़रत मुजद्दिद (रहम०) ने फ़रमाया कि तुम कुछ चिंता मत करो। इससे यह मुराद है कि उस वक्त तुम्हारा नजूल (इस पृथ्वी पर तुम्हारा अवतरण) कामिल (सर्वांगपूर्ण) होगा (अर्थात उस समय तुम पूर्ण समर्थ सन्त की स्थिति मैं पहुँच जाओगे)। कहा जाता है कि हज़रत मुजद्दिद (रहम०) ने फ़रमाया कि 'मुहम्मद मासूम (रहम०), मनसब क़य्यूमत

(क़य्यूम का पद) तुम को अता हुआ (प्रदान किया गया)।' (इस कथन का वर्णन पिछले अध्याय में किया जा चुका है)।

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) ने जब जीवन के अन्तिम काल में एकान्तवास ग्रहण किया था, उस समय रूहानियत की तालीम देने व बैअत करने तथा इमामत मस्जिद इन्हीं के सुपुर्द कर दी थी। अतः अपने पूज्य पिता जी के शरीरान्त के पश्चात् आपने सद्गुरु की पदवी को सुशोभित किया। लिखा हुए कि करीब नौ लाख आदमियों ने आपके हाथ पर तौबा की। सात हजार खलीफ़ा साहबे इर्शाद (सतगुरु) हुये। एक हफ़्ते में आपकी सोहबत में साधक को फना और बका हासिल हो जाती थी। एक महीने में कमालात विलायत से मुशर्रफ (प्रतिष्ठित) हो जाता था। क़श्फ मुकामात (आत्मिक शक्ति द्वारा साधक की आध्यात्मिक स्थितियों तथा दशाओं का पता लगा लेना) निहायत सही था। अपने मुरीदों को दूर जगहों पर होते हुये भी बतला दिया करते थे कि तेरी विलायत मुहम्मदी है या मौसूई (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की) या ईसवी (हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की) है। औरंगज़ेब भी आपके हल्के (सत्संग) में हाजिर हुआ करता था और बिना संकोच के जहाँ जगह मिल जाती थी बैठ जाता था। आपका रोब इस क़दर गालिब था कि बादशाह औरंगज़ेब जबानी बातचीत नहीं कर सकता था। जो निवेदन करना होता था लिखित रूप में पेश करता था।

आप हज़ के लिये काबा तशरीफ़ ले गये। इस यात्रा में उन्हें अल्लाह तआला तथा हज़रत पैगम्बर (सल्ल०) के जो रूहानी इनामात (आध्यात्मिक अनुभव रूपी उपहार) मिले, उनमें से कुछ का वर्णन सविस्तार आपके दूसरे पुत्र हज़रत ख्वाजा अब्दुल्लाह (रहम०) ने लिखा हैं, परन्तु स्थानाभाव के कारण यहां उनमें से कुछ हालात संक्षेप में नीचे अंकित किये जा रहे हैं :-

कहा जाता है कि जब हज़रत बहरी सफर (समुद्री यात्रा) तय करके खुश्की में रवाना हुये, फ़रमाया कि तमाम नशेब व फराज (ऊँचे-नीचे स्थान) यहाँ के हज़रत पैगम्बर (सल्ल०) के अनवार से पुर (पूर्ण) पाता हूँ और तमाम चीजें इस नूर में ग़र्क़ (लिप्त) हैं। एक रोज फ़रमाया कि इस सफर खुश्की में जहाज के सफर की अपेक्षा काबा शरीफ़ के अनवार (प्रकाशपुंज) अधिकता में प्रकट होते हैं और आज मालूम हुआ कि काबा शरीफ़ अपने मकान शरीफ़ से हट कर मेरी तरफ बड़ी खुशी के साथ

मुस्कराता हुआ आया। फ़रमाया कि एक रोज मैं तवाफ (काबा शरीफ़ की परिक्रमा करता था कि इसी समय काबा शरीफ़ ने मुझ से मुआनक़ा किया (गले मिला)। फ़रमाया कि एक रात मैं रुक्न ईमानी के नजदीक हाजिर होकर नमाज वतर पढ़ता था। मालूम हुआ कि वहां फ़रिश्तों (देवताओं) की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि सत्तर हजार फ़रिश्ते रुक्न ईमानी (एक विशेष खम्भा) के नजदीक हाजिर रहते हैं और वे काबा शरीफ़ की परिक्रमा करने वालों के आमाल (कर्मों) का लेखा जोखा अंकित करते हैं। ये फ़रिश्ते मेरे गिर्द (चारों ओर) आकर जमा हो गये। उनके हाथ में कलम दवात है ओर मेरी हकीकत मामला कुछ लिखने लगे। मालूम हुआ कि यह सब मेरी प्रशंसा में कुछ लिख रहे हैं।

फ़रमाया कि एक रोज तवाफ (काबा शरीफ़ की परिक्रमा) से वापस होकर अपने साथियों के साथ मराक़बा (ध्यान) में मशगूल था कि उसी समय गैबत (बेखुदी) हो गई। उस हालत में मालूम हुआ कि कोई शख्स खुदा की मुझ पर असीम दया-कृपा की खबर देता है। उसी वक्त मुझको मालूम हुआ कि एक अत्यन्त सम्मान जनक ख़िलअत (वस्त्र) जिसकी सूरत अत्यधिक प्रकाश पुंजों के कारण पहिचान में नहीं आ रही थी, बल्कि वह एक केवल नूर (प्रकाश) था, मुझको पहनाया। उसके बाद मैं मस्जिद से उठ कर आया और लेट रहा। वहां पर भी वह ख़िलअत अपने ऊपर पाया। इतने में किसी ने आवाज दी कि अल्लाह तआला ऐसा ही बमुनासिब इसके (इस वस्त्र के अनुरूप ही) लिबास (वस्त्र) पहिनता है, अतः हदीस कुद्सी में लिखा हुआ है-'बुजुर्गी मेरी चादर है और बड़ाई मेरी इज़ार (पाजामा) है।'

हज़रत के तसर्रुफ़ात (चमत्कार)

हज़रत के तसर्रुफ़ात (आध्यात्मिक चमत्कार) अत्यधिक हैं। यहां उनमें से कुछ संक्षेप में नीचे अंकित किये जा रहे हैं :-

एक योगी जादू से आग बाँध देता था और लोगों को उस जादू से अचम्भित और मुग्ध करता था। हज़रत को यह सुन कर गैरत आई और बहुत सी आग जलवा कर एक वज़ीफ़ा (मंत्र) पढ़ कर दम (फूँक मारी) और उस शख्स को फ़रमाया कि इसमें बैठ कर जिक्र कर। चुनाँचे ज्योंही वह बैठ कर जिक्र (जप करने) में मशगूल हुआ, आग

उस पर जलने लगी। वह चिल्लाता हुआ अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ और फिर वह कभी बस्ती में नहीं दिखलाई पड़ा। एक मरतबा कुछ खास शिष्य हज़रत की खिदमत में काफी दूर से आकर हाजिर हुये। हज़रत ने हर एक को उपहार रूप में एक वस्त्र प्रदान किया लेकिन उनमें से एक उस वस्त्र से वंचित रह गया। जब वह अपने मकान में अपने साथियों के साथ वापस आया, उसको उपहार के न मिलने का बड़ा अफसोस रहा और इसी पश्चाताप में था कि उसे हज़रत के आगमन का शोरगुल सुनाई दिया। और लोग उनके आदर सत्कार के लिये चले। वह शख्स भी बड़ी प्रसन्नता के साथ रवाना हुआ। जब शहर के बाहर पहुंचा क्या देखता है कि हज़रत घोड़े पर सवार हैं। उसको देखकर फ़रमाने लगे 'तू क्यों दुखी होता है? यह तबर्रुक़ (प्रसाद) ले और कुलाह शरीफ़ (टोपी) उसके हाथ में दे दी। वह कुलाह देने के बाद तत्काल हज़रत निगाह से गायब हो गये और वह कुलाह शरीफ़ उसके हाथ में रह गई।

एक रोज हज़रत वुज़ू फ़रमा रहे थे कि यकायक सेवक से लोटा लेकर दीवाल पर मारा। अतः वह लोटा टूट गया। और दूसरे लोटे से वुज़ू किया। वहाँ उपस्थित लोगों ने यह घटना देखी और उसको स्मरण रक्खा। काफी समय बाद एक सौदागर आया। उसने बतलाया कि एक दफा मैं एक जंगल में था। क्या देखता हूँ कि एक शेर मेरी तरफ ग़ुर्राता चला आ रहा है। देखकर बहुत ही डर लगा। यकायक हज़रत को देखा कि लोटा लिये आ रहे हैं और उस शेर की तरफ उसे फेंक कर जोर से मारा। उस खौफ से शेर भाग गया और मैं सुरक्षित रहा।

एक शख्स अपने बेटे को हज़रत की खिदमत में लाया और निवेदन किया कि यह किसी औरत पर आशिक हो गया है। हमारे हाथों से बिलकुल जाता रहा। न काम दुनिया का करता है, न आक़बत का। हज़रत उसको समझाने लगे। उसने एक शेर पढ़ा –

दर कुए नेक नामी मरा गुज़र नदानन्द
गर तू नमी पसन्दी तब्दील कुम कज़ा रा।

(हमको नेकनामी की गली में गुजरने नहीं दिया गया। अगर तुम नहीं पसन्द करते हो तो हमारी कजा अर्थात भाग्य रेखा बदल दो)। यह सुन कर हज़रत ने फ़रमाया कि हमने तेरी कज़ा तब्दील कर दी। अतः वह तत्काल ताइब हुआ (उस बुरी आदत पर

लज्जित हुआ और उससे दूर रहने की प्रतिज्ञा की ।) और उसी वक्त उसके दिल से इश्क का ख्याल जाता रहा।

एक मरतबा हज़रत की सवारी में एक सैय्यद उनके सम्मान से आगे-आगे पैदल चले जा रहे थे। तमाम लोगों की भीड़ की वजह से वह एक गली में गिर पड़े। दिल में खतरा गुजरा (दुर्विचार आया) मैं सैय्यद और ऐसा जलील कि बिला सवारी के चल रहा हूँ। इस दुर्विचार के आते ही हज़रत ने फ़रमाया कि सैय्यद साहब मैंने आपसे कब कहा था कि आप बिला सवारी पैदल चलकर जलील हों । वह बेचारे अपने इस दुर्विचार पर बड़े लज्जित हुये और फौरन तौबा की।

हज़रत के एक सेवक के घर छः मेहमान आये। उसके पास कुछ मौजूद न था। वह शख्स हज़रत की खिदमत में हाजिर हुआ और खामोश बैठा रहा कि इतने में आम आये। हज़रत की यह आदत थी कि सभी उपस्थित लोगों को दस-दस आम दिये जाते थे। अतः हज़रत ने उस शख्स को बुलाकर दस आम दिये और फ़रमाया कि यह तुम्हारा हिस्सा है और दस आम दिये और फ़रमाया कि तुम्हारे पहिले मेहमान का हिस्सा है । यहाँ तक कि छइयों का हिस्सा इसी तरह दिया और उसके बाद छः अशरफीयाँ जेब से निकाल कर दी और फ़रमाया कि तुम हमारे फरजन्द (पुत्र) की तरह हो। जिस वक्त जरूरत हुआ करे बिना संकोच के खानकाह (आश्रम) से ले लिया करो और इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) यह तंगी (आर्थिक परेशानी) जल्दी ही दूर हो जायेगी। अतः ऐसा ही हुआ कि उस शख्स की आर्थिक स्थिति थोड़े दिनों में ही बहुत अच्छी हो गई।

हज़रत का एक दामाद एक औरत की तरफ मुतवज्जेह (आकृष्ट) था। आपकी सुपुत्रियों ने हज़रत से उसकी शिकायत की। आपकी जबान से सहसा निकला कि वह मर जायेगा। सुपुत्रियों ने अर्ज किया कि जीता रहे। फ़रमाया कि बस अब जो कुछ होना था हो गया। अब ईमान की दुआ करो। अतः इसके तीसरे चौथे दिन उसका शरीरान्त हो गया।

हज़रत की वफ़ात (शरीरान्त)

हज़रत को मर्ज वज़ा मफासिल (शरीर के जोड़ों में दर्द, गठिया) अक्सर रहा

करता था। एक दफा इस क़दर शिद्दत (पीड़ा) हुई कि कोई दवा कारगर (लाभकर) न हुई। तब हज़रत ने फ़रमाया अब दवा कोई फायदा न करेगी। हकीम मुतलक़ (अर्थात ईश्वर) ने इस दवा के असर को नष्ट कर दिया है और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझको इलहाम किया है कि मामला इर्शाद (साधकों को रूहानियत की तालीम देने का काम) इन्तिहा (पराकाष्ठा) को पहुँच गया है गोया कि मेरी पैदाइश से जो मकसूद (लक्ष्य) था वह हासिल हो गया। इसके बाद हज़रत ने अपना तमाम क़ुतुब खाना (पुस्तकों का संग्रहालय) अपने सुपुत्रों में वितरित कर दिया। दस मुहर्रम सन् 1079 हिजरी को सभी सुपुत्रों को बुलाकर वसीयत की कि मैंने तुम से पहिले भी कहा था और अब भी कहता हूँ कि कुरान व हदीस व इज़्माए उम्मत (किसी धार्मिक मामले में बहुमत), व अक्वाल (सतगुरुजनों के उपदेश), मुज्तहिदीन (धार्मिक विषयों में विवेक पूर्ण निर्णय करने वालों) पर अमल करना। फुकरा खिलाफ़ शराए (धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण करने वाले फकीरों) से परहेज करना।

आखिर माह सफ़र में जब हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) का उर्स (भंडारा) हुआ, हज़रत ने सभी उपस्थित लोगों के बीच फ़रमाया कि बेअख्तियार यह दिल चाहता है कि माह रबीउल अव्वल में मैं भी जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हूँ। इसके बाद फिर हज़रत की बीमारी पराकाष्ठा को पहुँच गई। शरीरान्त के दो तीन दिन पहिले आपने आस-पास के बुजुर्गों (सतगुरुजनों) को एक रुक़्क़ा मुतजम्मिन (सम्मिलित रूप में एक पत्र) इस्तदुआए सलामत खातिमा (आपका शरीरान्त सलामती के साथ हो इसके लिये दुआ करने के वास्ते) लिखा। नीचे यह इबारत लिखी:- 'फकीर मुहम्मद मासूम अज़ दुनिया मीरवद कि बदुआए खैरियत ख़ात्मा ममदद मुआवन बाशन्द (फकीर मुहम्मद मासूम दुनिया से जा रहा है। आप उसके खैरियत के साथ खात्मे अर्थात शरीरान्त के लिये दुआ करके उसके सहायक और मददगार बनें)। इस पत्र के जवाब में सैय्यद मिर्ज़ा नामी एक बुजुर्ग ने यह दो शेर लिखे थे-

दरें हर पीरज़न मीज़द पयम्बर,
कि ऐ ज़न दर्द दायम याद आवर।
यकीन मी दाँ कि शेराने शिकारी,

दरी राह ख्वास तन्द अज़ मूर यारी।

(सन्देश भेजने वाले ने हर बुढ़िया औरत को (प्रत्येक अकिंचन व्यक्ति को) याद दिलाया कि ऐ बेकस और बेबस औरत ! (प्राणान्त की) मुसीबत को हमेशा याद रख। तू यकीन जान ले कि जब शेर भी मुसीबत में फँसता है तो च्यूँटी की भी मदद चाहता है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि प्राणान्त का समय बहुत ही बेबसी का होता है। बड़े-बड़े सन्त-महात्मा भी कुशल पूर्वक शांतिमय प्राणान्त के लिये व्याकुल रहते हैं और हर तुच्छ से तुच्छ आदमी से भी ऐसे प्राणान्त के लिये सहायता चाहते हैं।)

शरीरान्त से एक रोज पहिले जुमा को नमाज के लिये मस्जिद में तशरीफ़ लाये। नमाज के बाद फ़रमाया 'उम्मीद नहीं कि कल इस वक्त तक दुनिया में रहूँ और सब को सदुपदेश देकर एकान्त में तशरीफ़ ले गये। सुबह को हज़रत ने पूरी नमाज अदा की। मराक़बा के बाद इश्राक की नमाज पढ़ी। इसके बाद आप पर सक़रात मौत शुरू हो गये (आपको चन्द्रा लग गई)। उस वक्त आपकी ज़बान जल्द-जल्द चल रही थी। आपके सुपुत्रों ने कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि आप यासीन शरीफ़ पढ़ रहे थे। आपका शरीरान्त दोपहर के वक्त दो शम्बा के दिन नवीं रबीउल अव्वल को सन् 1079 हिजरी को हुआ। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्नाइलैह राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे।

❷❻

27. हज़रत शेख़ सैफुद्दीन कुद्स सिर्रहू

आपकी मजार सरहिन्द में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

27. हज़रत शेख़ सैफुद्दीन कुद्स सिर्रहू

हज़रत शेख़ सैफुद्दीन (कु० सि०) हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के पाँचवें पुत्र हैं। आप का शुभ जन्म 1049 हिजरी को सरहिन्द में हुआ। जब आप विद्याध्ययन की आयु को पहुँचे, आपको मक़तब में दाखिल किया गया। थोड़े ही समय में आपने कुरान कंठाग्र कर लिया और इसके बाद आपने सभी उपयुक्त व महत्वपूर्ण ग्रन्थ थोड़े ही अर्से में पढ़ डाले। विद्यार्थी-जीवन में ही आपने कमालात बातिनी हासिल करने शुरू कर दिये। ग्यारह साल की उम्र थी कि आपके पूज्य पिताजी ने आपको फ़नाए कल्ब (हृदय का प्रभु की याद में तल्लीन होने) की बशारत अता फ़रमाई और आपकी महान आध्यात्मिक क्षमता को देख कर हर क्षण आपकी आध्यात्मिक प्रगति का ध्यान रखते थे। आपके ज़र्फ (आध्यात्मिक सुपात्रता) को निहायत अमीक (अत्यन्त अगाध और गम्भीर) समझा करते थे, यहाँ तक कि आप युवावस्था में ही पूर्ण समर्थ संत शिरोमणि की स्थिति को पहुँच गये।

एक बार बादशाह औरंगज़ेब ने हज़रत ख्वाजा मासूम (रहम०) से निवेदन किया कि अपना कोई खलीफ़ा मेरी हिदायत (मार्ग-दर्शन) व तवज्जोह के वास्ते भेजने को कृपा करें। हज़रत ने अपने इन्हीं सुपुत्र हज़रत शेख़ सैफुद्दीन (कु० सि०) को वहाँ भेजा। कहा जाता है कि जब आप देहली पहुँचे और किले में दाखिल होने लगे कि दरवाजे पर दो हाथियों के चित्र बने हुये थे जिस पर फीलवान भी सवार थे। आपने फ़रमाया कि मैं इस किले में दाखिल नहीं होऊंगा कि जिस घर में तस्वीर होती है वहाँ रहमत का फरिश्ता नहीं आता। अतः वह हाथी और फीलवान के चित्र बिलकुल नष्ट कर डाले गये, तब आप दाखिल हुये।

एक रोज बादशाह ने आपको अपने शाही बाग में सैर करने की तकलीफ दी। वहाँ सोने की मछलियाँ थी कि जिनकी आँखों में जवाहरात जड़े थे। हज़रत ने देखकर फ़रमाया कि जब तक मछलियाँ न तोड़ दी जायेगी मैं इस जगह न बैठुँगा। बाग की रखवाली करने वालों ने शाही नुकसान को ध्यान में रखते हुए इनके तोड़ने में तअम्मुल किया (असमंजस में पड़ गये) लेकिन बादशाह ने तत्काल उन्हें तुड़वा दिया और कहा कि शेख़ की प्रसन्नता में ज्यादा नफ़ा (लाभ) है।

बादशाह औरंगज़ेब आपसे तवज्जोह लिया करता था और अजीबो ग़रीब हालात (अनुभूतियाँ) कि जो बादशाह के वास्ते अन्काए रोजगार हैं (जिनकी उपलब्धि इस युग में दुर्लभ है) दारद होते थे (अनुभव में आते थे)। राजधानी में आपके इर्शाद (उपदेश) की बड़ी वसअत (शक्ति, सामर्थ्य) थी। बादशाह अपने राजकुमार, मंत्रियों तथा अन्य पदाधिकारियों के साथ नक्शबन्दिया-मुज़द्दिदिया सिलसिले में दाखिल हुये और सत्संग व मजलिस में इस क़दर लोगों की भीड़ होती कि बयान के बाहर है। कुछ समय तक आप राजधानी में रुके रहे और वहाँ अमर मारुफ़ व निही मुन्किर (धर्मशास्त्र के नियमों द्वारा मान्य कृत्यों के करने और उन नियमों द्वारा वर्जित कृत्यों के निषेध के लिये आवश्यक मार्ग दर्शन तथा आदेश देने) तथा इर्शाद खल्क़ (लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा देने) में तत्पर रहे। इसके बाद अपने वतन सरहिन्द वापस आ गये और अपने पूज्य पिताजी की सेवा में रहते हुये रूहानी अनवार व बरक़ात हासिल करते रहे और उनके शरीरान्त के पश्चात उनके जानशीन (उत्तराधिकारी, वारिस) हुये।

कहा जाता है कि प्रायः आधी रात की अन्तिम बेला में आप हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) की रौजा (कब्र) मुबारक पर जाते और उसके चारों तरफ फिरा करते थे। फ़रमाया करते थे कि मैं मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) की दरगाह का कुत्ता हूँ।

आपके खानकाह (आश्रम) में चार सौ आदमी जमा रहते थे और जो शख्स जो फ़रमाइश करता उसके वास्ते वही खाना तैयार होता। आपकी सेवा में उच्च कोटि के साधक, महात्मा और जिज्ञासु आपसे आध्यात्मिक शिक्षा व उपदेश ग्रहण करने के लिये उपस्थित होते थे।

एक बार शेख़ (सन्त) ने तक़लीले गिज़ा (इन्द्रिय निग्रह के लिये मिताहार) करना चाहा। हज़रत ने फ़रमाया कि तक़लीले गिज़ा की जरूरत नहीं है। हमारे बुजुर्गों ने बिनाए कार (साधना से सम्बन्धित कर्मों की आधार शिला) दवाम वक़ूफ क़ल्बी व सोहबत शेख़ (सदैव हृदय की चौकसी और सतगुरु के सत्संग) पर रक्खा है। तपस्या तथा अत्यन्त कठिन इन्द्रिय निग्रह से आध्यात्मिक चमत्कार तथा ऋद्धियाँ सिद्धियाँ प्राप्त होती है, परन्तु हमारे यहाँ इनकी कोई जरूरत नहीं है। यहाँ दवाम जिक्र व

तवज्जेह अल्लाह (सदैव जप तथा ईश्वर के ध्यान में लगे रहना) व इत्तबा सुन्नत (हज़रत पैगम्बर सल्ल० द्वारा किये गये कामों और आचरणों का अनुकरण करना है)।

एक बार एक शख्स हज़रत के खादिमों में से काबुल से ईरान को जा रहा था। रास्ते में एक राफ़जी (शिया) घोड़े पर चढ़ा हुआ आपके आगे-आगे जा रहा था। यकायक उसकी जबान से नक्शबन्दिया सिलसिले के बुजुर्गों के खिलाफ कुछ बेअदबी की बातें निकली। उस शख्स ने यह बातें सुनते हो उसका सर तलवार से काट डाला। इसके बाद यह खौफ हुआ कि उसके साथी कहीं मुझको कष्ट न पहुँचायें। तत्काल एक सवार नकाब पोश पहुँचा और एक डन्डा उस मृतक को मारा और मुझ से फ़रमाया कि निश्चिंत रहो, हमने उसको गदहा कर दिया है। उस शख्स ने जो गौर किया तो वह गदहे की लाश हो गई थी। उसने उस नकाब पोश सवार से अर्ज किया कि आप मुझको अपना दर्शन देने की कृपा करें। उन्होंने नकाब उल्टा, देखा तो शेख सैफुद्दीन (रहम०) थे। उन्होंने फ़रमाया कि अगर इसकी सूरत तब्दील न कर देता तो इसके साथी तुझको तकलीफ देते। उसी समय उसके साथी भी आ गये। उसका घोड़ा खाली पाया और लाश गदहे की पड़ी थी। शर्मिन्दा हुये और कुछ न पूछा। घोड़ा लेकर चुपके से चले गये।

एक मरतबा आपके बड़े भाई हज़रत हजतहुल्लाह नक्शबन्द (कु० सि०) हज़ की यात्रा के लिये जा रहे थे। बिदा होते समय आपसे कहा 'मेरी उम्र आखिर हो गई है। लड़कों के हाल पर मेहरबानी रखना।' आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की जात से उम्मीद है कि आपकी उम्र बहुत हो, अलबत्ता मुझको अपनी उम्र की बिलकुल उम्मीद नहीं है। आप मेरे बच्चों पर नजरे इनायत (कृपा दृष्टि) राखियेगा। अतः ऐसा ही हुआ और हज़रत हजतहुल्लाह (रहम०) का शरीरान्त आपसे 19 साल के बाद हुआ।

आपका मामूल (नियत) था कि बाद दोपहर अपनी धर्म-पत्नियों को जमा करके हदीस सुनाया करते थे। एक रोज अपने नियम के विरुद्ध हदीस पढ़ना जल्द खत्म कर दिया। धर्म-पत्नियों ने कहा कि अभी बहुत वक्त है, कुछ और पढ़िये। आपने फ़रमाया 'और मुहम्मद आजम से पढ़वाना।' (मुहम्मद आजम आपके बड़े लड़के का नाम था)। उसके बाद आप बीमार पड़ गये और फिर हदीस सुनाने का संयोग न हुआ और उसके

बाद आपके सुपुत्र मुहम्मद आज़म ने सुनाया होगा।

आपने ४७ साल की उम्र में छब्बीस जमादिउल अव्वल सन् 1096 हिजरी में अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।

कहा जाता है कि जब आपका जनाजा दफन करने ले चले वह हवा पर जाता था। हरचन्द लोग चाहते कि कन्धे पर रखें, परन्तु सम्भव न हुआ और कब्र के पास खुद बख़ुद जा कर रख गया।

❷❼

28. हज़रत सैय्यद नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०)

आपकी मजार दिल्ली में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

28. हज़रत सैय्यद नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०)

हज़रत सैय्यद सूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०) इल्म जाहिर (सांसारिक विद्या) में मेधावी एवं उच्च कोटि के विद्वान थे। आपने हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के सुपुत्र एवं खलीफ़ा हज़रत शेख़ सैफुद्दीन (रहम०) से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर सभी रूहानी मुकामात व साधना की विभिन्न स्थितियों को प्राप्त किया और वर्षों उनकी खिदमत में हाजिर रहकर उच्च कोटि की आध्यात्मिक अनुभूतियों से मुशर्रफ (सम्मानित) हुये। हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम कु० सि० के खलीफ़ा शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रहम०) के सुपुत्र हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद हसन (कु० सि०) की खिदमत में भी हाजिर रहे। आध्यात्मिक साधना के आरम्भ में 15 वर्षों तक हर समय ईश्वर के ध्यान में तल्लीन रहते थे। केवल नमाज के वक्त उनकी यह तल्लीनता टूटती थी और नमाज के बाद फिर तन्मयता की स्थिति में हो जाते थे। 15 वर्षों के बाद उनकी यह तल्लीनता समाप्त हुई। अधिकांश समय मराक़बा (ध्यान) में रहने की वजह से आपकी पीठ टेढ़ी हो गई थी। इत्तबा सुन्नत (सुन्नत के अनुकरण) को बहुत जरूरी समझते थे और हमेशा इसका ध्यान रखते थे। अख़्लाक (शिष्टाचार) पर आपकी हमेशा दृष्टि रहती थी और उसी के अनुसार आप आचरण करते थे। थोड़ा सा भी अदब का तर्क (त्याग) न होता था और अगर बमुक्तजाए बशरीयत मानवीय स्वभाव वश) कभी हो जाता तो तत्काल उससे सचेत हो जाते।

एक मरतबा खिलाफ सुन्नत पहिले दाहिना पाँव बैतुल खड़ा (शौचालय) में दाखिल होते समय रख गया। तीन रोज तक बातिनी अहवाल (आन्तरिक हालतों) में कब्ज हो गया (मन उचाट रहने लगा और इबादत में एकाग्रता और तल्लीनता नहीं रहने लगी)। जब अत्यधिक पश्चाताप किया तब आपकी आन्तरिक स्थिति ठीक हुई।

भोजन में इतनी सावधानी रखते थे कि अपने हाथ से कुछ दिनों के लिये भोजन पका लिया करते थे और उसको अधिक भूख लगने पर खा लिया करते थे। फ़रमाया करते थे कि तीस साल से तबियत का लगाव भोजन के स्वाद व किस्म से नहीं रहा और भूख में जो कुछ मिल गया वही खा लिया। आपके दो पुत्र थे। एक को घी और एक को शकर दिया करते थे। अमीरों (धनी लोगों) का खाना कभी नहीं खाया करते थे

। फ़रमाया करते थे कि वह शुबहा (सन्देह) से खाली नहीं होता (उसमें यह सन्देह बना रहता है कि वह ईमानदारी व हलाहल की कमाई का है या नहीं)।

एक मरतबा किसी दुनियादार के धर से खाना आया। आपने फ़रमाया कि इसमें जुल्मत (अन्धकार, तामस) मालूम होती है। आपने अपने खलीफ़ा हज़रत मीरज़ा मज़हर जान जाना (रहम०) से फ़रमाया कि तुम भी गोर करो। उन्होने मुतवज्जेह होकर फ़रमाया कि खाना हलाल की कमाई का मालूम होता है लेकिन बवजह रिया (आडम्बर व दिखावा के कारण) एक किस्म की बदबू इसमें पैदा हो गई है। अगर किसी दुनियादार के घर से किताब मँगवाते तीन रोज तक उसको न पढ़ते और फ़रमाते दुनियादारों की सोहबत (सम्पर्क) से इस पर जुल्मत (अन्धकार, तामस) के गिलाफ की तह लिपट गई है। जब आपकी सोहबत से वह जुल्मत नष्ट हो जाती तब उसका अध्ययन करते। नूरे फरासत (आत्मिक ज्ञान के प्रकाश से लोगों की सूरत देखकर उनके स्वभाव व व्यक्तित्व को जान लेना) और क़श्फ (आत्मिक शक्ति से परोक्ष बातों को जान लेना) इस क़दर सही था कि जैसा उनको हृदय के नेत्रों से ज्ञात हो जाता था आरों को स्थूल बाह्य नेत्रों से नहीं ज्ञात होता था।

एक मुरीद आपकी खिदमत में हाजिर होने के लिये घर से रवाना हुआ। रास्ते में एक नामहरम (अपरिचित स्त्री) पर नजर पड़ गई। आपने उसको देखते ही फ़रमाया कि तुम में जुल्मत जिना (काम वासना का अन्धकार) मालूम होती है। शायद नामहरम पर नजर पड़ गई। आपने विशेष कृपा करके अपनी तवज्जोह से उस जुल्मत को दूर किया। इसी तरह एक रोज आपके एक सेवक को रास्ते में शराबी मिल गया था। जिस वक्त खिदमत में हाजिर हुआ, देखकर फ़रमाया 'आज तुम्हारी बातिन (अन्तःकरण) में जुल्मत शराब मालूम होती है, शायद कि शराबी से मुलाकात हुई हे।' फ़रमाया कि बुरे लोगों की मुलाकात से रूहानी निस्बत लुप्त हो जाती है। अगर कोई शख्स आपकी खिदमत में जिक्र तहलील (कलमा शरीफ़ 'ला इलाह: इल्लल्लाह' अर्थात 'एक ईश्वर के सिवाय कोई ईश्वर नहीं है' का जप करके जाता था, आप फ़रमा देते थे कि जिक्र तहलील करके आये हो और अगर दुरूद शरीफ़ पढ़कर जाता तो उसको फ़रमा देते कि दुरूद शरीफ़ पढ़कर आये हो। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० तथा उनके कुल वालों के कल्याण के लिये ईश्वर से प्रार्थना करना 'दुरूद' कहलाता है)।

एक मरतबा एक औरत आपकी खिदमत में हाजिर हुई और अर्ज किया कि मेरी लड़की को जिन उठा कर ले गये हैं। जितने प्रयत्न व टोना टोटका किये गये सब बेकार साबित हुये। आप इस मामले में मेरी मदद करने की कृपा कीजिये। यह सुन कर आप थोड़ी देर मराक़िब रहे (ध्यान में हो गये) उसके बाद फ़रमाया कि फलां वक्त तेरी लड़की हाजिर होगी। अतः वह लड़की उसी वक्त आ गई। लड़की से जो घटना दरियाफ्त की गई, उसने कहा कि मैं एक जंगल में बैठी थी। वहाँ से एक बुजुर्ग मेरा हाथ पकड़ कर इस जगह ले आये। आप से किसी शख्स ने दरियाफ्त किया कि आपने कुछ देर के बाद क्यों फ़रमाया कि तेरी लड़की फलाँ वक्त आयेगी। आपने फ़रमाया कि मैंने पहिले अल्लाह तआला के दरबार में प्रार्थना की कि अगर मेरी हिम्मत में असर हो तो तेरी दया कृपा से उस लड़की को जिन्नों से मुक्त कराऊं। जब इलहाम हो गया कि तेरी हिम्मत में असर है तब मैंने हिम्मत की और कहा कि फलां वक्त तेरी लड़की आ जायेगी।

आपके पड़ोस में भंग बेचने वाले की दूकान थी। आपने एक रोज फ़रमाया कि भंग की जुल्मत से बातिनी निस्बत क्षीण हो जाती है। आपके किसी शिष्य ने जा कर अपने प्रभाव से उस भंग बेचने वाले को वहाँ से हटा दिया। आपने यह सुन कर फ़रमाया कि अब निस्बत पहिले से भी ज्यादा क्षीण हो गई है क्योंकि तुम्हारा यह व्यवहार भी शरीअत के खिलाफ हुआ है। पहिले उसको नर्मी से समझा कर तौबा करानी चाहिये थी, फिर सख्ती करनी थी। अतः उसको तलाश करके बुलवाया और मुरीदों की तरफ से माजिरत की (विवशता प्रकट किया) और कुछ रुपये उसको दिये और फ़रमाया कि शरीअत के खिलाफ पेशा अच्छा नहीं होता, कोई मुबाह (जायज़, उचित) पेशा अख्तियार करो। अतः उसने तत्काल तौबा की और उस पेशे को छोड़कर दूसरा पेशा अख्तियार किया।

एक मरतबा आप हाफ़िज़ मुहम्मद मुहसन (रहम०) की मजार पर जियारत (दर्शन) के वास्ते गये। मराक़बे में मालूम हुआ कि तमाम बदन व कफ़न ठीक हालत में है, मगर पाँव के चमड़े तथा कफ़न में मिट्टी का असर पहुँच गया है। इसकी वजह दरियाफ्त की तो साहबे मजार ने (जिन बुजुर्ग की मजार थी उन्होने) फ़रमाया कि एक गैर शख्स का पत्थर उसके बिना इजाजत वुज़ू की जगह रख लिया था कि जिस वक्त वह आयेगा

वापस दे दूँगा। एक वक्त उस पत्थर पर कदम रक्खा गया था। उसकी वजह से मिट्टी ने पाँव व कफ़न में असर किया। वास्तव में जिसका कदम तक़वा (इन्द्रिय निग्रह) में ज्यादा, उसको कुर्ब विलायत (समर्थ सन्त-पद की निकटता) ज्यादा।

आपका शरीरान्त ग्यारह जीक़दा 1125 हिजरी में हुआ। आपकी मजार शरीफ़ हज़रत निजामुद्दीन औलिया (कु० सि०) की समाधि के पीछे नाला पार करके एक पक्के बाड़े में, जिसे पंच ख्वाजा कहते हैं।

❷❽

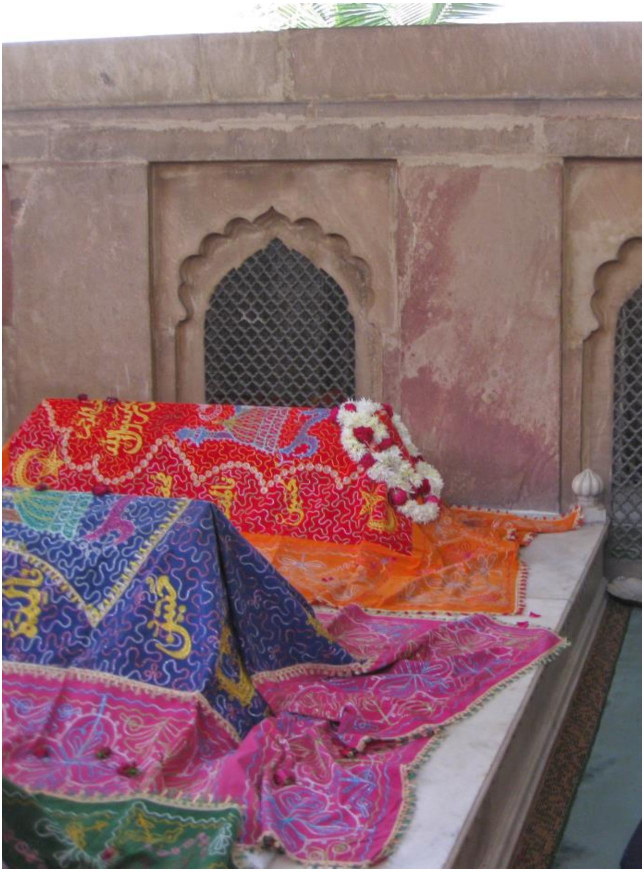

29. हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जानजाना (रहम०)

आपकी मजार दिल्ली में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

29. हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जानजाना (रहम०)

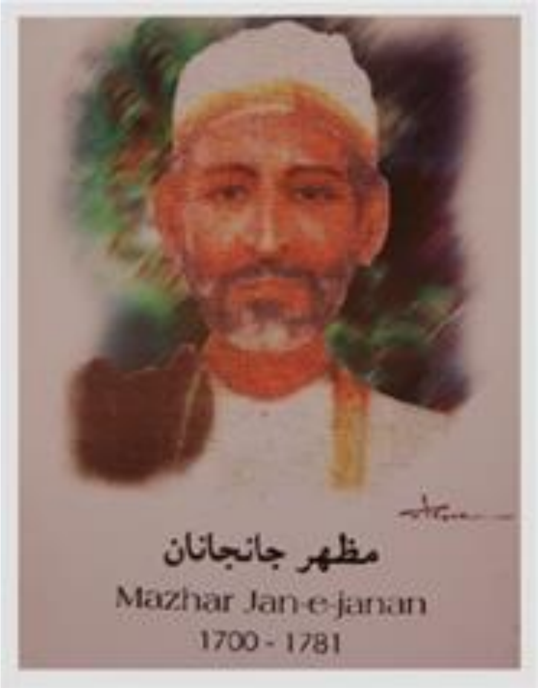

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जानजाना (रहम०) का शुभ जन्म तारीख ग्यारहवीं रमज़ान 1111 हिजरी जुमा (शुक्रवार) के दिन हुआ था। आपके पूज्य पिताजी हज़रत मिर्ज़ा जान सम्राट औरंगज़ेब के शासन काल में एक पदाधिकारी थे। आपको संसार से अत्यधिक विरक्ति थी। उन्होने अपने सुपुत्र के जन्म के कुछ समय पूर्व ही अपने पद से त्याग पत्र दे दिया ओर अपने निवास स्थान आगरे के लिये प्रस्थान किया। जब वे मालवा प्रान्त की सीमा पर पहुँचे तो हज़रत मज़हर जानजाना (रहम०) का जन्म वहीं पर काला बाग नामक स्थान पर हुआ। उस समय सम्राट औरंगज़ेब दक्षिण में विजय-यात्रा पर गया हुआ था और वहाँ के शासन प्रबन्ध में संलग्न था। जब उसे हज़रत मिर्ज़ा मज़हर (रहम०) के जन्म का शुभ समाचार मिला तब वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने आपका नाम जान-जान रक्खा कि बेटा बाप की जान हुआ करता है (आपके

पूज्य पिताजी का नाम मिरजा जान था इसीलिये औरंगज़ेब ने आपका नाम जान-जान रक्खा)। धीरे-धीरे लोग आपको जान-जाना के नाम से सम्बोधित करने लगे। आप आगे चलकर अपनी युवा अवस्था में एक अच्छे कवि हुये और कविता में आपका उपनाम 'मज़हर' था, इसी लिये आप 'मिरजा मज़हर जान-जाना' के नाम से प्रसिद्ध हैं। हाजी मुहम्मद अफज़ल ने आप को 'शम्सुद्दीन हबीबुल्लाह' की पदवी से भी सुशोभित किया था अतः आपके नाम के साथ यह पदवी भी लिखी जाती है।

आप जन्म से ही बड़े प्रेमी स्वभाव के थे। आप फ़रमाया करते थे कि मुझको याद है कि मेरी छै माह की उम्र थी। एक हसीन (सुन्दर) औरत ने मुझको दाया की गोद से अपनी गोद में ले लिया। उसके सौंदर्य को देखते ही मेरा दिल हाथ से जाता रहा और उसके साथ मुहब्बत पैदा हो गई। उसको बिना देखे चैन नहीं आती थी और उसकी प्रतीक्षा में रोया करता था। पाँच साल की उम्र में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि लड़का आशिक मिजाज (प्रेमी स्वभाव का) है।

बाल्यावस्था से ही मज़हर के पूज्य पिताजी ने उनको अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिये विशेष प्रबन्ध किया और आप स्वयं भी उनको पढ़ाया करते थे। यद्यपि हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) का बाल्यकाल ही था परन्तु आपके पूज्य पिताजी प्रत्येक विषय को निर्धारित समय पर पढ़ने के लिये विशेष जोर देते थे। उनका कहना था कि इस बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ के कामों में नष्ट नहीं करना चाहिये। अतः मज़हर को दरबार सम्बन्धी शिष्टाचार, सैनिक शास्त्र, कला, विज्ञान, और उद्योग धन्धों की शिक्षा भी दी गई थी। वे कहा करते थे, 'यदि तुमने एक सामन्त का जीवन ग्रहण किया तो उस समय तुम को कलाकारों के गुणों को जानने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। इसके विपरीत यदि तुमने मेरी तरह सन्यास और संसार से वैराग्य धारण किया तो उस स्थिति में भी तुम को कलाकारों और उद्योगियों की आवश्यकता नहीं होगी।' इस प्रकार हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) प्रत्येक शास्त्र एवं कला के मर्मज्ञ विद्वान हो गये। प्रत्येक व्यवसाय के उद्योगी उनसे शिक्षा ग्रहण करते थे और जो व्यवसायी उनसे एक बार भेंट कर लेता उनको अपना गुरु मानने लगता था।

शाह गुलाम के कथनानुसार हज़रत मिरजा मज़हर जान जाना (रहम०) शस्त्र विद्या

में इतने कुशल थे कि यदि बीस तलवार चलाने वाले एक ही समय में उन पर आक्रमण करें और उनके पास केवल एक लाठी ही हो तो भी ईश्वर इच्छा से उनमें से कोई भी उनको आहत नहीं कर सकता था। एक बार आप एक अन्धकार पूर्ण स्थान पर संध्या की नमाज पढ़ रहे थे। एक व्यक्ति ने अकस्मात आकर आप पर तलवार का वार किया। आपने तत्क्षण उस व्यक्ति के हाथ से तलवार छीन ली और फिर उसे दे दी कि वह पुन: वार करे। इस प्रकार सात बार आपने उसके हाथ से तलवार छीनी और पुन: उसको दे दी। परन्तु आपको घायल न कर सका। अन्त में वह लज्जित होकर क्षमा याचना करके चला गया। फ़रमाया कि एक मरतबा एक मस्त हाथी रास्ते में आ रहा था और मैं सामने से घोड़े पर सवार जा रहा था। फीलवान ने शोर मचाया कि हट जाओ। मुझको ख्याल आया जानवर के सामने से भागना बड़ी नामर्दी है। इतने ही में हाथी ने मुझे सूँड़ में लपेट लिया। उसी वक्त मैंने खंजर निकाल कर उसके सूँड़ में मारा। हाथी ने चीख मार कर मुझको छोड़ दिया।

सोलह वर्ष की आपकी आयु थी कि आपके पूज्य पिताजी का शरीरान्त हो गया। पूज्य पिताजी के शरीरान्त के पश्चात आपके शुभ चिंतक दो वर्षों तक इसी कोशिश में रहे कि आपको मौरूसी मनसब (पद) शाही दरबार में मिल जाये। अतः एक रोज फर्रुखसियर बादशाह से मिलने के लिये गये। बादशाह को उस रोज जुकाम था, अतः वह दरबार में नहीं आया। इस कारण से उससे आपकी मुलाकात उस दिन न हो सकी। उसी रात को आपने ख्वाब में देखा कि एक बुजुर्ग ने मजार से निकल कर अपनी कुलाह (टोपी) आपके सर पर रख दी। शायद कि वह बुजुर्ग हज़रत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (रहम०) थे। इस ख्वाब के देखने से मौरूसी मनसब (पद) के प्राप्ति की इच्छा आपके दिल से जाती रही और बुजुर्गों (सतगुरुजनों) से मिलने का शौक दिल में पैदा हो गया और जिस जगह किसी समर्थ सन्त के बारे में सुनते उनके दर्शनों के लिये हाजिर होते। अतः शेख़ वली मुल्लाह चिश्ती (रहम०) और मीर हाशिम जालेसरी व शाह मजफर क़ादरी की खिदमत में हाजिर हुये। आप फ़रमाते थे जिस वक्त मैं शाह मजफर क़ादरी (रहम०) से मिलने गया, वहाँ किसी ने शाह मजफर (रहम०) से दरियाफ्त किया कि क्या इस वक्त भी औताद व अब्दाल (ईश्वर के परम भक्त और पूर्ण समर्थ सन्त) होंगे। उन्होने फ़रमाया कि कोई जमाना (युग) सन्तों और

महात्मा से खाली नहीं रहता और जिसको औताद व अब्दाल देखना हो, मेरी तरफ इशारा करके कहा कि इस जवान को देखे। यह उन्होने अपने नूरे फरासत (आत्मिक शक्ति के प्रकाश) से मालूम किया, अन्यथा उस वक्त मैंने कोई आध्यात्मिक साधना पद्धति ग्रहण नहीं की थी।

एक रोज आपके मकान पर किसी ख़ुशी में आपके दोस्तों व शुभचिंतकों की भीड़ इकट्ठा थी और उनकी खातिरदारी के लिये सभी सामान वगैरह तैयार था कि इसी समय किसी शख्स ने हज़रत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) की विशेषताओं और सदगुणी का जिक्र किया। यह सुनते ही आप उनसे मिलने के लिये बेचैन हो गये और उस जलसे में उपस्थित लोगों के मना करने पर भी आप उसी दम सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) के दर्शनों के लिये गये। चूँकि मकान पर तमाम दोस्तों और मिलने वालों को छोड़ गये थे, अतः हज़रत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) की सेवा में थोड़ी ही देर बैठ कर चाहा कि जल्द वहाँ से उठे और अर्ज किया कि इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) फिर किसी वक्त हाजिर हूँगा। यद्यपि जब कोई शख्स हज़रत सैय्यद (रहम०) की खिदमत में हाजिर होता, तो पहिले उसकी लगन, पात्रता, व क्षमता का पता लगाते और इस्तिख़ारा के ज़रिये इस वात की पुष्टि कर लेते कि उस शख्स को रूहानियत की तालीम देना मुनासिब है या नहीं, तब कही उस जिज्ञासु को नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति के अनुसार ईश्वर की अराधना और नाम-जप आदि का तरीका बतलाते। मगर आपने मिरजा मज़हर जान जाना (रहम०) से उस समय बिना उनके निवेदन किये ही फ़रमाया कि आँखें बन्द करके कल्ब की तरफ मुतवज्जेह हो जाओ और खुद तवज्जोह देना शुरू की, चुनाँचे उसी तवज्जोह में अन्दर के सभी षट् चक्र जागृत हो गये और इसके बाद उनको बिदा किया। अगले दिन हज़रत मिरजा जान जाना (रहम०) ने हज़रत सैय्यद (रहम०) की खिदमत में जाने का इरादा किया और अपनी आदत के अनुसार चलते वक्त अपनी सूरत आइना में देखी तो हज़रत सैय्यद (रहम०) की सूरत पाई। इससे मुहब्बत और अकीदा (विश्वास) और ज्यादा हो गया। थोड़ी ही मुद्दत में इस सिलसिले की साधना पद्धति की अनुभूतियों से बातिन (अन्तःकरण) व्याप्त हो गया। चार साल तक आपने इनकी खिदमत में इस्तफादा किया (लाभान्वित हुये) और समर्थ संत की स्थिति को पहुँच गये। उस वक्त

हज़रत सैय्यद (रहम०) ने आपको इजाजत तरीका मय तबर्रुक पैरहन अता फ़रमायी (निर्धारित शिष्टाचार के अनुसार अपना एक वस्त्र प्रदान करते हुये आपको सतगुरु के अधिकार दिये) और अपने सिलसिले के सतगुरुजनों तथा सुन्नत के अनुकरण करने वालों पर विश्वास व श्रद्धा रखते हुये उनकी सेवा करने तथा धर्म में नई बातों व नई रस्मों से दूर रहने की वसीयत फ़रमायी। उसके बाद हज़रत सैयद (रहम०) का शरीरान्त हो गया।

शरीरान्त के पश्चात हज़रत सैयद (रहम०) ने हज़रत मिरजा (रहम०) से ख्वाब में फ़रमाया कि कमालात इलाही (ईश्वरीय गुण व विशेषताएँ) अत्यधिक हैं। उनके हासिल करने के लिये पूर्ण समर्थ सन्तों का सत्संग करना चाहिये। अतः अपने सतगुरु देव के इस आदेश के अनुपालन में उन्होने उस जमाने के सन्तों की सोहबत की ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया और हज़रत शेख़ गुलशन (कु० सि०), हज़रत ख्वाजा मुहम्मद जुबैर (रहम०), हज़रत हाजी मुहम्मद अफ्जल (रहम०), हज़रत हाफ़िज़ सैय्यद उल्लाह (रहम०) व हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) की सोहबतें अख्तियार की (इन सन्तों के सत्संग में रहे।) इन सभी बुजुर्गों में से हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) की सोहबत से आपको विशेष लाभ पहुँचा। आप फ़रमाते थे कि हज़रत शेख़ मुहम्मद (रहम०) के सत्संगियों में जो ख़ुसूसियत (विशेषता) मुझको मिली थी वह किसी को न मिली।

कहा जाता है कि एक रोज हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) ने फ़रमाया कि आज रात को अल्लाह तआला ने ऐसे कमालात जदीद (नवीन विशेषतायें) अता फ़रमाये (प्रदान किये) कि उनके सामने पिछले सभी कमालात कुछ न थे। हज़रत मिरजा मज़हर जान जाना (रहम०) ने उनसे अर्ज किया 'उस वक्त काफी रात बाकी थी और उस समय आपकी कृपा और आशीर्वाद से मुझ पर भी अजीब हालतें गुजरी और विचित्र इस्रार (भेद, रहस्य) अनुभव में आये थे।' हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) ने फ़रमाया कि तुम ठीक कहते हो, खुदा ने तुम को हमारा जिम्नी (अंशी, समान अन्तःकरण वाला) बनाया है, अतः जो कुछ मुझे आध्यात्मिक उपहार व चमत्कार मिलते है उनमें से तुम को भी हिस्सा मिलता है।

आपने फ़रमाया कि एक रोज हज़रत मुहम्मद आबिद (रहम०) से मैंने क़ादरिया

खानदान की इजाजत के वास्ते अर्ज किया। उन्होंने फ़रमाया कि आओ तुम को इस खानदान की इजाजत से जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) से सरफ़राज़ (सम्मानित) करायें। अत खुद भी जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) की तरफ मुतवज्जेह होकर बैठ गये और मुझको भी मुतवज्जेह होने को फ़रमाया। क्या देखता हूँ कि हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) अपने असहाब व कई पुराने बुजुर्गों (सन्तों) के साथ एक अत्यन्त सुसज्जित एवं आलीशान दरबार में पदासीन हैं और वहीं हज़रत गौसुल सकलीन (हज़रत सैय्यद अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) एक अत्यन्त प्रकाशवान स्थिति में खड़े हैं। हज़रत मुहम्मद आबिद (रहम०) ने जा कर जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) से अज किया कि मिरजा जान जाना खानदान क़ादरिया की इजाजत के आकांक्षी है। फ़रमाया कि इस मामले में सैय्यद अब्दुल कादिर रहम० से कहो। चुनाँचे उनसे अर्ज किया। उन्होंने हज़रत मुहम्मद आबिद (रहम०) के निवेदन को स्वीकार किया और मुझे एक खिरका (वस्त्र) प्रदान करते हुये क़ादरिया खानदान की इजाजत से सम्मानित किया। उसी क्षण मुझे क़ादरिया सिलसिले की आध्यात्मिक अनुभूतियों और इस सिलसिले की साधना सम्बन्धों विभिन्न विशेषताओं का दिल में बखूबी एहसास हुआ। आगे चलकर हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) ने मुझको सुहरवर्दिया और चिश्तिया खानदान की भी इजाजतें प्रदान की।

फ़रमाया कि एक रोज हज़रत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) ने मेरी जूतियाँ सीधी करके रक्खी और फ़रमाया कि तुम को अल्लाह तआला की जनाब में कुबूलियत तमाम है (ईश्वर की ड्योढ़ी अर्थात दरबार में तुम बहुत प्यारे हो)। हाजी मुहम्मद अफज़ल (रहम०) मेरी ताज़ीम (सम्मान) के लिये सीधे खड़े हो जाया करते थे और फ़रमाया करते थे कि तुम्हारे कमालात की ताज़ीम करता हूँ। हज़रत हाफ़िज़ सैयदुल्लाह साहब मेरा बहुत आदर करते ओर फ़रमाया करते कि तुम मेरे किब्ला गाह की जगह हो (तुम मेरे लिये अत्यन्त सम्मानित और मान्य हो)। फ़रमाया कि एक मरतबा मुजद्दिदी साहबज़ादा (हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहम० के परिवार की एक सन्तान) सरहिन्द को हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहम० की मज़ार शरीफ़ की जियारत (दर्शन) के लिये जा रहे थे। उनके ज़रिये मैंने अपना अस्सलाम हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) को भेजा। जब उन्होंने मज़ार पहुँच कर मेरा अस्सलाम

कहा, हज़रत मुजद्दिद (रहम०) ने सीना तक अपना सर मुबारक उठा दिया और फ़रमाया 'कौन ? मिरजा !' फिर फ़रमाया कि वह हमारा शेफ्ता (आशिक, प्रेमी) और दीवाना है। यह कहते हुये आपने मेरा अस्सलाम स्वीकार किया और मुझे बहुत-बहुत आशीर्वाद दिया। वह मुजद्दिद साहबज़ादा जब सरहिन्द से लौटे तो मुझ से बहुत ही अपना आभार प्रकट किया और फ़रमाया कि तुम्हारी वजह से मुझको जियारत (दर्शन) नसीब हो गई और इस घटना के बाद वह मेरी बहुत ताज़ीम (आदर) करने लगे।

हज़रत मिरजा जान जाना (रहम०) ने हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०) की सेवा में सात वर्षों तक रहकर साधना की उच्चतम स्थिति को प्राप्त किया। हज़रत शेख़ मुहम्मद (रहम०) का 1660 हिजरी में स्वर्गवास हो गया। उनके पश्चात हज़रत मिरजा मज़हर (रहम०) ने नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया सिलसिले के प्रसार एवं प्रचार का कार्य स्वयं आरम्भ किया और आपकी अध्यक्षता में यह सिलसिला अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया और इसी लिये यह सिलसिला 'नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया मज़हरिया' के नाम से पुकारा जाने लगा। आपने 35 वर्ष इस सिलसिले की सेवा करके इसमें नवीन जीवन तथा प्रकाश का संचार किया। कोई दिन ऐसा नहीं होता था कि जिस दिन कम से कम सौ ईश्वर भक्त मज़हर (रहम०) की खानकाह (आश्रम) में न आते हों। शेख़ अब्दुल अदल जुबैरी कहा करते थे कि जितने ईश्वर भक्त मज़हर (रहम०) की सेवा में उपस्थित होते हैं उतने अन्य किसी सूफी संत की सेवा में नहीं हैं। आप अपने समय में हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के नायब हैं। आपकी ख्याति सुन कर सुदूरवर्ती क्षेत्रों से लोग आपकी खानकाह की ओर भागे चले आते थे। उस युग के सूफी और शेख़ उनसे लाभान्वित होते थे। धर्म शास्त्र वक्ता और सदाचार परायण व्यक्ति आपकी खानकाह में एकत्र होते थे और ईश्वर भक्ति के सिद्धान्तों का अध्ययन करते थे। हज़ारों व्यक्तियों ने आपसे दीक्षा ली थी अरि आपके लगभग दो सौ खलीफ़ा हर समय लोक कल्याण में लगे रहते थे।

इन खलीफ़ाओं में से अत्यन्त प्रसिद्ध बाईस खलीफ़ाओं का अत्यन्त संक्षिप्त विवरण 'सूफी सन्त मिर्ज़ा मज़हर जान जाना (रहम०)' नामक ग्रन्थ में दिया गया है। इनमें से हज़रत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०) हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जान

जाना (रहम०) के सर्वश्रेष्ठ खलीफ़ा थे। इनका पवित्र जीवन चरित्र अगले अध्याय में दिया गया है।

हिन्दू धर्म के प्रति आपकी विचार धारा

हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि अधिकांश मुसलमान हिन्दुओं को इस कारण काफ़िर (एक ईश्वर पर विश्वास न करने वाला, नास्तिक कहते हैं क्यों कि हिन्दू मूर्ति पूजक होते हैं। हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) ने मुसलमानों के हिन्दुओं के प्रति इस दृष्टिकोण का कठोर शब्दों में खण्डन किया और तर्क पूर्वक यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि हिन्दुओं को किसी दृष्टिकोण से काफ़िर नहीं कहा जा सकता। आप द्वारा उल्लिखित कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं जिससे कि आपका हिन्दुओं के प्रति उदार दृष्टिकोण का पता चलता है -

'इन हिन्दुओं के धर्म के नियम और सिद्धान्त बड़े उत्तम हैं जिससे ज्ञात होता है कि यह धर्म नियमित रूप से प्रवर्तित हुआ था। परन्तु तत्पश्चात निरस्त हो गया। हमारी शरीअत में यहूदी और ईसाई लोगों की धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म ग्रन्थों का उल्लेख नहीं पाया जाता है, यद्यपि इनके अतिरिक्त अनेक धर्म निरस्त हो चुके हैं और अनेक धर्मों का अस्तित्व पूर्ण रूप से संसार से लुप्त हो गया है। परन्तु यह बात ध्यान में रहे कि कुरान के अनुसार "प्रत्येक धर्म-सम्प्रदाय देवदूत की परम्परा से अस्तित्व में है" अर्थात् 'प्रत्येक मानव जाति का अपना एक रसूल होता है।" इस भारत की भूमि पर भी नबी और रसूल (अवतार) भेजे गये हैं, जिनका उल्लेख उनके धर्म ग्रन्थों में मिलता है। उस उल्लेख से ज्ञात होता है कि वे उच्च कोटि के व्यक्ति थे। भगवान ने अपनी असीम दया कृपा से इस भूमि के निवासियों को कभी वंचित नहीं किया।

"इसी प्रकार कुरान की दूसरी एक आयत के अनुसार अर्थात "इनमें से कुछ (देव दूतों) का विवरण तुम्हारे सम्मुख उपस्थित किया गया और कुछ का नहीं"। जब हमारी शरीअत बहुत से देव दूतों के सम्बन्ध में मौन है तो हमको भी भारतीय देव दूतों के बारे में मौन धारण करना उचित है। परन्तु यदि साम्प्रदायिक द्वेष न हो तो उनके प्रति उच्च एवं उदार विचार रखना चाहिये। उनके मूर्ति पूजन का रहस्य यह है कि कुछ

देवदूत जो भगवान की आज्ञानुसार संसार में अपना कुछ प्रभाव रखते हैं अथवा कुछ महापुरुषों की आत्माएँ, जिनका प्रभुत्व मानव जीवन में घुल मिल गया है अथवा कुछ ऐसे ऋषि-मुनि जो खिज्र नामक ईश्वरीय दूत के समान अमर हैं इनकी मूर्तियाँ या चित्र बनाकर उनकी ओर आकर्षित होते हैं और इस प्रकार उपास्य से अपना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं और उन्हीं को अपना इष्ट देव मानते हैं। इनका यह कर्म 'जिक्र-राब्ता' के अनुकूल है, जो मुसलमान सूफियों में 'तसव्वुरे शेख' के नाम से सामान्य रूप से प्रचलित है, जिसमें अपने गुरुदेव की आकृति का ध्यान किया जाता है और भगवान की ही अनुकम्पा प्राप्त की जाती है। केवल अन्तर इतना ही है कि सूफी लोग अपने गुरु का चित्र नहीं बनाते। हिन्दू इन देवताओं को परमात्मा अथवा संसार का भगवान नहीं मानते। हिन्दुओं का इन देवताओं की मूर्तियों के आगे माथा टेकने का अर्थ यह नहीं कि वे उस मूर्ति को परमात्मा मानते हैं, अपितु सम्मान और आदर हेतु, जिस प्रकार वे अपने शिष्टाचार के अनुकूल माता-पिता और गुरु के सामने माथा टेकते हैं जिसको वे 'दण्डवत' कहते हैं और आवागमन पर विश्वास रखने पर उन्हें काफ़िर नहीं कहा जा सकता।"

हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) की हत्या

Some portion deleted.

मुहर्रम की सातवीं तारीख को मज़हर (रहम०) अपने मकान के छज्जे पर विराजमान थे। एक रोहेला सरदार, जो शिया था, उनसे भेंट करने आया था। अकस्मात उनके छज्जे के नीचे से शुद्दे (झंडे) निकले। उस रोहेला सरदार ने हज़रत हसन और हुसैन के शोक में अपनी छाती पीटी और नत मस्तक हुआ। हज़रत मज़हर (रहम०) जिस शान से विराजमान थे उसी प्रकार बैठे रहे और मुस्कुरा कर बोले "जिस घटना को घटित हुये 1200 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, उसको हर वर्ष तीव्र करना निषिद्ध है और लकड़ियों को पूजना और उनके समक्ष नतमस्तक होना मूर्खता है।" इस कथन को उन लोगों ने सुना जो शुद्दे और अलम (झंडे) लेकर जा रहे थे। हज़रत मज़हर (रहम०) के इस कथन पर शिया लोगों ने दो तीन दिनों तक वाद-विवाद किया। अन्त में मुहर्रम की दसवीं तारीख को एक शिया उनके निवास-स्थान पर आया और उनको

बाहर बुलाया। द्वारपालों ने कुछ लोगों के आने की सूचना हज़रत मज़हर (रहम०) को दी। आपने उनको भीतर बुला लिया। तीन व्यक्ति भीतर गये। उनमें से एक आदमी ईरानी मुग़ल था। हज़रत मज़हर (रहम०) विश्रामालय से आकर उनके सामने खड़े हो गये। उस मुग़ल ने पूछा, "आप ही मिरजा मज़हर जान जाना हैं ?" अन्य दो व्यक्तियों ने उत्तर में कहा "हाँ, यही मिरजा जान जाना हैं।" उस अभागे ने आप पर तमंचों से गोली मारी जो उनके हृदय के निकट दाईं ओर लगी। चूँकि आप वृद्ध और कमजोर थे, गोली लगते ही जमीन पर गिर पड़े। इस घटना का समाचार बिजली की भाँति नगर में फैल गया। वैद्य आये। दूसरे दिन प्रात: काल नवाब नज़फ खाँ ने एक अंग्रेज डाक्टर भेजा परन्तु औषधियों से कोई लाभ नहीं हुआ। तीसरे दिन जुमे के दिन दशम मुहर्रम, 1195 हिजरी को मग़रिब की नमाज के समय उन्होने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।" शरीरान्त के पूर्व सम्राट शाह आलम को जब आपके घायल होने का समाचार मिला तो उसने बड़ा खेद प्रकट किया और आपको संदेश भेजा कि हत्यारे की खोज हो रही है, मिल जाने पर उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा। आपने उत्तर भेजा कि 'शरीअत में यह लिखा है कि यदि कोई जीवित व्यक्ति की हत्या करे तो उससे बदला लेना चाहिये, पर मुझ जैसे व्यक्ति को मारने वाले से बदला क्या होगा? क्योंकि मेरी गणना तो बहुत समय से मरे हुओ में है। यदि अपराधी पकड़ा जाये तो उसको मेरे पास भेज दिया जाये ताकि मैं उसको धन्यवाद दूँ और क्षमा कर दूँ।

आपके जनाज़े (अर्थी) को हज़रत बीबी साहेबा की हवेली में दफनाया गया। आज वह स्थान 'चितली कबर' के नाम से प्रसिद्ध है।

वसीयत नामा

हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) पूर्ण रूप से सावधान थे। उस जमाने की जैसी प्रथा थी कि शेख़ (गुरुदेव) के देहावसान के पश्चात उनके मुरीद उनकी अन्त्येष्टि बड़े धूम धाम से करते थे और उनकी समाधि पर उर्स (भंडारे) का उत्सव मनाते थे, इसलिये उन्होंने मरते समय अपने शिष्यों के लिये यह सन्देश छोड़ा -

(1) उनकी अन्त्येष्टि में पूर्ण रूप से सुन्नत का पालन हो।

(1) उनकी समाधि पर उर्स का उत्सव न मनाया जाये, क्योंकि मज़हर (रहम०) ने

अपने जीवन काल में इन प्रथाओं का कठोरता से विरोध एवं खंडन किया था।

(3) आजीवन सुन्नत का पालन करें। परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य जीवित अथवा मृत व्यक्ति के आगे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हाथ न पसारें। सूफी सन्तों के सिद्धान्तों का पालन करें। सांसारिक व्यक्तियों से पृथक रहें।

(4) अन्त में उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव अध्यात्म ज्ञान तथा धर्म-साधना में लीन रहना चाहिये।

मुस्लिम जनता को मज़हर (रहम०) का अंतिम सन्देश-मृत्यु के समय मज़हर (रहम०) को सबसे बड़ी चिंता यह थी 'कि मुस्लिम समुदाय, जो हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) द्वारा दिखाये गये मार्ग से विचलित हो गया था, उसे पुनः उसी मार्ग पर कैसे लाया जाये ? अतः उन्होंने तत्कालीन मुसलमानों को सम्बोधित करते हुये कहा - "हे मुसलमानों, अपने जीवन को हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के कथनानुसार रंग लो, पवित्र जीवन बिताओ और निषिद्ध कार्यों से अपने आप को बचाओ। सांसारिक सामग्रियों के संग्रह से विमुख रहो और जहाँ कहीं भी हो यह समझो कि भगवान तुम्हारा साक्षी एवं आश्रय दाता है। मशायख़ (सतगुरु जनों) की टोह में रहो और उन पर पर्वत के समान अचल श्रद्धा और विश्वास रक्खो। निस्पृहता से जीवन निर्वाह करो और किसी के सामने भिखारी की तरह हाथ न फैलाओ।" (हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) का यह सन्देश केवल मुसलमानों के लिये ही नहीं वरन् सभी धर्मों एव सम्प्रदायों के अनुयायिओं के लिये उपयोगी तथा प्रेरणादायक है)।

हज़रत मज़हर (रहम०) की आदतें, स्वभाव एवं सदगुण

आप वुज़ू बड़ी सावधानी एव नियमानुसार करते थे और निर्धारित शरीर के अंगों को भली भाँति धोते थे। वुज़ू के बारे में आप इतने सचेत थे कि अपने मुरीदों को हर समय वुज़ू से रहने के लिये बाध्य करते थे तथा विशेष रूप से भोजन करते समय और सोने के लिये जाते समय। वह फ़रमाते थे कि जिस समय वुज़ू भंग हो जाय, उसी क्षण शीघ्रता से पुनः वुज़ू करना चाहिये। पाँच समय (प्रातः, मध्याह्न, तीसरे पहर, संध्या और रात्रि) की नमाजों को नियमित समय पर जमाअत के साथ पढ़ते थे। तहज्जुद की नमाज के लिये आप आधी रात को या उससे थोड़ी देर बाद को सो कर उठ बैठते

थे। कुछ दुआएँ पढ़ कर वुज़ू करते और तत्पश्चात दो रकअत नमाज क्षमा याचना के रूप में पढ़ते थे। इसके बाद दस रकअत नमाज उच्च स्वर से बड़ी आयतों के साथ पढ़ते थे। तत्पश्चात शिष्यों को भक्ति मार्ग की शिक्षाएँ देते थे। यदि काफी रात बाकी होती तो थोड़ा सा विश्राम करते। प्रातःकाल की नमाज से पहले उठ कर वुज़ू करते और जमाअत के साथ नमाज पढ़ते। उसके बाद अपने शिष्यों के साथ मराकबा में बैठते। यह कार्यक्रम 4 घड़ी दिन तक नियमित रूप से चलता रहता था।

आप बाल्यावस्था से ही सुन्नत का कठोरता से पालन करने लगे थे। आप स्वयं फ़रमाते हैं कि 'एक दिन मेरे पूज्य पिताजी मुझे अपने दीक्षा गुरु के दर्शन को ले गये। उस दिन अकस्मात उनके गुरुदेव की उनके संगीत-जन्य उन्माद के कारण अस्र और मग़रिब की नमाज छूट गई थी। मैंने अपने पिताजी के गुरुदेव को इस दशा में देखकर अपने मन में कहा कि यदि मेरे पिताजी मुझसे इन्हें गुरु बनाने को कहते तो मैं उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता।'

एक अवसर पर आपने अपने गुरुदेव हज़रत नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०) के जूते अपने हाथों से सीधे रख दिये। जब उनके गुरुदेव को यह बात मालूम हुई तो वह बड़े अप्रसन्न हुये। आपने सविनय उत्तर दिया, "मैंने इसमें क्या बुरा किया ? यह तो सुन्नत के अनुकूल है। हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के भक्त भी तो ऐसा ही करते थे।

आपके उच्च आदर्श आचरणों के कारण उस युग के सभी लोग उनका दिल से आदर एवं सम्मान करते थे। कहा जाता है कि हज़रत शेख़ मुहम्मद आबिद (रहम०), जिनका जिक्र ऊपर आ चुका है, एक अवसर पर आपके घुटने को चूम कर बोले, 'मुझे ऐसा अनुभव होता है कि इस समय दो सूर्य (महान भक्त) एक दूसरे के आमने सामने विराजमान हैं और मुझे तुम में और अपने में कोई भेद दृष्टिगत नहीं होता।' शाह वली उल्लाह देहलवी (रहम०), जो पुस्तकीय ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान के भंडार थे, आपके लिये अपने पत्रों में उच्च उपाधियों का प्रयोग करते थे। एक अवसर पर उन्होने कहा था 'मज़हर (रहम०) के समान कोई अन्य व्यक्ति संसार भर में उपलब्ध नहीं है।'

आपके स्वभाव में सहनशीलता और क्षमाशीलता पूर्ण रूप से व्याप्त थी। इससे बढ़कर क्षमाशील प्रकृति का उदाहरण और क्या हो सकता है कि उन्होंने अन्त में

अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया।

आप सत्य भाषी, विनम्र और स्नेही स्वभाव के थे। आप अपने शिष्यों और प्रशंसकों के लिये उत्तम गुणों के आदर्श थे। आपका निजी जीवन सामान्य मनुष्यों के ही समान था। सर्व- साधारण की तरह आप पगड़ी बाँधते थे। आपकी कमीज सामने से फटी होती थी।

आपका सर्वोत्तम गुण जो अनेक भक्तों को आपकी ओर आकृष्ट करता था वह था - घृणा तथा वर्ग भेद का अभाव। अतएव आपकी सेवा में प्रत्येक वर्ग के लोग अपनी समस्याओं को लेकर उपस्थित होते थे और आप उनको हर प्रकार से सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते थे। आप शिक्षित एवं विद्वानों का अच्छा सम्मान करते थे। आप अपने तवक्कुल ईश्वर पर भरोसा एवं आत्म-संयम के गुणों में अद्वितीय थे। कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद शाह बादशाह ने अपने प्रधान मंत्री कमरुद्दीन खाँ के द्वारा, मज़हर को सन्देश भेजा कि, "भगवान ने अपनी असीम कृपा से मुझे भारतवर्ष का राज-पाट दिया है। आपकी जो कुछ मनोकामना एवं इच्छा हो, इस राज्य से तुच्छ भेंट के रूप में स्वीकार कर लीजिये।" आपने उत्तर में कहला भेजा, "कुरान के लेखानुसार उस भगवान के ऐश्वर्य के सामने सातों महाद्वीपों की धन-राशि भी अपर्याप्त है जबकि तुम्हारे पास केवल हिन्दुस्तान ही का धन है। तुम्हारे पास क्या है जो तुम इस फकीर को भेंट करना चाहते हो।" कहा जाता है कि एक सामन्त ने आपके निवास-भवन, और खानकाह निर्माण कराने को अनुमति माँगी। आपने उसकी इस प्रार्थना को ठुकरा दिया और फ़रमाया कि ऐहिक जीवन बिताने के लिये अपने और पराये के मकान में क्या भेद एवं अन्तर है ? फकीरों के लिये धैर्य एवं निरीहता ही परमावश्यक गुण है।

एक दिन जाड़े के दिनों में आप एक पुरानी चादर ओढ़े हुये एक सभा में विराजमान थे। संयोग से उस सभा में नवाब फीरोज जंग, जो अपने समय का एक प्रतिभाशाली एवं शक्तिशाली सामन्त था, उपस्थित था। आपकी उस दरिद्रता को देखकर उसके नेत्रों में आँसू भर आये। उसने अपने एक साथी से कहा, "हम पापी कितने अभागे हैं कि इतना महान सन्त जिसके प्रति हमें श्रद्धा एवं अनुराग है, हमारी भेंटों को भी स्वीकार नहीं करता।' आपने उस वार्तालाप को सुन कर उत्तर दिया, "मैंने यह संकल्प कर लिया है कि अमीरों (सामन्तों) के उपहारों को स्वीकार नहीं करुंगा।"

एक मरतबा नवाब निजामुल्मुल्क आसिफजाह ने तीस हजार रुपये भेंट के रूप में आपकी सेवा में भेजे। आपने अस्वीकार कर दिये। तब उसने दुबारा उन रुपयों को आपकी सेवा में भेजते हुये आपसे निवेदन किया कि 'आप कृपया इसे जरूरतमन्द लोगों में वितरित करा दें'। आपने कहला भेजा 'मैं तुम्हारा ख़ानसामा तो हूँ नहीं कि इस धन को जरूरतमन्द लोगों में बाँटता फिरूँ। तुम ही इस द्रव्य को भगवन्मार्ग में लगे व्यक्तियों की आवश्यकता-पूर्ति के लिये बाँट दो।'

इसी प्रकार एक अफ़गान सरदार ने 300 अशरफीयाँ भेजी और एक सामन्त ने आम भेजे, परन्तु आपने इन भेंटों को स्वीकार नहीं किया। इन भेंटों के स्वीकार न करने के कारणों पर आप स्वयं प्रकाश डालते हैं। वे कहा करते थे कि सामन्त गण प्रजा पर अत्याचार करके उनसे बलपूर्वक धन छीनते हैं। यदि उनके इस अपवित्र धन को स्वीकार किया जाता है तो प्रलय के दिन भगवान के समक्ष इसका उत्तर देना होगा और उसके कोप का भाजन बनना पड़ेगा। ऐसे धन का प्रयोग करने से सूफियों का हृदय मलिन और अन्धकार मय हो जाता है। यही नहीं कि आप धनवानों और सामन्तों की भेंटों को स्वीकार नहीं करते थे, बल्कि आप निर्धनों तथा साधारण व्यक्तियों की भेंटों को भी अस्वीकार कर देते थे। आपका विचार था कि वे लोग ब्याज पर रुपया लेकर भेंट करते थे और सूफी सन्तों के आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिये उन्हें भोजन के लिये आमन्त्रित करते थे। कहा जाता है कि एक अवसर पर एक व्यक्ति ने जो रसायन शास्त्र का वेत्ता था और जिसने नक्शबन्दिया सिलसिले में दीक्षा ली थी, एक तोला सोना बनाकर आपकी सेवा में भेंट किया। परन्तु आपने इस भेंट को स्वीकार नहीं किया।

भेंट स्वीकार करने के सम्बन्ध में आपकी ये शर्तें थीं :- (1) भेंट देने वाला व्यक्ति कुलीन हो। (2) वह सांसारिकता में लिप्त लोगों से मिलता जुलता न हो। (3) वह उपकारी एवं संयमी हो। (4) हराम-हलाल का अन्तर जानता हो। (5) उसका धन अत्याचार द्वारा प्राप्त न हो। (6) वह निर्मल हृदय और भक्ति भाव से भेंट लाया हो।

इस प्रकार हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) ने आजीवन तवक्कुल के उत्तम सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से अनुसरण किया और किसी भी व्यक्ति के सामने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये हाथ नहीं फैलाया। यह सब कुछ इसलिये था कि

हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) का ईश्वर पर अचल एवं अडिग विश्वास था। अतः भगवान आपकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति करता रहता था।

आपकी अमृत वाणी (उपदेश)

फ़रमाया कि इस तरीके में पीरी व मुरीदी केवल बैअत (गुरु दीक्षा), व शिज्रः (गुरु परम्परा की वंशावली) व कुलाह (टोपी) से नहीं है, बल्कि मुरशिद (सतगुरु) की सोहबत में ईश्वर का सतत चिंतन एवं चित्त की एकाग्रता के साथ जिक्र क़ल्बी (हृदय से जप करना) जरूरी है।

फ़रमाया कि मन में कोई दुर्विचार उत्पन्न होने पर सतगुरु देव की सूरत को सामने लाकर अत्यन्त गिड़गिड़ा कर दीनता के साथ ईश्वर से उसे दूर करने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। इज्ज़ व इन्कसार (विनीत भावना एवं दीनता की सिफत पैदा करना चाहिये और खल्क (दुनिया) की ज़फा (अन्याय) व क़जा (इनसाफ़) पर सब्र व तहम्मुल (धैर्य व सहिष्णुता) की आदत डालनी चाहिये।

फ़रमाया कि नजर बन्द रखनी चाहिये। मजाज़ी आमूर दुनियाँ वालों के व्यवहारों) को तकदीर से समझकर चूँ व चरा (वाद-विवाद, कहा सुनी) नहीं करना चाहिये। हज़रत उन्स (रजि०) हज़रत पैगम्बर (सल्ल०) के ख़ादिम (सेवक) थे। अगर किसी काम में उनसे कोई गल्ती हो जाती और घर वाले उनको झिड़कते तो आप फ़रमाते कि उनको कुछ मत कहो, अगर तकदीर से होता तो ऐसा ही होता। फ़रमाया सभी कष्टों को भोगना हज़रत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की विशेषताओं के अनुकूल तहजीब (शिष्टता) एवं एख़लाक (सदाचरण) है। फ़रमाया कि हदीस शरीफ़ में इस बात का उल्लेख है कि 'अगर तुम यह सुनो कि कुहा पहाड़ अपनी जगह से हट गया है तो उसका यकीन कर लो, और अगर यह सुनो कि कोई आदत हैली (जोरदार आदत) से लौट गया है उसका यकीन न करना। हज़रत उमर फारुक (रजि०) फ़रमाया करते थे कि मेरा गुस्सा गया नहीं। पहिले कुफ़्र में सर्फ़ होता था अब हिमायत इस्लाम में जाहिर होता है।

फ़रमाया कि खाने, पीने, सोने, जागने व आराधना व साधना आदि सभी कार्यों में तवस्सुत (मध्य का मार्ग) व एतलाद (संतुलन) बहुत मुश्किल है कि कोशिश करना

चाहिये हर समय हमारे सभी आचरण सुन्नत (हज़रत पैगम्बर सल्ल० द्वारा किये गये कर्मों व आचरणों) के अनुसार ही सम्पादित हों और पैगम्बरों का इत्तबा (अनुसरण) तवस्सुत व एतलाद हाजिर करने के वास्ते होता है (व्यवहारों व कार्यों में मध्य का मार्ग तथा संतुलन प्रकट करने के लिये होता है।)

फ़रमाया कि मुब्दए फैयाज (ईश्वर की ओर उन्मुख करने वाला अर्थात सतगुरु देव) की तरफ हर वक्त मुतवज्जेह रहने से इस क़दर फ़ैज व बरक़ात (बख़्शिशें, उपहार) नाज़िल होती हैं (उतरती हैं) कि बातिन (अन्तःकरण) अनवार कैफियत (आत्मिक अनुभूतियों एवं आनन्द के प्रकाश पुन्जों) से लबरेज होकर (पूर्ण रूप से भर कर) छलकने लगता है। फ़रमाया कि तसव्वुर आमाल पेशे नजर रखना चाहिये (अपने कर्मों पर दृष्टि रखनी चाहिये अर्थात सावधानी पूर्वक यह निरीक्षण करते रहना चाहिये कि हमसे कौन से गुनाह हो रहे हैं और उनके लिये दिली तौबा करते रहना चाहिये) और साबिका इनायत (पिछली दया-कृपाओं) को बेइल्लत देखना चाहिये (जो कुछ भी हम पर ईश्वर और गुरु की कृपाएँ हुई हैं उनको अहेतुकी कृपा समझना चाहिये अर्थात यह विचार दिल में न आना चाहिये कि हमारी किसी साधना, आराधना अथवा सत्कर्मों के फलस्वरूप यह कृपाएँ हम पर हुई हैं)। हरचन्द कि अमल बहुत करे लेकिन सिफत इस्तिगना और किब्रियाई इलाही से खैफ रहना चाहिये (यद्यपि साधना सम्बन्धी चाहे जितने अधिक अभ्यास एवं सत कर्म करे लेकिन परमात्मा की निस्पृहता एवं महानता से डरते रहना चाहिये।) और उच्च तक्सीर (अत्यधिक विवशता) और उम्मीद (ईश्वर की अहेतुकी कृपा पर भरोसा व आशा रखना) व अश्क (अपने गुनाहों के लिये रोते हुये क्षमा माँगते रहना) कुबूलियत का वसीला समझना चाहिये (ईश्वर व गुरु का कृपा पात्र बनने का जरिया अर्थात माध्यम समझना चाहिये)। थोड़े गुनाह को बहुत जाने और थोड़ी नेमत (ईश्वर कृपा से प्राप्त कोई वस्तु, उपहार, या लाभ) को बहुत समझे और शुक्र व रजा को अख्तियार करे (प्रत्येक दशा में ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये और उसकी प्रसन्नता में अपने को प्रसन्न रखना चाहिये। इसी को सूफी मत में 'राज़ी व रज़ा' कहते हैं।

फ़रमाते कि हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) हब्स नफ़स को (सांस रोकने को) जिक्र (जप) के लिये आवश्यक नहीं समझते थे। हाँ, इसे लाभदायक कहते

थे। लेकिन दवामे जिक्र (निरन्तर जप करना) और वकूफ क़ल्बी (हृदय में उत्पन्न होने वाली दशाओं एवं अनुभवों से अवगत रहना) और सतगुरु की ओर ध्यान लगाये रहना इन बातों को रुक्न तरीका (इस सिलसिले की साधना पद्धति का स्तम्भ) समझते थे। फ़रमाया कि मुख़ालिफ़त नफ़्स (मन का विरोध) जिस क़दर हो सके जेबा (उचित) है लेकिन इस क़दर भी नहीं कि नफ़्स तंग आ जाये और इबादत (आराधना) में शौक न रहे। कभी-कभी नफ़्स से मुआफकत भी करना (उसकी इच्छा को पूरा करना) चाहिये कि रज़ाए नफ़्स (मन की प्रसन्नता) मूजिब सवाब पुण्य का कारण होता है। (परन्तु साधक को इस बात से सदैव सावधान रहना चाहिये कि धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों के विरुद्ध कोई काम मन की प्रसन्नता के लिये न करना चाहिये)। फ़रमाया कि स्वादिष्ट भोजन को पानी वगैरह मिलाकर बेमजा (अस्वादिष्ट) करना नियामते इलाही को खाक में मिलाना है, फ़रमाया कि किसी भी व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से न देखे और अपने आपको हर एक से तुच्छ और दीन समझे। आज के कार्य को कल पर न छोड़ना चाहिये। सभी उपदेशों एवं शिक्षाओं का एकमात्र लक्ष्य आचरण सुधार है। राह मौला में किब्र (अपने को श्रेष्ठ समझने की भावना) और गुरूर (घमंड) सर से दूर कर। इसी वजह से कहा गया है कि दरवेशी (साधुता) यह है कि जो कुछ सर में हो वह रख दे (यानी घमंड त्याग दे) और जो सर पर आये उससे कभी भी गुरेज (नफरत, घृणा) न करे अर्थात जो कुछ भी कष्ट या विपत्ति आये उस पर धैर्य धारण करे। कल्ह की चिन्ता से अपने को मुक्त कर। अपनी अच्छी आदतों और ईश-आराधना पर दिल में अहंकार न ला। अपने दुर्गुणों को देखने तथा अपने को अकिंचन समझने की भावना को अपनी सम्पत्ति बना।

आपके क़श्फ व करामात (चमत्कार)

आपके क़श्फ व करामात अत्यधिक हैं। उनमें से कुछ प्रसाद रूप में दिये जा रहे हैं-

एक महिला आपसे अपने मकान पर ग़ायबाना (परोक्ष में) तवज्जेह लेती थी। उसका नियम था कि जिस वक्त मुतवज्जेह होकर बैठा करती एक आदमी आपकी खिदमत में इत्तला को भेज देती थी। आप तवज्जोह फ़रमाया करते। एक रोज वह

आदमी अपनी तरफ से खुद आ गया और कहा कि बीबी साहिबा मुतवज्जेह बैठी हैं (ध्यान लगाये बैठी हैं)। आपने थोड़ा मौन रह कर फ़रमाया कि नहीं, वह तो सोयी हैं। और तू उनके हुक्म से नहीं आया। वह शख्स अपनी गल्ती पर अत्यन्त लज्जित हुआ और क्षमा याचना की।

एक शख्स ने आपसे से आकर अर्ज किया कि मेरा भाई अमुक स्थान पर कैद हो गया है। आप हिम्मत और तवज्जोह फ़रमाइये कि उसकी रिहाई हो जाये। आपने सुकूत करके (मौन होकर) फ़रमाया कि वह कैद नहीं हुआ। दलालों से कुछ झगड़ा हो गया है लेकिन खैरियत गुजरी है। उसने अपने हाल का खत भेजा है। कल्ह परसों वह खत आ जायेगा, अतएव ऐसा ही हुआ। एक बार एक बद चलन औरत की कब्र पर जाने का संयोग हुआ। आपने फ़रमाया कि इस कब्र में दोज़ख़ (नर्क) की आग जल रही है। आपने कृपा कर उस औरत के कल्याण के लिये प्रार्थना की। तत्काल उसी समय उसकी नजात (मुक्ति) हो गई। कहा जाता है कि आपका एक पड़ोसी था। वह एक गम्भीर बीमारी से पीड़ित हो गया और उसका अन्त समय निकट आ गया। आपने उसके वास्ते दुआ की और कहा कि 'ऐ खुदा' मुझको इसके मौत का ग़म (दुख) बरदाश्त करने की सामर्थ्य नहीं है। उसको स्वस्थ कर दे। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़बूल की और वह स्वस्थ हो गया।

कहा जाता है कि एक औरत ने आपका दामन पकड़ लिया और अर्ज किया कि मेरी लड़की के कोई सन्तान नहीं है। जब तक आप मेरी लड़की के लिये एक पुत्र का आशीर्वाद नहीं देंगे आपका दामन नहीं छोड़ेगी। आपने कुछ देर मौन रहने के बाद फ़रमाया 'ईश्वर इच्छा से तेरी लड़की के बेटा पैदा होगा।' अतएव ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ। वह लड़का जब जवान हुआ उसने तरीका चिश्तिया में दाखिल होना चाहा। रात को उसने हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) को देखा। उन्होंने फ़रमाया कि बेटा हमारे घर से कहाँ जाते हो और उस पर तवज्जोह फ़रमायी कि उसका दिल ज़ाकिर हो गया। हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) की खिदमत में आकर वह तरीका नक्शबन्दिया में दाखिल हुआ।

हज़रत मज़हर (रहम०) एक कवि के रूप में

हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) एक उच्च कोटि के कवि थे। आप दिल्ली के प्रख्यात गद्य तथा पद्य लेखकों में से थे। आप युवा अवस्था में काव्य रचना में लीन रहते थे, परन्तु अन्त में इस कार्य को आध्यात्मिक उन्नति के लिये बाधक समझ कर छोड़ दिया। आप फारसी में भी कविताएँ करते थे। आपका फारसी में काव्य संग्रह 'खरीता-ए-जवाहर' के नाम से हस्त लिपि के रूप में उपलब्ध है, जो अभी प्रकाशित नहीं हुआ। आपकी उर्दू कविताओं का कोई संग्रह उपलब्ध नहीं है। हाँ, उनकी फुटकर कविताएँ तजकिरा (सूफी सन्तों के जीवन चरित्र) में मिलती है। उनमें से कुछ नीचे दी जा रही हैं –

(1)

हमने की है तौबा और धूमें मचाती हैं बहार ।
हाय कुछ चलता नहीं, क्या मुफ्त जाती है बहार ॥
लाला बगुल ने हमारी खाक पर डाला है शोर ।
क्या क़यामत है मरों को भी सताती है बहार ॥
हम गिरफ्तारों को अब क्या काम है गुलशन में लेक ।
जी निकल जाता है जब सुनते हैं आती है बहार ॥

(2)

रुस्वा अगर न करना था आलम में यों मुझे ।
ऐसी निगाह नाज़ से देखा था क्यों मुझे ॥

(3)

मत इख्तिलात कर ऐ नौ बहार अब हम से ।
चमन के होने का इस ख़ाक को दिमाग नहीं ॥

(4)

गर्चे अल्ताफ के काबिल यह दिलेज़ार न था ।
इस क़दर जोर-व-ज़फा' का भी सज़ावार न था ॥

(5)

तौफीक दे कि शोर से एक दम तू चुप रहे ।
आखिर मेरा दिल है इलाही जरस नहीं ॥

(6)

खुदा को अब तुझे सौंपा था अरे दिल ।
यहाँ तक थी हमारी जिन्दगानी ॥

(7)

ये दिल कब इश्क के काबिल रहा है ।
कहाँ इसको दिमाग व दिल रहा है ॥
खुदा के वास्ते इसको न टोको ।
यही एक शहर में कातिल रहा है ॥

(8)

कभी इस दिल ने आजादी न जानी ।
यह बुलबुल था क़फ़स का आशियानी ॥

हज़रत मज़हर जान जाना (रहम०) की उपयुक्त कविताएँ पढ़ने के बाद यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि आपकी कविताएँ ईश्वरीय प्रेम से ओत प्रोत थी। उनमें लौकिक प्रेम की गन्ध तक नहीं थी।

❷❾

30. हज़रत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०)

आपकी मजार बहराइच में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

30. हज़रत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०)

हज़रत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०), जो बहिराइच के निवासी हैं, हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जान जाना (रहम०) के सर्वश्रेष्ठ खलीफ़ाओं में से थे। आप चार साल तक मिर्ज़ा मज़हर साहब (रहम०) की सोहबत में रहे। हज़रत मिर्ज़ा (रहम०) फ़रमाया करते कि तुम्हारी चार साल की सोहबत औरों की बारह साल की सोहबत के बराबर है। हज़रत मिर्ज़ा साहब आप पर विशेष कृपा दृष्टि रखते थे और फ़रमाते थे कि तुम्हारे आत्मिक प्रकाश और सत्संग के प्रभाव से एक आलम (संसार) मुनव्वर प्रकाशित होगा। और ऐसा ही हुआ। हज़रत ने आपको गुरु पदवी का अधिकार तथा खिलाफत प्रदान करते समय हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के पत्रों का संकलन प्रदान किया और फ़रमाया कि जो दौलत अर्थात पत्र मैंने तुम को दिये हैं वह किसी मुरीद को नहीं दिये। इस नेमत का शुक्र और क़द्र करना चाहिये। यह तुम्हारे वास्ते जाहिर व बातिन का एक खजाना है और अगर जिज्ञासु और साधक जमा हुआ करें तो अस्त्र की नमाज के बाद सबके सामने पढ़ा करना। यह बजाये मुरशिद (सतगुरु) और मुरब्बी (अभिभावक) के है।

आप निहायत सब्र ओर तवक्कुल से जीवन व्यतीत करते थे और हर समय ईश्वर की याद में तल्लीन रहते थे। आपकी पुस्तक 'मामूलात मज़हरिया' आदाबे तरीक़त में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

आपका शरीरान्त पाँच सफर 1218 हिजरी को हुआ। आपकी मजार शरीफ़ राजकीय इन्टर कालेज बहिराइच (उ० प्र०) के सामने मैदान से लगे हुये एक ऊँचे चबूतरे पर बनी हुई है।

सुना जाता है कि आपके वंशजों के पास वह दरी भी मौजूद है जिस पर आपके पूज्य गुरुदेव हज़रत मिर्ज़ा मज़हर (रहम०) का खून पड़ा था (जब एक हत्यारे ने उनके सीने पर गोली मारी थी)। यह भी सुना गया है कि आपकी कोई हस्त लिखित पुस्तक, जो लन्दन के पुस्तकालय में न जाने कैसे पहुँच गई, वहाँ मौजूद है। आपके हाथ की

लिखी हुई कुरान शरीफ़ भोपाल में हज़रत मौलाना मन्जूर अहमद खाँ साहब के पास जो हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) के सगे पौत्र हैं, मौजूद है।

❸⓿

31. हज़रत मौलाना मौलवी शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०)

आपकी मजार लखनऊ में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

31. हज़रत मौलाना मौलवी शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०)

सन्त शिरोमणि एवं पूज्य सतगुरुजनों के गौरव तथा ब्रह्मज्ञान के अथाह सागर हज़रत शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०) थानेसर के रईस थे। आप हज़रत उमर फारुक (रजि०) के वंशज थे। जिस जमाने में सिखों ने थानेसर पर आक्रमण कर उसे वीरान कर दिया तब आप लखनऊ तशरीफ़ ले आये और वहीं बस गये। आपके पूज्य पिताजी हज़रत मौलवी कलन्दर बख्श साहब थानेसरी (रहम०) जो हज़रत मिर्ज़ा मज़हर (रहम०) के खलीफ़ा थे एक बार आपको अपने साथ हज़रत मिर्ज़ा साहब (रहम०) की खिदमत में ले गये। उस वक्त आप लड़के थे। हज़रत मिर्ज़ा साहब (रहम०) ने आपको अपने सत्संग में बैठाया और बहुत प्यार किया। जब आप पढ़ लिख कर विद्यार्थी जीवन से निवृत्त हुये उस वक्त मिर्ज़ा मज़हर (रहम०) शहीद हो चुके थे, अतः आपने हज़रत शाह नईमुल्लाह साहब (रहम०) से बैअत तरीका हासिल की (गुरु-दीक्षा ली) और लखनऊ में ही तक़मील के दर्जे (पूर्णता की स्थिति) पर पहुँचे और लोगों को ईश्वर की भक्ति और प्रेम की ओर उन्मुख करने में तल्लीन रहे। आपके कुछ खलीफ़ा थे। इनमें दो बड़े प्रसिद्ध हुये। एक शाह गुलाम रसूल साहब 'रसूल नुमा' कु० सि० जिनकी मजार कानपुर में परेड मुहल्ले में है। दूसरे हज़रत मौलाना मौलवी अबुल हसन नसीराबादी रहम० जिनका जिक्र अगले अध्याय में किया गया है।

आपने 82 वर्ष की उम्र में शनिवार के दिन 21 जीकादः सन् 1248 हिजरी को महा समाधि ले ली। आपकी समाधि लखनऊ में रायल होटल के पास नाले की सड़क पर अहाता गुलाम अली खाँ में हरे रंग की है। (छत पटी हुई है)। होटल पर नाले पर पत्थर 'शाह मुरादुल्लाह लेन' लगा हुआ है।

❸❶

32. हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (कु० सि०)

आपकी मजार नसीराबाद में है।

32. हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (कु० सि०)

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (कु० सि०) कर्मनिष्ठ ज्ञानी, इस्लामी धर्मशास्त्र के अद्वितीय विद्वान, हदीसों के भाष्य करने वालों में अग्रणी, हज़रत सैय्यद अबुल हसन बिन (पुत्र) मौलवी नूरुल हसन बिन मौलवी मुहम्मद महदी हुसैन नसीराबाद (जिला रायबरेली) के निवासी थे। आप हज़रत मौलवी मुरादुल्लाह साहब थानेसरी (रहम०) के खलीफ़ा और सज्जादा नशीं थे (उनकी गद्दी पर सुशोभित थे)। आपने 18 साल की उम्र में दस्तारे फ़ज़ीलत हासिल की (श्रेष्ठता की पगड़ी अर्थात् 'मौलाना' की उपाधि प्राप्त की) और हज़रत पीर व मुरशिद मौलाना मुरादुल्लाह साहब (रहम०) से बैअत की (गुरु दीक्षा ली) और सोलह बरस पीर व मुरशिद की खिदमत में हाजिर रहकर वह मर्तबा हासिल किया कि हज़रत मुरादुल्लाह साहब (रहम०) अपने तमाम मुरीदों को आपकी खिदमत में मुतवज्जेह होने का निर्देश देते थे और हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने अपने पीर व मुरशिद की जिन्दगी में अक्सर लोगों को फ़ना व बका पर पहुंचाया। आप में यह कमाल था कि जिसने आपको इरादत (श्रद्धा) की राह से देखा जरूर मकसूद को गया (ईश्वर के सानिध्य एव साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त हुआ)। जनाब हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब मऊ रशीदाबादी (रहम०) फ़रमाते हैं कि मैंने अक्सर हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की जबान मुबारक से सुना है कि आप फ़रमाते थे कि हमारे एक हाथ में कुरान मजीद और दूसरे में हदीस है और हमको यही काफी हैं और जिस व्यक्ति के आचरण और व्यवहार इनके विरुद्ध हो, उसे साधना पथ के योग्य नहीं समझना चाहिये।

आपने सफर के सिवा हमेशा मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज पढ़ी है और आप पाँचों वक्त सत्संग कराते थे और खुदा के तालिबों को तवज्जोह देते थे। बहुत से लोग फ़ैज बातिन से खुदा तक पहुँचे और जहान (संसार) में मुन्तशर हो गये (फैल गये)। आप बगैर मुरीदों के कभी अकेले भोजन नहीं करते थे और दुनिया की बातें कम करते थे। मगर शुरू में आवश्यकतानुसार सांसारिक विद्याओं की भी शिक्षा देते थे।

आखिर में इसको त्याग दिया ओर केवल अपने मुरीदों की तालीम बातिनी में मशगूल रहते थे। मराकबा के सिवा कोई काम नहीं करते थे और अक्सर मुरीदों को अपनी आत्मिक शक्ति से नीचे मुकाम से उठा कर ऊँचे से ऊँचे मुकाम पर एक नजर में पहुँचाते थे और अगर जाहिर में किसी मुरीद को धर्मशास्त्र के विरुद्ध कोई आचरण या व्यवहार करते हुये देखते तो उसको कोई नसीहत नहीं देते थे बल्कि फ़रमाते थे कि अगर हमारी सोहबत ने असर न किया तो खाली नसीहत क्या करेगी। फकीर वही है जो मुरीद के दिल को रंग कर अपनी तरह कर ले। और आपकी सबसे बड़ी करामात यही थी कि जो आपकी सोहबत में हाजिर हुआ, थोड़े दिनों में धर्मशास्त्र के विरुद्ध सभी आचरणों और कर्मों को त्याग कर आपकी तरह धर्मशास्त्र के अनुकूल सभी आचरण करने लगता।

आपके पीर व मुरशिद मौलाना मुरादुल्लाह साहब (रहम०) अक्सर फ़रमाते थे कि मौलवी (रहम०) अबुल हसन (रहम०) हमसे कई बातों में श्रेष्ठ हैं। एक यह कि सही उन्नसब हुसैन सैयद (हज़रत इमाम हुसैन रजि० की संतान के वंशज), दूसरे इल्म जाहिर (सांसारिक विद्याओं के ज्ञान) में हमसे ज्यादा, तीसरे इल्म बातिन (आध्यात्मिक विद्या) में हमारे बराबर, चौथे उनसे गुनाह कबारा (बहुत बड़ा पाप) कभी नहीं हुआ। और हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) बावजूद इस फज्लो कमाल के बुजुर्गों का इस क़दर अदब करते थे कि जब परम पूज्य मिर्ज़ा मज़हर (रहम०) की जियारत (दर्शनों) को तशरीफ़ ले जाते तो बहुत दूर से अपनी जूतियों को हाथ में ले लेते और फ़रमाते कि बुजुर्गों का अदब जैसा उनकी जिन्दगी में करते है वैसा ही उनके शरीरान्त के बाद भी करना चाहिये और सन्तजनों की मुहब्बत को आला इबादत (सबसे उत्तम आराधना) फ़रमाते थे। मगर इसमें धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरणों से नाखुश होते थे। हर अम्र (काम) में औसत दर्जे की रिआयत (कोमलता) फ़रमाते थे और औसत को पसन्द फ़रमाते थे। आप लोगों को बहुत मुहब्बत से तालीम तरीकत की देते थे और इसमें बेहद कोशिश फ़रमाते थे। अतः यही कारण है कि अक्सर थोड़े दिनों में लोग आपसे तकमील पा कर (पूर्णता प्राप्त करके) संसार में रूहानी (आध्यात्मिक) फ़ैज लोगों तक पहुंचाने वाले हुये।

हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ (रहम०) फ़रमाते हैं कि एक बार मैं मुकाम

अहमदाबाद जो लखनऊ के इलाका में है हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ। मुहम्मद इसहाक अली खाँ साहब नई मस्जिद बनवा रहे थे। हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने मेमार (मिस्त्री) से फ़रमाया कि उत्तर दिशा की तरफ दीवार में एक खिड़की रखना मुनासिब है, मगर मेमार हैदर इस बात पर राजी न हुआ। आखिर आप अप्रसन्न होकर खामोश हो गये। उसने रात को ख्वाब में देखा कि कोई बुजुर्ग कहता है कि मरदूद ! तू अबुल हसन (रहम०) का हुक्म क्यों नहीं मानता। उसने सुबह को अपना ख्वाब जाहिर करके मुआफ़ी चाही और खिड़की की जगह आपके आदेशानुसार दीवार में छोड़ दी।

हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) खालः जाद भाई (मौसी के लड़के) सैय्यद अब्दुस्सलाम फ़रमाते थे कि एक बार मैं आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और दिल में इरादा किया कि हज़रत वली (सन्त) हैं तो जो खुशखत कुरान शरीफ़ आपके पास है और जो शीरीनी (मिठाई) आई हो मुझे देने की कृपा करें। जिस वक्त आपकी खिदमत में हाजिर हुआ उस वक्त आपने फ़रमाया कि भाई मेरी परीक्षा लेने आये हो, तो यह कुरान शरीफ़ और मिठाई लो। मैं बहुत लज्जित हुआ और दोनों चीजें ले ली। एक आदमी बड़ा बद चलन था। और उसका बाप आप का मुरीद था। उस आदमी ने आपसे गुरु दीक्षा लेने के लिये निवेदन किया, मगर उसके साथ यह भी निवेदन किया कि मैं बड़ा बदचलन हूँ। आपने फ़रमाया कि तुमने हमारे सामने तो कोई गुनाह नहीं किया। उसने अर्ज किया 'हज़रत मेरी क्या मजाल जो हुजूर की मौजूदगी में गुनाह करूँ'। हज़रत ने फ़रमाया बस हमारे सामने गुनाह न करना। यह फ़रमा कर उसको बैअत कर लिया। फिर उस शख्स ने चन्द बार अम्र बद (बुरे कर्म) का इरादा किया और हर बार हुजूर को पाया। आखिर लज्जित होकर सच्ची तौबा की।

एक बार मिर्ज़ा कुदरतुल्लाह खाँ साहब ने जो हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) के मुरीद थे आपकी खिदमत में हाजिर होने का इरादा किया, तो करीब तीन सौ आदमी उनके साथ हो लिये। हरचन्द मिर्ज़ा कुदरतुल्लाह साहब लोगों को अपने साथ चलने से मना करते थे मगर कोई भी वापस न हुआ। हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने फ़रमाया कि आज लोगों को खाना खिलाना जरूरी है। आपके सेवकों ने अर्ज किया कि इतने लोगों को खाना काफी न होगा। आप ने फ़रमाया कि

जब देग तैयार हो जाये तो सूचित करना। अतः जिस वक्त खाना पक चुका तो सेवकों ने आपको सूचना दी। आपने कुछ पढ़कर दम किया (कुछ मन्त्र आदि पढ़कर फूँक मारने को दम करना कहते हैं) और अपनी मुबारक लुंगी देग पर डालकर हुक्म दिया कि उसको अलग करें और खाना निकालते रहें। सब लोगों ने अच्छी तरह खाया और आधी देग बाकी रही जो घर में और पड़ोसियों में वितरित हुई।

आप अक्सर सुक्र (रूहानी मादकता, नशा) के बाद हालत सह्व (सचेष्टता, जागरूकता) में फ़रमाते थे-

देखिये अब क्या करे वामाँदगी, (थकावट, लाचारी)
काफिला यारों का सफर कर गया।

हज़रत शाह मुरादुल्लाह साहब (रहम०) ने अपने शरीरान्त से पूर्व अपनी अध्यात्म साधना से सम्बन्धित सभी वस्तुएँ (पुस्तकें, लेख, पत्र तथा वस्त्रादि) हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) को सौंप दिया और आपको अपने सामने खलीफ़ा के पद पर सुशोभित किया। परन्तु हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने हज़रत वलीउल्लाह साहब को, जो आपके विद्यार्थी मुरीद व खलीफ़ा थे और शाह मुरादुल्लाह साहब (रहम०) के नवासा (पुत्री के पुत्र) थे, वह सभी उपरोक्त वस्तुएँ उन्हें प्रदान कर सतगुरु की पदवी पर बैठाया और नजर (भेंट) देकर फ़रमाया कि हमको हज़रत पीर की मुहब्बत काफी है और जो भेंटें आपको मिलती थीं सब की सब हज़रत वली उल्लाह साहब को प्रदान कर देते थे, बावजूद इसके कि हज़रत वली उल्लाह साहब आपके खलीफ़ा और मुरीद थे।

हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने अपने बड़े सुपुत्र हादी हसन साहब को हज़रत शाह वली उल्लाह साहब का मुरीद कराया। अतः हज़रत मियाँ हादी हसन साहब की तकमील तरीका (आध्यात्मिक साधना की पूर्णता) हज़रत शाह वली उल्लाह साहब की सेवा में हुई और हज़रत हादी हसन साहब हज़रत शाह वली उल्लाह साहब की तालीम और तवज्जोह की वजह से उलूम ज़ाहिरी व बातिनी (सांसारिक तथा आत्मिक विद्याओं) में अपने पूज्य पिता जी हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) के समान थे। हज़रत हादी हसन साहब फ़रमाते थे कि एक बार हज़रत मुफ्ती सईदुल्लाह साहब मेरे पूज्य पिता जी की खिदमत में तशरीफ़ लाये।

उस वक्त मैं हाजिर था। पूज्य पिता जी ने मुझसे फ़रमाया कि जनाब मुफ्ती साहब के कदम छूना चाहिये। मुफ्ती साहब ने यह सुन कर बड़ी विनम्रता के साथ निवेदन किया कि हज़रत मैं इस लायक नहीं हूँ कि हुजूर के सुपुत्र मेरे कदम छुएँ। मैं और मुरीदों की तरह हूँ कि फ़ायदे के वास्ते हाजिर हुआ हूँ।

हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) का शरीरान्त दो शंबा यकुम शाबान 1272 हिजरी को हुआ। आपका मजार शरीफ़ कस्बा नसीराबाद तहसील सलोन, जिला राय बरेली में है। हज़रत मुरशिदना हाजी खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (कुद्स सिर्रहू) द्वारा रचित दो पद्य खण्ड नीचे अंकित किये जा रहे हैं, जिन से हज़रत सैय्यद अबुल हसन रहम० की तारीख वफ़ात की गणना निकल आती है -

(1)

आँ बुल हसन कि ताज सरे नक्शबन्द बूद,
मानिन्द ऊ नयामदह साहब तरीक़ते।
रह्लत चूकर्द मुलहिमे ग़ैबी बगुफ्त साल,
बिल्लह बहक वस्ल शुद अहले हकीकते॥

(2)

शेखा जमाना मौलवी सैय्यद अबुल हसन,
चूँ कर्द अज इनायते हक़ जा बमिहद खुल्द।
मुर्दन न गोयमत पै तब्दीले जाजे ख़ल्क,
फर्मूद आँ बुजुर्ग तमन्ना बमिहद खुल्द।
तायब चू जुस्त साल व फातश मलिक बगुफ्त,
नक्ले मकान कर्द जे दुनिया बमिहद खुल्द।

तर्जुमा

(1)

वह अबुल हसन कु० सि० जो नक्शबन्दिया खानदान के सरताज थे, उनकी तरह कोई दूसरा साहबे तरीकत नहीं आया। जब उन्होने रहलत की (पार्थिव शरीर त्यागा) तब गैब के (परोक्ष के) फरिश्ते ने उनके रहलत (शरीरान्त) की यह तारीख कही :-

खुदा की क़सम, एक अहले हक़ीक़त (ब्रह्मनिष्ठ) खुदा से वासिल हुआ (अर्थात्

खुदा से मिल गया)।

मौलवी सैय्यद अबुल हसन जो (उस) जमाना के शेख़ थे जब उन्होंने खुदा की मेहरबानी से स्वर्ग के पालने में अपना स्थान ग्रहण किया, मैंने उसे मृत्यु नहीं कही बल्कि उस बुज़ुर्ग हस्ती ने स्थान परिवर्तन के लिये इस संसार से स्वर्ग के पालने में जाने के लिये इच्छा की।

ताइब ने (तौबा करने वाले ने। हज़रत हाजी खलीफ़ा जी साहब रहम० ने, जो इस पद्य के रचयिता हैं, अपने लिये विनीत भावना के रूप में यह शब्द प्रयोग किया है) जब उनके शरीरान्त का वर्ष ढूंढा, तो फरिश्ते ने कहा, 'वह दुनिया से स्वर्ग के पालने में चले गये अर्थात उन्होंने मकान का परिवर्तन किया।'

हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) के तीन लड़के और दो लड़कियाँ थी। इनमें से एक हज़रत मुस्तफ़ा हसन साहब का कम उम्र में ही शरीरान्त हो गया था और दो लड़के मियां हादी हसन साहब और अहमद मुज्तवी साहब थे। आपके खलीफ़ा की संख्या अत्यधिक है, मगर हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) को जिनके नाम याद थे उन्होंने अपनी पुस्तिका 'जमीमा हालात मशालख नक्शबन्दिया' में अंकित किया था। वे नाम इस प्रकार हैं - हज़रत शाह वली उल्लाह साहब, हज़रत शाह गुलजार शाह साहब, हज़रत चाँद खाँ साहब, हज़रत फकीर उल्लाह साहब, हज़रत फारुक अली साहब, हज़रत आलम शाह, हज़रत फाजिल खाँ साहब विलायती, हज़रत सैय्यद अफ्जल शाह साहब रायपुरी, हज़रत बशारत खाँ, हज़रत मुमताज़ साहब, हज़रत नामदार साहब और हज़रत हाजी खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब मऊरशीदा बादी (ईश्वर इन सभी महान आत्माओं पर अपनी दया कृपा रक्खें)। इनके सिवा हज़रत से फायदा पाने वालों और मुरीदों की तादाद हज़ारों में है।

हज़रत हाजी खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) 1288 हिजरी में हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की जियारत को उनके पवित्र मजार पर हाजिर हुये थे। उस अवसर पर उन्हें जो अनुभव हुये उनका वर्णन आपने इस प्रकार किया है-

'यह सेवक अक्सर हज़रत सैय्यदना के पवित्र मजार पर हाजिर होता और हज़रत सैय्यदना भी अपनी जीवित अवस्था की तरह मुझे अपनी विशेष दया कृपा से फैज़याब करते।

दिले मन दानद व मन दानम व दानद दिले मन

(मेरा दिल उस आनन्द को जानता है और मैं जानता हूँ और मेरा दिल जानता है।)

चन्द रोज के बाद जब मैंने वापसी का इरादा किया और हज़रत हादी हसन साहब से अर्ज किया तो हुजूर ने फ़रमाया कि हज़रत सैय्यदना (रहम०) ने तो अभी रुखसत (बिदा) की इजाजत नहीं दी है और जब तक हज़रत सैय्यदना (रहम०) इजाजत न देंगे हम भी तुम्हें बिदा न करेंगे। जब मैं मिमूल (नित्य नियम) के अनुसार मजार शरीफ़ पर मराक़िब हुआ (ध्यान में बैठा) तो हज़रत सैय्यदना (रहम०) ने भी यही फ़रमाया कि मियाँ हादी हसन साहब सच कहते हैं। अभी क्या जल्दी है। दो चार रोज और रहो। कई दिन के बाद मैंने हज़रत सैय्यदना (रहम०) से फिर वापसी की इजाजत चाही, तो हज़रत ने मंजूर फ़रमाया। जब मैंने हज़रत हादी हसन साहब की खिदमत में अर्ज किया तो आपने भी फ़रमाया कि आज हमको भी हज़रत सैय्यदना (रहम०) ने हुक्म दिया है और बिदाई के वक्त कुलाह (टोपी) मुबारक इनायत फ़रमा कर (प्रदान करके) फ़रमाया कि हज़रत सैय्यदना (रहम०) के इर्शाद (आदेश) के मुआफिक हमारी तरफ से भी तुम को तरीके की इजाजत है और सैय्यदना (रहम०) ने तुम को दो बार इजाजत तरीका दी। एक बार अपनी जिन्दगी में और एक इस वक्त। तुम्हारा नसीब (भाग्य) खूब है। मैंने कुलाह मुबारक को चूमा और पहिना और बिदा हो कर मकान पर आया।'

33. हज़रत मौलाना खलीफ़ा अहमद अली खाँ मऊ रशीदाबादी (रहम०)

आपकी मजार कायमगंज में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

33. हज़रत मौलाना खलीफ़ा अहमद अली खाँ मऊ रशीदाबादी (रहम०)

हज़रत मौलाना खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के पूज्य पिताजी का शुभ नाम शहामत अली खां साहब कु० सि० है। आपके पूज्य पिताजी ने चिश्तिया खानदान से रूहानी निस्बत हासिल की थी और वह दुनिया से अत्यन्त विरक्त थे। जीविकोपार्जन के लिये अक्सर मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करते। आपके खलीफ़ा हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) फ़रमाते थे कि 'मैंने खलीफ़ा जी साहब (रहम०) की जबान से सुना है कि आपके पूज्य पिताजी हद दर्जे के साबिर (हर दशा में ईश्वर इच्छा चाहने वाले, सहिष्णु) और साहिबे रियाज़ (उच्च कोटि के साधक) थे। आपकी अक्सर जज्बी हालत रहती थी और प्रायः करामात सादिर होती थी (चमत्कार प्रकट होते थे), अतः एक बार किसी महफिल शादी में नाच गाना हो रहा था। आप भी तशरीफ़ लाये। चूँकि आप गरीब थे, लोगों ने आपकी ओर कुछ ध्यान न दिया। तब आपने जोश में आकर मीर मजलिस से फ़रमाया कि तुम इस क़दर अमीरों की खातिर क्यों करते हो। उसने जवाब दिया कि यह लोग हमारे साथ ब्याहने जायेंगे। आपने फ़रमाया कि तुम यह ख्याल दूर कर दो। यह अभी भागते हैं। यह कह कर खुद तो मकान पर आ गये और आँधी पानी ऐसा आया कि सिर्फ दो चार ही आदमी ब्याहने गये। आपने अपने सुपुत्र जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) की तालीम में बहुत कोशिश फ़रमाई और आखिर वक्त यह दुआ की 'अल्लाह तआला तुम को कामिल करे (पूर्ण पारंगत बनाये)। जाहिद खुश्क (नीरस व संकीर्ण हृदय वाला संयमी, तपस्वी) न करे। आपका मज़ार शरीफ़ तकिया में मस्जिद के निकट स्थित है। बड़ा बाफ़ैज मजार है (रहमतुल्लाहु अलैहि)।

हज़रत खलीफ़ा जी साहब (रहम०) युवा अवस्था में विद्याध्ययन की ओर आकृष्ट रहे। फारसी और अरबी भाषा के प्रकांड विद्वान थे और इन भाषाओं के कठिन से कठिन ग्रन्थ आपको कंठस्थ थे। आप फारसी के काव्य-गन्ध 'गुलेकिश्ती', 'बदरचाह', 'मसनवी हलाली' इत्यादि को बड़े रोचक ढंग से पढ़ाते थे। धर्म शास्त्र से सम्बन्धित

तथ्यों की व्याख्या करने में आपको पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। कुरान शरीफ़ को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की कला में भी आप पूर्ण दक्ष थे। इस विषय पर आपने कई पुस्तिकायें लिखी हैं। आपने दो दीवान (कविताओं के संग्रह) और एक काव्य-ग्रन्थ 'महारबा काबुल' लिखा है। गद्य-लेखन में भी आपकी योग्यता अद्वितीय थी। आपने एक पुस्तक 'फतावाए अहमदी' लिखी है। आप धर्म पालन में अत्यन्त दृढ़ तथा सुन्नत (वह काम जो हज़रत पैगम्बर साहब ने किया हो) के अनुयायी थे। आप अक्सर फ़रमाते थे कि सुन्नत का अनुकरण करने से आदमी महबूब (प्रेम पात्र) हो जाता है। आप अज्ञानी फकीरों से बड़ी घृणा करते थे। आपके जबाने मुबारक से सुना गया है कि जिन दिनों आप कुँवा खेड़े पढ़ने को जाया करते थे वहाँ एक फकीर अजीब हालत में तशरीफ़ लाये थे, जो कुत्तों को अपने साथ हर वक्त रखते थे। अतः हज़रत खलीफ़ा जी साहब (रहम०) ने भी यह बात सुन कर उनके इस प्रकार के आचरण की आलोचना करने के लिये उनकी खिदमत में हाजिर होकर उनको सख्त सुस्त कहा। मगर वह हज़रत पहाड़ की तरह अविचलित रहे। यह देखकर जनाब खलीफ़ा जी साहब के दिल में शर्म और लज्जा उत्पन्न हुई और उनसे मुआफ़ी माँगने लगे। उन दर्वेश ने फ़रमाया कि बाबा कहने वाला तू न था। यह सुन कर हज़रत खलीफ़ा जी साहब (रहम०) पर एक आलमे बेखुदी (अचेतना की दशा) तारी हुआ और अजीब लज्जत व मसर्रत (आनन्द) पैदा हुआ और साँस के ज़रिये 'अल्लाह हू' जारी हो गया और उसके साथ अजीब वज्द व हाल (आनंदातिरेक से झूमने की हालत) पैदा हो गई। जब आप होश में आये तो पुन: उन दर्वेश से क्षमा याचना करने लगे। उन्होंने वही बात फ़रमा दी। पुन: आप पर वही हालत तारी हो गई बल्कि और अधिक तीव्रता के साथ। उस वक्त वह दर्वेश जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) से गले मिले। बस अजीब आनन्द की अनुभूति हुई और फ़रमाया 'खाली साँस न जाये।' यह कह कर वह चले गये और आप पर तेजी के साथ पास अन्फास जारी हो गया (हर साँस में ईश्वर की याद होने लगी)। अब आपको मालूम हुआ कि यह वज्दे-हाल भी कोई चीज है। आप उसकी तलाश में संलग्न हुये। आपकी तबियत में जोश खरोश भरा था। हर वक्त वज्द की कैफियत रहती थी। उन्हीं दिनों अमीर अली खाँ साहब चिलौली वाले गोरखपुर से तशरीफ़ लाये। उनकी सोहबत में आपका कल्ब ज़ाकिर हो गया (हृदय चक्र जाग्रत हो

गया)। कुछ अजीब ही वर्णनातीत आनन्द का अनुभव हुआ। आपका शौक और जौक और भी बढ़ा। इसी जमाने में आपको हाजी सैय्यद मियाँ अफ्जल शाह साहब रायपुरी (कु० सि०) से, जो हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (रहम०) के खलीफ़ा थे, सत्संग का संयोग हुआ। फिर तो कुछ और ही गुल खिला। आपकी खिदमत में तमामी मुकामात मुजद्दिदिया पर जिक्र का असर महसूस हुआ (सभी चक्र जो मुजद्दिदिया सिलसिले की साधना पद्धति में प्रचिलित हैं जाग्रत हो गये) और फ़नाए क़ल्बी की दौलत खुदा ने इनायत फ़रमाई। उसी दिन हज़रत मियां अफ्जल शाह साहब ने जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) से फ़रमाया 'अहमद अली, अब बे बैअत (बिना गुरु दीक्षा के) काम न चलेगा। जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) ने अर्थ किया कि अभी तो मैं बैअत न करुंगा। आपने फ़रमाया कि फिर यह कुछ न रहेगा। अतः यह कह कर मकान पर चले गये और उधर जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) खाली रह गये, यहाँ तक कि पास अन्फास भी न रहा (हर साँस में ईश्वर की याद होना भी बन्द हो गया)। आपको बड़ा दुःख हुआ और आपने दिल में सोचा कि गजब है, जो औरों से सीखा था वह भी न रहा। आप रोने लगे और तौबा करते रहे। रात को आपने हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) को देखा और खोई हुई दौलत फिर पायी और अत्यन्त आनन्द की अनुभूति के साथ जाग पड़े। अपने आपको पहले से अधिक पाया। जब सुबह को मियाँ अफज़ल शाह साहब ने आपको देखा, फ़रमाया 'अहमद अली यह फिर कहाँ पाया, इस हालत को बिना मुरीद हुये बक़ा (ठहराव, स्थिरता) कहाँ। फौरन वह हालत फिर गायब हो गई। इसी तरह तीन दिन होता रहा। आखिर हज़रत अबुल हसन साहब रहम ने तीसरी रात ख्वाब में फ़रमाया कि अफ्जल शाह सच कहता है, बेपीर (बिना सतगुरु के) कुछ न रहेगा। जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) ने अर्ज किया कि मैं हुजूर का गुलाम हूँ। मेरा पीर क्यों नहीं। तब हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने आपको सीने से लगाया और फ़रमाया कि अफज़ल शाह से कह देना कि मैं नसीराबाद में जा कर बैअत करुंगा, मुझे क्यों सताते हो। सुबह जब आप जगे तो आपने अपने को बहुत तूरानी (प्रकाशमय) पाया और अफ्जल शाह साहब (कु० सि०) से तीनों रात के हालात अर्ज किये। यह सुन कर हज़रत मियाँ अफज़ल शाह (कु० सि०) बहुत खुश हुये और आपको रूहानी तालीम देते रहे।

इसी जमाने में हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये और उनसे बैअत हुये (गुरु दीक्षा ली)। फिर भी आप अक्सर मियाँ अफ्जल शाह साहब (रहम०) के सत्संग में हाजिर रहते। आप चार बार हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की खिदमत में एक एक चिल्ला रहे (चालीस चालीस दिन रहे)। आखिर हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने आपको इजाजत नामा (सतगुरु के अधिकार) और दस्तार (पगड़ी) और कुर्ता और माला वगैरह प्रसाद रूप में प्रदान किये। जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) की शान उन पत्रों से प्रकट होती है जो हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने आपको लिखे हैं। और यह सभी पत्र जनाब खलीफ़ा अहमद अली खाँ (रहम०) ने एक किताब के रूप में संकलित करके अपने खलीफ़ा हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) को प्रदान किये थे और मूल रूप में वह पत्र भी दिये थे और फ़रमाया था कि यह सामान तुम्हारे काम का है। तुम रक्खो। अल्लाह मुबारक करे।'

हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने अपने एक पत्र में जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) को लिखा है 'तुम से एक आलम मुनव्वर (प्रकाशित होगा) और यह अम्र (आदेश) आपके 'कुतुब इर्शाद' (सन्त शिरोमणि) होने का प्रमाण है।' दूसरी जगह लिखा है 'कुफ़्फ़ार (नास्तिकों) को, राह चलतों को, फासिकों (पापियों) को, बिद्अतियों (धर्म में नई व्यवस्था उत्पन्न करने वालों) को तवज्जोह दोगे तो वह कामिलुल ईमान होंगे। तीसरी जगह फ़रमाया जो 'तुम को मिला इस जमाने में शायद किसी को मिला हो।'

हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) ने जो जनाब खलीफ़ा अहमद अली खाँ (रहम०) के खलीफ़ा थे अपनी पुस्तक "जमीमा हालात मशायख नक्शबन्दिया" में उक्त पत्रों से सम्बन्धित निम्नांकित महत्वपूर्ण घटना का वर्णन लिखा है जो उन्हीं के शब्दों में अंकित किया जा रहा है-

'मेरे मुरशिदना अहमद अली खाँ साहब ने जब बन्दा को इजाजत और खिलाफत की इज्जत बख्शी तो अव्वल मकतूब (पत्र) को फ़रमाया पढ़ लो। चुनाँचे गुलाम ने पढ़ा। जब खत्म कर चुका तो फ़रमाया कि फज़्ल अहमद यह बातें तो हमसे कुछ न हुई।

मैंने अर्ज किया कि हज़रत अब इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) जहूर फ़रमा होंगे (प्रकट होंगे)। हज़रत ने फ़रमाया कि अब हम गोर किनारह हुये (अब हमारा अन्त समय निकट आ गया है)। चन्द दिनों के मेहमान हैं। अब क्या होगा। बन्दा यह सुन कर रोने लगा। फ़रमाया 'शाबाश, यह वक्त रोने का है ?' मअन (तत्काल) मेरे कल्ब में बशाशत (आनन्द) व सुरूर (हल्का नशा) पैदा हुआ। सुन कर फ़रमाया 'यह बातें खाली न जायेगी। इनका ज़हूर अब तुम से होगा।' यह हज़रत का इर्शाद सच हुआ। इस अह कर से अक्सर हिन्दुओं और ईसाइयों और शियों को फायदा पहुँचा। अलहम्दो लिल्लाह अला जालिका। इसके बाद हज़रत मुरशिदना खलीफ़ा जी साहब ने फ़रमाया कि अब तक तो तुम खूब आराम से रहे। अब मैं एक बार अजीम (एक महान बोझ अर्थात् उत्तरदायित्व) और अम्र फखीम (प्रतिष्ठापूर्ण कार्य) तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। अगर बजा लाओग तो अम्बिया और औलिया के साथ मशहूर होगे (कयामत के दिन अवतारों और सन्तों के साथ उठाये जाओगे), वरना यही ख़िर्क़ा (वस्त्र) दोज़ख़ (नर्क) को खींच ले जायेगा। कमतरीन बहुत रोया और अर्ज किया कि 'हज़रत बन्दा को मुआफ़ फ़रमाइये।' खलीफ़ा जी साहब ने फ़रमाया 'खुदा आसान करेगा' और गुलाम के वास्ते दुआ की। फिर हज़रत सैय्यदना की अतीया (उपहार) तबर्रुकात तलब फ़रमा कर उसमें से हज़रत की तस्बीह (माला) और कुर्त्ता शरीफ़ की आस्तीन मुबारक और एक टुकड़ा दस्तार (पगड़ी) शरीफ़ का और एक कुलाह (टोपी) और अपना कुर्त्ता मरहमत फ़रमाया (प्रदान किया) और यह फ़रमाया कि हर एक बुज़ुर्ग अपने खलीफ़ा को अपना तबर्रुक दिया करता है। जहे नसीब तुम्हारे (क्या खूब तुम्हारा भाग्य है) कि तुम को हज़रत सैय्यदना अबुल हसन साहब (रहम०) के तबर्रुकात मिले। शुक्र इस अतिये (उपहार) का करना चाहिये।"

हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के विषय में हज़रत शाह अब्दुल्लाह अबुल खैर साहब मक्की, जो उन दिनों हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जान जाना (रहम०) की खानकाह शरीफ़ में सज्जादा नशीन थे और जिनका उपनाम मुहीउद्दीन था फ़रमाते थे कि मैंने मक्का में जनाब खलीफ़ा जी साहब को देखा कि आप पर तजल्ली जाती का जहूर था (परमात्मा का तेज प्रकट होता था)।' हज़रत जनाब खलीफ़ा जी साहब (रहम०) सफर इस्लामी दूसरा महीना 1304 हिजरी को सरहिन्द

शरीफ़ तशरीफ़ ले गये थे और वहाँ चालीस दिनों तक रुके और अजीब फ़ैज व बरकत हज़रत इमाम रब्बानी के दरबार से हासिल किया। आपने हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के हालात में किताब 'तोहफतुल मुजद्दिदैन' लिखी। आपको हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी (रहम०) के दरबार से मजार पोश पूरा उपहार रूप में प्राप्त हुआ था। आपको इसी में दफनाया गया था।

हज़रत मौलाना शाह फज़्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) ने अपने पीर मुरशिद जनाब हाजी खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को अपनी पुस्तक 'जमीमा हालात मशायख नक्शबन्दिया' में वर्णित किया है, जो प्रसाद रूप में उन्हीं के शब्दों में नीचे दी जा रही हैं :-

"इस कमतरीन ने जब हज़रत मुरशिदना से बैअत की तो बराबर दोनों वक्त सुबह व शाम बीस बरस तक आपकी खिदमत में हाजिर होकर तवज्जोह ली और अजीब वारदातें पैदा हुई। मगर मेरे एक इनायत फ़रमा (शुभ चिंतक) ने मुझको यह फ़रमाया कि अब तक तुम को वज्द (आत्मिक आनन्दाधिक्य से उत्पन्न आत्म विस्मृति की स्थिति) नहीं होता। अगर खलीफ़ा जी साहब कामिल (पूर्ण, पारंगत) होते तो जरूर होता और हमारे यहाँ तो थोड़े दिनों के मुरीदों को भी वज्द होता है। इस बात वाहिआत (निरर्थक बात) ने मुझ पर यह असर किया मआज अल्लाह (ईश्वर बचाये) मेरे दिल में शक (सन्देह) आ गया। मैंने शब (रात) को ख्वाब में देखा कि खलीफ़ा जी साहब तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि रायपुर चलो और मुरशिदना (जनाब खलीफ़ा जी साहब) उड़ते हुये हज़रत सैय्यद अफज़ल शाह मियाँ के मजार के पास गये तो क्या देखा कि रसूल मकबूल (हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल०)और तमामी पीराने सिलसिला (नक्शबन्दिया सिलसिले के तमाम सतगुरुजन) खड़े हैं और सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हैं। हज़रत मुरशिदना ने एक हाथ से गुलाम का हाथ और एक से हज़रत सैय्यद अबुल हसन कुद्स सिर्रहू का हाथ पकड़ा। फिर किसी ने फ़रमाया 'यह सिलसिला रासखीन (दृढ़, अटल) है। इसका मुन्किर (इसको न मानने वाला) मरदूद (तिरस्कृत) है। फिर अजीब कैफियत हुई। इतने में उसी वक्त वह बुज़ुर्ग भी आये। मैंने ख्वाब बयान किया। उन्होंने उसी वक्त तौबा की और बहुत नादिम (लज्जित) हुये।

जनाब खलीफ़ा जी साहब एक रिसालदार साहब के यहाँ नौकर थे और एक रईस ने जो सूद ख़्वारी में मुब्तला था (लोगों को ब्याज पर रुपये उधार दिया करता था) अपने भतीजे की तालीम के वास्ते बुलाया। यह अम्र (काम) रिसालदार मौसूफ को अजहद शाक गुजरा (बहुत ही बुरा मालूम हुआ) और एक दिन असनाए राह में (रास्ते में जाते समय) खलीफ़ा जी साहब से कहा कि आप सूद ख्वारों का खाना खाते हैं और फिर दावा शेखीयत (सतगुरु होने का दावा), कैसी शर्म की बात है ? यह सुन कर बन्दा कुछ बोलना चाहता था कि फौरन खलीफ़ा जी साहब ने रोक दिया और खुद फ़रमाया कि 'खाँ साहब दुआ कीजिये कि खुदा उनको इस बला से नजात (मुक्ति) दे। यह कह कर चल दिये और राह में मुझसे बहुत खफा हुये और फ़रमाया कि रिसालदार साहब ने झूठ बात नहीं कही, जिस पर तुझे गुस्सा आ गया। गुस्सा की जरूरत नहीं है। हाँ अगर हिम्मत हो तो इस ऐब (दुर्गुण) को दूर कर दो। बन्दा खामोश रहा। चालीस रोज नहीं गुजरे थे कि उस रईस ने सूद ख़्वारी से तौबा की। अब खुदा उनको दीन का सरदार करे। जनाब हाजी फज़्ल इमाम खाँ साहब हज्ज को तशरीफ़ ले गये थे और यहाँ मशहूर हो गया कि इनका जहाज डूब गया। उनके सारे मुतालकीन (सम्बन्धी) परेशान थे। जब खलीफ़ा जी साहब से हाल दरियाफ्त किया तो आपने उसी वक्त फ़रमाया कि सब मक्का शरीफ़ में बखैरियत (कुशल पूर्वक) हैं बल्कि अन करीब ख़त आयेगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ।

एक बार मैं बेकार हो गया था और दसवीं तारीख माह दिसम्बर की थी। आपने मुझसे दरियाफ्त किया कि किस क़दर (कितनी) तनख्वाह में तुम्हारी गुजर हो जायेगी। मैंने अर्ज किया कि हज़रत पाँच रुपये माहवारी अलावा खुराक के वास्ते दुआ कीजियेगा। हज़रत ने जरा से तअम्मुल (मौन) के बाद फ़रमाया कि तुम पहली दिसम्बर से इस तनख्वाह पर नौकर हो गये। यह सुन कर मुझे यकीन न हुआ। फिर हज़रत ने फ़रमाया कि तुझे यह बात झूठी मालूम हुई। मैंने अर्ज किया कि हज़रत सच होगी, मगर दसवीं तारीख तक मुझे खबर न हो यह कैसी बात है ? उस वक्त हज़रत खलीफ़ा जी साहब ने बन्दा को नसीहत की कि अपने मकशूफात (गुप्त बातें जो आत्मिक शक्ति से ज्ञात होती है) सब लोगों से छिपाना चाहिये। देखो, तुम सा मुरीद मुखलिस (निष्ठावान शिष्य) भी यकीन नहीं करता तो आरों से क्या उम्मीद हो। जब मैं

हज़रत से जुदा हुआ तो उसी वक्त नौकरी का हाल मालूम हो गया कि मुंशी बद्री प्रसाद ने जराद में नौकर करा दिया। उसी वक्त अपने काम पर गया और बीस रोज बाद पूरी तनख्वाह पायी (पूरे माह का वेतन प्राप्त किया)। मौलवी जामिन अली खाँ साहब रायपुरी बयान करते है कि खलीफ़ा जी साहब की वफ़ात (शरीरान्त) से दो रोज पहले मैं आपकी खिदमत में हाजिर हुआ था। क्या देखा कि आप अन्दर मकान में लेटे हैं और पेशानी (माथा) मिस्ल चाँद के चमक रही है। मैं इस नूर (प्रकाश) को देखकर हैरान हो गया और दिल में कहने लगा 'जो किताबों में पढ़ा था कि कयामत (प्रलय) के दिन बाज मोमिनों (कुछ ईश्वर-भक्तों) के चेहरे चाँद की तरह चमकेंगे सो दुनिया में आँखों से देखा। जालिका फज्लुल्लाहे यूतीह मईयशा (यह खुदा का फज़्ल है, वह जिसको चाहे दें)।

एक लड़की को जनाब ने पसे पर्दा (पर्दा के पीछे) बैअत किया और मुकाम क़ल्ब मर्दों को यों जबानी फ़रमाते थे कि बायें पिस्तान (स्तन, छाती) से दो अंगुल नीचे ख्याल करो। उस लड़की से यह फ़रमाना मुनासिब न जाना, तो आपने यूँ फ़रमाया कि बेटी तेरे बायीं तरफ जहाँ एक काला तिल है यहाँ पर कल्ब है। हम तवज्जोह देते हैं, यह अल्लाह अल्लाह करेगा। जब इससे फराग पाया (निवृत्त हुये), तो उस लड़की ने अर्ज किया कि मियाँ ने मुझे तो पर्दा में बिठलाया और मेरे कुर्त्ते के अन्दर खाल सियाह (काली) देख लिया। हज़रत ने थोड़े तअम्मुल के बाद फ़रमाया कि बेटी बजरूरत दिल की आँखों से देखा है। जिस्मी आँखों से देखना शराअन मना है (स्थूल शारीरिक नेत्रों से देखना धर्म शास्त्र द्वारा वर्जित है)।"

हज़रत जनाब खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) ने 9 रबीउल अव्वल सन 1307 हिजरी बरोज दो शम्बा अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। आपका मजार शरीफ़ कब्रिस्तान नन्दू खाँ, कुबेरपुर (कायमगंज, जिला फर्रुखाबाद) में सड़क (जी० टी० रोड) के पास करीब पचास गज पर है।

34. हज़रत मौलाना शाह फ़ज़्ल अहमद ख़ाँ रायपुरी

आपकी मजार रायपुर में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

34. हज़रत मौलाना शाह फ़ज़्ल अहमद ख़ाँ रायपुरी

जीवन चरित्र

जन्मभूमि और माता-पिता

भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश राज्य के जिला फर्रुखाबाद में एक तहसील कायमगंज है । इसी तहसील के कस्बा रायपुर में हुज़ूर महाराज का जन्म 1847 ई० में हुआ था । यहीं आप का पालन-पोषण हुआ तथा कुछ वर्षों को छोड़ कर, जबकि वह जीविकोपार्जन के लिए फर्रुखाबाद में रहे, आप का अधिकांश जीवन यहीं रायपुर में ही व्यतीत हुआ । जीवन काल के अन्तिम समय में इसी स्थान पर आपने विसाल फ़रमाया (पार्थिव शरीर त्याग दिया) ।

आपके पूज्य पिताजी का शुभ नाम ज़नाब गुलाम हुसैन साहिब था, जो कश्मीर के महान सूफ़ी सन्त हज़रत मौलाना वलीउद्दीन साहिब (रहम०) से बैअत थे (गुरु दीक्षा ली थी) और उनके खलीफ़ा भी थे। वह फौज में 'निशान बरदार' के पद पर कार्यरत थे।

हुज़ूर महाराज की पूज्य माताजी हज़रत मौलाना अफ़जल शाह नक़्शबन्दी मुजद्दिदी (रहम०) से बैअत थीं। हजरत मौलाना शाह साहिब जो मौलाना अबुल हसन नसीराबादी (रहम०) के मुरीद व खलीफ़ा थे बड़ी मुहब्बत से पूज्य माताजी के क़ल्ब (हृदय) की तरफ तवज्जोह देते थे और उनके विषय में फ़रमाते थे कि मेरी बेटी 'मशीयते एज़दी' तब्दील कर देती है (वह ईश्वर की इच्छा और उसका विधान भी बदलने की क्षमता रखती है)। विश्व के विभिन्न धर्मों में ऐसी घटनाएं सुनने और देखने को मिलती हैं जहाँ ईश्वर अपने परम भक्तों की फरियाद (विनती) और आग्रह को स्वीकार करने के लिए वह अपना दैवी विधान भी बदल देता है।

इसी सन्दर्भ में हुज़ूर महाराज की पूज्य माताजी की परम भक्ति और ईश्वर प्रेम के विषय में एक भजन की निम्नांकित पंक्तियाँ याद आती हैं -

प्रबल प्रेम के पाले पड़ कर,
प्रभु को नियम बदलने देखा।
उनका मान घटे घट जाये,
जन का मान न टलते देखा॥

पूज्य माताजी इन्तिहा दर्जे की नेक, पारसा (संयमी) और सीधी थीं। उनके स्वभाव में अपने-पराये की भावना छू तक नहीं गई थी और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सारा विश्व ही कुटुम्ब के समान है) - इस सिद्धांत को उन्होंने अपने जीवन में पूर्ण रूप से उतार लिया था। उनके स्वभाव के इस अलौकिक गुण की प्रशंसा करते हुए हुज़ूर महाराज के गुरु भाई हजरत मौलाना हाज़ी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब अपनी एक घटना सुनाया करते थे। एक दिन हुज़ूर महाराज के छोटे भाई हज़रत मौलवी विलायत हुसैन खाँ साहिब और हज़रत मौलाना हाज़ी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब दोनों एक परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए जाने लगे। दोनों ने अलग-अलग पूज्य माताजी से अर्ज़ किया, 'माई, मेरे लिए दुआ कीजिएगा'। उन्होंने फ़रमाया, 'अच्छा- इन्शा अल्लाह मैं दुआ

करूंगी' । जब दोनों परीक्षा देकर वापस आये तो पहले ज़नाब हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब ने दरियाफ़्त किया- माई ! क्या आपने मेरे लिए दुआ की थी ? उन्होंने फ़रमाया, 'हाँ मैंने तेरे लिए दुआ की थी', लेकिन जब उनके लड़के हुज़ूर महाराज के छोटे आई साहिब ने उनसे दरियाफ्त किया तो उन्होंने साफ बतला दिया कि जब मैं तेरे लिए दुआ करने को होती तो तेरी जगह उसका (ज़नाब हाज़ी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब का) नाम मेरी ज़ुबान पर आ जाता था। इसलिए मैं उसके लिए तो दुआ करती रही लेकिन तेरे लिए दुआ करना भूल गई। यह थी उनके प्रेम की व्यापकता कि अपने सगे लड़के के लिए दुआ करना भूल गईं, लेकिन ज़नाब हाज़ी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब के लिए बराबर दुआ करती रहीं जिनको वह अपने सगे लड़के से ज्यादा प्यार करती थीं।

उक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि हुज़ूर महाराज के पूज्य माता-पिता दोनों ही परम सन्त तथा उच्च कोटि का आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले आदर्श मानव थे। उनकी पूज्य माताजी परम सन्त होने के साथ ही साथ श्रेष्ठ मानवता की जीवन्त प्रतिमूर्ति ही थीं। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी परम सन्त आदर्श माता की कोख से जन्में हुज़ूर महाराज ने धार्मिक एवं साम्प्रदायिक एकता तथा सर्व धर्म समन्वय के क्षेत्र में जिस नूतन आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया, वह उनके परिवार के उत्कृष्ट आध्यात्मिक संस्कारों के अनुरूप ही था।

हुज़ूर महाराज के पूज्य सत गुरुदेव
हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहिब (रहम०)

कायमगंज जिला फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में एक महान सूफी सन्त हज़रत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहिब मऊरशीदाबादी कायमगंजी (रहम०) निवास करते थे। कायमगंज को पुराने समय में मुऊरशीदाबाद कहते थे। इसलिए ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब (रहम०) के नाम के आगे मऊरशीदाबादी भी लिखा जाता है।

आप फारसी और अरबी के महान विद्वान थे और इन भाषाओं के कठिन से कठिन ग्रन्थ आपको कंठस्थ थे। आप फारसी के काव्य ग्रन्थ 'गुले क़िश्ती', 'बदरचाह',

'मसनवी हलाली' इत्यादि को बड़े रोचक ढंग से पढ़ाते थे। धर्मशास्त्र और शरीअत से सम्बन्धित तथ्यों की व्याख्या करने में आपको पूर्ण दक्षता हासिल थी। क़ुरआन शरीफ को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की कला में भी आप पूर्ण दक्ष थे। इस विषय पर आपने कई पुस्तिकाएँ लिखी हैं। आपने दो दीवान (कविताओं के संग्रह) और एक काव्य ग्रन्थ 'महारबा काबुल' लिखा है। गद्य लेखन में भी आप की योग्यता अद्वितीय थी। आपने एक पुस्तक 'फ़तवाए अहमदी' लिखी है। आप धर्म पालन में बड़े सख़्त और सुन्नत (वह कार्य जो पैगम्बर साहिब सल्ल० ने किया हो) के अनुयायी थे। आप अक्सर फ़रमाते थे कि सुन्नत का अनुकरण करने से आदमी महबूब (ईश्वर और हज़रत पैगम्बर साहिब सल्ल० का प्रेम पात्र) हो जाता है।

ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के पास जो लड़के पढ़ने आते थे उनमें हुज़ूर महाराज भी थे जो बहुत ही तीव्र बुद्धि के तथा आज्ञाकारी स्वभाव के थे। ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के परिवार में केवल उनकी धर्मपत्नी और उबका एक लड़का था जिसका नाम अब्दुला था। जब यह लड़का 15-16 वर्ष का हुआ तो अचानक उसकी मृत्यु हो गई। इस विरह से सब को बड़ा दुःख हुआ, विशेष रूप से लड़के की माँ को। वे दिन-रात उसकी याद में रोया करती थीं। एक दिन ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने अपनी पत्नी को समझाया कि रोने से कुछ फायदा नहीं, जिस हालत में परमात्मा ने रखा है, उसमें खुश रहो। वह बोलीं, 'मैं बहुत कोशिश करती हूँ मगर सब्र नहीं आता, बराबर उसकी याद आ-आकर रुलाती है।' आपने कहा, 'तुम फज़्लू (हुज़ूर महाराज) को ही अपना बेटा क्यों नहीं समझ लेती?' बस ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की यह बात सुनते ही उनकी धर्मपत्नी के दिल की कुछ ऐसी कैफियत हो गई कि वह उसी दिन से हुज़ूर महाराज को अपना बेटा मानने लगीं और हुज़ूर महाराज भी उनको अपनी सगी माँ मानने लगे। यह भी एक संयोग की बात थी कि ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के पुत्र 'अब्दुल्ला' हुज़ूर महाराज के हम शक्ल थे (दोनों की शक्ल एक-सी थी)। यह जानकारी इस लेखक को हुज़ूर महाराज के सगे पोते पूज्य ज़नाब शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब ने अपने एक पत्र में देने की कृपा की थी।

परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की धर्मपत्नी के विषय में पूज्य चच्चा जी महाराज ने एक बार कानपुर सत्संग के अवसर पर हुज़ूर महाराज के जीवन की कुछ

घटनाएं सुनाते हुए यह फ़रमाया था कि ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब अपने विसाल के वक्त अपनी धर्मपत्नी को हुज़ूर महाराज के ही सुपुर्द कर गये थे। वह उनके शरीरान्त के बाद वहीं कायमगंज में अपने नवासों के यहाँ रहने लगी थीं। यद्यपि उनके नवासों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी लेकिन वह उनके मकान के सामने ही एक फूस की झोंपड़ी डलवा कर रहती थीं। उनके भोजन, वस्त्र आदि की व्यवस्था हुज़ूर महाराज ही अपनी ओर से करते थे। उनके लिए सतनजा अनाज खरीद देते थे (जो उनको पसन्द था) और छठे महीने में उनके लिए कपड़े बनवा देते थे। वह इतना सादा भोजन करती थीं कि उस सतबजा अनाज की खुश्क रोटियाँ ही अक्सर खा लेती थीं। साथ में कोई सब्जी और दाल भी नहीं लेती थीं। परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की धर्मपत्नी के विषय में पूज्य चच्चाजी महाराज का उक्त कथन इस लेखक को उनके शिष्य श्रीमान बृजनारायण जी मेहरोत्रा की दैनिक डायरी दिनांक 13-11-42 में पढ़ने को मिला था। जब तक वह जीवित रहीं हुज़ूर महाराज एक सगे पुत्र की तरह उनकी सेवा बड़ी निष्ठा के साथ करते रहे।

ज़नाब खलीफ़ा जी के स्वभाव में बेहद परदापोशी थी। कायमगंज के लोग उन्हें फ़ारसी और अरबी पढ़ाने के लिए एक विद्वान मौलवी शिक्षक के रूप में तो जानते थे और यह भी जानते थे कि वह सज्जन और ईश्वर भक्त हैं। लेकिन लोगों को यह नहीं मालूम था कि ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब सांसारिक विद्याओं के साथ ही साथ अध्यात्म विद्या के भी अथाह समुद्र हैं। हुज़ूर महाराज ने ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब का संक्षिप्त जीवन-वृतान्त तथा उनके उच्चतम आध्यात्मिक जीवन की कुछ घटनाएँ एक पुस्तिका में प्रकाशित की हैं। इस पुस्तिका का नाम है-'जमीमा हालात मशायख़ नक़्शबन्दिया, मुज़द्दिदिया, मज़हरिया' जो हुज़ूर महाराज द्वारा उर्दू भाषा में लिखी गई है। इस ज़मीमा के विषय में हुज़ूर महाराज ने इसकी भूमिका में लिखा है कि शुरु में आपका इरादा नक़्शबन्दिया सिलसिले की गुरु परम्परा के हालात, जो आपने एकत्र किये थे, छपवाने का था। उसी बीच आपको यह मालूम हुआ कि एक बहुत ही उपयुक्त पुस्तक 'हालात मशायख़ नक़्शबन्दिया मुज़द्दिदिया' मौलाना मुहम्मद हसन साहिब (निवासी कोटा, कीरतपुर, जिला बिजनौर) ने लिखी है। अत: उन्होंने अपनी पुस्तक छपवाने की जरूरत नहीं समझी, परन्तु उस पुस्तक में नक़्शबन्दिया सिलसिले के

शज्रः (गुरु परम्परा की वंशावली) के अनुसार तीन महापुरुषों के हालात नहीं थे। अत: उन्होंने उक्त जमीमा परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किया जिसमें इन तीन महापुरुषों के हालत लिखे हुए हैं :- हज़रत मौलाना मौलवी शाह मुरादुल्लाह (कु०सि०), हज़रत सैयद अबुल हसन साहिब नसीराबादी (कु०सि०) और हजरत सैयद खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहिब मऊरशीदाबादी (कु०सि०) । इस प्रकार मौलाना मुहम्मद हसन साहिब द्वारा लिखित पुस्तक तथा हुज़ूर महाराज द्वारा रचित जमीमा इन दोनों पुस्तकों को एक साथ मिला कर पढ़ने से नक़्शबन्दिया सिलसिले के सभी महापुरुषों के हालात शज्रः शरीफ के मुताबिक क्रमवार हज़रत पैगम्बर मोहम्मद साहिब (सल्ल०) से लेकर हजरत खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहिब (रहम०) तक मिल जाते हैं।

ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने नौ रबी उल अव्वल तेरह सौ सात हिजरी बरोज़ दो शम्बा विसाल फ़रमाया। आपकी पवित्र मज़ार गुजरी नूरखाँ व कुबेरपुर (कायमगंज) के नज़दीक जो कब्रिस्तान नन्दू खाँ का मशहूर है, वहाँ मस्जिद के निकट स्थित है। ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के पुत्र अब्दुल्ला की कब्र खलीफ़ा जी साहिब की मजार शरीफ के बराबर बनी है। इससे मिली हुई पूर्व दिशा में बव्वाजी (पूज्य खलीफ़ा जी साहिब की धर्मपत्नी) की है। पूज्य खलीफ़ा जी साहिब के पाँइती में कच्ची कब्र आपके नवासे जवाब अली शेर खाँ साहिब की है जो हुज़ूर महाराज के खलीफ़ा थे।

परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की मज़ार शरीफ़ शुरु में कई वर्षों तक मिट्टी तथा पुरानी ईटों से बनी हुई हालत में रही। बाहर से आने वाले सत्संगी भाइयों को उनकी मज़ार शरीफ़ को ढूंढ़ने में बड़ी असुविधा होती थी क्योंकि वहाँ मज़ार पर कोई ऐसा निशान अथवा ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब का नाम भी नहीं लिखा हुआ था। इस असुविधा को दूर करने के लिए हुज़ूर महाराज के पौत्र ज़नाब शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब ने उस मज़ार को पुख्ता बनवाने का इरादा किया।

उन्होंने ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की मज़ार शरीफ़ की तामीरात (निर्माण कार्य) के लिए मिस्त्री जिसका नाम मुअज्ज़म खाँ था नियुक्त किया, वह पक्के नमाज़ी और शरीअत के पाबन्द थे। वह बावुज़ू (पवित्र) होकर कार्य करते थे। उक्त मज़ार शरीफ़ का चबूतरा तामीर (निर्मित) होने के बाद जब उसकी ताबीज बना रहे थे तो उस मज़ार के अन्दर से उन्हें यह आवाज सुनाई दी, 'मियाँ ! क्या कर रहे हो ? फ़क़ीर तो गुमनाम

ही रहा करते हैं।' बस यह आवाज़ सुन कर वह वहाँ से उठे और ज़नाब मंज़ूर अहमद खाँ साहिब के पास आये और बोले, 'मौलाना साहिब, यह एक ज़िन्दा वली की मज़ार है। मुझे इस तरह की आवाज सुनाई दी है कि फ़क़ीर तो गुमनाम ही रहा करते हैं।' अब आप क्या कहते हैं ? यह काम मेरी हिम्मत के बाहर है।

मियाँ मुअज्ज़म की ऊपर लिखित बात का ज़नाब शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब ने जो जवाब दिया तथा इस विषय में उन्होंने ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब से जो दुआ की उसके बारे में यह लेखक उन्हीं के शब्दों में लिख रहा है- 'मैंने उनको (मियाँ मुअज्जम को) तसल्ली देकर कहा, अब मैं हजरत साहिब से (पूज्य खलीफ़ा जी साहिब से) अपने मुर्शिद के वास्ते से अर्ज करता हूँ। आप भी मेरे हक में सिफारिश करें। इस ख़ादिम बे अपने पीरो मुर्शिद हजरत मौलाना अल्हाज़ शाह अब्दुल ग़नी खाँ आफ़रीदी नक़्शबन्दी, मुजद्दिदी, मज़हरी, नईमी, फ़ज़्ली (रहम०) के वास्ते से यह अर्ज़ किया कि, 'या हज़रत ! यह सच है कि फ़क़ीर गुमनाम ही रहा करते हैं, मगर हम जैसे बन्दे गुनहगार किस तरह से आपके यहाँ हाज़िरी दे सकें। आप का मज़ार शरीफ़ आम कब्रिस्तान में है। हम भूल जाते हैं (उसको पहचानने में); इसलिए सिर्फ़ निशान चाहते हैं ताकि मुझको व दीगर आने वाले भाइयों को हाज़िरी देने में आसानी हो। यह मेरी दिली ख़्वाहिश है। उसे आप कबूल फ़रमायें और हम सब पर निगाहें करम हमेशा बनायें रखें। खुदा का शुक्र है कि आज वहाँ छत पड़ गई है और चार दिवारी हो गई है- वर्ना धूप और गोखरू (काँटे) इस क़दर थे कि एक कदम चलना या दस मिनट वहाँ बैठ कर फातेहा पढ़ना कठिन था।'

एक वाक़या इस ग्रन्थ के लेखक ने अपनी दैनिक डायरी दिनांक 2-4-53 में अभी हाल ही में पढ़ा जो परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब (रहम०) की मजार से सम्बन्धित है। इसका उल्लेख यह सेवक अपनी डायरी में लिखे हुये शब्दों में ही इस प्रकार कर रहा है:- दिनांक 2-4-53 को कायमगंज स्टेशन से उतर कर हम लोग पहले परदादा गुरु महाराज (परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब रहम०) की पवित्र समाधि के लिए रवाना हुए। रास्ते में पूज्य मेहरोत्रा साहिब ने (श्रीमान बृजनारायण जी मेहरोत्रा जो पूज्य चच्चाजी महाराज के शिष्य थे) मुझसे और श्रीमान ईश्वर दत्त जी शर्मा से फ़रमाया कि हम लोगों को एकदम चच्चाजी में फ़ना होकर परदादा गुरु महाराज के

सामने हाजिर होना चाहिए। इतनी बड़ी हस्ती के सामने बिल्कुल चच्चाजी महाराज में फ़ना होकर चलना बहुत ही जरूरी है। जब हम लोग नजदीक पहुँचे, मुझको अन्दर से इस बात का खौफ लग रहा था कि उनके सामने कोई गैर ख्याल न आ जाये। बस ज्यों ही मैं उनके सामने पहुँचा, एकदम आँखों में आँसू आ गये और मैं रो पड़ा। पूज्य मेहरोत्रा साहब और श्रीमान शर्मा जी भी रो पड़े। कुछ मिनटों के बाद हम लोग वहीं जमीन पर बैठ गये। पूज्य परदादा गुरु महाराज की समाधि में कुछ पुरानी ईटें लगी हुई थीं। कोई नया आदमी तो उसको पहचान ही नहीं सकता था। उस समय कड़ी धूप थी और जमीन काफी तप रही थी लेकिन वहाँ जहाँ हम लोग बैठे हुए थे एक अजीब वातावरण पैदा हो गया। फौरन ठंडी हवा चलती हुई महसूस हुई। उस जमीन पर गोखरू और कांटे पड़े हुए थे लेकिन ज्यों ही हम लोग वहाँ बैठे वह जमीन एकदम गद्दे की तरह मुलायम और ठंडी मालूम होने लगी। हम लोग थोड़ी देर पूजा करने के बाद उठे। हुज़ूर महाराज के पौत्र परम पूज्य शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब हम लोगों के साथ थे। उन्होंने उस जमीन की मिट्टी हम लोगों को दी और फ़रमाया कि इस मिट्टी में भी बहुत असर है। उन्होंने प्रसाद के बताशे हम लोगों को दिए।

ज्यों ही हम लोग वापस चलने को हुए कि एक बुढ़िया आकर खड़ी हो गई और परदादा गुरु महाराज का नाम लेकर कहने लगी कि क्या उनकी मजार पर आये हो। ज़नाब शाह मंज़ूर अहमद खाँ साहिब ने फ़रमाया कि जी हाँ। उन्होंने उस बुढ़िया से परदादा गुरु महाराज के खानदान वालों के बारे में पूछा तो उसने कहा कि हाँ इसी सरईयाँ मुहल्ले में रहते हैं उनके नवासे के लड़के। हम लोगों ने पूछा क्या वह अभी घर पर होंगे ? उसने कहा, हाँ जरूर मिलेंगे। औरतें तो होंगी ही। हम लोग उस घर में पहुँचे जहाँ उस समय परदादा गुरु महाराज (पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब) के नवासे के लड़के रहते थे। उस समय घर में कोई मर्द तो थे नहीं। खेतों में शायद चले गये थे। औरतें थीं। हम लोग उस महान पवित्र कोठरी में गये जहाँ परदादा गुरु महाराज ने बरसों खुदा की इबादत की थी। वहाँ पहुँचते ही हम लोगों को एक ऐसी अपूर्व शान्ति का अनुभव हुआ जो वर्णन के परे थी।

उक्त घटना के अलावा एक घटना की जानकारी ज़नाब मंज़ूर अहमद खाँ साहिब (हुज़ूर महाराज के पोते) ने अपने एक पत्र में इस लेखक को दी थी, जो उन्हीं के शब्दों

में दी जा रही है-

'इस ख़ादिम ने उस कोठरी का दीदार किया है (जहाँ ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने बरसों इबादत की थी) बड़ी पुर रौनक जगह है। मेरी मुलाकात मजार शरीफ की तामीर (निर्माण) के वक्त ज़नाब अली शेर खान साहब के दामाद नजर मुहम्मद खान साहब से हुई थी। वह मुझे घर ले गये थे। यह मुलाकात 12-4-75 को हुई थी। एक बार मेरे साथ में मेहरोत्रा साहिब (श्री बृजनारायण मेहरोत्रा) व पूज्य श्रीमान् बाबू भोला नाथ भल्ले साहब एस०पी० (पुलिस अधीक्षक); ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की खानकाह में (कोठरी में) गये थे। वह जगह ऐसी थी कि हम लोग हैरान रह गये यानी वहाँ पर इतना तेज ज़िक्र हो रहा था जो हम लोगों को बरदाश्त नहीं हो रहा था। एक खास बात वहाँ घरवालों ने बताई कि अगर किसी बच्चे को रोना (चीख) लग जाये या कोई नज़र का असर हो जाये तो उस मरीज़ को उस कोठरी में डाल दें तो वह मरीज या बच्चा फौरन ठीक हो जाता है। घरवालों ने (ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के नवासे के दामाद ने) ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब का एक जोड़ा कपड़ा व जानमाज भी हम लोगों को दिखाया था।

परम पूज्य ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब (रहम०) की पैदल सफ़र करने की असीम सामर्थ्य का जिक्र करते हुए हजरत मौलवी हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब (रहम०) ने कानपुर में सत्संगी भाइयों को एक घटना दिनांक 14-11-42 को सुनाई थी जो इस प्रकार है - एक दफ़ा ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब किसी साहब से मिलने के वास्ते कायमगंज से फर्रुखाबाद हुज़ूर महाराज को साथ लेकर रवाना हुए, मगर फर्रुखाबाद पहुँचने पर पता चला कि वह साहब कायमगंज गये हुए हैं। आप फौरन वहाँ से लौट पड़े और फर्रुखाबाद से कायमगंज गये। वहाँ पता लगा कि वह लखनऊ गये हुए हैं। आप फौरन ही वहाँ से लौटे और फर्रुखाबाद पहुँचे। ज़नाब हुज़ूर महाराज ने सोचा कि शायद यहाँ ठहर कर आप फिर चलेंगे। मगर ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब वहाँ भी न रुके। हुज़ूर महाराज ने आप से अर्ज किया कि साहिब मैं तो यह समझता था कि कहीं आप ठहर जायेंगे। आपने फ़रमाया, अच्छा तुम मेरे पीछे यह दो अल्फ़ाज (शब्द) कहते हुए चले आओ। खुदा चाहेगा तो तुम्हें थकान महसूस न होगी। अत: ऐसा ही हुआ। एक मस्जिद पर पहुँच कर आपने कुएँ से पानी भरा और वुज़ू वगैरह से फरागत

होकर आपने हुज़ूर महाराज के वास्ते पानी रख दिया और आकर उनके पैर दबाने बैठ गये। हुज़ूर महाराज थक तो गये ही थे, इसलिए आकर लेटे हुये थे। आपने जब अपने गुरु महाराज (ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब) को देखा कि वह उनके पैर दबा रहे हैं तो फौरन उठ कर बैठ गये और मुआफ़ी माँगने लगे । ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने फ़रमाया कि भाई तुम थक गये होंगे, इस वास्ते तुम्हारे पैर दबाने लगा हूँ। हुज़ूर महाराज ने अर्ज किया कि मैं थका नहीं हूँ। आपने फ़रमाया कि अगर थके न होते तो नमाज पढ़ लेते। हुज़ूर महाराज फौरन उठे और वुज़ू के वास्ते कुएँ से पानी भरने के लिए चले, तो ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे वास्ते पानी पहले ही भरकर रख आया हूँ। हुज़ूर महाराज ने अपने हाथ-मुँह धो कर नमाज अदा की।

एक बार हुज़ूर महाराज के गुरु भाई मौलाना शाह हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब (रहम०) ने कानपुर में सत्संगी भाइयों से ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब (रहम०) की शक्ल, सूरत और डील-डौल के विषय में फ़रमाया था कि, 'ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब नाटे, दोहरे बदन के और गंदुमी रंग के थे। आपका चेहरा मय दाढ़ी के बिलकुल गोल था। आप पठान थे।' जितने भी काबुली पठान हैं मय अमीर काबुल के खानदान के सब के सब इसी सिलसिले के हैं।

हुज़ूर महाराज की शिक्षा और जीविकोपार्जन

हुज़ूर महाराज ने मिडिल स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात नार्मल ट्रेनिंग में प्रवेश लिया। वहाँ की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने अरबी और फारसी की तालीम हजरत ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब से हासिल की जो उनके पूज्य गुरुदेव भी थे। उस जमाने में नार्मल ट्रेनिंग करने के बाद फौरन ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूलों में अध्यापक के पद पर नियुक्ति हो जाती थी। परन्तु हुज़ूर महाराज ने इस ख़्याल से कि उन्हें अपने पूज्य गुरुदेव (हजरत ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब) की सेवा से वंचित होना पड़ेगा, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूलों में अध्यापक पद पर जाना स्वीकार नहीं किया और आजीवन अपने पूज्य गुरुदेव के निकट सम्पर्क में रहते हुए उनकी सेवा में लगे रहे। हुज़ूर महाराज खाली समय में मुहल्ले तथा क़स्बे के लड़कों को उर्दू फारसी की शिक्षा देते थे। उनमें से अधिकांश लड़के तो गरीब परिवारों

के होते थे। अत: हुज़ूर महाराज उन्हें बड़े प्रेम से निःशुल्क शिक्षा देते थे। केवल कुछ अच्छे परिवारों के लड़के जो कुछ भी श्रद्धा पूर्वक पारिश्रमिक के रूप में हुज़ूर महाराज को दे देते, उसे वह सहर्ष स्वीकार कर लेते और उसी में अपनी गुजर-बसर करते। हुज़ूर महाराज ने अपने जीविकोपार्जन की एक नसीहत आमेज़ (शिक्षाप्रद) घटना अपनी पुस्तक 'जमीमा हालात मशायख नक़्शबन्दिया' में लिखी है, जो उन्हीं के शब्दों में नीचे अंकित की जा रही है –

"एक बार मैं बेकार हो गया था और दसवीं तारीख माह दिसम्बर की थी। आपने (हजरत खलीफ़ा जी साहिब ने) मुझसे दरियाफ्त किया-किस क़दर तनख्वाह में (कितने वेतन में) तुम्हारी गुजर हो जायेगी? मैंने अर्ज किया कि हजरत, पाँच रुपया माहवारी अलावा खुराक के वास्ते दुआ कीजिएगा। हजरत ने जरा से तअम्मुल (विचार) के बाद फ़रमाया कि तुम पहली दिसम्बर से इस तनख्वाह पर नौकर हो गये। यह सुन कर मुझे यकीन न हुआ। फिर हजरत ने फ़रमाया कि तुझे यह बात झूठी मालूम हुई ? मैंने अर्ज किया कि हजरत सच होगी, मगर दसवीं तारीख तक मुझे खबर न हो, यह कैसी बात है। उस वक्त हजरत खलीफ़ा जी साहिब ने बन्दा को नसीहत की कि, अपने मक्शूफात को (गुप्त बातों को जो आध्यात्मिक साधना से प्रकट होने लगती हैं) सब लोगों से छिपाना चाहिए। देखो, तुम-सा मुरीद मुख्लिस (निष्ठावान शिष्य) भी यकीन नहीं करता तो फिर औरों से क्या उम्मीद हो ? जब मैं हजरत से जुदा हुआ तो उसी वक्त अपनी नौकरी का हाल मालूम हो गया कि मुन्शी बद्रीप्रसाद वकील ने जराद में नौकर करा दिया है। उसी वक्त अपने काम पर गया और बीस रोज बाद पूरी तनख्वाह पायी (पहली दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक का पूरा वेतन प्राप्त किया।)"

जैसा कि ऊपर निवेदन किया जा चुका है कि हुज़ूर महाराज खाली समय में मुहल्ले तथा क़स्बे के लड़कों को उर्दू फारसी की शिक्षा प्रदान करते थे। जब वह वृद्ध हो चले और उनकी आर्थिक स्थिति ठीक न रहने लगी तो उन्होंने फर्रुखाबाद के मिशन स्कूल में उर्दू, फारसी की शिक्षा देने के लिए अध्यापक के पद पर कार्य करना स्वीकार कर लिया। फर्रुखाबाद में हुज़ूर महाराज ने मुफ्ती साहब के मदरसे के नजदीक रहने के लिए एक कोठरी ले रखी थी। यहाँ भी वह फुर्सत के समय मदरसे के लड़कों को उर्दू, फारसी और अरबी की तालीम देते थे। यहाँ पर हुज़ूर महाराज के

परम शिष्य महात्मा रामचन्द्र जी महाराज प्रथम बार उनके सम्पर्क में आये। (इस घटना का विस्तृत विवरण अगले अध्याय में दिया जा रहा है।) महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के साथ ही धीरे-धीरे कई हिन्दू सत्संगी भाई हुज़ूर महाराज की सेवा में उपस्थित होकर उनसे रूहानियत की तालीम (आध्यात्मिक शिक्षा) ग्रहण करने लगे। फर्रुखाबाद के कुछ रूढ़िवादी और कट्टरपंथी मुसलमानों को हुज़ूर महाराज का यह उदार दृष्टिकोण पसन्द न आया। अत: उन लोगों ने हुज़ूर महाराज को विभिन्न प्रकार से परेशान करना आरम्भ कर दिया। हुज़ूर महाराज बड़े ही निर्भीक और उदार दृष्टिकोण वाले महापुरुष थे। वह ऐसे संकीर्ण और रूढ़िवादी मुसलमानों की आलोचना और विरोध की परवाह न करते हुए हिन्दुओं और अन्य धर्मावलम्बियों को बिना किसी धार्मिक भेदभाव के अपनी रूहानियत की तालीम से फैज़याब (लाभान्वित) करते रहे।

अन्ततोगत्वा एक दिन रात्रि के समय हुज़ूर महाराज के दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि अब ईश्वर की यह मर्जी है कि यह स्थान त्याग दिया जाये। अत: उन्होंने उसी समय 'अल्लाहो अक़बर' का एक तेज नारा लगाया और अपने निवास स्थान रायपुर को प्रस्थान कर गये और अन्त समय तक वहाँ निवास किया। रायपुर में उस समय तक बहुत से सत्संगी भाई उनकी सेवा में उपस्थित होने लगे थे और उनका अधिकांश समय रूहानियत की तालीम में ही व्यतीत होता था। फिर भी वह कुछ समय निकाल कर मुहल्ले के बच्चों को बड़ी मुहब्बत से उर्दू, फारसी की शिक्षा देते थे। इस प्रकार हुज़ूर महाराज का अधिकांश जीवन अध्यात्म शिक्षण के साथ ही साथ अध्यापन कार्य में व्यतीत हुआ।

हुज़ूर महाराज का आध्यात्मिक जीवन

जैसा कि निवेदन किया गया है कि हजरत खलीफ़ा जी साहिब के पास जो लड़के उर्दू और फारसी की शिक्षा ग्रहण करने आते थे, उनमें से एक हुज़ूर महाराज भी थे। सर्वप्रथम हुज़ूर महाराज ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के सम्पर्क में केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करने आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन पर ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब के आत्म ज्ञान का रंग चढ़ता गया और वह 19 वर्ष की आयु में ज़नाब खलीफ़ा जी के हाथों बैअत (दीक्षित) हुए। हुज़ूर महाराज ने स्वयं अपने विषय में लिखा है कि जब वह ज़नाब

खलीफ़ा जी से बैअत हुए, तब से बराबर दोनों वक्त सुबह-शाम बीस बरस तक आपकी खिदमत में हाजिर होकर तवज्जोह ली और अजीब वारदातें (हालातें) पैदा हुई। हुज़ूर महाराज को उनके पूज्य गुरुदेव ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने जिस प्रकार इज़ाज़त अता की और अपना खलीफ़ा बनाया, उससे सम्बन्धित पूरी घटना का वर्णन हुज़ूर महाराज ने अपनी पुस्तिका 'जमीमा हालात मशायख नक़्शबन्दिया मुज़द्दिदिया' में अंकित किया है, जो अक्षरशः उन्हीं के शब्दों में दिया जा रहा है। (केवल कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ को कोष्ठक में दिया गया है।) : -

"हजरत खलीफ़ा साहिब की शान उन मक़ातीब (पत्रों) से जाहिर होती है जो हजरत सैय्यदना ने (हजरत सैय्यद अबुल हसन साहिब नसीराबादी ने जो हजरत खलीफ़ा जी साहिब के पूज्य गुरुदेव थे) आपके नाम इर्साल फ़रमाये हैं (भेजे हैं) और इस फ़क़ीर सरापा तक्सीर फज़्ल अहमद खाँ (हुज़ूर महाराज) को इनायत फ़रमाया है और असल ख़तूत (पत्र) भी दिये और फ़रमाया, 'यह सामान तुम्हारे काम का है, तुम रखो, अल्लाह मुबारक करें।' एक मक़्तूब (पत्र) में सैय्यदना फ़रमाते हैं कि तुम से एक आलम (संसार) मुनव्वर (प्रकाशमान) होगा और यह अम्र (आदेश) आपके कुत्बकु इर्शाद होने की दलील है। (आध्यात्मिक तालीम, उपदेश तथा आदेश देने के लिए पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त महात्मा होने का प्रमाण है।) दूसरी जगह लिखा है कि कुफ़्फ़ार को (नास्तिक लोगों को) राह चलतों को, फासिको (पापियों को), बदएतों को शुराचारियों को) तवज्जोह दोगे तो वे कामिलुल-ईमान होंगे (धर्म और ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखने वाले बनेंगे)। तीसरी जगह फ़रमाया, जो तुम को मिला इस जमाने में शायद किसी को मिला हो। मेरे मुर्शिदना अहमद अली खाँ साहिब ने जब बन्दा को इज़ाज़त और ख़िलाफ़त की इज्जत बख़्शी तो अव्वल मकतूब को फ़रमाया कि पढ़ लो। चुनाँचे गुलाम ने पढ़ा। जब खत्म हो चुका तो फ़रमाया कि फज़्ल अहमद, यह बातें हमसे तो कुछ न हुई। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत अब इन्शा अल्लाह तआला जुहूर फर्मा होंगे (प्रकट होंगे)। हजरत ने फ़रमाया, अब हम ग़ोर किनारह हुए (हमारा अन्त समय निकट आ गया है), चन्द दिनों के मेहमान हैं। बन्दा यह सुन कर रोने लगा। आपने फ़रमाया, 'शाबास, यह वक्त रोने का है ?' मआन (तत्काल) मेरे क़ल्ब में बशाशत व सुरूर (आत्मिक आनन्द का हल्का नशा) पैदा हुआ। सुन कर फ़रमाया,

यह बातें खाली न जायेंगी। इनका जुहूर अब तुम से होगा। यह हजरत का इर्शाद सच हुआ। इस अहकर से अक्सर हिन्दुओं और ईसाइयों और शियों को फायदा पहुँचा। अलहम्दु लिल्लाह (तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं)। इसके बाद हजरत मुर्शिदना खलीफ़ा जी साहिब ने फ़रमाया कि, 'अब तक तो तुम खूब आराम से रहे। अब मैं एक बार अज़ीम (बहुत बड़ा बोझ) और अम्र फख़ीम (प्रतिष्ठित कार्य) सुपुर्द करता हूँ। अगर बजा लाओगे तो अँबिया और औलिया के साथ मशहूर रहोगे (क़यामत के दिन जिन्दा किये जाओगे) वरना यही खिर्कः (वस्त्र, लिबास) दोज़ख़ (नर्क) को खींच ले जायेगा। कमतरीन बहुत रोया और अर्ज़ किया कि, हजरत बन्दे को मुआफ़ फ़रमाइये। खलीफ़ा जी साहिब ने फ़रमाया, खुदा आसान करेगा, और गुलाम के वास्ते दुआ की, फिर हजरत सैय्यदना की अतीयः तबर्रुकात (प्रसाद एवं उपहार रूप में प्राप्त वस्तुएँ) तलब फ़रमा कर उसमें से हजरत की तस्बीह (जप करने की माला और कुर्त्ता शरीफ़ की आस्तीन मुबारक एक टुकड़ा दस्तार (पगड़ी) शरीफ़ और एक कुलाह (टोपी), अपना कुर्त्ता मरहमत फ़रमाया (देने की कृपा की) और यह फ़रमाया कि हर एक बुजुर्ग अपने खलीफ़ा को अपना तबर्रुक (प्रसाद) दिया करता है। ज़िहेनसीब तुम्हारे (वाह! तुम्हारा सौभाग्य है) कि तुम को हजरत सैय्यदना अबुल हसन साहिब के तबर्रुकात मिले। शुक्र इस अतीयः (उपहार) का करना चाहिए।"

उक्त विवरण पढ़ने से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने हुज़ूर महाराज को इज़ाज़त और ख़िलाफ़त बख़्शते समय उन्हें जो आशीर्वाद दिया, वह आज अक्षरशः सत्य घटित हो रहा है। सम्भवतः नक़्शबन्दिया सिलसिले में हुज़ूर महाराज पहले सूफी सन्त थे, जिन्होंने मुसलमान सूफी सन्तों की इस गुप्त आध्यात्मिक विद्या का प्रचार हिन्दुओं में बिना किसी धार्मिक भेद-भाव के किया। वह यद्यपि इस्लाम धर्म के अनुयायी थे, परन्तु धार्मिक पक्षपात से पूर्णतया मुक्त थे। वह कभी भी विभिन्न धर्मों के वाद-विवाद में नहीं पड़ते थे और न कभी आप किसी धर्म की आलोचना करते थे। यदि किसी स्थान पर किसी धर्म की आलोचना की जाती थी तो आपको अच्छा नहीं लगता था और वहाँ से उठ कर चले जाते थे। वह फ़रमाते थे कि दुनियाँ के सभी इनसानों में तर्ज़ रूहानियत (आध्यात्मिकता की पद्धति) एक है, परन्तु तर्ज़ माशरत (सामाजिक जीवन की पद्धति) अलग-अलग है। वह

सभी धर्मों को समुचित सम्मान देते थे और अक्सर फ़रमाते थे कि रूहानी जिन्दगी (आध्यात्मिक जीवन) मज़हबी बन्धनों से पूर्णतया मुक्त है। वह बाहरी आडम्बरों के विरुद्ध थे। एक बार उनके एक हिन्दू, शिष्य ने इस्लामी रहन-सहन ग्रहण कर लिया। जब उस पोशाक में वह शिष्य उनके पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अब तुम मेरे काम के नहीं। मैं अपनी फकीरी में धब्बा नहीं लगने दूँगा। तुम जैसे रहते थे वैसे ही रहो। बाहरी जीवन जिस समाज में पैदा हुए हो, उसी के अनुसार होना चाहिए। धर्म परिवर्तन को उन्होंने कभी पसन्द नहीं किया। बाहरी सामाजिक जीवन तथा आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन का भेद बतलाते हुए हुज़ूर महाराज प्राय: निम्नांकित पद्य-पंक्तियाँ सुनाया करते थे

जाति न पूछे साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
काम करो तलवार से, पड़ी रहन दो म्यान॥

वह हिन्दू, भाइयों से कहा करते थे, 'तुम मेरे पास आत्म-ज्ञान सीखने आये हो, वह तो सीखो, लेकिन अपनी रहनी-सहनी अपने समाज के अनुकूल ही रखो क्योंकि मेरा तुम्हारा आत्मिक संबंध है, दुनियावी नहीं।' चूंकि उस समय छुआ-छूत की प्रबलता थी, अत: वह अपने हिन्दू, शिष्यों को सूखी मिर्च तक अपने हाथ से नहीं देते थे। जो हिन्दू, भाई उनके यहाँ आते थे, उनके लिए भोजन बनाने की अलग व्यवस्था थी।

एक बार ज़नाब लालाजी साहिब (महात्मा रामचन्द्र जी) के एक गुरु भाई ने, जो मुसलमान थे, कहीं उनसे यह कह दिया कि बिना धर्म परिवर्तन के रूहानियत में आगे नहीं बढ़ा जा सकता। पूज्य महात्माजी ने हुज़ूर महाराज की खिदमत में हाजिर होकर उनसे अर्ज किया कि, 'हुज़ूर का हुक्म हो तो मैं इस्लाम क़ुबूल कर लूँ?' यह सुनते ही हुज़ूर महाराज की आँखों के डोरे लाल हो गये। उस वक्त उनके क्रोध को देख कर ज़नाब लालाजी साहिब चुपचाप खड़े रहे। इस स्थिति में हुज़ूर महाराज अन्दर गये और पुन: थोड़ी देर बाद आकर बोले, 'किस मर्दूद ने तुम से यह कह दिया ? फिर धीरे से लालाजी साहिब को समझाया कि यह आध्यात्मिक विद्या किसी मज़हब की ताबेदार नहीं है, रूहानियत मज़हब के दायरे से बहुत दूर है।'

हुज़ूर महाराज अपने पूज्य गुरुदेव के विसाल के कुछ समय बाद रायपुर में आकर

फर्रुखाबाद के मिशन स्कूल में उर्दू, फारसी पढ़ाने के लिए अध्यापन कार्य करने लगे थे। जहाँ फर्रुखाबाद में ही महात्मा रामचन्द्र जी के जीवन में जो चमत्कारिक परिवर्तन हुआ, उसका संक्षिप्त विवरण नीचे अंकित किया जा रहा है: -

महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के रहने का मकान छोटा होने के कारण उन्होंने अलग एक कोठरी किराये पर ले ली थी। इस कोठरी के पास ही दूसरी कोठरी में एक मुसलमान सूफी सन्त हजरत मौलवी फज़्ल अहमद खाँ साहिब रायपुरी (हुज़ूर महाराज) रहा करते थे। नौकरी मिलने के कुछ महीनों बाद एक दिन महात्मा रामचन्द्र जी को फतेहगढ़ कचहरी से लौटने में देर हो गयी। अन्धेरी रात थी, बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी, जाड़े के दिन थे, आप बारिश में बुरी तरह भीग गये थे। कपड़ों से पानी टपक रहा था और जाड़े की वजह से काँप रहे थे। आपकी हालत उस समय बहुत परेशानी की और रहम के काबिल थी। जब आप बड़े दरवाजे से होकर अपनी कोठरी की तरफ जा रहे थे, उस वक्त सूफी साहिब (हुज़ूर महाराज) की प्रेम भरी दृष्टि आप पर पड़ी। उनको बड़ी दया आई और कहने लगे, 'इस तूफान में इस वक्त आना।' महात्माजी कहा करते थे कि इन शब्दों में बड़ा प्रेम भरा हुआ था। आप ने बड़ी विनम्रता से आदाब पेश किया। हुज़ूर महाराज ने दुआ दी - अल्लाह अपना रहम करे, और बोले, 'बेटा, जाओ भीगे कपड़े बदल डालो, फिर हमारे पास आना और थोड़ी देर आग से हाथ-पैर सेंक कर तब घर जाना।' महात्माजी ने ऐसा ही किया और कपड़े बदल कर हाजिर हुए। हुज़ूर महाराज ने तब तक मिट्टी की अंगीठी में आग सुलगा रखी थी। महात्माजी ने सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर महाराज ने ऊपर आँख उठा कर देखा। आँख से आँख का मिलना था कि महात्माजी के शरीर में सिर की चोटी से लेकर पाँव की उँगलियों तक एक बिजली-सी दौड़ गयी। तन-बदन का होश जाता रहा। ऐसा मालूम होता था कि दोनों आत्माएँ मिलकर एक हो गई हैं। हुज़ूर महाराज ने बड़ी कृपा करके महात्माजी को अपने बिस्तर पर बैठा लिया और अपनी रज़ाई उढ़ा दी। महात्माजी कहा करते थे कि, 'उस वक्त एक अज़ीब आनन्द का अनुभव हो रहा था और एक कैफ़ियत मस्ती की थी। शरीर बहुत हल्का मालूम होता था और ऐसा लगता था कि मैं आसमान में उड़ रहा हूँ और सारा शरीर प्रकाश से देदीप्यमान है।' आप लगभग दो घंटे इसी हालत में बैठे रहे।

इतने में बारिश बन्द हो गई। आप आज्ञा लेकर घर चले आये। कोठरी के बाहर यह मालूम होता था कि एक प्रकाश फैला हुआ है जिसमें दरख़्त, दरो-दीवार, जानवर सभी वस्तुएँ नाच रही हैं। महात्माजी के पिण्डी और ब्रह्माण्डी तमाम चक्रों से ॐ शब्द जारी था और ऐसा मालूम होता था कि आप की जगह हुज़ूर महाराज ने ले ली है। आप जब घर आये तो खाना खाने को तबियत नहीं चाहती थी। बगैर खाये ही सो रहे। रात को स्वप्न में आपने फकीरों का एक बड़ा समूह देखा और उस समूह में हुज़ूर महाराज को और अपने आप को भी देखा। उस समय एक सिंहासन आसमान से उतरा, जिस पर एक तेजस्वी महापुरुष बैठे हुए थे। सब लोग उन महापुरुष को देख कर खड़े हो गये। हुज़ूर महाराज ने आपको उनकी सेवा में पेश किया। उन महापुरुष ने बड़ी मुहब्बत से आपकी ओर देखा और कहा कि इनका रुझान शुरु से ही परमात्मा की तरफ है।

दूसरे दिन सुबह आपने यह स्वप्न हुज़ूर महाराज को सुनाया। आप सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। आँखें बंद कर ली, ध्यान-मग्न हो गये। कुछ देर बाद आँखें खोली और कहा कि यह स्वप्न नहीं, सत्य है। तुम्हारी हस्ती जन्म से ही परमात्मा की तरफ मायल है (झुकी हुई है)। तुम धन्य हो। तुम को इस वंश के पूर्व महापुरुषों ने (नक़्शबन्दिया सिलसिले की गुरु परम्परा के सभी महापुरुषों ने) अपनाया है। तुम्हारा जन्म भूले-भटके जीवों को सच्चे रास्ते में लाने के लिए हुआ है। ऐसी आत्माएँ मुद्दत बाद आती हैं। तुम्हारी जो हालत पहली ही बैठक में हुई, वह मुद्दत की तपस्या के बाद किसी-किसी की होती है। जब कभी तुम मेरे सामने से निकलते और प्रणाम करते थे, मेरी तबियत तुम्हारी तरफ खिंचती थी, प्रेम का एक सैलाब (ज्वार-भाटा) सा उमड़ता था और इस तरह तुम मुझसे बराबर फैज़याब हो रहे थे। अल्लाह ने चाहा तो बहुत जल्द फ़नाफ़िश्शैख (गुरु में लय होना) ही नहीं, बल्कि फ़नाफ़िल मुरीद (गुरु का शिष्य में लय होने) का दर्जा हासिल करोगे। अगर नागवार खातिर न हो (आपत्ति न हो) और फुरसत हो और तबियत चाहे तो इस फ़कीर के पास आते रहा करो।

इसके बाद महात्माजी बराबर हुज़ूर महाराज की सेवा में हाजिर होते रहे। 23 जनवरी सं० 1896 को हुज़ूर महाराज ने आपको अपनी शरण में लेकर बैअत किया (दीक्षा दी) और बराबर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपनी सोहबत से फैज़याब करते रहे। 11 अक्टूबर सं० 1896 को कुल्ली इज़ाज़त यानी आचार्य पदवी प्रदान की।

आचार्य पदवी देते समय हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि, 'मुझसे मेरे पीर मुर्शिद ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने फ़रमाया था कि मुझसे लोगों को रूहानी फायदा होगा। लेकिन अफसोस ! मैं इस काबिल नहीं हुआ और इस फर्ज को पूरी तौर से अदा नहीं कर सका। अगर तुमने मेरा काम पूरा किया तो दीन और दुनियाँ दोनों में सूर्ख़रू होगे (सम्मान मिलेगा) और अगर इसमें कोताही (कमी) की तो मैं आक़बत में (परलोक में) दामनगीर हूँगा (पल्ला पकडूँगा)।' यह फ़रमा कर वह खत जो खलीफ़ा साहिब का हुज़ूर महाराज के पास था पढ़ कर सुनाया। हुज़ूर महाराज की यह बातें सुनते ही महात्मा रामचन्द्र जी महाराज की एक तेज जज़्बी हालत पैदा हो गई और आँखों से आँसू निकल पड़े। उन्होंने रोते हुए बड़े विनीत भाव से हुज़ूर महाराज से अर्ज किया, 'हुज़ूर यह सेवक किसी काबिल नहीं है, आपकी ही आला पाक बुलन्द हस्ती यह खिदमत करायेगी।' हुज़ूर महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए फ़रमाया, 'खुदा तुम्हारी मदद करेगा।'

हुज़ूर महाराज कितने उच्च कोटि के महात्मा थे तथा उनकी रूहानी हस्ती कितनी बुलन्द थी, इस विषय में उनके परम शिष्य महात्मा रामचन्द्रजी महाराज ने समय-समय पर जो हार्दिक उद्गार प्रकट किये उन्हें महात्माजी के ही शब्दों में अगले पृष्ठ पर दिया जा रहा है।

'मेरे रहनुमा ने (मेरे पथ प्रदर्शक अर्थात् हुज़ूर महाराज ने) मुझको महज़ मेरे ऊपर ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि खुद साये की तरह हर वक्त साथ-साथ रहकर सोलह बरस तक अपनी खास तवज्जोह ज़ाहिरी और अन्दरूनी से मेरी निगाह-दाश्त फ़रमाई (मेरी देखरेख की)। पन्थ के बाहरी आडम्बरों से अलहदा रहने के लिए हमेशा हिदायत फ़रमाई और आखिरकार अपने रंग में रंग रंगा कर यह हुक्म फ़रमाया कि हमारा मिशन जिस तरह और जहाँ तक हो सके दुनियाँ के लोगों को पहुँचाया जाये। आपकी मंशा यह थी कि गिरे हुए जीवों और भूले-भटके संसारियों को उबारा जाये और उनकी हालत को सम्भाला जाये। आपका फरमाना यह था कि जब तक लोगों की अन्दरूनी हालत न सम्हलेगी और उनकी भीतरी शक्तियों का उभार होकर वे जाग न जायेंगी और मन की ताक़तें अज़सरे नौ (फिर से) नश्वोनमा विकसित न होंगी और न फलें फूलेंगी, बुद्धि तेज होकर शुद्ध न होगी और सच्चा ज्ञान प्राप्त न होगा, उस वक्त तक

खाली पूजा-पाठ और ऊपरी उपासना से खातिरख्वाह (मनोवांछित) काम नहीं चलेगा और जीव जैसे बंधे हुए हैं, वैसे ही बंधे रहेंगे।'

इसलिए आपने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि जहाँ तक बन सके अन्दर का अभ्यास किया और कराया जाये और इसके साथ-साथ धर्म सम्बन्धी उसूलों (नियमों) की पाबन्दी भी की जाये। यम-नियम, जायज़ और नाजायज़ (उचित और अनुचित) तरीकों और अमलों (व्यवहारों) का पूरा ध्यान रखा जाये, जिससे अख़्लाक (चरित्र) सुधरे। स्वाध्याय से भी मौका-बमौका फायदा उठाया जाये, तभी जाहिरी और अन्दरूनी तरक्की मुमकिन है। बरख़िलाफ़ इसके अगर दुनियाँ के उन पन्थाइयों यानी अहले तरीक़त की रास (नक़ल) उतारी जायेगी और अमल न करेंगे, जो महज़ तितली बन कर रहेंगे, जो किताबें पढ़ लेते हैं या बुज़ुर्गों का हाल सुन कर अपने दिल का इत्मीनान हासिल कर लेते हैं और अन्दरूनी अभ्यास कुछ नहीं करते उनका अभ्यास सिर्फ थोड़ी देर किताबों का पाठ करना और भजन कीर्तन करके शब्दों को गाकर अपनी तबियत बहलाना है तो फिर जिसका नाम असली मक़सद तक पहुँचना है, कोसों दूर हो जायेगा।

हुज़ूर महाराज ने अपने परम शिष्य महात्मा रामचन्द्र जी के जीवन में अलौकिक परिवर्तन करते हुए किस प्रकार उन्हें एक उच्च कोटि की आध्यात्मिक स्थिति पर पहुंचा दिया इसका उल्लेख महात्माजी ने निम्नांकित शब्दों में किया है :-

"आज से 25 वर्ष पहले मैं एक ऐसी जगह खड़ा हुआ था, जहाँ पर मेरे सामने बेशुमार राहें खुली हुई थीं। मैं हैरान था कि इन रास्तों में से किस रास्ते पर चल निकलूँ। अक़्ल और तमीज तो मौजूद थी, लेकिन कुछ काम नहीं आयी, क्योंकि हर रास्ते पर कुछ न कुछ लोग, किसी पर कम और किसी पर ज्यादा, चल रहे थे और उन सबसे दरियाफ़्त करने पर हर गिरोह अपने साथ ले चलने पर राजी था। राजी ही नहीं, बल्कि हर शख़्स अपनी समझ के मुआफिक दलीलें पेश करके कोशिश करता था कि मेरी तबियत का झुकाव उनकी तरफ हो जाये, पर किसी की दलील दिल को जगती हुई न मिली क्योंकि नजर चकाचौंध हो रही थी और क़ुव्वते फैसला (निर्णय करने की क्षमता) इस कशमकश के सबब से एक बात पर जम जाने के लिए मुस्तइद (तैयार) न हुई। नतीजा यह कि थक कर बैठ रहा।" आखिर एक दिन ऐसा आया कि

इस जाज़बे हक़ीक़ी यानी परम पिता परमात्मा ने अपनी मेहर से मेरी तरफ निगाह की और अपनी महान शक्ति को जिन्दा इन्सानी सूरत में सच्ची हमदर्दी करने के लिए मुझ तक पहुँचा दिया। यह विश्वरूप दर्शन, जिसने आत्म भाव दर्शन के रूप में आकर मेरी हमदर्दी की और मेरा हाथ पकड़ कर पलक मारते में मुझको कहीं से कहीं ले जाकर खड़ा कर दिया। यह वह जगह थी जहाँ दुनिया की हर चीज अपनी अज़मत और जलाल (अपने प्रताप और तेज) से चमकती है। मैंने जो देखा और जो पाया वह पाया। आप लोग भी इसकी मिसाल श्री भगवत् गीता के पहले अध्याय के उन श्लोकों में पा सकते हैं, जहाँ अर्जुन ने मायूस (निराश) होकर अपने हथियार रख दिए थे और मेरी तरह मायूस होकर उम्मीद और ख़ौफ़ की मिली हुई हालत में अपना मंसबी काम (अपना कर्त्तव्य पालन) करने से इन्कार कर दिया था। अगर श्री कृष्ण महाराज आनन्दकन्द इस मौक़े पर अपनी अज़मत और जलाल के साथ अर्जुन को उस मुक़ाम तक खींच कर न ले जाते और फिर अर्जुन की दरख़्वास्त पर अपनी जमाली सूरत उनके दिल में न बिठाल देते तो नतीजा जाहिर था। ग़रज़ कि मैं शाहराह कामयाबी (सफलता के राजपथ) पर खड़ा कर दिया गया और मुझको मेरे काम करने के लिए अकेला नहीं छोड़ा। अपनी छोटी-सी सूरत धारण करके मेरे अन्धेरे और नापाक़ (अपवित्र) दिल की कोठरी में हमेशा के लिए बैठक अख़्तियार की (बस गये)।

यह मोहिनी सूरत दिल में ऐसी बसी कि मैं अपना आपा भूल गया और यह समझने लगा कि मैं नहीं हूँ, वह हैं। हल्के-हल्के हर रोंगटे-रोंगटे में उसने ऐसा रंग जमाया कि फिर वह नहीं मैं ही था और आखिरकार यह कि न वह और न मैं, दोनों मौजूद और गैरमौजूद हो गये। जैसा था वैसा रहा।"

मेरे मालिक और हाथ पकड़ने वाले की आला हिम्मती, बुलन्द हौसलगी और फ़िरती शफ़कत (उच्च कोटि का साहस और उत्साह तथा स्वाभाविक दया कृपा) लगातार हर हालत में इस तरह मसरूफ़ और मुतवज्जह (व्यस्त तथा ध्यान देने वाली) रही है कि बिना लिहाज़ फ़िरक़ा और मजहब फैज़ाने इलाही की बारिश मुतनफ़्फ़िस पर फ़रमाते रहे (सम्प्रदाय और धर्म का कोई भेदभाव न रखते हुए ईश्वर कृपा की अमृत वर्षा हर प्राणी मात्र पर करते रहे)। उनकी हर अन्दर आने वाली साँस लोगों के दिलों की स्याही (कालिमा) को सिफ़्वत (साफ़) कर बाहर फेंक देने वाली थी

और हर बाहर आने वाली साँस दिल, दिमाग और हर रगो-पट्टे में ईश्वर कृपा की अमृत धार को भर देने वाली थी। वह जिस्म (शरीर) में रहकर अपना काम कर गये और अब आजाद होकर उसी काम में सरगर्म हैं। जो जान सके, वह जाने और जो देख सकता हो वह देखे।

... मैं अर्ज़ कर चुका हूँ कि मेरे मालिक की मर्जी क्या थी, लेकिन अब भी दोहराता हूँ कि उनका हर ख़्याल और हर फेल जीव मात्र के उद्धार के लिए होता था और यह उनके स्वभाव में दाखिल हो गया था। हर ख़्याल का असर और हर काम का नतीजा होकर रहता है। जो उनको जानने वाले हैं, वह जानते होंगे उनकी ज़ात से (उनके व्यक्तित्व से) जाहिरी व ग़ायब (प्रकट तथा अप्रकट रूप में क्या-क्या फ़ायदे हमको पहुँचे। निहायत मुख़्तसर (अत्यन्त संक्षेप में) यह है कि हमारे हर पारमार्थिक काम के शुरु करने, कायम रखने और अन्जाम (नतीजा) को पहुँचाने के लिए जो तरीके प्रचलित हैं, उसमें ज़माना हाल की आबोहवा का रंग देखकर आसानी की एक ताज़ा और दिलचस्प अगर धर्म का हर पहलू लिए हुए रूह (जान) फूँक दी।

इस तालीम को आप हद भर अपने ढंग से अमली तौर पर (क्रियात्मक रूप में) काम में लाने की कोशिश करते रहे और साथ ही साथ अपनी सेरचश्मी (पूर्ण संतोष) तथा फ़ितरती फैयाज़ी (स्वाभाविक दानशीलता अथवा उदारता) से निहायत सरगर्मी (अत्यन्त तत्परता) के साथ इस उसूल सिद्धांत को मद्देनज़र (ध्यान में) रखा कि अपने पीछे चलने वालों के दिलों में बक़दर उनकी इस्तेदाद और हिम्मत के (उनकी योग्यता अथवा पात्रता तथा उत्साह के अनुसार) इस तर्ज़ तालीम की रूह को जज़्ब कर दिया जाये (पेवस्त कर दिया जाये) और जबानी भी इर्शाद फ़रमाया कि वह इससे काम लें। मगर अब यह हमारी हिम्मत और जोश पर मुनहसिर (निर्भर) है कि इस क़ौल (वचन) और इक़रार (प्रतिज्ञा) का उनके पीछे निर्वाह (निबाह) करें या न करें।

महात्मा रामचन्द्र जी महाराज फ़रमाते थे कि हमारे हुज़ूर महाराज का यह दस्तूर (नियम) था कि पहले शग़ल (आन्तरिक अभ्यास) में इस क़दर सई फ़रमाते (कोशिश करते) कि शाग़िल (अभ्यासी) को हक़ीकत (परम सत्य) तक पहुँचा देते और साक्षात्कार करा देते। इसके बाद इस्तलाहात तरीका की तालीम जबानी फ़रमा देते (आन्तरिक अभ्यास में होने वाले अनुभवों की व्याख्या मौखिक रूप से समझा देते) या

कोई किताब अपने सामने निकलवा देते और अमल के क़ल्ब (अभ्यास से पहले) किताब का देखना यों मना फ़रमाते कि अगर तालिब को (अभ्यासी को) कोई कश्फ़ या मुशाहिदा हो (अपने आन्तरिक अभ्यास या साधना के फलस्वरूप गुप्त बातों के जानने की परम शक्ति प्राप्त हो जाये अथवा कोई आध्यात्मिक अनुभव होने लगे) और वह बयान करे तो बिला किताब देखा हुआ वाक़या और वारदात (घटनाएँ) जो बयान करेगा उसमें गुंजाइश शक की न होगी और किताब देखने के बाद वाक़या और वारदात के बयान करने में शक की गुंजाइश है। मुमकिन है कि कुव्वत हाफिजा से (स्मरण शक्ति से) वक्त यक सुई (फुर्सत या एकान्त समय में) वह वाहिमा के तौर पर बरामद हो गयी हो (काल्पनिक रूप में किताब में पढ़ी हुई बात दिमाग में आ गयी हो) और उसको बयान कर दिया हो। इसलिए जब तक अमल में मज़बूत (अभ्यास में दृढ़) न हो जाये, उस वक्त तक किताब का देखना ज्यादा मुफ़ीद नहीं। वह मालूमात (जानकारी या ज्ञान) में कुछ इज़ाफ़ा (वृद्धि) नहीं करते, बल्कि बाज़ औक़ात (कभी-कभी) कुव्वत वाहिमा को (कल्पना शक्ति को) तेज़ और बरबाद (तीव्र और नष्ट) कर देते हैं, जिससे कि रास्ते में (साधना) के मार्ग में रूकावट आती है।

अपने एक लेख में ज़नाब लालाजी साहिब (महात्मा रामचन्द्र जी महाराज) ने अपने पूज्य गुरुदेव (हुज़ूर महाराज) की आला रूहानी कुव्वत (सामर्थ्य) के विषय में इस प्रकार अपने विचार प्रकट किये है:-

हमारे गुरुदेव के सत्संग का जिन महानुभावों को थोड़ा भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह जानते हैं कि गीता (अध्याय-2, श्लोक 54 से 58 तक) में वर्णित 'स्थित प्रज्ञ' की अवस्था शुरु में ही पैदा हो जाती थी। दो-चार दिनों के अभ्यासी से आप दरियाफ्त कीजिए तो वह अपनी वही हालत बतायेगा जो 'स्थित प्रज्ञ' की होती है, जब कि हुज़ूर महाराज ने इसके पहले कोई भी जिक्र उस हालत का उस अभ्यासी से नहीं किया।

हुज़ूर महाराज का अपने मुरीदों को आध्यात्मिक शिक्षा देने का यह निराला ढंग था कि वह गुप्त रूप से बिना मुरीद को बतलाये हुए अपनी आत्मिक शक्ति से उसको ऐसी उच्च आत्मिक अनुभूतियाँ थोड़े ही समय में करा देते थे जो वर्षों की साधना और तपस्या से भी सम्भव नहीं है। जब वह मुरीद खुद अपनी तरफ से उस हालत का जिक्र उनसे करता था तब वह जबानी उस मुरीद को समझा देते थे कि तुम यह जो

हालत अपनी बयान कर रहे हो उसका गीता में अथवा अमुक आध्यात्मिक ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया गया है। हुज़ूर महाराज साधकों उघैर जिज्ञासुओं को बैअत करने (दीक्षा प्रदान करने) में कितनी सावधानी बरतते थे इसका उल्लेख ज़नाब लालाजी साहिब ने अपनी पुस्तक 'कमाले इन्सानी' में इस प्रकार किया है : -

"हमारे मुर्शिद साहिब (हुज़ूर महाराज) का यह तरीका था कि अहले हिनूद (हिन्दू लोगों) को आम तौर पर और मुसलमान साहबों को खास कर पहले बैअत नहीं फ़रमाते थे (दीक्षित नहीं करते थे), बल्कि एक अर्से तक इसका ज़िक्र भी नहीं करते थे और इशारे से भी (संकेत रूप में भी) जाहिर नहीं करते थे। बल्कि जब कभी उन्हें यह मालूम होता था कि मुरीद में अब ख़्वाहिश बैअत की है और उसको कुछ तरीका आ गया है और इस काम में चल निकला है और शौक़ीन भी है और खुद ख़्वाहिश बैअत करता है तो बैअत फ़रमा लेते (दीक्षित कर लेते) और उससे व्रत वगैरह कुछ नहीं रखवाते थे बल्कि कई महीनों और बरसों तक उसको बिला तक़ल्लुफ खुशी से सिखाते रहते थे (आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते रहते थे) और बैअत हो जाने वाले मुरीदों और बिला बैअत किये हुए मुरीदों में कुछ फर्क नहीं समझते थे। अगर तमाम उम्र कोई ख़्वाहिश बैअत न करता तो उसी तरह उसकी तरफ रुजूअ रहते (उन्मुख रहते) और बिला तमीज़ और दुई के (बिला भेदभाव के) हर तरह की तालीम फ़रमाते रहते थे। अलबत्ता देखा गया कि जो बैअत कर चुके है (दीक्षित हो चुके हैं) उन्होंने अगर बैअत करने के बाद कोई ऐसा काम किया है जो धर्म और तरीके के (रूहानियत की तालीम के, शिष्टाचार के) खिलाफ़ होता तो उससे रंजीदगी फ़रमाते (अप्रसन्नता प्रकट करते) और कभी-कभी ज़ाहिरी तौर पर (प्रकट रूप में) ख़फ़ा हो जाते। मगर दूसरे साहबान से (जो दीक्षित नहीं थे) नाराज नहीं होते थे। इतना फर्क़ समझ लेना चाहिए।"

हुज़ूर महाराज के आध्यात्मिक जीवन की कुछ घटनाएँ

हुज़ूर महाराज ने महात्मा रामचन्द्र जी को आचार्य पदवी देते समय एक जलसा

(भण्डारा) किया। उसमें सभी सम्प्रदायों के महापुरुष (सन्त महात्मा) पधारे। हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, नानकपंथी, कबीरपंथी, जैन, बौद्ध इत्यादि सबके सामने हुज़ूर महाराज ने महात्मा रामचन्द्र जी को पेश किया और फ़रमाया कि सारी उम्र में मैंने यह वृक्ष (आध्यात्मिक शिष्य) तैयार किया है। आप साहबान इसकी आध्यात्मिक स्थिति को देखकर जो रूहानियत की तालीम दी गयी है, उसकी पुष्टि कर दें और यदि सन्तुष्ट न हों तो पुष्टि न भी करें या किसी प्रकार के सुधार के लिए कोई सुझाव देना चाहें तो दे दें। सब लोग ध्यान में बैठ गये। हुज़ूर महाराज महात्माजी से बोले, "बेटा पुत्तू लाल (महात्माजी के घर का नाम)- इन सब साहबान को तवज्जोह दो और जो भी सवाल करें उसका उत्तर दो। परमात्मा तुम्हें कामयाबी दे।" महात्माजी ने तवज्जोह देना शुरु किया। पहले तो एक आनन्द महसूस होने लगा, फिर धीरे-धीरे सब लोग विचार शून्य हो गये। अन्त में सिवाये परमात्मा की याद के कोई भी विचार शेष न रहे। सभी वंश के महापुरुष (नक़्शबन्दिया सिलसिले की गुरु परम्परा के सभी सन्तजन) जलसे में बैठे दिखाई देते थे। धीरे-धीरे प्रकाश दिखलाई देने लगा। फिर केवल प्रकाश ही प्रकाश रह गया। सभी चीजें नजर से ओझल हो गयीं। न कहीं जमीन न आसमान। एक नूर ही नूर था, जो सब की जान थी और उसमें एक अजीब आकर्षण और प्रेम था। सब उसमें मस्त थे। एक निहायत सुहावनी नाम की गूँज सुनाई देती थी। सब की तबियत बेकरार थी। इस प्रकाश में जी चाहता था कि शरीर टूटकर आत्मा में समा जाये। आँखों में आँसू जारी थे। सब उस नूर के प्रेम में द्रवित हो रहे थे। थोड़ी देर में हालत बदली, प्रकाश धीरे-धीरे नजर से ओझल होने लगा। होश भी था और बेहोशी भी थी। जो हालत उस समय थी, वह वर्णन से बाहर थी। हुज़ूर महाराज ने महात्मा रामचन्द्र जी से फ़रमाया- 'बस, अब बन्द करो।' धीरे-धीरे सबने आँखें खोल दीं। सबने एक साथ बड़ी प्रसन्नतापूर्वक फ़रमाया, 'इन्होंने (महात्मा रामचन्द्र जी ने) कमाल हासिल किया है और सत्-पद तक रसाई ही नहीं, उसमें लय अवस्था भी प्राप्त कर ली है।' उन महापुरुषों में से एक ने महात्माजी से प्रश्न किया कि, शुक्र किसे कहते हैं ? महात्माजी ने उत्तर दिया, 'परमात्मा की देन का उचित प्रयोग धर्मशास्त्र के अनुसार करना ही शुक्र है।' सबने एक साथ हुज़ूर महाराज द्वारा महात्माजी को दी गयी रूहानियत की तालीम का सहर्ष समर्थन किया। फिर जलसा समाप्त हो गया।

एक दिन की बात है महात्मा रामचन्द्र जी महाराज अपने पूज्य गुरुदेव हुज़ूर महाराज के साथ फर्रुखाबाद शहर से फतेहगढ़ वाली सड़क पर टहलते हुए चले गये। रास्ते में वह अपने दुःख दर्द तथा घर की आर्थिक कठिनाइयों की बातें हुज़ूर महाराज से करते जा रहे थे। बढ़पुर ग्राम के थोड़ा आगे सड़क की पुलिया पर पहुँच कर हुज़ूर महाराज के हृदय में दया का भाव उमड़ आया। उसी पुलिया पर दोनों बैठ गये। बड़े प्रेम से अपना सीधा हाथ महात्माजी के कन्धे पर रख दिया और फ़रमाया कि, 'तुम बड़े भाग्यशाली हो। परमपिता परमात्मा का कृतज्ञ होना चाहिए कि तुमने बहुत सस्ते दामों वह बड़ी दौलत (रूहानी दौलत) हासिल कर ली, जिसका कोई मोल नहीं हो सकता।' इसके बाद कहा, 'अपने चारों ओर देखो।' महात्माजी कहा करते थे कि एक अजीब दृश्य सामने था। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश था, जिसमें एक अजीब आनन्द और आकर्षण था, जो वर्णन में नहीं आ सकता। सारी सृष्टि, घर-दीवाल, जीव-जन्तु सारे प्राणी उसी प्रकाश में नाचते हुए दिख रहे थे। अजीब मस्ती सब पर छायी हुई थी। महात्माजी ने अपनी यह हालत हुज़ूर महाराज से वर्णन कर दी। उन्होंने फ़रमाया, 'शुक्र है, रास्ता ग़लत साबित नहीं हुआ। यही तुम्हारा असल है और यही लक्ष्य है। इसमें ही अपने को गुम (लय) कर दो।' महात्माजी कहा करते थे कि जब मैं सैर के लिए जा रहा था, उस समय दुनियाँ और उसकी चिन्ताएँ मेरे साथ थीं और जब मैं वापिस हुआ तो दुनियाँ और दुनियाँ की सारी चिन्ताएँ सदा के लिए छूट गयीं और उनकी जगह ईश्वर प्रेम ने ले ली।

एक समय हुज़ूर महाराज दवा कराने के लिए कानपुर गये थे। वहीं ठहर कर हुज़ूर महाराज इलाज करा रहे थे। महात्मा रामचन्द्र जी हर शनिवार शाम की गाड़ी से हुज़ूर महाराज की सेवा में हाज़िर हुआ करते थे और इतवार रात की गाड़ी से लौट आते थे। शहर फर्रुखाबाद में उस समय रेल्वे स्टेशन की सड़क पर पंडा बाग के मुहल्ले में एक शाह साहब रहा करते थे और इस वजह से वह हुज़ूर महाराज के विरुद्ध रहते थे कि हुज़ूर महाराज बगैर धार्मिक पक्षपात तथा संकीर्णता के, आत्मिक विद्या की दौलत हिन्दुओं में लुटाने में संकोच नहीं करते थे, और उन जैसे मुसलमान दोस्तों व अज़ीज़ों को अपनी मजलिस व सोहबत से उन लोगों की धार्मिक संकीर्णता व पक्षपात की भावना के कारण कई बार बाहर निकाल दिया था। उन शाह साहब की नजर महात्मा

रामचन्द्र जी की तरफ बहुत थी, क्योंकि हुज़ूर महाराज की पाक (पवित्र) हुजूर्गाना शफ़क़त (आत्मीयता) व प्रेम तथा फ़ैज (उपकार) व बरकत (कल्याण भाव) उन पर होते हुए देखकर शायद वह शाह साहब बहुत कुढ़ते थे।

एक दिन जबकि महात्माजी रेल्वे स्टेशन फर्रुखाबाद से कानपुर जाने के लिए तशरीफ़ लिए जा रहे थे कि अचानक पास की गली से शाह साहब चन्द मुरीदों (कुछ शिष्यों) के साथ सड़क पर आ गये। महात्मा रामचन्द्र जी के सलाम व आदाब बजा लाने पर शाह साहिब ने महात्माजी को रोक कर उनको अपनी छाती से खूब जोर से चिपटा लिया और बार-बार सीना दबाते रहे। फिर अपने मुरशिदों से यह कहते हुए छोड़ा, 'यही हज़रत मौलाना फ़ज़ल अहमद खाँ साहिब नक़्शबन्दी मुज़द्दिदी के मुरीद व खलीफ़ा हैं और इनका नाम रामचन्द्र है।' इन शाह साहब की यह आदत थी और ऐसी शक्ति प्राप्त कर रखी थी कि यह दूसरों की आत्मिक शक्ति यानी रूहानी निस्बत सल्ब कर लेते थे (खींच लेते थे) और दूसरों को खाली करके छोड़ दिया करते थे। ज़नाब शाह साहब ने महात्मा रामचन्द्र जी के सीने को अपने सीने से चिपटा कर यही अमल किया था। महात्माजी स्टेशन की तरफ रवाना हो गये। इधर कुछ देर बाद शाह साहब के सीने में इस क़दर दर्द पैदा हुआ कि वह बढ़ता ही गया। तमाम रात शहर के अच्छे हक़ीम, वैद्य, डाक्टर बुलाये गये, लेकिन वह दर्द किसी की समझ में नहीं आता था। दवा भी बेचारी किस मर्ज पर लगती। आखिरकार लगभग चार-पाँच बजे प्रातः काल शाह साहब ने निहायत मजबूर होकर जब कोई बस न चला तब अपने किसी खास मुरीद से फ़रमाया कि, 'मुझे कानपुर मौलाना साहिब (हुज़ूर महाराज) के पास फौरन ले चलो, वरना मैं दर्द में खत्म हो जाऊँगा। यह तकलीफ नाक़ाबिले बरदाश्त हो रही है। जिस बुजुर्ग के मुरीद की ऐसी हालत हो तो वह बुजुर्ग साहिब कोई कुत्ब (उच्च कोटि के महात्मा) ही हैं, जैसा कि मैंने सुना है। इन हज़रत का वही मुरीद जिसे मैंने सीने से चिपटा कर यह हिम्मत की थी कि उसकी सारी निस्बत (आत्मिक शक्ति) सल्ब कर लूँ (खींच लूँ), इसकी बजाय वह हमारी ही निस्बत सल्ब करके ले गया और यह दर्द उसी वजह से है।'

प्रातःकाल सुबह की गाड़ी से शाह साहब अपने मुरीदों के साथ हुज़ूर महाराज की सेवा में कानपुर हाजिर हुए। सलाम व आदाब के बाद शाह साहब रो पड़े। हुज़ूर

महाराज ने शाह साहब को तकलीफ व परेशानी में देखकर फौरन एक चारपाई पर आराम से लिटा दिया। इतने में महात्माजी भी बाजार से हुज़ूर महाराज के वास्ते अनार ले कर हाज़िर हुए ही थे कि शाह साहब की नजर उन पर पड़ी। एकदम शाह साहब तड़प गये और हुज़ूर महाराज से अर्ज़ करने लगे कि, हजरत फ़नाफ़िश्शैख मुरीद तो बहुत देखे जाते हैं, लेकिन ऐसे कहीं-कहीं, कभी-कभी देखने में आते हैं, जिन में उनका शैख़ खुद फ़ना हो और फिर माशा अल्लाह क्यों न हो कि जब हुज़ूर की ऐसी आला नूरानी हस्ती जो फ़नाफ़िल मुरीद होने का खेल खेल सके अज़ीज रामचन्द्र को नसीब हुई। अभी दर्द में कराहते हुए ज़नाब शाह साहब अपना पूरा हाल अर्ज नहीं कर पाये थे कि हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, 'ज़नाब शाह साहब, यह आपकी अमानत (धरोहर) मेरे तकिये के नीचे हिफाजत से रखी हुई है। मालिके-कुल (ईश्वर से) मुआफ़ी माँगिये और तौबह कीजिए कि आगे से किसी के साथ ऐसा व्यवहार न करेंगे।' ज़नाब शाह साहब ने उसी समय तौबह की। हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, 'आँखें बन्द कर के अन्दर बातिन (हृदय) की तरफ मुतवज्ज़ोह हों' और खुद भी तवज्जोह में शामिल हो गये। थोड़ी देर बाद ज़नाब शाह साहब ने अपनी खोयी हुई दौलत अपने में पुन: वापस ही नहीं पायी, बल्कि अतिरिक्त नूरानियत (आत्मिक प्रकाश) भी प्राप्त किया। उन्होंने महात्माजी के सिर पर हाथ फेर कर बहुत दुआएँ दीं और उसी दिन अच्छे होकर वापस चले गये।

महात्माजी फ़रमाते थे कि कायमगंज में एक सज्जन एक बुजुर्ग पीर के मुरीद (शिष्य) थे, किन्तु वह बुजुर्ग तक़मील याफ़्ता (पूर्ण अधिकार प्राप्त) न थे, अर्थात् उनकी तालीम पूर्ण अवस्था को न पहुँच सकी थी। यह शिष्य अपने पीर के बतलाये हुए अभ्यास तथा साधना से एक ऐसे मुकाम पर उन्नति कर के पहुँच गये, जिसको मुसलमान सन्त नफ़्स का मुक़ाम कहते हैं। इसी स्थान को शिव नेत्र का स्थान भी कहते हैं। कामदेव की बैठक व समाधि यहीं पर रहती है। वह अभ्यासी जब उस स्थान पर आन्तरिक अभ्यास के द्वारा चढ़ाई करके पहुँचे तो उनके गुरुदेव के बस की बात न थी कि अपने शिष्य को उस मुकाम से पार करा कर आगे ले जाते। इसी बीच वह शिष्य एक दिन अपने किसी सम्बन्धी के घर एक उत्सव में गये। अकस्मात वहाँ पर एक वेश्या के नाच और गायन में भी उनको सम्मिलित होना पड़ा। जो लोग वहाँ

एकत्र हुए थे, उसमें से अधिकांश शहबत-परस्त (कामातुर) थे। उन लोगों के संग रहने तथा वहाँ के खान-पान का भी प्रभाव उन शिष्य पर पड़ा। फलस्वरूप उनमें एक रात काम-शक्ति की उत्तेजना इतनी भड़क उठी कि वह कुछ दिनों परायी स्त्रियों को पकड़ने को दौड़ते थे और जब वह पकड़ में न आती थीं तो जानवरों की ओर संभोग के लिए दौड़ते थे। उनको ऐसा करने में किसी प्रकार की लज्जा नहीं आती थी। इनके घर वाले सभी अत्यन्त दुःखी और परेशान हो गये थे। कुछ दिनों बाद उन्हें ज़ंजीरों से बाँध दिया गया। इन्हीं शिष्य के चाचा कायमगंज में महात्मा रामचन्द्र के साथ कचहरी में काम करते थे। उन्होंने बहुत दुःखी होकर महात्माजी को सब हाल बताया। महात्माजी संध्या को जाते समय उनको हुज़ूर महाराज के पास ले गये। हुज़ूर महाराज ने सब हाल सुन कर बड़ा अफसोस जाहिर किया और फ़रमाया कि उस बेचारे की इतनी भूल अवश्य है कि वह नामुकम्मिल (अपूर्ण) पीर से बैअत हुए (दीक्षा ली), जो उस मुक़ाम से निकालने की हिम्मत और शक्ति नहीं रखते हैं। वह शिष्य बेचारा उस स्थान से खुद नहीं पार हो सकता था। हुज़ूर महाराज दूसरे दिन महात्माजी को और चच्चाजी महाराज को साथ लेकर उस पागल के घर गये। जब हुज़ूर महाराज वहाँ पहुँचे, तब उस पागल की बुरी दशा थी। वह अपने आपे में नहीं था। उसके कुटुम्ब के सभी लोग बहुत ही दुःखी थे।

हुज़ूर महाराज सामने एक खाट पर बैठ गये और अपनी दाहिनी ओर महात्मा रामचन्द्र जी को और बायीं ओर चच्चाजी महाराज को बैठाया। हुज़ूर महाराज ने महात्माजी को उस पागल के लिए एक विशेष प्रकार की तवज्जोह देने के लिए हिदायत दी। थोड़ी ही देर में वह शान्ति पा कर ऐसा बेसुध हो गया, मानों गहरी नींद आ गयी हो। फिर हुज़ूर महाराज ने एक दूसरे प्रकार की तवज्जोह देने के लिए महात्माजी को आदेश दिया। एक घण्टे के बाद उस पागल ने आँखें खोली और होश आने पर उसने हुज़ूर महाराज को पहचाना, अत्यन्त नम्रता पूर्वक उनको प्रणाम किया। हाथ मिलाने के लिए उसने हाथ उठाये। हुज़ूर महाराज ने 'अलहम्दु लिल्लाहि' (सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं) कह कर स्वयं हाथ मिलाये और महात्माजी के सिर पर हाथ रखकर कहा 'शाबाश' ! हुज़ूर महाराज की आज्ञानुसार महात्माजी लगभग दो सप्ताह तक निरन्तर वहाँ जाकर उसको तवज्जोह देते रहे। फिर वह बिलकुल ठीक हो

गया और हुज़ूर महाराज से बड़ी सद्भावना और प्रेम के साथ दीक्षा प्राप्त की (बैअत हुआ)।

एक उच्च घराने के एक मुसलमान युवक एक सुन्दर स्त्री से प्रेम करते थे और चाहते थे कि वह ब्याह कर ले। वह युवक प्राय: हुज़ूर महाराज के सत्संग में भी शामिल होते थे और उनसे अपनी इस मनोकामना पूरी होने के लिए आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते थे, लेकिन संकोच वश उनसे कह न पाते थे। एक रात्रि को लगभग दस बजे का समय था, पूर्ण चन्द्रमा प्रकाशमान था, सुन्दर चाँदनी में सत्संग हो रहा था। हुज़ूर महाराज अत्यन्त स्वच्छ व सफेद कुर्त्ता, सफेद किश्तीनुमा टोपी और पायजामा पहने हुए थे। आँखों में सुरमा लगा हुआ था और बेला चमेली के कुछ हार भी पास में ही रखे थे। हुज़ूर महाराज ने ऐसे सुहावने समय में अचानक अपनी सफेद दाढ़ी और मुँह पर बड़े नाज़ व अन्दाज़ से हाथ फेर कर उन मुसलमान युवक से कहा, 'अमाँ तनिक इधर भी तो देखो, क्या वह औरत इससे भी ज्यादा हसीन है ?' हुज़ूर महाराज के इस मनमोहिनी अन्दाज से अकस्मात् उन नौजवान के दिल पर ऐसा आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा कि वह हुज़ूर महाराज के चेहरे पर टकटकी लगाकर कुछ देर तक देखते रहे और फिर इस प्रकार शान्त हो गये जैसे पत्थर की मूर्ति सामने रखी हुई हो। बस, उसी क्षण से उस औरत की मुहब्बत उन नौजवान के दिल से निकल गयी और हुज़ूर महाराज का प्रेम उनके दिल में समा गया। महात्मा रामचन्द्र जी इस घटना को सुनाते समय प्राय: एक जज़्बी हालत में हो जाते थे और यह कहते थे कि, 'मैं भी उस मौक़े पर हुज़ूर महाराज की खिदमत में हाजिर था और मेरे ऊपर एक ऐसी बिजली गिरी कि सम्भव था मेरे जीवन की लीला ही उस हुस्न हक़ीक़ी (ईश्वरीय सौन्दर्य) के दर्शन में समाप्त हो जाती। वह हालत मेरे जीवन का ऐसा रहस्य है जिसने फ़नाफ़िश्शैख की हालत से आगे बढ़ा कर फ़नाफ़िल मुरीद की नियामत से भरपूर कर दिया था।' फ़नाफ़िश्शैख का अर्थ है गुरुदेव से इतना प्रेम तथा उनमें इतना विश्वास होना कि अपने सम्पूर्ण जीवन तथा शख़्सियत (व्यक्तित्व) को गुरु में लय कर देना और बाहरी और भीतरी रूप में उसी के स्वरूप में ही रहना तथा अपने को पूर्ण रूप से गुरु के स्वरूप में मिटा देना। फ़नाफ़िल मुरीद से यह आशय है कि अपने गुरु को इतना रिझा लेना और अपना लेना कि गुरु अपने मुरीद (शिष्य) में स्वयं विलीन होकर रहे। ऐसे मुरीद को ही

रूहानियत के क्षेत्र में 'मुराद' कहते हैं और परमपिता की प्रेरणा और कृपा से ही कुछ बिरले होनहार संस्कारी मुरीदों को यह पद प्राप्त होता है।'

नवाब शमसाबाद के एक रिश्तेदार एक स्त्री पर मोहित हो गये थे और उससे विवाह करना चाहते थे, लेकिन वह स्त्री तैयार न थी। वह सज्जन हुज़ूर महाराज से सहायता लेने के लिए आये। आपने एक वज़ीफ़ा (मंत्र) बतला दिया और एक अभ्यास करने के लिए कहा। कुछ दिनों बाद उन सज्जन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस स्त्री से मुहब्बत का ख्याल ही उनके दिल से जाता रहा और उसकी जगह हुज़ूर महाराज की मोहब्बत उनके दिल में बस गयी। फलस्वरूप वह हुज़ूर महाराज के हाथों बैअत हुए और अन्त समय तक इस रास्ते में कायम रहे। यह थी हुज़ूर महाराज की आला रूहानी हस्ती, जिसने बहुत सी जिन्दगियों को तबाह होने से बचा लिया।

एक दिन महात्मा रामचन्द्र जी हुज़ूर महाराज के दर्शनों के लिए रायपुर जा रहे थे। रास्ते में गायें चर रही थीं। किसी कारण से वे गायें भड़क गयीं और सब तरफ से महात्माजी पर हमला कर दिया। वहाँ पर कोई आदमी भी आपकी सहायता को न था। हाथ में केवल एक कमजोर छतरी थी। मौत निश्चित थी। आपने अपना अन्त समय जान कर आँखें बन्द कर ली और अपने गुरुदेव (हुज़ूर महाराज) का ध्यान करने लगे। जब आपने आँखें खोली तो देखा कि उनके हाथ की छतरी खुली हुई थी और गायें एक तरफ को भागी जा रही थीं। आपने परमात्मा को धन्यवाद दिया और हुज़ूर महाराज की खिदमत में पहुँच कर सारा हाल उनसे अर्ज किया। हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, 'परमात्मा को धन्यवाद दो, यह सब उसी की दया थी।'

एक दफा हुज़ूर महाराज जी कायमगंज से रायपुर जा रहे थे। रास्ते में एक गाँव पड़ता था। वहाँ पर बहुत से आदमी खड़े थे। हुज़ूर महाराज चाहते थे कि इन लोगों से बचकर निकल जायें लेकिन कुछ आदमियों ने, जो आपको जानते थे, देख लिया और बड़ी विनम्रता पूर्वक बुलाया। इसलिए आपको विवश होकर उन लोगों के पास जाना पड़ा। वहाँ पर एक सुन्दर स्त्री खड़ी थी और कह रही थी कि, 'मैं जिन्न हूँ और इस स्त्री पर आसक्त हूँ।' इसे लेकर ही मैं जाऊँगा। कुछ लोग झाड़ा-फूँकी कर रहे थे और कुछ विभिन्न दवाइयों का प्रयोग कर रहे थे। लेकिन सब बेकार साबित हो रहा था। सभी लोग बहुत परेशान थे और समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। हुज़ूर

महाराज को देखकर सभी लोग उनसे यह प्रार्थना करने लगे कि उस स्त्री की सहायता करें और इस मुसीबत से उसको छुटकारा दिलायें। आपने पहले तो मना किया क्योंकि आप झाड़-फूँक के व तावीज इत्यादि के क़ायल नहीं थे और न कभी ऐसा करते थे। लेकिन जब लोगों ने बहुत आग्रह किया तो आपने एक काग़ज़ पर कुछ लिखा, उसको लपेटा और उसके एक सिरे को जलते हुए लैम्प पर रख दिया। कागज जलना था कि युवती चिल्लाने लगी, 'मुझको मत जलाओ, मैं जाता हूँ अब कभी नहीं आऊँगा।' जिन्न हुज़ूर महाराज की खुशामद करने लगा। आपने कागज बुझा दिया, युवती होश में आ गयी और फिर कभी उसकी ऐसी हालत नहीं हुई।

महात्मा रामचन्द्र जी नित्य संध्या को दफ़तर बन्द होने के बाद कायमगंज से रायपुर हुज़ूर महाराज के दर्शनों के लिए जाते और रात को लगभग 10 बजे वापस आते। रायपुर और कायमगंज के बीच 4 मील की दूरी है। यह उनका नित्य का नियम था। एक दिन बहुत जोर की वर्षा आरम्भ हो गई। चारों तरफ काले बादल छाये हुए थे। सब ओर अंधेरा ही अंधेरा था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। यकायक मूसलाधार वर्षा होने लगी। महात्मा रामचन्द्रजी तथा उनके छोटे आई महात्मा रघुबर दयाल जी दोनों रास्ते में ही थे। आगे जाना बिलकुल असम्भव हो गया। विवश होकर आप दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये। वृक्ष में पत्ते भी नहीं थे जो वर्षा के पानी से बचाते। आपने अपने छोटे भाई महात्मा रघुबर दयाल जी (चच्चाजी महाराज) से फ़रमाया, 'आँखें बन्द कर लो और गुरु महाराज का ध्यान करो और यह ध्यान करो कि वर्षा हो ही नहीं रही है।' आप दोनों इसी ख्याल में बैठ गये और थोड़ी देर में अपने आप से बेखबर हो गये। कुछ देर बाद जब आँखें खुली तो क्या देखते हैं कि चारों ओर पानी ही पानी भरा हुआ है लेकिन जिस जगह आप दोनों बैठे हुए थे वह जगह बिलकुल सूखी थी। जब आप दोनों रायपुर पहुँचे तो हुज़ूर महाराज ने पहला प्रश्न यही किया कि, 'तुम लोग भीगे तो नहीं?' आपने सारा हाल निवेदन किया। हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, 'जिस पर परमात्मा की कृपा होती है प्रकृति की शक्तियाँ भी उस पर कृपा करती हैं।' फिर फ़रमाया तुम लोग इस वर्षा और तूफान में भी आ गये। वर्षा और तूफान भी तुम को मेरे पास आने से न रोक सके। तुम्हारा विश्वास और प्रेम अथाह है। मैं तुम दोनों से बहुत प्रसन्न हूँ। परमात्मा तुम दोनों पर सदा अपनी विशेष कृपा और दया दृष्टि रखे।

एक बार महात्मा रामचन्द्र जी फतेहगढ़ से अलीगढ़ तहसील को जा रहे थे। गंगा पार होते ही संध्या हो गयी और अलीगढ़ अभी आठ मील था। आप बहुत घबरा गये, क्योंकि रात अँधेरी थी। आदमी न आदमज़ाद, सुनसान गंगा का मैदान। आपने हुज़ूर महाराज का ध्यान किया। क्या देखते हैं कि एक वृद्ध पुरुष आगे-आगे चले जा रहे हैं। आपका साहस बंध गया। आप उन वृद्ध के पीछे-पीछे अलीगढ़ तक चले आये। अलीगढ़ की बस्ती के पास आने पर वह दृष्टि से ओझल हो गये।

एक हिन्दू, सुनार कभी-कभी हुज़ूर महाराज के सत्संग में आ जाते थे और परमात्मा के विषय में बातचीत करते रहते थे। उनका यह ख्याल था कि परमात्मा कोई चीज नहीं है। भौतिक तत्वों के मिलने से जो शक्ति पैदा होती है, उसी का नाम परमात्मा रख लिया गया है। जब शरीर बेकार हो जाता है और भौतिक तत्व अलग अलग हो जाते हैं, वह शक्ति भी समाप्त हो जाती है और छिन्न-भिन्न हो जाती है, अन्यथा न कोई आत्मा है न परमात्मा। यही संसार सब कुछ है। न इससे आगे कोई है न पीछे। यह सब ख्याली बातें हैं। हुज़ूर महाराज उनको समझाते थे लेकिन उनके विचार वहीं बदले। एक दिन हुज़ूर महाराज को उन्होंने बुलाया। हुज़ूर महाराज ने देखा कि उनकी हालत खराब है और उनका अन्त समय निकट है। वह सज्जन हुज़ूर महाराज से कहने लगे कि अब मुझको ख्याल होता है कि कोई शक्ति अवश्य है। अब मुझको इसका कठोर दंड मिलेगा। हुज़ूर महाराज ने देखा कि यह सज्जन दुविधा में है और दुविधा बुरी बला है। आपने फ़रमाया 'तुम अपना ख्याल मत बदलो', उसी पर क़ायम रहो। आपने उनको अपनी तरफ देखने को कहा। क्षण मात्र में अपनी आत्म-शक्ति से उनकी हालत बदल दी। थोड़ी देर बार उनका देहान्त हो गया और उन्होंने शान्ति के साथ प्राण छोड़े।

एक बार की घटना है कि महात्मा रामचन्द्र जी के साथियों ने गंगा के किनारे पिकनिक का कार्यक्रम बनाया। महात्माजी को भी उन लोगों ने साथ ले लिया। भोजन आदि से निवृत्त होकर गाना-बजाना होता रहा। उसके बाद भाँग घोटी गयी। सबने भाँग पी ली और महात्माजी को भी भाँग पीने के लिए मजबूर किया, यद्यपि उन्होंने साफ-साफ मना कर दिया और यह भी बतला दिया कि मैंने जीवन में कभी भाँग नहीं पी। जब बहुत कहने पर भी महात्माजी ने भाँग न पी तो उनके चार साथियों ने उनके

हाथ-पैर पकड़ लिये और पंडित माता प्रसाद जो आपके साथियों में थे आपकी छाती पर चढ़ बैठे और जबरदस्ती भाँग पिलाने लगे। आपने बहुत मना किया, पर सबके न मानने पर चुप हो गये और गुरुदेव (हुज़ूर महाराज) के ध्यान में लग गये। अचानक उनका चेहरा तमतमा उठा और उस पर दाढ़ी और मूँछें दिखाई पड़ने लगीं तथा उनका चेहरा एकदम बदल गया। उनका यह स्वरूप देखकर पंडित माता प्रसाद घबरा कर हट गये और अपने साथियों को भी मना किया। सब साथियों ने उन्हें छोड़ दिया और अलग हट गये। थोड़ी देर बाद उधर से स्वामी ब्रह्मानन्द जी जो उस समय के महान सन्त पुरुष थे, निकले। जब उन्हें सारा हाल ज्ञात हुआ तो उन्होंने सब को बहुत फटकारा। शाम को जब सभी लोग वापस आ रहे थे, तब क्या देखते हैं कि हुज़ूर महाराज आ रहे हैं। महात्माजी ने बड़े अदब से प्रणाम किया। पंडित माता प्रसाद उन्हें देखते ही पहचान गये कि भाँग पिलाते समय महात्माजी का चेहरा जिनकी शक्ल में बदला था, यह वही बुजुर्ग हैं। दूसरे दिन पंडित माता प्रसाद महात्मा रामचन्द्र जी से प्रार्थना करके हुज़ूर महाराज की सेवा में गये। जीवन भर पंडित जी हुज़ूर महाराज तथा महात्मा रामचन्द्रजी के पास जाते रहे। उनके अतिरिक्त आपके बहुत से साथी भी सत्संग में शामिल हो गये।

महात्मा रामचन्द्र जी ने एक बार फ़रमाया, 'हमारे सतगुरुदेव (हुज़ूर महाराज) का यह हाल था कि वह चलते-फिरते जिन से भी दुआ-सलाम का अवसर मिलता था, अपनी आत्मिक तवज्जोह उन सभी पर डाल दिया करते थे और फ़रमाया करते, 'अमाँ, इसमें मेरा क्या जाता है ? उस शख़्स में संस्कार पड़ जाता है। कभी न कभी, कहीं ना कहीं उभरेगा व काम आयेगा ही।' हुज़ूर महाराज के इसी स्वभाव के सिलसिले में उनके गरुभाई ज़नाब हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब ने यह वाकया फ़रमाया था कि एक दिन वह हुज़ूर महाराज के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनके बचपन के साथी मिले। वह आतिशबाजी बनाने का काम करते थे। आपने उन्हें दूर से ही देखकर उनका आधा नाम लेकर बुलाया और हँसते हुए कहने लगे कि, 'मैंने सुना है कि तुम वली हो गये हो, देखना अपने पुराने दोस्तों को न भूल जाना।' यह बात उन्होंने हँसी में कही थी लेकिन बाद को वास्तव में उन्होंने अपने उस साथी को वली बना दिया।

हुज़ूर महाराज के आखिरी वक्त में एक पंजाबी नौजवान पति-पत्नी उनकी सेवा में उपस्थित हुए। हुज़ूर महाराज ने उन्हें चन्द मिनट तवज्जोह देकर कामिल (पूर्ण) कर दिया और गुरु पदवी की इज़ाज़त भी दी। उस वक्त आप बीमार थे और इतने कमजोर हो गये थे कि तीन आदमी करवट लिवाते थे, परन्तु उनकी आवाज़ सुन कर आप अज़खुद उठ बैठे और हुक्म दिया कि 'किवाड़ खोल दो।' उनको इजाजत देकर आप बोले, जाओ बस्ती में न रहना। स्त्री को साथ रखना। ईश्वर तुम्हारा निर्वाह करेगा। फिर वे कभी दिखाई नहीं दिए। परम पूज्य ज़नाब हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब ने एक बार की घटना बतलाते हुए फ़रमाया - 'जहाँ हम तीन शख़्स खड़े होकर नमाज पढ़ते थे, वहाँ पर हुज़ूर महाराज ने देखकर कहा कि यह तो तुम्हारी जगह है और यह उन दोनों साहबान की है।' आपने अलग- अलग नाम लेकर बता दिया। मैंने अर्ज किया कि ज़नाब आपको यह किस तरह पता लगा ? आपने फ़रमाया कि, मियाँ इसके जान लेने में कौनसी ऐसी बात है, जब कि इत्र फरोश बता देता है कि यह फलाँ-फलाँ इत्र है। आपने एक शेर पढ़ा जिसका मतलब यह था कि किसी ने मिट्टी से पूछा कि तू बड़ी खुशबूदार है, तो उसने कहा कि मैं तो वही मिट्टी हूँ मगर वह बहुत खुशबूदार है जिसकी सोहबत में मैं रही हूँ। यह उसकी तारीफ है न कि मेरी। इसी तरह पर तिल्ली जिसमें बसायी जाती है, उसी की खुशबू आने लगती है।

हुज़ूर महाराज एक दफा बदायूँ शहर गये हुए थे। आपने सुन रखा था कि बदायूँ में एक बड़े मज्ज़ूब मुसलमान निवास करते हैं। आपको उनके दर्शनों की बड़ी इच्छा थी। उन महात्माजी की आयु भी लगभग 111 वर्ष की उस समय बतायी जाती थी। वह बुज़ुर्ग एक स्थान पर ज्यादा दिन नहीं रहते थे। बालकों का सा स्वभाव था।

हुज़ूर महाराज उनको बदायूँ में खोजते-खोजते एक स्थान पर पहुँचे जो शहर से बाहर था। वहाँ भी उनको न पा कर वह बस्ती में लौट आये। एक हलवाई की दुकान पर ठहर कर कुछ मिठाई मोल लेने लगे। उस हलवाई की दुकान से मिला हुआ एक टूटा-फूटा खण्डहर सा दिखाई पड़ा। अकस्मात् हुज़ूर महाराज की नजर उधर चली गयी। क्या देखते हैं कि उस खण्डहर में एक टूटी-फूटी दालान में एक बहुत बूढ़े-बुज़ुर्ग कम्बल ओढ़े पड़े हुए हैं। हुज़ूर महाराज ने उस हलवाई से पूछा कि वह कौन बुज़ुर्ग पड़े हुए हैं। हलवाई ने बतलाया कि वह एक बहुत बड़े मुसलमान परमहंस हैं। हुज़ूर ने

थोड़ी गरम जलेबियां एक दोने में ले जाकर अदब व आधीनता से उन परमहंस (मज्ज़ूब कलन्दर की सेवा में अर्पित की और सलाम अर्ज करके बड़े अदब के साथ खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद उन परमहंस जी ने अपने नेत्र खोले। चेहरे तथा आँखों से ऐसा जलाल (तेज) टपकता था कि साधारण मनुष्य का साहस उनकी ओर देखने का नहीं पड़ सकता था। सफेद दाढ़ी बड़ी व सीधी। मूँछें तथा भौहों के बाल तक बिलकुल सफेद व बड़े-बड़े थे। बड़ा ही विशाल तेजस्वी चेहरा था।

जब हुज़ूर महाराज ने देखा कि वह महात्माजी कुछ बोलते ही नहीं हैं और केवल कभी-कभी नेत्र खोलकर देख लिया करते हैं, तो आपने खड़े ही खड़े उन परमहंस जी की ओर अपनी आन्तरिक तवज्जोह की। इस पर वह बुजुर्ग उठ कर बैठ गये और ऐसी तवज्जोह फ़रमाई कि हुज़ूर महाराज को ऐसा मालूम हो रहा था मानों उनके भीतर बड़े ही वेग से चक्की चल रही हो। सम्भव था कि वह हुज़ूर महाराज को अपने रंग व जज्बे में ढाल देने की पूरी कोशिश कर जाते, क्योंकि आपका सारा अस्तित्व ही एक विवशता की अवस्था की ओर खिंचा जाता सा प्रतीत हो रहा था। तुरन्त हुज़ूर महाराज को यह अनुभव हुआ कि अचानक एक प्रकाश के पर्दे ने उन्हें पूरी तरह ढक दिया और अपने स्वरूप में उन्होंने अपने गुरु महाराज (ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब) को पूर्ण रूप से देखा।

वह तपस्वी परमहंस महात्माजी एकदम बोल उठे कि, 'शाबाश, तुम बड़े होनहार हो। मालिक का बड़ा फ़ज़्लो करम (दया कृपा) तुम्हारे ऊपर है। सच तो यह है कि फ़नाफ़िश्शैख (गुरु में लीन शिष्य) बहुत देखने में आते हैं, परन्तु फ़नाफ़िल मुरीद अर्थात ऐसे प्रेमी शिष्य जिसमें उनके गुरुदेव स्वयं ही वास करते तथा लीन (फ़ना) रहते हों, बहुत कम देखने में आते हैं। वाह, मुरीद भी हो तो तुम्हारे जैसा और पीरो मुर्शिद (सतगुरुदेव) भी ऐसे हों जैसे कि तुम्हारे हैं। जाओ, तुम्हारी जात से एक आलम (संसार) मुनव्वर (प्रकाशमान) हो जायेगा।'

जब हुज़ूर महाराज बदायूँ से लौट कर अपने पूज्य गुरुदेव ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब की सेवा में हाजिर हुए तो आपने उनसे पूरा हाल बयान किया। ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने सारा हाल सुन कर फ़रमाया- 'बेटे, मज़्ज़ूब वह होते हैं जो प्रेम के जज़्बे में मस्त व डूबे रहते हैं। दूसरे प्रकार के मज़्ज़ूब कलन्दर कहलाते हैं। कलन्दर का

दर्जा (पद) हंस व परमहंस का होता है।' जब अपनी कुव्वत (क्षमता) से अधिक प्रेम का जज़्बा भड़क जाने पर या उस प्रेम के जज़्बे में भी जोर का प्रकाश उदय होने पर दिमाग उलट जाता है और बेकार-सा हो जाता है तब इसी हालत में बने मज़्जूब अवधूत कहलाते हैं। इनमें न तो अपना स्वयम् का ही शऊर (समझ बूझ) रहता है और न असल ध्येय का ही। कलन्दर, जिसको हंस या परमहंस कहते हैं, इस मज़्जूब (अवधूत) की अवस्था में रहते हुए भी उससे कहीं ऊँची व पवित्र गति पर रहते हैं। वह अपने प्रियतम (परमात्मा) की गोद व नज़र में बालकों व बच्चों के समान रहकर परमात्मा के प्यार व आनन्द में रहने का शऊर (ज्ञान) रखते हैं। वह जज़्ब या प्रेम के मार्ग के बादशाह होते हैं।

इन दोनों प्रकार के महात्माओं में मज्ज़ूब (अवधूत) स्वयम् अपनी उन्नति करने में विवश होते हैं। परन्तु कलन्दर (हंस, परम हंस) की गति वाले महात्मा उन्नति करते रहते हैं। इन दोनों प्रकार के बुज़ुर्गों की संगति व तवज्जोह से या तो दूसरा मनुष्य वैसा ही मस्त व रूहानी पागल-सा बन जाता है या जिसके पास कुछ अधिक कमाई की चीज होती है वह सब उनकी ओर खिंच कर समाप्त हो जाती है। इसकी वजह यह है कि ऐसे बुजुर्ग अपना जज़्ब एकदम इतना झोंक व उंडेल देते हैं कि जो क़ाबू व सहन से कहीं बाहर होता है और परिणाम यह होता है कि वह बेचारा अनायास जल्दी ही रूहानी पागल-सा होकर एक ठस हालत (जड़ता की दशा) में हो जाता है। उसके दिल व दिमाग उलट जाते हैं या अगर इन बुज़ुर्गों की मौज दूसरी ओर चली गयी तो वह सारी आत्मिक कमाई को खींच कर व चूस कर उस शख़्स को निरा खोखला करके छोड़ देते हैं। ऐसे बुज़ुर्गों की सोहबत में लाभ की बजाये हानि का अन्देशा सदा ही बना रहता है। इसलिए उनसे बचना जरूरी है। पता नहीं उनकी मौज में किस समय क्या आ जाये। फिर भी अगर मजबूरन कहीं ऐसा अवसर आ जाये तो उन से नजर मिलाकर कभी भी बात न करें। सीने के सामने सीना लगाकर या रखकर कभी उनके सामने न रहें और अपना दिल उनके दिल के सामने कदापि न ले जायें।

इन बातों का ध्यान रखने वाले और मुख्य रूप से ऐसे अभ्यासी भक्त जो फ़नाफ़िश्शैख (गुरु की जात में लीनता) की अवस्था में रहते हैं ऐसे ख़तरों से बचे रहते हैं। जहाँ प्रेमी भक्त अपने स्वरूप व जात को अपने सतगुरु के स्वरूप व जात में

पूर्णतया फना व लीन कर देते हैं, या जहाँ पर गुरु के स्वरूप या जात को पूर्ण रूप से अपने में धारण कर लेते हैं, वहाँ पर यह मज्ज़ूब व कलन्दर ऐसे मुरीदों के सम्पर्क में आकर चौकन्ना हो जाते हैं।

ज़नाब खलीफ़ा जी साहिब ने ये बातें हुज़ूर महाराज को समझाने के बाद फ़रमाया, 'अमाँ, तुम्हारे संग भी यह मामला आन पड़ा था। वहाँ पर उन कलन्दर बुजुर्ग ने एकदम तुम पर फ़ैज उड़ेलना शुरु कर दिया था और वह भी इतने जोर का था और इतना अधिक था कि तुम उसे सहन न कर सके। बहुत मुमकिन था कि वह तुम को उसी में बहा व डुबा लेते, लेकिन उसी समय वह चीज़ वहाँ खुद पहुँच गयी, जिसकी जात को तुमने पूर्ण प्रेम से अपनी जात में बसा रखा था। अब चूंकि तुम्हारा आत्मिक स्रोत गुरु के स्रोत से एक हो रहा था इसलिए वह बुजुर्ग तुम्हारी समुन्दर-सोख़ निस्बत को देखकर उल्टे तुम्हारे क़ायल हो गये। अब वह फ़ैज की गठरी जो वहाँ तुम पर उड़ेली गई थी मेरे पास रखी है और धीरे-धीरे तुम को देकर पचा दी जायेगी।' शुरु में हुज़ूर महाराज की सोहबत में गिनती के चार लोग सत्संग में आते थे। उनमें से एक नौजवान ऐसे थे जो हुज़ूर महाराज के सत्संग के अलावा एक तवायफ (वेश्या) की सोहबत में भी शरीक होते थे। कुछ दोस्तों ने इस बात की सूचना हुज़ूर महाराज को दी। आपने फ़रमाया, 'अब जब वह वहाँ जायें मुझे बतलाना।' अगली बार जब वह महाशय वेश्या के घर की ओर मुड़े तो उनके दोस्तों ने गुप्त रूप से इसकी इत्तिला हुज़ूर महाराज को दी। हुज़ूर महाराज ने स्नान किया। धोबी के यहाँ का धुला कुर्त्ता-पायजामा निकाला और उन पर इत्र वगैरह लगाकर उनको पहना। आँखों में सुरमा लगाया (यही उस वक्त के मर्दों का श्रृंगार होता था) और उस तवायफ के घर की ओर चल दिए। साथ में उनके चन्द मुरीदैन भी थे। बस्ती छोटी थी अत: तवायफ भी आपको जानती थी। वह उन्हें देखकर ताज्ज़ुब में पड़ गई कि हुज़ूर इधर कहां ! हुज़ूर महाराज के शौकीन शागिर्द वहाँ मौजूद थे। आपको देखकर बहुत घबरा गये। तवायफ ने बड़ी विनम्रता और इज्जत के साथ आपको बैठाया और अर्ज़ किया, 'क़नीज़ (सेविका) के लायक़ क्या खिदमत है जिसके लिए आपने यहाँ आने की तकलीफ फ़रमाई ? इस लौंडी से जो खिदमत हो सकती आपके दौलतखाने पर बजा लाती।' आपने फ़रमाया, 'हम गाना सुनना चाहते हैं। कोई बढ़िया गाना सुनाओ।' तवायफ़ों को

हर किस्म के दो चार गाने याद ही रहते हैं। उसने अपने अनुमान से आप के लायक कुछ गाने सुनाये। सुनने के बाद आपने फ़रमाया, 'तुम्हारी रात भर की उज्रत (पारिश्रमिक) क्या है ?' हम आज रात तुम्हारे यहाँ ठहरेंगे। तवायफ सक्ते में आ गई (किंकर्तव्य विमूढ़ की सी हालत हो गई)। जो मुरीदैन हुज़ूर महाराज के साथ आये थे वे सब अत्यधिक अचम्भित हुए कि हुज़ूर यह क्या फ़रमा रहे हैं। करीब साठ साल की उम्र, चाँदी सी सफेद बालों वाली घनी लम्बी दाढ़ी और इतने बड़े फ़कीर, इस पर भी आप इस तवायफ के यहाँ ठहरेंगे। ख़ैर, उसने अपनी उज्रत बतलाई, शायद दो रुपये। आपने पेंट से दो रुपये निकाल कर फ़ौरन उसको अदा किये और मुरीदैन से कहा, 'भाई, तुम लोग अब जाओ, हम यहाँ ठहरेंगे।'

आपने तवायफ से कहा, 'आज रात भर के लिए तुम मेरी हो चुकी। अब जो मैं कहूँगा वह तुम को मानना होगा। तो मेरा पहला कहना यह है कि तुम्हारे यह ज़ेवरात (गहने) मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है इन्हें उतार डालो और जाकर ग़ुस्ल (स्नान) कर लो।' उसने गहने उतार दिए और नहाने चली गई। आप अपने साथ अपनी पत्नी का एक जोड़ा पायजामा-कुर्त्ता और दुपट्टा ले गये थे। आपने तवायफ से फ़रमाया, 'अच्छा अब मेरे साथ पाँच रक़अत नमाज पढ़ो।' तवायफ परेशान थी कि दो रुपये में क्या परेशानी मोल ले ली। उसने अर्ज़ किया कि नमाज तो न कभी मैंने पढ़ी और न मेरी माँ ने पढ़ी। मैं तो जानती भी नहीं कि नमाज कैसे पढ़ी जाती है। हुज़ूर ने फ़रमाया, 'आज रात तुम मेरी खिदमत में हो, जो मैं कहूँ वह तुम्हें मानना होगा।' अच्छा, देखो तुम्हें नमाज अदा करनी नहीं आती तो कोई फिक्र की बात नहीं। जैसे मैं उठूँ-बैठूँ वैसे तुम भी मेरे साथ उठो-बैठो। तवायफ सोचने लगी, अच्छी क़वायद सर पर पड़ी दो रुपये में। ख़ैर मजबूरी थी, हुज़ूर महाराज की नकल करने लगी। जब हुज़ूर महाराज सिज़्दे में गये (जमीन पर सिर झुकाया) तो तवायफ ने भी माथा टेका। उसी सिज़्दे में हुज़ूर महाराज ने अल्लाह से दुआ की, 'या खुदा, मैंने तेरे फज़्लो करम से यहाँ तक ला दिया, अब तू जाने यह जाने।' इसके बाद हुज़ूर महाराज उठ कर अपने घर तशरीफ ले गये लेकिन वह तवायफ सिज़्दे में ही बेहोश पड़ी रही। सुबह के वक्त जब उसकी माँ वगैरह ने उसे जगाया तब वह उठी। पहले तो वह भौंचक्की होकर इधर-उधर देखती रही। इसके बाद अपनी माँ से बोली, 'मुझसे जो कुछ भी कमाई हो सकी वह मैं तुम्हें दे

चुकी। तुम्हारे गहने भी यह रक्खे हैं। यह कपड़े जो पहने हूँ यह तुम्हारे नहीं है। बस अब मैं चली।'

हुज़ूर महाराज के मकान के सामने एक नीम का पेड़ था। करीब दस-ग्यारह बजे दिन का समय था। वह उसी पेड़ के नीचे आकर बैठ गई। हुज़ूर महाराज ने देखा तो अपनी धर्मपत्नी से फ़रमाया, 'देखो, बाहर एक भूखी-प्यासी लड़की बैठी है। उसे अन्दर बुला लो और खाना खिला दो।' जब वह आ गई और भोजन कर चुकी तो हुज़ूर ने उससे दरियाफ़्त किया, 'उस घिनौनी जिन्दगी से निकल कर एक पाक और बाइज़्ज़त जिन्दगी बसर करने का इरादा है या नहीं ?' वह फौरन ऐसा पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए रज़ामन्द हो गई। तब हुज़ूर महाराज ने उससे गुनाहों के लिए दिली तौबा कराई और उस मुरीद को बुलाकर समझाया कि अगर तुम्हें यह लड़की पसन्द है तो इससे निकाह (विवाह) करके एक पाक जिन्दगी बसर करो। दोनों का निकाह पढ़वा दिया। कुछ दिनों में वह दोनों हुज़ूर महाराज के हाथों बैअत (दीक्षित) हुए और एक भक्तिमय पवित्र जीवन व्यतीत करने लगे।

हुज़ूर महाराज की एक ख़ादिमा (सेविका) थी। जब उसका शरीरान्त हो गया, तो उसे दफ़ना दिया गया। एक बार उसकी कब्र के पास से आपको निकलना हुआ। आपने उसके लिए फातहा पढ़ दिया और कुछ तवज्जोह आपकी उसकी तरफ ख़ुद ब ख़ुद हो गई। बरसों बाद उधर से एक बड़े सूफ़ी फकीर गुज़रे। आपने महसूस किया कि एक कब्र से किसी बड़े फकीर की तवज्जोह की सदा (ध्वनि) आ रही है। आपने लोगों से दरियाफ्त किया तो यही पता चला कि यह तो एक तवायफ की कब्र है। इस जवाब से आप सन्तुष्ट नहीं हुए। आप लोगों से दरियाफ्त करते ही गये। आख़िर में एक बहुत बूढ़े आदमी ने बतलाया कि एक सूफ़ी मौलाना (हुज़ूर महाराज) की एक ख़ादिमा यहाँ दफन है। उसकी कब्र को ठीक से न पहचान सकने की वजह से इस तवायफ की कब्र को ही उस ख़ादिमा की कब्र समझ कर फातहा पढ़ दिया। इस प्रकार इस तवायफ की रूह को मग़फिरत (मोक्ष) मिल गई।

यह उस समय की घटना है जब महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (ज़नाब लालाजी साहिब) हुज़ूर महाराज के निकट सम्पर्क में नहीं आये थे। एक बार ज़नाब लाला जी साहिब की एक लड़की बीमार पड़ गई। उसकी हालत काफी नाजुक हो गई। आप घर

से बाहर किसी डाक्टर को लेने के लिए निकले। संयोग से उधर से हुज़ूर महाराज आ रहे थे। उन्हें देखकर ज़नाब लालाजी साहिब ने बड़े अदब के साथ उनसे सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर महाराज ने पूछा, इतनी तेजी के साथ कहाँ जा रहे हो ? ज़नाब लालाजी साहिब ने अर्ज किया घर में लड़की की तबियत ज्यादा खराब है, इसलिए किसी डाक्टर को लेने के लिए जा रहा हूँ। हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, शुरु मैं मैंने कुछ तिब (चिकित्सा शास्त्र) पढ़ा था। चलो मैं तो देखूँ, शायद मर्ज समझ में आ जाये तो कुछ दवा दे दूँ। आप उन्हें लिवा ले गये। हुज़ूर महाराज ने लड़की की नब्ज देखी और कहा, बेटी ठीक हो जायेगी, चिन्ता मत करो। उन्होंने कुछ दवा लेकर दी और कहा कि माँ के दूध में घोल कर दे दो। पाँच मिनट बाद दरियाफ़्त किया, कैसी हालत है ? ज़नाब लालाजी साहिब ने बतलाया कि अब हालात ठीक है। बस धीरे-धीरे हुज़ूर महाराज के सामने ही लड़की की हालत सम्हलने लगी। तब तक खाने का वक्त हो गया था। ज़नाब लालाजी साहिब के यहाँ कई वक्त से खाना नहीं बना था, ऐसी तंगहाली थी। लेकिन आप की इतनी साख थी कि उधार सामान मिल सकता था। लिहाज़ा आप कुछ इन्तजाम करने चले। हुज़ूर महाराज ने फौरन रोक लिया और फ़रमाया, 'बाजार से कुछ ले आने की जरूरत नहीं है, घर में जो कुछ हो ले आओ।' ज़नाब लालाजी साहिब ने अन्दर आकर कहा, 'वह बाजार से कुछ लाने नहीं देते और बार बार कह रहे हैं कि घर में जो कुछ हो ले आओ। तो देखो भुने हुए चने या और कोई चीज खाने लायक हो तो निकालो।' जवाब मिला कि अगर कुछ होता तो फाके क्यों होते ? बड़ी मजबूरी दरपेश थी। हुज़ूर महाराज समझ गये। फ़रमाया, 'उस दिन जब हमारी बेटी ने रोटी बनाई थी तो एक टिकिया आटे की जो एक तरफ जल गई थी, वह अब भी पड़ी होगी। वही ले आओ और उसके साथ किसी चीज का अचार लेते आना।' ज़नाब लालाजी साहिब अन्दर गये, देखा तो वाकई में चूल्हे पर एक तरफ जली हुई रोटी की टिकिया पड़ी थी। आपने उसे उठाया और अचार के एक टुकड़े के साथ हुज़ूर के सामने पेश किया। आप खा कर उठे। इसी बीच ज़नाब लालाजी साहिब ने कहीं से एक रुपया उधार लाकर चलते वक्त आपको फीस पेश की। आपने फ़रमाया कि बेटे देखो, इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि यह मेरा पेशा नहीं है। ज़नाब लालाजी साहिब ने चाहा कि आपको इक्के पर बैठा दूँ। आपने इन्कार कर दिया और कहा कि

मैं रोजाना दो ढाई मील टहलने निकलता हूँ आज इधर ही निकल आया। इस प्रकार आप पैदल ही घर के लिए चल दिए।

उस समय तक ज़नाब लालाजी साहिब हुज़ूर महाराज के विषय में इतना ही जानते थे कि आप उर्दू, फारसी और अरबी भाषाओं के उत्कृष्ट विद्वान और श्रेष्ठ अध्यापक हैं परन्तु उक्त घटना से ज़नाब लालाजी साहिब को यकीन हो गया कि यह कोई पहुँचे हुए फकीर हैं। तभी से ज़नाब लालाजी साहिब के हृदय में उनके प्रति अटूट श्रद्धा और आदर का भाव जाग्रत हो गया। आगे चलकर वह किस प्रकार हुज़ूर महाराज की अनमोल रूहानी दौलत से फैज़याब हुए इसका विस्तृत विवरण इसी ग्रन्थ के पिछले अध्याय में दिया जा चुका है। परम पूज्य महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज (पूज्य चच्चाजी महाराज) के विवाह के पश्चात एक लम्बे समय तक कोई सन्तान नहीं हुई। घर के सभी लोग चिंतित रहने लगे। पूज्य चच्चाजी महाराज के ससुराल वाले विशेष रूप से चिंतित थे और उन लोगों ने रामेश्वरम् जाकर वहाँ किसी विशेष अनुष्ठान के आयोजन का कार्यक्रम बनाया। जिन दिनों पूज्य चच्चाजी महाराज के ससुराल वाले रामेश्वरम् जाने की तैयारी कर रहे थे, संयोग से एक दिन हुज़ूर महाराज ज़नाब लालाजी साहिब के मकान पर पधारे। वहाँ घर में लोगों की भीड़-भाड़ देखकर बोले, 'बेटे पुत्तू लाल इस घर में कैसी भीड़ और चहल-पहल है ?' ज़नाब लालाजी साहिब ने बड़े विनय भाव से निवेदन किया, मेरे छोटे भाई के कोई सन्तान नहीं है। हम सब मालिक की रजा में राज़ी हैं परन्तु परिवारजन विशेष रूप से छोटे भाई के ससुराल वाले सन्तान प्राप्ति के लिए इन सब को रामेश्वरम् ले जाकर कोई विशेष प्रकार का अनुष्ठान करा कर सन्तानोत्पत्ति के लिए भगवान की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं। मैं और मेरे छोटे भाई इस आयोजन से असहमत होते हुए भी ससुराल वालों की हठधर्मी के सामने खामोश हैं, बस इस धर्म संकट से आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। यह कहते हुए ज़नाब लालाजी साहिब के आँखों में आँसू आ गये। यह सब सुन कर हुज़ूर महाराज का दिल भी करुणा भाव से द्रवित हो उठा और बहुत ही जज़्ब में दोनों भाइयों से फ़रमाया, 'जो खुदा वहाँ है वह यहाँ भी है। वह इनायत और मेहरबानी करने के लिए मक्का, मदीना, रामेश्वरम् इत्यादि किसी जगह का मोहताज नहीं है।' यह कह कर आपने एक कटोरा पानी तलब किया, उस पर भगवत प्रेम भरी दृष्टि डाली और

पूर्ण जज़्बी हालत में ईश्वर से दुआ करते हुए ज़नाब लाला जी साहिब को आदेश दिया, 'यह पानी बेटी को पिला दो और मालिक के फज़्लोकरम का इन्तज़ार करो।'

पूज्य लाला जी साहिब ने हुज़ूर महाराज के आदेश का अक्षरशः पालन किया और वह कटोरा भरा हुआ जल चच्चाजी महाराज की धर्मपत्नी को बड़ी श्रद्धा से पिला दिया और पूर्ण विश्वास के साथ ईश्वर की कृपा की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ ही दिनों में खुश खबरी सुनने को मिली कि गर्भ में बच्चा है। परन्तु सातवें-आठवें महीने में पूज्य चाचीजी के उदर में कुछ कष्ट उत्पन्न हुआ और गर्भपात होने की आशंका हुई। पूज्य लालाजी साहिब ने एक पत्र लिख कर घर के नौकर चित्तर कहार के द्वारा हुज़ूर महाराज की सेवा में भेजा और उपरोक्त स्थिति से अवगत कराया। दूसरे दिन चित्तर कहार हुज़ूर महाराज का उत्तर रायपुर (तहसील कायमगंज) से लाये। उस पत्र में हुज़ूर महाराज ने लिखा था, अल्लाहतआला की ज़ात पाक से पूरी उम्मीद है कि जब उसने अपने फ़ज़्लोकरम से इस आसीपुरआसी बन्दे की दुआ कबूल फ़रमाई है तो खतरा किसी किस्म का न होना चाहिए। वह बड़ा कृपालु और दयालु है 'इंशा अल्लाह' मेरा पोता पैदा होगा और मैं उसका नाम बृजमोहन लाल' रखता हूँ।' हुज़ूर महाराज का यह आशीर्वाद फलीभूत हुआ। नौ महीने के बाद रामनवमी के दिन सन् 1818 में महात्मा बृजमोहन लाल जी साहिब का शुभ जन्म हुआ।

एक बार पूज्य चच्चाजी महाराज ने फ़रमाया कि हमारे गुरुदेव (हुज़ूर महाराज) के पास एक लड़का आया करता था जो बड़ा हँसमुख था। वह हमेशा हँसा ही करता था। एक दिन हुज़ूर महाराज ऐसे भावावेश में आ गये कि उस लड़के को पीटना शुरु कर दिया। वह लड़का चुपचाप खड़ा पिटता रहा। जब हुज़ूर महाराज का भावावेश शान्त हुआ, उन्हें अपने इस व्यवहार पर बड़ा अफसोस हुआ कि उस लड़के को बेक़सूर मारा। बस वहीं खड़े-खड़े आँखें बन्द कर के परमात्मा से कुछ दिली दुआ करते रहे। थोड़ी देर बाद आँखें खोलकर बोले, 'जा बेटा, तू अल्लाह के फ़ज़्लोकरम से (दया, कृपा से) वली हो गया (सन्त हो गया)।' वास्तव में उसी समय से उस लड़के के अन्दर वली के लक्षण प्रकट होने लगे। आगे चलकर वह लड़का एक कामिल और मुकम्मिल वली की स्थिति को पहुँच गया।

हुज़ूर महाराज का स्वभाव और व्यक्तित्व

हुज़ूर महाराज स्वभाव से बड़े हँसमुख थे। वह हमेशा ख़ुशदिल रहते और कहते कि ख़ुशदिल रहना ही अच्छा है क्योंकि प्रसन्नचित्त रहने से सब चिंताएं डूब जाती हैं। वह बहुत ही कम आँख मूँद कर तवज्जोह देते थे और फ़रमाते थे कि आँख मींचने से ही अध्यात्म विद्या का प्रकाश नहीं होता है। हँसने और खुश रहने से आत्मा खिलती है। जिसका दिल रोता है अर्थात् ईश्वर की याद में लगा रहता है उसके चेहरे पर हंसी रहती है।

हुज़ूर महाराज बड़े दयालु प्रकृति के थे। यदि वह किसी को भी कष्ट में देखते थे तो तुरन्त तन-मन-धन से उसकी खिदमत में लग जाते। हुज़ूर महाराज की स्वयं की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी जब कभी कोई जरूरतमन्द उनके पास आता और अगर उनके पास रुपये होते तो तुरन्त उस जरूरतमन्द को रुपये दे देते और खुद परिवार सहित एक हफ़्ते का फ़ाका करते। तक़ाज़ा करना तो दूर रहा कर्जदार जिस गली में रहता उस गली से गुजरने में बहुत संकोच करते कि कहीं उस कर्जदार से आमना-सामना न हो जाये और उस बेचारे को उनके सामने शर्मिन्दा होना पड़े।

कौन-सा शख़्स जरूरतमन्द है, इसकी जानकारी प्राय: उन्हें बिना उस शख़्स के बतलाये ही हो जाया करती थी। इसी सन्दर्भ में पूज्य चच्चाजी महाराज ने कानपुर में सत्संगी भाइयों को एक वाक़या सुनाया था जो इस प्रकार है। एक दिन हुज़ूर महाराज मकान के बाहर दालान में बैठे हुए थे और उनके पास मैं भी बैठा हुआ था। सामने सड़क से एक वृद्ध मुसलमान निकले। हुज़ूर महाराज ने मुझसे कहा, 'नन्हे (चच्चाजी महाराज के घर का नाम) यह जो बुजुर्ग सामने से निकल कर गये हैं इनकी क्या माली हालत होगी? (कैसी आर्थिक स्थिति होगी)' मैंने अर्ज किया कि हुज़ूर यह जिस तरह के साफ-सुथरे अच्छे कपड़े पहने हुए थे उससे तो यह अच्छी हैसियत के मालूम होते हैं। हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया, 'बेटे, इनके घर में तीन दिनों से फ़ाक़ा हो रहा है और यह संकोच और लज्जावश किसी से कुछ माँग नहीं रहे हैं।' यह फ़रमा कर हुज़ूर

महाराज ने अपनी जेब से एक रुपया निकाला और मुझसे बोले कि, 'वह बुजुर्ग फलाँ मकान में रहते हैं, तुम उनके पास जाना और उनसे मेरा सलाम अर्ज़ करना और बड़े अदब के साथ उनसे अर्ज़ करना कि वह यह एक रुपया क़बूल करने की इनायत फ़रमायें और इसे जल्द वापस करने की क़तई फिक्र न करें ।' हुज़ूर महाराज की आज्ञानुसार चच्चाजी उन बुजुर्ग के पास गये और जैसा हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया था वैसा ही उन्होंने उन बुजुर्ग से बड़े अदब के साथ अर्ज़ करते हुए वह एक रुपया उनको पेश किया। वह बुजुर्ग एकदम जज़्बी हालत में आ गये और बोले 'वाह बेटे ! तुम्हारे हजरत पीर इस बुलन्द दर्जे (ऊँची स्थिति) के फ़क़ीर हैं ।' मैंने अपनी इस माली (आर्थिक) तकलीफ़ को किसी से भी ज़ाहिर नहीं किया था। मेरे घर में तीन दिनों से फ़ाक़े हो रहे हैं। यह हैं तुम्हारे पीरो मुर्शिद कि बिला मेरे बतलाये हुए मेरी तकलीफ को उन्होंने जान लिया। उन बुजुर्ग की आँखों से आँसू निकल पड़े और बड़ी देर तक हुज़ूर महाराज की तारीफ़ करते रहे और दिली दुआएँ देते रहे।

हुज़ूर महाराज अपने सभी सत्संगी भाइयों की ज़रूरतों का कितना ध्यान रखते थे इस सन्दर्भ में एक घटना जो ज़नाब लालाजी साहिब से सम्बन्धित है उल्लेखनीय है। एक बार हुज़ूर महाराज के यहाँ कई रोज से उपवास चल रहा था, क्योंकि घर में कोई भोजन सामग्री न थी और यही हालत ज़नाब लालाजी साहिब के यहाँ भी थी। हुज़ूर महाराज को किसी जगह से 15 रुपये मनीआर्डर से प्राप्त हुए थे। आपने उनमें से 10 रुपये ज़नाब लालाजी साहिब के यहाँ भिजवा दिए और पाँच रुपये अपनी माता जी के पास भिजवा दिए ताकि भोजन सामग्री मंगवा लें। शाम को जब आप घर आये और खाने का इन्तजाम न देखा तो अपनी माताजी से पूछा कि अभी तक खाना क्यों नहीं बनवाया। माताजी ने उत्तर दिया, 'जो रुपया तुमने भेजा था वह हमने पुत्तू लाल (ज़नाब लालाजी साहिब) के यहाँ भिजवा दिया क्योंकि उनके घर में उपवास चल रहे थे।' आप यह सुन कर हंस पड़े, बहुत खुश हुए और कहा, 'आपने बहुत अच्छा किया' और उस रोज भी उपवास ही रहा।

उनका हृदय बड़ा कोमल था। माँस खाने की बात तो दूर रही वह प्राय: गाय का दूध तक नहीं पीते थे। जब कभी बीमारी या कमजोरी की हालत में मजबूरन गाय का दूध पीना पड़ता तो ग्वाले को अपने सामने गाय को दुहने के लिए कहते। जब समझते

कि आधा दूध बछड़े के लिए रह गया है, दुहना बन्द करा देते और अपने सामने बछड़े को पिलवा देते और पूरे दूध का दाम ग्वाले को दे देते। इस प्रकार वह बछड़े और ग्वाले दोनों का एक-सा ख्याल रखते थे।

एक बार कानपुर में पूज्य चच्चाजी महाराज ने हुज़ूर महाराज के विषय में फ़रमाया था कि, 'हमारे गुरु महाराज की एक अजीब आदत थी। जब कभी उनके पास रुपया रहता भी था, तब भी वह दूसरे से कर्ज ले लेते थे।' एक बार किसी सत्संगी भाई को उनकी इस आदत का किसी प्रकार पता चल गया। उसने हुज़ूर महाराज से ऐसा करने की वजह पूछी तो उन्होंने फ़रमाया कि ऐसा करने से हम जिसके कर्जदार हैं उसके एहसानमन्द तो रहते ही हैं, साथ ही साथ हमारा यह घमण्ड भी दबा रहता है कि हम किसी के कर्जदार नहीं हैं। एक बार हुज़ूर महाराज के पूज्य गुरुदेव ज़नाब ख़लीफ़ा अहमद अली खाँ साहिब ने उनको भिक्षा माँगने का हुक्म दिया। कई रोज तक अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार वह भिक्षा माँगते रहे लेकिन उन्हें तनिक भी लज्जा व शर्म नहीं महसूस हुई। फिर एक दिन उनके पूज्य गुरुदेव ने उनसे यह फ़रमाते हुए भीख माँगना बन्द करवा दिया, 'बेटे हम तुम से बहुत खुश हैं, तुम इस इम्तहान में पूरी तरह कामयाब रहे।' हुज़ूर महाराज बड़े ही निर्भीक स्वभाव के थे। वह फ़रमाते थे कि मेरी क़ब्र किसी बुजदिल (डरपोक) की क़ब्र के नजदीक न बनवाई जाये। उनकी निर्भीकता की दो घटनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हुज़ूर महाराज फर्रुखाबाद में मुफ़्ती साहब के मदरसे के अहाते में एक कोठरी किराये पर लेकर रहते थे। उन दिनों ज़नाब लालाजी साहिब (महात्मा रामचन्द्र जी महाराज) तथा उनके साथ कुछ हिन्दू लोग हुज़ूर महाराज के पास सत्संग के लिए आने लगे थे। शहर के कट्टरपंथी मुसलमान हुज़ूर महाराज से इस बात से चिढ़ने लगे और द्वेष रखने लगे कि वह बिना किसी धार्मिक भेदभाव के तथा बिना धर्म परिवर्तन के हिन्दुओं को आध्यात्मिक शिक्षा देते थे। कुछ मुसलमानों ने उनको ऐसा करने से रोकने की कोशिश की लेकिन हुज़ूर महाराज ऐसे मुसलमानों को डाँट कर अपने पास से भगा दिया करते थे। शहर के कुछ कट्टरपंथी मुसलमानों ने हुज़ूर महाराज पर घातक हमला करने के लिए शहर के एक मशहूर गुण्डे को तैयार किया और उस गली को भी दिखा दिया जिससे होकर हुज़ूर महाराज अपने घर से बाज़ार को जाया करते थे। एक दिन वह अपने घर से रवाना हुए

। वही गुण्डा गली के दूसरी ओर से आप पर हमला करने के लिए रवाना हुआ। ज्योंही वह बीच गली में पहुँचा दूसरी ओर से हुज़ूर महाराज ने उसे देखते ही अपने कमर में बंधे हुए चाकू को निकाल कर जोर से चिल्ला कर बोले, 'बदमाश, रुक जा अभी तुझे देखता हूँ।' यद्यपि हुज़ूर महाराज उस गुण्डे के भरकम शरीर की तुलना में बहुत ही दुबले-पतले शरीर के थे, परन्तु उनकी वह चिल्लाहट और जोर की आवाज सुन कर वह इतना भयभीत हो गया कि उल्टे पाँव भागा और भागते हुए एक दो जगह गिर भी पड़ा। उस दिन से फिर किसी का साहस नहीं हुआ कि उनके साथ इस तरह की हरकत करे।

हुज़ूर महाराज मिशन स्कूल फर्रुखाबाद में फ़ारसी और उर्दू पढ़ाने के लिए शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए थे। एक बार की घटना है कि हुज़ूर महाराज ने अपना त्यागपत्र लिख कर हेडमास्टर के सामने रख दिया। चूंकि हुज़ूर महाराज एक बहुत विद्वान और कुशल शिक्षक थे और स्कूल के सभी विद्यार्थी भी उनकी शिक्षा तथा सद्व्यवहार से बहुत प्रसन्न रहते थे इसलिए उन पादरी हेडमास्टर ने उनका इस्तीफा मंज़ूर करने से इनकार कर दिया। बस हुज़ूर महाराज ने अपनी कमर से चाकू निकाला और उनकी मेज पर रख दिया और फ़रमाया, 'फौरन मेरा इस्तीफा मंज़ूर करो, वरना इसी चाकू से तुम को खत्म कर दूँगा।' यह बात सुनते ही वह पादरी इतने भयभीत हो गये कि उन्होंने उसी समय उनका इस्तीफा मंज़ूर कर लिया और फिर आगे उनसे कुछ कहने का साहस ही नहीं हुआ।

हुज़ूर महाराज की यह आदत थी कि हर थके हुए भाई का पैर दबाते थे और अगर कोई संकोच करता और मना करता तो उससे नाराज होते और फ़रमाते कि, 'अब तुम भी हमारे पैर दबाने के हक़दार हो गये।'

आप सबके साथ बराबरी का बर्ताव करते। इम्तियाज़ (एक को दूसरे पर तर्ज़ीह देना) बिल्कुल पसन्द न करते। सबके साथ एक फ़र्श पर बैठते। तकिया वगैरह नहीं लगाते थे। अपने शिष्यों की ओर टाँगे फैला कर कभी नहीं बैठते थे। ऊँची जगह कभी नहीं बैठते थे। जब कभी सत्संगी भाइयों को सिरहाने बैठाते और अगर कोई नहीं बैठता तो नाराज होते। कहीं चलते समय आप सबके साथ-साथ चलते थे। आगे-आगे चलना आप को बहुत नापसंद था। जो सब खाते वही आप भी खाते। बहुत स्पष्ट वक्ता

थे। जो दिल में आता फौरन कह देते। एक बार एक रईस साहब जो हैदराबाद दक्षिण में एक उच्च पद पर नियुक्त थे, बड़ी खुशामद से आपको अपने साथ ले गये और वहाँ पर उन्हें बड़े आराम से रखा, लेकिन सत्संग में बहुत कम आते थे। आपने वहाँ रहना पसंद नहीं किया और वापस चले आये। कहने लगे, 'हम आराम के ख्वाहिशमन्द नहीं हैं। हम तो ढूंढ़ने वाला दिल (जिज्ञासु हृदय) देखते हैं। हम तो इस ख्याल से गये थे कि शायद हमारी सोहबत से इन्शाअल्लाह (ईश्वर इच्छा से) उनको कुछ रूहानी फायदा होगा।'

हुज़ूर महाराज को भोजन के मामले में किसी प्रकार का तक़ल्लुफ़ (टीमटाम व दिखावा) पसन्द नहीं था। जब वह महात्मा रामचन्द्र जी के घर तशरीफ ले जाते तो वहाँ पर घर में जो कुछ भी भोजन बना होता वही भोजन करते। घर में अगर सूखी रोटियाँ होती तो उन्हीं को बड़े चाव के साथ खाते। यही नहीं कभी घर में कोई भोजन न होता और सूखे भुने हुए चने ही उपलब्ध होते तो उन्हें बड़े प्रेम से खाते। पूज्य चच्चाजी महाराज एक वाक़या सुनाया करते थे कि एक दफ़ा हुज़ूर महाराज महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (पूज्य लालाजी साहिब) के घर तशरीफ लाये। पूज्य चच्चाजी महाराज ने जब देखा कि हुज़ूर महाराज तशरीफ लाये हैं तो वह बहुत ही खुश हुए और उस खुशी के भावावेश में हुज़ूर महाराज के लिए कुछ विशेष प्रकार के भोजन की व्यवस्था कर डाली। जब वह भोजन हुज़ूर महाराज के सामने परोसा गया तो उस समय तो उन्होंने चुपचाप भोजन कर लिया। सुबह होते ही बोले कि अब मैं चलूंगा। (यद्यपि इस बार उनका इरादा तीन-चार दिन रुकने का था)। जनाब़ लालाजी साहिब का यह साहस नहीं हुआ कि वह पूछते कि आप इतनी जल्दी क्यों जा रहे हैं ? केवल चलते समय इतना ज़रूर अर्ज़ किया, 'हुज़ूर, अब आप कब तशरीफ लायेंगे?' हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि, 'अब जब तक तुम्हारा यह भोजन मुझे याद रहेगा तब तक मैं यहाँ नहीं आऊँगा।' चच्चाजी महाराज फ़रमाते थे कि उस दिन से मैं इतना डर गया कि फिर मैंने कभी हुज़ूर महाराज के भोजन में कोई तक़ल्लुफ़ नहीं बरता और जो कुछ भी घर में होता वही उन्हें परोस दिया जाता था।

हुज़ूर महाराज बहुत ही सफाई पसन्द थे। आप अक्सर इतने अँधेरे में गंगा स्नान करने के लिए जाते कि अँधेरे में ही वापस आ जाते। गर्मी में शाम को भी नहाने जाते।

दूसरे को कभी भी अपने वस्त्र धोने को नहीं देते। खुद अपने कपड़े साफ करते और साफ कपड़े पहनते।

बच्चों के साथ बच्चों की तरह खेला करते थे और अक्सर खेलते समय बच्चों को बताशा बाँटते थे, परन्तु जब चाहते तो सभी बच्चे चुपचाप अदब के साथ बैठ जाते और ध्यानपूर्वक पढ़ने लगते। बच्चों को कभी भी नहीं मारते थे। फ़रमाते थे, 'बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब' (जिसके व्यवहार में शिष्टता है वह भाग्यशाली होता है और जो व्यवहार में अशिष्ट है वह अभागा ही रहता है)

एक दिन हुज़ूर महाराज अपने मकान के बाहर दालान में बैठे हुए थे। उस दिन उन्हें कहीं से साढ़े आठ रुपये प्राप्त हुए थे। कुछ ऐसा संयोग रहा कि उस दिन उनके पास कुछ ऐसे लोग आये जिन्हें कुछ रुपयों की जरूरत थी, हुज़ूर महाराज ने फौरन ही उन रुपयों में से आठ रुपये उन जरूरतमन्द भाइयों को दे दिए। यद्यपि यह वह दिन था जबकि वह पूरे परिवार सहित तीन फाके से बैठे हुए थे। शेष आठ आने वह हाथ में लेकर उछालते रहे। इसी बीच आपकी पूज्य माता जी आईं और उनसे वह आठ आने लेकर चूड़ियाँ खरीदीं और बड़ी जिज्जी (पूज्य लालाजी साहब की धर्मपत्नी) और पूज्य चाची जी (चच्चाजी महाराज की धर्मपत्नी) को, जो उनसे मिलने आईं थीं, दे दीं। यद्यपि वह दोनों पहले से ही खूब चूड़ियाँ पहने हुए थीं। यह थी हुज़ूर महाराज की दानशीलता तथा आपकी माता जी की अपनी उक्त दोनों बहुओं के प्रति हार्दिक प्रेम की उदात्त भावना, जो हम सभी को मानवता के ऐसे उच्च आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने के लिए सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

एक बार हुज़ूर महाराज मकान के बाहर बैठे हुए थे। रात्रि के 11-12 बज गये थे। वक्त का पता न चला। आपने अन्दर से दूध माँगा, मगर न था। आप बाजार तशरीफ ले गये। वहाँ एक बूढ़े को एक तरफ सन्नाटे में बैठे हुए देखा। आपके पूछने पर उसने कहा, 'मैं चलने से मज़बूर हूँ इसलिए बैठा हूँ।' हुज़ूर महाराज उसको घर तक पहुँचाने को तैयार हो गये। उसने कहा, 'आपके साफ-सुथरे कपड़े खराब हो जायेंगे।' मगर हुज़ूर महाराज ने एक न सुनी और एक हुज्जत के बाद उसको अपनी पीठ पर बैठाया। आप जब उसको क़ब्रिस्तान पर लाये तो उसने कहा, यहीं उतार दो, बस यहीं मेरा मकान है; आगे न जाऊँगा। वह आहिस्ता से यह कहता हुआ चला गया, 'शाबाश बेटे,

जैसा सुना था, वैसा ही पाया ।' (इस घटना के पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि उस कब्रिस्तान में दफ़नाई हुई वह किसी फकीर की रूह थी जो हुज़ूर महाराज के स्वभाव में ओत-प्रोत, दया-भाव तथा प्राणि मात्र की निष्काम सेवा की परीक्षा लेने के लिए उस बाजार में एक बूढ़े की शक़्ल में आई थी।)

हुज़ूर महाराज एक अच्छे शायर (कवि) भी थे। कविता में आपका तख़ल्लुस (उपनाम) 'मज्रूह' था। यद्यपि इस लेखक को हुज़ूर महाराज की कविताओं का कोई संग्रह उपलब्ध नहीं हो सका, परन्तु आपके एक उच्च कोटि के शायर (कवि) होने का प्रमाण तो आप द्वारा रचित शज्रः शरीफ (गुरु परम्परा की वंशावली) से मिलता है, जो आपने उर्दू में कविता के रूप में लिखा था। यह शज्रः शरीफ हुज़ूर महाराज की श्रेष्ठ काव्य रचना होने के साथ ही साथ इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सूफी मत के सभी सिद्धांतों का इतना सुन्दर समावेश मिलता है, जो अन्यत्र एक ही काव्य रचना में मिलना दुर्लभ है।

हुज़ूर महाराज की अमृत वाणी

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि हर शख़्स को अन्दर से लामजहब (धार्मिक संकीर्णता से मुक्त) होना चाहिए और बाहर से जो जिस मज़हब में पैदा हुआ है उसी के उसूलों (सिद्धांतों तथा नियमों) की पूरी-पूरी पाबन्दी करनी चाहिए।

आपका फरमाना था कि अगर मुरीद बराबर यह ख्याल रखे कि उसके पीरो मुर्शिद को क्या जरूरत है तो खुदा चाहे बहुत जल्द तरक्की कर सकता है।

हुज़ूर महाराज का फरमाना था कि मैथुन ख्याल का सबसे बुरा है। ख्याल के मैथुन से यह मतलब है कि एक बात को सोचने बैठे और उसको इस हद तक सोचते चले गये कि अपने लक्ष्य को ही भूल गये। ऐसा करने से बेइन्तहा शक्ति क्षीण होती है।

एक बार हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि मौत के समय जो हालत होती है वह बयान के बाहर है। उस हालत का अनुभव उसी को हो सकता है जो उस हालत से गुजरता है। विसाल (शरीर छोड़ने) के बाद मिट्टी व रूह की हालत के बारे में जो

बातें क़ुरआन शरीफ में लिखी हैं वह सब सही हैं लेकिन उन सब बातों के बावजूद भी खुदा की हकीकत कुछ और ही है।

आप फ़रमाते थे कि मुरीद माने होता है गुलाम के। कोई किसी का गुलाम नहीं है सब आपस में भाई-भाई हैं।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि पीर रहबर (पथ-प्रदर्शक) है क्योंकि जिस बात का पता तुम खुद तलाश करके भी न लगा सके उसके मिलने की तरकीब उसने बता दी। इस वास्ते उसकी बहुत इज्जत करनी चाहिए और वह बहुत बड़ी इज्जत के काबिल है। उसकी खिदमत जिस्मानी (शारीरिक सेवा) उतनी ही करनी चाहिए जिसमें उसको कोई जिस्मानी तकलीफ न पहुँच पाये। बाकी जिस्म को पीर नहीं समझना चाहिए। वह जो चीज है वह है अर्थात गुरु की आत्मिक शक्ति जो शिष्य के अन्तःकरण की अज्ञानता के अंधकार को दिव्य ज्ञान के प्रकाश में बदल दे वही पीर (सतगुरु) है।

आप फ़रमाया करते थे कि जिस शख्स ने अपने हाथ से प्रभु की याद में भोजन बनाया और उसी की याद में खाया वही एक दिन प्रभु को भी पायेगा।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि हर मज़हब में नबी व अवतार हुए हैं। उन सब की एक सी इज्जत करनी चाहिए। आप अवतारों के बारें में फ़रमाते थे कि ऊपर सब एक हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि अगर कोई मेरे पास आये तो अभी मुसलमान बनाने के लिए तैयार हूँ। मुसलमान बनना क्या है ? जिसने एक खुदा पर पूरा यकीन कर लिया वह मुसलमान हो गया। मुसलमान का अर्थ है 'वह शख़्स जिसमें मुसल्लम ईमान हो' अर्थात एक खुदा पर यक़ीन करने वाले सभी मुसलमान हैं, चाहे वह जिस मजहब के मानने वाले हों।

आप फ़रमाया करते थे कि इस रास्ते में शोहरत (प्रचार) न करे। एक जगह पर बैठ जाय ईश्वर पर भरोसा कर के। जिसे ईश्वर चाहेगा भेज देगा। शोहरत की ख्वाहिश करने से वह चीज जाती रहती है और कोरे के कोरे रह जाते हैं।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि बीमारी या किसी तकलीफ में सबसे बड़ा अमल यह है कि जो शख़्स जो ज़बान जानता हो उसी ज़बान में वह ख़ुदा से दुआ करे। अगर

उसे मंज़ूर है तो वह अच्छा कर देगा।

आप फ़रमाते थे कि इस रास्ते में करामात (चमत्कार) करके दिखाना बहुत ही बेजा (अनुचित) है। हाँ जब कभी कोई खास जरूरत पड़ने पर किसी की खिदमत के लिए कुछ करना ही होता है तो बीच में आड़ देकर (गुप्त रूप में) करते हैं जिससे कि उस शख्स को पता न चले और वह अपना कृतज्ञ होकर ईश्वर से दूर न हो जाये। किसी के सामने उसकी भलाई करना बहुत बेजा है। भलाई केवल ईश्वर करता है। हम तो उसके हाथ के यन्त्र हैं। सीधे-सीधे दिखा कर किसी का उपकार करना भक्तजनों को शोभा नहीं देता।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि जिस में मजहब का लगाव बाकी है, उसकी फकीरी में कुछ कमी जरूर है।

एक बार पूज्य चच्चाजी महाराज ने हुज़ूर महाराज से दरियाफ्त किया कि मुरीद जब सिरात का पुल पार करता है तो उस समय क्या पीर को अपने मुरीद को उस पुल के पार कराने में हाथ लगाना पड़ता है। (इस्लाम मजहब की यह मान्यता है कि मरने के बाद हर शख़्स को सिरात का पुल जो एक माना हुआ स्थान या मार्ग है पार करना पड़ता है। जो लोग बुरे कर्म किए रहते हैं वे उस पुल से नीचे दोज़ख़ (नर्क) में गिर जाते हैं। केवल अच्छे आमाल (कर्म) वाले ईश्वर भक्त ही इस पुल को पार कर पाते हैं।) हुज़ूर महाराज ने चच्चाजी महाराज के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक किस्सा सुनाया, 'एक बहुत बड़े बुजुर्ग (फकीर) थे। उन्होंने अपने पैर में एक फोड़ा बना लिया और हकीम को बुलाकर दिखाया। हकीम ने कहा इस ज़ख़्म की हालत खराब है। दवा से अच्छा होना मुश्किल है, सिर्फ एक तरकीब है कि अगर कोई शख़्स इस जख्म को जबान से चाटे तो यह ठीक हो जायेगा। मगर जो चाटेगा उसकी जान जाने का खतरा है। उन बुजुर्ग ने अपने मुरीदों से पूछा कि क्या कोई ऐसा कर सकता है ? सब खामोश हो गये और नाउम्मीद हो गये। आखिरकार एक मुरीद आया और उसने दरियाफ़्त किया कि यह जख्म किस तरह अच्छा हो सकता है। उन्होंने कहा कि अगर कोई इसे जबान से चाटे तो अच्छा हो सकता है लेकिन चाटने वाले की जान जाने का खतरा है। उस मुरीद ने कहा कि मुझे जान जाने की चिन्ता नहीं है।

मुझे चिन्ता सिर्फ इस बात की है कि वह फोड़ा कैसे अच्छा होगा। दिखलाइये कहाँ है वह फोड़ा, मैं उसे चाटुंगा। उन्होंने ज़ख़्म दिखलाया। उस मुरीद ने चाटना शुरु किया तो उस ज़ख़्म से बहुत ही मीठा स्वादिष्ट आम का रस निकलने लगा। फोड़ा अच्छा हो गया। न उसकी जान गई और न उसे कोई नुकसान हुआ।' इस किस्से को सुना कर हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि 'जब तक पीर की खिदमत में जान जाने का ख्याल है तब तक बैअत (दीक्षा) कैसे हुई और पीर कैसे जिम्मेदार हो सकता है।'

आप फ़रमाते थे कि खिदमत करना सीखो, खिदमत लेना नहीं।

हुज़ूर महाराज ने महात्मा रामचन्द्र जी महाराज को इजाजत ताम्मः (गुरु पदवी के पूर्ण अधिकार) तथा ख़िलाफ़त प्रदान करते समय निम्नांकित पाँच आदेश दिए थे जो सभी साधकों द्वारा बहुमूल्य उपदेशों के रूप में ग्रहण किए जाने चाहिए।

मखदूम (स्वामी) बनने से हमेशा बचना व दूर रहना।

ख़ादिम (सेवक) बन कर दूसरों की खिदमत (सेवा) करना।

कभी ऐसा वायदा किसी से न करना कि इतने समय में यहाँ तक सिखा व अनुभव करा दूँगा।

सेवा बिना स्वार्थ के करने की नियत रखना।

किसी से कोई दावा न करना, क्योंकि यह सब बातें अहंकार की हैं।

एक मर्तबा एक सत्संगी भाई ने हुज़ूर महाराज से निवेदन किया, 'महाराज जी, गुरु के ध्यान (तसव्वुरे शैख) का अभ्यास इस मार्ग में क्या काफी और ठीक नहीं है ?' हुज़ूर महाराज ने उत्तर दिया, 'भाई, ठीक होने को तो ठीक बात है ही और इसमें संदेह नहीं कि जितना प्रेम व विश्वास सतगुरु में होगा उतनी ही उनकी गुप्त सहायता शिष्य की आत्मिक उन्नति तथा आन्तरिक चढ़ाई में प्राप्त होती रहेगी। साधारण तौर पर आन्तरिक साधना तीन प्रकार की होती है।

ज़िक्रे कल्ब (हृदय से अन्दर ही अन्दर गुरु द्वारा बतलाये हुए ढंग से ईश्वर नाम का जप करना।)

तसव्वुरे शैख (गुरु की आकृति का ध्यान)

मुराक़बः (सद्गुरु द्वारा बतलाये ढंग से ईश्वर में ध्यान लगाना।)'

(आन्तरिक अभ्यास की ये तीनों साधनायें अपने सतगुरु से पूछ कर ही की जानी चाहिए।)

हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि मुख्य रूप से ज़िक्रे कल्ब का अभ्यास करना चाहिए। बाकी दोनों तरीके तसव्वुरे शैख तथा मुराक़बः भी संग-संग लिए रहने से असल अभ्यास में बड़ी मदद मिलती है। जब ज़िक्रे कल्ब में मन रमने लगे, तो बीच-बीच में गुरु के ध्यान (तसव्वुरे शैख) का 'आह्वान' बड़े प्रेम से करते रहना चाहिए; ताकि जो आत्मिक चैतन्य शक्ति उनके (गुरु के) हृदय में पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो रही है उसका बिजलीनुमा प्रभाव अपने हृदय को जगमगा दे (प्रकाशित कर दे) और प्रभु प्रेम का जज़्बा हमारे हृदय में बराबर भड़कता व उमड़ता रहे।

जब गुरु के ध्यान व गुरु की तवज्जोह की सहायता से हृदय जाग्रत हो जायेगा और आत्मिक जज़्बात पैदा होने लगेंगे, तब सचमुच वह गुरु व परमात्मा के प्रेम का आनन्द अनुभव करने लगेंगे। इससे पहले जो प्रेम था वह केवल मानसिक तथा भावना तुल्य था। अब हृदय से चैतन्य शक्ति फूट व उमड़ पड़ेगी और वह प्रेम व लगन जज़्ब (ब्रह्मलीनता) में परिणीत हो जायेगी।

आपने आन्तरिक अभ्यास के उक्त तीनों साधनों पर प्रकाश डालने के पश्चात इस रास्ते की तालीम का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष सत्संगी भाइयों को उन्होंने समझाया कि इस रास्ते में रूहानियत की तालीम हासिल करने में दो बातें बहुत जरूरी हैं। वे हैं तरतीब और तादीब। तरतीब का यह अर्थ है कि इस रास्ते में आन्तरिक अभ्यास या किसी प्रकार का क्रियात्मक साधन आदि जो गुरु करने को बताये, उसमें तरतीब (क्रम व सिलसिला) होना चाहिए। कभी-कभी यह देखा गया है कि जिस क्रम या नियम से कोई अभ्यास या साधना करने के लिए गुरु आदेश देता है शिष्य उसे छोड़ कर या उससे जी चुरा कर बिना समझे-बूझे आगे वाली किसी क्रिया या साधना को बिला नियम अथवा क्रम के करने लगता है, जिससे उसे फायदा होने की बजाये नुकसान ही होता है। दूसरी बात जिसकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिए वह है 'तादीब'। तादीब शब्द निकला है, मूल शब्द

'अदब' से। अदब का एक शाब्दिक अर्थ होता है- हर चीज की हद पर निगाह रखना यानी निर्धारित सीमा से कभी आगे न बढ़ना। कभी-कभी यह देखा गया है कि कोई शिष्य गुरु द्वारा बतलाये हुए अभ्यास, साधना या कोई भी अमल (क्रिया) हद के बाहर यहाँ तक करने लग जाते हैं कि इस रास्ते की तालीम की अन्य जरूरी बातें या व्यवहारिक जीवन की आवश्यक बातें जिनका उचित ध्यान रखना शिष्य के लिए जरूरी होता है वह भूल जाते हैं और उनमें एक ख़फ्ती या मज्जूब की सी हालत पैदा होने लगती है जो इस रास्ते के अनुयायीयों के लिए बहुत ही हानिकर होती है। इसलिए इस मार्ग के अभ्यासियों को रूहानियत की तालीम हासिल करने में तरतीब और तादीब इन दोनों बातों का ध्यान रखना निहायत जरूरी है।

एक सत्संगी भाई ने महात्मा रामचन्द्रजी को एक खत लिखा था कि अहलकारान (कर्मचारी) तथा उनके अफसर उनसे नाराज रहते हैं। कुछ समझ में नहीं आता है कि क्या वजह है और क्या किया जाये। इसका जो जवाब उन्होंने दिया था उसका वह अंश जो हुज़ूर महाराज की दी हुई एक महत्त्वपूर्ण नसीहत से ताल्लुक रखता है नीचे दिया जाता है : -

सबसे बढ़िया बात मैं तुम को बतलाता हूँ जो मेरे गुरु महाराज ने (हुज़ूर महाराज ने) ख़ास ऐसे ही मौक़े के लिए मुझको बतलाई थी और मुझको कामयाबी हुई थी, वह यह है कि जिस शख़्स से तुम को खौफ है और उलझन होती है, उसको अपना खैरख्वाह (शुभचिंतक) और दोस्त ख्याल करो और जबरदस्ती इसकी मश्क (अभ्यास) बढ़ाओ, एकान्त में बैठ कर बिला नागा और थोड़ी देर यह मराक़बा (ध्यान) किया करो कि फलाँ शख्स मेरा दोस्त और खैरख्वाह (शुभचिंतक) है। उसकी मिसाली शक्ल को (उसी की समान आकृति को) अपने साथ बिठलाओ और यह ख्याल करो कि उसकी तरफ से बुराई के ख्यालात निकल गये और उसमें तुम्हारी निस्बत (तुम्हारे सम्बन्ध में) बेहतरी के ख्यालात समा गये। जब कभी उस शख़्स के पास जाने को मौका हो तो उसकी शक्ल पर नजर जमा कर जो साँस बाहर निकालते हो उस साँस के साथ यह ख्याल भी निकालो कि तुम्हारी मुहब्बत के ज़र्रात (परमाणु) उस शख़्स के दिल

में घुस कर सरायत कर गये (समा गये) और जब साँस बाहर की तरफ से अन्दर को लेते हो तो यह ख्याल करो कि उस शख़्स के तुम्हारी तरफ से बुराई के ख्यालात उसके दिल से तुमने घसीट लिए हैं और एक तरफ उनको फेंक दिया है। एक यह अमल ऐसा और इतना करो कि एक चक्कर मिस्ल चर्ख़ी के बंध जाये; निहायत मुफ़ीद (अत्यन्त लाभदायक) है। थोड़े दिनों में मामले के रुख मिस्ल पानी के पलट जायेंगे और तुम ताज्जुब करोगे कि क्या से क्या हो गया, बशर्ते कि वह अमल तुम्हारा नफ़रत की शक्ल से प्रेम की शक्ल में बदल जाये। पहले तो बड़ी दिक्कत होगी। यह काम पहाड़ की तरह भारी होगा लेकिन मर्दों के लिए सब आसान है।

स्वामी आनन्द भिक्षु ने एक बार पूज्य चच्चाजी महाराज से यह पूछा कि आपने यह सब इतनी जल्दी किस प्रकार प्राप्त किया। (उनके पूछने का आशय यह था कि आप इस ऊँची आध्यात्मिक स्थिति पर इतनी जल्दी कैसे पहुँच गये)। चच्चा जी महाराज ने आँखों में आँसू डबडबाते हुए फ़रमाया, 'स्वामी जी, इस पतित अति मूर्ख आसीपुरआसी (पापी दर पापी) में कोई भी तो योग्यता ऐसी न थी और न है कि यह कुछ भी प्राप्त कर सकता। सच तो यह है कि सब कुछ मेरे सर्वस्व मालिक गुरु महाराज (हुज़ूर महाराज) की दया कृपा और उनके क़दमों की बरकत से है। इस सेवक को एक समय यह गुरु मंत्र हुज़ूर महाराज से मिल गया था कि या तो किसी को कर ले या किसी का हो रहे। आशा है कि इसी से बेड़ा पार हो जायेगा।'

ज़नाब हाजी अब्दुल ग़नी खाँ साहिब ने फ़रमाया कि, 'एक बार मैं हुज़ूर महाराज के साथ कहीं जा रहा था। साथ में कुछ और भाई लोग भी थे। रास्ते में एक भाई ने फ़रमाया कि गुरु हो तो ऐसा जैसा कि बरतनों का जंग छुड़ाने वाला, तो मैंने कहा कि नहीं गुरु ऐसा हो जैसा धोबी। वह बराबर आप के कपड़ों की गन्दगी को धोता है और आप बार-बार उसे गन्दा कर देते हैं। यह सुन कर हुज़ूर महाराज ने फ़रमाया कि धोबी नहीं बल्कि मेहतर कहो। आप का मतलब यह था कि गन्दगी भी ऐसी (हमारी वासनाओं, वृत्तियों और गुनाहों की) जो पाख़ाने के मानिन्द हो, उसे गुरु साफ करता है।'

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे -

जाति न पूछे साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान ।
काम करो तलवार से पड़ी रहन दो म्यान ॥

उक्त पंक्तियों को सुनाते हुए आप हिन्दू, भाइयों से कहते थे कि तुम मेरे पास आत्म ज्ञान सीखने आये हो, अवश्य सीखो, परन्तु मेरी रहनी-सहनी की नक़ल हरगिज न करो। जिस जाति व कुल में तुम्हारा जन्म हुआ है, उसकी रीत-रिवाजों का पालन करो। बाहरी जीवन तुम्हारे कुल व जाति के अनुसार हो। आत्मिक क्षेत्र में हमारा तुम्हारा सम्बन्ध है।

हुज़ूर महाराज का हुक्म था कि बहस करने वालों को यह विद्या बहुत देर में और सोच-समझ कर बतलाना चाहिए। बहस करने वालों से मतलब ऐसे लोगों से है जो बात-बात में नुक़ता चीनी निकालते हैं।

हुज़ूर महाराज फ़रमाते थे कि जिसका अन्तर (मन और हृदय) साफ है वह बिना बाहरी सफाई के रह नहीं सकता।

आप फ़रमाते थे कि वास्तव में जो सतगुरु होते हैं वह अपनी पूजा नहीं कराते और न कराना चाहते हैं। जो भी उनके पास आता है असली ध्येय व इष्ट की ओर उसका रुझान कर देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना किया करते है, 'हे स्वामी, तेरी ही दया कृपा से इस सेवक ने तेरे बन्दों को तेरी याद दिला कर तेरे सामने पेश कर दिया। बस अब ये तेरा काम है कि तू इन पर दया कृपा की दृष्टि कर तथा सत मार्ग पर चलने का साहस तथा अपना प्रेम व अनुराग इनको प्रदान कर।'

हुज़ूर महाराज कर महा प्रयाण

नवम्बर सन् 1107 ई० में हुज़ूर महाराज का स्वास्थ्य अत्यन्त चिंताजनक हो गया था। वह इलाज के लिए कानपुर तशरीफ ले गये। लेकिन वहाँ भी जब कोई लाभ न हुआ तो अपने निवास स्थान रायपुर लौट आये। उनको दस्त आने लगे थे और सर में चक्कर आते थे। उनका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता गया। संसार में महापुरुषों का महा प्रयाण भी कितना महान होता है, इस तथ्य की पुष्टि में हुज़ूर महाराज के महा प्रयाण से सम्बन्धित निम्नांकित कुछ घटनाओं का वर्णन किया जा रहा है।

एक बार पूज्य चच्चा जी महाराज ने कानपुर में सत्संगी भाइयों से फ़रमाया था कि, 'हुज़ूर महाराज ने शरीर त्यागने के एक दिन पूर्व मुझे तवज्जोह दी थी।' इस पर उनके एक सत्संगी भाई ने पूज्य चच्चा जी महाराज से निवेदन किया, 'चच्चा ! सुनते हैं कि उस वक्त तो उनकी हालत बहुत ही नाजुक और चिंताजनक हो गई थी फिर क्या ऐसे वक्त में उनमें यह क़ुव्वत (सामर्थ्य) थी कि वह तवज्जोह दे सकते थे।' इस पर पूज्य चच्चा जी महाराज ने फ़रमाया कि उनमें कुबत कब नहीं थी। उनमें यह रूहानी ताकत थी कि वह सख़्त दर्द व तकलीफ को ठहरा सकते थे (कुछ समय के लिए रोक सकते थे) और उस बेहद कमजोरी की हालत में भी कठिन से कठिन काम कर सकते थे।

उक्त सन्दर्भ में ही पूज्य चच्चाजी महाराज ने एक घटना कानपुर में सत्संगी भाइयों को सुनाई थी जो इस प्रकार है : - एक पंजाबी नवयुवक अपनी पत्नी के साथ हुज़ूर महाराज के पास उनके आखरी वक्त में हाजिर हुए थे। हुज़ूर महाराज ने उन्हें चन्द मिनट तवज्जोह देकर कामिल कर दिया। (अध्यात्म में पूर्ण पारंगत बना दिया और गुरु पदवी की इजाजत भी दी।) उस वक्त आप इतने सख़्त बीमार थे और इतने कमजोर हो गये थे कि तीन आदमी करवट लिवाते थे, परन्तु उक्त नवयुवक की आवाज सुन कर आप स्वयं उठ बैठे और हुक्म दिया कि किवाड़ खोल दो। उनको इजाजत देकर आप बोले, 'जाओ बस्ती में न रहना, पत्नी को साथ रखना। ईश्वर तुम्हारा निर्वाह करेगा।' फिर वह कभी दिखाई न दिए। (इस घटना का वर्णन पहले भी किया जा चुका है।)

हुज़ूर महाराज की हालत 30 नवम्बर सन् 1907 ई० को अचानक बिगड़ गई और बचने की कोई उम्मीद न रही। उस वक्त उनके पास ज़नाब मीर अमीर अहमद साहब व डाक्टर अहमद हुसैन साहब व मुनीर शाह साहब साकिन मऊ रशीदाबादी मौजूद थे। विशाल के चन्द मिनट पेश्तर तक होश-हवास दुरुस्त थे और बातें करते रहे; और जिस वक़्त विसाल हो रहा था आप कलमा शरीफ जबान मुबारक से फ़रमा रहे थे। प्राणान्त के अन्तिम क्षणों में वह फ़रमाते जा रहे थे कि मेरी रूह (जान) पैरों से खिंच गई, घुटनों से खिंच गई, कमर से खिंच गई। आखिर में यह फ़रमाया कि अब सब लोग अल्लाह की तरफ ध्यान लगाओ, मेरी रूह अब क़ल्ब (हृदय) से भी खिंचने जा रही है

। सब लोग उस समय फ़ैज की धार (कृपा धार) में ग़र्क़ थे (डूबे हुए थे)। आँख खोलने पर लोगों ने देखा कि हुज़ूर महाराज की आत्मा पार्थिव शरीर त्याग कर उस परम सत्ता में लीन हो चुकी थी। ऐसे अलौकिक और अपूर्व थे हुज़ूर महाराज के महा प्रयाण के अन्तिम क्षण।

हुज़ूर महाराज ने 30 नवम्बर 1107 ई० को वक़्त तीन बजे तीसरे पहर को इन्तकाल फ़रमाया (शरीर त्याग दिया)। ज़नाब मुहम्मद नसीम खाँ साहब रईस रायपुर ने फौरन इन्तजाम तज़हीज व तक़्फ़ीन का किया (शव को यथा नियम नहला-धुला कर और कफ़न में लपेट कर जनाज़ा तैयार करने का प्रबन्ध किया) और सब लोगों को इत्तला दी। शाम के वक्त महात्मा रामचन्द्र जी साहिब (ज़नाब लालाजी साहिब) को फतेहगढ़ में पंडित मेवाराम जी और मुंशी ज़हर अली खाँ साहब ने उक्त हृदय विदारक घटना सुनाई। सुबह 1 दिसम्बर 1107 ई० को प्रात: 8 बजे महात्मा रामचन्द्रजी, पंडित मेवाराम जी, और श्री लाल बिहारी जी साकिन कायमगंज तीनों रायपुर को रवाना हुए। ज़नाब मुहम्मद इब्राहीम फर्रुखाबादी और ज़नाब दीन मुहम्मद साहिब की रास्ते में ज़नाब लालाजी साहिब से मुलाकात हुई।

ज़नाब मुहम्मद नसीम साहिब रईस रायपुर ने सब इन्तज़ाम वगैरह किया और मुरीदैन (शिष्यों) को पत्र द्वारा सूचना भिजवाई। पहली दिसम्बर को तीन बजे दोपहर तजहीजो तक़्फीन से फरागत हुई। (शरीअत के मुताबिक शव को दफ़नाने की सम्पूर्ण क्रिया सम्पन्न हुई)। तारीख 30 दिसम्बर सन् 1907 ई ० को ज़नाब किब्ला हुज़ूर महाराज का उर्स (भंडारा) था। हज़रत मौलाना विलायत हुसैन खाँ साहिब (हुज़ूर महाराज के छोटे भाई साहिब) की रस्म सज्जादा नशीनी अदा हुई। (किसी बड़े फ़क़ीर या महात्मा के निधन पर उनकी गद्दी पर बैठने की रस्म सज्जादा नशीनी कहलाती है।)

हुज़ूर महाराज की मजार शरीफ़ रायपुर के पश्चिम की तरफ ईदगाह में दक्षिण मीनार की तरफ है। हुज़ूर महाराज का पवित्र मज़ार उनके पोते ज़नाब मौलवी मंज़ूर अहमद खाँ साहिब की देखरेख में निर्मित हुआ है। उन्हीं की देख-रेख में अप्रैल में ईस्टर की छुट्टियों के बाद यहाँ सत्संग व मीलाद का कार्यक्रम आयोजित हुआ करता है। यहाँ बड़ी संख्या में सत्संगी भाई एकत्रित होकर इस पुरनूर मजार से फैज़याब हुआ

करते हैं।

❸❹

35. ज़नाब हज़रत शाह अब्दुल ग़नी खाँ साहब (रहम०)

आपकी मजार भोगांव में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

35. ज़नाब हज़रत शाह अब्दुल ग़नी खाँ साहब (रहम॰)

जन्म, बचपन व शिक्षा

हज़रत शाह अब्दुल ग़नी खाँ साहब (रहम॰) का जन्म कस्बा कायमगंज जिला फर्रुखाबाद में एक सम्पन्न पठान घराने में हुआ था। आप अपने माता-पिता के एक मात्र सन्तान थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा वहीं के एक मदरसे में हुई। आप बचपन से सच बोलने के लिए मशहूर थे। कुसूर में किसी झगड़े के निपटाने के लिए और सच्चाई जानने के लिए आपको तलब किया जाता था। क्यों कि आपके मुदर्रिसात जानते थे कि आप कभी झूठ न बोलेंगे।

जब आप कुछ बड़े हुए तो आपके किबला वालिद साहब ज़नाब हाज़ी हसन खाँ साहब आपको उसी क़स्बे के एक काबिलीयत के लिए विख्यात मौलवी ज़नाब हज़रत खलीफा अहमद अली खाँ साहब की खिदमत में ले गये और उनसे इल्तिजा की "यह बच्चा आपके सुपुर्द है। आप इसे तालीम अता करें।" इसके पहले ज़नाब खलीफा जी साहब के इकलौते बेटे, जिनको वह अब्दुल्ला कह कर पुकारते थे, का इन्तकाल हो चुका था और आपने पढ़ाने का काम बन्द कर दिया था। ज़नाब खलीफा जी साहब ने हज़रत शाह को बगौर देखा और अपने मरहूम बेटे की हम शक्ल पाया। ज़नाब खलीफा जी साहब ने आपका हाथ पकड़ कर बड़े प्यार से जौजा मुकद्दसा के पास ले गये और उनसे फ़रमाया "लो तुम्हारा अब्दुल्ला आ गया।" वह फौरन उठीं और हज़रत शाह साहब को सीने से लगा लिया। वह बोली 'यह सचमुच मेरा अब्दुल्ला है।" बावजूद कि ज़नाब खलीफा जी साहब बच्चों को तालीम देना बन्द कर चुके थे, हज़रत शाह साहब को शागिर्दी में लेना कबूल कर लिया। थोड़े ही दिनों में आपकी दुनियावी तालीम में इतना कामिल बना दिया कि उनकी उम्र का कोई लड़का उनकी सानी न था।

हज़रत शाह साहब खुद फ़रमाया करते थे कि एक मरतबा आप ज़नाब खलीफा जी साहब के यहाँ 3, 4 दिन लगातार नहीं गये, तो उनकी वालिदा माँजिदा ने पूछा

"तुम 3, 4 दिन से ज़नाब खलीफा जी साहब के यहां पढ़ने को नहीं जा रहे हो ?" हज़रत शाह साहब ने जवाब दिया "ज़नाब खलीफा जी साहब ने मुझे इतना पढ़ा दिया है कि बस्ती में कोई लड़का इल्मियत में मेरी बराबरी नहीं कर सकता।"

ज़नाब खलीफा जी साहब हज़रत शाह साहब के न आने से बेचैन हो गये और खुद हज़रत शाह साहब के घर तशरीफ ले गये और उनसे पढ़ने न आने की वजह दरयाफ़्त की। इस पर आपकी वालिदा माँजिदा ने परदे में खड़े होकर आपके ऊपर लिखे हुए जवाब को बताया। तब ज़नाब खलीफा जी साहब ने फ़रमाया, "अभी तो उसने दरिया में से एक कतरा हासिल कर पाया हैं।" इस के बाद आपको पढ़ने आने की ताकीद करके वापस चले गये।

उसके कुछ ही दिनों बाद वहीं कायमगंज की एक मस्जिद में एक आलिम साहब ने आकर कयाम किया और ज़नाब खलीफा जी साहब को उन आलिम साहब से मिलने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। बातचीत के आखिरी हिस्से के दौरान में उन आलिम साहब ने ज़नाब खलीफा जी साहब से कोई बात दरयाफ़्त की। ज़नाब साहब को उस बात की जानकारी न थी। लिहाज़ा उन्होंने सादा तरीके से कायमगंजी रोजमर्रा की भाषा में जवाब दिया "मलूम नहीं।" इस पर आलिम साहब ने तञ्ज किया। "पठान चाहे जितना काबिल हो जाय उसकी पठानी बू नहीं जाती।"

ज़नाब खलीफा जी साहब ने वहाँ से रुखसत होते वक्त फ़रमाया "मैं आपके पास एक पठान बच्चे को भेजूंगा, आप उसका इम्तहान लें।" घर वापस आने पर हज़रत शाह साहब ज़नाब खलीफा साहब की खिदमत में हाजिर हुए। ज़नाब खलीफा जी साहब ने आपको बताया कि फलाँ मस्जिद में फलाँ हुलिया के एक आलिम साहब ठहरे हुए हैं और हुक्म किया कि अगले दिन आपको आलिम साहब के पास जाना है। आगे फ़रमाया कि आलिम साहब आपसे जो भी सवाल पूछें उनका सही सही जवाब देना, और जब आलिम साहब पूछना बन्द कर दें तो आप उनसे ऐसा सवाल पूछें कि आलिम साहब उसका जवाब न दे सकें।

ज़नाब खलीफा जी साहब के यहाँ से रुखसत होकर हज़रत शाह साहब चिन्तामग्न घर लौटे। रात में आपने कई वजायफ पढ़े और अल्लाह पाक से दुआ माँगी कि इम्तहान के मौक़े पर ऐसे कामयाब हों कि ज़नाब खलीफा जी साहब खुश व

मुतमैयन रहें।

दूसरे दिन हज़रत शाह साहब उन आलिम साहब की खिदमत में हाजिर हुए और आदाब पेश किया। आलिम साहब ने आपसे सवालात पूछने शुरू किये। हज़रत शाह साहब ने हर सवाल का सही और मौजूं जवाब दिया। जब आलिम साहब ने आगे और सवाल करना बन्द कर दिया तो आपने आलिम साहब से बड़ी आजिजी से यह पूछा- "ज़नाब मेरी समझ में एक बात नहीं आती आप बताने की इनायत फ़रमायें। "उर्दू के हरूफ में हर्फ अलिफ़ (l) है और लाम (J) भी है। फिर हर्फ लाम अलिफ़ (lJ) क्यों बनाया गया ?" आलिम साहब हज़रत शाह की इस बात का जवाब नहीं दे सके और बड़े महजूब हुए। शर्मिन्दगी मिटाने के लिए हज़रत शाह साहब को कुछ मिठाइयाँ खाने को पेश की। हज़रत शाह साहब ने उन मिठाइयों को खाने से यह कह कर इनकार कर दिया कि पठान परिवारों में बाजार की मिठाइयाँ इस्तेमाल में नहीं आती और घरों में जो मिठाइयाँ वालिदायें तैयार करती हैं वही खायी जाती हैं।"

इस प्रकार हज़रत शाह साहब ने उस छोटी से उम्र में भी आलिम साहब के उस तञ्ज का जवाब दिया और यह सिद्ध कर दिया कि इल्मियत में पठान किसी से कम नहीं है मगर अवाम के सामने आमतौर से बोल चाल की भाषा का ही प्रयोग उचित मानते हैं। मिठाई न खाने से यह भी सिद्ध कर दिया कि घरों में खुद खाना तैयार करने की कितनी अहमियत है और सात्विक दृष्टि से पठानों की संस्कृति कितनी उच्च है।

इसके बाद हज़रत शाह साहब खुशी में गर्क ज़नाब खलीफा जी साहब की खिदमत में हाजिर हुए और सलाम पेश किया। ज़नाब खलीफा जी साहब ने दुआ देकर आपको सीने से चिपटा लिया और शाबाशी देते हुए फ़रमाया, "बेटे तुमने आलिम साहब के सवालों का सही सही जवाब दिया और तुमने लाभ आलिफ (ला) के उर्दू हरूफ में शामिल किये जाने का जो सबब पूछा, निहायत माकूल था, जिसका आलिम साहब कोई जवाब न दे सके। मुझे तुम्हारे इस सवाल से बेहद खुशी हुई।" इस पर हज़रत शाह ने ज़नाब खलीफा जी साहब से पूछा कि उन्हें इन बातों का इल्म कैसे हुआ। ज़नाब खलीफा जी साहब ने कहा 'बेटे मैं बराबर तुम्हारे साथ ही तो था।"

आप बचपन से ही बड़े ज़हीन थे, ज़नाब खलीफा जी साहब की बतायी हुई बातों को एक ही बार में याद कर लिया करते थे। उर्दू, फारसी और अरबी में पूर्ण पारंगत हो

जाने के बाद वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल में प्रवेश लिया। वहां की फाइनल परीक्षा में आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और चार विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की। इसके पश्चात नार्मल परीक्षा में बैठे। इस परीक्षा की तैयारी मैं ज़नाब किबला मौलाना फज़्ल अहमद खां के छोटे भाई ज़नाब विलायत हुसैन खां आपके हम सबक थे। यही ज़नाब मौलाना फज़्ल अहमद खां साहब आपके पीर भाई व रहनुमा थे और बाद में ज़नाब खलीफा जी साहब के परदा कर जाने पर उन्होंने ही आपको इजाज़त व खिलाफत अता की थी। इम्तहान शुरू होने के पहले ही दिन जब दोनों साथ-साथ जा रहे थे कि रास्ते में ज़नाब विलायत हुसैन साहब को कै होने लगी। हज़रत शाह साहब ने उन की बड़ी इम्दाद की और जो भी उपचार मुमकिन थे सभी किये। इम्तहान की देर होती देखकर ज़नाब हुसैन साहब ने आपसे जाने को कहा मगर हज़रत शाह साहब ने जवाब दिया, "ऐसा कैसे हो सकता है कि आपको इस हालत में छोड़ कर मैं इम्तहान में शामिल हो जाऊँ।" खुदा का रहम कि थोड़ी देर बाद आराम होने पर दोनों साहबान साथ साथ इम्तहान में शामिल हुए।

जब इस इम्तहान का नतीजा निकला, हज़रत शाह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और तमाम सूबे में उनका पहला नंबर था। तत्कालीन माननीय गवर्नर ने इतनी छोटी उम्र में आपका नाम प्रथम स्थान में पढ़ कर आपसे मिलने की ख्वाहिश जाहिर की। हज़रत शाह साहब गये और अपने तरीके का आदाब पेश किया। माननीय गवर्नर ने आदाब कबूल करने के बाद आपसे सवाल किये। पहला सवाल - "अगर तुम्हारे दर्जे में 40 तुलबा हों और तुम्हें सिर्फ एक को पढ़ाना है 39 को नहीं, तो तुम क्या करोगे ?" हज़रत शाह साहब से माकूल जवाब पा कर गवर्नर साहब ने दुबारा पूछा "अगर दरजे में 40 लड़के हों 39 को पढ़ाना है एक को नहीं तो क्या करोगे ?" इसका भी आपने सन्तोषप्रद उत्तर दिया। इसके बाद माननीय गवर्नर ने आदेश दिया कि आप मैनपुरी के जिला मजिस्ट्रेट से मिलें।

हज़रत शाह साहब का जीविकोपार्जन

माननीय गवर्नर के आदेशानुसार हज़रत शाह साहब जिला मजिस्ट्रेट मैनपुरी से मिले। जिला मजिस्ट्रेट ने आपको बताया 'तुम्हारे विषय में मुझे हिदायत मिल चुकी है,

मैं तुम्हें मिडिल स्कूल का मुदर्रिस (अध्यापक) नियुक्त करता हूँ। तुम शिकोहाबाद जाकर मिडिल स्कूल में अध्यापक का चार्ज सम्भाल लो। और यह भी पूछा कि वहाँ गदर है क्या तुम काम कर लोगे ? हज़रत शाह साहब ने जवाब दिया, "अगर आप मदद करेंगे तो जरूर कर लूंगा।" जिला मजिस्ट्रेट ने कहा 'क्या तुम कतल कर दोगे ?' आपने फ़रमाया "कतल तो नहीं, मगर कतल अमद जरूर होगा" । इस पर जिला मजिस्ट्रेट ने मदद करने का वादा किया।

इसके बाद हज़रत शाह साहब ने शिकोहाबाद जाकर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मिडिल स्कूल में अध्यापक के पद का चार्ज लिया। सबसे पहले आपने वहाँ के सभी मुदर्रिसान से मीटिंग की और उनसे वहाँ के हालात के बारे में जानकारी की। मालूम हुआ कि उस स्कूल में एक गिरोह बन्द व गुण्डा किस्म का लड़का है। वह रोजाना 500 दंड और 1000 बैठकें करता है। बस्ती के लोग उससे थर्राते हैं। उसने हर हेडमास्टर की बेइज्जती की है। कोई मास्टर यहाँ रहना पसन्द नहीं करता बल्कि इस्तीफा देना बेहतर समझता है। उस लड़के को आपको पहचनवा भी दिया गया।

जिस कक्षा का वह लड़का छात्र था आपको उसी कक्षा का अध्यापन कार्य सौंपा गया। पहले दिन हज़रत शाह रजिस्टर के काम में मशगूल रहे। दूसरे दिन भी आप रजिस्टर लिए बैठे रहे जैसे उसमें कुछ काम करते रहे और वह दिन भी व्यतीत हो गया। तीसरे दिन भी क़सदन रजिस्टर पर ही निगाह गड़ाये रहे और कलम से कुछ लिखने का बहाना करते रहे। वह लड़का अपने दांव की तलाश में था और आप भी उसी का इन्तजार कर रहे थे। उस दिन वह लड़का अपनी जगह से उठ कर आपके पास पेशाब कर आने की इजाज़त माँगने आया। आपने रजिस्टर पर आँखें गड़ाये "नहीं" कह दिया। मगर वह लड़का अपनी जगह नहीं गया और फिर पूछा "पेशाब कर आऊँ ?" हज़रत ने फिर "नहीं" कह दिया। तीसरी बार उस लड़के ने पुनः पूछा "पेशाब कर आऊँ"। इस बार आप गुस्से में तेजी से उठे। कलम व रजिस्टर अलग फेंका कुर्सी भी पीछे की और धड़ाम से गिरी। बिना कुछ समय खोये उस लड़के के एक तमाचा जड़ दिया और ऐसा पेंच मारा कि वह लड़का चारों खाने चित्त गिर गया। अब आप उसकी छाती पर चढ़ बैठे और अपना कायमगंजी चाकू निकाल लिया। उसकी गरदन पर चाकू रखते हुये बुलन्द आवाज में बोले "हरामजादे, तेरी कैसे जुर्रत हुई कि मेरे बार

बार मना करने पर भी अपनी जगह पर वापस नहीं गया। बदमाश कहीं का, बोल तेरी सब आँतें निकाल लूँ। "लड़का बेहद घबड़ा गया और गिड़गिड़ा कर माफी माँगने लगा। जब उस लड़के ने दुबारा कभी ऐसा न करने का वादा किया तभी आपने उसे छोड़ा और कहा "जा बैठ अपनी जगह पर।"

उसी दिन पूरे क़स्बे में यह खबर आग की तरह फैल गई। दूसरे दिन क़स्बे के कई बाअसर लोग एक मोटर पर बैठ कर मैनपुरी जिला मजिस्ट्रेट के यहाँ गये और वाकया सुनाया। बाद में यह भी अर्ज किया कि उन्होंने एक कातिल और गुण्डे को अध्यापक नियुक्त कर भेज दिया है, उसे वहाँ से फौरन हटा दीजिए। जिला मजिस्ट्रेट ने सारी बातें सुनी और अन्दर चले गये।

थोड़ी ही देर में पुलिस की दो लारियाँ भरकर आ गईं और साथ ही एस० पी० साहब भी आ पहुँचे। एस० पी० साहब को लेकर जिला मजिस्ट्रेट अन्दर चले गये और पुनः निकल कर आये। पुलिस को हुक्म दिया कि शिकोहाबाद से आये सभी लोगों को हथकड़ी लगाकर जेल भेज दो। वे लोग बड़े भयभीत हुए और गिड़गिड़ाने लगे कि ऐसा न किया जाय। इस पर जिला मजिस्ट्रेट ने डाँटते हुए कहा "तुम्हारे यहाँ इतने दिनों से गदर मचा है कि कोई मास्टर टिकने नहीं पाता, न कोई पढ़ाई होती है। इस बात को लेकर तुम लोग कभी नहीं आये। आज जब मैंने ऐसा अध्यापक भेजा कि वहाँ के माहौल को बदले तो उसकी शिकायत करने चले आये।" सब लोगों ने इस बात को महसूस किया और आइंदा मदद करने का वादा किया।

इस प्रकार हज़रत शाह साहब ने मुलाजमत की शुरुआत की। इसके बाद तबादले होते रहे और आपको मुख्तलिफ जगहों में रहने का मौका मिला। जहाँ भी आप रहे अपनी इल्मियत और तालीम के लिए मशहूर रहे। आप न केवल अपने विद्यार्थियों के प्रिय रहे वरन् बस्ती के लोग भी आदर की दृष्टि से देखते थे। आप अपने अख़लाक से सभी का दिल जीत लेते थे आपके सामने किसी को गलत काम करने या गलत बात कहने की हिम्मत न होती थी।

आप अपने विद्यार्थियों की सब प्रकार से मदद करते थे। तालीम के साथ साथ लड़कों को मुहज्जिब और नेक इन्सान बनाने का ख्याल रखते थे। उनका कहना था "बाअदब बानसीब, बेअदब बेनसीब।"

उस समय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का हर तहसील में एक मिडिल स्कूल होता था। जिसे तहसीली स्कूल या टाउन स्कूल भी कहते थे। स्कूल की बिल्डिंग के पास बोर्डिंग हाउस तथा हेडमास्टर का क्वार्टर रहता था। पदोन्नति के पश्चात् हेडमास्टर हो जाने पर कई स्थानों पर आप भी उसी क्वार्टर में रहते और बोर्डिंग के लड़कों तथा बस्ती से आ जाने वाले अन्य बालकों को रात में पढ़ाया करते थे। एक बार रात में ऐसे ही किसी स्कूल के बोर्डिंग हाउस के निकट कुछ बदमाश इकट्ठे हुए जो आपस में बातें कर रहे थे। लड़के बहुत डर गये थे। एक लड़के ने हज़रत शाह साहब को यह सब हाल बताया। आपने लड़कों को निडर रहने की ताकीद की और कहा कि आइन्दा बदमाशों के वहाँ इकट्ठा होने की सूचना आपको दें। लिहाज़ा दूसरी रात आपको इत्तिला दी गई। आप तुरन्त लाठी लेकर उठे और बदमाशों को ललकारा और साथ ही चहार दीवारी के बाहर कूद गये। आपको आते देखकर बदमाश भाग खड़े हुए। और उधर से आवाज आई, “मैं जानता हूँ तुम बिन्नौट जानते हो ?” जब 35-40 आदमी लेकर आऊँगा तब तुम क्या कर लोगे ?”। आपने जवाब दिया। “बेशक तुम लोग 40 आदमी और साथ में 30 चारपाई भी लेकर आना।”

हेडमास्टर के पद से आपकी तरक्की हुई और सब डिप्टी इन्सपेक्टर के पद पर आसीन हुए। आपको स्कूलों का मुआयना करने जाना पड़ता था। गर्मी में आपको अधिक तकलीफ होती थी अतः आप एक स्कूल से दूसरे स्कूल जाने के लिए ज्यादातर रात में सफर करते थे। दूसरी सवारी उपलब्ध न होने पर एक बार आप ऊँट गाड़ी से एक स्कूल में दूसरे स्कूल जा रहे थे। सुनसान जगह पर लुटेरों ने जबरन आपकी गाड़ी रोकी। चालक से गाड़ी रुकने का सबब दरयाफ़्त किया। मालूम हुआ कि लुटेरों ने गाड़ी रुकवाई है। यह जान कर आप लाठी लेकर कूद पड़े और उन बदमाशों से, जो संख्या में आठ थे, कहा "भाई जो कुछ मेरे पास है वह सब निकाल कर रक्खे देता हूँ और तुम लोगों के पास जो हो वह भी निकाल कर रख दो। इसके बाद पूरे माल को जो उठा सके उठा ले।" इस शर्त पर वे लोग राजी हो गये तथा वैसा ही किया। उन सबों ने आप पर वार करना शुरू किया, आप अकेले ही सब का सामना करते थे। थोड़ी देर में वे आठों लोग घायल होकर भाग खड़े हुए और आपके कोई चोट नहीं आई। फिर आपने सब को बड़े प्यार से बुलाया और कहा कि अपने अपने

पैसे उठा लो, साथ ही मेरे पैसे भी आपस में तकसीम कर लो, मगर यह पेशा छोड़ दो। आपके आग्रह पर सबने तौबा किया कि अब ऐसा न करेंगे। आपने भी सबके सामने उनके लिए हक से दुआ माँगी। कुछ अरसे के बाद पता चला कि वे सभी लुटेरे नेक इन्सान बन गये।

सब का हित चाहने वाला इन्सान निर्भय हो जाता है। उसे अपने पराये की भावना नहीं होती। वह सभी के कल्याण की भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है। आपके अदम्य साहस की अनेक दास्तानें हैं। आपका गोरा बदन और आकर्षक व्यक्तित्व था। देखने में दुबले पतले किन्तु बलिष्ठ, तेज धावक, बिन्नौट कला में निष्णात, फुरतीले एवं खेलकूद में अव्वल। रहमदिल मगर अनुशासन में कठोर। सफेद कुर्ता और पल्लीदार टोपी पहनते थे, कभी कभी साफ़ा भी बाँधते थे। आत्मीयता से भरा हुआ 'बेटे' सम्बोधन से मनुष्य मात्र उनकी ओर खिंचता चला आता था। फारसी व अरबी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। कुरानशरीफ़ आपको कण्ठाग्र थी। दूसरे धर्मों की ओर भी आपका दृष्टिकोण बड़ा उदार था। आप हिन्दुओं के त्योहार बड़े चाव में मनाते थे। विशेषकर जन्माष्टमी का उत्सव उन्हें वहुत पसन्द था। चरण छूने से आप खुश होते थे।

शुरू से ही आप इन्साफ पसन्द थे। आप में पक्षपात छू भी नहीं गया था। आपके बड़े पोते ज़नाब अब्दुल जलील खाँ साहब और एक पं० बजरंग प्रसाद दुबे के बीच जमीन सम्बन्धी एक मुकदमा चल रहा था। आपने पं० बजरंग प्रसाद दुबे को उनकी इल्तजा करने पर दुआ की और वह मुक़दमे में कामयाब हो गये। इसी तरह जमीन का एक और विवाद एक अलाउद्दीन साहब से चल रहा था उसमें भी आपने अलाउद्दीन की दुआ की और ज़नाब अब्दुल जलील खाँ साहब हार गये। इस पर जनाव जलील खाँ साहब ने आपसे शिकायत की कि आपने उस अलाउद्दीन के हक में दुआ देकर उन्हें हरवा दिया। आपने फ़रमाया कि "तुम मेरे पोते हो इसलिए चाहते हो तुम्हारी इम्दाद करें। मैं अदल पसन्द आदमी हूँ। मेरे लिए अपना पराया कुछ नहीं है"।

आपकी औलाद में एक साहबज़ादी और एक साहबज़ादा था। अवकाश ग्रहण करने के बाद आपने मुस्तक़िल तौर से भौगांव में अपनी सकूनत अख्तियार की। अपने फण्ड से मिली रकम से आपने मकान खरीदा जो अब आपके पसमान्दगान बरत

रहे हैं।

आध्यात्मिक जीवन

ज़नाब खलीफ़ा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) आपके न केवल सांसारिक विद्या के गुरु थे बल्कि रूहानी तालीम के भी पीर मुर्शिद थे। सांसारिक विद्या ग्रहण करने के दौरान ही ज़नाब खलीफा जी साहब ने अपनी रूहानी तालीम भी शुरु कर दी थी और आपको अपने जीवन काल में ही आध्यात्मिक क्षेत्र की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया था। किन्तु बाहरी तौर से खिलाफत व इजाज़त अता नहीं की थी।

ज़नाब खलीफा जी साहब खिलाफत व इजाज़त की बात तो दूर, आसानी से बैअत भी न करते थे। उनसे अक़ीदत रखने वाले एक सज्जन ने ज़नाब खलीफा जी साहब से हरचन्द बैअत करने की दरख्वास्त की, मगर उन्होंने बैअत करना मुनासिब नहीं ख्याल किया। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ वह शख्स बिना बैअत हुए ही इस दुनियाँ से कूच कर गया। उसकी मृत्यु के बाद ज़नाब खलीफा जी साहब को बड़ा अफसोस हुआ और उस शख्स की मजार पर तशरीफ ले गये। उसको बैअत किया और अपनी तवज्जोह से सरशार कर वली बना दिया हज़रत शाह साहब अपने पीर की इस घटना का जिक्र बड़े फ़ख्र से किया करते थे और फ़रमाया करते थे कि जो चाहे उन वली साहब को देख आये।

आपकी मुलाज़मत के जमाने में इसी तरह एक दरोगा जी का नौजवान लड़का आपकी सोहबत में बैठा करता था और उसने अनेक बार बैअत करने की दरख्वास्त की। हज़रत शाह साहब उसको बड़े प्यार से समझा दिया करते थे। "बेटे मुझे इजाज़त नहीं है।" यह जवाब सुन कर उस लड़के ने कहा "जैसे आपके पीर ज़नाब खलीफा जी साहब ने एक शख्स को बाद मैयत बैअत किया था और वली बनाया था, उसी तरह मालूम पड़ता है आप मेरे मरने के बाद बैअत करेंगे तथा सद्गति को प्राप्त करायेंगे"। आपने उससे फ़रमाया "बेटे ऐसा न कहो, तुम अभी लड़के हो, अल्लाह पाक तुम्हारी उम्र दराज करे"। अल्लाह की ऐसी मरज़ी कि कुछ दिनों बाद उस लड़के का इन्तकाल हो गया। उसके बाद हज़रत शाह साहब को ख्याल गालिब हुआ "कि मेरे

पीर मुर्शिद में तो यह तौफीक थी कि अपने श्रद्धालु को मरने के बाद बैअत कर वली बना दिया और मैं इस लायक नहीं हू। क्या करूँ ? इस लड़के का कैसे कल्याण हो। इस ख्याल के गल्बे ने हज़रत शाह साहब को, बेचैन कर दिया। और आप तीन दिन रात अल्लाह पाक से गिड़गिड़ाते रहे और दुआ माँगते रहे कि इस लड़के का कल्याण हो। आपके पीर भाई ज़नाब हुजूर महाराज (मौलाना फज्ल अहमद खाँ रायपुरी) आपसे उम्र में बहुत बड़े थे किन्तु दोनों भाइयों में अपार प्रेम था। अतः आपने उनकी खिदमत में जाने का फैसला किया।

उधर ज़नाब खलीफा जी साहब ने उसी रात को ज़नाब हुजूर साहब को ख्वाब में यह हिदायत फ़रमायी, "अब्दुल ग़नी खाँ कल तुम्हारे पास पहुंच रहे हैं। उनको समझा कर तसल्ली देना। वह बहुत बेचैन हैं। वह दरोगा का लड़का मरने के बाद उनसे बैअत हो गया है और रूहानियत के आला मदरिज पर पहुंच गया है। अब उसके बारे में वह कतई फिक्र न करे। तुम उन्हें इसी वक्त इजाज़त ताम्मा अता करके वापस करना।"

हज़रत शाह साहब अपने फ़ैसले के मुताबिक दूसरे दिन फरुखाबाद शहर की उस मस्जिद में, जहाँ ज़नाब हुजूर साहब उन दिनों वहीं रह रहे थे, पहुंच गये। पहुँचने के बाद आपके पीर भाई ज़नाब हुजूर साहब ने पहली बात आपसे यही कही कि "भाई ग़नी अद्दा (प्यार व आदर में वह इसी सम्बोधन से पुकारते थे) आप उस दरोगा के लड़के के बारे में कतई फिक्र न करे। वह लड़का आपसे बैअत होकर आला तरीन मुकाम पर नशिस्त है।

हज़रत शाह साहब ने आपसे यह सवाल किया कि उन्हें उस दरोगा के लड़के की बाबत और बेचैनी का कैसे इल्म हुआ। ज़नाब हुजूर साहब ने जवाब में यह फ़रमाया "भाई ग़नी अद्दा पिछली रात ही ज़नाब खलीफा जी साहब ने ख्वाब में मुझे यह हिदायत दी है कि आप आ रहे हैं और ताकीद की है कि दरोगा के लड़के के सम्बन्ध में आपके ख्याल को बिलकुल निकाल दे। साथ ही इसी मौक़े पर आपको इजाज़त ताम्मा देने का निर्देश दिया है। अतः उसी दिन ज़नाब मौलाना फज्ल अहमद खाँ सा० ने हज़रत शाह साहब अब्दुल ग़नी खाँ को इजाज़त व खिलाफत अता की।

उसी रात दोनों पीर भाई साथ साथ मराक़बे में बैठे। फिर सोने के लिए लेट गये।

रात में करीब 1 बजे हज़रत शाह साहब को बहुत तेज भूख का अहसास हुआ। आप फरुखाबाद बाजार की ओर खाने की तलाश में निकल गये। शहर की सभी दुकाने बन्द थी। आपको कुछ दूर जाकर शहर के पक्के पुल नामक मुहल्ले में एक भुरजी भाड़ जलाये हुए मिला जो चने भून भून कर ढेर लगा रहा था। आपने एक रुपया और रुमाल बढ़ा कर चने माँगे। भुरजी ने चने देने से इनकार कर दिया। मजबूरन आप पुनः आकर लेट गये। हस्ब मामूल दूसरे दिन सुबह अपनी दिनचर्या से फारिग होकर दोनों साहबान खाना खाने बैठे। इस समय तक हज़रत शाह साहब की रात वाली भूख समाप्त हो चुकी थी। लिहाज़ा अपनी रोजमर्रा की भूख के अनुसार भोजन किया। ज़नाब हुज़ूर साहब ने आपसे और खाने का इसरार किया और कहा कि रात में तो आप खाने के लिए तमाम बाजार में चक्कर लगाते फिरे। आगे फिर फ़रमाया कि वह भुरजी अगर आपको अपने सब चने दे देता तो भी आपके भूख की ख्वाहिश ज्यों की त्यों बनी रहती। वह भूख थी ही इस प्रकार की।

आपके मुरीदैन

इसके बाद आपने बहुत ही तालिबों को इस ओर प्रवृत्त किया। आपके मुरीदों की संख्या अत्यधिक थी। उनमें हिन्दू मुरीद ज्यादा तादाद में थे। आपके इकलौते साहबज़ादे भी आपके ही खलीफा अरसद थे। महात्मा रघुबर दयाल जी (चच्चा जी महाराज) के तीन पुत्र थे, तीनों पुत्र आपसे ही बैअत थे। ज्येष्ठ पुत्र महात्मा ब्रज मोहन लाल तथा मँझले पुत्र महात्मा राधा मोहन लाल को आपने ही इजाज़त व खिलाफत अता की थी। महात्मा जगमोहन लाल को, जो महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (लाला जी साहब) के एक मात्र पुत्र थे, आपने ही इजाज़त व ख़िलाफ़त अता की थी।

महात्मा ब्रज मोहन लाल जी को इजाज़त देने के वास्ते आपके पीर भाई किबला हुज़ूर साहब ने ख्वाब में निर्देश दिया था और आपने पूज्यपाद लाला जी साहब को खत लिख कर तलब किया था। इजाज़त देने के वक्त आप घर से उस टोपी को पहन कर निकले जो आपको बर वक्त इजाज़त आपके पीर भाई ने अता की थी। जब आप बाहर आकर बैठ गये तो महात्मा ब्रज मोहन लाल से, जिन्हें प्यार में 'बिरजू' कहते थे, अपनी ओर देखने को कहा। ज्यों ही उनकी नजर हज़रत शाह साहब की नजर से मिली त्यों ही उनकी चीख निकल गयी और ग़शी तारी हो गई। आँखें खुली की खुली

रह गई। हज़रत शाह साहब ने उनके सिर पर लगी टोपी तुरन्त हटा दी और अपने सिर की टोपी उनके सिर पर रख दी। महात्मा ब्रज मोहन लाल जी की इस इञ्जनोवी हालत को देखकर लाला जी साहब को कुछ घबराहट हुई। उसका अनुभव करने पर हज़रत शाह साहब ने अपना रुमाल मुबारक उनके सीने पर रख दिया और ज़नाब लाला जी साहब से कहा, "आप घबरायें नहीं, यह मरेगा नहीं। आगे चलकर इससे एक आलम मुनव्वर होगा।" इसी प्रकार हज़रत शाह साहब अपने साहबज़ादे के लिए अकसर फ़रमाया करते थे - "रूहानी दुनियाँ को पुरनूर करने के लिए मेरा अकेला 'गफ्फार' ही काफी है।"

महात्मा ब्रज मोहन लाल जी, जो 'पिताजी' के नाम से मशहूर हैं, के असंख्य मुरीद हैं। उनके विषय में अलग से पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इसी तरह महात्मा राधा मोहन लाल जी (मुन्शी जी) से भी भारी तादाद फैज़याब हुई। महात्मा जगमोहन लाल जी स्वभाव के बहुत सीधे व सरल थे। उन्होने भी इस क्षेत्र में लोगों को लाभ पहुंचाया यद्यपि उनकी जिन्दगी ने ज्यादा वफा न की।

पं० दरयाव सिंह के हालात

तमाम मुरीदों में एक पं० दरयाव सिंह जी भी थे जो जाति के ब्राह्मण थे और हज़रत शाह साहब की केवल शक्ल देखने के शैदायी थे। हज़रत शाह साहब उनके विषय में बहुत सी बातें बताया करते थे। जिनमें चन्द बातों का जिक्र यहाँ किया जाता है। जिस समय हज़रत शाह साहब शिकोहाबाद में हेडमास्टर थे, पं० दरयाव सिंह उस स्कूल में पढ़ा करते थे। रात में भी अन्य विद्यार्थियों के साथ पढ़ने आते थे। पढ़ाई खत्म हो जाने के बाद दरयाव सिंह हज़रत शाह साहब के पैर दबाया करते थे। एक दिन का वाकया है कि पैर दबवाते दबवाते हज़रत शाह साहब सो गये और दरयाव सिंह भी पैर दबाते दबाते उसी चारपाई में पैरों से लिपटे हुए सो गये। सोते में ही हज़रत शाह साहब को यह आभास हुआ कि उनकी तवज्जोह जारी है और किसी शख्स के तमाम मुकामात ज़ाकिर हो गये हैं, और वह फना फिल्लाह की दशा को पहुँच गया हैं। आप जाग उठे और देखा कि दरयाव सिंह सो रहें हैं और उन्हीं की यह हालत हो गयी है। आप उठे और दरयाव सिंह की उस हालत को सल्ब कर लिया। इसके

बाद दरयाव सिंह को जगाया और हिदायत की, "बेटे जब नींद आ जाया करे तो अलग जाकर सो जाया करो। मेरे साथ कभी न सोना।" दरयाव सिंह जी बहुत शर्मिन्दा हुए और कहा, "हुजूर, में जान नहीं पाया कि कब सो गया।"

पं० दरयाव सिंह पढ़ने की अवस्था से ही जज़्ब की हालत में रहते थे। एक बार दस्तवत्य रास्ते में बड़े अदब से खड़े थे। हज़रत शाह साहब उधर से गुजरे और उनके धीरे से एक चपत मारी, तब उन्हें होश आया। पूछने पर बताया, "कि मुझे आप दिखाई दे रहे थे, इस लिए अदब से खड़ा हो गया।"

ज़नाब दरयाव सिंह जी हज़रत शाह की शक्ल घण्टों देखा करते थे। जिस ओर आप घूमते उसी ओर वह बैठ जाते थे। अगर आपने कभी दीवाल की ओर मुँह कर लिया और दीवाल की तरफ खड़े होने की जगह नहीं है, तो पैताने की और मचवे पर एक पैर रखा वह घण्टों खड़े रहते थे ओर आप का मुँह ताका करते थे। एक बार आपके पीर भाई ज़नाब हुजूर साहब आपके यहाँ तशरीफ ले गये और दोनों साहबान बराबर चारपाई डाले हुए लेटे थे। आपने हुजूर साहब की ओर मुंह कर लिया। उन्होने इस बात का ख्याल किए बिना कि उनकी पीठ ज़नाब हुजूर साहब की ओर हो जायेगी, दोनों चारपाइयों के दरम्यान खड़े हो गये। हज़रत शाह ने कहा, "बेटे तुम्हारी पीठ ज़नाब हुजूर साहब की ओर है यह बड़ी बेअदबी है।" हुजूर साहब ने फ़रमाया। "उसे जैसा भी खड़ा हो खड़ा रहने दो।"

एक बार कोई हिन्दू महात्मा ज़नाब दरयाव सिंह के गाँव आ गये। शाम के वक्त मैदान में उनका प्रवचन होता था और बड़ी भीड़ एकत्रित होती थी। एक दिन गांव वाले दरयाव सिंह जी को भी ले गये। भीड़ अधिक थी वह भीड़ के पीछे से दूर बैठ गये। उनके बैठ जाने पर महात्मा जी ने बोलना बन्द कर दिया और श्रोताओं से कहा कि वे लोग अपनी अपनी जगह पर बैठे रहे। महात्मा जी अपने आसन से उठ कर वहाँ गये जहां ज़नाब दरयाव सिंह बैठे थे और उनको जबरन उठा कर ले आये और अपने आसन पर बैठाया तब बोलना शुरू किया। दूसरे बिन वह महात्मा दरयाव सिंह जी के घर गये। उन्होने महात्मा जी का बड़ा आदर सत्कार किया। बातचीत के दौरान महात्मा जी ने पूछा “आप हिन्दू हैं कि मुसलमान ?” दरयाव सिह जी ने कोई जवाब नहीं दिया। तीसरे दिन महात्मा जी फिर उनके यहाँ तशरीफ ले गये और इसी प्रश्न को

दोहराया कि वह हिन्दू हैं या मुसलमान ? दरयाव सिंह जी फिर भी चुप रहे। पुनः गाँव से विदा होते समय वह महात्मा जी फिर गये और वही प्रश्न पूछा “आप हिन्दू हैं या मुसलमान ?” इस बार ज़नाब दरयाव सिंह ने बड़ी संजीदगी से कहा, “अभी आप हिन्दू और मुसलमान का चक्कर और दूर कर दें।”

दरयाव सिंह जी के गाँव में एक अन्नहा भैंसा कही से आ गया। वह भैंसा किसी भी भैंसों की जोड़ी को देखते ही मार डालता था और आदमियों को भी लखेद लेता ओर मार डालता था। उस इलाक़े में उसका बड़ा भय व्याप्त था तथा रास्ता चलना बन्द हो गया था। दरयाव सिंह उसी ओर चले जाने लगे जहाँ भैंसा मौजूद था। उन्हें उधर जाने से मना किया गया मगर वह 'खुदा हाफिज' कहते हुए उधर ही चले गये। भैंसा उन्हें देखकर सर नीचा किए हुए उनकी ओर दौड़ा। उन्होने अपने दोनों हाथ उसके सींगों में इस प्रकार डाल दिये जैसे उससे मिल रहे हों। थोड़ी देर में वह भैंसा उनसे छूट कर भाग गया और फिर कहीं नहीं दिखाई दिया।

पं० दरयाव सिंह नित्य प्रति हज़रत शाह साहब के पास जाया करते थे। उनका ब्राह्मण परिवार इससे बड़ा खिन्न था और प्राय: यह चर्चा होती थी कि उन्हें कैसे रोका जाय। एक दिन उन्हीं के परिवार की एक बुढ़िया दादी ने उन्हें टोका, “क्यों दरयाव सिंह, तू उस मुसल्ले के यहाँ क्या लेने जाता है।” हज़रत शाह साहब के प्रति ऐसे तिरस्कार पूर्ण शब्द को सुन कर वह एक दम जज़्ब में आ गये और उसी हालत में बोल उठे "तू क्या जाने गू खानी"। बस उसी दिन वह बुढ़िया 'गू' खाने लगी। खुद पाखाना करती और खुद खा लेती। सब लोग बड़े परेशान हो गये और आखिर हज़रत शाह साहब को यह बात बतायी गई। आपने यह बात सुनी और विचार किया कि उसी से यह ठीक भी हो सकती है। लिहाज़ा शाम को जब दरयाव सिंह जी आये, हज़रत शाह साहब ने उनका सलाम कबूल नहीं किया और डाँटते हुए बोले, "निकल जाओ यहाँ से, खबरदार, अब मुँह न दिखाना।" अब दरयाव सिंह जी वहाँ से निकल कर चल दिये। तीन दिन रात खेतों में पागलों की तरह घूमते रहे। न अन्न ग्रहण किया, न जल पिया। पुनः हज़रत शाह साहब ने उन्हें अपनी तवज्जोह से प्रेरित किया और वह बस्ती की ओर गये। वहाँ जाकर देखा कि वह बुढ़िया दादी पड़ी हैं। उनके पास गये और कहा, "अब क्यों पड़ी है, चल उठ, निकलवा तो दिया, अब भी चैन नहीं है।" यह सुनते ही

दादी उठी और बिल्कुल ठीक हो गयी। इसके बाद हज़रत शाह ने उन्हें पुनः बुलवा लिया।

पिता जी की मृत्यु के पश्चात् दरयाव सिंह जी के भाइयों में बँटवारा हुआ। पिता जी बहुत सम्पन्न और हाथी नशीन थे। दरयाव सिंह अपने भाइयों में सबसे छोटे थे। बँटवारे में आपको मवेशियों वाला घर दिया गया। और घर के टूटे-फूटे बरतनों के साथ 20 सेर जौ हिस्से में मिले। दरयाव सिंह ने न कुछ कहा न कोई शिकायत की। इस सिलसिले में आ जाने पर मनुष्य स्वभावतः षट्विकारों से अप्रभावी रहता है। मन में भी किसी तरह का दुर्भाव नहीं पैदा हुआ।

कुछ ही दिनों बाद दरयाव सिंह का एक दोस्त उनके पास आया और कहा, "भाई, तुम व्यापार क्यों नहीं करते"। 5000 रुपये की पीली सरसों भर लो अच्छा मौका है। "दरयाव सिंह मुस्कराये, "क्या मजाक करते हो यहाँ पाँच पैसे नहीं हैं।" दोस्त ने जवाब दिया पैसे मैं लगा दूँगा। घाटा हो जाय तुम से कोई मतलब नहीं। केवल तुम 'हाँ' कर दो। इस पर दरयाव सिंह जी ने कहा, "तब मुझे क्या एतराज, इतना तो तुम बिना पूछे कर सकते थे।" दोस्त ने फ़रमाया, "बिना तुम्हारी 'हाँ' किये कैसे करता।" इस समझौते के अनुसार 5000 रुपये की पीली सरसों भरी गयी। अल्लाह पाक ने बरकत की। फायदा हुआ और धीरे-धीरे उनका व्यापार चल पड़ा। बाद में उन्होंने हाथी भी खरीदा।

पं० दरयाव सिंह का देहान्त जवानी में ही हो गया। हिन्दू प्रथा के अनुसार उनकी चिता लगायी गयी। चिता में अग्नि देने के पश्चात् देखा गया कि सभी लकड़ी तो जल गयी परन्तु लाश वैसी ही रक्खी है। दुबारा फिर चिता लगायी गई मगर लाश वैसी की वैसी बनी रही। जब तीसरी बार चिता लगायी गयी तब अग्नि देने के पूर्व उनके बड़े भाई ने दरयाव सिंह के दाहिने कान में कहा, "दरयाव सिंह जिस राज को तुम जिन्दगी भर छुपाये रहे क्या अब आखीर वक्त परदाफाश करोगे" यह कह कर उन्होंने आग लगायी। थोड़ी ही देर में चारों ओर से आग की लपटे धू-धू करके उठने लगी और आकाश तक अग्नि-पुन्ज का एक गुम्बद सा बन गया। जब आग की लपटें कम हुई तब देखा गया कि लकड़ियाँ तो सब जल रही हैं मगर चिता में रक्खा 'शव' नहीं है। जाहिर है कि पं० दरयाव सिंह अपने पीर में इस क़दर फ़ना थे कि पीर की अक़ीदत उनकी

अक़ीदत बन गयी थी।

तज़किरा ज़नाब शाहपुराधीश का

जयपुर के पास एक रियासत थी। वहाँ के हिन्दू राजा शाहपुराधीश कहलाते थे। वह आपके शिष्य थे और आपकी सोहबत में वह भी कामिल फकीर हो गये थे। वह जब कभी भौगाँव तशरीफ लाते थे तब रेल्वे स्टेशन से हज़रत शाह साहब के घर पैदल ही आते थे बावजूद इसके कि हज़रत शाह साहब खुद ही उनकी सवारी का इन्तजाम कर देते थे। उनका कहना था कि अपने ऐसे बुजुर्ग के यहाँ सवारी पर जाना बेअदबी है। उन्हीं शाहपुराधीश ने अपने अन्तिम समय पर कलमा शरीफ पढ़ा और कलमा शरीफ के आखिरी लफ़्ज़ के साथ आपकी आखिरी सांस निकली।

हज़रत शाह साहब ज़ाहिर धर्म परिवर्तन के घोर विरोधी थे। आगरा के एक सज्जन, जिनका नाम लिखना लाजिम न होगा, आपके पास आये और आपकी इम्दाद से इस्लाम कबूल करने की ख्वाहिश जाहिर की और बड़ी जिद की। परन्तु हज़रत शाह साहब ने दृढ़ता पूर्वक विरोध किया और उनको आजीवन हिन्दू बने रहने का जोर दिया और वह हिन्दू ही बने रहे।

भौगांव बस्ती के चन्द मुसलमान आपके मुरीद थे और आपसे बैअत होकर कामिल इन्सान बने। आपसे असंख्य हिन्दू फैजयाब होकर मन्जिले मकसूद पर पहुँचे। सिर्फ इन्सान ही रूहानी मेराज को पहुंच कर पुरनूर नहीं हुए बल्कि जिन्नात की काफी तादाद भी आपसे बराबर फैजयाब होती रही।

जिन्नात

शुरू में जब आप मुस्तक़िल तौर से भौगांव में रहने लगे तो जिन्नात में आपकी रूहानी बुलन्दी की शोहरत हुई। एक जिन्न ने आपका इम्तहान लिया। वह जिन्न अत्यंत बूढ़ा व अपाहिज बन कर रात के अंधेरे में उस रास्ते पर बैठ गया जहाँ से हज़रत शाह साहब गुजरे। उस जिन्न ने आपसे किसी जगह ले जाने का अर्ज किया। आप उसे अपनी पीठ पर लाद कर वहां तक ले गये जहां वह चाहता था। उसी जिन्न ने अपनी जमात में बताया, "उस फकीर के बारे में जो कुछ सुना है, वह उससे भी कहीं

आगे है ।" फिर जिन्नात आधी रात के सन्नाटे में आपकी सोहबत में आते और मराक़बा करके लौट जाते।

जिन्नात को आपके अन्य मुरीदों ने इत्तफाकन देखा भी था। एक बार एक साहब जिद करके देर तक बैठे रहे और हज़रत शाह साहब के बार-बार कहने पर भी न गये। उधर जिन्नात उनके यहाँ आने के लिये बेताब थे। बाद में जब वह साहब जाने के लिये बाहर निकले तो देखा कि एक भीमकाय आदमी खड़ा है। उसे देखते ही उनकी चीख निकल गयी। फिर आपने उन्हें अपने एक पोते के हमराह कर दिया। बाद में जब वह जिन्न अपने साथियों के साथ अन्दर दाखिल हुआ तो हज़रत शाह ने उसे बहुत डांटा कि उसने इन्तजार क्यों नहीं किया।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना भी है। एक बार अर्द्ध रात्रि के पश्चात् आपने अपने द्वितीय पोते ज़नाब मुग़नी साहब को आवाज दी कि वह आंगन के दरवाजे पर रक्खी लालटेन को लेकर उनके एक मुरीद को भेज आयें। ज़नाब मुग़नी साहब जब तक आते उसके कब्ल ही उस मुरीद ने देखा कि बाहर के दरवाजे से एक हाथ अन्दर आया, और लालटेन उठा ली और बाहर रख दी। जिन्न की इस हरकत को देख कर हज़रत शाह साहब बहुत नाराज हुए और फ़रमाया कि यह उसकी कैसे जुर्रत हुई और कहा कि अब मैं आप लोगों को घण्टों इन्तजार कराया करुंगा। जिन्नात ने माफी माँगी और वादा किया कि आइंदा ऐसा कभी न करेंगे।

जिन्नात से छुटकारा दिलवाने के आपके कई वाक़यात हैं। उनमें दो वाक़यात लिखे जाते हैं।

शिकोहाबाद क़स्बे के एक एडवोकेट साहब का भरा पूरा सम्पन्न परिवार था। उनके एक क्वाँरी लड़की थी। वह लड़की अपने घर के तिमञ्जिले पर मादर जाद नंगी रहती थी। वहाँ कोई जा नहीं सकता था। यदि कोई हिम्मत करता तो तीसरे मञ्जिल की सीढ़ियों पर चढ़ते ही नीचे फेंक दिया जाता था। इस प्रकार 6 महीने व्यतीत हो गये थे, कोई उपाय कारगर नहीं होता था। एडवोकेट साहब हज़रत शाह साहब के आगे गिड़गिड़ाये। आप वहां तशरीफ ले गये, मामले पर गौर किया। फिर एडवोकेट साहब को बुलाकर कहा, "मैं एक खत लिखता हूँ। आप उसे ले जाकर लड़की को इस प्रकार दिखायें कि वह पढ़ ले। आप डरे नहीं आपको सीढ़ियों से कोई न फेंक पायेगा

।" आपने एक बड़े कागज पर लिखा, "आप इस लड़की को छोड़कर चले जाइये, वरना मामला आगे बढ़ा दिया जायेगा। फकीर अब्दुल ग़नी नक़्शबन्दी मुजद्दिदी मज़हरी नईमी" और फ़रमाया कि एक मशाल के साथ कागज को इस तरह ले जाओ कि कागज लड़की के सामने रहे।

जब एडवोकेट साहब कागज और मशाल को लेकर सीढ़ियों पर चढ़ने लगे, तो उस लड़की ने ललकारा "यहां कौन आ रहा है।" मगर एडवोकेट साहब डरे नहीं, और उस कागज को लड़की के सामने पेश कर दिया। जैसे ही उस कागज की इबारत को उस लड़की ने पढ़ा, कहा "जाइये"। इसके बाद वह लड़की उतर कर नीचे दूसरे खण्ड पर आ गयी और हज़रत शाह साहब से कहा, "अस सलामइलेकुम, मुझे इल्म न था कि आप इस बस्ती में रौनक अफरोज हैं, वरना यह गुस्ताखी हरगिज न होती। मैं इसी वक्त जा रहा हूँ। सलामइलेकुम।" इसके बाद वह लड़की ठीक हो गयी और हमेशा-हमेशा के लिये ठीक रही।

एक बार आप सड़क के किनारे-किनारे जा रहे थे और आपके मुखालिफ ओर से एक बैल गाड़ी आ रही थी जिस पर 3, 4 लोग सवार थे। उनके साथ एक मादरजाद नंगी औरत भी थी। ज्योंही उस औरत ने हज़रत शाह साहब को अपनी ओर आते देखा त्यों ही अपने कपड़े पहन कर कायदे से बैठ गयी। यह देखकर आप फौरन समझ गये और बैल गाड़ी पर सवार लोगों से पूछा कि माजरा क्या है। उन लोगों ने कहा, "यह औरत इसी तरह नंगी रहती है, जहां चाहती है जाती है, गन्दी-गन्दी बातें बकती है। आपको देखकर न जाने क्यों कपड़े पहन कर अदब से बैठ गयी।" इसके बाद हज़रत शाह साहब ने एक खाली शीशी माँगी। इत्तिफ़ाक़ से शीशी मिल गयी। उस शीशी को लेकर आपने कुछ पढ़ा और दम किया, फिर हिदायत की कि उस शीशी को जमीन में गाड़ दें। इसके बाद वह औरत बाकी जिन्दगी भर ठीक रही।

इस प्रकार प्रेत बाधा व आसेव के पचीसों किस्से लोगों की जबान पर हैं। यही नहीं आप शारीरिक व्याधियों को भी सल्ब कर लिया करते थे। कहना चाहिए कि आप हुस्ने अख़लाक़ के सरे चश्मा थे। उनके फ़ैज़ का दरिया हमेशा बहता रहता था। दरिया की दो धारायें थीं। एक रूहानी और दूसरी दुनियावी। अपनी-अपनी पहुँच के मुताबिक लोग उससे लाभान्वित होते थे।

आप एक नवाब साहब के शाहज़ादे का भी तजकिरा किया करते थे। वह शाहज़ादा जन्म से ही नामर्द था और उसकी शादी तै हो गयी। किसी तरह लड़की वालों को उसके नामर्द होने का पता लग गया। शादी तै हो चुकी थी अतः लड़की वाले बड़े पसोपेश में थे। इनकार कैसे करते और जान बूझकर करते भी कैसे ? आखिर लड़की वालों ने एक शर्त रक्खी कि वे शाहज़ादे के पुंसत्व (नामर्दी) की परीक्षा लेंगे। शाहज़ादे ने यह खबर सुनी तो बहुत घबराया और ज़नाब किबला फज्ल अहमद खाँ साहब के पास रायपुर गया और उनसे इस मौक़े पर अपनी इज्जत बरकरार रहने की दरख्वास्त की। ज़नाब हुज़ूर साहब ने फ़रमाया, आप अपनी यह दरख्वास्त मेरे पीर भाई ग़नी अद्दा से करें।"

अद्दा शब्द का इस्तेमाल मुसलमानों के यहाँ अपने से बड़े के लिए अदबन किया जाता है और चूँकि ज़नाब शाह साहब अपने पीर व मुर्शिद के बहुत अजीज व प्यारे थे जिसके कारण ज़नाब हुज़ूर साहब भी उनका अहतराम (सम्मान) करते थे तथा उनके नाम के बाद अद्दा लगाकर सम्बोधित किया करते थे जबकि वह उनसे बहुत छोटे थे।

शाहज़ादे साहब हज़रत शाह साहब की खिदमत में गये और अपनी अर्जी पेश की। आपने बड़े इत्मीनान से उनकी बात पर गौर किया और आश्वासन दिया कि वह घबरायें नहीं। जिस दिन उनकी परीक्षा हो उसके कब्ल आपको इत्तिला करें। शाहज़ादे ने उस दिन से हज़रत शाह साहब से बराबर ताल्लुक बनाये रक्खा और परीक्षा के दिन की पहले ही से इत्तिला कर दी। हज़रत शाह साहब ने बेखटके रहने की सलाह दी। परीक्षा के दिन एक तवायफ लायी गयी और आपको एक कमरे में बैठाया गया। वह तवायफ जब कमरे के दरवाजे पर पहुँची तो अन्दर प्रवेश करने की हिम्मत न जुटा सकी। शाहज़ादे ने उसे बारहा बुलाया मगर वह कमरे में नहीं घुसी और हम-बिस्तरी से बाज़ रहने के लिए हाथ जोड़ कर माफी माँगी। उस तवायफ ने लड़की वालों को उस तथ्य को ग़लत बताया और शाहज़ादे की मरदानगी की ताईद की। इसके बाद शाहज़ादे ने शादी करने से इकार कर दिया।

हज़रत शाह साहब की हमदर्दी व मुहब्बत के न जाने कितने वाकयात हैं जिनका जिक्र करना मुमकिन न होगा। परन्तु ज़नाब रमेश बाबू को खुद का एक तजुरबा यहाँ लिखा जाता है। रूहानी तालीम की गरज से आपके सम्पर्क में ज़नाब रमेश बाबू

बचपन से ही थे और हज़रत शाह साहब के इन संस्मरणों के सूत्रधार भी हैं। जिन दिनों वह कन्नौज के इन्टर कालेज में पढ़ते थे मलेरिया के ज्वर से पीड़ित रहा करते थे। छुट्टी लेकर घर जाते और दवा इत्यादि लेने से ठीक हो जाते थे परन्तु ज्योंही फिर कालेज में पहुँचते बीमार हो जाते। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत शाह साहब उन दिनों एक मुरीद के पास कन्नौज रेल्वे स्टेशन पर आये हुए थे। उनका वह मुरीद स्टेशन पर ही पी० डब्लू० आई० था और उसी ने आपको ज़नाब रमेश बाबू की बीमारी का हाल बताया। लिहाज़ा आप उन्हें देखने गये। उनकी चारपायी पर बैठ कर उन्हें अपनी बायीं ओर बिलकुल सटे हुए बिठला कर कुछ देर बातें की और चलने के चन्द मिनट पेश्तर उनके सिर से घुटने के नीचे तक अपना दाहिना हाथ फेरते हुए यह पूछते जाते थे, "क्या बेटे यहाँ भी दर्द है ?" ऐसा करने के बाद वह दुआ देकर चले गये। उनके जाते ही ज़नाब रमेश बाबू का सारा दर्द व तेज ज्वर गायब हो गया।

तरीका तालीम

अपने पीर ज़नाब खलीफा जी से रूहानी तालीम हासिल करते वक्त आपको बड़े-बड़े इम्तहानों से गुजरना पड़ा। आपका ही बताया हुआ एक वाकया मुन्दर्ज़े ज़ैल है।

यह जिक्र शुरू में ही हो चुका है कि बचपन से आप अपने पीर मुरशिद के सम्पर्क में आ गये थे। दुनियावी तालीम के साथ-साथ रूहानी तालीम का भी सिलसिला चल रहा था। एक बार हज़रत शाह साहब अपने ही दरवाजे पर चारपायी पर लेटे हुए मराकबा कर रहे थे। आपको महसूस हुआ कि कोई आपकी चारपायी के आसपास नाच रहा है। सिरहाने से पैताने की ओर और पैताने से सिरहाने की ओर जाता है। आप साफ तौर से घुँघरवों व करधनी की आवाज सुन रहे थे। 'यह क्या माजरा है' यह जानने के लिये आपने आँखें खोली। क्या देखते हैं कि एक बहुत ही खूबसूरत षोडसी नाच रही है। आप अपनी आँखें बन्द करके फिर मराक़िब हो गये जैसे कुछ था ही नहीं। आप जब ज़नाब खलीफा जी साहब के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने आपसे दरयाफ़्त किया कि आपने मराक़बे के वक्त उस हसीना को देखने के लिये आँखें क्यों खोली। आपने जवाब दिया, "मैंने देखा ही तो था मेरी नियत बद तो नहीं हुई।" ऐसी बा हिम्मत साफगोई से जाहिर है कि ऐसे वाकयात से आप कितने बे असर रहे। तस्फ़िया क़ल्ब

व तज़किया नफ़्स की तालीम समानान्तर रूप से करना इस सिलसिले के पीराने उज्ज़ाम की विशेषता है।

हज़रत शाह साहब के पीर ने जिस प्रकार आपकी रूहानी तालीम, लतीफा क़ल्ब को अल्लाह के नाम व जज़्ब से मुनव्वर कर लतीफा नफ़्स के जुमला अनासिर की तरतीबी दुरुस्ती करते हुए अपनी तवज्जोह से बक़ाउलबक़ा के मुकाम तक पहुँचाने में दरस की थी, ठीक उसी प्रकार आपने भी अपने जुम्ला मुरीदैन की रूहानी परवरिश की। नफ़्स के तहत एमाले बद से बचते हुए एमाले हस्ना की तौफीक सालिक को अपने तसर्रुफ तवज्जोह से अता फ़रमाते थे और जबानी ताकीद व हिदायत भी इस अम्र की करते थे। बसा औकात इस पर जोर देने की ग़रज़ से एक घटना भी सुनाया करते थे।

हैदराबाद में एक जलसा किया गया था। उसकी चर्चा का विषय था 'फकीरी किसे कहते हैं'। उस जलसे में मुल्क के तमाम उल्मा व फकीर इकट्ठे हुए थे। वहाँ आमतौर से लोगों ने बड़ी लम्बी-लम्बी तक़रीरें की। उन्हीं वक्ताओं में एक जवान लड़का भी था जिसने केवल इतना ही कहा कि 'तर्के एमाले बद को फकीरी' कहते हैं। अन्त में वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने उपर्युक्त इस वाक्य को ही फकीरी की परिभाषा स्वीकार की थी। कहना न होगा कि हज़रत शाह साहब इस परिभाषा के अनुरूप ही फकीर थे और जोर देकर फ़रमाते थे कि हर बुज़ुर्ग को अपने मुरीदैन को इसी तरह आगे ले चलना चाहिये।

आप आध्यात्मिक सेवा में अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक संलग्न रहे और उनकी दया व कृपा से असंख्य लोगों का उद्धार हुआ। आप प्रायः कहा करते थे, "इबादत बजुज ख़िदमतें खल्क नेस्त" (जीव मात्र की सेवा के सिवाय कोई अन्य पूजा नहीं)। बिना किसी भेदभाव के आपने अपना सम्पूर्ण जीवन प्राणि मात्र की सेवा में समर्पित रक्खा और 30 मार्च, 1952 को इस दुनियाय फानी से कूच कर गये। भौगांव में ही उस बाग में, जो ज़नाब लालाजी साहब व उनके छोटे भाई ज़नाब चच्चा जी साहब ने हज़रत शाह साहब के नाम लिख दिया था, आपकी मजार शरीफ स्थित है और तालिब आज भी उस मजार की फ़ैज से सरशार हो रहा है। "इन्ना (लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट

जायेंगे)

❸❺

36-1. हजरत जनाब मुंशी रामचन्द्र साहब (महात्मा जी महाराज) (फतेहगढ़)

आपकी समाधि फतेहगढ़ में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

36-1. हजरत जनाब मुंशी रामचन्द्र साहब (महात्मा जी महाराज) (फतेहगढ़)

(महात्मा हरनारायण जी सक्सेना की पुस्तक 'नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्गान व उनकी समाधियां' से साभार)

भारत भूमि सदा से ही धर्म स्थली रही है। यहाँ सदा से ही सन्त महात्मा ओर अवतार होते रहे हैं। जब जैसा समय आया उसी आवश्यकतानुसार दिव्य आत्मायें यहाँ अवतरित होती रहीं। पतित पावनी गंगा के तट पर उत्तर प्रदेश में एक नगर फतेहगढ़ (फर्रुखाबाद) आबाद है यहीं पर यह दिव्य महान् आत्मा अवतरित हुई। अपना काम करके पुनः दिव्य लोक में विलीन हो गई। इस परम कल्याणकारी प्रातः

स्मरणीय महान आत्मा का नाम महात्मा श्री रामचन्द्र (उर्फ लालाजी) था।

सम्राट अक़बर के समय में एक कायस्थ कुल दीपक श्रीमान वृन्दावनदास साहब (अज़ान वाहु) थे। इनकी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से प्रसन्न होकर सम्राट अक़बर ने आपको 555 गाँव की जागीर व शाही ख़िलअत तथा चौधरी का खिताब दिया था। आपने एक कस्बा भूमिग्राम नाम का जिला मैनपुरी में बसाया। इसी का बाद में भौगाँव नाम पड़ गया। इसी वंश में चौधरी हरबख्श राय साहब हुए। सन् 1857 ई० के स्वतन्त्रता संग्राम में इस क़स्बे को लूट लिया गया और जानमाल का खतरा हो गया। चौधरी साहब अपनी जन्मभूमि छोड़कर फर्रुखाबाद आकर बस गये। यहाँ आप सुपरिन्टेडेन्ट चुंगी के पद पर नियुक्त हो गए। आपकी सन्तानें जाती रहीं। उन्हीं दिनों किन्हीं अवधूत सन्त का फर्रुखाबाद में आना हुआ। एक दिन आपके द्वार पर आकर खाना माँगा। पूज्या दादी जी ने पूरी मिठाई पेश की। वह बोले हमारी इच्छा मछली खाने की है। दूसरे घर से ही मछली लाकर आपको परोसी (पेश की) गई। खा कर बहुत प्रसन्न हुए नौकरानी से बोले क्या चाहती है। उसने कहा कि मालिक का दिया सब कुछ है परन्तु बहू जी की गोद खाली है। इस पर उन्होंने ऊपर को हाथ उठा कर 'अल्लाह हो अक़बर' कहा फिर "एक" "दो" कह कर चल दिए। उन्हीं के आशीर्वाद स्वरूप 4 फरवरी सर 1873 ई० को बसन्त के शुभ दिन जो सन्तों का महान् मुबारक दिन माना जाता है, परम पूज्य महात्मा जी का जन्म हुआ। और 17 अक्टूबर सन् 1875 (करवा चौथ कार्तिक वदी 3/4 सं 1932 वि) को उनके लघु भ्राता महात्मा मुंशी रघुबर दयाल साहब (उर्फ चच्चाजी महाराज) पैदा हुए।

सात वर्ष की आयु तक आपका लालन पालन बड़े ठाट-बाट और आराम से आपकी पूज्या माताजी द्वारा हुआ। नौकर नौकरानियों की कमी नहीं थी। हर ठाठ मौजूद था। जब पूज्य महात्माजी सात वर्ष के थे आपकी माताजी ने इस नश्वर जगत को छोड़ दिया। इसके बाद एक मुसलमान ख़ातून (सेविका) ने आपका लालन-पालन बड़े प्यार से किया। आपकी माता जी नित्य रामायण पढ़ा करती थीं। आप दोनों बडे ध्यान (गौर) से उनके पास बैठ कर सुनते रहते थे। आपको गाने का शौक था सुरीला कण्ठ आपने अपनी पूज्या माताजी से पाया था। आपके गाने की विशेषता यह थी कि जैसा भी गाना आप किसी से सुन लेते थे ठीक हूबहू वैसा ही गाना गा देते थे। बचपन

में आपने एक मौलवी साहब से उर्दू फारसी की शिक्षा प्राप्त की। आपने उनसे कविता करना भी सीखा। बाद में मिशन स्कूल से अँग्रेज़ी मिडिल परीक्षा पास कर ली। कुछ दिन बाद आप दोनों भ्राताओं की शादी कर दी गई। शादी के थोड़े दिन बाद आपके पिता जी का देहान्त हो गया और आपके बड़े चचेरे भाई श्री राम स्वरूप जी (डा० कृष्ण स्वरूप जी के अग्रज), जो जमींदार व घर का काम संभालते थे, उनका भी देहांत हो गया। उन्हीं दिनों राजा मैनपुरी जिनके साथ इनकी बहुत बड़ी जायदाद का मुकदमा चल रहा था उसमें राजा मुक़दमे में जीत गये। बहुत बड़ी जायदाद हाथ से निकल गई। मुक़दमे के खर्च में सारा मकान जेवर इत्यादि भी बिक गये। घर की दशा दयनीय (खस्ता) हो गई। लाचार आपको कलक्टरी में 10 (दस) रुपये मासिक की नौकरी करनी पड़ी। इसी से सारा घर का निर्वाह होता रहा।

आपकी ब्रह्म विद्या का आरम्भ (शुरूआत) आपकी पवित्र माता जी की गोद में ही हो गया था। होश सम्भालने पर उन्होंने आपको रामायण पढ़ना सिखा दिया था। बड़े होने पर आप प्रायः स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पास जाया करते थे और उनके उपदेश सुना करते थे। स्वामी जी एक उच्च-कोटि के महात्मा थे। उस समय उनकी उम्र लगभग 150 वर्ष थी। आपके रहने का मकान छोटा होने के कारण आपने पास ही में एक कोठरी किराये पर ले ली थी। इस कोठरी के पास दूसरी कोठरी में एक मुसलमान सन्त मौलवी फज़्ल अहमद खाँ साहब रायपुरी हुज़ूर महाराज रहा करते थे जिनका परिचय (जिक्र) स्वामी जी प्रायः कुतुब फर्रुखाबाद कह कर किया करते थे। पूज्य महात्मा जी इन्हीं मौलवी साहब से अपनी पढ़ाई की कठिनाई भी हल कर लिया करते थे मगर यह नहीं जानते थे कि यही वे सन्त शिरोमणि हैं जिन्हें स्वामी जी प्रायः बताया करते हैं। नौकरी मिलने के कुछ समय बाद एक दिन महात्माजी को कचहरी फतेहगढ़ से लौटने में देर हो गई। रात अंधेरी थी बादल गरज के साथ बरस रहे थे बिजली चमक रही थी। जाड़े की कड़कती सर्दी में आप बिल्कुल भीग गये थे। सर्दी से शरीर काँप रहा था। जिस समय आप अपनी कोठरी में जा रहे थे आपकी दयनीय दशा पर दूसरी कोठरी में उपरोक्त मुसलमान सूफी सन्त रहते थे उनकी कृपा दृष्टि आपके ऊपर पड़ी। उन्हें बड़ी दया आई, कहने लगे "**इस वर्षा भरी तूफानी रात में इस वक्त आना।**" महात्मा जी को इन शब्दों में बड़ा भारी प्रेम ओर आकर्षण का अनुभव हुआ। आपने

बड़ी नम्रता से आदाब पेश किया। हुजूर महाराज ने दुआ दी "अल्लाह अपना रहम करे।" और बोले "बेटा भीगे कपड़े बदल कर हमारे पास आना। फिर हाथ-पैर आग से सेक कर घर जाना।" महात्मा जी ने ऐसा ही किया। हुजूर महाराज ने मिट्टी की अंगीठी में आग सुलगा रखी थी। महात्मा जी ने सलाम पेश किया हुजूर महाराज ने आँख उठा कर देखा आँख से आँख का मिलना था महात्मा जी के शरीर में चोटी से एड़ी तक बिजली दौड़ गई। तन-बदन का होश जाता रहा ऐसा मालूम होता था कि दो आत्मायें मिलकर एक हो गई हों। हुजूर महाराज ने कृपा पूर्वक आपको अपने बिस्तर पर लिटा दिया और रज़ाई उढ़ा दी।

महात्मा जी को अजीब आनन्द का अनुभव हुआ। अजीब हालत मस्ती की थी। सारा शरीर हल्का सा महसूस होता था और प्रकाश से दैदीप्यमान था। वर्षा बन्द होने पर आज्ञा लेकर घर चले गये। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखता था, रोम-रोम से ओम् का शब्द जारी था। ऐसा मालूम होता था जैसे आपकी जगह हुजूर महाराज ने ले ली हो। जब आप घर पहुँचे खाना खाने को तबियत नहीं हो रही थी बगैर खाना खाये सो गये। रात को स्वप्न में आपको सन्तों का बहुत बड़ा समूह दिखाई दिया उसमें स्वयं को भी देखा। फिर एक दिव्य सिंहासन ऊपर से उतरता आया। उस पर एक तेजस्वी महापुरुष बैठे थे। सब उन्हें देख कर खड़े हो गए हुजूर महाराज ने आपको उनकी सेवा में पेश किया। उन्होंने बड़े प्रेम से आपको देख कर कहा कि इनका झुकाव शुरू से परमात्मा की ओर है।" सुबह यह स्वप्न आपने हुजूर महाराज को सुनाया। उन्होंने आँखें बन्द कर ली ओर ध्यान मग्न हो गए। फिर बोले यह स्वप्न नहीं सत्य है। तुम धन्य हो। तुम्हारी हस्ती जन्म से परमात्मा की ओर झुकी हुई है। तुम्हें वंश के महापुरुषों ने अपनाया है तुम्हारा जन्म भूले-भटकों को सन्मार्ग पर लगाने के लिए ही है। ऐसी आत्मायें बहुत दिन बाद आती हैं। तुम्हारे ऊपर मैं गुप्त रूप से ध्यान (तवज्जोह) देता रहता था। जल्दी ही तुम्हें फ़नाफ़िल शेख और फ़नाफ़िल मुरीद (लय अवस्था) का दर्जा प्राप्त होगा।

आप बराबर हुजूर महाराज (मौलवी फज्ल अहमद खां साहब र०) से मिलते रहते थे और फैजयाब होते रहते थे। 23 जनवरी, 1896 ई० को हुजूर महाराज ने आपको उपदेश देकर अपनी शरण में ले लिया फिर बराबर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपनी

सोहबत से लाभान्वित (फैज़याब) करते रहे। 11-10-1896 को आचार्य पदवी अर्थात (इजाजत कुल्ली) प्रदान कर दी और कहा कि मुझसे मेरे गुरु महाराज ने कहा था कि इस विद्या का प्रचार संसार के भूले-भटके लोगों के लिए करना मगर मैं इस काम को अधिक न कर सका। अब तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम इस काम को यथाशक्ति पूरा करना। यदि इसमें कमी की तो आक़बत में तुम्हारा पल्ला पकड़ूँगा। पूज्य महात्मा जी ने अक्षरशः अपने गुरुदेव की आज्ञा का पालन किया और अन्त समय तक एक बहादुर सिपाही की भाँति इस ब्रह्म विद्या का प्रचार करते रहे।

एक बार पूज्य महात्मा जी अपने गुरुदेव हुजूर महाराज के साथ टहलने गये। शाम का समय था। महात्मा जी अपने घर की कठिनाइयाँ हुजूर महाराज से निवेदन करते जा रहे थे। दोनों महापुरुष एक पुलिया पर बैठ गये। अचानक हुजूर महाराज भक्ति के आवेश में आ गये। हृदय में प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा। बड़े प्रेम से अपना सीधा हाथ महात्मा जी के कन्धे पर रख दिया और बोले "**भाई बड़े भाग्यशाली हो परम पिता परमात्मा के प्यारे हो, तुमने बहुत सस्ते दामों पर यह सबसे बड़ी नियामत प्राप्त की। जिसका कोई मूल्य नहीं**" इसके बाद कहा अपने चारों ओर देखो। महात्मा जी कहा करते थे कि एक अजीब दृश्य सामने था। हर ओर प्रकाश ही प्रकाश था। जिसमें एक अजीब आनन्द और आकर्षण था जो वर्णन में नहीं आ सकता। सारी सृष्टि, घर दीवार जीव जन्तु सारे प्राणी उस प्रकाश में नाचते हुए दिख रहे थे। अजीब मस्ती सब पर छाई हुई थी। ऐसा मालूम होता था कि वह प्रकाश ही सब की जान और जीवन है और यही सब का लक्ष्य भी है। महात्मा जी ने सारी हालत हुजूर महाराज से वर्णन कर दी। उन्होंने कहा "**शुक्र है रास्ता गलत साबित नहीं हुआ। यही तुम्हारा असल है और यही लक्ष्य है। इसमें ही अपने को गुम (लय) कर दो। मैं अब तुम्हारे पीठ पीछे हूँ सामने आना गुस्ताखी है।**" महात्मा जी कहा करते थे कि जब मैं सैर के लिए जा रहा था दुनियाँ मेरे साथ थी और जब मैं वापस हुआ तो दुनियां सदा के लिए छूट चुकी थी। संसारी चिंतायें सदा के लिए छूट गई और उसकी जगह ईश्वर प्रेम ने ले ली।

हुजूर महाराज ने महात्मा जी को आचार्य पदवी देते समय एक जलसा (भण्डारा) किया उसमें सभी सम्प्रदायों के महापुरुष पधारे थे। हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान, नानक पंथी, कबीर पंथी, जैन, बौद्ध इत्यादि। सबके सामने महात्मा जी को पेश किया

और बोले कि सारी उम्र में मैंने यह वृक्ष तैयार किया है आप साहेबान इसकी शिक्षा की पूर्णता की पुष्टि कर दें या किसी प्रकार के सुधार का प्रस्ताव चाहें तो कर सकते हैं। सब लोग ध्यान में बैठ गये। हुजूर महाराज महात्मा जी से बोले कि "**बेटे पुत्तूलाल ! इन सब साहबान को तवज्जोह दो और जो भी सवाल करें उसका उत्तर दो। परमात्मा तुम्हें कामयाबी दे।**" महात्मा जी ने तवज्जोह देना आरम्भ किया। पहले तो एक आनन्द महसूस होने लगा फिर धीरे-धीरे सब लोग विचार शून्य हो गये। अंत में सिवाय परमात्मा की याद के कोई भी विचार शेष न रहा। सभी वंश के महापुरुष जलसे में बैठे दिखाई देते थे। धीरे-धीरे प्रकाश दिखाई देने लगा फिर केवल प्रकाश ही प्रकाश रह गया और सब चीजें नजर से ओझल हो गई-न कहीं जमीन न आसमान एक नूर था जो सब की जान था और उसमें एक अजीब आकर्षण और प्रेम था। सब उसमें मस्त थे। एक सुहावनी नाम की गूँज सुनाई देती थी। सब की तबियत बे-करार थी। उस प्रकाश में जी चाहता था कि शरीर टूट कर आत्मा उस नूर में समा जाये। आँखों से आँसू जारी थे। सब उस नूर के प्रेम में द्रवित हो रहे थे। थोड़ी देर में हालत बदली प्रकाश धीरे-धीरे नजर से ओझल होने लगा। होश भी था और बेहोशी भी थी। जो हालत उस समय थी वह वर्णन से बाहर थी। हुजूर महाराज ने फ़रमाया "बस अब बन्द करो।" धीरे-धीरे सबने आँखें खोल दीं। सब एक मुँह से बोले कि "**कमाल हासिल किया है और सत-पद तक रसाई ही नहीं उसमें पूर्ण लय अवस्था भी प्राप्त कर ली है।**" उन महापुरुषों में से एक महापुरुष ने प्रश्न किया कि शुक्र किसे कहते हैं ? महात्मा जी ने उत्तर दिया कि परमात्मा की देन का उचित प्रयोग धर्म-शास्त्र के अनुसार करना ही शुक्र है। सबने एक मुँह से महात्मा जी की पूर्णता का समर्थन किया। जलसा समाप्त हो गया।

महात्मा जी मँझले कद के थे। रंग गेहुआँ और मूर्ति मनमोहक थी। बाल बहुत मुलायम थे। आगे का एक दाँत कुछ बड़ा था। मूँछ दाढ़ी सुन्दर छोटी-सी थी। कभी-कभी प्रेम के आवेश में बाल खड़े हो जाया करते थे। भौहें कमानीदार सुन्दर थी शरीर बीच का था न बड़ा न छोटा न दुबला न मोटा हाथ पैर कोमल थे। आप सदा कम कीमत के वस्त्र पहनते थे। कुर्ता पजामा साधारणतया पहनते थे। कभी-कभी धोती भी पहनते थे। घुटनों तक का बन्द गले का कोट पहनते थे। बड़ी बाढ़ की टोपी पहनते थे

। जाड़ों में शाल ओढ लेते थे।

महात्मा जी सूर्योदय से पहले हाथ मुँह धो कर शौच स्नानादि से निवृत्त फारिग होकर साफ कपड़े पहन कर अपना अभ्यास सन्ध्या करते फिर भाइयों को शिक्षा देते। दिन में दफ्तर में रहते और शाम को नौकरी से वापस आने पर जलपान करके लोगों को तालीम देते। लगभग दस बजे रात को विश्राम करने चले जाते। अपना घर का सामान स्वयं ही बाजार से उठा कर ले आते थे। लघु शंका के बाद शुद्धि के लिये जल का प्रयोग करते थे। भोजन आपका साधारण ही होता था। आमतौर पर एक दाल या सब्जी तथा साथ में चटनी या कोई अचार होता था। घर में मांस मदिरा का सेवन बिल्कुल नहीं होता था। कचौरी और अरबी (घुइयाँ) का साग पसन्द था। भेंट में रुपया कभी स्वीकार नहीं करते थे। शादी ब्याह तथा भण्डारे में स्वीकार कर लेते थे। स्वभाव बहुत ही कोमल हृदय का पाया था। दूसरों का दुख देखकर रो पड़ते थे। अपने सिद्धान्त पर हिमालय की भाँति अटल थे। व्यर्थ की बातें कभी नहीं करते थे। यदि कोई बात पूछने वाले की समझ के बाहर की होती तो चुप हो जाते थे। जब उसकी वह दशा होती थी तब उसे समझा देते थे। नजर नीची रखकर चलते थे। जोर से कभी भी नहीं हँसते थे, मुस्कुरा देते थे। आप दीनता की मूर्ति थे। किसी का दिल दुखाने के विरुद्ध थे। जो चीज पसन्द न होती तो भी दूसरे का दिल न दुखे काम में ले लेते थे। दूसरों की भलाई के लिए प्रार्थना (दुआ) भी करते थे। आवश्यक्तायें कम करने के पक्षपाती थे। कहते थे कि यदि घर में एक चीज मौजूद है तो दूसरी की क्या ज़रूरत है ? उनका उसूल था कि खूब रुपया पैदा करो और जरूरत मंदों और विधवाओं की मदद करो। पर-स्त्रियों के संग के लिए सदा मना किया करते थे। कहते थे कि मन पर कभी भरोसा मत करो। दिखावा उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था। जो दिल में हो वही बोलना पसन्द करते थे। कभी किसी की बुराई नहीं करते थे। कोई खिलाफ बात होती तो चुप हो जाते थे। बड़ों का आदर और छोटों को प्यार करते थे। किसी भी प्रकार का नशा कभी प्रयोग नहीं करते थे। ताश, चौसर आदि से घृणा थी। प्रारम्भ में संगीत का बड़ा शौक था। परन्तु शरीर छोड़ने से दो साल पहले से सब छोड़ दिया था। विधवा विवाह के पक्षपाती थे। वे चाहते थे कि सत्संगियों में यदि आपस में शादी हो तो बहुत अच्छा है। गुरु शब्द सुनना नापसन्द था। सत्संगियों को कभी-कभी

गंगा स्नान कराने अथवा बच्चों को मेला दिखाने भी ले जाते थे। नौकरों से घर का जैसा व्यवहार करते थे। कहते थे कि जो काम स्वयं नहीं कर सकते उसे नौकर से कराना चाहिए। किसी से कोई वायदा नहीं करते थे। यदि कर दिया तो भरसक पूरा करते थे। ब्याह शादी में दिखावे के लिए धन व्यय करना पसन्द नहीं करते थे।

हुज़ूर महाराज के अन्तर्ध्यान होने के बाद कुछ दिन महात्मा जी बड़े उदास रहा करते थे। कभी-कभी जनाब अब्दुल ग़नी खाँ साहब के पास चले जाया करते थे। आरम्भ में जो भाई तालीम के लिए आते थे उन्हें जनाब मौलवी साहब से ही दीक्षा दिलाते थे। बाद में उनके समझाने पर इस कार्य को स्वयं करने लगे थे। आरम्भ में कुछ विद्यार्थी आपके पास आए जो बड़े उद्दण्ड थे वे आपकी संगति के प्रभाव से सच्चरित्र बन गए। जो भी आपके पास थोड़ी देर बैठा बिना प्रभाव के न रह सका। आप किसी भी आदमी को देखते ही उसके जीवन प्रवाह को जान जाया करते थे। जिसकी जैसी स्थिति होती थी उसी प्रकार शिक्षा दिया करते थे। जो भी सज्जन आपके प्रेम पात्र बने अपने जीवन में ही निहाल हो गये।

दर्शन

सन् 1925 में मैं सबसे पहले श्रीमान चच्चा जी महाराज (परम सन्त महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज, जो परम सन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज के छोटे भाई थे) के दरबार में पहुँचा। वे उन दिनों कानपुर नगर में आकर बसे थे। मैं भी उसी वर्ष कानपुर में ही (कॉलेज) शिक्षा के लिए गया था। मुझे आपकी सेवा में रहने का अवसर अधिक मिला। मेरे दीक्षा गुरु तो परम पूज्य श्रीमान लाला जी महाराज (महात्मा रामचन्द्र जी) ही हैं, जिन्होंने कृपा करके मार्च, 1928 में मुझे अपनाया परन्तु आपकी सेवा में मुझे रहने का अवसर कम मिला। इस थोड़े सम्पर्क में ही मुझे आपके बारे में जो जानकारी हुई और मेरे ऊपर आपकी दया और कृपा की जो वर्षा हुई उसके संस्मरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सन्तमत और धर्म

जैसा बताया जा चुका है श्रीमान लाला जी महाराज के गुरुदेव (हुज़ूर महाराज

जनाब मौलवी फज़्ल अहमद खां साहब) एक उच्च कोटि के सूफी सन्त थे। जब हुजूर महाराज ने पूर्ण सन्त सद्गुरु के रूप में आपकी सारी पूर्ति करके आपको प्रभु के नाम का प्रचार करने की आज्ञा प्रदान का तो हुजूर महाराज के पास आने वाले अन्य पुराने मुसलमान अभ्यासियों को अच्छा नहीं लगा। उन लोगों में जो मुखिया थे उन्होंने श्रीमान् लालाजी महाराज से कहा कि आप इस्लाम कबूल कर लीजिए वरना यह विद्या आपके पास नहीं रहेगी। आपने हुजूर महाराज की सेवा में ये सब बात निवेदन कर दी और यह भी कहा कि "मैं तो सब तरह आपका हो चुका हूँ यदि धर्म परिवर्तन की आज्ञा हो तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है?"

हुजूर महाराज इस बात पर अप्रसन्न हो गए। उन्होंने उन मुसलमान मुखिया को बुलाकर आज्ञा दी कि "मैंने तुम्हें इस गुस्ताखी के लिए अपने सिलसिले (आत्मिक कुटुम्ब) से निकाल दिया। चले जाओ और आइन्दा कभी मुझे मुँह न दिखाना।"

हुजूर महाराज का कहना था कि फकीरों की कोई जाति नहीं होती। वे तो खुदा की जात को ही अपनी जात मानते हैं। इसमें कोई हिन्दू मुसलमान का फर्क नहीं है। मगर क्योंकि यह गृहस्थों की विद्या है, इसलिए जिस जाति कुल में जन्म हुआ है उसकी मर्यादा निभानी पड़ेगी। हमारे गुरुदेव को यह विद्या देकर तथा सारा कार्यभार उनको सँभला कर हुजूर महाराज बहुत प्रसन्न हुए थे।

हमारे गुरुदेव के शिष्यों में ऐसे भी हो गए हैं जिन्होंने गुरुदेव के ऊपर के सद्गुरुओं के बारे में अपने शिष्यों को किसी प्रकार की जानकारी नहीं दी। यदि हम अपने पिता के बारे में सबके सामने प्रशंसा करें और अपने दादा (पिता के पिता) को गौण रखें अर्थात् वे अज्ञात रह जाएं, विशेषकर जब उनका हमारे इस अध्यात्म से इतना निकट का संबंध हो-तो इससे हमारे अध्यात्म मार्ग में उन महापुरुषों की कृपा की कमी होगी। इस कमी का फल क्या होगा हमारे सत्संगी भ्राता भली भाँति समझते है।

शाह साहब

फतेहगढ़ में एक शाह साहब किसी अच्छे गुरु के शिष्य थे और उन्हें सल्ब करने का बड़ा अभ्यास था। सल्ब का मतलब है कि दूसरे की अच्छाई बुराई को खींचकर अपना लेना या निकाल देना। यह कार्य केवल ध्यान (ख्याल) से होता है और हमारे

सभी पुराने अभ्यासी इसको जानते हैं। तो वे शाह साहब अभ्यास करने वालों की अध्यात्म की कमाई खींचकर अपनी बना लिया करते थे। हमारे परम पूज्य श्रीमान् लालाजी महाराज को देखकर उन्हें बड़ा लालच आता था। सोचा करते कि इस अज़ीज को किसी दिन सल्ब करुंगा। संयोगवश एक दिन यह अवसर भी आ गया। लालाजी महाराज के गुरुदेव (हुजूर महाराज) कुछ बीमार थे और उन दिनों कानपुर इलाज के लिए पधारे हुए थे। आप फतेहगढ़ से हर शनिवार को उनकी सेवा में रेल से चले जाते और सोमवार को कचहरी के समय तक आ जाते। एक शनिवार को फतेहगढ़ स्टेशन की ओर थोड़ी तेज गति से जा रहे थे, रेल का समय हो रहा था कि सामने से शाह साहब आ गए और इन्हें बड़े प्यार से चिपटा कर बोले, "बहुत दिनों से तुम्हारी तलाश में था, बरखुरदार ! आज मिल पाये हो।" अपना काम किया और चलते बने।

हमारे श्रीमान लालाजी महाराज को, जो चौबीसों घण्टे हर क्षण अपने गुरुदेव में लीन रहते थे, कुछ भी मालूम नहीं हुआ। असल में हुआ यह कि शाह साहब खुद ही श्रीमान के द्वारा, सल्ब हो गये। जिनकी इतनी दृढ़ धारणा हो कि चौबीसों घण्टे अपने गुरु में लीन रहे, किसी बड़ी से बड़ी शक्ति की भी सामर्थ्य उन्हें हानि पहुंचाने की नहीं है। यही ईश्वरीय शक्ति है जो सर्वोपरि है।

उधर लालाजी महाराज तो कानपुर पहुँच कर गुरुदेव की सेवा में लगे। इधर फतेहगढ़ में घर पहुँचते पहुँचते तो शाह साहब के हृदय में इतनी जोर का दर्द हुआ कि किसी प्रकार चैन न पड़ा। हकीम डाक्टर भी कुछ निदान न कर सके। रात भर तड़पते हो

गया, तब कहीं शाह साहब को याद आया कि उन्होंने बरखुरदार की निस्बत सल्ब की है तभी से यह हाल है। आदमी दौड़ाए पता निशान मालूम किया और कानपुर हुजूर महाराज के पास दौड़े और जाकर चरणों में लोट गए। कहा कि आपके बरखुरदार ने मेरी निस्बत (आंतरिक सम्बन्ध) सल्ब कर ली है उसे वापिस दिला दीजिये। हुजूर महाराज ने कहा कि मेरा बरखुरदार कभी ऐसी गुस्ताखी नहीं कर सकता। फिर लालाजी साहब को बुलाकर इस विषय में पूछा तो पता चला कि वे तो इस विषय में अनजान थे। तब हुजूर महाराज ने शाह साहब को डांटा, "आप खुदा के

नाम के बहाने ऐसी हरकतें करते हैं ? आपको शर्म आनी चाहिए। आपको मैंने सल्ब किया है आपकी अमानत मेरे तकिए के नीचे पड़ी है। आप आज से तौबा कीजिये आइन्दा किसी के साथ कभी ऐसी हरकत नहीं करेंगे।" शाह साहब के तौबा करने पर दया के समुद्र हुजूर महाराज ने उनकी धरोहर लौटा दी और वे प्रसन्नचित्त घर को लौट गए।

गुरु की जिस पर कृपा हो उसे संसार का कोई व्यक्ति तो क्या, प्रकृति माता भी कोई हानि नहीं पहुँचा सकती। गुरुदेव प्रभु के प्रतीक ही नहीं स्वयं ईश्वर के रूप हैं। उनकी दया-कृपा प्रभु की दया कृपा है उसमें यदि संदेह हो तो उसे निकाल फेंकिये। गुरुदेव हम सब को ऐसी सुबुद्धि देवें और उनकी दया-कृपा की हम सब पर वर्षा होती रहे।

कोंच का भण्डारा

उत्तर प्रदेश के जालौन प्रान्त में एक छोटा नगर 'कोंच' है। सन् 1926 में वहां आस-पास के बहुत से सत्संगियों ने भण्डारे के रूप में एकत्रित होने के लिए श्रीमान लाला जी महाराज की अनुमति ले ली। श्रीमान लाला जी महाराज, श्रीमान चच्चा जी महाराज तथा परिवार के और आत्मिक कुटुम्ब के सभी सदस्य वहाँ पहुँचे। हम तो श्रीमान चच्चा जी महाराज के साथ रहते थे उनके साथ चले गए। दो दिन तक ऐसा आनन्द रहा कि हमें पहले कभी ऐसा अनुभव ही नहीं हुआ था। उस समय हम नवागन्तुक तो थे ही।

श्रीमान लालाजी महाराज के प्रिय शिष्यों में भाई साहब बाबू प्रभु दयाल जी (पेशकार, इन्कम टैक्स) भी कानपुर से हमारे साथ सपरिवार गये थे। उनका पुत्र गुरु दयाल 5-6 वर्ष का होगा। रात्रि के आरम्भ में ही पूजा के कमरे में आकर लेट गया और सो गया। उसे कहीं और स्थान मिला नहीं, न किसी ने उसे आकर सोते देखा। उस कमरे में परम संत भाई साहब बाबू बृजमोहन लाल जी पूजा कर रहे थे जो बहुत देर तक चली। उस रात्रि को ध्यान की अवस्था इतनी घनी थी कि पुराने-पुराने अभ्यासी भी पूरे होश में नहीं थे। बच्चों का हृदय कोमल और शुद्ध होता है, गुरु दयाल ने यह सब ग्रहण किया और क्योंकि यह सब उसकी सहन शक्ति से कहीं अधिक था वह ऐसा बेसुध हुआ कि सब प्रयास करने पर भी होश में न आया। श्रीमान लालाजी महाराज ने

उसे देखा और उसे वापिस सल्ब तो कर दिया परन्तु आज्ञा दी कि इसे सोने दो प्रातः तक ठीक हो जायेगा।

हमें यह बात तभी से याद है। जब कभी कोई सज्जन अपने साथ छोटे बच्चों को सत्संग में ध्यान के समय में लाते हैं तो हमें यह घटना याद आ जाती है। हम तो यथाशक्ति उन बच्चों को ध्यान के मण्डल से बाहर कर देते हैं। यदि न हो सका तो थोड़ा सा ध्यान लगा कर ही बस कर देते हैं। बच्चों को प्रभावित होने का भय रहता है। इनका हृदय शुद्ध होता है आत्मा की सुरत-धार को ये सरलता से ग्रहण कर लेते हैं। सहन शक्ति न होने के कारण उन्हें इससे हानि हो सकती है।

बाजीगरी

गुरुदेव के एक शिष्य आपकी सेवा में फतेहगढ़ पहुँचे तो वे कुछ अधिक प्रसन्न मुद्रा में थे। संध्या समय जब गुरुदेव के पास पूजा के लिए बैठे तो कहने लगे कि आपकी कृपा से अब मुझ में यह शक्ति आ गई है कि बन्द मकान में से अपने आप बाहर आ जाता हूँ। गुरुदेव ने उनकी इस बात पर ध्यान नहीं दिया और दूसरी बात करने लगे। उन सज्जन से रहा नहीं गया और कुछ देर बाद फिर उन्होंने गुरुदेव से वही निवेदन किया। गुरुदेव उनका मतलब समझ गए और बोले हाँ हाँ भाई मैं भूल ही गया और एक दूसरे सज्जन (पूज्य भाई साहब परम संत श्रीमान मदन मोहन लाल जी) से कहा भाई जरा इन्हें इस कमरे में बन्द कर दो।

बन्द मकान या बन्द सन्दूक के बाहर निकल आना एक साधारण सी शक्ति है। अध्यात्म का मार्ग इतना ऊंचा है कि उसमें चलने वालों की राह में यह और ऐसी अनेक शक्तियाँ आया करती हैं। गुरुदेव इनकी ओर से हमारी दृष्टि हटा देते है जिससे हमारी राह में यह बाधक न हो जायें। इस सज्जन के साथ भी ऐसा ही हुआ। इस स्थान पर रुके हुए थे और इसे ऊंची सिद्धि समझ कर बड़े प्रसन्न थे। गुरुदेव के सम्मुख आते ही उन्हें इस आध्यात्मिक स्थान से थोड़ा ऊपर उठा दिया गया।

वे सज्जन अपनी सारी हेकड़ी भूल गए और जब कोई वश न चला तो बैठ कर रोने लगे। इधर गुरुदेव और लोगों से बातें कर रहे थे। उनके कानों में जब उनकी सिसकियों की आवाज पड़ी तो तुरन्त बोले, “भाई इनको खोल दो।” दरवाजा खेलने

पर वे सज्जन रोते हुए आए और गुरुदेव के पैरों में गिरकर जोर जोर से रोने लगे। मेरी वह शक्ति कहीं चली गई ?" गुरुदेव ने उनसे कहा कि "आप मेरे पास ईश्वर के नाम के लिए आते हैं या बाजीगरी सीखने? बाजीगरी सीखना हो तो दुनियाँ में बहुत लोग हैं जो यह सब आपको सिखा देंगे। मेरे पास तो भाई ईश्वर का नाम है। तुम्हें चाहिए तो मेरे पास आओ वरना तुम्हारी मर्जी !"

जादुई पुड़िया

हमारे भाई साहब इटावा निवासी श्रीमान प्रेम बिहारी लाल जी श्रीमान लाला जी महाराज के बहुत निकट रहे हैं। इन्होंने अपने जीवन की घटना हमें बतलाई जिनका उल्लेख हम यहाँ कर रहे हैं।

घटना सन् 1930 से पहले की है। इन भाई साहब के बड़े भ्राता श्रीमान अवध बिहारी लाल जी, जो श्रीमान लाला जी महाराज के दीक्षित शिष्य थे, एक बार एटा में इतने बीमार हो गए कि उनके जीवन की आशा भी क्षीण हो गई। डाक्टरों के समझ में नहीं आ रहा था कि क्या रोग है और इसका क्या निदान करें। घर के सब प्रियजनों को इनके इस कठिन रोग की सूचना भी दे दी गई थी। इनकी माता विशेष रूप से दुखी थीं और अधिकतर रोती ही रहती थी।

एक संध्या के समय जबकि हालत बहुत चिन्ता जनक थी, किसी ने द्वार खटखटाया। माताजी स्वयं ही खोलने गईं और देखा कि डाक्टर सोहन लाल, जो कि श्रीमान भाई साहब का इलाज कर रहे थे, साइकिल पर आये हैं। उन्होंने दो पुड़िया माताजी को दी और कहा कि एक तो अभी खिला दो। और दूसरी आवश्यकता हो तो कल प्रातः खिला देना। माताजी के आग्रह करने पर भी कि इन्हें देख तो लें, डाक्टर साहब ने इकार कर दिया और चले गये।

डाक्टर साहब के आदेशानुसार एक पुड़िया तो उसी समय दे दी गई और दूसरी सिरहाने तकिये के नीचे रख दी गई। इस पुड़िया ने जादू का सा काम किया और रात भर में उनकी तबियत, जो कि बहुत खराब थी, लगभग ठीक हो गई। रात को बहुत ऊंचा बुखार था। प्रातः कुछ न था। डाक्टर सोहन लाल प्रातः देखने को आये तो उन्होंने रोगी को स्वस्थ पाया। उन्हें माताजी ने बतलाया कि शाम को दी गई आपकी

पुड़ियों में से उस समय एक ही दी गई जिसने इन्हें इतना स्वस्थ कर दिया। डाक्टर साहब ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि "मैं स्वयं कल दोपहर से ही बुखार में पड़ा था मैं कैसे पुड़ियाँ देने आता ?"

अब यह सारा मामला ही एक रहस्य बन गया। विशेष रूप से जब सिरहाने रखी गई पुड़िया ढूंढने पर भी नहीं मिली।

दिन के दस बजे के लगभग डाक से श्रीमान लालाजी महाराज का पत्र मिला जिसमें आपने श्रीमान भाई साहब को लिखा था कि "रूहानियत (अध्यात्म मार्ग) में तकलीफ़ें आती ही रहती हैं। इनसे घबराना नहीं चाहिए। मुझे आशा है कि जिस समय यह पत्र मिलेगा, तुम बिलकुल स्वस्थ होंगे।"

अब यह रहस्य समझ में आया कि संध्या को वे दो पुड़िया देने वाले डाक्टर सोहन लाल न थे वरन् उन डाक्टर के भेष में श्रीमान लाला जी महाराज स्वयं ही आये थे।

इस घटना की जानकारी के बाद जब कभी भी हम किसी असाध्य रोगी को देखते हैं तो हमें श्रीमान लालाजी महाराज की इन दो पुड़ियों की याद आ जाती है।

सद्गुरु में लय अवस्था

खानदान नक्शबन्दिया की यह एक विशेषता सदा से चली आई है कि शिष्य का गुरु से जब आन्तरिक सम्बन्ध (निस्बत कायम) स्थापित हो जाता है, तब अप्रत्यक्ष रूप से गुरु छाया की भाँति शिष्य की सदैव देख-भाल करता है। इस पर पूज्य लालाजी के जीवन के कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं।

फर्रुखाबाद में एक बार श्री लाला जी के सहपाठियों ने गंगा किनारे स्वामी ब्रह्मानन्द जी के आश्रम के नजदीक पिकनिक का प्रोग्राम रखा। वहाँ पर ये लोग जबरदस्ती महात्मा जी को भी ले

गये। खाना खाने के पहले गाना बजाना होता रहा। इसके बाद भंग घुटी और सबने पी। आपने पीने से मना किया और बड़ी नम्रता से कहा कि इसके लिए मुझे मजबूर न करें क्योंकि किसी प्रकार का नशा न करने की प्रतिज्ञा (मैंने) अपने गुरुदेव से कर ली है। लेकिन दोस्तों ने कुछ नहीं सुना, जबरदस्ती आपको रेती पर लिटा दिया। दो चार दोस्तों ने हाथ पैर पकड़ लिये और एक दोस्त (पण्डित माता प्रसाद)

आपकी छाती पर चढ़ बैठे और जबरदस्ती भंग पिलाने लगे। आपने बहुत मना किया लेकिन आखिर बेबस होकर चुप हो गये और अपने गुरुदेव का ध्यान करने लगे। एकाएक आपका चेहरा तमतमा उठा, एक प्रकाश चेहरे पर छा गया, चेहरा बदल गया और उस पर मूँछें और दाढ़ी मालूम होने लगीं। यह देखकर पण्डित माता प्रसाद घबरा गये, छाती पर से उठ गये और चुपचाप आश्चर्य चकित (हैरतज़दा) एक तरफ खड़े हो गये और लोगों को मना किया कि आपको मजबूर न करें और आपके हाल पर छोड़ दें। अतएव फिर आपको मजबूर नहीं किया गया और भंग नहीं पीनी पड़ी। थोड़ी देर बाद वहाँ पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी आ गये और जब उनको सब हाल मालूम हुआ तो उन्होंने सब लड़कों को फटकारा और कहा- "जिस लड़के को तुम आज यह झूठा नशा पिलाते हो, समय आने पर यह संसार के प्यासे जीवों को असली नशा पिलायेगा।" शाम को सब लोग गंगा जी से घर को वापिस आये। रास्ते में क्या देखते हैं कि सूफी साहब (हुजूर महाराज) उधर से पधार रहे हैं। महात्मा जी ने बहुत नम्रता से प्रणाम किया और उनके साथ टहलने के लिये चले गये और रास्ते में तमाम हाल निवेदन किया। हुजूर महाराज ने कहा "जो लोग परमात्मा पर भरोसा करते हैं परमात्मा बराबर उनकी मदद करता है।" पण्डित माता प्रसाद ने हुजूर महाराज को देखकर तुरन्त पहचान लिया कि ये तो वे ही महात्मा हैं जिनकी सूरत में जनाब लाला जी साहब का चेहरा बदल गया था।

दूसरे दिन उन्होंने महात्मा जी से बहुत नम्रता से हुजूर महाराज जी की सेवा में जाने के लिये कहा और दोनों सज्जन हुजूर महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। हुजूर महाराज ने पण्डित माता प्रसाद पर भी अपनी कृपा दृष्टि की और अपनी शरण में ले लिया। पण्डित माता प्रसाद हुजूर महाराज की सेवा में अन्त समय तक आते रहे और हुजूर महाराज के अन्तर्ध्यान होने के बाद श्रीमान लाला जी साहब की सेवा में आते रहे और अन्त तक लाभान्वित होते रहे। श्रीकृष्ण सहाय जी हितकारी वकील कानपुर, श्री कालिका प्रसाद साहब पेशकार, श्री चिम्मनलाल साहब मुख्त्यार, डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब, बाबू राम कृष्ण साहब जमींदार और बहुत से सज्जन महात्मा जी के द्वारा (वसीले से) हुजूर महाराज की सेवा में उपस्थित हुए, आपकी शरण ली और अपना जन्म सफल किया। हुजूर महाराज के अन्तर्ध्यान होने के बाद यह सब सज्जन

बराबर महात्मा जी की सेवा में आते रहे।

देह धरे का दण्ड

एक बार श्रीमान लाला जी साहब बहुत बीमार हो गये। चलने फिरने से लाचार थे और खाट से लग गये थे। बीमारी के कारण आप इतने परेशान नहीं थे जितने परेशान इस वजह से थे कि अब आप हुजूर महाराज की सेवा में नहीं जा पाते थे। एक दिन आप डोली में बैठ कर हुजूर महाराज की सेवा में पहुँचे और आँखों में आँसू भर लाये। हुजूर महाराज ने बड़े स्नेह से आपकी ओर देखा और बड़ी सहानुभूति से कहा-"बेटे पुत्तूलाल ! (हुजूर महाराज लाला जी को इसी नाम से पुकारते थे) घबराओ नहीं,

देह धरे का दंड है सब काहू को होय ।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से मूरख भोगे रोय ॥

श्रीमान लाला जी कहा करते थे कि उस दिन से मेरी तबियत ठीक होने लगी। कभी-कभी हुजूर महाराज भी स्वयं दर्शन देने आ जाते थे। थोड़े ही दिनों में बिल्कुल ठीक हो गये।

गुरु में लयावस्था

जो अभ्यास हुजूर महाराज ने बतला दिया था उसको श्रीमान लाला जी साहब बराबर करते रहते थे। एक दफा जब आप नकल-नवीस थे आपको नकल करने के लिए एक मुक़दमे का फैसला दिया गया जिसमें लगभग 58 पेज (सफे) थे। आप अपने अभ्यास में मग्न थे और नकल भी करते जाते थे। जब 50 पेज (सफे) नकल कर चुके तो आपको ख्याल आया कि "क्योंकि मेरा मन दूसरी ओर लगा हुआ था नकल में जरूर बहुत सी गल्तियाँ हो गई होंगी। " आप इस ख्याल से घबरा गये और सोचने लगे कि अब इन काग़ज़ों के दाम कहाँ से दिये जायेंगे और बाद के पेज (सफे) बड़ी होशियारी और एहतियात से नकल किये। आप कहा करते थे कि "नकल की जब असल से मिलान की गई तो मुझको यह देखकर बहुत ताज्जुब हुआ कि पहले 50 सफ़ों में एक भी गलती नहीं थी और दूसरे 8 सफ़ों में कई गल्तियाँ थीं।" हुजूर महाराज श्रीमान लाला जी साहब से उमर भर में एक बार भी नाराज नहीं होने पाये।

जो हुजूर महाराज दिल में सोचते थे वही महात्मा जी के दिल में आ जाता था। यह मोहब्बत की पराकाष्ठा (इन्तहा) है और जाहिर करती है कि दोनों के दिल कितने मिले हुए थे।

एक रोज लाला जी साहब की तबियत यह चाहती थी कि जो कोई सामने आये उसको बेंतों से मारें। दिन भर यही ख्याल आता रहा और आप बहुत परेशान रहे। शाम को आपने अपनी हालत हुजूर महाराज से निवेदन की। उन्होंने कहा- "ठीक है, आज हम लड़कों पर नाराज होते रहे और उनको सजा देते रहे और क्योंकि तुम प्रत्येक पल हमारा ध्यान करते रहते हो इसलिये तुम पर भी वह असर पड़ा।"

एक दिन हुजूर महाराज अकेले बैठे हौज के किनारे पानी से खेल रहे थे और पानी हाथों से इधर-उधर उछाल रहे थे। श्रीमान लाला जी दर्शनों के लिए उपस्थित हुए। प्रणाम किया और दो मिनट बाद ही जाने की आज्ञा चाही। हुजूर महाराज बहुत खुश हुए और कहने लगे- "बेटे पुत्तूलाल, क्या बात है कि जो हम सोचते हैं वही तुम करते हो ? इस वक्त हम यह चाहते थे कि तुम चले जाओ और तुमने फौरन इजाजत जाने की तलब की। हमको यह तमन्ना ही रही कि हम एक बार तो तुम से नाराज होते।"

फ़नाफ़िल शेख फ़नाफ़िल मुरीद

श्रीमान लाला जी साहब कहा करते थे कि जो हुजूर महाराज के दिल में आता था वह ज्यों का त्यों हमारे दिल में उतर आता था। उन्होंने बताया कि यह एक सिद्धि है। अगर कोई शिष्य अपने हृदय को अपने गुरु के हृदय के सम्मुख (मुकाबले) लगातार बहत्तर घण्टे रखे और एक सैकिण्ड के लिये भी गाफिल न रहे तो यह सिद्धि आ जाती है और हमने यह सिद्धि अपनी शादी में सिद्ध की जब हमको अपने पिता जी की आज्ञा के अनुसार नाच-गाने के आयोजन (महफिल) में लगातार बैठना पड़ता था। लेकिन यह अमल उसी समय हो सकता है जब शिष्य अपने गुरु का फिदाई (आशिक) हो और फ़नाफ़िल मुरीद हो और शिष्य अपने गुरु में पूरे तौर पर लय हो चुका हो और उसकी विचार शक्ति (कुब्बते-ख्याली) इतनी मजबूत हो कि अपने ख्याल से इतने बड़े समय में एक सैकिण्ड के लिए भी इधर-उधर न हो। सच तो यह है कि जब ऐसी हालत हो जाती है सभी तमाम तालीम जो गुरु के दिमाग में होती है शिष्य के दिमाग में आ

जाती है। ऐसी हालत में दुई (दो पना) बिल्कुल मिट जाती है। मोहब्बत का तार जुड़ जाता है। जो एक सोचता है दूसरा उसको महसूस करता है। गुरु समुद्र पार बैठा हुआ शिक्षा दे रहा है और शिष्य समुद्र के पार बैठा हुआ उस शिक्षा को ग्रहण कर रहा है। दुई और दूरी बिल्कुल मिट जाती है। ऐसी हालत हो जाने पर पर्दा कर जाने के बाद भी शिष्य बराबर अपने गुरु से लाभान्वित (फैजयाब) होता रहता है। इसी को निस्बत (आन्तरिक सम्बन्ध) कहते हैं।

प्रेम गली अति साँकरी, या में 'दो' न समाँय।
जब लग 'मैं' था गुरु नहीं, अब गुरु हैं 'मैं' नाँय।

।

आप कहा करते थे कि सब लोग हुजूर महाराज के पाँव दबाया करते थे और हमारी भी इच्छा थी कि आपके पांव दबायें लेकिन कभी हिम्मत नहीं पड़ी क्योंकि हमारे हाथ बहुत सख्त थे और हुजूर महाराज के पैर बहुत ही मुलायम।

एक बार आप देहली में चाँदनी चौक किसी काम से पधारे और घंटाघर से फतेहपुरी की तरफ रवाना हुए फिर वहाँ से सब्जी मंडी की तरफ मुड़ गये और बर्फ खाने तक बराबर चलते चले गये। बर्फखाने पहुंचकर, जो घंटाघर से करीब डेढ़ मील की दूरी पर है, महात्मा जी ठहर गये और जो इनके साथ थे, उनसे पूछा- “जानते हो कि मैं यहाँ क्यों आये?” जवाब मिला कि “नहीं मालूम।” आपने कहा- “उन बुजुर्ग को देखो जो सामने जा रहे हैं उनकी शक्ल सूरत श्री हुजूर महाराज से बहुत मिलती है। उनको देखता हुआ मैं यहाँ चला आया।” इतना कह कर नेत्रों में जल भर लाये। आपको हुजूर महाराज से बहुत प्रेम था। उनके विषय में बहुत कम बातचीत करते थे और जब कभी बातचीत करते, सारा शरीर प्रेम के आवेश में काँपने लग जाता और बाद को आँसू आ जाते। एक बार आपने श्रीमुख से कहा- “हमारी आत्मा उस आनन्द के लिये बेचैन है जो हमको अपने पीर (गुरु) की सोहबत (सत्संग) में मिलता था।”

एक समय श्रीमान चाचा जी साहब (मुन्शी रघुबर दयाल जी) ने बतलाया कि “श्री हुजूर महाराज महात्मा जी का बहुत अदब करते थे। जब कभी आप बच्चों से खेलते होते और लाला जो साहब आ जाते तो हुजूर महाराज चुप हो जाते (खामोशी अख्तियार कर लेते) और दूसरों को भी चुप रहने का इशारा कर देते। “लाला जी

साहब ने उन्हें ऐसा कहते सुन लिया। आप चाचा जी साहब पर बहुत नाराज हुए और फिर देर तक रोते रहे। चच्चाजी महाराज को आचार्य पदवी देते समय आप हुजूर महाराज का खत पढ़ने के बाद उनकी याद करके फूट-फूट कर रोए। जब कभी भी आप हुजूर महाराज का जिक्र करते, हमेशा प्रेम का आवेश हो जाता, यद्यपि आप बहुत सहन (जब्त) करने वाले थे फिर भी उस प्रेमावेश के वेग को नहीं रोक पाते और आँखों में आँसू छलक आते थे। कभी-कभी तो जोर-जोर से रोने लगते और हिचकी बंध जाती।

जो तनख्वाह महात्मा जी को मिलती थी वह आप गुरुदेव की सेवा में भेंट कर देते थे और गुरुदेव किसी के हाथ घर भिजवा देते थे।

फ़ाक़ाकशी

एक बार हुजूर महाराज के यहाँ कई रोज से उपवास चल रहा था क्योंकि घर में भोजन सामग्री नहीं थी और यही हालत महात्मा जी के यहाँ थी। आपके पास किसी जगह से एक मनीआर्डर के पन्द्रह रुपये आये। आपने उनमें से दस रुपये महात्मा जी के यहाँ भिजवा दिये और पाँच रुपये अपनी माता जी के पास भिजवा दिये ताकि भोजन आदि का सामान मंगा ले। शाम को जब आप घर आये और खाने का इन्तजाम न देखा तो अपनी माता जी से पूछा कि अभी तक खाना क्यों नहीं बनवाया। माता जी ने उत्तर दिया कि "जो रुपया तुमने भेजा था वह हमने दूसरे घर (महात्मा जी के घर) भिजवा दिया क्योंकि वहाँ जरूरत थी। "आप यह सुन कर हंस पड़े, बहुत खुश हुए और कहा, "बहुत अच्छा किया" और उस रोज उपवास ही रहा।

हुज़ूर महाराज एक उच्च कोटि के सन्त थे। बहुत सादा स्वभाव, बहुत स्वच्छ वस्त्र धारी (खुशपोश) और पाक-साफ रहने वाले, हँसमुख और बड़े दयालु। आपको ताअस्सुब (धार्मिक पक्षपात) छू भी नहीं गया था। मुसलमान, हिन्दू, ईसाई सब आपकी दृष्टि में एक थे और सभी वर्ग के लोग आपके शिष्य थे। जब कभी लाला जी साहब के घर से खाना थाली में आता या आप स्वयं वहाँ पधारते तो आप अपने बरतनों में भोजन रखवा लेते या पत्तल मैं रखवा लेते। कभी कभी हाथ पर रख कर ही खाना खा लेते थे और पानी चुल्लू से पी लेते। प्रसाद के मौक़े पर हिन्दुओं के लिये

प्रसाद किसी हिन्दू से मंगवा लेते और उसी से बंटवा देते। वे कहा करते थे कि हर मनुष्य को अपने धर्म के नियमों पर चलना चाहिये। यद्यपि आपके कई मुस्लिम शिष्य भी थे परन्तु आपने लाला जी साहब को अपना उत्तराधिकारी बनाया। यह एक ऐसा अद्भुत उदाहरण है जब कि एक मुस्लिम सूफी ने बिना धर्म परिवर्तन कराये अपनी सारी आध्यात्मिक पूंजी एक हिन्दू को दे दी।

हुजूर महाराज के देहान्त के बाद महात्मा जी का तबादला सन् 1908 में कायमगंज से फतेहगढ़ को हो गया। आपने इस वक्त एकान्त सेवन आरम्भ कर दिया। दफ्तर के काम के अलावा सारा समय परमात्मा की याद में व्यतीत करते। एक पुराना नौकर जो बचपन से आपके यहाँ था इस समय भी आपके साथ था, वही तमाम घर का इन्तजाम करता और सब सेवा करता। यह स्वामी-भक्त सेवक अन्त समय तक आपके साथ रहा।

सत्संग का प्रभाव

आप कभी-कभी छुट्टियों में श्रीमान मौलवी अब्दुल ग़नी साहब की सेवा में मैनपुरी या भौगाँव जाया करते और मौलवी साहब भी कभी-कभी स्वयं आपके पास आते रहते और अपने सत्संग से लाभ पहुँचाते रहते थे। यद्यपि पास पड़ोसी आपके पवित्र जीवन और ईश्वर-भक्ति से अनभिज्ञ थे लेकिन फिर भी आपकी रहनी-सहनी का उन सभी लोगों पर बड़ा गहरा असर पड़ा। सभी लोग आपका आदर करते और आपसे प्रेम करते थे। आरम्भ में कुछ अध्यापक आपकी ओर आकर्षित हुए और आपके पास नित्य आने लगे। इसके बाद स्कूल के कुछ लड़के भी आने लगे। उन लड़कों में कुछ ऐसे भी लड़के थे जो बड़े उद्दण्ड और लड़ाकू थे। इन लड़कों के रहन-सहन पर आपकी पवित्र संगति का बड़ा गहरा असर पड़ा और उनका नित्य का रहन-सहन सुधरने लगा, बुरी आदतें छूटने लगीं और उन की जगह नेक और भली आदतों ने ले ली। जनता को इन लड़कों की हालत देखकर बड़ा आश्चर्य-होता था कि क्या से क्या हो गये। आरम्भ में तो लोग यह समझे कि यह अन्तर केवल कुछ ही दिनों का है लेकिन जब देखा कि पुरानी हालतों पर आने की बजाय लड़कों के रहन-सहन में नित नई उन्नति ही होती जा रही है तो लोगों को भी चाव पैदा हुआ कि ऐसे महापुरुष के

दर्शन करने चाहिये जिनके सत्संग के प्रभाव से इतनी बड़ी तब्दीली लड़कों के रहन-सहन में हुई है। अब तो लोगों के झुण्ड के झुण्ड आने लगे और एक बड़ी संख्या मनुष्यों की आपकी महानता के कारण आपके चारों ओर इकट्ठी (हो गई। जो भी आता आपके महान चरित्र से प्रभावित हो जाता। जो एक बार भी आ गया आपके प्रभाव से खाली नहीं गाया। ऐसा भी हुआ कि कुछ लोगों ने आपका सत्संग छोड़कर दूसरे सन्तों का सत्संग अपना लिया और दूसरी जगह से फैजयाब हुए लेकिन उन्होंने भी हमेशा यही कहा कि "आपके पूर्ण सन्त (मुकम्मिल) होने में शक नहीं है लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा हिस्सा यहाँ नहीं था। "कुछ सज्जनों से आप स्वयं कह दिया करते थे कि "तुम्हारा हिस्सा मेरे पास नहीं है अमुक महापुरुष से तुम को फायदा होगा।" फिर भी बगैर असर के कोई वापिस नहीं गया। आप कहा करते थे कि "हमारा काम तो धोबी या भंगी का है, जो आ गया उसके मन को धो डाला। साफ होने पर अपने संस्कार के अनुसार कोई न कोई पथ-प्रदर्शक (रहबर) मिल ही जायेगा।" देखा भी यही गया कि आपके थोड़ी देर के सत्संग के प्रभाव से सैकड़ों आदमियों का जीवन बदल गया और उनका जन्म सफल हो गया।

हम नशीनी ताअते बा औलिया ।
बेहतर अज़ सद साल ताअत बेरिया ॥

(अर्थ-सन्त के एक क्षण के सत्संग से जो लाभ होता है, वह बरसों की सच्ची तपस्या से कहीं ज्यादा है।)

जो सज्जन आपके प्रेम-पात्र हुए उनकी किस्मत का सितारा चमक उठा। वे अब भी उनको दर्शन देते हैं और बराबर लाभान्वित (फैज़याब) करते रहते हैं और सत पद तक पहुँचा कर ही छोड़ेंगे। जो किसी कारण जीवन में आपके सत्संग से वंचित रहे वे हमेशा अब भी उनकी याद करते हैं और गुप्त रुप से फैज़याब हो रहे हैं। आप कहा करते थे-

कदग़न है यही ग़ैर कोई आने न पाये ।
गर बेखबर आ जाय तो फिर जाने न पाये ॥

(अर्थ-इस बात की मनाही है कि कोई ग़ैर आदमी अपनी सोहबत में आ जाये। यदि भूल से आ जाये तो फिर जाने न पाये।)

शिक्षा का कार्य-आरम्भ में आप सब नये सज्जनों को पूज्य मौलवी साहब की सेवा में पेश कर देते थे बाद को मौलवी साहब के कहने पर कि "तुम स्वयं काम क्यों नहीं शुरू करते" और अपने गुरुदेव की आज्ञा का ख्याल करके (कि मेरे मिशन का प्रचार करो और यही तुम्हारी निजात (मोक्ष) का निमित्त (जरिया) होगा घबरा जाते कि क्या करें और क्या न करें ? इसीलिये हिम्मत नहीं पड़ती थी कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी को अपने ऊपर लें। इधर अपनी कमज़ोरियों पर निगाह थी उधर गुरुदेव की आज्ञा। अजब परेशानी थी, अन्त को आपने यही फैसला करके कि "मैं तो चपरासी हूँ मेरा फर्ज तो हुक्म बजा लाना है और बस इसमें कामयाबी होती है या नहीं, इसको हाकिम खुद जाने, जिसका वह काम है।" सन् 1914 ई० से गुरुदेव का काम शुरू कर दिया। सुबह सात बजे से साढ़े नौ बजे तक लोगों को उपदेश देते और अभ्यास कराते, दस बजे दफ्तर को जाते और पाँच बजे आते। फिर छः बजे शाम से रात को दस बजे तक अध्यात्म-विद्या की शिक्षा में व्यस्त रहते। रात को अभ्यास करते। अक्सर छुट्टियों में बाहर जाते और शिक्षा देते। इस तरह बराबर सन् 1931 ई० तक रात-दिन दफ्तर के समय को छोड़कर अध्यात्म-विद्या का प्रचार और प्रसार करते रहे।

गुमशुदा मिसल

सन् 1929 में जब आप फतेहगढ़ कलक्ट्री में मुहाफ़िज़ दफ्तर (Recorder Keeper) का काम कर रहे थे, एक मिसल (File) गुम हो गई। बहुत तलाश करने पर भी नहीं मिली। मुहाफ़िज़ दफ्तर के नाते आपकी जिम्मेदारी थी। शाम को दफ्तर से आकर आप इसी विचार में बैठे थे कि मिसल कहाँ गई। आपके सामने एक क्लर्क की सूरत आई-वह डरा हुआ था। आपने समझ लिया और उसके घर चले गये। जाकर कहा वह मिसल जो तुम्हारे पास है मुझे दे दो। उसे डर था कि कलक्टर साहब मुझे कड़ा दण्ड देंगे। आपने उससे यह वायदा किया कि उसका नाम नहीं बतलायेंगे। उसने मिसल कभी देखने को ली थी वापिस करने के बजाय उसके बस्ते में गलती से बंध गई। डर के मारे वह वापिस नहीं कर रहा था।

आपने मिसल कलक्टर साहब को पेश कर दी और बहुत कुछ कहने पर भी उस क्लर्क का नाम नहीं बतलाया।

सेवानिवृत्ति (Pension)

उन्हीं दिनों एक बार कुछ सत्संगी बाहर से आ गये और उनके साथ आप इतने व्यस्त हो गये कि कचहरी जाने की भी याद नहीं रही। संयोगवश उस दिन कमिश्नर साहब का इन्स्पेक्शन था। दोपहर बाद जब आपको ध्यान आया तो घबरा गये और सब कुछ छोड़ कर कपड़े पहन कर कचहरी लगभग भागते हुए गये। डरते-डरते एक साथी से पूछा 'इन्स्पेक्शन हो गया?' उसने बड़े अचम्भे के साथ उत्तर दिया "बड़े बाबू ! मुझसे मजाक कर रहे हो ? आपने खुद खड़े होकर तो मुआयना कराया जिसने जो मिसल माँगी एक झटके से निकाल कर पेश कर दी। आपका मुआयना सबसे अच्छा रहा - आप कैसी बातें कर रहे हैं ?" आपको रहस्य समझते देर नहीं लगी कि उनके स्थान पर उनके गुरुदेव ने यह मुआयना करवाया है। एक तरफ बैठ कर थोड़े रोये और अपना इस्तीफा (Resignation) लिख कर कलक्टर साहब को पेश किया। पूछने पर केवल इतना ही कहा कि "मैं अब काम नहीं कर सकूँगा।" बहुत कहने पर भी न माने। कलक्टर साहब ने आपको रिटायर करा दिया। आपकी पेन्शन हो गई।

अब और आज़ादी मिल गई और सारा समय सुबह छः बजे से रात के दस बजे तक उपदेश और अभ्यास कराने में व्यतीत करते। दोपहर से दो-तीन घण्टे पत्रों का उत्तर देते और किताबों के लिखने में व्यतीत करते। बीमारी की हालत तक में बराबर तालीम देते रहते।

महा प्रयाण

परमात्मा को जो काम आपसे लेना था वह प्रायः समाप्त हो चुका था। सन् 1931 ई० में आप जिगर (यकृत) की बीमारी से पीड़ित हो गये। हर प्रकार का इलाज डाक्टरी, यूनानी, आयुर्वेदिक आदि किया गया परन्तु लाभ नहीं हुआ। बीमारी धीरे-धीरे बढ़ती गई और असाध्य हो गई। आप बहुत कमजोर हो गये। अधिकतर समय मौन रहते और आँखें बन्द किये लेटे रहते। यद्यपि आपके जिगर में असह्य पीड़ा थी लेकिन शान्ति पूर्वक सहन करते रहे। जैसे-जैसे अन्त समय निकट आता जाता था आप परमात्मा के प्रेम में विह्वल होते जाते थे। आँखों से आँसुओं की नदी बहने लगती और कहते-

वादये वस्ल चूं शबद नज़दीक ।
आतिशे शौक़ तेज़ तर गरदद ॥

(अर्थ-माशूक़ से मिलाप की घड़ी जितनी नजदीक होती जाती है मिलने के शौक़ की आग तेज़ होती जाती है।)

मृत्यु से एक सप्ताह पहले इलाज सब बन्द कर दिये। जो सत्संगी भाई वहाँ पर मौजूद थे उनको अन्त समय तक तालीम देते रहे। मृत्यु से एक दो दिन पहले कहने लगे कि "बुजुर्गान सिलसिला (वंश के महापुरुषों) की रूहों (आत्माओं) को हर समय अपनी खाट के चारों तरफ पाता हूँ। अब माशूक़ के मिलाप का समय बहुत नजदीक है।"

अब आपको दस्त आने लगे। चलना-फिरना बन्द हो गया। कमज़ोरी ज्यादा बढ़ गई। 14 अगस्त सर 1931 ई० की सुबह को पूजा वाले कमरे में जहाँ हमेशा संध्या हुआ करती थी, बिना किसी की सहायता के स्वयं पधारे। खाट पर लेट गये और आँखें बन्द कर ली और फिर नहीं खोली और न किसी से बातचीत की। मक्खी वग़ैरा को हाथ से उड़ा देते थे और बस रात के एक बजे ईश्वर की उस अखण्ड ज्योति ने पार्थिव शरीर को छोड़ दिया और अपने असल भण्डार में सदा के लिये विलीन हो गई।

हम ना मरे, मरा संसार ।
हमको मिला जिलावनहार ॥

शिक्षा

सत्संगियों के लिये महात्मा जी की शिक्षा वास्तव में तो प्रेम की शिक्षा थी। प्रत्येक से स्नेह करना और प्रत्येक को प्रेम की डोर में बाँधे रखना यह उनका तरीका था। महात्मा जी का कथन था कि यदि शिष्य गुरु से प्रेम करता है, उनका सत्संग करता है और उनके आदेश का पालन करता है तो इसी से उसकी आध्यात्मिक पूर्णता (तकमील) हो जायेगी। विशेष व्यक्तियों को महात्मा जी ने कोई शिक्षा नहीं दी। केवल इतना था कि वे सत्संग में आते रहें और उनका उद्धार हो जाय परन्तु यह तरीका केवल उत्तराधिकारियों के लिये ही था। आम तौर पर जैसा शिष्य का पात्र होता उसी

के अनुसार उसे शिक्षा देते। किसी को सुरत शब्द की शिक्षा देते तो किसी को दिल के जाप (ज़िक्रे खफी) की और किसी को वज़ीफ़ा बतला देते थे। किसी को कुछ कर्म बतला देते थे। परन्तु अधिकतर गुरु से तवज्जोह लेने, सत्संग करने और दिल के जाप करने पर जोर देते थे। अपनी शक्ल का ध्यान करने को बहुत ही कम बताते थे। महात्मा जी हृदय चक्र (क़ल्ब के मुकाम) पर ॐ शब्द का जाप कराते थे। उनके सत्संग के प्रताप से और तवज्जोह से चक्र (लतीफ़े) जागृत (ज़ाकिर) हो जाते थे, उनमें अनहद-शब्द सुनाई देने लगता था। ऐसा होने पर आदेश देते कि इन्हीं को सुनते रहो और इतना अभ्यास करो कि उठते बैठते, सोते-जागते, यहाँ तक कि एक सैकिण्ड के साठवें हिस्से तक भी इससे ग़ाफ़िल मत रहो।

महात्मा जी की शिक्षा एक मिली जुली शिक्षा थी जिसमें कर्म-काण्ड, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग ओर प्रेमयोग सभी शामिल थे। आरम्भ में महात्मा जी की सेवा में कुछ विद्यार्थी आये। उनके लिये शिक्षा यह थी कि वे महात्मा जी के पास बैठे रहा करें और उनका गायन सुना करें। यदि कोई उनसे ध्यान के विषय में कुछ पूछता तो वे कह देते थे कि जो वस्तु सबसे अधिक अच्छी लगे उसका ही ध्यान करो। ज्ञानियों को ज्ञान की शिक्षा देते और उस विषय को खूब समझाते। सारांश यह है कि प्रत्येक के लिये उनकी शिक्षा का नया तरीका था।

जीवन के आदर्श

महात्मा जी का कथन था कि फकीरी की तीन शर्तें हैं-(1) इल्लत, अर्थात् उसे कोई शारीरिक व्याधि रहनी चाहिये। (2) क़िल्लत, अर्थात् रुपये की कमी रहनी चाहिये। (3) ज़िल्लत, अर्थात् लोग उसकी निन्दा करें। इनसे अहंकार दबा रहता है और घमंड नहीं होता। जिसने अपने मन को मार लिया वह दुनियाँ का बादशाह है। इससे कठिन काम दुनियाँ में कोई नहीं है। महात्मा रामचन्द्र जी को सब मतों की धार्मिक पुस्तकों पर विश्वास था। प्रत्येक धर्म के महापुरुषों का वे आदर करते थे, उन की वाणी को पढ़ते और सुनते थे और उनके वचनों का बहुत आदर करते थे। महात्मा जी आजीवन अपने गुरुदेव के आदेश पर दृढ़ता पूर्वक चलते रहे और वह आदेश यह था कि “जिस धर्म में जन्म लिया है उसी के अनुसार कर्म-काण्ड करना चाहिये।” अतः

यद्यपि उनके गुरुदेव इस्लाम धर्म की शरह (कर्म-काण्ड) के अनुसार ही जीवन व्यतीत करते थे वे स्वयं हिन्दू होने के नाते हिन्दू रीति-रिवाजों को बरतते थे। न कभी महात्मा जी ने रोज़ा रखा और न नमाज पढ़ी। अपनी तस्वीर खिंचवाने या उसको प्रेमी-जन अपने घर में रखने का महात्मा जी विरोध न करते परन्तु उसे मूर्ति की तरह पूजने के आप विरुद्ध थे। महात्मा जी अपने चरण छुआना पसन्द नहीं करते थे परन्तु जो प्रेमी-जन चरण छूना चाहते थे उन्हें इसलिये नहीं रोकते थे कि यह प्रथा हिन्दुओं में बहुत पहले से चली आई है कि गुरु जनों को प्रणाम चरण छू कर किया जाता है।

अपने आध्यात्मिक वंश के पूर्व महापुरुषों के प्रति उनका बड़ा आदरभाव था। वे कहा करते थे कि हमारे वंश की महानता हमारे पूर्वजों के कारण है। सदा उनके लिए प्रार्थना करते रहते और किसी भी सांसारिक या पारमार्थिक काम में सफलता मिलने पर उन्हें धन्यवाद देते और उसको उन्हीं के अर्पण करते।

सिद्धि शक्ति को वे जानते थे परन्तु उनके क़ायल नहीं थे। गन्डे ताबीज़ के भी महात्मा जी पक्ष में नहीं थे यद्यपि वे इस विद्या को भी जानते थे और अपने प्रेमी शिष्यों में से उन्होंने कईयों को यह विद्या बताई और ताबीज देने की इजाजत भी दी। हाँ, यदि उन्हें कोई मजबूर करता तो वे ताबीज लिख देते थे।

सदाचार से रहने पर वे बहुत जोर देते थे। उनका कहना था कि जब तक आचरण पूर्णतया ठीक नहीं हो जाता तब तक आत्मानुभव नहीं होता। ज्यादा अभ्यास (रियाज़त) और वज़ीफ़ा पढ़ने के पक्ष में न थे बीच का रास्ता पसन्द करते थे। महात्मा जी का कहना था कि दिल का अभ्यास सबसे ऊंचा है, इसका असर शरीर, मन और आत्मा पर पड़ता है। दिल को काबू में रखना और उसे तरतीब देते रहना यही असली अभ्यास है।

प्रार्थना (दुआ) में उनका बहुत विश्वास था लेकिन अपने लिये व दुनियावी फ़ायदे के लिये प्रार्थना (दुआ) करना उन्हें मंजूर न था। दूसरों के लिये हर वक्त दुआ करने को तैयार रहते थे।

महात्मा जी का कहना था कि गुरु हर मनुष्य को करना चाहिए लेकिन गुरु बहुत देख-भाल कर करना चाहिये। एक बार गुरु धारण कर लेने पर अपने आपको पूरी तरह अपने को गुरु के आधीन कर देना चाहिए जिस तरह मुर्दा ज़िन्दों के हाथ में होता

है।

उनका कथन था कि जिस मनुष्य से तुम को डर हो और उलझन होती हो उसको अपना शुभ-चिन्तक और मित्र समझो और ज़बरदस्ती इसका अभ्यास बढ़ाओ। एकान्त में बैठ कर बिना किसी दिन चूके हुए थोड़ी देर यह अभ्यास किया करो कि अमुक व्यक्ति मेरा मित्र है और शुभ-चिन्तक है।

समाधि

आपकी समाधि फतेहगढ़ में कानपुर रोड़ पर नबेदिया में है जहाँ पर प्रतिवर्ष गुड फ्राइडे पर तीन दिन भंडारा होता है। आपकी समाधि इस धरा पर उपलब्ध उन गिने चुने विशेष स्थानों में है जहाँ नमन करने से कोटि-कोटि जन्मों के पापों का क्षय हो जाता है। अपने जीवन में कोई एक बार भी इस समाधि पर अगर सच्चे मन से पहुँच गया है तो कालांतर में उसके भवसागर से उद्धार हो जाने में कोई शंका नहीं है ऐसा मेरा मानना है।

❸❻①

36-2. हजरत जनाब महात्मा रघुबर दयाल जी साहब (कानपुर)

आपकी समाधि कानपुर में है।

[(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)]

36-2. हजरत जनाब महात्मा रघुबर दयाल जी साहब (कानपुर)

(महात्मा हरनारायण जी सक्सेना की पुस्तक 'नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्गान व उनकी समाधियां' से साभार)

आप परम सन्त सद्गुरु श्रीमान लाला जी महाराज के छोटे भाई थे। आपका जन्म 7 अक्टूबर सर 1875 को हुआ। आपका लालन-पालन भी श्रीमान लालाजी महाराज के साथ साथ अपने पिता श्रीमान हरबंस राय चौधरी साहब की ही देख रेख में हुआ। पिता के स्वर्गवास के पश्चात् आपने बड़े भ्राता श्रीमान लालाजी महाराज को ही अपने पिता के स्थान पर मान कर उनकी आज्ञा तथा इच्छा का अनुसरण इस प्रकार किया कि जिसका उदाहरण इस युग में मिलना कठिन ही नहीं असम्भव है। हाँ यदि हम

भगवान राम के प्रति भक्त-श्रेष्ठ, भरत जी का उदाहरण प्रस्तुत करें तो बहुत कुछ ठीक बैठ सकता है।

बचपन में आपका लालन-पालन भी बड़े ठाट बाट से हुआ परन्तु पिता के स्वर्गवास के पश्चात् आपको भी उन्हीं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिनका हमारे श्रीमान लालाजी महाराज को। परन्तु आपकी यह विशेषता थी कि आप पूर्णरूप से श्रीमान लालाजी महाराज पर आश्रित ही नहीं अपितु समर्पित अर्थात् न्योछावर थे। उर्दू भाषा की उच्च शिक्षा तथा अँग्रेज़ी की थोड़ी शिक्षा प्राप्त करके आपने अपना प्रारम्भिक कौटुम्बिक जीवन असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर तार बाबू के पद से प्रारम्भ किया। एक अंग्रेज इंस्पेक्टर उन दिनों गालियाँ बहुत देता था। इनको भी एक दिन उसने गालियाँ सुनाई तो थोड़ी देर तो आप सुनते रहे फिर उसको कमर पकड़ कर जमीन पर पटक दिया और सीने पर चढ़ बैठे। लोगों ने बीच-बचाव किया और वह इंस्पेक्टर चुपचाप चला गया। इन पर कोई केस बने उसके पहले ही आप इस्तीफा देकर नौकरी छोड़ आये।

फिर आपने अपना जीवन ग्राम अलीगढ़ जिला फतेहगढ़ में व्यतीत किया। एक प्रतिष्ठित वकील श्रीमान मुन्शी चिम्मनलाल साहब के पास आप कार्य करते रहे तथा श्रीमान लालाजी महाराज के आदेशानुसार उन्हीं वकील साहब के पास अपना आध्यात्मिक अभ्यास भी करते रहे।

अलीगढ़ ग्राम में तहसील का कार्यालय था और यह स्थान फतेहगढ़ से लगभग छः मील उत्तर दिशा में गंगा जी के पार गंगा, रामगंगा के बीच में था। फतेहगढ़ आने जाने के लिये गंगा जी नौका द्वारा ही पार करनी पड़ती थी। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र महात्मा बाबू बृजमोहन लाल ने फतेहगढ़ में श्रीमान लाला जी महाराज के संरक्षण तथा देखरेख में विद्याध्ययन किया व सन् 1923 में हाईस्कूल की परीक्षा पास करके पुलिस विभाग में नौकरी कर ली। जब इनकी पोस्टिंग कानपुर हुई तो फिर श्रीमान चच्चाजी महाराज सपरिवार कानपुर आकर रहने लगे।

आपके द्वितीय सुपुत्र महात्मा राधा मोहन लाल ने भी फतेहगढ़ में श्रीमान लाला जी महाराज के पास रहकर हाई स्कूल तक पढ़ा और सन् 1925 में हाईस्कूल परीक्षा पास करके कानपुर में जज साहब के कार्यालय में नौकरी कर ली। छोटे सुपुत्र महात्मा

श्री ज्योतिन्द्र मोहन लाल उस समय छोटे थे तथा अध्ययन कर रहे थे, कानपुर आकर पढ़ने लगे।

आपका अलीगढ़ निवास कठोर तपस्या का समय था। श्रीमान महात्मा श्री चिम्मनलाल साहब के निर्देशानुसार आपने कठिन तपस्या की। यहाँ तक कि कई-कई दिन निराहार रह कर तथा रात-रात भर जाग कर आध्यात्मिक अभ्यास की पराकाष्ठा पर पहुँचे। श्रीमान लालाजी महाराज ने आपकी इस कठोर तपस्या तथा आध्यात्मिक तीव्र प्रगति से प्रसन्न होकर अलीगढ़ में ही आपको परम संत सद्गुरु की पदवी प्रदान की।

श्रीमान लालाजी महाराज के प्रति आपके आदर तथा प्रेम के उत्तर में, जिस का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं, आपके लिए श्रीमान लाला जी महाराज का प्रेम भी अगाध था। वे अधिक समय तक उन्हें देखे बिना रह नहीं सकते थे। अतः लगभग मास में एक दो बार या तो श्रीमान लालाजी महाराज इनके पास पहुँचते थे या आप उनकी सेवा में उपस्थित हो जाते थे।

फतेहगढ़ में एक बार आप इतने अधिक अस्वस्थ हो गये कि आपके जीवित रहने की आशा भी क्षीण होने लगी। उस समय श्रीमान लालाजी महाराज की चिन्ता का ठिकाना न रहा। अपने गुरुदेव जो उस समय शरीर में नहीं थे बहुत कुछ अनुनय विनय की। आपकी विनती स्वीकार कर ली गई। कहते हैं कि श्रीमान लालाजी महाराज ने अपनी आयु का एक विशेष भाग आपको देना चाहा था। जिसकी स्वीकृति मिल गई। श्रीमान् लालाजी महाराज तो अपनी आयु के 59 वर्ष भी पूरे नहीं कर सके तथा निर्वाण प्राप्त किया। परन्तु श्रीमान चच्चा महाराज आपके पश्चात् लगभग 16 वर्ष तक आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्व साधारण की सेवा करते रहे। श्रीमान लालाजी महाराज के निर्वाण के पश्चात् का आपका जीवन पूर्ण रूप से श्रीमान लालाजी महाराज के जीवन के अनुरूप रहा, तथा वे श्रीमान लालाजी महाराज का ही आध्यात्मिक कार्य जीवन पर्यन्त करते रहे। मुझे पूज्य भाई साहब परम संत डाक्टर श्याम लाल जी गाजियाबाद निवासी ने बतलाया था कि पहले श्रीमान चच्चाजी महाराज फ़रमाया करते थे कि उनकी वापसी (अर्थात् निर्वाण) पहले होगी और श्रीमान लालाजी महाराज की बाद में होगी। जब सन् 1931 में श्रीमान लाला जी महाराज की वापसी हो गई तब इन्हीं

श्रीमान डाक्टर साहब ने श्रीमान चच्चाजी महाराज से फिर एक बार प्रश्न किया कि आप तो फ़रमाते थे आपकी वापसी पहले होगी और श्रीमान लालाजी महाराज की बाद में ? तो आपने बतलाया कि श्रीमान लालाजी महाराज ने अपनी आयु का एक भाग उनको दिया है इस कारण ऐसा हुआ।

सर 1924 के पश्चात् का समय आपका कानपुर नगर में ही बीता। आरम्भ में आपने एक छोटा सा मकान कर्नलगंज खटिकाना में लिया। कुछ वर्ष पश्चात् जब आर्य नगर बसाया जा रहा था तब वहाँ आपके नाम कई प्लाट कर दिये गए। जिनमें से एक आपने अपने लिए रखकर बाकी अपने पास आने वाले अभ्यासियों को बाँट दिए। आपके रहने के लिए यहाँ एक मकान बन गया जिसका नाम 'रघुबर भवन' तथा उस मार्ग का नाम 'सन्त शिरोमणि महात्मा श्री रघुबरदयाल मार्ग' रखा गया।

जहां तक हमारे श्रीमान चच्चा जी महाराज का प्रश्न है हमने स्वयं देखा है कि वे पूज्य माता जी (धर्म पत्नी श्रीमान लालाजी महाराज के सामने सदा हाथ बांध कर खड़े होते थे तथा उनकी प्रत्येक आज्ञा को बहुत अच्छा कह कर शिरोधार्य करते थे।

आप अपने गुरुदेव की याद में तथा आध्यात्मिक ध्यान में हर समय खोये हुए रहते थे तथा सांसारिक भावनाओं को सदा ही भूले हुए रहते थे। गृहस्थ संचालन का कार्य आपकी धर्म पत्नी तथा आपके सुपुत्र श्रीमान महात्मा राधामोहनलाल जी ही देखते और करते थे। आप पूर्णतया जीवन-मुक्त थे। ऐसी दशा होते हुए भी आप पूर्ण व्यवहार कुशल थे। ब्राह्मण कुल के कोई भी महानुभाव आते तो आप उन्हें सदा ही 'पंडित जी पालागन' कह कर सम्बोधित करते थे। छोटे बड़े सबसे उनके अनुरूप ही वार्ता करना आपकी विशेषता थी।

अध्यात्म के गूढ़ तत्वों को भी इतनी सरल भाषा में समझा देते कि बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्यचकित रह जाते। अधिकारियों को अध्यात्म की ऊंची से ऊंची दशा पर अपनी शक्ति से पहुंचा कर समझा देते कि यह अमुक स्थान तथा अवस्था है इसे समझ लीजिए। आप के दरबार में एक बार भी यदि कोई पहुँचा तो अध्यात्म का संस्कार लिये बिना नहीं लौटा।

मुझे अपने विद्यार्थी जीवन (1925-1930) में कई वर्ष श्रीमान चच्चा जी महाराज की सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् भी उनकी सेवा में समय-समय

पर जाता रहा। परन्तु श्रीमान लालाजी महाराज की सेवा में रहने का अधिक सुअवसर मुझे दुर्भाग्यवश नहीं मिला। गुरुदेव श्रीमान लालाजी महाराज के सन् 1931 में निर्वाण के बाद लगभग 16 वर्ष तक आप सारे सत्संग परिवार का अध्यात्म से सिंचन करते रहे तथा मेरा सम्पर्क आप से ही पूर्ण रूप से बना रहा। मुझे इस मार्ग में सारा मार्ग दर्शन आप ही से मिला और आज भी मिलता है।

प्रथम दर्शन

टोंक (राजस्थान) से सन् 1925 में हाई स्कूल पास करके मैं कानपुर सनातन धर्म कॉलेज में पढ़ने गया। मेरे भाई साहब बाबू आनन्द स्वरूप जी वहां रहते थे श्रीमान चच्चा जी महाराज की सेवा में जाने वालों में एक पुराने अभ्यासी थे। अक्टूबर 1925 में एक संध्या को वे मुझे भी अपने साथ ले गए और श्रीमान चच्चा जी महाराज के सामने बैठा दिया। थोड़ा सा परिचय दे दिया। श्रीमान जी मुझ से थोड़ी बात करके अपने परिवार के सदस्यों, भाई साहब आदि से बातें करते रहे। लौटते समय मुझसे कहा जब फुरसत हो कभी-कभी हमारे पास आ जाया करो। मेरी आयु उस समय केवल 17 वर्ष की थी। श्रीमान के विषय में मैं क्या समझ सकता था। परन्तु कुछ आकर्षण (खिंचाव) के कारण उनके पास जाने लगा। कुछ दिनों बाद आपने मुझे अभ्यास बतलाया और कराया। आज्ञा दी कि इसे रोज प्रातः कर लिया करो। उनकी दया कृपा से ये अभ्यास तभी से चल रहा है और जीवन पर्यन्त चलता रहेगा।

भाई रोया करो

श्रीमान लाला जी महाराज के समय की घटना है। एक बार फतेहगढ़ में श्रीमान चच्चा जी महाराज कमरे में विराजे थे। भाई लोग उन्हें घेरे उनकी बातों पर मुग्ध मस्ती में झूम रहे थे। एक भाई ने श्रीमान चच्चा जी से प्रश्न पूछ लिया "चच्चा पूजा में तो जी बिलकुल नहीं लगता, कुछ ऐसा गुर बतलाइये जिससे मन लगने लगे।" चच्चा जी महाराज ने तुरन्त ही उत्तर दिया, "यह तो बहुत सरल है-भाई रोया करो।" उन भाई ने कहा "चच्चा हमें तो रोना भी नहीं आता" तो चच्चा ने कहा "उसमें क्या है, तुम्हारा कोई अपना मर जाता है तो रोते नहीं हो, वैसे ही रोओ।"

भाई को गुर मिल गया। रोने का अभ्यास आरम्भ हो गया। एक दिन वे मकान के ऊपर के कमरे में बन्द होकर रो रहे थे कि उनकी आवाज जोर से निकलने लगी और घर वालों का ध्यान उधर आकृष्ट हो गया। कमरे के किवाड़ भड़भड़ाये गये तब कहीं देर से उन्होंने किवाड़ खोले।

उनके इस व्यवहार की शिकायत श्रीमान लाला जी महाराज के पास पहुँची। उनसे बुलाकर पूछा गया तो उन्होंने श्रीमान चच्चा जी महाराज के बतलाये गुर का भेद खोल दिया। श्रीमान लाला जी महाराज को इस बात पर कुछ हंसी आ गई और फ़रमाने लगे, "नन्हे को ऐसी ही बातें सूझा करती हैं।" उन रोने वाले भाई पर उस दिन से कुछ विशेष कृपा भी हो गई।

श्रीमान चच्चा जी महाराज को उन भाई ने स्वयं ही जाकर यह घटना सुनाई और कहने लगे, "चच्चा आपने ऐसी तरकीब बतलाई कि हमारा काम बन गया। परन्तु आपको थोड़ी डांट पड़ गई।"

श्रीमान चच्चा जी महाराज फ़रमाने लगे-

''कबीर हँसना दूर कर-रोने से कर प्रीत ।
बिन रोये कैसे मिले, प्रेम पियारा मीत ॥
हंस हंस कंत न पाइयाँ, जिन्ह पाया तिन्ह रोय ।
हंसी हंसी जो पिउ मिले तो कौन दुहागिन होय ।

भाई तुम्हारा काम तो हो गया हमें डांट पड़ी सो पड़ी-उसकी चिन्ता न करो।"

रोना और गिड़गिड़ाना, दीनता आधीनता की निशानी है। चच्चा जी महाराज के अनुसार ये दोनों ही बातें भगवान को प्रिय हैं और हमें भगवान के निकट ले जाने वाली हैं।

काँग्रेस का 1925 का अधिवेशन

पूज्य चच्चा जी महाराज के पास बैठने तथा उनका वार्तालाप सुनने का अवसर सब सत्संगी भाइयों को स्वतंत्रता के साथ मिलता था। करनलगंज वाले मकान में बहुत छोटा सा कमरा था परन्तु जो लोग आते, पूज्य चच्चा जी सब को अपने पास बुलाते जाते और सब लोग खूब सट कर बैठ जाते। जब कानपुर में दिसम्बर सन्

1925 ई० में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था, तब बहुत से भाई लोग बाहर से आये थे। सब उसी कमरे में ठहरे थे और रात को भी वहीं खूब सट कर सोते थे। जाड़े का मौसम था ही। श्री पूज्य चच्चा जी महाराज भी सबके साथ ही उसी कमरे में जमीन पर सोते थे, जब लोग जागते तो देखते कि किसी का पैर पूज्य चच्चा जी के पैर के ऊपर पड़ा है तो किसी का हाथ पर। इस सादगी और सामान्य भाव से रहते थे कि जिससे किसी देखने वाले को गुरु और शिष्य के सम्बन्ध का पता ही नहीं चलता था। परन्तु प्रत्येक भाई के हृदय में पूज्यपाद श्री चच्चा जी महाराज के प्रति अपार श्रद्धा एवं विशेष अनुराग था।

संत महात्माओं का सत्संग-

एक बार की घटना है कि श्री चच्चा जी एक गाँव के बाजार में पहुँचे; बिक्री हो रही थी। शाम का समय था। जब चिराग जलने को हुए एक मस्त फकीर झोला लिए बाजार में आये। सब तरफ से कुँजड़े कहने लगे, "देखो आज किस पर मुसीबत आती है।" फकीर एक सब्जी वाली की दूकान पर रुके उसे अपना झोला और एक पैसा साग के वास्ते दिया। उसने एक पैसे का साग झोले में रख दिया। इसके बाद वह लगभग 1 घण्टे तक हुज्जत करते रहे। अरे भाई थोड़ा और दे दो, थोड़ा और दे दो। यही, बार-बार कहते रहे, फिर झोला उठा कर चल दिये। श्री चच्चा जी उनके पीछे हो लिये। लगभग एक मील चलकर फकीर अपनी कुटिया में पहुँचे। पूज्य चच्चा जी को देखकर उन्हें प्रेम से बैठाया खातिर की और फिर रूहानी दावत शुरू हो गई। बड़ा आनन्द रहा।

चच्चा जी ने अन्त में कहा-महाराज ! यहाँ यह हालत और वहाँ वह दशा। उन्होंने जवाब दिया-क्या करुँ ? यदि इस तरह न रहूँ तो पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाये-कहीं कोई मुकदमा जिताने को कहता है, कोई पुत्र माँगता है कोई धन माँगता है इत्यादि। सभी लोग आकर घेरने लगेंगे, फिर तो मेरा यहाँ रहना मुश्किल हो जायेगा।

ठीक यही हाल था पूज्य चच्चा जी का। तहसील अलीगढ़ जिला फर्रुखाबाद में 27 वर्ष तक रहे, पर कोई न जान सका वे राम-नाम भी जानते हैं। मकान के बाहर दरवाजे पर एक चारपाई पर बैठे रहते थे ओर हुक्का बराबर चलता रहता था। दिन

भर के बाद शाम को पैसे सवा पैसे के चने या दूध लेते थे, रात को भी यहीं पड़े रहते थे। उन दिनों आरायज नवीसी करते थे। जो कुछ मिला रास्ते में बच्चों को ही बँट जाता था; सैकड़ों रुपए मुवक्किल लोग इनके यहाँ रख जाते और जब चाहते उठा ले जाते थे। घर बिना ताला कुंजी के वैसा ही खुला पड़ा रहता था। लोग कहते, जो उनका मुँह सुबह उठ कर देख लेगा, उसे उस दिन खाना नहीं मिलेगा। ऐसा लोगों से बचने के लिए स्वयं चच्चा जी ने माहौल बना रखा था।

दूसरी घटना

एक बार पूज्य चच्चा जी ट्रेन से कहीं जा रहे थे। ट्रेन अकस्मात ही एक जंगल में रुक गई और एक आदमी उतर कर जंगल की ओर चल दिया। चच्चा जी भी उतर कर उसके पीछे हो लिये। काफी घने जंगल में जाकर वह एक झाड़ी में कूद कर छिप गया। यह सदा सुहागिन था (यह एक संप्रदाय है जिसके साधु स्त्री-वेष में रहते है)। चच्चा जी भी कूदकर अन्दर पहुंच गए-एक तरफ को सिमटते हुए उसने कहा- "उइ ! मरदुआ कहाँ से?" (यह मर्द कहाँ से आया। संतों की भाषा में पूर्ण संत को मर्द कहा जाता है)। चच्चा जी ने उत्तर दिया-"मरदुआ हो तब ना ?" तब उसने कहा, "अच्छा आओ गुइयाँ आओ बैठ जाओ।" दोनों बैठ गये। रूहानी दावत शुरू हो गई, पहले उसकी तरफ से खातिरदारी हुई। बड़ा आनन्द रहा। फिर उसने चच्चा जी से दरख्वास्त की। आँखें मिंच गईं और पूजा आरम्भ हो गई। थोड़ी देर बाद आँख खुलने पर उसने कहा- "गुइयाँ खूब रही।"

फिर चच्चा जी को बताया यह तो बड़ा घना जंगल है, स्टेशन बहुत दूर है, तुम आँखें बन्द करो। चच्चा जी ने आँख बन्द की, और जब आँखें खोली तो अपने आपको स्टेशन पर पाया ट्रेन खड़ी थी, बैठ गए और ट्रेन चल दी। लगता है उनकी प्रतीक्षा में ट्रेन खड़ी थी।

एक बार श्री चच्चा जी महाराज कुम्भ के अवसर पर प्रयाग गये हुये थे। साथ में बहुत से सत्संगी भाई भी थे। एक दिन डेरे के अन्दर सब सज्जन बैठे हुए थे कि एक सन्यासी जी आए। कुछ देर तक खड़े देखते रहे और कहा, "तुम में कौन महात्मा है ?" उनके दो-तीन बार पूछने पर श्री चच्चा जी ने कहा, 'ये सब महात्मा हैं।' वे सन्यासी

जी हैरान होकर चल दिये। थोड़ी देर बाद फिर लौट कर आये और लगभग एक घण्टा बैठे रहे। आँखें भी बन्द की और फिर चलते समय कहने लगे, भाई खूब छिपाते हो तथा प्रसन्न होकर चले गये।

शिक्षा का तरीका

पूज्य चच्चा जी महाराज के शिक्षा देने का ढंग अनोखा था। वे शिष्टाचार विनम्रता आदि अन्य व्यवहार की शिक्षा विचित्र ढंग से देते थे। गुप्त रूप से काम करते थे तथा कभी किसी की आलोचना नहीं करते थे। न किसी को किसी बात के लिए प्रत्यक्ष में मना करते थे। साधारण उपदेश में सब बातें कह जाते जिसे केवल वही व्यक्ति समझ पाता जिसके सम्बन्ध में बात कही जाती थी। उनके पास चिन्ता, अशान्ति, द्वेष आदि से पीड़ित जो भी व्यक्ति जाता, उसके सारे क्लेश दर्शन मात्र से वैसे ही दूर हो जाते-जैसे भगवान भास्कर के प्रकाश से सारा अन्धकार दूर हो जाता है। लोग अनेकों शंकायें तथा प्रश्नों को लेकर उनके पास जाते और बिना पूछे ही उनके प्रश्न हल हो जाते।

इसी सम्बन्ध की एक घटना है। एक बार एक नये सत्संगी भाई आये। उनको आते हुये आठ दिन हुये थे। एक दिन उनके मन में आया कि जो झगड़ा उनका उनके बहनोई जी से कई वर्षों से चला आ रहा है, वह समाप्त हो जाये और उनसे मेल हो जाये। सौभाग्य से होली के दिन थे। वे अपने बहनोई के घर में पहुँचे। उनके पैर छुये और होली मिले। वर्षों का द्वेष क्षण मात्र में दूर हो गया। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह सब पूज्य चच्चा जी महाराज का ही प्रताप था।

"उमा न कछु कपि कै अधिकाई,
प्रभु प्रताप जो कालहिं खाई।"

पूज्य चच्चा जी कहा नहीं करते, कर दिया करते थे। इसी प्रकार लोगों की बुरी आदतें उनके पास बैठने से ही चली जाती थीं। ऊपर से तो वे बड़ी दिल लुभाने वाली लच्छेदार बातें किया करते और अन्दर ही अन्दर हृदय के मैल को साफ करके निर्मल बना देते थे। यह बात बड़ी कठिनाई से कहीं-कहीं देखने में आती है।

सत्संगियों में से एक श्रीमान को मदिरापान की आदत थी और धनाढ्य होने के

कारण मदिरा-पान में इच्छानुसार धन भी व्यय किया करते थे। एक दिन पूज्य चच्चा जी से एकान्त में बात हुई। उन सज्जन ने कहा कि यह मेरा बहुत बुरा व्यसन है। अब आगे से मद्यपान न करुंगा। किन्तु 10-15 दिन बाद एक दिन उन्होंने फिर मदिरा पी ली। सत्संग के बाद जब सब लोग चले गये और वह अकेले रह गये, तो उनकी फिर पूज्य चच्चा जी से बातचीत हुई। उन्होंने चच्चा जी के समक्ष अपनी गलती को स्वीकार किया और भविष्य में फिर मद्यपान न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। इसके बाद 8-10 दिन बीत जाने पर एक दिन फिर उन्हीं सज्जन की एकान्त में पूज्य चच्चा जी से वार्ता हुई। उन्होंने कहा, मेरी मदिरा तो छूट नहीं सकती, मैंने कल फिर पी ली थी। अतः मैं अब इसे छोड़ने का प्रयत्न भी न करुंगा और कल से यहाँ भी नहीं आऊँगा। इस पर पूज्य चच्चा जी महाराज ने कहा, मैंने तो आपको कभी शराब पीने को मना नहीं किया। आपने स्वयं ही छोड़ने की प्रतिज्ञा की थी। इसमें मेरा क्या अपराध है जो कल से आप नहीं आयेंगे। आप मदिरापान कीजिये, पर मुझ पर इतनी कृपा कीजिये कि मुझे बतला जाया कीजिये कि आज आपने कितनी पी है। इस बात को उन्होंने स्वीकार कर लिया। इसके बाद वे नित्यप्रति जाते समय चच्चा जी के कान में कुछ कह जाते थे। चार-पाँच दिन तक ऐसा होता रहा। फिर पच्चीस दिन या एक महीने बाद उन्होंने एक दिन पूज्य चच्चा जी से कहा कि आज मैं आपसे लड़ने आया हूँ। पूज्य चच्चा जी ने कहा, भाई साहब ! मुझसे क्या अपराध हुआ। उन्होंने बताया- लगभग एक मास हो गया, मैंने मदिरा-पान नहीं किया। मुझको उसकी याद भी नहीं आती। मुझे उसकी इच्छा भी नहीं होती, अपितु एक प्रकार की घृणा हो रही है। जब आप इतनी आसानी से मेरा दुर्व्यसन छुड़ा सकते थे, तो आपने मुझको इतना परेशान क्यों किया। पूज्य चच्चा जी ने कहा, भाई आपने अपने आप ही प्रतिज्ञा की थी। जब आप उसको पूरा न कर सके और हार मान ली तो मैंने सोचा कि मैं ही उसके दरवाजे पर गिड़गिड़ा कर आपके लिये

प्रार्थना करूँ। धन्यवाद है उस मालिक को, उसने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। इसी प्रकार पूज्य चच्चा जी बड़े बड़े काम करते, पर कभी नहीं कहते कि मैंने यह काम किया।

मुंशी जी

पूज्य चच्चा जी के पड़ोस में एक मुंशी जी रहते थे। ये बहुत दीन थे। इनके बाल बच्चे भी थे। कभी-कभी फाका भी करना पड़ता था। पूज्य चच्चा जी महाराज इनको सहायता भी दिया करते थे और दूसरों से भी दिलवाया करते थे। तंग आकर एक दिन सुबह ये गंगा जी गये। कपड़े उतार कर गंगा जी में घुसे और डूब मरने का इरादा किया। इतने में देखा कि चच्चा जी डंडा लिये आ रहे हैं और डाँट कर कहते हैं-क्या अनर्थ करते हो, पानी से बाहर निकलो ? डाँट के मारे वह घबरा गये और पानी से बाहर निकल आये। जल्दी में कपड़े तथा जूते हाथ में उठा कर भागे। स्वयं भागते जाते और पीछे देखते जाते कि पूज्य चच्चा जी महाराज डंडा लिये आ रहे हैं। जब नगर के समीप आ गये तो देखा कि चच्चा जी नहीं हैं। मुंशी जी ने कपड़े आदि पहने और सीधे चच्चाजी के मकान पर आये। देखा कि आप आराम से बैठे हुक्का पी रहे हैं और सत्संगियों से बातचीत कर रहे हैं। इनको देख कर बहुत हँसे और पूछा कहिए मुंशी जी ! मिजाज अच्छा है। उन्होंने सब किस्सा अर्ज कर दिया। आप हँसने लगे। मुंशी जी ने सत्संगियों से एकान्त में पूछा, तो ज्ञात हुआ कि आप प्रातः काल से यहीं बैठे हैं और कहीं नहीं गये।

सिद्धि का प्रदर्शन

एक बार श्री पूज्य चच्चाजी महाराज के पास एक पण्डित जी आये। उनको एक सिद्धि प्राप्त थी, जिसके द्वारा जब चाहें जिस किसी की ज़ुबान बन्द कर देते थे। वह व्यक्ति फिर बोलने में असमर्थ हो जाता था। पण्डित जी ने अपनी शक्ति का प्रयोग पूज्य चच्चा जी महाराज पर भी किया। थोड़ी देर तक वह चुप बैठे रहे। फिर उन्होंने कागज पर लिख कर दिया कि कृपा करके आप मेरी ज़ुबान खोल दें। पण्डित जी अहंकार के मद में डूबे हुए थे। उन्होंने पूज्य चच्चा जी महाराज की बात हंस कर टाल दी। जब वे नहीं माने, तो पूज्य चच्चा जी महाराज बात करने लगे। इसको देखकर पण्डित जी को आश्चर्य हुआ और उठ कर चले गए। कुछ समय बाद पण्डित जी पूज्य चच्चाजी के पास आए और पैर पकड़ कर फूट-फूट कर रोने लगे। कहा, “मैं तो लुट गया। मेरी शक्ति छिन गई जिसके द्वारा मैं कमाने का धन्धा किया करता था। अब मैं

क्या करूँ ?" सन्त दयालु होते हैं। फिर वह तो परम सन्त थे। उनको दया आ गई। उन्होंने उनकी शक्ति को वापस लौटा दिया और कहा, "अहंकार अच्छा नहीं होता।"

ढोंगी सन्यासी

एक सन्यासी जी अपने चेले के साथ पूज्य लाला जी के पास आये। एक दिन बाहर बरामदे में पूज्य चच्चा जी का हंसी मजाक का दरबार जारी था, वहीं सन्यासी जी के चेले भी बैठ गये।

कुछ बातों में प्रसंग में पूज्य चच्चा जी ने कहा- "ये सन्यासी नहीं हैं, गलत कहते हैं।" उन्हें यह बात बड़ी बुरी लगी। उन्होंने इसकी शिकायत अपने गुरु जी से की और फिर उनके गुरु जी ने बात पूज्य लाला जी से कह दी। पूज्य लाला जी ने चच्चा जी बुलाया और पूछा-"क्यों ? आपने इनसे कह दिया कि यह सन्यासी नहीं हैं ? झूठ बोलते हैं ?"

चच्चा जी ने सन्यासी जी के चेले को सम्बोधित करते हुए कहा कि गृहस्थ के तो सिर्फ एक पत्नी होती है, परन्तु आपके तो दो पत्नीयाँ हैं। सब लोग आश्चर्य से चच्चा जी की तरफ देखने लगे। चच्चा जी ने कहा "आपकी एक पत्नी जो सदैव आपके साथ रहती है और वह जैसा चाहती है, आपसे करवाती है वह है-आपका मन और आपकी दूसरी पत्नी जो 5 हाथ की है वह आपके घर पर बैठी है। इस पर आप अपने को सन्यासी कहते हैं ?" सब की विस्मित आँखें अब सन्यासी जी के चेले पर थी, जिनका मुँह सूख गया था, गला रूँध गया था, हवाइयाँ उड़ रही थी और पसीना छूट रहा था। चच्चा जी इतना कह कर बाहर चले आये और सन्यासी जी ने अपने चेले को डाँटना शुरू कर दिया-"क्यों रे ! तूनें तो कहा था, तेरे स्त्री नहीं है.. ।" वह चेला अपनी स्त्री को छोड़कर सन्यासी बन गया था।

भक्तों की संभाल

श्री पूज्य चच्चा जी महाराज के एक भक्त का तार आया कि उनका लड़का सख्त बीमार है। ट्रेन छूटने का समय अति निकट था, इसलिए श्री चच्चा जी महाराज शाम को बिना भोजन किये ही वहाँ को चल दिये। इनके साथ एक सत्संगी भाई भी थे। ट्रेन

उस दिन कुछ लेट हो गई। भक्त प्रतीक्षा करते-करते सो गये। जब ये लोग उनके घर पहुँचे तो दरवाजा बन्द था। श्री चच्चा जी महाराज ने सत्संगी भाई से कहा कि आवाज मत दो और मत जगाओ। बेचारे तीमारदारी में जागते रहे होंगे-नींद लग गई है। आराम कर लेने दो। अतः दोनों साहब बाहर ही चबूतरे पर रात भर वैसे ही पड़े रहे। जब सुबह भक्त ने दरवाजा खोला तो इन लोगों को देखकर अवाक रह गये।

पूज्य चच्चा जी दुर्गुणों को सद्गुणों में बड़ी ही सरलता से एवं सुगमता से परिणत कर देते थे। उनका एक बड़ा सुन्दर उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता है। एक सत्संगी भाई को समाचार पत्रों के पढ़ने का व्यसन था। उन दिनों द्वितीय महायुद्ध चल रहा था। पूज्य चच्चा जी ने कहा, भाई ! मुझे युद्ध के समाचार एकत्रित करके सुनाया करो। अतः वे सत्संगी जी समाचारों को एकत्रित किया करते। इस प्रकार उन्हें पूज्य चच्चा जी का सदैव स्मरण रहता। पूजा के बाद समाचार पूज्य चच्चा को सुनाते और सुनाने के बाद भूल जाते। कुछ दिन बाद उनका व्यसन जाता रहा।

परम पूज्य चच्चा जी महाराज किस्से और कहानियाँ बहुत सुना करते थे। प्रत्येक व्यक्ति से कहते, भाई ! कोई कहानी सुनाओ। रात को जब विश्राम को जाते तब भी लोगों से कहानियाँ सुना करते। कहानियों के प्रकार का कोई निषेध न था। कहानी चाहे धार्मिक पुस्तक की हो या उपन्यास की हो। एक मास्टर जी पूज्य चच्चा जी को सोते समय बहुत दिनों तक जासूसी उपन्यास सुनाया करते थे। पूज्य चच्चा जी ऐसे सुनते मानों बड़े तन्मय होकर सुन रहे हों। कभी-कभी बीच में प्रश्न भी कर देते। वास्तव में यह किस्से बाजी निरी किस्से बाजी ही नहीं होती थी अपितु जब साधक का मन किस्से में लगा होता था, उसी समय पूज्य चच्चा जी अपनी आत्मिक शक्ति से उसके हृदय के मैल को साफ कर देते थे।

कव्वाली

एक बार बरेली में चिश्ती सूफियों का जलसा हो रहा था और कव्वाली हो रही थी। बड़ा समां बंधा हुआ था। खूब स्वर उठाये जा रहे थे। पूज्य चच्चा जी भी वहीं पहुँच गए। जैसे ही कव्वाली समाप्त हुई चच्चा जी ने भी ऊंचे स्वर में एक ग़ज़ल शुरू कर दी-

न ख्वाहम दौलते दुनिया, न जन्नतरा तलब गारम।

दिलो जाँ मी फरोशम, दर्दे इश्क रा खरीदम ॥
न पेशेमन इबादत शुद, न पोशीदम रियाज तरा ।
नजर बर फज़ल तो दारम, सरापा मन गुनह गारम ॥

अर्थ- न मैं सांसारिक धन और वैभव की कामना रखता हूँ और न स्वर्ग की आकांक्षा है। दिल और जान को बेचता हूँ और उसके बदले में प्रेम की पीड़ा का ग्राहक हूँ। मुझसे न तो भक्ति बन सकी है और न मैंने तप ही किया है। मैं सिर से पैर तक पापी हूँ। तेरी दया और कृपा का भरोसा है।

इतना सुनते ही शाह साहब भाव में इतने भर गये कि तड़प कर उठे और चच्चा जी का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने पास ही बैठाया। चिश्तियों के यहाँ जिसे गुरु पदवी की इजाजत देते और अपना उत्तराधिकारी बनाते हैं उसे रुमाल, टोपी, चादर आदि कोई वस्तु देते हैं। जब जलसा खतम हुआ इसी प्रथा के अनुसार उन्होंने चच्चाजी को एक रुमाल पेश किया।

चच्चा जी ने उन्हें निम्नलिखित शेर कहते हुए रुमाल वापस कर दिया-

"रुमाल उसको दीजिये जो मुस्तमंद हो,
यह फकीर तो अपनी ही कमली में मस्त है ॥"

रात को जागते रहना

एक सत्संगी भाई ने बताया कि वे श्री पूज्य चच्चा जी महाराज के साथ फतेहगढ़ के भण्डारे में गये थे। वहाँ पहुँचने पर श्री पूज्य चच्चा जी महाराज घर पर ठहरे और सब सत्संगी भाई समाधि पर ठहरे। जनाब पेशकार साहब महात्मा प्रभु दयाल जी इन सत्संगी भाई से अधिक प्रेम करते थे ये उन्हीं के साथ समाधि पर ठहरे। सुबह श्री पूज्य चच्चाजी महाराज ने इन सत्संगी भाई से पूछा, "रात कहाँ रहे ?" इन्होंने उत्तर दिया, "समाधि पर रहा।" श्री पूज्य चच्चाजी ने शाम होने से पहले ही इन सत्संगी भाई से कह दिया आज यहीं सोइयेगा। अतः ये रात को श्री पूज्य चच्चाजी के पास ही सोये। रात को श्री पूज्य चच्चाजी महाराज 11-12 बजे लेट गये। ये सत्संगी भाई भी सो गये। रात को 1 बजे आँख खुली तो इन्होंने देखा कि श्री पूज्य चच्चा जी महाराज

चारपाई पर बैठे है ये भी उठ कर बैठ गये। थोड़ी देर बाद श्री पूज्य चच्चा जी महाराज ने देखा और कहा-आप क्यों बैठे हैं ? इन्होंने पूछा-महाराज जी ! क्या आपके कोई तकलीफ है ? चच्चा जी कहने लगे-नहीं भाई और लेट गये। इन सत्संगी भाई की 3 बजे फिर आँख खुली। इन्होंने श्री चच्चाजी को फिर बैठे देखा। ये भी उठ कर बैठ गये। थोड़ी देर बाद श्री महाराज जी ने फिर पूछा कि भाई आप क्यों बैठे हैं। मेरे तो ज्यादा देर लेटने में दम फूलने लगता है, इसलिए कभी लेट जाता हूँ कभी बैठ जाता हूँ। अतः सत्संगी भाई को लिटा दिया और आप बैठे रहे। सत्संगी भाई ने देखा कि श्री पूज्य चच्चा जी महाराज रात भर जागते रहे। जब सबके जागने का समय हुआ तब 4 बजे लेट रहे और फिर सबके साथ 5 बजे उठ बैठे। यह थी श्री पूज्य चच्चा जी की रात चर्या। ये सत्संगी भाई पूज्य चच्चा के पास दो रातें रहे और इन्होंने देखा कि श्री पूज्य चच्चाजी महाराज रात भर भाइयों के लिए इसी तरह दुआ माँगते और गायबाना तवज्जह देते रहे।

आप कहा करते थे "जिसने निरी दुनिया देखी उसकी हुई थू-थू और जिसने निरा ईश्वर देखा उसकी हुई फू-फू"।

दुनियाँ और उकवा (लोक-परलोक) दोनों ही ठीक-ठीक निभाना चाहिये। एक का न होना चाहिए। यही सांख्य योग है कि दुनियाँ में रहते हुये दुनियाँ का सब काम करते हुये दुनियाँ से अलग रहना। आप सदैव बड़ी बात को थोड़े शब्दों में कह दिया करते थे। शब्द सार से भरे होते थे।

आप कहा करते थे-

"मन लागत लागत लागत है, भय भागत भागत भागत है,
बहुत दिनों का सोया मनुवा जागत जागत जागत है।"

आप फ़रमाया करते थे कि जो जाहिर हो गया वह दो कौड़ी का हो गया। फ़क़ीरी छुपाने की चीज है।

कबीर दास जी ने भी कहा है-"धरमदास तोहें राम दोहाई। सार भेद बाहर ना जाई।" और फकीर सन्त भी यही कहते थे कि हमारी मजलिस मजलिसे आम नहीं हमारी मजलिस मजलिसे खास है। यह तो प्रेम का रास्ता है और प्रेम दिल की चीज है।

इसमें दिखलावे के लिए कोई स्थान नहीं।

"प्रेम गली अति साँकरी, जामें दुइ न समाय"

जनाब लाला जी के जीवन में अगर कोई बात चच्चा जी से पूछता तो आप फ़रमाते कि जनाब लाला जी से पूछो वही मालिक हैं-हम तुम तो भाई-भाई हैं। जनाब लालाजी के शिष्यों का बड़ा सम्मान करते और उनको भाई समझते तब तालीम का सब काम चच्चा जी ही किया करते थे।

आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं करते थे। आप फ़रमाते थे कि फकीर से गुस्सा पूछ कर आता है और अगर किसी को गुस्सा आवे तो तीन दिन से ज्यादा न रहना चाहिए वरना संस्कार बन जाते हैं। एक समय आपने झूठ-मूठ गुस्सा करके दिखलाया-एक मेहतर था जो कि ठीक काम नहीं करता था। उस पर आपने इतनी जोर से डांट बतलाई कि वह भागते ही बना। आपने फ़रमाया कि मैं गुस्सा थोड़े ही हुआ था। जरा उसको डांट दिया था कि ठीक काम किया करे। फिर बड़ी प्रसन्नता से बातचीत करने लगे।

आप परमात्मा की याद में इतने भूले रहते थे कि एक समय आप सीतापुर गये और जिनके यहाँ जाना था उनका नाम भी भूल गये तो आपने फ़रमाया कि हमने बाजार में पूड़ियाँ खाई और फिर रेल में सवार हो गये। फिर तो जब वहाँ से चल दिये तब उनका नाम याद आ गया।

चच्चा जी ऐसे ही मस्त फकीर थे कि उनको अपनी सुध-बुध ही न थी और दूसरों को भी मस्त कर दिया करते थे। उनके पास जाने से किसी बात की चिन्ता ही नहीं रहती थी मालूम होता था सब चिन्तायें उन्होंने हर ली।

आप जब कोई पुस्तक देखा करते तो पढ़ते-पढ़ते आप रोने लगते और प्रेम में आकर आँसू बहाया करते। आपको कभी-कभी दर्द की शिकायत होती थी तो बहुत सहन करते थे। जब ठीक हो जाते तो कहा करते कि जब वह परमात्मा हँसाता है तब हंस देता हूँ और जब रुलाता है तब रो देता हूँ। हर हालत में परमात्मा को धन्यवाद देते।

एक समय आपके भ्राता महात्मा रामचन्द्र जी (लालाजी साहब) किसी सत्संगी के घर पधारे तो उस सत्संगी भाई की आदत थी कि बहुत खिलाया करते थे। जनाब

लाला जी बस बस करते तब भी वह एक आध पूरी और परस देते थे। आखिर तंग आकर लाला जी खाना छोड़ कर उठ आये और तीन दिन तक उनके मकान पर ठहरे मगर भोजन नहीं किया।

एक समय उन सत्संगी भाई के यहाँ कोई काम था। जनाब चच्चा जी वहाँ गये और इनके साथ भी वही हरकत की तो चच्चा जी ने खाना आरम्भ किया। यहाँ तक कि 60 आदमियों का भोजन तैयार हुआ था वह सब खा गये। इधर खाना परसा गया उधर गायब। फिर तो सत्संगी ने बाजार से मंगाना आरम्भ किया। जब पैसे भी समाप्त हो गए तो बहुत परेशान हुए। तब उन्होंने जनाब चच्चा जी से क्षमा माँगी। चच्चा जी महाराज ने कहा जाओ उस कोठरी में तुम्हारा खाना धरा है।

इसके बाद जब जैसे ही चच्चा जी लौट कर घर आये तो लाला जी महाराज को सब मालूम था ही। वे किसी से कह रहे थे कि ऐसा भी हो सकता है कि कितना ही खाना कोई खिलाये व खाना अदृश्य हो जाये। तब लाला जी बड़े अप्रसन्न हो गये और कहा कि कान पकड़ो और उठो बैठो, क्या किसी की इज्जत लेना है ? चच्चा जी ने तीन दफा कान पकड़े और उठे बैठे।

ख्वाजा साहब, अजमेर

एक समय ठाकुर शिव नायक सिंह जी को राजस्थान जाने का अवसर मिला। आप श्री चच्चा जी के पास होते हुये उधर पहुँचे। श्री चच्चा जी महाराज ने उनको चलते हुये कहा कि जब तुम अजमेर जाना तो ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती साहब की दरगाह पर हो आना। जब ठाकुर साहब को अजमेर पहुंचने का अवसर मिला तो स्टेशन पर ही जनाब ख्वाजा साहब मय अपने भानजे के उनको मिलने के लिए आये और बाद दुआ व सलाम जनाब ख्वाजा साहब ने फ़रमाया कि तुम को हमारे यहाँ मेहमान भेजा गया है इसलिए हम आये हैं। जब सदर दरवाजे पर पहुँचे तो कहने लगे कि यहाँ से हमारा इलाका शुरू होता है।

ठाकुर साहब ने उनसे कहा मैं कल हाजिर होऊंगा।

अगले दिन ठाकुर साहब दरगाह पहुँचे तो वहाँ पर कव्वालियाँ हो रही थीं। ठाकुर साहब कुछ देर तक वहाँ पर बैठे रहे और ख्वाजा साहब और उनके भानजे को भी वहीं

पर बैठे देखा।

इसके बाद दरगाह को देखा तो वहाँ पर एक छोटी सी कबर देखी तो लोगों से पूछा कि यह कबर किसकी है। लोगों ने बतलाया कि यह कबर उनके भानजे की है।

जब ठाकुर साहब अजमेर से वापिस आ रहे थे तो ख्वाजा साहब उनको छोड़ने के लिये स्टेशन पर आ गये और फ़रमाया कि अब तुम राजपूताने से वापस जा रहे हो। जब वापस आकर जनाब चच्चा जी से ठाकुर साहब की मुलाकात हुई तो सब हाल उनसे सुना तो चच्चा जी ने कहा कि ठीक है।

एक मरतबा फिर जब ठाकुर साहब को राजस्थान जाने का अवसर मिला। उस समय चच्चा जी अपने जाहिरी शरीर का त्याग कर चुके थे। दरगाह पर गये तो ख्वाजा साहब को नहीं पाया और कहने लगे कि अबकी ख्वाजा साहब से मुलाकात नहीं हुई। इतना ख्याल करते ही ख्वाजा साहब आ पहुँचे और फ़रमाने लगे कि कहीं पर उर्स हो रहा है वहाँ गया था।

समाधि

इस प्रकार जन साधारण के पथ-प्रदर्शन का कार्य करते हुए आप 7 जून 1947 को बैठे आसन लिए हुए निर्वाण प्राप्त हुए। आपकी समाधि कानपुर नगर के बाहर हमीरपुर रोड पर बनाई गई। बसन्त पंचमी पर आप अपने जीवन काल में श्रीमान लालाजी महाराज का उनकी जन्म तिथि पर भण्डारा किया करते थे। वही भण्डारा बसन्त पर प्रतिवर्ष अब भी होता है। इस अवसर पर हमारे सत्संगी भाई घर तथा समाधि पर एकत्रित होते हैं। सामूहिक पूजा ध्यानादि होता है और शांति तथा प्रेम की ऐसी वर्षा होती है कि आने वाले सभी आगन्तुक उसमें सराबोर हो जाते हैं।

आपका विस्तृत जीवन चरित्र कानपुर से श्री प्रकाशचन्द वर्मा (536, आनन्द बाग पार्क, कानपुर) द्वारा प्रकाशित कराया जा चुका है। आपके एक प्रमुख शिष्य श्रीमान महात्मा शिव नारायण दास गाँधी जी ने जो आपके नित्य प्रति के उपदेश डायरी में लिख लेते थे इन सब को पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक 'पीयूष वाणी' भी इन्हीं महानुभाव श्री प्रकाशचन्द जी ने प्रकाशित कराई है। पाठकों से हमारा अनुरोध है कि इन परम सन्त महात्मा के दिव्य जीवन को अपने दैनिक जीवन में उतारने का

प्रयत्न करें। इसी में कल्याण है। आपकी समाधि हम सभी का एक तीर्थ है जहाँ कृपा धार (फ़ैज़) की इतनी वर्षा होती है कि तन बदन का होश नहीं रहता। यहाँ सभी सत्संगियों को बराबर जाना चाहिए और फैज़याब होना चाहिए। इस स्थान से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटा।

❸❻②

36-3. हजरत जनाब महात्मा डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब (जयपुर)

आपकी समाधि फतेहगढ़ में है।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

36-3. हजरत जनाब महात्मा डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब (जयपुर)

(महात्मा हरनारायण जी सक्सेना की पुस्तक 'नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्गान व उनकी समाधियां' से साभार)

परम संत महात्मा डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब का जन्म भौगांव में 22 दिसम्बर 1879 को हुआ। आपके पिता श्रीमान उलफ़त राय साहब श्रीमान लालाजी महाराज के खास चाचा थे। कहा जाता है कि आप जन्म जात संत थे। अतएव गुरु कृपा तथा पूर्व जन्म के सुसंस्कारों के कारण आपको 23 वर्ष की आयु में ही गुरु पदवी प्राप्त हो गई। उसके पश्चात् आप निरंतर रूहानियत की बरकत अपने गुरुदेव के आदेशानुसार बाँटते रहे।

परम संत डॉ० कृष्ण स्वरूप जी अपने बड़े भाई परम संत महात्मा रामचन्द्रजी

साहब के पास फर्रुखाबाद में विद्याध्ययन के लिये आकर रहते थे। आप भी महात्मा जी के साथ उनके सद्गुरु परम संत मौलवी फज़ल अहमद खाँ साहब के पास मुफ्ती मदरसे में उर्दू-फारसी पढ़ा करते थे। आपको बचपन में पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। एक दिन कटी हुई पतंग को लूटने के लिये बालक कृष्ण स्वरूप जी मुफ्ती मदरसे के अहाते में अन्य बालकों के साथ पहुँच गये। उस कटी हुई पतंग का धागा परम संत सद्गुरु मौलाना फज़ल अहमद खाँ साहब के हाथ में आ गया। आपने उस पतंग को पकड़ कर बालक कृष्ण स्वरूप को कहा कि "आओ यह पतंग ले लो।" पतंग के लालच से जैसे वे मौलवी साहब के पास पहुँचे उन्होंने उन्हें पकड़ कर गोदी में बिठा लिया और बड़ी देर तक पतंग उड़ाते रहे। उसी वक्त महात्मा रामचन्द्र साहब भी उनके पास उर्दू फारसी पढ़ रहे थे। मौलवी साहब ने महात्मा जी से फ़रमाया कि "मुंशी जी, आज से ये आपके छोटे भाई हमारे हो गये।" उसी दिन से डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब का झुकाव रूहानियत की तरफ हो गया। आपके घर में आपकी माता जी परम भगवत् भक्त थीं। वे शिव जी की उपासना किया करती थीं। वे रामायण की भी बड़ी प्रेमी थीं। उन्होंने बाल्यकाल से ही बालक कृष्ण स्वरूप को कर्म-कांड व पूजा पाठ में लगा दिया था। ये भी रोज शंकर जी के मन्दिर में जाकर शंकर की मूर्ति को हज़ारों बिल्व पत्र चढ़ाया करते थे। एक दिन उन्होंने शंकर जी की मूर्ति पर कोई खराब चीज पड़ी हुई देख ली। इस पर आपके हृदय को बड़ी चोट लगी कि यह कैसा सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जिसमें अपने ऊपर से बुरी चीज हटाने की भी शक्ति नहीं है ? उस दिन से आपने शंकर जी पर बिल्व पत्र चढ़ाना बंद कर दिया। इस कारण आपकी माता जी ने आपकी एक बार बहुत पिटाई भी की। परन्तु आपका जी कर्मकाण्ड से ऊब गया। रामायण के सातों काण्ड आपको मुखाग्र याद थे। यही नहीं उन्हें सम्पूर्ण भगवद् गीता भी जबानी याद थी, इसीलिए वे जवानी में 'हाफिज जी' कहलाते थे। कुतुबबीनी यह आलम था कि नवल किशोर प्रेस लखनऊ में छपने वाली हर पुस्तक उनके पास नियमपूर्वक भेजी जाती थी। उनका पढ़ाई का यह शौक ही उन्हें आगरा मेडिकल स्कूल में ले गया।

परम संत महात्मा रामचन्द्र जी के यहाँ फरुखाबाद में ही आपकी शिक्षा दीक्षा हुई। जीवन के एक मुबारिक दिन परम संत मौलवी साहब ने डॉ० कृष्ण स्वरूप जी को

दीक्षा देकर महात्मा रामचन्द्र जी के सुपुर्द कर दिया यह कह कर कि वे इनकी रूहानी तालीम अपनी खास तवज्जोह से पूरी कर दें। महात्मा रामचन्द्र का भी आप पर अपार स्नेह था। डॉ० साहब भी महात्मा जी को अपना सर्वस्व मानते

एक बार महात्मा जी से किसी सत्संगी भाई ने फतेहगढ़ में पूछा कि आप मथन्नी चच्चा (डॉ० कृष्ण स्वरूप जी) पर इतनी कृपा क्यों रखते हैं तो आपने मुस्करा कर फ़रमाया "वह मेरे सीने से उसी तरह चिपट कर हमेशा रूहानियत खींचता रहता है जैसे माता के स्तनों से बच्चा चिपटा रहता है।" जब डाक्टर साहब लालाजी साहब के पास फर्रुखाबाद रहते थे तो अभ्यास की ज्यादती से जलाल इतना बढ़ गया कि चेहरा व आँखें सुर्ख रहती थीं। लालाजी साहब ने हिदायत कर रखी थी कि कोई भी विशेषकर बच्चों को, उनके बिस्तर पर न सुलाया जावे क्योंकि वैसा करने से संभवतः मौत हो सकती थी। इसकी खबर जब रायपुर वाले हुजूर पूज्य फज़्ल अहमद खां साहब तक पहुंची तो आप उनकी खिदमत में पैदल चलकर पहुँचे व कहते हैं 20 मील का रास्ता मात्र आधा घंटे में तय किया व सलाम अर्ज किया। वे बोले बरखुरदार यह क्या माजरा है ? हम ये क्या सुन रहे हैं ? उन्होंने अपने पास रखे अमरूद में से एक काश (टुकड़ा) काट कर डाक्टर साहब को खाने के लिए दी। वे कहते थे कि उसे खाते ही उन्हें यह अहसास हुआ कि किसी ने सैकड़ों घड़े ठंडा पानी उनके ऊपर डाल दिया हो और शीतलता छा गई व वह ज़लाली हालत भी शान्त हो गई।

परिणाम यह हुआ कि जब मैट्रिक पास करके आप आगरे के मेडिकल स्कूल में गये, उसके पूर्व ही आपको (रूहानी) इजाजत दे दी गई थी। जब आप मेडिकल स्कूल आगरे में पढ़ा करते थे तो सवेरे उठ कर नित्य नियम किया करते थे। आपका साथी (रूम मेट) आपकी खिल्ली उड़ाया करता था व परेशान किया करता था। एक दिन रात को, जब उसने बहुत शैतानी की तो आपने उसे तवज्जोह देनी शुरू की। वह अपनी चारपाई पर छटपटाने लगा। उसका दिल दब कर मरणासन्न हो गया। उसने आपसे अनुनय विनय की तो आपने उसकी हालत अच्छी कर दी। उस दिन से मेडिकल होस्टल में भी अन्य विद्यार्थी आप को मानने लगे।

आगरा में वे पहले गोकलपुरा मोहल्ले में रहते थे, उनके पास मौजी राम नामक एक सहायक रहता था। एक दिन वे आसन पर पूजा करने बैठ गए माला जो खूंटी पर

टंगी थी पास लेना भूल गए। उन्होंने मौजी राम से माला ला देने के लिए कहा। जब बहुत देर तक वह माला नहीं लाया तो आपने मौजी राम से पूछा कि माला क्यों नहीं दे रहा है। मौजी ने जवाब दिया कि खूंटी पर टंगी माला हाथ ही नहीं आ रही है। वह स्टूल पर चढ़ कर उसे उतारने की कोशिश भी कर चुका है। तब आपने उससे कहा कि तुमने अपने हाथ धो लिये थे या नहीं। उसने कहा कि वह लघुशंका करने के बाद हाथ धोना भूल गया था। उनके कहने से जब वह हाथ धो कर माला लेने पहुंचा तो माला सहज ही उसके हाथ आ गई जो उसने उन्हें दे दी। लालाजी महाराज भी उनके पास कई बार आगरा जाया करते थे।

इसी प्रकार एक बार रतलाम में भी यादव लाल बरौदिया के घर सत्संग हुआ करता था। उसमें कालेज के एक मुस्लिम अध्यापक भी आया करते थे। डाक्टर साहब की फ्रेम जड़ित तस्वीर दीवार पर टंगी थी, जैसे ही उन मुस्लिम सज्जन ने डाक्टर साहब की टंगी हुई फोटो पर फूलों की माला चढ़ाने का प्रयत्न किया, वह तस्वीर भयंकर धमाके के साथ जमीन पर गिर कर चूर हो गई। सब चौंक गए। पूछने पर उन्होंने बताया कि वे अपवित्र हालत में बिना स्नान किए आए थे और माला चढ़ा रहे थे।

सैलाना रावटी

मेडिकल स्कूल से अपनी शिक्षा समाप्त कर लेने के पश्चात् आपने होमियोपैथिक शिक्षा भी डिप्लोमा लेकर यथाविधि प्राप्त की। यह उपाधि लेने के बाद आप कुछ समय फुलेरा में अपने बड़े भाई श्रीहरप्रसाद जी साहब के साथ रहे। उसी समय रतलाम के पास मध्य भारत की एक छोटी-सी स्टेट सैलाने में मेडिकल ऑफिसर का पद रिक्त हुआ। समाचार पत्रों में उसका विज्ञापन छपा। उसे पढ़ कर आपने अर्जी भेजी और आपकी नियुक्ति मेडिकल ऑफिसर रावटी के पद पर हो गई। आप रावटी सर 1915 में पधारे। रावटी बम्बई दिल्ली लाइन पर एक छोटा सा स्टेशन है जो बम्बई की तरफ रतलाम जंक्शन से चौथा स्टेशन है। रावटी स्टेशन से रावटी गांव 5 मील दूर है वहाँ पैदल चल कर पहुँचना पड़ता था। रावटी के अस्पताल में आप डाक्टर थे। पं० रेवा शंकर जी (डॉ० शर्मा) आपके कम्पाउण्डर थे और पंडित हीरा

लाल आपके यहाँ ड्रेसर थे। उसी समय रावटी में सेठ जगन्नाथ जी नाम के एक महानुभाव ठेकेदार थे। वे ही आपके मालवे में सर्वप्रथम शिष्य बने। बाद में पं० हीरा लाल तथा डॉक्टर शर्मा एक साथ आपके शिष्य हुए।

पं० हीरा लाल जी आपके साथ ही रहते थे आपका भोजन बनाना आदि सब काम किया करते थे। एक दिन पं० हीरा लाल जी बावड़ी पर पानी भरने गये। उस बावड़ी में अन्दर नहाने की मनाही थी। हीरा लाल जी ने सोचा कि कोई देखता तो है नहीं, चलो बावड़ी के अन्दर ही नहा लिया जावे। उन्होंने बावड़ी में ही डुबकी लगा ली। नहा कर कंधे पर भरा हुआ पानी का बरतन रक्खे घर पहुँचे। श्रीमान डॉक्टर साहब ने आपको देखते ही पूछा, "क्यों भाई हीरा लाल बावड़ी के अन्दर नहाए या बाहर ?" पं० हीरा लाल जी ने सहज भाव से कह दिया कि - बाहर नहाया। इस पर डाक्टर साहब ने फ़रमाया कि - "भाई हम तो देख रहे थे कि तुम बावड़ी के अन्दर नहाये ?" इस घटना से पं० हीरा लाल की आन्तरिक आँखें खुल गई। आप उसी समय से श्रीमान् डॉ० साहब के शिष्य हो गये।

एक बार रात के समय श्रीमान डॉ० साहब कृष्ण स्वरूप जी पं० गोरी शंकर जी से मिलने आए। मौसम कड़ाके की ठंड का था। पंडित जी खूब कपड़े पहन कर लिहाफ़ ओढ़ कर बन्द कमरे में सिगड़ी ताप रहे थे। आप आकर बैठे और आपने उनको तवज्जोह देना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि 10 मिनट में सब कपड़े उतार कर वे कमरे के बाहर टहलने लगे। पूछने पर बताया कि बहुत गर्मी मालूम होती है। जब आपने तवज्जोह देना बन्द कर दिया तो फिर धीरे-धीरे सब कपड़े पहन कर सिगड़ी तापने लगे। डॉ० रेवा शंकर को भी आपने दीक्षा दी थी। वे भी समाधि में इस प्रकार डूब जाया करते थे कि अस्पताल का समय हो जाने पर भी उनकी समाधि नहीं टूटती थी।

रावटीवाले पं० हीरा लाल जी कहा करते थे कि "श्रीमान्" (मालवे वाले उन्हें इसी सम्बोधन से पुकारते थे) लगातार 12 वर्ष तक नहीं सोए। वे उनके पूजा के समय अजमेर से सशरीर रावटी उपस्थित होते थे व बाद में अन्तर्ध्यान हो जाते थे। पं० हीरा लाल जी स्वयं को चिकोटी काट कर देखा करते थे कि यह कहीं स्वप्न तो नहीं।

यही बात यादव लाल जी ने, जो उस समय कोटा बैराज पर ओवरसीयर का काम

करते थे, ने भी कही थी। वे कहते थे कि श्रीमान् कई बार पूजा के समय उनके पास सशरीर उपस्थित होकर, उन्हें हिदायत करके लुप्त हो जाते थे। तब श्रीमान् जयपुर में रहते थे।

रावटी में श्रीमान् की प्रसिद्धि वहाँ के महाराजा साहब तक पहुँची। वे उन्हें बड़े आदर से पेश आते थे और श्रीमान् की बात कभी नहीं टालते थे। यहाँ तक कि धीरे-धीरे महाराज साहब श्रीमान् से अपने प्राइवेट सेक्रेटरी का काम भी लेने लगे थे। वे कहा करते थे कि "डाक्टर जो काम (साधना) तुम करते हो, वही मैं भी करता हूँ मगर मैं जाहिर में करता हूँ और तुम पोशीदा।"

श्रीमान लालाजी महाराज रावटी में

परम संत महात्मा रामचन्द्र साहब भी, श्रीमान डॉ० साहब के आग्रह पर सन् 1930 में रावटी और सैलाना पधारे थे तो आपकी निगाह में वह आकर्षण था कि अनेकानेक सत्संगी दूर-दूर से आकर रावटी में एकत्रित होने लगे।

कई हिन्दू, मुसलमान, ईसाई व हरिजन आपके प्रभाव में आकर सत्संग में शामिल हो गये, और आपने सब को अपने आत्मिक प्रवाह (रूहानी फ़ैज़) से तृप्त किया। चलते समय वे वहाँ का सत्संग हीरा लाल जी को सौंप गये क्योंकि श्रीमान डॉ० साहब अजमेर पधार गये थे।

परम संत महात्मा रामचंद्र जी के पास रावटी में एक वृद्ध ब्राह्मण भगवान जी पटवारी आए जिनकी आयु 80 वर्ष की थी। उन्होंने विह्वल होकर नेत्रों में अश्रु भर कर महात्मा जी से निवेदन किया कि मुझे भी राम भजन सिखलाइये। महात्मा जी कुछ देर मौन रहे और फ़रमाया कि आपका शरीर तो बिलकुल काम नहीं देता है। आप क्या कर सकेंगे ? ये सुन कर वह वृद्ध फूट-फूट कर रोने लगे और महात्मा जी के चरण पकड़ लिये। महात्मा जी ने उनकी पीठ ठोक कर फ़रमाया कि "जाओ आप का सब काम बन गया।" उन वृद्ध के चले जाने के बाद आपने पं० हीरा लाल जी से फ़रमाया कि "भाई हमने इन वृद्ध का काम पूरा कर दिया क्योंकि इनसे अब कुछ हो नहीं सकता था।"

जब महात्मा रामचन्द्र जी सत्संग के सिलसिले में रावटी से सैलाना पधारे तो

श्रीमान् डाक्टर साहब के बड़े भाई होने के नाते आपसे मिलने राज्य के बड़े-बड़े अधिकारी आये। इस समय तक श्रीमान डॉ० साहब की रूहानी शोहरत भी खूब हो चुकी थी। सैलाना स्टेट के न्यायाधीश पं० गोवर्धन लाल जी भट्ट थे। वे भी महात्मा जी का नाम सुन कर उनके पास आए और राम नाम सिखाने के लिये अर्ज़ किया। जब महात्मा जी ने आपको तवज्जोह दी तो आपका दिल विशेष कठोर प्रतीत हुआ। आपने जज साहब को तत्काल डॉ० साहब के पास जाने का आदेश दिया क्योंकि डॉ० साहब की तवज्जोह बड़ी सख्त व तेज हुआ करती थी और वह पत्थर से हृदय को भी पिघला कर मोम कर देती थी। बुरे से बुरे संस्कारों को बात की बात में खाक कर देती थी। श्रीमान जज साहब को डॉक्टर साहब ने आँख बन्द करके बैठने का आदेश दिया और आपने जोर की तवज्जोह देना प्रारंभ किया। जज साहब के दिल में से संस्कारों के जलने का ऐसा काला धुआं निकला जैसा रेल के इंजन में से निकला करता है। उस दिन से जज सा भी सत्संग में शामिल हो गये।

रावटी में लालाजी महाराज ने दिगन्त को अपने नूर से आप्लावित कर दिया। वह असर आज तक अनुभव किया जा सकता है।

श्रीमान् डॉक्टर साहब जब रावटी में निवास करते थे उस समय पं० हीरा लाल जी तथा डॉ० शर्मा ने आपकी इतनी सेवा की, कि आप उन से अत्यधिक प्रसन्न थे। पं० हीरा लाल जी ने अपना सर्वस्व आपको अर्पण कर दिया था।

एक समय आपने फ़रमाया कि जब मैं महात्मा जी का ख्याल (ध्यान) करता हूँ तो उनकी जैसी शकल हो जाती है और जब मौलवी साहब मौलाना परम संत फज़्ल अहमद खाँ साहब का ख्याल करता हूँ तो उनकी जैसी शकल नजर आने लगती है। रावटी में आपने पाँच बरस निवास कर मालवे के सैकड़ों जीवों का उद्धार कर दिया। उसके बाद आप सैलाना राज्य से नौकरी छोड़ कर अजमेर पधार गये।

रावटी छोड़ कर डाक्टर साहब अजमेर चले आए। जिस मकान में वे रहे उनके मालिक का लड़का आवारा होकर घर से भाग गया। मकान मालिक ने किसी अवधूत के पास जाकर उसका हाल पूछने के लिए डाक्टर साहब को साथ ले जाना चाहा। डाक्टर साहब ने बहुत मना किया मगर वे नहीं माने। उन्होंने कहा भी कि मेरे जाने से आपका काम नहीं होगा। जब डाक्टर साहब गए तो अवधूत एक छोटे से मन्दिर में बैठे

थे। इन्होंने सलाम किया तो वे पीछे घूम कर बैठ गए। इन्होंने फिर सामने जाकर सलाम किया तो अवधूत वह स्थान छोड़ कर भाग गए। कारण यह था कि सालिक के सामने मज्जूब (अवधूत) नहीं टिक सकते।

अजमेर में ही एक जटा जटाधारी सन्यासी डाक्टर साहब के पास आए और उनका शिष्य बनने की इच्छा जाहिर की। डाक्टर साहब ने कहा कि वे तो एक गृहस्थ हैं और इस बारे में वे क्या जानें। सन्यासी जी ने कहा कि वे उनका पीछा छोड़ने वाले नहीं हैं क्योंकि उन्होंने डाक्टर साहब की प्रयाग के कुंभ के अवसर पर बहुत तारीफ सुनी है। डाक्टर साहब ने अन्ततः उनसे पूछा कि क्या उनके कोई गुरु हैं ? उनके हाँ कहने पर उन्होंने कहा कि जाओ पहले उनसे मेरा शिष्य बनने की अनुमति लेकर आओ। कई वर्ष बाद जब रमते राम उनके गुरु उन्हें मिले तो वो संन्यासी जी उनसे अनुमति प्राप्त कर डाक्टर साहब के शिष्य बने। ये ही स्वामी गंगा भारती जी के नाम से जाने जाते हैं। इनका राजगढ़ (अलवर) में अवधूत आश्रम नामक आश्रम है, वह आज भी मौजूद है। स्वामी जी भी देह त्याग चुके हैं। आश्रम में डाक्टर साहब की फोटो की सुबह-शाम घंटे-घड़ियाल के साथ आरती होती थी। डाक्टर साहब को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने भारती जी से अप्रसन्नता जाहिर की और पूजा में से अपनी फोटो हटवा दी।

भारती जी ने देखा कि यह विद्या वैरागियों की नहीं वरन् गृहस्थों की है तो उन्होंने श्रीमान से पूछा कि यदि आवश्यक हो तो मैं यह बाना बदल लूं और गृहस्थ बन जाऊं। श्रीमान ने आपको इसी भेष में रहकर संन्यासियों में भी इसका प्रचार करने की आज्ञा दी। भारती जी इस भेष में अपने शरीरान्त तक इस आज्ञा का पालन करते रहे। संन्यासी समाज में आपके इस नये प्रकार के अध्यात्म के प्रति बड़ा आदर है। सर 1977 में ही आप (बाबा जी) का 90 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ। सन् 1940 में एक बार श्रीमान के साथ मैं भी राजगढ़ गया। एक पंडित जी भी हमारे साथ गये। बाबा 'जी का व्यवसाय तो रहा मन्दिर की पूजा और हमारे इस अध्यात्म में मूर्ति-पूजा के लिए कोई स्थान ही नहीं, पर वे उसे छोड़ भी नहीं सकते थे क्योंकि उनके संन्यास देने वाले गुरु की उन्हें यह देन थी। श्रीमान की आज्ञा से वे मन्दिर की पूजा इस प्रकार करते थे जैसे हम सब गवर्नमेन्ट की नौकरी, दुकान, वकालत, डाक्टरी आदि करते हैं

तथा अध्यात्म का अभ्यास तथा प्रचार उनका निजी कार्य था। यह अद्भुत समन्वय हमने और कहीं नहीं देखा। श्रीमान के साथ गृहस्थ अनुरूप हमारा भी स्वागत तथा सेवा सुश्रूषा हुई। बाबा जी आयु में श्रीमान से बड़े थे परन्तु हर समय सेवा में ऐसे खड़े रहते थे कि हमें तो अपने सामने उनको संन्यासी भेष में इस प्रकार अपने आप को प्रस्तुत करते देख लज्जा अनुभव होती थी।

अजमेर में ही बस्वा (बांदीकुई) के एक पहुँचे हुए संत अर्जुनदासजी भी डाक्टर साहब के घर दर्शन के लिए आया करते थे। ये सब लोग कभी-कभी उनके आश्रम बस्वा जाते थे। वहाँ उन दिनों बहुत बाघ थे। वे सब अर्जुनदासजी की आज्ञा का पालन करते थे। बाबाजी जब हारमोनियम बजाते, तो टेकरी पर बने मन्दिर में चारों ओर बाघ उन्हें घेर कर बैठ जाते थे और अहिंसक हो जाते थे।

जब डाक्टर साहब अजमेर में थे तो जयपुर के स्टेशन मास्टर अपनी फरियाद लेकर उनके पास पहुँचे। यह 1930 के आसपास की बात है। डाक्टर साहब उस समय जयपुर स्टेशन मास्टर के यहाँ आकर ठहरे भी थे। उनकी लड़की का विवाह लखनऊ में हुआ। खानदानी कोठी थी, वहाँ एक ब्रह्म राक्षस उस लड़की को सताया करता था। कभी गिरगिट बन कर तवे पर बैठ जाता कभी खाने की थाली में विष्ठा डाल देता। कभी दीवार में से केवल एक हाथ निकाल कर कहता कि तेरा बच्चा मुझे दे दे। कभी त्रिपुंडधारी कोपीनधारी ब्राह्मण के रूप में नजर आता। मकान पुश्तैनी था, इसलिए उसे छोड़ा भी नहीं जा सकता था। सोच-विचार कर डाक्टर साहब ने स्टेशन मास्टर साहब को कहा कि अपनी लड़की को लिख भेजे कि जब कभी वह ब्रह्मराक्षस दिखाई दे तो लड़की उसे यह कह दिया करे "अजमेर के डाक्टर कृष्ण स्वरूप ने तुम्हें सलाम भेजा है।" उसने ऐसा कहा ही था कि ब्रह्मराक्षस वहाँ से गायब हो गया और उसे उससे मुक्ति मिली।

अजमेर में आप जनरल इन्श्योरेन्स सोसाइटी में रेकॉर्ड कीपर हो गये। आपने प्राइवेट दवाखाना भी खोला, जहाँ आप सबेरे शाम बैठा करते थे। इसके बाद प्रिय सत्संगी भाई ठा० मूल सिंह जी, जो श्रीमान् कानपुरवासी पूजनीय चच्चा जी महाराज के शिष्य थे आपको आग्रह पूर्वक अजमेर से जयपुर ले आए।

महात्मा आनंद भिक्षु जी

जब श्रीमान् डाक्टर साहब अजमेर में निवास करते थे तो एक बार श्री राम कृष्ण मिशन के उपदेशक महात्मा आनंद भिक्षु जी अजमेर में पधारे और उनके व्याख्यान होने लगे। उन्हें सुनने को आप भी जाया करते थे। महात्मा आनंद भिक्षु को यह पता लगा कि यहाँ भी एक बहुत बड़े संत निवास करते हैं तो आप श्रीमान् डॉ० साहब से मिलने गये। उसके पूर्व आपने कई प्रश्न वेदान्त और रूहानियत पर सोच लिये कि ये जाकर श्रीमान् डॉ० साहब से पूछेंगे। जैसे ही आनंद भिक्षु श्रीमान् के निवास स्थान पर पहुँचे तो कुशल प्रश्न के बाद इधर उधर की बातें करके एक-डेढ़ घंटे तक बैठ कर वापस चले गये और कोई प्रश्न आपसे नहीं पूछा। फिर जब वे अपने ठहरने के मुकाम पर गये तो ख्याल आया कि अरे ? मैंने तो उनसे कोई प्रश्न ही नहीं पूछा।

दूसरे दिन सब प्रश्न कागज पर नोट करके ले गये। फिर भी श्रीमान् डॉ० साहब से कोई प्रश्न नहीं पूछा। तीसरे दिन वे केवल डॉक्टर साहब से यह करिश्मा होने का कारण पूछने को आए और आते ही बड़े ही नम्र भाव से पूछने लगे कि मैं परीक्षा लेने के लिये यह प्रश्न नहीं पूछना चाहता था। आपके शिष्य के रूप में जिज्ञासु की तरह पूछना चाहता था अतएव मुझे भी उपदेश दीजिये। श्रीमान् ने उनका संतोष किया। उनके जाने के बाद किसी शिष्य ने पूछा कि महात्मा आनंद भिक्षु जी प्रश्न क्यों नहीं पूछ पाए तो श्रीमान् डॉ० साहब ने कहा "हम पूछने देते तब न !"

एक बार पूजनीय डॉ० साहब के साथ कुछ लोग देहली गये, वहाँ परम संत निजामुद्दीन औलिया साहब की समाधि पर गये। जैसे ही समाधि के अहाते में पहुँचे, जोर का सन्नाटा सारे शरीर में महसूस होने लगा। समाधि पर पहुँचते पहुँचते तो लोग गिरने से लगे। जब तक समाधि पर बैठे रहे, अजीब कैफियत गुज़रती रही। उसके बाद सात दिन तक सभी की यह हालत रही कि मानो बिजली के करंट पर हाथ रक्खा हो। ऐसा सारे शरीर में झन्नाटा होता रहा। इसी प्रकार श्रीमान् के साथ उजैन, में मछंन्दरनाथ जी की समाधि पर भी शिष्य गण गये थे तो वहाँ भी आपने सब सत्संगियों को रूहानियत से फैज़याब कर दिया था।

श्रीमान् डॉ० साहब का स्वभाव अत्यन्त सरल व विनोदी था। एक बार कुछ लोग

आपके साथ बैल गाड़ी में बैठ कर मंडावल एक सत्संगी बन्धु के सुपुत्र के यज्ञोपवीत में जा रहे थे। रास्ते में कुछ दूरी पर जोर की दावाग्नि लगी हुई थी। आपने फ़रमाया कि "कहो तो हम इसे बुझा दें। "एक सत्संगी ने कहा-"बुझा दीजिये। जाने कितने पशु-पक्षी जल रहे होंगे।" आपने उसी वक्त उंगली का इशारा किया और दावाग्नि बुझ गई। आप अत्यन्त परदुःख कातर थे। किसी दुखिया की आवाज आप फौरन सुनते थे। और जी जान से उसकी सहायता करने को जुट जाते थे। आपकी दुआ से और बुजुर्गान की मेहरबानी से श्री भूल सिंह जी पर डाला गया झूठा कत्ल का मुकदमा समाप्त हो गया।

सेवकों पर तो अनेक विपत्तियाँ आईं। वे सब आपकी दुआ से ही दूर हुई। श्रीमान डॉ० साहब इतने उच्च कोटि के सन्त थे तो भी अपने आपको इस खूबी से छिपा कर रखते थे कि कोई जान भी नहीं पाता था कि आप इतने बड़े हैं। आप गुदड़ी के लाल थे।

आपकी शिक्षा

आप में गुरुडम बिल्कुल नहीं था। न आप किसी से कुछ इच्छा रखते थे। जो खुशी से भेंट करता था उसे भी अनिच्छा पूर्वक ग्रहण करते थे। ग़रीबों की भेंट तो आप केवल हाथ से स्पर्श करके लौटा देते थे। अजमेर व जयपुर में जब आप दवाखाना चलाते थे तो आपने कभी किसी से फीस नहीं ली ओर न दवाइयों के पैसे माँगे। जो चाहे दे, न चाहे न दे। इस प्रकार जयपुर व अजमेर में आपके दवाइयों के हज़ारों रुपये डूब गये परन्तु आपने कोई शिकायत या पछतावा नहीं किया। आपका जीवन इतना सादा था कि उसमें दिखावा या बनावट का कोई स्थान ही न था। आपका उपदेश हमेशा यह रहता था कि जबानी जमा खर्च से काम नहीं चलेगा। मानव का जीवन अमली (Practical) होना चाहिये। आप समय के सदुपयोग पर बहुत जोर देते थे। बेकार कामों में समय बिताना आप अनुचित समझते थे। संयम पूर्ण जीवन व्यतीत करने पर भी आप अधिक बल देते थे। मन को वश में करने का आप यह सरल उपाय बताया करते थे कि मन जब कोई चीज माँगे उसे न दो। वह अपने आप ठीक राह पर आ जायेगा।

आपके उपदेश की यह विशेषता थी कि साधक की जिस प्रकार की दिली या रूहानी हालत होती थी उसको वैसा ही अभ्यास बताया करते थे। फिर धीरे-धीरे उसको ठीक राह पर लाते थे। जो सत्संगी कर्मकांड के प्रेमी होते थे उनको आप कर्मकांड में लगा देते थे। जिसे करते करते साधक की वृत्ति बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी वृत्ति हो जाती थी। वह कर्मकांड पर से उपासना पर आ जाता था। आपके कई पण्डित शिष्यों को आपने गायत्री मंत्र का जाप करने की आज्ञा दी परन्तु साधक जब संध्या वंदन करके गायत्री जाप करने बैठता था तो आधी माला भी पूरी नहीं कर पाता था कि समाधि लग जाती थी। इस प्रकार की आप रूहानी तालीम देते थे। आपके प्रभाव में आकर कई शराबियों ने शराब छोड़ दी। आपने कभी यह नहीं फ़रमाया कि तुम शराब पीना छोड़ दो। आपका तो यह विश्वास था कि तुम चाहो जितनी शराब पिओ हम में ताकत होगी तो हम छुड़ा देंगे। इस तरीके से आपने हज़ारों गिरे हुए जीवों का उद्धार किया।

जब आपका निवास जयपुर में था तो आपकी सेवा में कई राजा, जागीरदार वकील, प्रोफेसर, कलक्टर, डाक्टर व जज सत्संग के लिए हाजिर हुआ करते थे। एक बार जो आपके पास आकर बैठ गया वह आपकी बातों को सुन कर इस प्रकार आकर्षित हो जाता था कि उसकी आपके पास से उठ कर जाने की तबियत नहीं चाहती थी। एक बार आपके दर्शन कर लेने पर आपकी बातें सुन लेने पर बार बार आपके पास जाकर आपकी बातें सुनने को तबियत चाहती थी। एक स्थान पर जिक्र आया है कि हर कदम पर आप 60 मंत्रों का पाठ करते हुए चला करते थे।

एक बार जनाब किबला परम संत मौलवी अब्दुल ग़नी खाँ साहब (आपके चाचा गुरु) जयपुर में आपके निवास स्थान पर पधारे। उस समय एक अन्धे वैद्य जी आपके कमरे में साधना में लगे हुए थे। मौलवी साहब ने मकान की सीढ़ियाँ चढ़ते हुये फ़रमाया “जनाब डाक्टर साहब ये कौन बुजुर्ग आपके यहाँ तशरीफ फ़रमाते हैं जिनके सीने पर चार चिराग मुतवातिर रोशन हुए मालूम हो रहे हैं ?” श्रीमान डाक्टर साहब ने फ़रमाया कि इनको साधन करते केवल कुछ हफ़्ते हुये हैं कि इनके चारों लतीफ़े जागृत (ज़ाकिर) हो गये हैं। मौलवी साहब ने फ़रमाया “वल्लाह ! इस क़दर आपकी तालीम का जिन्दा जादू आनन फानन करिश्मा बतलाता है।” श्रीमान डाक्टर साहब ने

फ़रमाया यह सब आपके चरणों की कृपा है। हुजूर शाह अब्दुल ग़नी साहब ने फ़रमाया था "डाक्टर साहब आप राजपूताना (तब यही नाम था) व मालवा के 'क़ुतुब' हैं। " एक बार यही मौलवी साहब शाहपुरा के राजा साहब के यहाँ निमन्त्रण से पधारे। वहाँ पधारने पर आपने शाहपुरा के दरबार (जागीरदार साहब) को तवज्जोह दी। कोई असर नहीं हुआ। आपने झट फ़रमाया "भाई दरबार साहब, यह इलाका डाक्टर साहब का है, मैं उनकी इजाजत

के बिना कोई रूहानी काम नहीं कर सकता। आप मोटर भेज कर फौरन उन्हें बुलवाइये।" श्रीमान डाक्टर साहब जयपुर से शाहपुरा उसी वक्त लाये गए और मौलवी साहब की आज्ञा से शाहपुरा दरबार को आपने तवज्जोह दी। यह अनुशासन है इस तरीके का। एक बार परम संत महात्मा जी (पू लालाजी) के शिष्य 'न चतुर्भुज सहाय साहब, श्री जगन्नाथ प्रसाद माथुर, सेशन जज के साथ जयपुर में श्रीमान् डाक्टर कृष्ण स्वरूप साहब के निवास स्थान पर पधारे। आपसे अर्ज किया कि मैं आपकी इजाजत से जयपुर में भंडारा करना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया "खुशी से कीजिए।" और आशीर्वाद भी दिया।

आप का यह अटल सिद्धान्त था कि इंसान सब कुछ कर सकता हैं। वह नर से नारायण हो सकता है। जिस तरह बुनियादी बातों में मन लगाया जाता है उसी तत्परता व एकाग्रता के साथ रूहानियत का साधन किया जावे तो कोई कारण नहीं कि इन्सान को सफलता न मिले। दत्तचित्त होकर साधन नियमित रूप से करना चाहिये। संशय से काम नहीं चलेगा। जहाँ तक मन के रोक थाम का सवाल है आपका यह उपदेश था कि मन का स्वभाव चंचल है वह एक जगह ठहर नहीं सकता और न ही विकल्प से खाली रह सकता है। इसलिए सबसे पहले उसकी एक जगह बैठने की आदत डालो अर्थात् अपने इष्टदेव गुरुदेव की शकल पर उसे पहले जमाओ। जैसे ही आपने श्रद्धा, विश्वास तथा प्रेम के साथ अपने गुरुदेव पर मन को जमाया कि उसकी एक जगह बैठने की आदत पड़ जाएगी। तुम्हारे पूज्य गुरुदेव उसकी कुछ खास सम्हाल करेंगे। कुछ तुम प्रयत्न करो। इस प्रकार दोतरफा कार्यवाही से मन ठहरने लगेगा। उसमें आत्मानंद की लहरें उठने लगेंगी। वह बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी हो जायेगा। एक बार आत्मानंद का अलौकिक स्वाद चखा देने पर वह बार बार उसी स्थिति को

प्राप्त करने का प्रयत्न अपने आप करने लगेगा। कुछ समय में ऐसा अभ्यास हो जायेगा कि वह दुनियावी काम करते हुए हमेशा आत्मानंद की स्थिति में रहने लग जायेगा। इस प्रकार तुम्हारा काम धीरे धीरे बन जायेगा। यदि तुम मन को किसी एक स्थान (अपने इष्टदेव गुरुदेव से उत्तम स्थान कोई नहीं है) पर टिकाने का अभ्यास नहीं करोगे तो वह इधर उधर भागता रहेगा। उसकी संकल्प शक्ति निर्बल हो जायेगी। तुम में अभ्यास और साहस की कमी हो जायेगी। तुम को दीन दुनियाँ के हर काम में असफलता मिलेगी और तुम कहीं के नहीं रहोगे। आप मन के साथ जबरदस्ती करने का उपदेश नहीं देते थे। उसको फुसला कर या पलट कर ठीक राह पर लाने का आदेश देते थे।

गुरु में लय

आप स्वयं अपने पूज्य गुरु महाराज में तथा महात्मा जी में इतने लय हो जाते थे कि उन्हीं की शकल बन जाती थी। एक बार एक सेवक ने ध्यान में आपके चेहरे पर दाढ़ी लगी हुई देखी। जब ध्यान समाप्त हुआ और उस सेवक ने पूछा आज मुझे आपके चेहरे पर दाढ़ी कैसे नजर आई तो फ़रमाया “मैं उस वक्त गुरु महाराज के ख्याल में था। उनके चेहरे पर दाढ़ी थी इसलिए आपको भी मेरे चेहरे पर दाढ़ी दिखाई दी।” गुरु भक्ति व आज्ञाकारिता आप में कूट कूट कर भरी थी। आपका फरमाना था कि इसके बिना कोई साधक अपने गुरु से यथोचित लाभ नहीं उठा सकता। यदि उसमें यह दोनों बातें नहीं होंगी तो वह मनमुखी होकर एक न एक दिन मारा जायेगा। अतएव साधक को हमेशा गुरुमुख रहना चाहिये। अटल श्रद्धा विश्वास व भक्ति के साथ उनकी आज्ञा का पालन दीन व दुनियाँ के कामों में करना चाहिये। फिर देखिये आपकी दुनियावी व रूहानी आपत्तियाँ हट कर कैसी तरक्की होती है। आप अत्यन्त दयालु व कृपालु थे। ग़रीबों का दुःख देख कर आप रो पड़ते थे और उनके दुःखों को दूर करने के लिए अपनी जिस्मानी कमजोरी व बीमारियों की तकलीफों की परवाह न करके दिन रात दुआ किया करते थे। आपकी दुआ के जिन्दा जादू का एक बार नहीं अनेक बार अनुभव किया गया। आप कभी भी किसी से नकद या भेंट पूजा-सम्मान आदि नहीं लेते थे। दवाई आदि की सेवा की कीमत भी नहीं।

आपके कश्फ का यह हाल था कि सत्संग में बैठने वाले प्रत्येक व्यक्ति के दिल व ख्यालात का उन्हें पूरा पता रहता था। कभी किसी के ख्याल में पूजा करते समय पतंग उड़ाने का अथवा मसाला पीसने का ख्याल आदि आ जाता तो बिना नाम बताए वह कह दिया करते कि कम से कम पूजा के समय तो मसाला न पीसा करें। एक समय कहा पूजा के समय पतंग तो न उड़ाया करो, सुनने वाले शर्मिंदा हुए। जिसकी जैसी रुचि अथवा शक्ति होती उसी के अनुरूप पूजा का साधन बता देते थे। एक अत्यन्त वृद्धा स्त्री को उन्होंने मछलियों को खिलाने के लिए राम नाम लिखित परचे की आटे की गोलियाँ बता दी, किसी को केवल माला फेरना, किसी को ध्यान।

एक बार साँभर में पोस्ट मास्टर राम लाल जी, जो कई घाटों का पानी पिए हुए थे- जैसे नानकपंथ कबीर पंथ आदि-आदि, ने उनसे कहा कि मुझे तो एक चीज की बड़ी तमन्ना है जो आज तक पूरी नहीं हुई। वह थी 'अनहद शब्द' को सुनना। डाक्टर साहब ने उसी समय उन्हें यह कह कर ध्यान में बैठाया कि यह तो बड़ी छोटी चीज है। ध्यान में उन्हें अनहद शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ा और उन्होंने डाक्टर साहब के चरण पकड़ लिए।

जयपुर में ठाकुर कुशल सिंह जी थाना सदर के इंचार्ज थे। उन्होंने बड़े इसरार से उनसे कहा कि एक शाह साहब चान्दपोल दरवाजे बाहर आकर ठहरे हैं। उनकी बड़ी शोहरत है। वे हर किसी से हाथ मिलाते ही, आगे-पीछे का उस व्यक्ति का हाल बता देते हैं। उनके अधिक इसरार पर डाक्टर साहब भी शाह साहब से मिलने गए। उनसे हाथ मिलाते ही उनकी वह सारी शक्ति गायब हो गई। शाह साहब उसी रात शहर छोड़कर गायब हो गए।

उनके कुछ लेखों का संग्रह 'संत वाणी संग्रह' प्रथम भाग के रूप में, व एक पुस्तक 'फकीरों की सात मंज़िलें' प्रकाशित हो चुकी है।

सल्ब करना

सन् 1956 के आरम्भ में एक दिन मैं श्रीमान् के पास में बैठा था कि अचानक आपने मुझसे प्रश्न कर दिया, “बाबू हरनारायण ! तुम्हें सल्ब करना आता है ?” मैंने उत्तर में केवल सिर झुका लिया। मुझे इसकी विधि पूर्णतया मालूम थी, परन्तु किसी

गुरु पदवी के महात्मा ने मुझे इसका अधिकार नहीं दिया था। मैंने कई वरिष्ठ अभ्यासियों को तथा अध्यात्म के शिक्षकों को सल्ब करते देखा भी था। अतः मैं यह तो कह नहीं सकता था कि मुझे नहीं मालूम। श्रीमान ने मेरा भाव तुरन्त पहिचान लिया और कहा "इसमें क्या है, ऐसे होता है (गर्दन घुमाकर) जब आवश्यक समझो, कर लिया करो।"

सल्ब करने का मतलब है किसी के शरीर से रोग अथवा कष्ट को निकाल देना। हमारे अध्यात्म में यह साधारण सी क्रिया है। परन्तु इस का खेल करना और दुनियाँ में यह दिखलाना कि देखो हम यह भी कर सकते है इसकी कड़ी मनायी है। इस प्रयोग को अनुचित रूप से करने पर यह शक्ति जैसे दी जाती है वैसे ही वापिस भी ले ली जाती है।

सर 1958 में श्रीमान कुछ अस्वस्थ रहने लगे। उस समय आपके दोनों सुपुत्र जयपुर से बाहर ट्रांसफर ड्यूटी पर थे। अतः आपके इलाज आदि का भार मुझ पर आया। आफिस जाते समय आपका सारा विवरण लेता। फिर डाक्टर से कह कर दवा लेता। आफिस पहुंच कर दवा श्रीमान के पास भेज देता। लौटते समय सीधा आपकी सेवा में उपस्थित होता। आप संध्या की चाय अधिकतर मेरे ही साथ पीते और प्रतीक्षा करते रहते।

एक बार जब आफिस से आपकी सेवा में पहुँचा तो आप कुछ अधिक अस्वस्थ होने के कारण अचेत से पड़े थे। मुझे तुरन्त याद आया कि मैं सल्ब करने का अधिकार पा चुका हूँ। तीन चार साँसे खेंचने पर ही आप में चेतना आ गई। पूछा, तुम कब से खड़े हो ? निवेदन किया, अभी आया हूँ। इस प्रकार मुझे कई बार श्रीमान के कष्ट को सल्ब करना पड़ा। अब भी जब आवश्यकता होती है इस कार्य को कर लेता हूँ तथा श्रीमान की याद उस समय ऐसी आती है कि जैसे वे मेरे पास खड़े ही नहीं वरन् मुझ में समाये हुए हों और सल्ब करा रहे हों।

भक्त श्री किशन-पुलिस कान्सटेबिल

बहुत से पुलिस कर्मचारी आपकी सेवा में सत्संग के लिए आते थे। ये सब इस विभाग के कर्मचारियों पर भाई साहब परम सन्त श्रीमान ठा० रामसिंह जी और बाद में

उनके साथ-साथ सुपरिन्टेण्डेंट साहब ठाकुर मूलसिंह जी के शुभ प्रभाव के कारण ही था। अन्यथा इस विभाग के कर्मचारियों का मार्ग (आचरण) थोड़ा अन्य प्रकार का ही देखा गया है। इन्हीं लोगों में एक कान्सटेबिल श्री किशन नाम का भी आपके पास आया करता था। वह सुपरिन्टेण्डेंट साहब की सेवा में था व हिम्मत करके श्रीमान से निवेदन कर बैठा कि मुझे भी कुछ बताइए। आपने उसे भी ध्यान करा दिया और नित्य करते रहने का आदेश दे दिया। श्री किशन के संस्कार कुछ अच्छे थे। अतः थोड़े दिनों में ही इसका अभ्यास परिपक्व हो गया तथा समाधि की अवस्था सहज में ही आने लगी। ड्यूटी पर खड़े-खड़े समाधि लग जाती थी।

सन् 1940 के पहले की बात है। उन दिनों श्री किशन की ड्यूटी पुलिस लाइन में थी। प्रातः काल ही परेड होती, उसमें लाइन वालों की उपस्थिति अनिवार्य होती। यह श्री किशन भी नित्य प्रति समय पर जाता। एक दिन प्रातः जो पूजा ध्यान में बैठा तो ऐसी समाधि लगी कि धूप निकल आई और परेड आदि समाप्त होने के बाद ही आँख खुली। श्री किशन मन में घबराया कि आज की अनुपस्थिति का दण्ड भोगना पड़ेगा-क्या हो कितना हो ? पर चूक तो हो गई, उसके लिए अब कुछ नहीं हो सकता था। वह डरते-डरते अपने साथियों से कह रहा था कि “आज परेड चूक गया जाने क्या और कितना दण्ड मिलेगा।” साथियों ने व्यंग किया आज तूनें कितनी भांग पी, जो बहकी-बहकी बातें कर रहा है ? हमारे साथ परेड की, और कहता है मुझसे चूक हो गई। श्री किशन को कैसे विश्वास होता ? उसने अपने हवलदार के पास जाकर रजिस्टर में अपनी उपस्थिति भी देखी और उपस्थिति नियमित देखकर अचम्भे में पड़ गया। अपनी बैरक में आकर बड़ी देर तक इसी विषय पर सोचता और रोता रहा। अन्त में निर्णय लिया कि मुझे ऐसी नौकरी ही नहीं करनी जिसमें मेरे गुरु भगवान को नौकरी देनी पड़े। नौकरी से त्यागपत्र लिखा, कार्यालय में दिया और वहाँ से चल दिया। साथियों ने तथा अन्य वरिष्ठ कर्मचारियों ने समझाने की चेष्टा की परन्तु श्री किशन का निर्णय नहीं बदला। वह तो अपने गुरुदेव को अपने स्थान पर नौकरी करना, किसी भाँति भी सहन (बरदाश्त) नहीं कर सकते थे।

जब किसी प्रकार भी श्री किशन को नौकरी करते रहने को नहीं मनाया जा सका तो पुलिस अधिकारियों, जिनमें सुपरिन्टेण्डेंट ठाकुर मूलसिंह जी प्रमुख थे, ने प्रयत्न

करके श्री किशन की पेन्शन करा दी जो उस समय केवल चार रुपये मासिक थी, और बाद में 300 रुपये मासिक हो गई। श्री किशन ने उसके बाद कोई नौकरी नहीं की। आपने गाँव 'सेंतीवास' चले गये जो अब तहसील टोडाराय सिंह जिला टौंक में है। वह हमारे पास और गुरु महाराज के परिवार के सदस्यों के पास आते रहते थे। ऐसे प्रेमी भक्त कम ही देखने में आते हैं। गुरु कृपा का महत्व भी ऐसे ही लोगों में देखने को मिलता है। सन् 1968 के बाद वह नहीं आये सम्भवतः अब वह नहीं है।

ठाकुर साहब मूलसिंह जी

हमारे यहाँ, जयपुर में एक ठाकुर साहब मूलसिंह जी कई वर्षों से जयपुर में स्टेट के समय में पुलिस विभाग में सुपरिन्टेण्डेंट रहे थे। वे अपने आरंभिक जीवन में ये बड़े कठोर (सख्त) प्रकार के पुलिस ऑफिसर कहे जाते थे। उन्होंने स्वयं ही हमें बतलाया था कि सन् 1929 में जब श्रीमान लाला जी महाराज का इधर पधारना हुआ उस समय पूज्य भाई साहब ठाकुर रामसिंह जी ने इनसे निवेदन किया कि गुरु महाराज पधारे हैं आप भी दर्शन कर लीजिए। उत्तर मिला कि उन्हें मेरे दर्शन के लिये जब आपको सुविधा हो ले आना। भाई साहब ठा० रामसिंह जी उनके इस कटु उत्तर को सुन कुछ न कह कर चुप हो गये। गुरुदेव (श्रीमान लाला जी महाराज) के निर्वाण के भी कुछ वर्षों पीछे इन्हीं ठाकुर साहब मूलसिंह जी को इस अध्यात्म की ऐसी लगन तड़प लगी कि भाई साहब ठाकुर रामसिंह जी के पास आकर बड़ा पश्चाताप किया और बोले, "मुझे तो आप ही अभ्यास बतलाइये। वह अनमोल अवसर तो मैंने दुर्भाग्यवश खो दिया अब मुझे आप सही रास्ते पर लगाइये।"

सुपरिन्टेण्डेंट साहब, ठाकुर मूलसिंह जी ने स्वयं मुझे यह सारी बातें बतलाई और वे सदा ही हमारे गुरुदेव के प्रति अपने इस व्यवहार के लिये लज्जित होते रहे। आपका एक और कथन हम सब को नोट कर लेने योग्य है कि "हम खूब गोश्त खाते, शराब पीते थे और यह समझते थे कि ऊपर की आमदनी न हो तो कैसे परिवार का निर्वाह होगा ? परन्तु इस सत्संग में आ जाने के पश्चात् यह सारी बातें छोड़ देने पर भी हम देखते हैं कि हम पहले से कहीं अधिक प्रसन्न तथा सुखी हैं। आराम से हमारा निर्वाह उसी वेतन में हो जाता है।"

इन ठाकुर साहब मूलसिंह जी (जिनकी हमारे पूज्य डाक्टर साहब को अजमेर से लाने और जयपुर में बसाने में प्रमुख भूमिका थी) ने पूज्य डाक्टर साहब की बड़ी सेवा की। अध्यात्म मार्ग में श्रीमान ने भी उन की पर्याप्त सहायता की, यहाँ तक कि इन्हें अभ्यास आदि बतलाने की भी आज्ञा दे दी। हमने ठाकुर साहब को उनके अन्तिम दिनों में भी उनके ग्राम मेहरीली जाकर देखा। वे अपने ध्यान में ऐसे मस्त रहते थे कि उन्हें महात्मा कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। अवश्य ही इन्हें हमारे श्रीमान पूज्य डाक्टर साहब ने पूर्ण कर दिया था।

फकीरों की सात मंज़िलें

श्रीमान ने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम 'फकीरों की सात मंज़िलें' है। यह पुस्तक आपने उन दिनों में लिखी जब आपकी दृष्टि मन्द हो रही थी। मोतिया-बिन्दु बढ़ गया था। इन्हीं दिनों हमारे पूज्य भाई साहब परम सन्त डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी भी जयपुर दो बार पधारे तो श्रीमान ने यह पुस्तक उन्हें दिखलाई और अपनी विवशता भी बतलाई कि इसे दुबारा पढ़ कर छूटी हुई किसी बात को पूरा करने में दृष्टि के कारण कुछ असमर्थता आ गई है। श्रीमान भाई साहब आपसे इस पुस्तक को ले गये और फिर इसको प्रकाशित किया। इस पुस्तिका में भी हमारे इस अध्यात्म के लिए सरल शब्दों में मार्गदर्शन किया गया है। रामाश्रम सत्संग सिकन्दराबाद-गाजियाबाद से प्रकाशित यह पुस्तक अभ्यासियों के बहुत काम की है।

मेरी समझ में जो गूढ़ तत्व इसमें तथा अन्य सन्तों की पुस्तकों, कविताओं, साखियों आदि में लिखे गये हैं उनका बहुतेरा अंश सर्व साधारण की समझ में पूरी तरह नहीं आता। कारण यह है कि अध्यात्म की उस स्थिति तक की बात तो जहाँ हम अपने अभ्यास तथा गुरु कृपा द्वारा पहुँचे हैं समझ में आती है आगे की बात नहीं समझ पाते।

श्री मुकुंद भारती जी

जैसा बताया जा चुका है श्रीमान के एक सत्संगी गंगा भारती जी महाराज थे। उन्होंने राजगढ़ में आश्रम बनाया। वे पहले एक बावड़ी पर राजगढ़ में एक कोठरी में

रहते थे। उनके साथ उनके एक शिष्य मुकुंद भारती रहते थे। डॉ० कृष्ण स्वरूप साहब वहाँ पधारे। छंद भारती ने श्रीमान् को सिगरेट पीते देखकर कहा कि "आप इतने बड़े महात्मा होकर सिगरेट पीते हैं।" श्रीमान हुक्के के लिए कहा करते थे-

"हुक्के को पीना खलल आबरू है
सुबह होते ही आग की जुस्तजू है
मगर इसमें बड़ी नेक खू (खासियत) है
कि खीचों तो अल्लाह फूंको तो हू है।"

भारती जी की सिगरेट पीने की बात को सुन कर श्रीमान ने सिगरेट का कश खींचा और कहा "अल्लाहू"। यह कहना था मुकुंद भारती "अल्लाहू-अल्लाहू" चिल्लाने लगे। बड़ी देर श्रीमान वहाँ ठहरे। उनका 'अल्लाहू' कहना बंद न हुआ। जब श्रीमान वापस लौटने लगे तो गंगा भारती जी ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि मुकुंद भारती की यही हालत रही तो वह मर जाएगा। श्रीमान् ने अपने बटुए से दो इलायची दाने दिए कि यह खिला दो। दाने खाते ही मुकुंद भारती जी सामान्य हो गए।

अन्य

श्रीमान फेल्ट केप (टोपी) पहना करते थे। एक सज्जन मिश्री लाल ने गलती से उनका केप पहन लिया क्योंकि उसका केप भी वैसा ही था। जैसे ही वह केप पहन कर बाहर आया उसे पूरा जयपुर जलता हुआ नजर आया। उसकी हालत बदहवास हो गई। घबरा कर पुनः श्रीमान की सेवा में आया तो श्रीमान ने कहा भाई तुम गलती से मेरा केप पहन गए अब कभी ऐसी गलती नहीं करना। एक बार उनके पलंग पर एक बच्चे को गल्ती से सुला दिया गया तो वह बेहोश हो गया।

आपकी तवज्जह पत्थर तोड़ तवज्जह हुआ करती थी जो दिलों को रेज़ा-रेज़ा कर देती थी। आप एक नजर में अभ्यासी को पूर्ण करने की क्षमता-सामर्थ्य रखते थे।

आप दूसरों के कष्ट देख कर शीघ्र ही द्रवित होकर रोग खींच लिया करते थे। कभी-कभी स्वयं भी ले लेते थे।

अन्तिम समय के पूर्व 3-4 माह तक आपने जयपुर में रह कर होमियोपैथिक चिकित्सा करवाई। अन्तिम समय के 20 दिन पूर्व आपको आपके जेष्ठ पुत्र श्री

नरेन्द्रमोहन सक्सेना, जो उस समय S.D.M. टोंक थे, टोंक इलाज के लिए ले गए। वहाँ आपकी सेवा, सुश्रूषा व चिकित्सा की अत्यंत सुन्दर व्यवस्था की गई। वहाँ जब आपकी हालत गिरने लगी तो आपने फ़रमाया छगन लाल (आचार्य-जज) व हीरा लाल (वैद्य जी) को बुला लें। इन लोगों को तार दिये गये। ये सब लोग चार दिन पूर्व आपकी सेवा में पहुंच गए। अन्तिम दिनों में आपके अन्दर से गुलाल निरन्तर बरसता था। आपने तवज्जोह देना एक अर्से से बन्द कर दिया था क्योंकि आपकी तवज्जोह कोई बरदाश्त नहीं कर सकता था। जिस कमरे में आपका पलंग बिछा था उसमें अधिक समय तक बैठना संभव न था। आप सदा ब्रह्मलीन रहते थे। आपका शरीर आँख बंद करके देखने पर सारा चमकता दमकता प्रकाशमय नजर आता था। उसमें से प्रकाश पुंज बिखर रहे हैं ऐसा अनुभव होता था।

अंत समय में कोई 3-4 माह पूर्व आपने खाना-पीना सब त्याग दिया था न खाना खाते थे न पानी या दूध पीते थे। सुबह-शाम चाय की केवल एकएक घूंट मात्र लेते थे। ऐसी हालत में नित्य प्रति सुबह घूमने जाते रहे। चाल इतनी तेज कि कोई साथ न चल सकता था। आखिरी 3 दिन आँखें बन्द करके पलंग पर लेट गए। मगर हर बात का, खासतौर पर पवित्रता का बराबर ख्याल बना रहा। चौबीस घण्टे आँखें बन्द किए प्रार्थना में हाथ चलते रहते, रोम-रोम से अजपा जाप हाथ लगाते ही स्पष्ट सुनाई पड़ता था। इंजेक्शन व दूध को भी बाह्य वस्तु कह कर त्याग दिया। यह सब शरीर शोधन के लिए किया और इच्छा मृत्यु का वरण किया जैसे जैनी लोग संथारा करते हैं। जलाल का यह आलम था कि जिस कमरे में वे लेटे व शरीर त्यागा वहाँ इस क़दर गर्मी थी कि कोई भी 5 मिनट के लिए वहाँ खड़ा नहीं रह सकता था।

अन्त समय प्रायः सभी सत्संगी बंधु मौजूद ये। उन्होंने इस जलाल को स्वयं अनुभव किया। 19 सितम्बर 58 को एक ज्योति अनन्त ज्योति में विलीन हो गई। ठाकुर मूलसिंह ने उनके शरीर से एक प्रकाशपुंज को ऊपर की ओर धीरे-धीरे जाते स्पष्ट अनुभव किया व उपस्थित लोगों को उस समय दिखाया भी था।

समाधि

आपकी समाधि फतेहगढ़ में श्रीमान लालाजी महाराज की समाधि के परिसर में है

व अत्यन्त पवित्र स्थान है। यहाँ पर बैठ कर श्रीमान की पत्थर तोड़ तवज्जह का बखूबी अनुभव किया जा सकता है। श्रीमान धुर के भेदी थे। आपकी समाधि पर अत्यन्त विनीत भाव से प्रणाम अर्पित कर कृपा की भीख माँगनी चाहिए।

गुरु भगवान सब का कल्याण करें।

❸❻③

37. परमसंत महात्मा श्री हरनारायण जी सक्सेना

आपने अपनी कोई समाधि की कामना नहीं की । आपके कुछ अस्थि अवशेष आपके गुरु की समाधि, जो फतेहगढ़ में है, वहां एक स्थान पर गड़े हुए हैं ।

(नक्शे के लिए यहाँ क्लिक करें)

37. परमसंत महात्मा श्री हरनारायण जी सक्सेना

परमसंत महात्मा श्री हरनारायण जी सक्सेना का जन्म 20 मार्च 1908 मैं पिड़ावा राजस्थान में हुआ। तब यह प्रदेश राजपूताना कहलाता था। आपका बचपन टोंक राजस्थान में बीता। आप के पिता टोंक प्रदेश में काम करते थे। आपको एक कायस्थ परिवार का शालीनता पूर्ण धार्मिक वातावरण मिला।

आप लिखते हैं - टोंक (राजस्थान) से सन् 1925 में हाई स्कूल पास करके मैं कानपुर सनातन धर्म कॉलेज में पढ़ने गया। मेरे भाई साहब बाबू आनन्द स्वरूप जी वहां रहते थे श्रीमान चच्चा जी महाराज की सेवा में जाने वालों में एक पुराने अभ्यासी थे। अक्टूबर 1925 में एक संध्या को वे मुझे भी अपने साथ ले गए और श्रीमान चच्चा जी महाराज के सामने बैठा दिया। थोड़ा सा परिचय दे दिया। श्रीमान जी मुझ से थोड़ी बात करके अपने परिवार के सदस्यों, भाई साहब आदि से बातें करते रहे। लौटते समय मुझसे कहा जब फुरसत हो कभी-कभी हमारे पास आ जाया करो। मेरी आयु उस समय केवल 17 वर्ष की थी। श्रीमान के विषय में मैं क्या समझ सकता था। परन्तु कुछ आकर्षण (खिंचाव) के कारण उनके पास जाने लगा। कुछ दिनों बाद आपने मुझे अभ्यास बतलाया और कराया। आज्ञा दी कि इसे रोज प्रातः कर लिया करो। उनकी दया कृपा से ये अभ्यास तभी से चल रहा है और जीवन पर्यन्त चलता

रहेगा। श्रीमान लालाजी महाराज के परिवार से मेरा कोई सीधा पारिवारिक संबंध नहीं था, परन्तु मेरे पूज्य भाईसाहब कानपुर निवासी, बाबू आनन्दस्वरूप जी जिनके द्वारा मैं श्रीमान् चच्चाजी महाराज और फिर श्रीमान् लालाजी महाराज की शरण में पहुंचा, उनका पारिवारिक संबंध था। श्रीमान् लालाजी महाराज के साथ-साथ श्रीमान् मुंशी चिम्मनलालजी मुख्तार भी हुजूर महाराज के दरबार में पहुंचे थे। इन मुंशी चिम्मनलाल साहब की बहिन का विवाह तो महात्मा डॉ० कृष्णस्वरूप जी से हुआ था और बड़ी पुत्री का विवाह मेरे भाईसाहब श्री आनन्द स्वरूप से हुआ था। दूर का संबंध होते हुए भी मेरा अध्यात्म का संबंध इन श्रीमान् डॉक्टर साहब के परिवार से घनिष्ठता का हो ही गया। हमारी पूज्य गुरु माताजी (धर्म पत्नि महात्मा श्रीमान् लालाजी महाराज) के भ्राता उ.प्र. के आबकारी विभाग के निरीक्षक थे। इन्होंने अपनी पुत्री के लिये श्रीमान् लालाजी महाराज से परामर्श मांगा तो श्रीमान् लालाजी महाराज ने मेरा नाम बतला दिया। मुझे आपके पास आते लगभग दो वर्ष हो गये थे। भाग्यवश यही संबंध पक्का हुआ और फरवरी 1928 में विवाह सम्पन्न हो गया जिसमें श्रीमान् लालाजी महाराज की प्रमुख भूमिका रही। वे विवाह के सभी आयोजनों (रस्मोरिवाज) में उपस्थित रहे और दिशा निर्देश करते रहे। इस प्रकार से मेरा पारिवारिक संबंध भी गुरु परिवार से हो गया। फिर मार्च 1928 में ही एक बार श्रीमान् लालाजी महाराज के कानपुर पधारने पर पूज्य भाईसाहब परमसंत बाबू ब्रजमोहन लाल साहब ने मुझे भी दीक्षा के लिये श्रीमान् लालाजी महाराज के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया और आग्रह करके मेरी दीक्षा करा दी। श्रीमान् लालाजी महाराज जी इन भाई साहब की बात मान लेते थे। इतनी इन संत पर उनकी कृपा थी। मुझे अपने विद्यार्थी जीवन (1925-1930) में कई वर्ष श्रीमान चच्चा जी महाराज की सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् भी उनकी सेवा में समय-समय पर जाता रहा। गुरुदेव श्रीमान लालाजी महाराज के सन् 1931 में निर्वाण के बाद लगभग 16 वर्ष तक आप सारे सत्संग परिवार का अध्यात्म से सिंचन करते रहे तथा मेरा सम्पर्क आप से ही पूर्ण रूप से बना रहा। मुझे इस मार्ग में सारा मार्ग दर्शन आप ही से मिला और आज भी मिलता है।

महात्मा रामचन्द्र जी को सब मतों की धार्मिक पुस्तकों पर विश्वास था। प्रत्येक धर्म के महापुरुषों का वे आदर करते थे, उन की वाणी को पढ़ते और सुनते थे और

उनके वचनों का बहुत आदर करते थे। महात्मा जी आजीवन अपने गुरुदेव के आदेश पर दृढ़ता पूर्वक चलते रहे और वह आदेश यह था कि "जिस धर्म में जन्म लिया है उसी के अनुसार कर्म-काण्ड करना चाहिये।" अतः यद्यपि उनके गुरुदेव इस्लाम धर्म की शरह (कर्म-काण्ड) के अनुसार ही जीवन व्यतीत करते थे वे स्वयं हिन्दू होने के नाते हिन्दू रीति-रिवाजों को बरतते थे। न कभी महात्मा जी ने रोज़ा रखा और न नमाज पढ़ी। अपनी तस्वीर खिंचवाने या उसको प्रेमी-जन अपने घर में रखने का महात्मा जी विरोध न करते परन्तु उसे मूर्ति की तरह पूजने के आप विरुद्ध थे। महात्मा जी अपने चरण छुआना पसन्द नहीं करते थे परन्तु जो प्रेमी-जन चरण छूना चाहते थे उन्हें इसलिये नहीं रोकते थे कि यह प्रथा हिन्दुओं में बहुत पहले से चली आई है कि गुरु जनों को प्रणाम चरण छू कर किया जाता है।

अपने आध्यात्मिक वंश के पूर्व महापुरुषों के प्रति उनका बड़ा आदरभाव था। वे कहा करते थे कि हमारे वंश की महानता हमारे पूर्वजों के कारण है। सदा उनके लिए प्रार्थना करते रहते और किसी भी सांसारिक या पारमार्थिक काम में सफलता मिलने पर उन्हें धन्यवाद देते और उसको उन्हीं के अर्पण करते।

सिद्धि शक्ति को वे जानते थे परन्तु उनके क़ायल नहीं थे। गन्डे ताबीज़ के भी महात्मा जी पक्ष में नहीं थे यद्यपि वे इस विद्या को भी जानते थे और अपने प्रेमी शिष्यों में से उन्होंने कईयों को यह विद्या बताई और ताबीज देने की इजाजत भी दी। हाँ, यदि उन्हें कोई मजबूर करता तो वे ताबीज लिख देते थे।

सदाचार से रहने पर वे बहुत जोर देते थे। उनका कहना था कि जब तक आचरण पूर्णतया ठीक नहीं हो जाता तब तक आत्मानुभव नहीं होता। ज्यादा अभ्यास (रियाज़त) और वज़ीफ़ा पढ़ने के पक्ष में न थे बीच का रास्ता पसन्द करते थे। महात्मा जी का कहना था कि दिल का अभ्यास सबसे ऊंचा है, इसका असर शरीर, मन और आत्मा पर पड़ता है। दिल को काबू में रखना और उसे तरतीब देते रहना यही असली अभ्यास है।

प्रार्थना (दुआ) में उनका बहुत विश्वास था लेकिन अपने लिये व दुनियावी फ़ायदे के लिये प्रार्थना (दुआ) करना उन्हें मंजूर न था। दूसरों के लिये हर वक्त दुआ करने को तैयार रहते थे।

महात्मा जी का कहना था कि गुरु हर मनुष्य को करना चाहिए लेकिन गुरु बहुत देख-भाल कर करना चाहिये। एक बार गुरु धारण कर लेने पर अपने आपको पूरी तरह अपने को गुरु के आधीन कर देना चाहिए जिस तरह मुर्दा ज़िन्दों के हाथ में होता है।

इन संतों के गुरुदेव हुजूर महाराज, इन सबसे इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने अपना सब कुछ ही इन्हें दे डाला। कहते हैं उनका यह भी आशीर्वाद था कि इनके वंश में हमारी यह नक्शबंदिया परम्परा सात पुश्तों तक चलेगी। इस समय इनकी चौथी पीढ़ी तो आ ही चुकी है और उनके सदस्य इस संत परम्परा में दीक्षित और कार्यरत भी हैं। आप सब ने फतेहगढ़ भण्डारा, कानपुर भण्डारा व जयपुर, गाजियाबाद तथा सिकंदराबाद भण्डारा आदि में यह सब प्रत्यक्ष रूप से देखा भी है। आशीर्वादानुसार आगे की तीन पीढ़ियां कौन दूर हैं। हमारे आगे आने वाले संत परम्परा के सदस्य ही उसे भी यथार्थ होते हुए देखेंगे, मुझे ऐसा विश्वास है।

श्रीमान् लालाजी महाराज, श्रीमान् चच्चाजी महाराज (कानपुर) और श्रीमान् छोटे चच्चाजी महाराज (जयपुर), ये तीनों ही सन्त, बड़े गुरुमहाराज अर्थात परम संत सद्गुरु मौलवी फ़ज़ल अहमद खां साहब से दीक्षित थे। दादा गुरु महाराज ने जब हमारे गुरु भगवान को पूर्ण करके अपना सारा आध्यात्मिक सत्संग उन्हें को दिया तो फिर सारा ही कार्य भार उन्हें संभला दिया तो फिर आपने एक प्रकार से सारा ही कार्य श्रीमान् लालाजी महाराज के लिए छोड़ दिया। इस प्रकार श्रीमान् चच्चाजी महाराज, छोटे चच्चाजी महाराज (जो गुरु महाराज के समय छोटे ही थे) इत्यादि उनके अन्य शिष्यों के पूर्ण करने का कार्य भी श्रीमान् लालाजी महाराज द्वारा ही हुआ। बड़े गुरु महाराज तो निजधाम को पधार गए फिर उनके आदेशानुसार श्रीमान् लालाजी महाराज ने समय पर इन दोनों को पूर्ण किया और गुरु पदवी प्रदान की।

हमारे दादा गुरु महाराज के गुरुदेव - हजरत जनाब खलीफ़ा जी साहब (उस सत्संग में इसी नाम से आपको याद किया जाता है) के एक शिष्य और भी थे जिनका शुभ नाम परमसंत सद्गुरु हाज़ी मौलवी अब्दुल गनी ख़ाँ साहब था। बचपन में आप अपने पिताजी के साथ फर्रुखाबाद में रहते थे। इनका भी कार्यक्षेत्र (आध्यात्मिक) श्रीमान् लालाजी महाराज से कुछ अलग नहीं रहा। ये चारों आध्यात्मिक परिवार भी

आपस में खूब घुले मिले रहे। हम ऊपर कह आए हैं कि श्रीमान् लालाजी महाराज ने अपनी तथा अपने दोनों छोटे भ्राताओं की संतानों को इन्हीं हुजूर जनाब मौलवी साहब से दीक्षित कराया। इस प्रकार वे ही परिवार के सभी भ्राताओं के दीक्षा गुरु रहे। हमारे गुरु महाराज के हृदय में आपके लिए बड़ा आदर था और बहुत दिनों तक आप दीक्षा न देकर जो भी नया व्यक्ति आता उसे हुजूर जनाब मौलवी साहब के सामने प्रस्तुत करते। फिर जब हुजूर मौलवी साहब ने आग्रह किया कि आप स्वयं दीक्षा क्यों नहीं दें, तब कहीं आपने दीक्षा देना प्रारम्भ किया। यह उनके प्रति हमारे गुरु भगवान का आदर भाव था। इस आदर के आदर्श को भी हमारे सत्संगी भ्राताओं को भली-भांति समझना चाहिए। आदर का यह उत्कृष्ट उदाहरण है जो हमारे पूज्य गुरुदेव द्वारा स्थापित किया गया।

कानपुर वाले श्रीमान् चच्चाजी महाराज सद्गुरु की पदवी बहुत पहले ही श्रीमान् लालाजी महाराज द्वारा पा चुके थे। आपने भी यही आदर्श प्रस्तुत किया कि श्रीमान् लालाजी महाराज के जीवनकाल में किसी को भी दीक्षा नहीं दी। दीक्षा का कार्य आपने श्रीमान् लालाजी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् ही प्रारम्भ किया। कुछ ऐसे उदाहरण भी देखने में आए हैं जिनमें दीक्षा का कार्य करने के लालायित वरिष्ठ सत्संगियों ने इस आदर्श आदर भाव को नहीं निभाया।

हमारे ये हुजूर जनाब मौलवी साहब हमारे इन तीनों भ्राताओं के परिवारों से इतने घुले मिले थे कि किसी प्रकार का कोई छुपाव नहीं था। यहां तक कि हिन्दू मुसलमान का भी अंतर दिखाई नहीं पड़ता था। यह सब मेरा देखा हुआ है। मेरा अनुमान है कि हमारे श्रीमान् मौलवी साहब के परिवार का सम्पर्क मुस्लिम परिवारों से घनिष्टता का न होकर, इन तीनों परिवारों से अधिक था।

हुजूर महाराज द्वारा जो ठोस नींव इस कार्य की डाली गई वह अवश्य ही अप्रत्याशित थी। आपने अपने शिष्यों में केवल श्रीमान् लालाजी महाराज को पूर्ण किया और सारा ही आध्यात्म का कार्य तथा अन्य महानुभावों को पूर्ण करने का कार्य श्रीमान् लालाजी महाराज के लिए छोड़ दिया। श्रीमान् लालाजी महाराज के वरिष्ठ शिष्यों द्वारा इस विषय में पूरी-पूरी जानकारी दी भी गई है जो उपलब्ध भी है। वैसे अपनी जानकारी की बहुत सी घटनाएं मैंने अपनी पुस्तक 'यादें' में सविस्तार दी हैं।

सन् 1925 में मैं इसमें आया और सन् 1928 में मुझे श्रीमान लाला जी द्वारा दीक्षा दी गई। इस समय श्रीमान लालाजी के अन्य वरिष्ठ शिष्यों द्वारा फैलाई इसकी अनेकानेक शाखाओं में लगभग सभी से मेरा परिचय तथा सम्पर्क रहा है। किसी भी शाखा में मुझे बहुत सारा साहित्य उपलब्ध होने के उपरान्त भी, ऐसी कोई लिखित अथवा अलिखित साधन पद्धति नहीं मिली, जिसके द्वारा आरम्भ से अन्त तक अवलम्बित होकर साधन की पराकाष्ठा को पहुँचा जा सके। श्रीमान् लाला जी महाराज के वरिष्ठ शिष्यों ने नवागन्तुकों के लिये बहुत कुछ पूजा की विधि लिखी भी हैं परन्तु वह सब प्रारम्भिक अथवा सांकेतिक ही हैं। खोज करने पर इस विषय में जो कुछ भी मुझे श्रीमान् लालाजी महाराज द्वारा अथवा उनके वरिष्ठ शिष्यों द्वारा दिया गया अथवा मिला है - वह मैंने संक्षेप में पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया है।

सच तो यह है कि ध्यान की क्रिया लिखकर (अर्थात शब्दों द्वारा बोलकर) समझाया जाना सम्भव भी नहीं है। ध्यान की क्रिया को शक्तिपात द्वारा कराकर ही सरलता से अनुभव कराया जा सकता है। शब्दों द्वारा कुछ प्रारम्भिक बातें भले ही बतला दी जावें परन्तु ध्यान की पद्धति का वर्णन करना संभव नहीं है। पुराने सत्संगी होने के नाते मुझ से भी बहुधा यह प्रश्न पूछा जाता है, परन्तु मैं भी शब्दों द्वारा उनका सन्तोष नहीं कर पाता जैसा कि ऊपर लिख चुका हूँ। जितना भी लिखकर बताया जा सकता है। लालाजी महाराज ने तथा उनके वरिष्ठ शिष्यों ने लिखा भी है और मैं भी वही न्यूनाधिक सब फिर लिख रहा हूँ जिसके लिये मुझसे कई सत्संगियों ने (जिन्हें शिक्षा का कार्य दिया गया है) अनुरोध व आग्रह किया है परन्तु यह सब भी अपर्याप्त ही है।

भली भांति समझ लीजिए कि यह जाति-पांति, ऊंच-नीच तो इस संसार में बहुत है पर भगवान नारायण के यहां कुछ नहीं है। जो इस परम्परा को मुस्लिम महानुभावों की समझ कर घृणा करते हैं अथवा इससे बचना चाहते हैं वे संकुचित विचारों के होकर अपनी भारी हानि कर रहे हैं और जो लाभ उन्हें मिल सकते हैं उनसे अपने आपको वंचित रख रहे हैं। अतः यह भावना सर्वथा त्याज्य है। मानव जाति एक है और इसमें भगवान के यहां कोई भेदभाव नहीं है। हमें भेदभाव करके अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी क्यों मारना चाहिए ?

दीक्षा की रस्म भारत में ही नहीं - और देशों में भी प्रायः आध्यात्म शिक्षा का एक आवश्यक अंग रही है। हमारे श्रीमान् लालाजी महाराज द्वारा प्रचारित अभ्यास में भी इसे आवश्यक बतलाया गया है। उनके जितने भी वरिष्ठ शिष्य हुए हैं और जिनके कार्य का संसार के अनेक भागों में प्रचार-प्रसार हुआ वे सभी श्रीमान् लालाजी महाराज द्वारा दीक्षित किए गए थे। बाद में उनके शिष्यों ने भी इस परम्परा को प्रचलित (कायम) रखा। देखने में आता है कि यह दीक्षा की परम्परा सभी धर्मावलम्बियों में पाई जाती है।

दीक्षा में गुरु अपने शिष्य को अपने गुरुदेव के माध्यम से परम्परा के सारे गुरुओं से जोड़ देते हैं और एक प्रकार से शिष्य को उन महान आत्माओं को सौंप देते हैं और फिर उनके (उन गुरुओं के) सेवक की भांति शिष्य की सदा शिक्षा देते और संभाल करते रहते हैं।

'दीक्षा देना' को उर्दू भाषा में 'बैअत करना' कहते हैं। बैअत करना अपने आपको 'बेच देने' को कहते हैं। पुराने जमाने में 'गुलामों' के नाम से मानवों को बेचे जाने का इतिहास भी कई देशों में मिलता है। "बैअत" किया हुआ व्यक्ति गुलाम (दास) की स्थिति में होता है। उसे अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं होता। सारे अधिकार उसके स्वामी के होते हैं। आध्यात्म में दीक्षित व्यक्ति अपने आपको दीक्षा गुरु को पूर्णरूप से समर्पित करता है जिससे उसके ऊपर गुरु का अधिकार मान लिया जाता है। 'दीक्षा' का शाब्दिक अर्थ है कि 'दि' धातु अर्थात देना है और 'क्ष' धातु अर्थात क्षय करना है अर्थात दीक्षा के समय शिष्य स्वयं को 'दे' देता है और गुरु शिष्य के संस्कारों और कलुषताओं को 'क्षय' या दग्ध कर देता है। अधिकतर आध्यात्मिक उन्नति (तरक्की) का बड़ा सोपान दीक्षा के दिन ही तय हो जाता है चाहे उस समय उसका आभास न हो। गुरुदेव यदा-कदा प्रसन्न होकर दीक्षा के दिन ही आध्यात्म की अंतिम मंजिलों तक पहुंचा देते हैं। आज का शिक्षित वर्ग इसे अनुचित ठहरा सकता है लेकिन आध्यात्म मार्ग में यह अपरिहार्य है।

श्रीमान् लालाजी महाराज ने तो इस रीति को वैसा ही रखा जैसा कि पूर्व के गुरुओं द्वारा प्रचलित था, परन्तु उनके कुछ वरिष्ठ शिष्यों ने समय के परिवर्तन का ध्यान रखते हुए इसमें संशोधन किए और कहीं-कहीं तो यह परम्परा समाप्त ही कर दी

गई। दीक्षा के बाद शिष्य गुरु परम्परा से जुड़ जाता है और इसके बाद उसके लिए वंशावलि (शिजरा शरीफ) का पाठ करना आवश्यक है।

सच तो यह है कि यह विद्या सीमित तथा उपयुक्त संस्कार वालों के लिए ही देने योग्य है। इसका सार्वजनिक रूप से प्रचार नहीं होना चाहिए। जहाँ सैकड़ों-हजारों की संख्या में सत्संगी लोग देखने में आए, वहाँ उनमें से थोड़े से (इने-गिने) व्यक्ति ही अधिकारी दिखाई पड़े। अधिकतर देखा-देखी आए हुए अथवा परीक्षा लेने अथवा अन्य सांसारिक प्रलोभनों को पूरा करने आए ही व्यक्ति मिलते हैं। उचित प्रकार के अभ्यासी बहुत कम मिलते हैं। कम से कम इन अधिकारी लोगों को तो दीक्षा मिल जानी चाहिए जिससे इनका काम पूरा हो सके और अन्य महानुभावों की भांति लटकते न रह जाएं।

दीक्षा के समय गुरु शिष्य को सामने बिठलाकर उसके ऊपर के चक्रों को (त्रिकुटी या दशम द्वार तक) अपनी शक्ति के प्रयोग से खोल देता है और अपने गुरु के हाथ में अपने शिष्य का हाथ दे देता है। दीक्षा के समय थोड़ा मिष्ठान बीच में रखते हैं जिसे दीक्षा के समय उपस्थित सज्जनों में बांट दिया जाता है। दीक्षा के समय उस स्थान पर गुरु व दीक्षा लेने वाला व्यक्ति ही उस समय उपस्थित होते हैं, परन्तु गुरु पदवी प्राप्त अन्य व्यक्ति भी वहां उपस्थित रह सकते हैं। इस समय दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को मुख से बोलकर तथा मन से यह कहना आवश्यक होता है कि "आज दिनांक... को मैंने आपसे दीक्षा ली और मैंने अपना जीवन ईश्वर के प्रेम के लिए समर्पण किया। अब मैं सदा के लिए आपका हो गया। भगवान मुझे इस कार्य में मेरी सहायता करें।" यह सब शिष्य से तीन बार कहला लेते हैं फिर ध्यान में बिठला कर उसके चक्रों को जैसा ऊपर बताया है, खोल देते हैं। कालांतर में शिष्य धीरे-धीरे स्वयं प्रगति करता हुआ गुरु के संरक्षण में उन्हीं की सहायता से, स्वयं के अभ्यास और प्रयत्न द्वारा प्राप्त चढ़ाई करके ईश्वर की राह में पूर्णत्व प्राप्त करता है।

नीचे के चक्रों को सहस्रार तक पार करने पर अभ्यासी के लिए दीक्षा प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। फिर गुरु उसे अपनी शक्ति से त्रिकुटी (दशम द्वार) तक चढ़ा देते हैं फिर उसको स्वयं के अभ्यास द्वारा प्राप्त की हुई स्थिति पर लौटाकर छोड़ देते हैं। बाद में शिष्य गुरु की सहायता से त्रिकुटी को भी पार करके सतलोक में स्थित हो

जाता है। संक्षेप में इससे अधिक कुछ नहीं कहा या लिखा जा सकता है।

दीक्षा उन्हीं अभ्यासियों को दी जाती है जिन पर यह विश्वास हो जाता है कि उन्होंने सहस्रार तक चढ़ाई कर ली है। परन्तु दीक्षा इसके पहले भी दी जा सकती है, ऐसा उन शिष्यों के लिए होता है जो संस्कारी होते हैं। ऐसे शिष्य एकदम प्रगति कर जाते हैं। हमारे पूर्वगुरुओं ने दीक्षित तथा अ-दीक्षित दोनों शिष्यों में कभी भेद नहीं किया। दोनों को समान रूप से ध्यान कराया (तवज्जह दी) और मार्ग पर चलाया। अन्तर (फ़र्क) बस इतना होता था कि दीक्षित शिष्य की गलती आसानी से माफ नहीं होती जबकि बिना दीक्षा लिए हुए शिष्य के लिए कोई बंधन नहीं होता था। हमारे पूर्व गुरु यह भी कहते थे कि जब तक आत्म साक्षात्कार न हो जाय कोई ग्रन्थ न देखें, नहीं तो ग्रंथों में वर्णित नकली हालत आ जायेगी और भ्रम उत्पन्न होगा।

हमारे लालाजी महाराज के शिष्यों में कुछ ने 'दीक्षा' को 'नाम' देना कहा है। कुछ भी कहें, मतलब समर्पण करना और उसे स्वीकार करना ही मुख्य है। कुछ स्थानों में ऐसी भी मान्यता है कि सामूहिक ध्यान करा दिया गया और बस सबकी दीक्षा हो गई। हमारे एक भाई साहब ने यह रस्म रखी कि तीन सत्संग (सिटिंग) आचार्य द्वारा दिए जाने पर दीक्षा स्वतः हो जाती है। अब हमारे पाठकगण स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि कौन से नियम कहां तक उचित हैं। श्रीमान् लालाजी महाराज का जो नियम था, मैंने लिख दिया है। उनके वरिष्ठ शिष्यों ने स्थान व समय की आवश्यकता को समझकर कुछ फेर-बदल किए लगते हैं, जिनके विषय में मुझे कुछ भी कहना अथवा लिखना शोभा नहीं देता क्योंकि मैं इन सबसे छोटा हूँ और सदा ही सबके आशीर्वाद की आशा और कामना करता हूँ।

आपने नौकरी जयपुर राजस्थान में करी। आप राजस्थान सरकार में अकाउंट अफसर होकर रिटायर हुए। आपने 37 वर्ष नौकरी की व 37 वर्ष ही पेंशन ली। आपने लंबी उम्र पाई व 95 वर्ष की उम्र में जयपुर में देहांत हुआ। आप अत्यंत विनम्र व अमानी भाव मैं रहते थे। कोमल वाणी, नम्र व्यवहार व अत्यंत दयावान थे। आप को श्रीमान लाला जी द्वारा दीक्षा दी गई , श्रीमान् चच्चाजी महाराज द्वारा पूर्णता हुई व महात्मा डॉ० कृष्णस्वरूप जी साहब (श्रीमान्) द्वारा अध्यात्मिक परवरिश हुई।

आप लिखते हैं - सन् 1956 के आरम्भ में एक दिन मैं श्रीमान् डॉ० कृष्णस्वरूप जी साहब के पास में बैठा था कि अचानक आपने मुझसे प्रश्न कर दिया, "बाबू हरनारायण ! तुम्हें सल्ब करना आता है ?" मैंने उत्तर में केवल सिर झुका लिया। मुझे इसकी विधि पूर्णतया मालूम थी, परन्तु किसी गुरु पदवी के महात्मा ने मुझे इसका अधिकार नहीं दिया था। मैंने कई वरिष्ठ अभ्यासियों को तथा अध्यात्म के शिक्षकों को सल्ब करते देखा भी था। अतः मैं यह तो कह नहीं सकता था कि मुझे नहीं मालूम। श्रीमान ने मेरा भाव तुरन्त पहिचान लिया और कहा "इसमें क्या है, ऐसे होता है (गर्दन घुमाकर) जब आवश्यक समझो, कर लिया करो।"

सल्ब करने का मतलब है किसी के शरीर से रोग अथवा कष्ट को निकाल देना। हमारे अध्यात्म में यह साधारण सी क्रिया है। परन्तु इस का खेल करना और दुनियाँ में यह दिखलाना कि देखो हम यह भी कर सकते है इसकी कड़ी मनायी है। इस प्रयोग को अनुचित रूप से करने पर यह शक्ति जैसे दी जाती है वैसे ही वापिस भी ले ली जाती है।

सर 1958 में श्रीमान कुछ अस्वस्थ रहने लगे। उस समय आपके दोनों सुपुत्र जयपुर से बाहर ट्रांसफर ड्यूटी पर थे। अतः आपके इलाज आदि का भार मुझ पर आया। आफिस जाते समय आपका सारा विवरण लेता। फिर डाक्टर से कह कर दवा लेता। आफिस पहुंच कर दवा श्रीमान के पास भेज देता। लौटते समय सीधा आपकी सेवा में उपस्थित होता। आप संध्या की चाय अधिकतर मेरे ही साथ पीते और प्रतीक्षा करते रहते।

एक बार जब आफिस से आपकी सेवा में पहुँचा तो आप कुछ अधिक अस्वस्थ होने के कारण अचेत से पड़े थे। मुझे तुरन्त याद आया कि मैं सल्ब करने का अधिकार पा चुका हूँ। तीन चार साँसे खेंचने पर ही आप में चेतना आ गई। पूछा, तुम कब से खड़े हो ? निवेदन किया, अभी आया हूँ। इस प्रकार मुझे कई बार श्रीमान के कष्ट को सल्ब करना पड़ा। अब भी जब आवश्यकता होती है इस कार्य को कर लेता हूँ तथा श्रीमान की याद उस समय ऐसी आती है कि जैसे वे मेरे पास खड़े ही नहीं वरन् मुझ में समाये हुए हों और सल्ब करा रहे हों।

परमसंत महात्मा श्री हरनारायण जी सक्सेना को श्रीमान लाला जी का 7 वर्ष,

श्रीमान् चच्चाजी महाराज का 23 वर्ष, व महात्मा डॉ० कृष्णस्वरूप जी साहब (श्रीमान्) का 34 वर्ष का साथ मिला। साथ ही आपको ठाकुर रामसिंह जी महाराज का 45 वर्ष का साथ मिला। आप बताते थे कि ठाकुर रामसिंह जी अकसर आप के घर पधारते थे और आते ही कहते थे कि गुरु चर्चा हो जाए। व कहते कि आप सम्माननीय हैं क्यों कि आप ने गुरु महाराज के घर तोरण मारा है।

आप को महात्मा ब्रज मोहन लाल जी का व महात्मा राधा मोहन लाल जी का भी खूब सानिध्य मिला। आप महात्मा राधा मोहन लाल जी को मुंशी भाई साहब कहते थे। आपकी लाला जी महाराज के अन्य शिष्यों से भी खूब मुलाकात थी, जिनमें मुख्य थे:-

डाक्टर चतुर्भुज सहाय जी साहब
श्री कृष्ण लाल जी साहब
श्री श्याम लाल जी साहब
ठाकुर राम सिंह जी साहब
श्री रामचंद्र जी साहब शाहजहांपुर
श्री रेवती प्रसाद जी साहब
श्री शिवनारायण दास जी गांधी साहब

आप परम पूज्य ठाकुर रामसिंहजी व शिवनारायण दासजी गांधी की बहुत ज्यादा तारीफ करते थे एवं कहते थे इन दोनों जैसा निरअंहकारिता, दास व अमानी भाव अप्रतिम था।

आपकी अगली पीढ़ी के पंडित मिहीलालजी टूंडला, सरदार कर्तारसिंहजी गाजियाबाद, चारी साहब मद्रास, सेठ साहब गाज़ियाबाद, दीनू भाई साहब लखनऊ, नारायण सिंह जी भाटी जयपुर, रवींद्रनाथजी कानपुर, दिनेश कुमार जी फतेहगढ़ आदि से भी खूब मुलाकात थी।

आपने अपने दोनों पुत्रों को बाद में सरदार कर्तारसिंह जी गाजियाबाद से दीक्षित करवाया। जबकि आप को महात्मा राधामोहनलाल जी द्वारा 1965 में ही गुरु पदवी प्रदान कर दी गई थी।

आपने भी छह लोगों को दीक्षा दी वाले तीन जनों (श्री कौशिक जी, श्री योगेश, व श्रीमती अरुणा) को गुरू पदवी (इजाज़त ताअम्मा) प्रदान की।

आप इतना जाप करते थे कि दिन में शायद ही कभी खाली रहते थे। दूसरों के लिए भी खूब जाप करते थे। जाने कितने लोगों को सहायतार्थ मनिआर्डर भेजा करते थे अपनी पेशंन से। वे हमेशा गुरु भाव में ही रहते थे वे अपने को हमेशा छोटा एवं तुच्छ ही मानते थे। साफ कपड़े पहनते थे व बहुत सलीके से रहते थे। आपको महात्मा रवींद्रनाथ जी कहते थे कि आप अपने इलाके के कुतुब हैं। आपने अपने अनुभवों से कई पुस्तक लिखी व छपवाईं, मुख्य पुस्तकों सूची यह है:-

1. साक्षात्कार का रहस्य
2. यादें
3. आध्यात्मिक संकलन (दो भाग)
4. नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्ग व उनकी समाधियां
5. स्वस्थ सुखी दिव्य जीवन

आपके जीवन काल में मार्च महीना मुख्य रहा। 20 मार्च 1908 को जन्म, 24 मार्च 1928 को लालाजी महाराज से दीक्षा, व 95 वर्ष की उम्र में 4 मार्च 2003 में ब्रह्मलीन।

आप गुरुलोक में अपने गुरुदेव के साथ मुक्त अवस्था में निवास कर रहे हैं। कृपा मांगने वालों पर अवश्य ही कृपा करते हैं। आप लाला जी महाराज के शिष्यों में एक व अकेले थे जिन्होंने 21वीं सदी देखी एवं आपके साथ ही लाला जी महाराज के शिष्यों का महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त हुआ।

❸❼

संकेताक्षरों का विवरण

इस पुस्तक में हजरत मुहम्मद साहब, इनके सहाबी (साथी) दूसरे पैगम्बरों, फ़रिश्तों एव महान सूफी सन्तों के नाम के आगे कुछ संकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है। उनके अर्थ तथा संक्षिप्त विवरण नीचे दिए जा रहे है :-

सल्ल॰- 'सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो। हजरत मुहम्मद साहब का नाम लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रजि॰- 'रजि अल्लाह अनहु' अर्थात् उनसे अल्लाह राजी रहे (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल॰ के किसी सहाबी या परिवार के सदस्य का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रहम॰ - 'रहमतुल्लाहु अलैहि' अर्थात् उन पर ईश्वर की कृपा हो। (महान् सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।)

कु॰ सि॰ - 'कुद्स सिर्रहू' अर्थात् उनकी आदतें और स्वभाव पवित्र हों। सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

अलैहि॰- ' अलैहिस्सलाम ' अर्थात उन पर ईश्वर की सलामती हो। हजरत मुहम्मद सल्ल॰ के अतिरिक्त अन्य पैगम्बरों तथा फ़रिश्तों के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थों की तालिका

1. **कुरान मजीद** (हिन्दी में) - मूल अरबी, हिन्दी व अँग्रेज़ी अनुवाद सहित। प्रकाशक-मक्तबा अल-हस्नात, रामपुर (उ० प्र०)।
2. **हालात मशायस्व नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया**-(उर्दू में), लेखक हजरत मौलाना मुहम्मद हसन साहब, प्रकाशक-अल्लाह वाले की कौमी दूकान, बाजार कश्मीरी, लाहौर।
3. **मशायस्व नक्शबन्दिया** (उर्दू में -लेखक-हजरत अल्लामा अब्दुल मुस्तफा साहब अजमी, मिलने का पता – (1) मकतबा लतीफिया, बराँव शरीफ, जिला बस्ती (उ० प्र०), (2) दारुल उलूम मस्कीनिया, धुरावा, जिला राजकोट, गुजरात।
4. **पैगम्बरे इस्लाब हजरत मुहम्मद सल्ल०** ...जिसका इन्तिजार था'- लेखक-जनाब माहिरुल कादरी, अनुवादक जनाब कैसर यजदानी प्रकाशक-कान्ति सप्ताहिक, 995, किशन गंज, तेलीवाड़ा, दिल्लो-6
5. **कशकुल महजूब** - (फारसी ग्रन्थ का उर्दू तर्जुमा), लेखक-हजरत शेख अली हुजवीरी रहम० (दातागंज बख्श रहम०), अनुवादक-जनाब मियाँ तुफ़ैल मुहम्मद, बी० ए० (आनर्स), एल० एल० बी०, प्रकाशक-मरकजी मकतवा इस्लामी, दिल्ली-6
6. **रशहात** - (फारसी में) लेखक-हजरत फखरुद्दीन अली इब्तुल हुसैनुल वायजुल काशफी (रहम०), प्रकाशक-नवल किशोर प्रेस, हजरत गंज, लखनऊ (यह पुस्तक अब प्रकाशक के यहाँ उपलब्ध नहीं हैं।)
7. **'सूफी सन्त चरित' तथा 'मुस्लिम संत चरित'**-दोनों ग्रन्थ सुप्रसिद्ध फारसी ग्रन्थ तजिर्किरातुल औलिया' के आधार पर हिन्दी में लिखे गये हैं।
8. **नक्शबंदिया सिलसिले के बुजुर्गान व उनकी समाधियां-** महात्मा हरनारायण जी सक्सेना